"मनुष्य मात्र से प्रार्थना"

[लेखक—श्री ला० तोताराम जी रिटायर्ड स्टोरकीपर, N. W R., आनरेरी मन्त्री, पंजाब केन्द्रीय अनाथालय, रावीरोड, लाहौर]

"देह धरे का नाम है दे सके तो देह,
फिर पीछे पछताएगा जब देह हो जावेगी खेह।"

आपको मालूम है कि रावीरोड पर एक अनाथालय बनाम पंजाब केन्द्रीय अनाथालय लाहौर में खुला हुआ है, जो पंजाब भर में अपनी श्रेणी की एक ही संस्था है। जहाँ सारे देश से बालक-बालिकाएं आकर दाखिल होते हैं। इसमें न सिर्फ उनका पालन-पोषण किया जाता है, बल्कि उनको आश्रय देकर विद्या अध्ययन कराया जाता है और इनको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए कोई न कोई कार्य सिखाया जाता है। इस अनाथालय के आधीन एक इण्डस्ट्रीयल मिडिल स्कूल है, जिसमें विद्या पढ़ाने के अतिरिक्त कटिंग और दर्जी का कार्य भले प्रकार सिखाया जाता है। यह स्कूल सरकार की ओर से स्वीकृत है, इसमें बाहर के बालक भी लिए जाते हैं।

इस अनाथालय में न सिर्फ पब्लिक के बालक आते हैं, बल्कि पुलिस डिपार्टमेण्ट से भी ऐसे बच्चों को जो कभी भगाये जाते रहे हैं, उनको गुण्डों से बरामद करके यहाँ दाखिल कराया जाता है और जो अनाथ बच्चे उनको शहर, हस्पताल या जेल से मिलते रहते हैं, उनको भी यहाँ लाकर दाखिल कराया जाता है गर्ज़ कि इस अनाथालय में हर प्रकार के लड़के और लड़कियाँ जिनकी आयु १६ वर्ष से नीचे हो दाखिल किये जाते हैं। आजकल हालत ऐसी है कि जिन नवजात बच्चों की माताओं का स्वर्गवास होजाता है और जिनके पालने का प्रबन्ध उनके मरद ों से नहीं हो सकता, वे उनको यहाँ लाकर दाखिल कर देते है ऐसे बच्चों का देख-भाल के लिए एक दानी रायसाहिब ने जो अपना नाम देना नहीं चाहते, एक ट्रेण्ड नर्स अपने व्यय पर रखी हुई है। आजकल हमारे पास एक सौ के लगभग लड़के और ३० के लगभग लड़कियाँ हैं। उनके व्यय के लिये आप सोच सकते हैं कि कितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती होगी। यह सब आप जैसे दानवीरों से इकट्ठा होकर आता है और उससे इनका खर्च चलाया जाता है। अब सर्दी का मौसम है अतः इन सबके लिए जाड़ों के वस्त्रों की आवश्यकता है। इसलिए आप से प्रार्थना है कि जहाँ आप अपने बच्चों के लिए कपड़े सिलवायें वहाँ इन यतीम बच्चों का भी ध्यान रखें और इनके खाने पीने के लिए आटा, दाल, चावल, घी लकड़ी इत्यादि जो भाई जिस प्रकार हमारी सहायता करना चाहें, धन्यवाद सहित स्वीकार की जावगी। आशा है कि आप इस अपील पर ध्यान देंगे और जैसे पहले हमारी सहायता करते रहे हैं वैसे ही अब हमारी सहायता करके पुण्य के भागी बनेंगे।

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि-सभा

का

३१ वां वार्षिक वृत्तान्त

वियोग

वर्ष का विवरण देने से पूर्व यह प्रगट कर देना आवश्यक है कि इस वर्ष श्री राज्य रत्न मास्टर आत्माराम जी तथा श्री महात्मा हंसराज जी के निधन से आर्य जगत को महती हानि उठानी पड़ी है।

(१) निर्माण व्यवस्था

इस वर्ष १३ प्रतिनिधि सभाएँ इस सभा में सम्मिलित रहीं उनके नाम और उनके प्रतिनिधि सदस्यों की संख्या प्रत्येक के सामने निम्न प्रकार दी जाती है :—

	नाम सभा		प्रतिनिधि सदस्यों की संख्या
(१)	आर्य प्रतिनिधि सभा	संयुक्त प्रान्त	७
(२)	,,	पंजाब	७
(३)	,,	राजस्थान	३
(४)	,,	बिहार	५
(५)	,,	बङ्गाल	५
(६)	,,	मध्यप्रदेश	३
(७)	,,	निजाम राज्य	२
(८)	,,	नैटाल	४
(९)	,,	मौरिशस	१
(१०)	,,	फिज़ी	०
(११)	,,	सिंध	०
(१२)	,,	सुरीनाम डचगायाना	०
(१३)	,,	बम्बई	५

नियमानुसार वे आर्य समाज जिनके आर्यसभा सदों की संख्या ५० या अधिक हो और जो प्रति वर्ष इस सभा को दशांश दें वे इस सभा मे प्रविष्ट हो सकते हैं। इस वर्ष १०-४-२६ की अन्तरङ्ग सभा के निश्चयानुसार आर्यसमाज फरीदाबाद (गुड़गावा) सभा मे प्रविष्ट हुई। इस वर्ष निम्न २ आर्य समाजों का सभा मे प्रतिनिधित्व रहा :—

नाम समाज	प्रतिनिधियों की संख्या
देहली	२
फरीदाबाद	१

प्रतिष्ठित और आजीवन सदस्य

गतवर्ष की नाईं इस वर्ष निम्न महानुभाव सभा के प्रतिष्ठित और आजीवन सदस्य रहे :—

प्रतिष्ठित

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी
(२) ,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
(३) ,, ,, सर्वदानन्द जी
(४) ,, , ब्रह्मानन्द जी

आजीवन

(१) श्री महाशय वेदमित्र जी जिज्ञासु
(२) श्री ला० ज्ञानचन्द जी
(३) श्री ला० रलाराम जी
(४) श्री पं० मूलचन्द जी
(५) श्री ला० नारायण दत्त जी
(६) श्री पं० गङ्गाप्रसादजी चीफजज
(७) श्री बा० ज्योति स्वरूप जी
(८) श्री दीवान तुलजाराम जी

इस वर्ष के अन्त मे यह सभा १३ प्रतिनिधि सभाओं २ आर्यसमाजों के ४५ प्रतिनिधि सदस्यों ४ प्रतिष्ठित और ८ आजीवन कुल ५७ सभासदों का समुदाय था।

(२) सभा के अधिकारी और अन्तरङ्ग सदस्य

गत वर्ष की अपेक्षा कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष मे अधिकारियों तथा अन्तरङ्ग सदस्यों मे क्या अन्तर रहा था यह प्रगट होजाय इसलिए दोनों वर्षों के अधिकारियों और अन्तरङ्ग सदस्यो के नाम नीचे दिये जाते है :—

गत वर्ष के अधिकारी

(१) प्रधान	श्री घनश्याम सिंह जी गुप्त
(२) उप प्रधान	(१) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
	(२) ,, पं० गङ्गा प्रसाद जी चीफ जज
(३) मन्त्री	श्री प्रो० सुधाकर जी एम ए
(४) उप मन्त्री	श्री डाक्टर युद्धवीर सिंह जी
(५) कोषाध्यक्ष	श्री ला० नारायण दत्त जी
(६) पुस्तकाध्यक्ष	श्री ला० ज्ञान चन्द जी

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष के अधिकारी

(१) प्रधान	श्रीयुत घनश्याम सिंह जी गुप्त
(२) उप प्रधान	(१) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
	(२) श्री पं० गङ्गा प्रसाद जी चीफ जज
	(३) ,, ,, इन्द्र जी विद्यावाचस्पति
(३) मन्त्री	श्री प्रो० सुधाकर जी
(४) उप मन्त्री	श्री डाक्टर युद्धवीर सिंह जी
(५) कोषाध्यक्ष	श्री ला० नारायणदत्त जी
(६) पुस्तकाध्यक्ष	श्री ला० ज्ञान चन्द जी

गत वर्ष के अन्तरङ्ग सदस्य

(१) श्री पं० वेदव्रत जी (बिहार)
(२) ,, नगीनदास जी (बम्बई)
(३) ,, बा० पूर्णचन्द्र जी (प्रवासियों के प्रतिनिधि)
(४) ,, ला० देशबन्धु जी (समाजों ,, ,,)
(५) , महात्मा नारायणस्वामी जी
(६) ,, म० कृष्ण जी
(७) ,, कुँ० चान्दकरण जी
(८) ,, बा० ज्योति स्वरूप जी
(९) ,, बा० श्रीराम जी संयुक्तप्रान्त
(१०) ,, पं० सुरेन्द्र जी शास्त्री ,,

(११) श्री बा० मदनमोहन जी सेठ संयुक्तप्रान्त
(१२) ,, पं० ज्ञानचन्द जी पञ्जाब
(१३) ,, पं० इन्द्र जी ,,
(१४) ,, आचार्य रामदेव जी ,,

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष

(१) श्री राय बहादुर ठा० ब्रजनन्दनसिंह जी (बिहार)
(२) ,, पं० बंशीलाल जी (हैदराबाद)
(३) ,, बा० पूर्णचन्द जी (प्रवासियों के प्रतिनिधि)
(४) ,, ला० देशबन्धु जी (समाजों के प्रतिनिधि)
(५) ,, महात्मा नारायणस्वामी जी
(६) ,, म० कृष्ण जी
(७) ,, बा० ज्योति स्वरूप जी
(८) ,, पं० भगवान स्वरूप जी (राजस्थान)
(९) ,, सेठ मदनमोहन जी संयुक्तप्रान्त
(१०) ,, बा० श्रीराम जी ,,
(११) ,, प्रो० महेन्द्र प्रताप जी ,,
(१२) ,, पं० ज्ञानचन्द जी पञ्जाब
(१३) ,, आचार्य रामदेव जी ,,

वेद प्रचार

मद्रास प्रान्त

इस वर्ष मद्रास प्रान्त में सभा की ओर से निम्न प्रचारकों ने कार्य किया।

(१) श्री प० धर्मदेव जी (कर्नाटक)
(२) ,, पं० मदनमोहन विद्याधर जी (आन्ध्र)
(३) ,, साधु शिवप्रसाद जी केरल
(४) ,, पं० नारायणदत्त जी ,,

कर्नाटक और आन्ध्र प्रान्त मे वर्ष पर्यन्त प्रचार कार्य होता रहा। केरल में दिसम्बर मास तक कार्य हुआ और इसके बाद यह कार्य बन्द कर दिया गया। क्योंकि विशेष परिस्थितियों के कारण अस्थायी रूप से यह कार्य शुरू किया गया

था। मद्रास प्रान्त में कार्य की प्रणाली और अब तक के कार्य को सुसङ्गठित करने के सम्बन्ध में सभा गम्भीरता पूर्वक विचार कर रही है। हैदराबाद आन्दोलन के कारण दक्षिण प्रान्त में जो जागृति हुई है और आर्यसमाज को जो लोकप्रियता मिली है वह भी सभा के सामने है। वर्ष के पिछले ३-४ मास प्रचारकों के हैदराबाद आन्दोलन के अर्पण रहे हैं। इस समय के अतिरिक्त शेष समय में जो कार्य हुआ है उसका विवरण इस प्रकार है —

कर्नाटक

कर्नाटक प्रान्त के प्रचार का मुख्य केन्द्र बंगलौर रहा। लगभग ६० स्थानों पर जिनमे ३ स्थान नए थे प्रचार किया गया। वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी कनारी भाषा में अनुवाद करके प्रकाशित की गई और (Religion & Science is the Light of Vedic Dharam) का लेखन कार्य प्रारम्भ किया गया। ६ वैदिक विवाह, ३ गृह प्रवेश, ३ नामकरण तथा ॰ मुंडन संस्कार कराये गये। वोलटर और हरिहर (बंगलौर) के मेलों में वैदिक धर्म का प्रचार किया गया। ४० हरिजनों को यज्ञोपवीत दिये गये तथा १५ ईसाइयों की शुद्धि की गई। अगस्त मे (South Indian Harijan Conference तथा Indian National Fellowship) में सभा के प्रचारकों ने भाग लिया और आर्यसमाज के दृष्टिकोण को प्रतिपादित किया। स्थानीय स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थियों और उपाध्यायों में सफलता पूर्वक प्रचार किया गया। इस वर्ष उच्चवर्ग के जिन अनेकों व्यक्तियों के संपर्क में प्रचारकों के आने और धर्म सम्बन्धी विचार विनिमय तथा आर्यसमाज के सन्देश को बताने का अवसर मिला है उनमें श्रीयुत ऐयङ्गर, श्रीमती रमन (प्रसिद्ध वैज्ञानिक), श्रीयुत मुनि स्वामी पिल्ले मिनिस्टर मद्रास सरकार और (Rev Keika M. H (अमेरिकन) का नाम विशेष उल्लेखनीय है। कर्नाटक के समस्त आर्यसमाजों को संगठित करने के उद्देश्य से, अखिल कर्नाटक कार्य निर्वाहक समिति की योजना की गई है।

आन्ध्र

इस प्रान्त का मुख्य केन्द्र विजगापट्टम रहा है। लगभग ३५ स्थानों पर प्रचार किया गया। १ विवाह तथा १ नामकरण संस्कार हुआ। २ ईसाइयों की शुद्धि की

गई । विजय नगरम में पौराणिकों से 'मनुस्मृति में प्रक्षेप है या नहीं' विषय पर शास्त्रार्थ हुआ । सनाली स्थान पर आर्यसमाज को पुनरुज्जीवित किया गया ।

केरल

यह क्षेत्र उत्तरी और दक्षिणी दो केन्द्रों मे विभाजित रहा । उत्तरी केन्द्र का हैडक्वाटर्स कनानौर और पालघाट रहे तथा दक्षिणी केन्द्र का कोटयम रहा । मदुरा क्यूलिन, त्रिवेन्द्रम, कालीकट इत्यादि ५० स्थानों पर प्रचार किया गया । 'वैदिक धर्म' और 'स्वामी दयानन्द' नामक दो पुस्तकें मलयालम में तय्यार की गई । ६६ ईसाइयों का शुद्धि की गई । नट्टाशेरी, मल्लावेरी, हरिपाड़ा, 'ओमन' इत्यादि मेलों में प्रचार का व्यवस्था की गई । (Glory of Vedas and Voice of Arya Varta) इत्यादि अग्रेजी का साहित्य भी वितीर्ण किया गया । १४ आर्यसमाज के सहायक बनाए गये । साप्ताहिक सत्सङ्ग, सन्ध्या क्लास, तथा स्कूलों और कालेजों मे प्रचार यथा नियम चलते रहे ।

पहाड़ी क्षेत्रों में प्रचार

इस वर्ष भी गढ़वाल में श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी और कुमायूँ मे श्री पं० बद्रीप्रसाद जी की देख-रेख में प्रचार कार्य होता रहा । यह कार्य श्री दानवीर जुगल किशोर जी बिड़ला द्वारा प्रदत्त धन से होता रहा है । गढ़वाल का कार्य नवम्बर ३६ से बन्द कर दिया गया है ।

कुमायूँ

लगभग २०० ग्रामों और शहरों में आर्य समाज का प्रचार किया गया । १ ईसाई, २ नव मुस्लिमों तथा ३६ शिल्पकारों की शुद्धि की गई । आर्यसमाज के २४ सहायक व सभासद् बनाए गये । ३० यज्ञोपवीत, १ विवाह और ४ नामकरण संस्कार कराए गए । पटिया और झड़ोली में आर्य समाजों की स्थापना की गई ।

गढ़वाल

लगभग ३०० ग्रामों में आर्य समाज का प्रचार किया गया । आर्य समाज के ८ सदस्य तथा १४ सहायक सदस्य बनाए गये । २०२ शिल्पकारों और मवासों की शुद्धि की गई । १ नामकरण १ अन्त्येष्टि और २ विवाह संस्कार कराए गए ।

सभा, श्री प्रो० महेन्द्रप्रतापजी तथा श्री प० बद्रीप्रसाद जी को उनकी सेवाओं के लिए धन्यवाद देती है।

सिंगापुर

सिंगापुर मे प्रचारार्थ श्री पं० वीरेन्द्र कुमार जी को मई १९३८ मे भेजा गया है। वहाँ वे मलाया स्टेट मे सफलता पूर्वक चार कार्य कर रहे हैं और भावी कार्य क्रम के लिये क्षेत्र तय्यार कर रहे हैं।

डच गयाना

इस वर्ष श्री प० नारायणदत्त जी सिद्धान्त भूषण का डच गयाना भेजा गया है। वे वहाँ के कार्य को सगठित करने का यत्न कर रहे हैं।

पुस्तकालय

बिकाऊ पुस्तको का विवरण

	पुस्तक	मूल्य
गत वर्ष का स्टाक		
	१५१७५	१२९६३॥)
आय	२	४॥)
योग	१५१७७	१२९६८।)
बिक्री तथा फ्री वितरण	२१२१	१४२३।–)
शेष	१३०५६	११५४४॥≡)

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष

	पुस्तक	मूल्य
गत वर्ष का स्टाक		
	१३०५६	११५४४॥≡)
आय	×	×
योग	१३०५६	११५४४॥≡)
बिक्री तथा फ्री वितरण	३०३२	१७९७॥=)॥
शेष	१००२४	९७४७)॥

सार्वदेशिक पत्र

आय

ग्राहकों तथा विज्ञापन	६३६।॥=)

व्यय

कागज	२१४८)
छपाई	५५५॥)
वेतन लेखक	३२५)
डाक व्ययादि	४३४॥)
योग	१५२६=)

गत वर्ष पत्र के ४१६ ग्राहक तथा घाटा ५६७)॥ था इस वर्ष ४२४ ग्राहक तथा ५८६।) घाटा रहा।

कार्यालय व पत्र-व्यवहार

कार्यालय में जो पत्र-व्यवहार इस वर्ष हुआ उसका विवरण इस प्रकार है —

	गत वर्ष	कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष
आने वाले पत्रों की संख्या	१११४	१२७६
जाने ,, ,,	२४४३	३२३७

हैदराबाद आन्दोलन सम्बन्धी अनेकों गश्तियाँ, साहित्य इस पत्र व्यवहार के अतिरिक्त आर्य पर्वों की सूची तथा आर्य समाज स्थापना दिवस का कार्य क्रम आर्य समाजों में सरक्यूलेट किया गया।

कार्यालय में गत वर्ष की नाईं इस वर्ष भी २ लेखक और १ चपरासी काम करते रहे। इनका ११५) मासिक व्यय निम्न प्रकार ३ विभागों में विभाजित रहा —

कार्यालय	५२॥)
रक्षा	३०)
सार्वदेशिक	३२॥)
	११५)

अधिवेशनों का विवरण

इस वर्ष इस सभा की साधारण सभा का १ तथा अन्तरङ्ग सभा के ३ अधिवेशन हुए जिनमें सभासदों की उपस्थिति का विवरण इस प्रकार है:—

साधारण सभा

१—५—१६३६

(१)	श्री आचार्य रामदेव जी	१
(२)	,, पं० इन्द्र जी	१
(३)	,, म० कृष्ण जी	१
(४)	,, पं० विश्वम्भरनाथ जी	+
(५)	,, पं० बुद्धदेव जी	१
(६)	,, पं० ज्ञानचन्द्र जी	१
(७)	,, पं० भीमसेन जी	१
(८)	,, बा० मदनमोहन सेठ जी	+
(९)	,, पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय	+
(१०)	,, बा० गजाधर प्रसाद जी	+
(११)	,, कुँवर हुक्मसिंह जी	+
(१२)	,, प्रो० महेन्द्र प्रताप जी	१
(१३)	,, बा० प्रीतमलाल जी	१
(१४)	,, बा० श्रीराम जी	१
(१५)	,, प्रो० सुधाकर जी	+
(१६)	,, कुँवर चाँदकरण जी	+
(१७)	,, प० भगवान स्वरूप जी	१
(१८)	,, राय बहादुर ठाकुर ब्रजनन्दनसिंह जी	+
(१९)	,, प० वेदव्रत जी	+
(२०)	श्री पं० दीनानाथ जी सिद्धान्तालङ्कार	+
(२१)	,, बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी वकील, (आरा)	+
(२२)	,, स्वामी रामानन्द जी संन्यासी	+
(२३)	,, स्नातक सत्यव्रत जी	+

(२४)	„ पं० हरि शङ्कर जी	+
(२५)	„ डाक्टर कल्याण दास देसाई	+
(२६)	„ नटवर लाल वकील	+
(२७)	„ नगीन दास वकील जी कापड़िया	+
(८)	„ बा हरि गोविन्द गुप्त जी	+
(२९)	„ पं० सुखदेव जी	+
(३०)	„ सेठ कृष्ण लाल पोद्दार जी	+
(३१)	„ प० दीनबन्धु वेद शास्त्री „	+
(३२)	, विष्णु दास वात्सल	+
(३३)	„ बा घनश्याम सिंह गुप्त „	४
(३४)	„ प्रो० शिवदत्त ज्ञानी „	+
(३५)	„ लक्ष्मैया नरसय्या „	+
(३६)	„ प विनायक राव „	+
(३७)	„ „ बन्शी लाल „	१
(३८)	„ स्वामी भवानी दयाल	+
(३९)	„ आर के. कपीटन „	+
(४०)	„ बी ए, मेघराज „	+
(४१)	„ सत्यदेव „	+
(४२)	„ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती „	१
(४३)	„ म० वेदमित्र जी जिज्ञासु „	+
(४४)	„ ला० ज्ञानचन्द „	१
(४५)	„ ला० रलाराम „	+
(४६)	„ रायसाहब पं० मूलचन्द „	१
(४७)	„ ला० नारायण दत्त „	१
(४८)	„ प गङ्गा प्रसाद जी चीफ जज	+
(४९)	„ बा० ज्योति स्वरूप जी	१
(५०)	„ महात्मा नारायण स्वामी जी	१
(५१)	„ स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी	१
(५२)	„ बाबू पूर्ण चन्द्र एडवोकेट	१

(५३) ,, ला० देशबन्धु जी	१
(५४) ,, डाक्टर युद्धवीर सिंह जी	१
(५५) ,, स्वामी सर्वदानन्द जी	+
(५६) ,, दीवान तुलसा राम जी	१
(५६) ,, मास्टर शिवचरणदास जी	१
	२४

अन्तरङ्ग सभा

	३०-४-३८ (देहली)	६-१०-३८ (देहली)	२७-१२-३८ (शोलापुर)	सर्व योग
१ श्री बा० घनश्यामसिंह	१	१	१	३
२ पं० गङ्गाप्रसाद जी	०	०	०	०
३ स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी	१	१	१	३
४ प्रो० सुधाकर	०	१	१	२
५ डा० युद्धवीरसिंह	१	१	०	२
६ ला० नारायणदत्त	१	१	०	२
७ ला० ज्ञानचन्द जी	१	१	०	२
८ पं० इन्द्र जी	१	०	०	१
९ व्रजनन्दनसिंह जी	०	१	०	१
१० पं० बंशीलाल	०	१	१	२
११ बा० पूर्णचन्द्र जी	०	१	१	२
१२. ला० देशबन्धु जी	१	१	१	३
१३ महात्मा नारायण स्वामी जी	१	१	१	३
१४ म० कृष्ण जी	०	१	०	१
१५ बा० ज्योति स्वरूप	१	१	१	३
१६. पं० भगवान स्वरूप जी	०	१	०	१
१७. श्री मदनमोहन सेठ जी	०	०	१	१
१८. बा० श्रीराम	१	१	१	३
१९. प्रो० महेन्द्र प्रताप जी	०	१	१	२
२०. पं० ज्ञानचन्द जी	१	१	०	२
२१ आचार्य रामदेव जी	१	०	०	१
योग—	१२	१७	११	४०

आर्य रक्षा समिति

गत वर्ष की नाईं इस वर्ष भी समिति का सङ्गठन इस प्रकार रहाः—

सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि

(१) श्री महात्मा नारायणस्वामी जी महाराज
(२) ,, बा० घनश्यामसिंह जी गुप्त
(३) ,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
(४) ,, म० कृष्ण जी
(५) ,, कुँवर चाँदकरण जी शारदा
(६) ,, शिवचरण जी वकील
(७) ,, पूर्णचन्द्र जी
(८) ,, ला० नारायणदत्त जी
(९) ,, पं० बंशीलाल जी
(१०) ,, प्रो० सुधाकर जी
(११) ,, ला० देशबन्धु जी

आर्य्य वीर दलों के प्रतिनिधि

(१२) ,, म० देशराज जी
(१३) ,, म० रविराम जी
(१४) ,, पं० मिश्रीलाल जी
(१५) ,, पं० पन्नालाल जी
(१६) ,, ब्रह्मानन्द जी

नामजद किए हुए प्रतिनिधि

(१७) श्री ला० अमोलकराम जी
(१८) ,, पं० शिवदयालु जी
(१९) ,, बा० शिवचन्द्र जी
(२०) ,, पं० धर्मवीर जी
(२१) ,, भक्त फूलसिंह जी

अधिकारी

इस वर्ष समिति के निम्न अधिकारी रहेः—

प्रधान—श्री बा० घनश्यामसिंह जी

उप प्रधान—श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी

प्रधान मन्त्री व दलपति—श्री प्रो० सुधाकर जी

कोषाध्यक्ष—श्री ला० नारायणदत्त जी

आर्य रक्षा समिति की निधि का कुल धन वर्ष के अन्त पर २६०१४।=)७ था जिसमें से २५०००) स्थिर निधि है।

आर्य्य वीर दल

सभा इस सम्बन्ध मे गम्भीरता पूर्वक विचार कर रही है कि आर्यवीर दलों को किस प्रकार सुसङ्गठित करके उन्हें सेवा के लिये आर्यसमाज की एक शक्ति बनाया जा सकता है।

हैदराबाद समस्या

पिछले कई वर्षों से हैदराबाद की समस्या उग्र रूप मे सभा का ध्यान अपनी ओर खींच रही है। इस समस्या के हल के लिये शायद ही कोई वैध प्रयत्न हो जो सभा ने न किया हो। अन्त मे ३०-४-३८ की सभा की अन्तरङ्ग सभा में इस सम्बन्ध में भावी कार्य क्रम निर्धारित करने का विषय उपस्थित हुआ। और अपनी मॉंगें निर्धारित करके निश्चय किया गया कि समस्त आर्य जगत् को अपने साथ लेने के लिए हैदराबाद राज्य के आस-पास एक आर्य सम्मेलन किया जाय। तथा यह भी निश्चय किया कि अन्तिम उपाय के रूप मे सत्याग्रह किया जाय। पुनः यह विषय ९-१०-३८ की अन्तरङ्ग सभा मे प्रस्तुत हुआ और इस ऐतिहासिक अन्तरङ्ग ने हैदराबाद में आर्य समाज के अधिकारों की रक्षा के लिए कार्य करने का सम्पूर्ण अधिकार श्री महात्मा नारायण स्वामी जी को दे दिया।

आर्य सम्मेलन शोलापुर

श्री पूज्य स्वामी जी सभा के उपर्युक्त निर्णय के अनुसार शोलापुर में जहाँ हैदराबाद राज्य की सीमा ब्रिटिश इलाके से मिलती है। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी उपप्रधान सभा के साथ गए और आर्य सम्मेलन का प्रबन्ध करने लग गए। यह सम्मेलन २५, २६ और २७ दिसम्बर ३८ को शोलापुर में बड़े समारोह से हुआ और इसी में हैदराबाद मे सत्याग्रह करने का निश्चय किया गया। इस सम्मेलन के सभापति प्रसिद्ध महाराष्ट्रीय नेता सेन्ट्रल ऐसेम्बली के नेशनलिस्ट

पार्टी के नेता श्री लोकनायक अये थे। आर्य सम्मेलन शोलापुर की सफलता और समारोह के लिए, सभा श्री लोकनायक अये तथा पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज का आभारी है। इस बीच में सभा ने हैदराबाद सम्बन्धी पूरा केस पुस्तक रूप में तय्यार करके जनता में वितरण किया।

सम्मेलन के प्रस्ताव

प्रस्ताव सं० १

यह सम्मेलन श्री राजा अवधेशसिंह जी कालाकाकर (अवध) नरेश।

(२) श्री पं० घासीराम जी, M. A L L B. एडवोकेट मेरठ।

(३) श्री पं० देवीदत्त जी टैम्प्रेन्स प्रोचर, कानपुर।

(४) श्री पं० चमूपति जी एम० ए० लाहौर।

(५) श्री राजरत्न पं० आत्माराम जी अमृतसरी, बड़ौदा।

(६) श्री महात्मा हंसराज जी लाहौर के, असमय निधन को, आर्य समाज की महान क्षति समझता है और उनके अवशिष्ट परिवार के साथ हार्दिक सहानुभूति और संवेदना प्रकट करता है।

प्रस्ताव सं० २

यह सम्मेलन हैद्राबाद राज्य के धर्म तथा कर्मवीरों, म० वेदप्रकाश, धर्मप्रकाश और महादेव जी के, मताध मुसलमानों द्वारा नृशंस हत्याओं की घोर निन्दा करता है तथा इन आर्य वीरों के धर्मभाव का आदर करता है। इस सम्मेलन को यह जान कर हर्ष है कि इन आर्यवीरो ने धर्म की वेदी पर अपने बलिदानों से आर्यों की विशिष्ट मर्यादाओं और आर्य समाज के गौरव में वृद्धि की है। इस सम्मेलन को आशा है कि महस्रों आर्यवीर उनके पद चिन्हों का अनुसरण करेंगे, यह सम्मेलन, इन हुतात्माओं के परिवार के प्रति, उनके दुःख में, हार्दिक संवेदना प्रकट करता है।

प्रस्ताव सं० ३

यह सम्मेलन हैद्राबाद के आर्यवीरों श्री रामजी तालाऊसी, म० सत्यनारायण जी तथा पं० श्यामलाल जी की असाधारण अवस्थाओं में हुई मृत्युओं पर दुःख प्रकट करता है तथा उनकी मृत्यु को आर्य समाज की गौरव वृद्धि का कारण समझते हुए, उनके परिवारों के साथ हार्दिक सहानुभूति और संवेदना प्रकट करता है।

प्रस्ताव सं० ४

यह भारत वर्ष की आर्य समाजें निजाम राज्य के अपने सहधर्मियों की सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्वतन्त्रता से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं। जहाँ साधारणतया सभी हिन्दू और विशेषतया आर्य भाई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वर्णनातीत कष्ट सहन कर रहे हैं, यह आर्य सम्मेलन (कांग्रेस) हैदराबाद के अपने सहधर्मियों के निम्न लिखित आवश्यक अधिकारों की घोषणा करता है—

१—धार्मिक कृत्यों व उत्सव के करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

२—धार्मिक प्रचार, उपदेश, कथा, प्रवचन, व्याख्यान व भजन कहने, नगर कीर्तन व जलूस निकालने, आर्य मन्दिरों का निर्माण करने, यज्ञशाला व हवन कुण्डों के बनाने, 'ओ३म् ध्वजा' लगाने, नए समाजों की स्थापना करने और वैदिक धर्म तथा वैदिक संस्कृति सम्बन्धी पुस्तकों व पत्रों के प्रकाशन करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

३—राज्य अथवा राजकर्मचारियों को न तो तबलीग [शुद्धि] में भाग लेना चाहिए, न उसे प्रोत्साहित करना चाहिए, न जेलों में हिन्दू कैदियों तथा स्कूलों में हिन्दू बच्चों को मुसलमान बनाया जाना चाहिए और न हिन्दू अनाथ मुसलमानों के सुपुर्द किये जाने चाहिए।

४—राज्य के धर्म विभाग [सीगीए अमूरेए मजहबी] को बन्द कर देना चाहिए अथवा हिन्दुओं और आर्यों की धार्मिक बातों तथा मन्दिरों पर इसका कोई प्रभुत्व नहीं रहने देना चाहिए।

५—हिन्दुओं और आर्यों के मुकाबले में धर्मान्ध व साम्प्रदायिक मुस्लिम समाचार पत्रों एवं साहित्य को जो पक्षपात पूर्ण संरक्षण दिया जाता है उसे बन्द कर देना चाहिए।

६—बिना किसी मुकद्दमे के चलाये अथवा अपराध के सिद्ध किए ही आर्य उपदेशकों पर रियासत में आने के बारे में जो प्रतिबन्ध लगाए हैं, वे हटा दिये जावें।

७—पुलिस तथा राज्य के दूसरे कर्मचारियों द्वारा हिन्दुओं और आर्यों के मुकाबले में मुसलमानों की जो तरफदारी की जाती है, वह बन्द होनी चाहिए।

८—आर्य व हिन्दू बच्चों को कम से कम प्रारम्भिक (प्राइमरी) और माध्यमिक शिक्षा उनकी मातृ भाषा में होनी चाहिए, न कि उर्दू में।

६—हिन्दुओं और आर्यों के द्वारा व्यायामशाला और बालक बालिकाओं की शिक्षा संस्थाओं जैसे पुस्तकालयों, वाचनालयों की स्थापनाओं पर कोई प्रतिबन्ध न होने चाहिए।

प्रस्ताव संख्या ५

(अ) यतः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा निजामराज्य द्वारा गत ६ वर्षों मे प्रथम प्रस्ताव मे वर्णित विविध अधिकार सम्बन्धी शिकायतों के निराकरण की सभी प्रार्थनायें और प्रयत्न निष्फल हो चुके हैं और क्योंकि निजाम राज्य तथा समस्त भारतवर्ष के आर्यों मे इस सम्बन्ध में घोर असंतोष फैल रहा है, इस सम्मेलन की सम्मति में अब अपनी शिकायतों के निराकरण के लिये आत्मत्याग व दुःख-सहिष्णुता पूर्ण अहिंसात्मक सत्याग्रह के अतिरिक्त और दूसरा चारा नहीं रह गया है।

(आ) अतः यह सम्मेलन अहिंसात्मक सत्याग्रह के आन्दोलन के संचालन के लिये एक "सत्याग्रह समिति" नियत करता है, जिसके प्रथम डिक्टेटर श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज होंगे और समस्त भारत की आर्य व हिन्दू जनता को आदेश करता है कि वे इस आन्दोलन को पूर्ण सहायता दें।

(इ) यह सम्मेलन श्री महात्मा नारायण स्वामी जी को अधिकार देता है कि वे इस समिति के सदस्यों की संख्या व नामावलि नियत करलें।

(ई) यह सम्मेलन अपने उपर्युक्त अधिकारों की तुरन्त प्राप्ति के लिये इस समय अपने सत्याग्रह को निम्नलिखित मार्गों पर केन्द्रित करता है:—

१—अन्य मतावलम्बियों के भावों का उचित सम्मान करते हुए वैदिक धर्म और संस्कृति के प्रचार एवं अनुष्ठान की पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

२—नये आर्यसमाजोंकी स्थापना, नये आर्यमन्दिरों व हवनकुण्डोंके निर्माण या पुराने मन्दिरों की मरम्मत करने के लिये धर्म विभाग (सीगाये-अमूरए मजहबी) अथवा किसी अन्य विभाग की आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं रहनी चाहिए।

३—यह भी निश्चय हुआ कि सत्याग्रह आन्दोलन को स्थगित करने का अन्तिम अधिकार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को होगा।

प्रस्ताव संख्या ६

क्योंकि यह ज्ञात हुआ है कि हमारे आन्दोलन के सम्बन्ध में मिथ्या और भ्रमपूर्ण बातें फैलाई जा रही हैं अतः यह सम्मेलन इस बात की पूर्ण घोषणा

करना आवश्यक समझता है कि उद्देश्य की पवित्रता के लिए सत्य और अहिंसा का विशुद्ध रूप से पालन अत्यन्त आवश्यक है। उन सभी स्वयसेवकों को जिन्होंने सत्याग्रह के लिए अपने नाम प्रस्तुत किये हैं अथवा आगे चलकर करेंगे यह आदेश देता है कि वे घोर से घोर आपत्तियों के उपस्थित होने पर भी मन वचन और कर्म द्वारा सत्य एव अहिंसा के व्रत का पूर्णतया पालन करें जिससे वे अपने लक्ष्य की पूर्ति कर सकें।

प्रस्ताव संख्या ७

अनेक स्थानों पर फैलाये गये भ्रमों को दूर करने के उद्देश्य से यह सम्मेलन घोषणा करता है जैसा कि हमारी मांगों के स्वरूप से भी स्पष्ट है कि हैदराबाद राज्य में आर्य समाज का वर्तमान आन्दोलन राजनैतिक व साम्प्रदायिक नहीं है किन्तु उसका लक्ष्य विशुद्ध रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक स्वतन्त्रता की प्राप्ति है। वस्तुतः हमें अत्यन्त प्रबल और संगठित साम्प्रदायिक शक्तियों के विरुद्ध युद्ध करना पड़ रहा है।

प्रस्ताव सं० ८

यह सम्मेलन निजाम सरकार तथा स्वयं श्रीमान निजाम महोदय को यदि उन्हें इस सम्बन्ध में किसी प्रकार का भ्रम है, यह बतला देना चाहता है और साथ ही बाह्य-जगत् पर भी प्रगट कर देना चाहता है कि पुलिस के झूठे मुकदमों, अत्यन्त तुच्छ गवाहियों के आधार पर न्याय विभाग की कठोर सजाओं एव अन्य दुर्व्यवहारों का वही परिणाम हुआ है जो प्रायः ऐसी बातों का हुआ करता है अर्थात राज्य की पुलिस और प्रबन्ध के अन्य महकमों पर से हिन्दुओं और आर्यों का विश्वास हट गया है और न्याय विभाग पर से भी तेजी के साथ उठता जा रहा है।

प्रस्ताव सं० ६

आर्य-प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य के उप-प्रधान धर्मवीर पं० श्यामलाल जी के अन्तिम पत्र के आधार पर जो उन्होंने बीदर की जेल से भेजा था और जिसमें दुर्व्यवहार की शिकायत की गई थी, उनके मृत शरीर को देने से पूर्व लिखित आश्वासन लेने की जेल के अधिकारियों की सन्देहजनक कार्यवाही, शोलापुर में शव परीक्षा की डाक्टरी रिपोर्ट एवं अन्य कई आवश्यक तथा प्रासङ्गिक बातों की

विद्यमानता में यह आरोप लगाना युक्तियुक्त है कि पं० श्यामलाल जी की मृत्यु का तत्कालिक कारण उनके प्रति जेल में हुआ दुर्व्यवहार है। यह सम्मेलन इस मामले में खुली जाँच की माँग करता है जो हैदराबाद से बाहर के कानून के प्रसिद्ध पंडितों द्वारा कराई जाय तथा जिसमें तत्सम्बन्धी सभी व्यक्तियों का विश्वास हो।

प्रस्ताव सं० १०

यह सम्मेलन उन अनेक स्त्री, पुरुषों और बच्चों के प्रति जिन्होंने वैदिक धर्म और संस्कृति की पवित्र वेदी पर अपने प्राणों की आहुति दी है, अपनी प्रसन्नता एवं कृतज्ञता प्रकाशित करता है और बधाई देता है। यह सम्मेलन उन बहुसंख्यक स्त्री, पुरुषों को उनकी नैतिक सहायता और सहानुभूति के लिये धन्यवाद देता है जिनसे आर्यसमाज के सदस्य न होते हुए भी धार्मिक स्वतन्त्रता के लिये हमारे इस युद्ध में हार्दिक सहानुभूति और सहायता प्राप्त हो रही है।

प्रस्ताव सं० ११

उस्मानिया यूनिवर्सिटी तथा उसके अन्तर्गत कालेजों के हिंदू प्रार्थना भवनों में केवल हिन्दू विद्यार्थियों द्वारा वन्देमातरम् गीत गाये जाने पर जिसे वे अपनी प्रार्थना का अङ्ग मानते हैं—वहाँ के विद्यार्थियों के पृथक् करने को जिसके परिणाम स्वरूप लगभग ८०० विद्यार्थियों को अपना विद्याभ्यास छोड़ना पड़ा—यह सम्मेलन अन्याय और धार्मिक स्वतन्त्रता म अनुचित हस्ताक्षेप मानता है।

यह सम्मेलन उन अनेक वीर विद्यार्थियों को बधाई देता है जिन्होंने अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता कायम रखने के निमित्त पढ़ाई की परवाह न करके समस्त कष्टों को साहस के साथ सहन किया है।

प्रस्ताव सं० १२

क्योंकि इण्डियन नेशनल काँग्रेस ने अपने प्रसिद्ध कराँची के नागरिक अधिकार सम्बन्धी प्रस्ताव द्वारा सम्पूर्ण भारत के निवासियों की जिसमें देशी रियासतों की प्रजा भी सम्मिलित है जनता में शान्ति तथा सदाचार को दृष्टि में रखते हुए अपने अपने कर्मपालन व धार्मिक कृत्य करने की पूर्ण स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखने की घोषणा की है, क्योंकि उक्त काँग्रेस ने अनेक बार प्रस्तावों द्वारा प्रगट किया है कि भारतीय जनता की जिसमें रियासत निवासी भी सम्मिलित हैं पूर्ण व्यक्तिगत एवं नागरिक तथा सार्वजनिक स्वतन्त्रता की रक्षा काँग्रेस का ध्येय

है और क्योंकि इस समय आर्यसमाजी हैदराबाद रियासत मे अपने आवश्यक धार्मिक तथा सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा के लिये एक गम्भीर अहिंसात्मक आन्दोलन मे संलग्न हैं, यह आर्य सम्मेलन आशा करता है कि इण्डियन नेशनल कांग्रेस की हैदराबाद रियासत के हमारे इस आन्दोलन के प्रति सहानुभूति तथा सहायता रहेगी ।

इस सम्मेलन को यह भी पूर्ण आशा है कि समस्त सार्वजनिक संस्थाएँ यथा हिन्दू महासभा सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी तथा देशी राज्य परिषद् डेमोक्रेटिक स्वराज्य पार्टी, लिबरल फेडरेशन, सिविल लिबरटीज यूनीयन, कांग्रेस नेशनलिस्ट पार्टी इत्यादि जो जो जनता के धार्मिक तथा सांस्कृतिक स्वत्वों की पक्षपातिनी हैं हैदराबाद रियासत के आर्यसमाजियों के इस आन्दोलन में क्रियात्मक सहायता देंगी ।

यह सम्मेलन यह भी आशा करता है कि प्रत्येक न्याय समानता से प्रेम रखने वाला चाहे वह किसी भी धर्म या जाति से सम्बन्ध रखता हो इस आन्दोलन के साथ अपनी सहानुभूति प्रकाशित करेगा ।

प्रस्ताव सं० १३

(अ) इस सम्मेलन की सम्मति मे अब समय आगया है जब कि भारतीय तथा सब आर्यसमाजों की ओर से भारतीय सरकार को अपील की जाय कि वह निजाम राज्य में आर्यसमाजियों के अत्यन्त आवश्यक धार्मिक तथा सामाजिक अधिकारों की रक्षा करे क्योंकि अब तक निजाम सरकार से हर प्रकार के प्रयत्न इन अधिकारों की प्राप्ति के लिये विफल हो चुके हैं ।

(आ) यह सम्मेलन सार्वदेशिक सभा को अधिकार देता है कि वह इस सम्बन्ध में उचित कार्य करे ।

प्रस्ताव सं० १४

बिना किसी अभियोग के चलाये अथवा जाच पड़ताल के किये निजाम राज्य के उत्साही प्रचारक पं० नरेन्द्र जी के कालापानी दिये जाने को यह सम्मेलन घोर अत्याचार समझता है और उसे घृणा की दृष्टि से देखता है तथा प० नरेन्द्र जी को उनकी सेवा एवं त्याग के लिये बधाई देता है ।

प्रस्ताव संख्या १५

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि भारत तथा इसके बाहरको समस्त आर्य समाजें रविवार २२ जनवरी १६३६ को 'हैदराबाद दिवस' मनावें जिसमें जनता को निमन्त्रित कर सार्वजनिक सभाओं में हैदराबाद सम्बन्धी सम्पूर्ण घटना को बता कर इस सम्मेलन मे स्वीकृत प्रस्ताव संख्या ४ व ५ को स्वीकार कराके जनता का सहयोग प्राप्त करें और इस आन्दोलन को सफल बनाने में पूर्ण सहायता दें।

प्रस्ताव संख्या १६

यह सम्मेलन निश्चय करता है कि प० श्यामलाल जी, म० वेदप्रकाश जी धर्मप्रकाश जी, महादेव जी, रामजी, सत्यनारायण जी, भीमराव जी, मानिकराव जी, आदि धर्मवीरों की स्मृति में हैदराबाद आन्दोलन के कार्य संचालन तथा शोलापुर में आर्यसमाज के कार्य को विस्तृत और संगठित करने के लिए शोलापुर में एक आर्यमंदिर का निर्माण कराया जाय और इसके लिए एक समिति निम्न सज्जनोंकी बनाई जावे जो धनादि सग्रह करके मन्दिर निर्माण करनेका यत्न करे।

(१) श्री० म० नारायण स्वामीजी	(२) श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
(३) श्री० ला० नारायणदत्त जी	(४) „ विश्वनाथ जी कनाले
(५) „ सेठ लक्ष्मीनारायण जी राठी	(६) „ दत्तात्रेयप्रसाद जी
(७) „ विनायकराव जी	(८) „ पं० बन्शीलाल जी

यह समिति आवश्यकता पड़ने पर समिति में अन्य नाम भी बढ़ा सकती है।

प्रस्ताव संख्या १७

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन बरेली [सन् १६३२] में स्वीकृत निम्न प्रस्ताव की पुष्टि करता हुआ सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना करता है कि वह समाजों को उस पर शीघ्र कार्य करने की प्रेरणा करे "यह सम्मेलन समस्त आर्य समाजों को प्रेरणा करता है कि वे अपने अपने यहाँ आर्य वीर दलों की स्थापना कराने की ओर विशेष ध्यान देवें और आर्य वीरों के कार्यों में हर प्रकार उचित सहयोग सहायता और प्रोत्साहन प्रदान करने का प्रयत्न करें। इन आर्य वीर दलों का मुख्य काम आर्य संस्कृति की रक्षा पीड़ितों की सहायता तथा सेवा होगा।"

प्रस्ताव संख्या १८

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन अजमेर [१९३३ ई०] के स्वीकृत निम्न प्रस्तावों की पुष्टि करता हुआ सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना करता है कि जहाँ जहाँ इस प्रस्ताव को कार्य में परिणत न किया गया हो वहाँ उसे क्रियात्मक रूप दिलाने का यत्न करे ।

(क) "आर्य समाज की संस्थाओं का प्रबन्ध ट्रस्ट अथवा उपसभा आदि बना कर आर्यसमाज की अन्तरंग सभा से पृथक् रक्खा जावे ।" अन्तरंग विशेष रूप से प्रचार का कार्य्य किया करे ।

(ख) आर्य मन्दिरों को संस्थाओं से खाली करके उनमें सन्ध्या हवन और कथा आदि की प्रणाली प्रचलित करके उन्हें वास्तविक मन्दिर बनाया जाय जिससे स्त्री पुरुषों में धार्मिकता और भक्ति की मात्रा बढ़े । आर्य मन्दिरों में बारात न ठहरने दी जाय और न उनमें हास्य सम्मेलन तथा अन्य किसी प्रकार के अवैदिक कार्य करने दिये जावें ।

प्रस्ताव संख्या १९

यह सम्मेलन सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन, अजमेर (१९३३ ई०) में स्वीकृत निम्न प्रस्तावकी पुष्टि करता हुआ सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना करता है कि उसकी ओर समाजों का फिर ध्यान दिलाने की कृपा करें "आर्य समाज के प्रचार कार्य में संस्थाओं की वृद्धि बाधक न हो इसलिए आवश्यक है कि—

[१] कोई नवीन संस्था बिना प्रांतिक प्रतिनिधि सभा की स्वीकृति प्राप्त किए न खोली जावे ।

[२] जो संस्थायें चलने के अयोग्य है और जिनके लिए धन प्राप्त करने की प्रत्येक समय चिंता रहती है ऐसी संस्थायें बन्द कर देनी चाहिए ।

नोट—कौन संस्था चलने के अयोग्य है इसका निर्णय प्रान्तिक सभायें करेंगी ।

[३] जो संस्थायें सफलता से चल रही हैं उनके प्रबन्धार्थ पृथक् रजिस्टर्ड ट्रस्ट बना दिये जावें और उसमें आर्य समाज के अधिकार सुरक्षित रक्खे जावें ।

[४] स्थानीय संस्था को चलाने के लिए बाहर से धन संग्रह न किया जावे ।

य दि कोईविशेष आवश्यकता हो तो प्रान्तिक प्रतिनिधि सभा से आज्ञा प्राप्त करके धन संग्रह किया जावे ।"

प्रस्ताव संख्या २०

सार्वदेशिक आर्य-सम्मेलन अजमेर [१६३३ ई०] ने अपने स्वीकृत निम्न प्रस्ताव द्वारा आर्य समाजों के लिए पञ्च वर्षीय कार्यक्रम बनाने का आदेश दिया था। इस सम्मेलन को यह जान कर दुःख हुआ कि इस की ओर प्रान्तिक सभाओं ने बहुत थोड़ा ध्यान दिया है और इसलिए अपेक्षित कार्यक्रम नहीं बन सका। इस लिए यह सम्मेलन सार्वदेशिक सभा से विशेष रीति से प्रार्थना करता है कि वह देखे कि अपेक्षित प्रोग्राम आगामी पाँच वर्षों के लिए बन सकें।

"(क) आर्य समाज की सामूहिक शक्ति वेगवती हो इसके लिए आवश्यक है कि उसका विशेष अवधि के लिए विशेष कार्यक्रम बनाया जावे। सम्प्रति उसे पाँच वर्ष के लिए अन्य कार्यों को पूर्णतया जारी रखते हुए निम्न कार्यों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए—

(१) ग्रामों में वैदिक धर्म प्रचार ।

(२) दलितों में वैदिक धर्म-प्रचार और उनकी आर्थिक व सामाजिक अवस्था की उन्नति ।

(३) शुद्धि ।

(४) प्रचलित जात पांत पर ध्यान न देकर गुण कर्मानुसार विवाह करने का प्रचार तथा आर्यों का अपने विवाह स्वयं इसी प्रकार करने और अपनी संतानों को ऐसी ही करने की सलाह देना ।

(५) मादक-द्रव्य निवारण ।

प्रस्ताव संख्या २१

गढ़वाल [कुमायूँ] के पहाड़ी जिले में जिसमें टिहरी राज्य भी शामिल है, उच्च कही जाने वाली जातियोंकी ओर से वहाँ की दलित जातियों पर अनेक अत्याचार होते रहते हैं। उनके अनेक बलात् डाह दिये जाते हैं। वर वधू को डोला [पालकी] में सवार होने से रोका जाता है। बारातों को लूट लिया जाता है। जलाशयोंसे पानी नहीं लेने दिया जाता इत्यादि। यह सम्मेलन कथित उच्च जातियों

के इस अमानुषिक व्यवहार को घृणा की दृष्टि से देखता है और उनको आदेश देता है कि विशाल हिन्दू जाति के हित को लक्ष्य में रखते हुए उन्हें इस प्रकार का दुर्व्यवहार शीघ्र से शीघ्र बन्द कर देना चाहिए।

आय व्यय का विवरण

आय	व्यय
४०००) ऋण सार्वदेशिक सभा से	४८७)।।। मोटर तांगा आदि का किराया
१३२४५।=)।।। सत्याग्रह निधि	१२६।।।)।। स्टेशनरी
४१४) दुकानों का किराया	१५१८।)।। भोजन व्यय
५०५) स्वागत कारिणी सभा के सदस्यों की फीस	२३८।।=)। डाक व्यय
१११४) बिक्री टिकिट प्रतिनिधि सदस्य	२९८।)।।। तार
२४५६।।-)।। दर्शक टिकटों की बिक्री	१०५३।।।=)।। मार्ग व्यय
८०।।-)।।। विविध	२००४।।)।।। आर्यनगर निर्माण
१६।।[illegible])। बिक्री सामान	१२८०-)।।। छपाई
२१८३५।-)। योग	६०४।।।=)।। निज़ाम राज्य प्रतिनिधि सभा की सहायता
	२०७।।-)।। स्वयं सेवकों की वर्दी आदि
	४१) बैंड
	१०५०) बिजली की रोशनी का व्यय
	१००) गैस के हंडे
	२२) फोटो
	२३।।=) टाइप राइटिंग का व्यय
	७४[illegible]) प्रतिनिधि आदियों के फूल आदि
	४४।) पदक व्यय
	५६७।।-)।।। विविध व्यय
	९७४४)।। योग

सत्याग्रह निधि में धन की प्राप्ति

संख्या	नाम प्रान्त	धन परिमाण
१	पंजाब (आर्य प्रतिनिधि सभा)	२४६२)
२	„ (आर्य प्रादेशिक सभा	४८५॥=)
३	संयुक्तप्रान्त	३५५०॥।)
४	देहली प्रान्त	२६७१।)
५	विहार प्रान्त	१६३५॥)
६	बङ्गाल „	५०)
७	राजस्थान „	८२२॥।=)
८	सिन्ध „	३२६)
९	बम्बई „	१२३३=)
१०	मद्रास „	११६१)
११	मध्य प्रदेश	८५१॥।=)
१२	हैदराबाद राज्य	८७१॥।≡)॥।
१३	विदेश	३४०॥।≡)
		योग १६७६२॥=)॥।
	शोलापुर मे प्राप्त हुए	१३२४५।=)।॥
	देहली „ „	३५४७।)

सत्याग्रह

शोलापुर सम्मेलन के सत्याग्रह सम्बन्धी निर्णय का समस्त आर्य जगत ने हृदय से समर्थन किया और इस सभा की २७-१२-३८ की अन्तरङ्ग सभा ने सम्मेलन के अन्य निर्णयों के साथ उसे सम्पुष्ट कर दिया।

सम्मेलन के तत्काल बाद श्री पूज्य स्वामी जी महाराज ने निजाम सरकार को उनके प्राइम मिनिस्टर सर अकबर हैदरी के द्वारा आर्य सम्मेलन शोलापुर के सत्याग्रह सम्बन्धी निश्चय की सूचना दी और १४ दिन का समय देकर प्रार्थना की कि वे आर्य समाज की मांगों को स्वीकार कर के सत्याग्रह का अवसर उपस्थित न होने दें। परन्तु निजाम सरकार ने इस प्रेरणा के साथ भी वही व्यवहार किया जो सभा की अन्य प्रेरणाओं के साथ करती रही थी। फलतः

श्री स्वामीजी ने सत्याग्रह की घोषणा करदी और २२-१-३६ को 'हैदराबाद दिवस' मनाने की, देश के समस्त हिन्दू और आर्य जगत से अपील की और आर्य सम्मेलन के सत्याग्रह सम्बन्धी प्रस्ताव पर स्वीकृति की मुहर लगा कर भावी संग्राम के लिए बड़ी से बड़ी धन जन की कुर्बानी के लिए सन्नद्ध रहने का आह्वान किया। देश के कोने २ में 'हैदराबाद दिवस' अभूत पूर्व समारोह और सफलता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर जो उत्साह आर्य मात्र ने भावी कुर्बानी के लिए दिखलाया उससे सभा और श्री पूज्य स्वामी जी महाराज को विश्वास होगया कि सत्याग्रह संग्राम सफल होगा।

इस प्रकार प्रोत्साहित होकर श्री पूज्य स्वामी जी महाराज ने ३०-१-३६ को कतिपय सत्याग्रहियों के साथ युद्ध भूमि के लिए कूच कर दिया और हैदराबाद जा पहुचे। हैदराबाद के अधिकारी स्वामी जी महाराज को पकड़ कर राज्य की सीमा के बाहर कर गए। स्वामी जी ने पुन. सत्याग्रह किया और इस बार उन्हें गिरफ्तार करके १ साल के कारावास का दण्ड दिया।

स्वामी जी महाराज की इस सर्व प्रथम पवित्र आहुति ने बिजली का कार्य किया। सत्याग्रह के लिए अत्यन्त जोश पैदा हो गया, और लोग बड़ी से बड़ी कुर्बानी के लिए न केवल तय्यार ही देख पड़ते थे वरन् युद्ध मे सब से पहिले जाने और धन देने का श्रेय प्राप्त करने के लिए यत्न शील थे। इस के पश्चात् समस्त आर्य जगत् की प्रगतियों का केन्द्र हैदराबाद सत्याग्रह हो गया था और इसकी सफलता के लिए आर्य समाज का बच्चा बच्चा प्रत्येक सभा सोसाइटी और संस्था चिन्तित और यत्नवान थी।

श्री शिवचन्द्र जी मंत्री आर्य रक्षा समिति का कार्य

हैदराबाद, शोलापुर, बार्सी, बम्बई तथा नासिक का दौरा

श्री शिवचन्द्र जी ने जून जौलाई १६३८ में श्री प्रधान सभा के साथ हैदराबाद का दौरा किया। उन्होंने वहाँ पर वह सामग्री जिसका उल्लेख "The Case of Arya Samaj in Hyderabad State" नामक पुस्तक मे है एकत्रित की। वहाँ से वह श्री पं० बन्सीलाल जी मंत्री आ० प्र० सभा निजाम राज्य के साथ आर्यन कॉंग्रेस के लिए स्थान तथा भूमि देखने के लिए शोलापुर और बार्सी गये।

वहाँ से बम्बई और नासिक गये। बम्बई में हैदराबाद की समस्या पर व्याख्यान दिए तथा नासिक में Dr. Kurtkoti को वहाँ की परिस्थिति से परिचित कराया।

हैदराबाद रियासत में प्रवेश-निषेध

इस दौरे से कुछ दिन लौटने के बाद ही निज़ाम सरकार ने इन पर देहली में बैठे हुए "Externment orders" जारी किये।

The Case of Aryasamaj in Hyderabad State
नामक पुस्तक में योग

"The Case of Aryasamaj in Hyderabad State" नामक पुस्तक की सामग्री जुटाने का कार्य किया।

आर्य कुमार परिषद् की रजत जयंती में भाग

बिजनौर (यू० पी०) में अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की रजत जयन्ती के अवसर पर वहाँ जाकर भाग लिया।

आर्यन कांग्रेस शोलापुर

ता० २८ अक्तूबर १६३८ को पूज्य महात्मा नारायण स्वामीजी महाराज के साथ आर्यन कांग्रेस के प्रबन्ध के सम्बन्ध में शोलापुर गये और आर्यन कांग्रेस की समाप्ति तक वहाँ रहकर Publicity, Correspondence तथा वहाँ के Local officials आदि से मिलकर और उनसे पत्र व्यवहार करके प्रबन्ध कराने का कार्य किया।

बम्बई में समाचार पत्रों के सम्पादकों से भेंट

शोलापुर से लौटते हुए बम्बई में स्थानीय समाचार पत्रोंके सम्पादकों तथा प्रतिष्ठित सज्जनों से सत्याग्रह आन्दोलन के सम्बन्ध में भेंट की।

लुधियाना स्टेट्स पीपल्स कान्फ्रेंस में आन्दोलन

लुधियाना में आल इण्डिया स्टेट्स पीपल्स कान्फ्रेंस के अवसर पर जाकर हैदराबाद सम्बन्धी साहित्य का भेंट तथा वितीर्ण कर आन्दोलन किया।

त्रिपुरी कांग्रेस के अवसर पर आन्दोलन

त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर जाकर हैदराबाद सम्बन्धी साहित्य प्रतिष्ठित सज्जनों को भेंट किया।

श्री मेघराज जी का वध

श्री मेघराज जी आर्य समाज नारायण गढ़ (होल्कर स्टेट) के प्रधान थे और आर्य समाज के पुराने कार्य कर्ता थे। दलित भाइयों के कई बालकों को रियासत के सरकारी स्कूलों में प्रविष्ट कराने में इनका हाथ था। इन्दौर दरबार की सराहनीय मन्दिर प्रवेश आज्ञा को कार्यान्वित करने का भी यत्न कर रहे थे। इसी सिलसिले में उनका शोक जनक वध हुआ।

अजमेर का झगड़ा

गत वर्ष श्री प्रधान जी ने अजमेर के झगड़े के सम्बन्ध में अपना निर्णय दिया था और आशा थी कि उसके अनुसार कार्य करने से अजमेर के झगड़े शान्त हो सकेगें। परन्तु दुर्भाग्य से वहां का वातावरण फिर क्षुब्ध होने लग गया है। सभा इस सम्बन्ध में विचार कर रही है कि इस विषय में क्या किया जा सकता है। आर्य समाज के सङ्गठन की रक्षा करना और उसे सुदृढ़ बनाने का यत्न करना, यह सभा अपना पवित्र कर्त्तव्य समझती है।

सार्वदेशिक भवन

इस वर्ष भी सभा इस भवनका कोई उपयोग नहीं कर सकी है। म्यूनिसिपल कमेटी से अभी कोई फैसला नहीं हो पाया है। शीघ्र से शीघ्र इस भवन की मरम्मत इत्यादि के लिए यत्न किया जारहा है। यह कार्य श्री लाला नारायणदत्त जी के सुपुर्द किया गया है।

बलिदान भवन

इस भवन की नीचे की दूकानों तथा दूसरी मञ्जिल में कार्यालय के किराए से १४४०) की आय हुई तथा कमेटी इत्यादि के टैक्सों पर ४३६=)७ व्यय हुआ।

भूकम्प निधि

इस वर्ष भी इस निधि के सूद से ५) मासिक की १ छात्रवृति बिहार के एक होनहार निर्धन विद्यार्थी को जारी रक्खी गई।

धर्मार्य्य सभा

इस वर्ष धर्मार्य्य सभा की साधारण सभा का १ तथा अन्तरङ्ग सभा के २

अधिवेशन हुए। तथा संस्कार विधि के संशोधन तथा वानप्रस्थियों की व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में महत्व पूर्ण निश्चय हुए।

वानप्रस्थाश्रम सम्बन्धी निश्चय

(१) वानप्रस्थियों के लिए पेन्शन अथवा अपने पुत्रादि से निर्वाहार्थ धन लेना विहित है परन्तु उन्हें पेन्शन से अपने निर्वाहार्थ लेकर शेष धन सार्वजनिक कार्यों में खर्च कर देना चाहिए।

(२) वानप्रस्थी अपने पूर्व सम्बन्धियों के पास कुछ समय के लिए आवश्यकतानुसार उसी प्रकार ठहर तथा उनसे पत्र व्यवहार कर सकते हैं जिस प्रकार अन्य गृहस्थियों के यहा ठहरते तथा पत्र व्यवहार करते हैं।

(३) वानप्रस्थी किसी ऐसी संस्था में कार्य कर सकते हैं जहां उनके आश्रम सम्बन्धी कर्तव्यों में बाधा न पड़े। आवश्यकतानुसार वे भोजन और वस्त्र संस्था से ले सकते हैं, वेतन किसी दशा में भी नहीं ले सकते।

(४) वानप्रस्थी आश्रम में कुटी बना कर रह सकते हैं।

(५) कन्द मूल आदि के स्थान पर इस समय वानप्रस्थियों का भोजन सात्विक दाल रोटी इत्यादि होना चाहिए।

(६) उनके वस्त्र कुर्ता और धोती सफेद बिना लाँग की होनी चाहिए और एक पीला दुपट्टा गले में डालना चाहिए। धोती के नीचे लंगोट पहनना आवश्यक है।

(७) वानप्रस्थियों को देश कालानुसार जटिल अथवा मुंड होना चाहिए आंशिक मुण्ड नहीं होना चाहिए।

(८) वानप्रस्थियों को केवल 'वानप्रस्थ' शब्द से सम्बोधित करना चाहिए। गृहस्थियों की भाँति लाला जी, बाबू जी इत्यादि से सम्बोधित नहीं करना चाहिए।

संस्कार विधि के संशोधन के सम्बन्ध में २-५-३८ की साधारण सभा ने दो निश्चय किए थे। एक यह है कि संस्कार विधि के संशोधनीय स्थलों की संशोधनों के सहित सूची तय्यार कराई जाय और दूसरा यह था कि संस्कार विधि के विधि भाग के आधार पर पृथक् विधि भाग तैयार कराया जाय। इन प्रस्तावों के सम्बन्ध में इस वर्ष कोई कार्य्यवाही नहीं हो सकी है।

सच्चा धर्म परिवर्तन

[लेखक—श्री प्रो॰ सुधाकर एम॰ ए॰]

संसार की जन संख्या बहुत से धर्मों सम्प्रदायों तथा संघों में बट रही है। प्रत्येक सम्प्रदाय वाला यह चाहता है कि उसका संघ बढ़े । इसके लिये वह अनेक उपाय काम में लाता है। धनादि का प्रलोभन भी एक उपाय है। शासन-शक्ति तथा राष्ट्र का बल भी समय समय पर लोग अपने सम्प्रदायों को बढ़ाने के लिये कार्य में लाते रहे हैं। मुसलमानों तथा ईसाइयों ने इस शक्ति का पूरा पूरा प्रयोग किया है।

इस समय भी हम देखते हैं कि मुसलमान भाई हिन्दुओं को अपने मत में लाने की पूरी चेष्टा करते हैं। ईसाई भी हिन्दू तथा मुसलमानों को अपने धर्म में लाने के लिए पूरी तनदेही दिखा रहे हैं। प्रश्न यह है कि यह धर्म-परिवर्तन क्या सचमुच उपादेय है ? इसमें सन्देह नहीं कि हर एक सम्प्रदाय को पूरी स्वतन्त्रता होनी चाहिए कि वह अपने संघ को बढ़ाये, परन्तु जिन साधनों का वह अवलम्बन करे, वह साधन संदेह से दूर होने चाहिए और उनकी पवित्रता की पूरी रक्षा होनी चाहिए।

यहाँ तक तो ठीक है। परन्तु जिस प्रश्न को मैं पाठकों के सम्मुख लाना चाहता हूँ वह यह कि सच्चा धर्म परिवर्तन किसको कहते हैं ? क्या केवल बुद्धि द्वारा किसी धर्म के सिद्धान्तों को स्वीकार कर लेने का नाम ही धर्म परिवर्तन हो सकता है ? धर्म-परिवर्तन केवल बौद्धिक स्वीकृति नहीं हो सकती। उसका सच्चा स्वरूप बहुत गहरा तथा विस्तृत अनुभव कहलाता है। वह अनुभव कैसे प्रकट होता है इसका वर्णन नहीं हो सकता है। यह अनुभव एक विशुद्ध धार्मिक तथा आध्यात्मिक अनुभव होता है। जब वह अनुभव पैदा होता है तो मनुष्य का सारा जीवन परिवर्तित हो जाता है। वह पहले सा व्यक्ति नहीं रहता। बाह्य रूप से वह वही व्यक्ति दीखता है परन्तु उसका आन्तरिक सारा दृष्टिकोण बदल जाने से उस का आन्तरिक जीवन बिलकुल बदल जाता है। इसी नितान्त परिव-

र्तन को दृष्टि में रखते हुए कई विचारकों ने धर्म-परिवर्तन को पुनर्जन्म के नाम से विभूषित किया है। सचमुच इस गहरे अनुभव से मनुष्य का काया पलट हो जाती है और उसका दूसरा जन्म हो जाता है। इस प्रकार का धर्म-परिवर्तन विरला ही होता है। प्रचलित धर्म-परिवर्तन को हम संघ-प्रवेश का नाम दे सकते हैं। उसको शुद्धि अथवा धर्म-परिवर्तन के नाम से पुकारना ठीक प्रतीत नहीं होता।

यदि यह बात ठीक है कि सच्चे धर्म-परिवर्तन से नया जन्म हो जाता है तो धर्म प्रचारकों को उसी प्रकार के धर्म-परिवर्तन के लिये लोगों को तय्यार करना चाहिए। यह परिवर्तन केवल तर्क या युक्ति के बल से पैदा नहीं हो सकता, बल्कि तर्क या युक्ति का अधिक प्रयोग इस प्रकार के परिवर्तन के मार्ग मे बाधक सिद्ध होता है। यह परिवर्तन हृदय को गहरी धार्मिक शक्तियों के प्रयोग से उत्पन्न होता है। और वही व्यक्ति इस परिवर्तन को पैदा कर सकता है जिसके जीवन में वे शक्तियाँ जागृत हो चुकी हों। जीवन, जीवन से आता है जहाँ जीवन नहीं वहाँ जीवन पैदा करना सम्भव नहीं हो सकता।

हमारे उपदेशक सिद्धान्तों का प्रचार तो अवश्य करते हैं परन्तु जीवन का प्रचार नहीं करते। वह स्वयं उस जीवन के मार्ग पर नहीं चलते, तो फिर लोगों में जीवन कैसे पैदा कर सकते हैं? लोगों को पुनर्जन्म देने वाले उपदेशक विरले ही होते हैं परन्तु जब तक ऐसे उपदेशक प्रचार के मैदान में नहीं आते तब तक धार्मिक जीवन पैदा करना सम्भव नहीं होता और जब तक धार्मिक जीवन जनता में नहीं आता तब तक किसी सम्प्रदाय या धर्म का प्रचार भी सफल नहीं हो सकता। धर्म का प्रचार वस्तुतः जीवन के प्रचार का नाम है और जीवन का प्रचार वही लोग कर सकते हैं जो स्वयं जीवन के भण्डार हों।

मन-मन्दिर

[लेखक—श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट आगरा]

❀

तुम्हारे पूजन को भगवान ।
बना मन-मन्दिर आलीशान ॥

संसार में ईश्वर की पूजा की अनेक विधि प्रचलित हैं और ईश्वर प्रार्थना और उपासना के अनेक ढङ्ग हैं। हम ईश्वर की पूजा की विधि को २ विभागों मे विभाजित कर सकते हैं (१) सूक्ष्मविधि (२) स्थूलविधि।

मनुष्य की आत्मा को पूजा करनी है और ईश्वर की पूजा करनी है। ईश्वर सर्व व्यापक है और सर्व ज्ञाता है। यदि जीवात्मा परमात्मा की पूजा बाह्य जगत में ससार के पदार्थों स करे तो हम उसको स्थूल पूजा कहेंगे।

यह बात नि:सन्देह है कि परमात्मा सर्व व्यापक है मूर्ति मे भी है और पूजने वाले के हृदय के अन्दर भी है परन्तु जीवात्मा तो एक देशी और अल्पज्ञानी है वह हृदय के अन्दर ही निवास करता है उपासना का स्थान वह हो सकता है जहाँ उपासक और उपास्यदेव दोनों विराजते हों और ऐसा पवित्र स्थान केवल मनुष्य का हृदय है और यही ईश्वर पूजा का विशाल मन्दिर है इस मन्दिर के निर्माण के लिये न ईंट और चूने की आवश्यकता है। और न रुपये पैसे की, केवल हम अपनी मानसिक भावनाओं को मर्यादित कर लेने से अपने मन को ईश्वर की पूजा के लिये विशाल मन्दिर बना सकते हैं और यही सूक्ष्म विधि है।

मन मंदिर में उपासना करने की विधि महर्षि दयानन्द जी ने सन्ध्या उपासना की विधि द्वारा हमारे सामने रक्खी है।

ईश्वर और जीव में दूरी या पृथक् होना न स्थान की दृष्टि से है और न काल की दृष्टि से यहाँ तो यदि दूरी है तो केवल ध्यान की दूरी है।

संसार के चमकीले पदार्थों को देखकर मनुष्य का मन और इन्द्रियाँ उनके प्रलोभन में फँस जाते हैं और जीवात्मा उनके झंझट में आकर ईश्वर को भूल जाता है और प्रकृति के बन्धनों में फँस जाता है। ईश्वर उपासना से अभिप्राय यह है कि जीवात्मा संसार में कर्म करता हुआ और प्रकृति के पदार्थों का भोग

करता हुआ भी ईश्वर की ओर से विमुख न हो और ईश्वर को अपने सब कर्मों का द्रष्टा और कर्मफल प्रदाता समझे और ईश्वर की सत्ता का हर समय ध्यान रक्खे।

सन्ध्या-उपासना की विधि को २ हिस्सों में हम विभाजित कर सकते हैं—[१] उपासना के लिए तय्यारी [२] उपासना की तैयारी के अन्तरगत हम आचमन अङ्ग-स्पर्श, मार्जन और प्राणायाम को ले सकते हैं।

आचमन से हमारे अन्दर उपासना के भाव उत्पन्न होंगे।

उपासना करने के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है और इन्द्रियों का केवल बल युक्त होना ही पर्याप्त नहीं उनका पवित्र होना अनिवार्य है। प्राणायाम से हमारा मन शुद्ध और पवित्र होगा। जब हमारे अन्दर उपासना के शुद्ध भाव आजावें तो हमारा शरीर रोग रहित हो जावे और हमारी भावनाएं और मन मन पवित्र हो जावे तब हम उपासना करने के योग्य बन सकेंगे।

उपासना की विधि

उपासना की विधि के अन्तर गत अघमर्षण, मनसा परिक्रमा, उपस्थान, गुरुमन्त्र और नमस्कार मन्त्र हैं।

हमे सन्ध्या में ईश्वर को सब कालों और सब देशों मे व्यापक होने की धारणा करनी है।

अघमर्षण मन्त्र में सृष्टि उत्पत्ति के आरम्भ के समय का वर्णन है। अर्थात उस समय का जब कि अभी प्रकृति ने नाम और रूप धारण नहीं किए थे। ईश्वर का ध्यान उस दशा में कर लेने से हम ईश्वर को सर्व व्यापक और सर्व ज्ञाता होने की धारणा कर सकेंगे और फिर आत्मा को पाप करने का साहस न हो सकेगा और इसलिए इन मन्त्रों का नाम अघमर्षण या पाप नाशक है।

मनसा परिक्रमा के मन्त्रों द्वारा हम को ईश्वर को और ईश्वर की विभूति को सर्वत्र अनुभव करना है ६ दिशाओं में अर्थात् सामने और पीछे दायें और बाँयें ऊपर और नीचे हम प्रकृति के आकर्षक रूपों को देखें और उन में ईश्वर के न्याय और दया को अनुभव करें।

इस से यह लाभ होगा कि हम संसार में हर जगह कर्म करते हुए और विचरते हुए भी ईश्वर को न भूलेंगे और हम यह कह सकेंगे कि "जिधर देखता हूं उधर तू ही तू है" मनसा परिक्रमा के पश्चात उपस्थान का नम्बर है हमने अब

को सब जगह घुमाया और फिर लौटा कर ईश्वर में केन्द्रित कर दिया हम इन भावों को परकार से समझ सकते हैं।

यदि हम परकार या कम्पास से कोई ठीक २ गोल दायरा खेंचना चाहें तो हमको परकार के एक हिस्से को एक स्थान पर अर्थात् सेंटर पर दृढ़ता से केन्द्रित करना होगा और उसके दूसरे हिस्से को हमें सम्भाल कर चारों ओर घुमा देना पड़ेगा और फिर एक सुन्दर गोलाकार निर्माण हो जावगा। उपस्थान में हम उपासना करते हैं और फिर ईश्वर से दीर्घ जीवन और बलयुक्त इन्द्रियों की प्रार्थना करते हैं और शुद्धि बुद्धि की याचना करते हैं अर्थात् तैयारी के समय जिस लक्ष्य की सिद्धि के लिए हमने धारणा की थी उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

बुद्धि और बल के प्राप्त होते ही कहीं घमण्ड न आजाए और फिर सारी उन्नति निष्फल हो जावे इस लिए मन्त्र में नम्रता की प्रार्थना की आवश्यकता है। यदि हमारा मस्तिष्क ईश्वर के चरणोंमें झुका रहेगा तो हमारा सिर संसारमें ऊँचा रहेगा यदि ईश्वर के दरबार में हमने नम्रता न की तो सारे संसार में हमारा सिर नीचा रहेगा न केवल यह कि हम मनुष्य रहते हुए नीचा देखेंगे परन्तु हमारी आत्मा का प्रवेश ऐसी योनियों या शरीरों में होगा जहां सिर ऊँचा करके खड़े होने की सामर्थ ही नहीं है इस प्रकार सन्ध्या उपासना की विधि का सुन्दर सार है। और उस विधि का परस्पर का सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध को दृष्टि में रख कर हम सन्ध्या के हर एक अङ्ग पर विचार करेंगे और सब से पहिले आचमन मन्त्र को लेंगे।

आचमन मन्त्र निम्न प्रकार है :—

ओ३म् शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयो रभिस्रवन्तुनः॥

यह मन्त्र यजुर्वेद के ३६ वें अध्याय का १२वा मन्त्र है और ऋग्वेद के।१० वें मण्डल के नवे सूक्त का ४ मन्त्र है। इस मन्त्र का देवता अप या जल है।

इस मन्त्र में जल को हाथ में लेकर या जल को दृष्टि में रख कर यह प्रार्थना की गई है कि हमको आरोग्यता प्राप्त हो, संसार के भोग पदार्थ हमें बहुतायत से प्राप्त हों और हमें उन पदार्थों के भोग से तृप्ति प्राप्त हो।

संसार में सुख मय जीवन के लिए तीन बातों की आवश्यकता है [१] भोग पदार्थों की प्राप्ति [२] भोग की योग्यता होना (३) भोग से तृप्ति होना।

यदि भोग पदार्थ न होंगे तो भी हम सुख प्राप्त न कर सकेंगे यदि पदार्थ हुए परन्तु हमारे शरीर के अन्दर भोगने की शक्ति नहीं हुई तो पदार्थों का होना या न होना एकसा है यदि भोगने की शक्ति हुई परन्तु हमारी लालसा इतनी बढ़ी रही कि कभी तृप्ति ही न हो तो भी सुख प्राप्त न होग, ।

संसार में जल बहुतायत या भोग पदार्थों की वृद्धि का द्योतक है जल से ही अन्न की वृद्धि होती है जल से ही वृक्ष आदि का वृद्धि में सहायता मिलती है, जल सुख की सामग्री को एकत्रित करने का मूल कारण है ।

जल आरोग्यता का भी परिचायक है पानी के बदल जाने से या पानी के खराब होने से अनेक रोग उत्पन्न होते हैं जल तो चिकित्सा का मुख्य साधन है ।

तृष्णा की तृप्ति का साधन भी जल ही है ।

वर्षा से भोग पदार्थों की वृद्धि होती है आरोग्यता से उन पदार्थों को उपयोग में लाने की शक्ति प्राप्त होती है और उन से हमारी मानसिक भावनाओं के ठीक हो जाने से तृप्ति हो जाती है इस प्रकार इस मन्त्र मे जल को लक्ष्य मे रखकर हमारे जीवन के उद्देश्य को हमारे सामने इस मन्त्र में बड़ी सुन्दरता से रखा है । और यदि यह पवित्र भाव आचमन करते समय हमारे अन्दर आजावें तो हमारा जीवन सफल हो सकेगा ।

आचमन से शरीर की सुस्ती भी दूर होती है मन को शान्ति भी प्राप्त होती है और आत्मा के अन्दर उच्च भाव भी भर जाते हैं इसलिए इस मन्त्र में यह प्रार्थना है कि जल की हमारे लिए खूब वर्षा हो, जल से हमारा अभीष्ट सिद्ध हो और जल हमारा तृप्ति का कारण हो ।

क्रमशः

धर्म्म किस प्रकार पुनः प्रतिष्ठित हो सकता है ?

[लेखक—रघुनाथप्रसाद पाठक]

— * —

आज संसार बहुत अशान्त और क्लान्त है और शान्ति के लिए छटपटा रहा है। हममें से प्रत्येक के हृदय में जीवन के सुख की उत्कण्ठा है । संसार को अशान्त बनाने वालों के हृदय में भी सुख और सन्तोष की अभिलाषा है परन्तु वे भी दुखी देख पड़ते हैं।

इस अशान्ति का कारण यह बतलाया जा रहा है कि धार्मिक दृष्टि से संसार दिवालिया बन गया है। संसार के प्रवाह को बारीकी से देखने वाले व्यक्तियों का कहना है कि संसार की यह अशान्त अवस्था ज्वार भाटे के सदृश क्षणिक है। वह समय दूर नहीं जब लोग धर्म की ओर आवेंगे। बिना इस ओर आये उन्हें शान्ति प्राप्त न होगी। उनका यह भी मत है कि मनुष्य की धार्मिक प्रवृत्तियाँ और उनकी परमात्मा पर निर्भरता आज भी वैसी ही बनी हुई है जैसी कभी पहले थी। जब दुबारा ज्वार आयगा और मनुष्य प्रकृतिवाद की भूसी खाते खाते थक जावेंगे तब धर्म का वह पुनरुज्जीवन होगा जो कदाचित् पहले न हुआ होगा।

एक ओर तो धर्म का ऐसा उत्कृष्ट भविष्य बतलाया जा रहा है और दूसरी ओर धर्म को मिटा देने का यत्न हो रहा है। हमने देखा कि १४ वर्ष के काल में रूस में धर्म का बहिष्कार कर दिया गया है । गिरजाघर, व्यायाम शालाओं, धर्म विरोधी अद्भुतालयों और अजायबघरों के रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं । जर्मनी में ईसाइयों को सताया जा रहा है। मेक्सिको के दक्षिण में जो कुछ हुआ वह संसार को विदित है। टर्की में धर्म की जैसी मिट्टी खराब हुई है वह भी किसी से छुपी नहीं है।

अपने को आधुनिक कहने और समझने वाले लोग धार्मिक पुस्तकों का पढ़ना और धर्म की चर्चा सुनना पसन्द नहीं करते हैं। वे वैज्ञानिक सफलताओं की तराजू में उन्नति और विकास को तोलते और केवल उन्हीं वस्तुओं का आदर करते हैं जो उन्हें भौतिक सुख और आनन्द प्रदान करती हैं। यही कारण है वे

बड़े २ व्यवसाइयों, पूँजीपतियों और विज्ञानवेत्ताओं का आदर करते एवं धार्मिक नेताओं की ओर ध्यान नहीं देते हैं। वे धर्म को उन्नति विरोधी और धर्म चर्चा को व्यर्थ समझते हैं। कोई २ धर्म को हानिकारक भी कह देते हैं। वे कहते हैं भारतवर्ष सबसे अधिक धर्मप्रधान देश है और यह धर्म ही इसकी दासता, कङ्गाली और अज्ञानता का मुख्य कारण है। पश्चिम में भी अनेकों कलहों, उत्पातों और रक्तपातों के लिए धर्म जिम्मेवार रहा है। उनकी दृष्टि में धर्म गली सड़ी पतनकारी रूढ़ियों और सिद्धान्तों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है।

धर्म की इस डावाँडोल अवस्था के कारण ही संसार अशान्त और क्लान्त है। इसी कारण मानव-समाज की कोमल भावनाओं का ह्रास होकर आसुरी प्रवृत्तियों को खुली छूट्टी मिली हुई है। इसी के कारण लोगों के संस्कार निर्बल और पतित हो गये हैं और वे जानते पूछते हुए भी जीवन को गलत फिलासफी का शिकार बने हुए हैं। इसी के कारण आर्थिक शोषण और दोहन का बाजार गर्म है। इसी कारण न्याय और नैतिकता गहरे श्वास ले रहे हैं। इसी के कारण पवित्रता, सदाचार और सामाजिक उत्थान के स्थिर और सुनिश्चित विचारों को चैलेञ्ज दिया जा रहा है। एक शब्द में इसी कारण मानव और प्राणीजगत में विप्लव मचा हुआ है।

प्रश्न उपस्थित होता है कि धर्म क्या वस्तु है? और उसकी दुर्दशा का कारण क्या है?

प्रत्येक मनुष्य में दिव्यता होती है। इस दिव्यता को विकसित करना और जीवन तथा उसके साथ समाज को ऊँचा उठाना धर्म का मुख्य काम है। धर्म का सम्बन्ध मनुष्य और उसके सिरजनहार परमात्मा के बीच का सम्बन्ध होता है। यह अपने मे बड़ी दिव्य शक्ति होती है जो मनुष्य का लौकिक और पारलौकिक विकास करके उससे समाज के हर्ष समुदाय मे उत्कृष्ट योग दिलाती है। यही जीवन का चरम लक्ष्य समझा जाता है।

ससार मे हम प्रतिदिन के व्यवहार में देखते हैं कि अच्छी से अच्छी वस्तु यदि उसका दुरुपयोग किया जाय तो वह हानि का कारण बन जाती है। वैज्ञानिक सफलताएँ भी जिनकी हम प्राय प्रशंसा करते रहते हैं दुरुपयुक्त होने पर घातक हो जाती हैं। वर्तमान युद्धों मे उनका कैसा बीभत्स व्यवहार हो रहा है, यह सब

हम देख और सुन रहे हैं। परन्तु स्वयं में वे सफलताएँ और आविष्कार बुरे नहीं हैं। यही दशा धर्म की है। स्वार्थी लोगों ने धर्म की आट मे अपने स्वार्थों की पूर्ति करके उसे बुरा बना दिया है। धर्म और धार्मिकता ने कभी हानि नहीं पहुँचाई। हानि उन लोगों ने पहुँचाई है जो धार्मिक होने का ढोंग करते हैं।

धर्म के सम्बन्ध में गड़बड़ मचाने वाले यही व्यक्ति थे। इन्होंने ही जान में या अनजान में नाना प्रकार के मत मतान्तरों की सृष्टि की और बतलाया कि उनका मत ही सही है और दूसरों का गलत है। स्वभावतः बुद्धि रखने वाला व्यक्ति उनके व्यापारों और कथनों की भूल भुलइयों में पड़कर अपने मन में सोचता है 'ये आदमी परमात्मा और सत्य की चर्चा करते हैं फिर भी आपस में लड़ते तथा एक दूसरे का खण्डन करते हैं। ये एक दूसरे से घृणा, अविश्वास और सिर फुटौवल करते हुए किस प्रकार संसार में भ्रातृत्व और शान्ति का प्रसार कर सकते हैं। यदि ये धर्म के नाम में ऐसे पवित्र कर्म करते हैं तो निश्चय ही धर्म व्यर्थ है।' उनका व्यवहार निरपेक्ष व्यक्ति के हृदय मे यही भाव पैदा करता है।

वस्तुतः धर्म कर्मकाण्ड और संस्कारों का मुख्य विषय नहीं है और न यह सिद्धान्तों और रूढ़ियों का पुञ्ज है। धर्म तो जीवन के व्यवहार को ठीक करता है। यह किसी एक जाति या देश काल तक सीमित नहीं है। और न एक सम्प्रदाय या मजहब की बपौती है। यदि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और यहूदी में धार्मिकता पाई जाय तो वे समान रूप से धार्मिक हैं। यह नहीं हो सकता कि केवल किसी मजहब विशेष का होने से मनुष्य मे धार्मिकता और अधार्मिकता मानी जाय। सत्य सब जगह एकसा रहता है।

आज धार्मिक भवन की नींव को विज्ञान और उपयोगिता वाद खोखला कर रहे हैं अतः इस भवन का आधार पूर्णतया बुद्धि संगत होना चाहिए। सबसे पहले इसे 'आधुनिक व्यक्ति' की बौद्धिक भूख को संतुष्ट करने वाला होना चाहिए। दूसरे इसे बिना किसी प्रकार की साम्प्रदायिक भावना के नास्तिकों और बुद्धि वादियों के आक्षेपों का निराकरण करने में समर्थ होना चाहिए। इसे प्रभावशाली बनने के लिये जीवन को मीठा बनाने की शक्ति वाला होना चाहिए और इसीलिये व्यावहारिक होना चाहिए।

संक्षेप में अब धर्म तब ही प्रतिष्ठित और आदरणीय हो सकता है जब वह मनुष्य को सजीव बनाये और संसार के प्रवाह को समझ कर जीवन को नया रूप दे। आज मानव समाज की प्रगतियाँ विज्ञान, राजनीति और धनोपार्जन पर केन्द्रित हैं। यदि धर्म इन प्रगतियों का ठीक २ अर्थ करने, उनका समन्वय करने और उन पर शासन करने में समर्थ हो जायगा तो निश्चय ही वह अपने उच्च आसन पर पुनः प्रतिष्ठित हो जायगा। दूसरा कोई मार्ग नहीं है। उस समय कांटे फूल बन जायगे। रात दिन में परिवर्तित हो जायगी और संसार में शान्ति का स्रोत प्रवाहित होकर संसार सुखधाम बन जायगा।

संसार के वर्तमान प्रवाह पर श्रीयुत सर राधाकृष्ण के विचार*

विचार मनुष्य का निर्माण करते हैं

हम अपने समाज का पुनर्निर्माण करने के लिये लालायित हैं। समाज का अभिप्राय आप और हम से है। जब तक हम मनुष्य का पुनर्निर्माण नहीं करते तब तक समाज का भी पुनर्निर्माण नहीं कर सकते। लोगों का मत है इतिहास का निर्माण मनुष्य करते हैं और मनुष्य का निर्माण विचार करते हैं और जो श्रेष्ठ विचारों का प्रचार करते हैं वे भी समाज का बहुत हित करते हैं।

आज हम जगत को वर्तमान अवस्था में क्यों पाते हैं ? आज बकि सुव्यवस्था की दृष्टि से समाज का भविष्य बहुत उज्ज्वल देख पड़ रहा है, हम संसार को मनुष्यों के रहने के अयोग्य बना रहे हैं। विज्ञान की दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति हो रही है और यदि ज्ञान हमारी रक्षा कर सकता तो आज हम लोग मुक्ति के सबसे निकट होते। परन्तु अवस्था यह नहीं है।

नैतिक शक्ति की हम में कमी नहीं है, त्याग-भावना का हम मे अभाव नहीं सदुद्देश्य के लिए मर मिटने की स्पिट हम मे से लुप्त नहीं हो गई है फिर हम ससार को सुख धाम क्यों नहीं बना पाते हैं ? कारण यह है कि यह महान् जागृति और महान् नैतिक शक्ति तुच्छ उद्देश्यों की पूर्ति मे व्यय हो रही है।

वास्तविक खतरे का स्थान

आज हमे वस्तुओं का ठीक ठीक मूल्य और उपयोग ज्ञात नहीं है और यही वास्तविक खतरे का स्थान है। हमारी वर्तमान सस्कृति मे सब से बड़ी कमजोरी यह है कि यह संस्कृति वैज्ञानिक प्रतिभा, नैतिक शक्ति और लोगों का धन लोलुपता का संघात है। यदि आप यह जानना चाहते हैं कि वैज्ञानिक ज्ञान और नैतिक शक्तिका ठीक २ उपयोग करने की तरकीब क्या है तो हमे उस सयम की ओर दृष्टि डालनी चाहिए जो मानव समाज के आचरण के लिए वास्तविक सच्चाई निर्धारित करता है।

भूत काल में अर्से तक धर्म ने इस कर्तव्य को पूर्ण किया है। परन्तु वैज्ञानिक तरीकों के व्यवहार में आने और अनुभव आश्रित प्रवृत्तियों के बढ़नेसे रूढ़ियों के धर्म को स्वीकार करने के लिए हम तय्यार नहीं है।

मानवी प्रगतियों के प्रवाहमें जो नया परिवर्तन आने वाला है उसे देखते हुए मेरा विश्वास धार्मिक और दार्शनिक अध्ययनकी उपयोगिता में और भी बढ़ गया है।

---

*लखनऊ म्युनिसिपल बोर्ड के अभिनन्दन पत्र के उत्तर में दिए हुए भाषणका सार।

नव ईसाइयों को हिन्दू धर्म्म में दीक्षित करना अनुचित नहीं है

महात्मा गांधी के विचार

पिछले दिनों मद्रास के प्रधान मन्त्री श्रीयुत राजगोपालाचार्य ने ईसाइयों के एक समुदाय को हिन्दू धर्म्म मे दीक्षित होने पर बधाई दी थी। इस सम्बन्ध मे एक अमेरिकन मिशनरी ने महात्मा गाधी से पूछा है कि क्या कांग्रेस व्यक्तियों के धर्म के सम्बन्ध में निरपेक्ष है? मिशनरी महोदय का कहना है कि कांग्रेस निरपेक्ष नहीं है। महात्मा जी ने जो उत्तर दिया है वह इस प्रकार है:—

सम्पादक—

"राजा जी ने क्या कहा है, इसका मुझे ज्ञान नहीं है। अपना पक्ष रखने में वे स्वयं समर्थ हैं। निरपेक्षता की मेरी जो भावना है उसको मैं प्रस्तुत कर सकता हूँ। इस समय जो कुछ हो रहा है उसके ठीक विरुद्ध स्वतन्त्र भारत मे प्रत्येक धर्म को समानता के आधार पर उन्नत होने का अवसर मिलेगा। ईसाइयत देश के शासकों का नाम-मात्र का धर्म है परन्तु इसे जो संरक्षण प्राप्त हैं वह अन्य किसी धर्म को प्राप्त नहीं हैं। जो गवर्नमेन्ट प्रजा के प्रति उत्तरदाता होती है उसे साहस नहीं होता कि विभिन्न धर्मों के मुकाबले मे किसी धर्म विशेष का संरक्षण कर सके। इस पर भी यदि हिन्दू भाई उन लोगों को बधाई देते हैं जो उनसे जुदा हो गये थे और पुनः उनके पास लौट आये थे, तो इसमें मुझे कोई दोष नहीं देख पड़ता है। भोले-भाले लोगों से अपने पूर्वजों का धर्म छुड़वाने के लिये कुछ मिशनरी जिन उपायों का आश्रय लेते हैं उनकी बाबत मैं कई बार पहले शिकायत कर चुका हूँ। धर्म का प्रचार करके उसे अंगीकार कराना और वस्तु है और लोगों को बहकाना दूसरी वस्तु है। यदि वे बहकाये हुए लोग, धोखे में आये बिना अपने धर्म में वापिस चले जांय तो इस बात से उन लोगों को स्वभावतः प्रसन्नता होगी जिनसे वे पृथक् कर दिये गये थे।"

स्वर्गीय आचार्य रामदेवजी

एक महान् आत्मा का परलोक गमन

(लेखक—श्री० प्रो० सुधाकर एम. ए. मन्त्री सार्वदेशिक
आर्य्य प्रतिनिधि सभा देहली।)

आर्य्य समाज का बच्चा बच्चा आचार्य्य रामदेव जी के नाम से परिचित है। आर्य्य समाज की प्रत्येक प्रगति और कार्य के साथ वे इतने अधिक सम्बद्ध रहते थे कि आर्य्य समाज के सम्बन्ध में सोचते हुए उन्हें उससे पृथक् करना असम्भव था। आचार्य्य जी का बौद्धिक जीवन बड़ा उज्ज्वल था, ठीक इसी प्रकार का आर्य्य समाज और वैदिक धर्म्म के प्रति निस्वार्थ सेवाओं का उनका रिकार्ड भी शानदार था। आर्य्य समाज के कार्य्य कर्त्ताओं और उपदेशकों में शायद ही कोई उन जैसा लग्न वाला और अनथक काम करने वाला होगा।

युवावस्था में ही आर्य्य समाज की सेवा के आह्वान ने उनके हृदय को प्रोत्साहित कर दिया था और उस आह्वान ने उन्हें परमात्मा का अकिंचन सेवक बना दिया था। इन पंक्तियों के लेखक को ११ वर्ष पर्य्यन्त आचार्य्यजी के सहकारी के रूप में गुरुकुल कांगड़ी में कार्य्य करने का सौभाग्य प्राप्त रहा था और मैं निश्चय पूर्वक कह सकता हूं कि भारतवर्ष में राष्ट्रीय शिक्षा के महान प्रयोग की सफलता का श्रेय इस महान् विद्वान् पंडित को था।

आचार्य्य रामदेवजी में बहुत सी विशेषताएं थीं परन्तु उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे विशुद्ध राष्ट्रिय थे। उनकी रग-रग में राष्ट्रीयता भरी थी। उनकी राष्ट्रीयता वह थी जो भारतीय संस्कृति, ज्ञान-विज्ञान और राज-व्यवस्था की पोषक थी। 'प्रकृति की ओर लौटो' 'वेदों की ओर चलो' इन प्राचीन आदर्शों के प्रति उनके प्रेम और निष्ठा को कोई वस्तु कम नहीं कर सकी। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षानुसार उन्होंने इन आदर्शों को स्वीकार करके उनका प्रचार किया। महर्षि दयानन्द के मिशन में उन्होंने अपनी प्रौढ़ बुद्धि को प्रेम और आत्म समर्पण के साथ लगाए रक्खा था।

आचार्य्य रामदेवजी 'सादा जीवन और उच्च विचार' के महान् आदर्शों की प्रतिमूर्ति थे। जो उनके घनिष्ट संपर्क में रहते थे उनके लिये वे जीवित सुकरात थे। वे यूनान के इस प्रसिद्ध तत्ववेत्ता की नाईं संसार से अलिप्त हुए फिरा करते थे और अपने विचारों की धुन में मस्त रहते थे। उनकी धुन यही थी कि संसार में आर्य्य संस्कृति का प्रसार किया जाय। भारत की आध्यात्मिक संस्कृति के अतिरिक्त पश्चिम की भौतिक संस्कृति जैसी किसी वस्तु ने उन्हें कभी अपील नहीं की।

गुरुकुल कांगड़ी की प्रसिद्धि का बहुत बड़ा श्रेय आचार्य्यजी के उसके प्रति प्रेम को है और कन्या गुरुकुल जैसी कई आर्य्य संस्थाओं ने उनके जीवन से अनुभूति प्राप्त की है।

आचार्य्यजी अब संसार में नहीं हैं। परन्तु उनकी अमर कीर्ति आने वाली संतति और आर्य्य कर्त्ताओं को वर्षों पर्य्यन्त जीवन-प्रदान करती रहेगी। सचमुच वे उच्च मिशन की पवित्र सेवा की बहुमूल्य सम्पदा हमारे लिए छोड़ गए हैं।

आर्य कुमार जगत्

जैसा कि पहिले सूचना दी जा चुकी है दहेज सप्ताह भारत भर में अपूर्व उत्साह से मनाया गया। परिषद् के कार्यालय में भिन्न २ स्थानों से प्रति दिन इस बात की सूचनाएं आरही हैं कि भिन्न भिन्न कुमार सभाओं ने अपने यहां यह सप्ताह विशेष प्रोग्राम सहित मनाया।

आर्य कुमार सभा अलीगढ़ ने सप्ताह भर दहेज के विरुध प्रोपैगण्डा किया और २६ नवम्बर को आर्य समाज मन्दिर अलीगढ़ में एक विराट् सभा की, जिस में बाबू मिश्री लाल जी एडवोकेट, बा० प्रीतम लाल जी तथा म० रामनारायण आदि के ओजस्वी भाषण हुए। निम्न लिखित प्रस्ताव भी पास किया गया :—

"आज की सभा दहेज से होने वाली बुराइयों तथा उस से अपनी बहनों पर होने वाले भीषण अत्याचारों के प्रति घृणा प्रगट करती है और सब सच्चे हृदय से प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने विवाह में अपने मा बापों को दहेज न लेने देंगे और अपनी भावी संतानों के विवाह में न तो दहेज लेंगे और न देंगे।"

आर्य कुमार सभा विलास पुर ने २६ तारीख को दहेज प्रथा के विरुध विशेष कार्य क्रम रक्खा। विद्यार्थियों, आर्य कुमारों, तथा स्थानीय आर्य समाज के सदस्य इत्यादि का एक सम्मिलित जलूस रेलवे स्टेशन से निकाला गया। यह जलूस शहर के मुख्य २ बाजारों में घूमता हुआ गांधी चौक में समाप्त हुआ जहाँ एक विराट् सभा की गई जिस में दहेज के विरुद्ध स्थानीय नेताओं के भाषण हुए। वहाँ की जनताने इस सप्ताहके मनानेमें बहुत दिलचस्पी ली। इसके अतिरिक्त और भी कुमार सभाओं के वृतान्त आए हैं जिनका वृतान्त स्थानाभाव की वजह से नहीं दिया जा रहा है। हमको इस बात का हर्ष है कि आर्य कुमार सभाओं ने इस सप्ताह को मनाने में अपूर्व दिलचस्पी दिखलाई है। इस दिलचस्पी को देखते हुए परिषद् ने प्रबन्ध किया है कि वह कुमार सभाओं से, जो कि सूचना ठीक समय पर न मिलने के कारण सप्ताह को मनाने में असमर्थ थीं लेकिन अब फिर मनाना चाहती हैं, उनको इस कार्य में पूरी तौर से सहायता दी जावे और तत्सम्बन्धी हैण्ड बिलस् ट्रैक्ट आदि उनके प्रार्थना-पत्र आने पर भेज दिए जावें।

दहेज निषेध प्रतिज्ञा-पत्र आदि

दहेज निषेध सप्ताह में जो प्रतिज्ञापत्र भिन्न भिन्न कुमार सभाओं ने भरवाये हैं वे तथा उन टुकड़ों का मूल्य जो कि उन्होंने सप्ताह के बीच में बेचे हैं, शीघ्र ही कार्यालय परिषद् में आ जाने चाहिये।

अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् का वार्षिक सम्मेलन।

तमाम कुमार सभाओं को सूचना दी जाती है कि परिषद् का आगामि वार्षिक सम्मेलन इन्दौर मे होना निश्चित हो गया है। स्थानीय कुछ विशेष कठिनाईयों के कारण इन्दौर की कुमार सभा ने परिषद् से प्रार्थना की थी कि वह उनको वार्षिक सम्मेलन इन्दौर में माह अप्रैल में करने का अवसर दें। विशेष अवस्थाओं को ध्यान में रखते हुए परिषद् ने इस बात को स्वीकार कर लिया है और परिषद् का वह बृहत् वार्षिक सम्मेलन माह अप्रैल मे इन्दौर में होगा।

तमाम कुमार सभाओं से प्रार्थना है कि इस महान् उत्सव के लिये अभी से सब तैयारियां करनी शुरु कर दें। केवल वे ही कुमार सभाएँ अपने प्रतिनिधि सम्मेलन पर भेज सकती हैं जो परिषद् से नियमपूर्वक सम्बन्धित हैं और अपना वार्षिक शुल्क नियम पूर्वक देती रही हैं।

उन तमाम कुमार सभाओं से जिनका वार्षिक शुल्क अभी तक परिषद् के कार्यालय में नहीं आया है प्रार्थना है कि शीघ्र से शीघ्र परिषद् के कार्यालय में भेजने की कृपा करें। जो कुमार सभाएं अभी तक परिषद् से सम्बन्धित नहीं हुई हैं, उनसे निवेदन है कि वे जल्दी ही अपने को इस अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमारों की संस्था से सम्बन्धित करालें और इस प्रकार आर्य कुमार सभाओं के संगठित होने में सहायक हों।

उत्सव की तिथियां तथा तत्सम्बन्धी और सूचनाएँ परिषद् कार्यालय से पूछी जा सकती हैं।

प्रधान का चुनाव

कुमार सभाओं से यह भी प्रार्थना है कि शीघ्र ही अगले वर्ष के प्रधान पद के लिये नाम भेजने का कष्ट करें।

मन्त्री-भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

महिला-जगत्

आदर्श घर

[लेखिका—श्रीमती यशोदा देवी]

घर को स्त्रियाँ बनाती हैं। घर के दो अङ्ग होते हैं। एक आध्यात्मिक और दूसरा भौतिक। भौतिक अङ्ग से घर की स्वच्छता, सजावट और सुव्यवस्था सम्बन्धित है और आध्यात्मिक अङ्ग से घर का सुख, शान्ति और मनोरमता सम्बन्धित है। दोनों दृष्टियोंसे सुखी और सुन्दर घरके निर्माणकी मुख्य जिम्मेवारी स्त्री पर है।

मनुष्य तो मकान को खड़ा ही कर सकता है। वह उसे सजा और धन से उसमें जो आराम और खूबसूरती लाई जा सकती है ला सकता है। परन्तु यह मकान केवल रहने और खाने पीने का स्थान ही हो सकता है इसे घर नहीं कह सकते।

घर तो आराम और सुख का स्थान होता है जहां स्कूल से, दिन भर के काम से और यात्रा से लौट कर हम निश्चय के साथ आसकें कि वहां हमारे शरीर और मन को सुख मिलेगा वहां हमें केवल भली भाँति तैयार किया हुआ खाना ही नहीं चाहिए, सुख देने वाले पलंग, सुव्यवस्थित और साफ सुथरे कमरे ही नहीं चाहिएँ, वरन् हमें घर में सहानुभूति, शिष्टता और कुछ अंशों में सुन्दरता भी चाहिए। दूसरे शब्दों में वहां घर की भावना उपस्थित होनी चाहिए।

एक बार इङ्गलैण्ड के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री स्व० श्रीयुत रैमजे मैकडानल्ड ने स्त्रियों की एक विराट् सभा में, घर के आदर्श पर भाषण देते हुए कहा था :—

"जब तक हमें घर में आध्यात्मिक और भौतिक दोनों प्रकार का सुख नहीं मिलता तब तक हम गृह-निर्माण की समस्या को हल नहीं कर सकते, भले ही हम घर के भवन-निर्माण की समस्या को हल कर लें। मैं घर में अपने हाथों को गर्म करना चाहता हूँ परन्तु साथ ही हृदय को भी गर्म करना चाहता हूँ।"

सुमन-संचय

(१)

गार्गी और ब्रह्मज्ञानी

हमारा विचार इस शीर्षक को जारी रखने और इसके द्वारा ऊँचा उठाने वाली मुख्यतया आध्यात्मिक आख्यायिकायें प्रतिमास 'सार्वदेशिक' के प्रेमी पाठकों के अर्पण करते रहने का है। आशा है हमारे प्रेमी पाठक इस शीर्षक को पसन्द करेंगे। हम चाहते हैं कि वे इस शीर्षक के सम्पादन में हमें अधिक से अधिक जितना सम्भव हो, आख्यायिकायें भेजकर योग दें। विश्वास है वह सहयोग हमें पर्याप्त रूप में प्राप्त होगा।

—[illegible]

प्राचीन भारत की महिला रत्न गार्गी अधिकाधिक ज्ञान प्राप्ति की खोज मे रहती थी। एक दिन उसने सुना कि कोई सच्चे ब्रह्मज्ञानी दूरस्थ वन-प्रदेश में

गृह निर्माण का आदर्श तो स्पष्ट हो गया। परन्तु यह कार्य्य सरल नहीं है। इस कार्य के सफल संपादन के लिये गृहणी का चतुर, परिश्रमी और स्त्रियोचित गुणों से अलंकृत होना आवश्यक है। इसके साथ ही उसे इस प्रकार से सुशिक्षित होने की आवश्यकता भी है कि वह सुख और सौन्दर्य पूर्ण घर का निर्माण कर सके। बच्चों का ठीक २ पालन करके उन्हें योग्य बना सके। अपने गृहस्थ सम्बन्धी कार्य की ऐसी व्यवस्था कर सके कि उसे अवकाश मिल जाय और वह अपने स्वास्थ्य और सौन्दर्य की उचित रक्षा करके घर के आध्यात्मिक वातावरण का निमाण और उसकी रक्षा कर सके।

इसमें सन्देह नहीं सुखी घर का निर्माण बहुत हद तक गृहणी के प्रयत्नों पर अवलम्बित है फिर भी परिवार के दूसरे सदस्यों की सद्भावना और सुव्यवस्था का भाव परमावश्यक होता है। घर के भीतर भी सहायता और सहयोग उतना ही जरूरी होता है जितना अन्यत्र। यह बात परिवार के अन्य सदस्यों को सीखनी चाहिए।

सुखी गृह-निर्माण की विधियाँ क्या हो सकती हैं, इस पर हम कभी फिर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

निवास करते हैं। उनके सत्सङ्ग और सम्भाषण से लाभ उठाने के उद्देश्य से गार्गी उस वन में गई और उनके एक शिष्य से उनके दर्शन करने की आज्ञा माँगी। शिष्य ब्रह्मज्ञानी के पास गार्गी का संदेश लेकर गया और लौट कर कहा "मेरे गुरु जी संन्यासी हैं और स्त्री का दर्शन नहीं करेंगे।" गार्गी ने मुस्कराते हुए कहा, 'अच्छा अब मैं उनके दर्शन करना नहीं चाहती।' शिष्य लौटकर गुरु जी के पास गया और गार्गी ने जो कुछ कहा था वह उनको बतलाया। ब्रह्मज्ञानी को बड़ा आश्चर्य हुआ और उन्हें यह जानने की प्रबल उत्कण्ठा हुई कि जो व्यक्ति इतना परिश्रम करके इतनी दूर चलकर आया था उसे मेरे निषेध करने पर क्यो जरा भी निराशा नहीं हुई। ब्रह्मज्ञानी गार्गी के पीछे भागे और पूछा कहो 'देवि ! तुम तो मेरे दर्शनों के लिये इतनी दूर चलकर आई थीं फिर तुमने यह क्यों कहा कि तुम अब मेरे दर्शन करना नहीं चाहती हो।'

गार्गी ने उत्तर दिया 'महाराज! मुझे खबर दी गई थी कि आप सच्चे ब्रह्मज्ञानी हैं और इसीलिये मैं आपके दर्शनों के लिये उत्कण्ठित थी। मुझे यह झूठी खबर दी गई थी। अब मुझे पता लगा आप सच्चे ब्रह्मज्ञानी नहीं हैं।' ब्रह्मज्ञानी ने रोष मे आकर कहा "देवि! मैं सच्चा ब्रह्मज्ञानी नहीं हूँ यह तुम कैसे कह सकती हो।" गार्गी ने उत्तर दिया "इसलिये कि सच्चे ब्रह्मज्ञानी स्त्री और पुरुष के भेद को भूल जाते हैं परन्तु आप नहीं भूले हैं।"

(९)

भगवान बुद्ध और आधा अनार

भगवान बुद्ध ने घोषणा की कि एक विशेष दिन वे स्वयं निर्धनों और असहायों की सहायता के लिये अपने हाथों से दान ग्रहण करेंगे और सब लोगों को उपहार भेंट लाने का निमन्त्रण दिया। नियत दिन के आने पर बुद्ध भगवान राजगृह मे एक विशिष्ट स्थान पर विराजमान हो गए और दान ग्रहण करने लग गए। सब से पहिले राजा बिबसार बहुमूल्य रत्नों और असंख्य स्वर्ण मुद्राओं के साथ उपस्थित हुए। बुद्ध भगवान् ने उनको एक हाथ से ग्रहण कर लिया। राजा बिम्बसार के पश्चात् अजात शत्रु भी बहुमूल्य उपहार ले गए और बुद्ध भगवान ने उन्हें भी एक हाथ से ग्रहण किया। उस के बाद बहुत से सरदार, व्यापारी और अन्य धनाढ्य व्यक्तियों ने अपनी भेंट प्रस्तुत की और उन सब को भी उन्हों न एक ही हाथ से ग्रहण किया। उन सब के पश्चात् एक ग़रीब बुढ़िया अपने हाथ में

आधा अनार लिए हुए उपस्थित हुई। उसने भगवान बुद्ध को प्रणाम किया और कहा "भगवन्! आपके दान ग्रहण करने की चर्चा मैंने अभी सुनी है। मैं इस अनार में से आधा खा चुकी हूँ। मेरे पास देने के लिए और कुछ नहीं है इसलिए इसी को ले आई हूं। कृपा करके इसे ग्रहण कीजिये।" भगवान बुद्धने अपने दोनों हाथ फैलाए और उस आधे अनार को ग्रहण कर लिया। बिम्बसार, अजातशत्रु और अन्यों को बड़ा आश्चर्य हुआ। बिम्बसार ने कहा "भगवन्! आपकी लीला विचित्र है। इस आधे अनार को दोनों हाथों से ग्रहण करने का क्या कारण है? आपने हमारे बहुमूल्य उपहारों को तो केवल एक हाथ से ग्रहण किया है।" इस पर भगवान बुद्ध मुस्कराए और कहा "राजन्! आपने मुझे बहुमूल्य उपहार भेंट किए हैं परन्तु आपने अपनी सम्पदा का दशवां भाग भी नहीं दिया है इस में आप लोगों का जितना कीर्ति का भाव है उतना दान का भाव नहीं है। इस स्त्री ने अपना सब कुछ अर्पण किया है और वह भी खुशी से दिया है। इस से मैंने उसके उपहार को दोनों हाथों से ग्रहण किया है।"

(२)

भगवान् बुद्ध और राजगुरु

राजा बिम्बसार ५० बकरों की बलि चढाने वाले थे। उनका राजगुरु बलिदान का कृत्य करने के लिये तैयार था। उसी क्षण भगवान बुद्ध यज्ञशाला मे प्रविष्ट हुए और बिम्बसार को कहा "राजन ठहरो! परमात्मा ने सब जीवों को उत्पन्न किया है वह अपने इन जीवों की बलि से प्रसन्न नहीं होगा।" "बिम्बसार ने भगवान् बुद्ध को कहा 'महाराज! इस सम्बन्ध में आप राजगुरु से शास्त्रार्थ कर लें। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि जो इस विवाद मे जीतेगा मैं उसी की सम्मति को ग्रहण करूँगा।" बुद्ध भगवान् ने राजगुरु से पूछा 'राजगुरु! आप इन गरीब जीवों की हत्या क्यों करते हो?'

राजगुरु बोला 'मूर्ख! तीन व्यक्तियों को इस बलिदान से लाभ होता है और किसी का कोई नुकसान भी नहीं होता है। महाराज बिम्बसार को इस बलिदान से कीर्ति प्राप्त होगी, क्योंकि वे इस बलिदान के निमित्त हैं। मुझे भी कीर्ति प्राप्त होती है क्योंकि मैं अपने हाथ से यह बलिदान करता हूँ। और यह बकरा भी पुण्य का भागी है क्योंकि बलि होने पर यह सीधा स्वर्ग को जायगा।"

बुद्ध जी ने पूछा "यह बताओ कि क्या जिनकी बलि चढ़ाई जाती है वे सब सीधे स्वर्ग को जाते हैं?"

राजगुरु ने कहा "इसमें सन्देह ही क्या है।"

बुद्ध जी ने पूछा "राजगुरु क्या तुम्हारे पिता जीवित हैं ? क्या तुम चाहते हो वे स्वर्ग में जाय। तुम अवश्य ऐसा चाहते होगे।"

राजगुरु ने कहा 'निस्संदेह मैं यही चाहता हूँ।'

बुद्ध ने कहा "तुम इस बात को जानते हो कि संसार के साधारण प्रवाह में तुम्हें यह निश्चय नहीं हो सकता है कि तुम्हारे पिता स्वर्ग मे चले जायँगे।"

राजगुरु ने उत्तर दिया 'आप सत्य कहते हैं।'

बुद्ध जी ने कहा 'तब फिर तुम अपने पिता का बलिदान करके उनके लिये स्वर्ग मे स्थान निश्चित क्यों नहीं कर देते हो।'

राजगुरु निरुत्तर हो गया और रोष में आकर बोला 'तेरा यह साहस! अच्छा मैं तुझे समझूँगा।

परन्तु बिम्बसार समझ गये कि विजय किस ओर है। उन्होंने राजगुरु को सेवा से पृथक् कर दिया। बौद्ध धर्म अङ्गीकार करके पशु-बलि बन्द कर दी।

(४)

शेर और मनुष्य

एक मनुष्य ने एक शेर की भर्त्सना की और कहा, "तू बड़ा दुष्ट पशु है। तू अपने स्वार्थ के लिए असंख्य गरीब पशुओं को मारता है। क्या इस निर्दयता के लिये तुझे शर्म नहीं आती ?"

शेर ने उत्तर दिया 'हम शेर तुम मनुष्यों से अधिक निर्दयी नहीं हैं। हम उन जानवरों को मारते हैं जिन्हें हम नहीं जानते। हम तुम्हारी तरह दिखावटी प्रेम से पशुओं को पालकर अपना पेट भरने के लिए उन्हें नहीं मारते, साथ ही अपनी जाति के लोगों को कभी नहीं मारते और तुम मनुष्य अपने वास्तविक और काल्पनिक स्वार्थों के लिये हजारों मनुष्यों का वध करने को तत्पर रहते हो। बताओ हम मनुष्यों से किस प्रकार बुरे हैं ?'

मनुष्य चुप हो गया और कोई उत्तर न बन पड़ा।

चिता की ज्वाला

[ले०—श्री सत्यभूषण 'योगी' वेदालङ्कार]

—— ** ——

उसका उद्भासित चुम्बन कर,
यह ज्वाला हँसती है रानी।

(१)

है शान्त वृक्ष, है शान्त गगन,
है यह सारा ससार शान्त
निश्चेतन-सी शान्ति विराजी ह
सून मरघट का प्यार शान्त।
इस वेला मरे दिल मे
भीषण हाहाकार गरजता है,
पर मै भी शान्त खडा हूँ
सन्मुख प्राणो का प्रिय जलता है
मैने ही अपने हाथो से दी
घृत की आहुतिया रानी!
उसका उद्भासित चुम्बन कर
यह ज्वाला हँसती है रानी!

(२)

मर गया अरे! इस हँसते तन से
कौन कहा पर चला गया?
उठ कर वह मुह अधेरे ही
किस दूर दिशा को चला गया!
वह चला गया! वह चला गया!
किस निष्ठुर से मै छला गया?
मेरी आखो क आगे ही
कोई उसको ले चला गया!
पिघला न सका उसको मेरी
इन आखो का तपता पानी!
उसका उद्भासित चुम्बन कर
यह ज्वाला हँसती है रानी!

(३)

उठती है ऊपर ऊपर यह
मण्डल म घूम रही ज्वाला!
उन्मद सी नाच रही ज्वाला,
पागल सी झूम रही ज्वाला!
बेसुध विस्मृत खिलखिला रही
यह भू से भुव की ओर चली
यह लो हित-नयना मदमाती
मुझको सूने म छोड चली!
यह अपने पन म मस्त लीन,
यह रँगरेली मे दीवानी!
उसका उद्भासित चुम्बन कर
यह ज्वाला हँसती ह रानी!

(४)

मजु कान्ति ज्वाला की ही वह
जीवन भर रहा उपासक था,
ज्वाला थी उसके मानस मे
ज्वाला का ही वह गायक था!
अन्त समय ज्वाला-सुन्दरि के
बँधा हुआ आलिङ्गन मे,
ऊपर गगन विहार कुज मे
चला गया भोलेपन में!
इस मिलन महोत्सव वेला मे
दो फूल चढादें हम रानी!
प्रिय का उद्भासित चुम्बन कर
यह हँसती है ज्वाला रानी!

***

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली

२८-२-३१ को समाप्त होने वाले वर्ष का

आय-व्यय

आय		व्यय	
८७२≡)३	विविध दान	३२२१।)।।।	मद्रास प्रचार
२८००=)२	किराया और सूद	१५२६=)	सार्वदेशिक पत्र
१२६५–)	पञ्चमाश (प्रतिनिधि सभाओं से)	२०३४।।।=)।।।	कार्यालय
३४।।।=)६	दशांश	१६०।।=)	प्रोवीडेण्ट फण्ड
६३६।।।=)	सार्वदेशिक पत्र	२४।।=)	मार्ग व्यय अन्तरङ्ग सदस्य
१०५६)४	घाटा इस वर्ष का	३०)	टाइपराइटर की घिसाई
७०००।।–)६		७०००।।–)३	

वास्ते जगदीश प्रसाद एण्ड को०

(ह०) जगदीश प्रसाद

ह० रघुनाथ प्रसाद पाठक — बी ए. बी कौम जी डी ए — ह० नारायणदत्त

एकाउन्टेण्ट सभा — आर. ए. — कोषाध्यक्ष

रजिस्टर्ड एकाउन्टेण्ट तथा आडीटर्स — सार्वदेशिक सभा

वैलैन्स शीट सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, देहली

२८—२—१६३६

निधियां तथा अमानतें

१,०३२५१) स्थिर निधियां
५००००) देशदेशांतर प्रचार
२५०००) रक्षा निधि
२००००) सार्वदेशिक भवन
५०००) चन्द्रभानु वेदमन्त्र स्मारक निधि
?०००) गङ्गाप्रसाद गढ़वाल प्रचार ट्रस्ट
६?०) शि?लाल वेद प्रचार निधि
५०१) टोडाराम चूड़ामणि वेद-प्रचार
१००) डोमा महतो सुन्दर देवी वेद-प्रचार
१२७५०) विशेष निधियां
गत बैलेन्स शीट के अनुसार
६०००) बिहार रिलीफ फण्ड
१५००) काशमीर
३०००) दलितोद्धार
२२५०) दयानन्द आश्रम
७०६॥।—)॥ स्टाफ प्रौवीडेन्टफण्ड
१६५२२॥=)४ पुस्तक प्रचार फण्ड
२४६३५॥।—)६ विविध फण्ड
६१३१।≡) सार्वदेशिक भवन
४०१४ =)७ रक्षा (चलत)
३८७६।=)३ हैदराबाद निधि
३२६७॥—)६ देश-देशान्तर प्रचार चलत।
२५३३—)६ अमेरिका प्रचार
१२७२) विदेश निधि
१०३५—)७ बिरला वेदप्रचार
५५६=)६ असाम प्रचार

सम्पत्ति

४७७०५)६ भूमि और इमारतें
२२?४४।—)६ सार्वदेशिक भवन
२३६५०॥=)६ बलिदानभवन
१०१०) गाजियाबाद भूमि
२७०) टाइपराइटर
२६०००) पटौदीहाउस ट्रस्ट
३६६३६—)५ इन्वेस्टमेंट
२५०००) गवर्नमेंट के ५% प्रामेसटरी नोट
४०८१) सेंट्रलबैंक सार्टिफिकेट
१०) १ शेयर आर्य साहित्य मण्डल अजमेर
१०५४८—)५ पीपल्स बैंक
१७६७३।)३ पुस्तकें बिक्री
४६६५॥।—)३ पटौदीहाउस ट्रस्ट चलत
३०) देहली इलैक्ट्रिक कम्पनी
३०००) दीपचन्द कृष्णलाल
४३३८।≡)६ विविध अगाऊ
१८७०)५ कायकर्ताओं के नाम
७०) किराया जो वसूल होना है।
६?१८—)८ कैश तथा बैंकों मे।
३७४२॥।—) पंजाब नेशनल बैंक चलत।

३५१॥) आर्यसमाज टंकारा	१॥)। सेन्ट्रल बैंक
३६०॥=)३ सूद चन्द्रभानु निधि ।	३२७॥।-)२ पोस्ट आफिस सेविंग बैंक ।
१२३।=)६ आर्यविवाह फंड	७॥) स्टाफ इम्प्रेस्ट
१००) आर्यसमाज सुमाटरा	२१३६)३ कैश स्टॅंड
२०७॥॥)३सूदबिहार रिलीफ	४७३३।=)१० घाटा खाता
१६७॥।-)६ सूदकाश्मीर फंड	३६७४।=)॥ पिछला
१०६।।।) आर्यविद्वतसम्मेलन	१०५६)४ इस वर्ष का
६७॥॥)६ सूद दयानन्द दलितोद्धार फंड	
६६॥)७ दयानन्द आश्रम	
१६५॥।=) विविध	
१६७०=)६ विविध अमानतें	
२६४) परोपकारिणी सभा मौरिशस ।	
१०७०=)३ सेठ बैजनाथ भरथिया।	
६१।।।॥) विविध	
२१६-)३ प्रचारकों की अमानतें ।	
योग १५६५४१॥)१०	योग १५६५४१॥)१०

आज की तारीख की हमारी पृथक् रिपोर्ट साथ है । हमने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के हिसाब की जाँच पड़ताल की है और हम प्रमाणित करते हैं कि उपर्युक्त बैलेन्शीट तथा साथ का आय व्यय का विवरण हिसाब की किताबों तथा अन्य कागजों के अनुसार जो हमें दिखाये गये हैं ठीक हैं ।

वास्ते जगदीशप्रसाद एण्ड कम्पनी

(ह०) जगदीशप्रसाद

बी. ए. बी कौम, जी डी ए आर ए.

रजिस्टर्ड एकाउन्टेण्ट आडीटर

चाँदनी चौक (देहली) ११-६-३६

(ह०) रघुनाथप्रसाद पाठक
एकाउन्टेण्ट

(ह०) नारायणदत्त
कोषाध्यक्ष
सार्वदेशिक सभा

हैदराबाद में रचनात्मक काम

हैदराबाद रियासत या उक्त रियासत के चारो ओर इर्द-गिर्द इस समय १५० के लगभग ऐसे आर्यसमाज हैं जिनके अपने मन्दिर नही है। आर्यसमाज के प्रचार का जो प्रबन्ध सार्वदेशिक सभा इस समय कर रही है उससे यह आशा है कि निकट भविष्य मे दक्षिण भारत मे ५०० आर्यसमाज बन जावेगे। मन्दिर के बिना न कोई समाज स्थिर रहता है, नाही उसके सत्सङ्ग नियम-पूर्वक हो सकते है और नाही समाज सगठन सम्बन्धी अन्य कार्यों का सम्पादन ही होसकता है। इन्ही कठिनाइयो को दूर करने के लिये सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा ने यह निश्चय किया है कि आर्य जनता से प्रार्थना की जाय कि वे तत्काल दक्षिण भारत मे मन्दिरो के निर्माण के लिये धन-सग्रह के कार्य मे जुट जाये। आर्यसमाजो से सूचनाये आ रही है कि वे इस काय मे तत्पर है परन्तु इस सभा की यह इच्छा है कि इस काय को बड़ी तेजी से सम्पादन किया जाय ताकि शीघ्र ही मन्दिर बनने शुरू हो जावे। हैदराबाद राज्य मे भिन्न २ स्थानो पर मन्दिर बनाने के नक्शे और व्यय के अनुमान तैयार किये जा रहे है और जनवरी मास मे मन्दिर बनने शुरू हो जायेगे।

ग्रामो मे बड़े मन्दिरो पर १०००) रु० और छोटे मन्दिरो पर ५००) रु० लागत आयेगी। पूर्व घोषणा के अनुकूल जो भाई अथवा बहन इस निधि मे ५००) रु० अथवा १०००) रु० दान देगे उनके नाम का पत्थर समाज पर लगाया जावेगा। इस प्रकार जो समाज अथवा सभा इन दोनो राशियो मे से एक देगी उस के नाम का पत्थर अङ्कित किया जावेगा यदि दो तीन दानी सज्जन अथवा देवियां एक समाज मन्दिर के बनाने के लिये राशि पूरी करदेगी तो उनके सम्मिलित नाम अङ्कित कर दिये जायेगे। इसी प्रकार छोटी-छोटी आर्यसमाजे यदि मिल कर एक मदिर के लिय दान पूरा कर देगी तो उनके सम्मिलित नाम अङ्कित किये जायेगे।

यह सभा आगामी तीन वर्षों मे ५०० मदिर दक्षिण भारत मे बनाना चाहती है जिनमे से ?०० मदिर सन् १६४० मे बन जाने चाहिये और शेष १६४१ और १६४२ ई० मे।

यह सभा सब आर्यसमाजोसे आशा करती है कि वे इस अपील की प्राप्तिपर तत्काल निश्चय करके निम्न सूचनाएँ इस सभा को दे.—

(१) वे अपनी (समाज की) ओर से कितनी कितनी लागत के कितने मदिर

सम्पादकीय

हैदराबाद (दक्षिण) में रचनात्मक कार्य

प्रचार—

हैदराबाद रियासत की ओर से बाहर के उपदेशको के प्रवेश पर जो प्रतिबन्ध चला आ रहा था, वह अब हट चुका है। इसके हटते ही हैदराब द आदि स्थानों मे बाहर के उपदेशकों के व्याख्यान होने शुरू हो गये है। श्री स्वामी अभयदेव जी आचाय गुरुकुल कागडी पाडीचरो से लौटते हुए २० दिसम्बर को हैदराबाद पधारे। उनका महत्त्वपूर्ण उपदेश देवीदीन बाग के विशाल कम्पौड मे हुआ। डी० ए० वी० कालेज लाहौर के प्रो० बहादुरमल जी फिल सोफीकल कान्फ्रेस के सिलसिले मे हैदराबाद पधारे थे। २४ दिसम्बर को उनका व्याख्यान आर्यसमाज सुलतान बाजार मे हुआ। श्री प० ज्ञानचन्द जी आर्य सेवक स वदेशिक सभा की ओर से २२ दिसम्बर को हैदराबाद पधारे। २५ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्बन्धी बडे भारी जलसे मे उनका व्याख्यान हुआ। पोलीस की तरफ से किसी प्रकार की पूछताछ तक भी नही हुई।

निर्माण करायगे और इस काम के लिये कितना कितना धन किस किस तिथि को सभा को भेजेंगे।

(२) यदि वह समाज स्वय अकेली एक मंदिर नही बना सकती तो किस-किस समाज से मिलकर वह कम से कम एक मन्दिर बनाने की राशि पूरी कर देगी और कब तक?

(३) उनके नगर मे अथवा आस पास मे कौन ऐसे सज्जन है जिन से यह सभा प्रार्थना करे तो उनसे एक मन्दिर बनाने के लिये दान प्राप्त हो सकता है।

मुझे पूर्ण आशा है कि इतने बड़े बलिदान से दक्षिण भारत मे वैदिक धर्म के प्रचार और आर्यों के सगठन को दृढ़ बनाने का जो स्वर्णावसर प्राप्त हुआ है उसे आर्यसमाजें तथा आर्य (हिन्दू) भाई व्यथ न जाने देंगे और शीघ्रातिशीघ्र इस काय को सम्पादन करने का उपाय करेंगे।

मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा, देहली

श्री पं० धुरेन्द्र शास्त्री जी ४ जनवरी को शोलापुर पहुँच गये हैं। वे वहां से जिला करीमनगर और नलगुण्डा को आर्यसमाजो में प्रचारार्थ पधारेगे।

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज, श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज, श्री स्वामी अभयदेव जी, श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, श्री स्वामी केवलानन्द जी महाराज, श्री स्वामी गङ्गागिरि जी तथा श्री प० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार, श्री प० अयोध्याप्रसाद जी वैदिक मिशनरी, श्री प० वेदव्रत जी वानप्रस्थी श्री प० कृष्ण जी, श्री ला० खुशहालचन्द जी, श्री ला० देवीचन्द जी, श्री प० प्रियव्रत जी, श्री प० रामचन्द्र जी शास्त्री, श्री० प० सत्यव्रत जी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल काङ्गड़ी इत्यादि अनेक सज्जनो से प्रार्थना की गई है कि वे शीघ्र ही हैदराबाद रियासत म पधार कर वहा की आर्यजनता को अपने उपदेशामृत से लाभ पहुँचाए।

इसके अतिरिक्त निजामराज्य आर्यप्रतिनिधि सभा के आधीन ० उपदेशक प्रचार कार्य कर रहे हैं।

सार्वदेशिक सभाका ओर से श्री म० माथुर शर्मा जी शीघ्र ही जाने वाले है। इनके अतिरिक्त ५ योग्य उपदेशक भी शीघ्र भेजे जाने वाले है।

आर्य हाई स्कूल—

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निश्चयानुसार आर्य हाई स्कूल आगामी जून मास मे नये सत्र से जारी हो जायेगा। तैय्यारिया जारी है। स्कूल के लिये सुलतान बाजार में श्री ओआइन जी रिटायर्ड वकील की कोठी खरीदने के सब प्रबन्ध पूर्ण हो चुके थे कि निजाम सरकार बीच मे कूद पड़ी और उन्होने मिस्टर ओआईन को यह कह कर कोठी बेचने से मना कर दिया कि सरकार स्वय इस कोठी को खरीदना चाहती है। शीघ्र ही स्कूल के लिये भूमि खरीदी जायेगी और स्कूल की इमारत शुरू हो जायेगी।

नये समाजों की स्थापना तथा मन्दिर निर्माण—

हैदराबाद रियासत में नये आर्य समाज स्थापित हो रहे हैं। इनकी सूची आगामी अङ्क मे दी जायगी।

सार्वदेशिक सभा ने निश्चय किया है कि आगामी ३ वर्षो मे ५०० आर्यसमाज मन्दिर दक्षिण भारत मे निर्माण हो जाने चाहिएँ। इसके लिये सभा ने समाजो तथा आर्य नर नारियो से धन की अपील की है। अपील अन्यत्र दी गई है। प्रसन्नता है सभा की अपील का वैसा ही सन्तोषजनक उत्तर मिल रहा है जैसे की आशा थी। आर्य समाजो तथा सम्पन्न आर्य नर नारियों को शाघ्रता करनी और इस पुण्य अवसर से लाभ उठाना चाहिए।

लेख-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख पत्र *

वर्ष १३ | माघ १९९६ | फरवरी १९४० ई०] [दयानन्दाब्द ११६ | अङ्क १०

* वेद की शिक्षाएँ *

स नः पर्षद् अतिद्विषः । (अथर्व ६।३४।१)

ईश्वर हमें द्वेषों से पृथक् कर दे।

May God keep us away from animosities and jealousies of earthly existence!

न विन्धे अस्य सुष्टुतिम् । (ऋग्वेद १।७।७)

मैं परमात्मा की स्तुति का पार नहीं पाता।

The Lord is too great for my praises

अध्यात्म धारा

[ले०– श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज]

(१)

अपने को यज्ञमय बनाओ

हमारी भूल कहां पर है ? केवल एक शब्द को भली भांति समझलें तो सब पता लग जायगा।

देखो एक 'यज्ञ' शब्द आता है। वहां यज्ञ परमात्मा का वाचक है। दूसरे स्थान पर पुरुष के साथ मिले हुए आत्मा का नाम 'यज्ञ' है। तीसरे स्थान पर 'यज्ञ' शब्द शुभ कर्मों का वाचक है। एक और वेद-मन्त्र में 'यज्ञ' शब्द आया है जहां पुरुष के सुधार का वाचक है। फिर पितृ यज्ञ देव यज्ञ में कर्म का वाचक कहा है।

प्रेम किन का होता है जिनके गुण और स्वभाव समान हों। यदि आप अपने को यज्ञ बना लो तो आत्मिक बल बढ़ जाता है।

बलवान आत्मा बलवान शरीर को चाहता है। आप अपने को 'यज्ञ' बनाने का यत्न करो फिर आप उस यज्ञस्वरूप परमात्मा से मिल जायेंगे।

आंख को यज्ञ बनाओ।' एक कवि ने कहा है कि दूसरे की निन्दा करने से मुख में दोष आ जाता है। नेत्र परस्त्री पर कुदृष्टि डालने से दूषित हो जाता है। चित्त दूसरे की हानि सोचने से दूषित होता है। इन सब के दूषित होने से मार्ग बिगड़ जाता है और मनुष्य यज्ञ मय नहीं बन पाता है। फलत: परमात्मा से भेंट नहीं हो सकती।

आंख से देखकर कैसे दोष उत्पन्न होते हैं ? एक जन्तु आपके सामने से जाता है। एक 'मनुष्य उसे देखकर सोचता है परमात्मा की सृष्टि में कैसे सुन्दर जन्तु हैं। दूसरा सोचता है कि इसका मांस बड़ा स्वादिष्ट है। भाव दोनो के भिन्न हैं और इसी से कार्यों में भूल हो जाती है। मनु जी कहते हैं जब मनुष्य का भाव अच्छा नहीं तो चाहे वेद पढ़ लो, यज्ञ कर लो सब दूषित हैं। यदि भाव में सचाई है तो सब ठीक है। इसीलिए कहा है मन को यज्ञ बनाओ।

फिर कहा है कि यज्ञ को यज्ञरूप बनाओ अर्थात् अच्छे कर्मों को भी यज्ञ बनाओ। जिला बदायूँ में एक नकल नवीस रिश्वत लेता था उसने सत्संग से घूस लेना छोड़ दिया। परन्तु उसने क्या किया ? कि काम कराने वालों से बोलता ही नहीं। उसके अन्दर अभिमान आगया कि मैं रिश्वत नहीं लेता। 'निकाला तो कुत्ते को और बांध लिया गधे को।' उचित तो यह था कि बोलता और रिश्वत लेने वालों की तरह रिश्वत न लेता।

इस प्रकार करता तो संसार को अच्छा आदर्श देता। इसलिए भले कामों से जो प्रशंसा होती है उसे भी निष्काम और ईश्वर अर्पण करदो।

अपने आपको यज्ञ बनाने के लिये ही संध्या करने का समय रखा हुआ था। कई कहते हैं कि प्रातः काल पूर्व और सायंकाल को पश्चिम की ओर मुख क्यों करें। ये दोनों काल विचार के लिये रखे हुए थे। सूर्य की ओर क्यों बैठें। संकेत से बतलाया है कि 'हे मनुष्यों, तुम विद्या और प्रकाश की ओर खड़े रहो। यदि प्रकाश का ओर पीठ दे दी तो छाया सामने होगी। तुम्हारे सामने प्रकाश नहीं वरन् अन्धकार होगा। शाम और सुबह समानता की श्रेणी के समय हैं। किसी के स्वत्व का हनन न करना समानता है।

संसार से वैर विरोध हट जायँगे यदि आपके मन में समानता का भाव आजायगा। उपनिषद् में लिखा है कि मनुष्य के शरीर में दो शक्तियां हैं। रयी और प्राण। दिन के समय प्राण की शक्ति बढ़ती है। रात्रि को रयी बढ़ती है। जैसे रयी की शक्ति रात्रि को बढ़ती है और प्रातःकाल को रयी और प्राण की शक्ति सम हो जाती है वैसे ही सायंकाल को दोनो शक्तियां सम हो जाती हैं। ये ही समय विचार का उत्तम है

चित्त की वृत्ति कम्पास की सुई के समान होती है। यह किधर ठहरे! जो स्थिर स्वभाव परमात्मा है जब मन की सुई उधर आयेगी तब ठहर जायगी। जगत् के पदार्थ तो चलायमान हैं। वहां ठहर नहीं सकती। एक माता की ओर आंख उठाने से बुरा भाव पैदा हो गया तो क्या समझते हो कोई विकार न आयगा। अवश्य आयगा। चित्त के स्थिर और समान न रहने से भारी अनर्थ होते हैं। इसीलिए कणाद ऋषि ने नियम बतलाया है कि अविद्या मनुष्य से सब प्रकार के पाप करवाती है और यह इन्द्रियों के मार्ग से संस्कारों से आती है।

इन्द्रियों को वश में करना कठिन है एक सेनापति युद्ध में जीतकर आया और एक कन्या के रूप को देखकर उस पर मोहित हो गया। वह कन्या आर्य थी। कहती है सेनापति, वह तेरी तलवार का बल जिससे तू सैकड़ों को काटता था, वह तेरा ओजस्वीपन तो मेरे एक कटाक्ष में नष्ट हो गया, तनिक सोच तो सही एक मनुष्य हस्ति के दंत को उखाड़ने सिंह को मारने, सर्पों को हाथों से मार देने में समर्थ है, परन्तु इन्द्रियों के वश करने में असमर्थ होता है तू कहता है कि तूने लाखों को जीता है और मैं कहती हूं कि मैंने तुझको जीता है।" सेनापति की बुद्धि ठिकाने आगई।

उलटा समझ लेने से जीवन उलट गया ऐसे ही यज्ञ शब्द को ठीक न समझ सकने से हम बिगड़ गये। पितृ यज्ञ के अनर्थ से आपा धापी पड़ गई।

प्रमाद न करो दुख उठाओगे। यदि यज्ञ शब्द को सोचना और बनाना चाहते हो तो इन्द्रियों के प्रत्येक मार्ग को ठीक करके उन्हें वश में लाओ।

बन्धन और मोक्ष का कारण मन है

आर्यसमाज वच्छोवाल लाहौर के गत वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिए हुए
श्री नारायण स्वामी जी महाराज के भाषण का सार—

मनुष्य इस संसार में जो कुछ करना चाहता है और जो कुछ करना नहीं चाहता उसका कारण मन हुआ करता है मन ही बन्धन और मोक्ष का कारण है। इस मन के बिना संसार में कोई भी काम नहीं कर सकता वेदभगवान ने इस मन को शिव संकल्प वाला बनाने का उपदेश दिया है गोपथ ब्राह्मण में लिखा है मनुष्य मन में जैसा संकल्प करता है वैसा ही हो जाता है। उपनिषदों में बताया गया है कि मनुष्य संकल्पों का ही पुञ्ज है। मनुष्य जैसे संकल्पों का ध्यान करता है वैसे ही संकल्प उसके मन में रहने लगते हैं। संकल्पों से काम काम से क्रोध और क्रोध से मोह उत्पन्न होता है तथा मोह से बुद्धि नष्ट हो जाती है। बुद्धिनाश मनुष्य के नाश का कारण होता है अच्छे संकल्प मनुष्य को अच्छा और बुरे बुरा बनाते हैं। मनुष्य जिस प्रकार के संकल्प किया करता है वैसा ही बन जाया करता है। अमेरिका के एक विद्वान् ने लिखा है कि मनुष्य अपने विचारों को नवीन बनाने से अपने शरीर को नवीन बना सकता है एक दूसरे स्थान पर उन्होंने लिखा है कि मनुष्य विचारों से अपने आचरण का निर्माण कर सकता है अमेरिका का एक व्यक्ति यह प्रश्न उठाते हुए कि मनुष्य वृद्ध क्यों होता है? लिखता है कि मनुष्य का शरीर सेल्स से बना हुआ है वे सेल्स नवीन बनते रहते हैं और टूटते रहते हैं जब ये टूटते रहते हैं और फिर नवीन बनते रहते हैं तो फिर मनुष्य वृद्ध क्यों है नवीन सेल्स के बनने से मनुष्य शरीर भी नवीन हो जाता है परन्तु इस नवीन सेल्स को बनाने के लिए मनुष्य को शुद्ध भोजन करना चाहिये और व्यायाम करना चाहिए।

ब्रह्मचर्य्य का पालन—

आज भारतीयों की आयु का औसत घट गया है। इसका कारण यह है कि हम नियमित जीवन यापन नहीं करते ब्रह्मचर्य्य का पालन नहीं करते। जिस जाति के धर्म ग्रन्थों में ब्रह्मचर्य्य का महत्व बताया गया है उसी जाति के लोग ब्रह्मचर्य्य का पालन नहीं करते सबसे पहले हमें बुद्धि प्राप्त करना चाहिए और बुद्धि के पश्चात् बल और बल के पश्चात् विवाह करना चाहिए। परन्तु हम आज उलटा कर रहे हैं। आज भारत में तीन लाख विधवाएँ हैं। इन में सहस्रों एक एक वर्ष की विधवाएं हैं। इस प्रकार एक वर्ष से

लेकर १२ वर्ष तक की कई सहस्र विधवाएँ हैं। मन को जैसा चाहे वैसा बना लेना मनुष्य के अपने अधिकार की बात है। अतः मन पर अधिकार करना चाहिए। मानसिक शक्ति का दूसरों पर भी प्रभाव पड़ता है। यह नियम केवल मानव जगत में ही नहीं प्रत्युत पशु जगत् में भी काम करता है। हमारे मन के अन्दर जो सङ्कल्प उठते हैं वे मनों में ही समाप्त नहीं हो जाते। उनकी छाया वायु मण्डल पर भी पड़ती है हमारे सङ्कल्प उठते हैं और वायु-मण्डल में भर जाते हैं। सङ्कल्प वायु मण्डल को शुद्ध अथवा अशुद्ध करते हैं। बुरे सङ्कल्प मन को दूषित कर देते हैं। अतः जब हम बुरे सङ्कल्प करते हैं तो केवल पाप करते हैं। हम अपना ही नुकसान नहीं करते प्रत्युत जाति देश और राष्ट्र का भी नुकसान करते हैं। जिन बातों का हम चिन्तन करते हैं व वातावरण में फैल जाता है। अतः हमें सावधान होकर सङ्कल्प करने चाहिये। विचारों के रङ्ग भी हुआ करते हैं प्रेम के विचारों का रङ्ग गुलाबी होता है भगवद्भक्ति के विचारों का रङ्ग आस्मानी होता है, कामवासना के सङ्कल्पों का रङ्ग लाल होता है, शत्रुता के भावों का रङ्ग काला होता है स्वार्थपरता के भावों का रङ्ग हरा होता है। इन रंगों को देख कर ही मनुष्य के सङ्कल्प जाने जा सकते हैं। सब से बुरा रंग काला है। सङ्कल्पों से सन्तानों का रंग भी बदला जा सकता है। सङ्कल्पों से रोग भी होते हैं। रोगों से बचने का एक तरीका यह है कि सङ्कल्प अच्छे रखने चाहिएँ। ये सङ्कल्प मृत्यु का कारण भी हो जाते हैं हम संसार को अपने सङ्कल्पों के अनुसार देखा करते हैं। मन बुराई की तरफ से हट कर भलाई में लगता है। संसार में सुख मन की एकाग्रता में है।

निराशा मे आशा

(लेखक—श्री प० प्रियरत्न आर्ष)

* *

हरिदास की माता का देहान्त उसके अति शैशव काल में ही हो गया था। पिता की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक न थी अतएव उसका पालन पोषण पिता को भार प्रतीत होने लगा चाहिये तो यह था कि हरिदास को चाहे के सुपुर्द कर देता परन्तु उसको लेती कौन प्रथम तो धन का प्रश्न दूसरे अन्त्यज जाति में वह उत्पन्न हुआ था जैसे तैसे पिता हरिदास को चार वर्ष तक पाल सका दैवयोग से वह भी काल का ग्रास बन गया। हा ! दीन बालक का अब कौन सहारा हरिदास का पिता राम का भक्त था। उसका नाम भी रामदास था एक बार जब वह किसी नदी में चमड़ा साफ कर रहा था तब प० रामदुलारे वाजपेयी का पुत्र उस नदी में कुछ लड़कों के साथ स्नान करते हुए नदी में डूब रहा था, उसको रामदास ने बचाया था अन्य साथी तो उसे डूबता देखकर चले आये थे परन्तु नदी प्रवाह में रामदास ही कूदा था उसी ने उसको पकड़ा था इस कार्य से प्रसन्न होकर प० रामदुलारे ने रामदास से कहा था कि जब तुझ पर भीड़ पड़े उस समय मुझे याद करना

मरने से कुछ पूर्व पहिले रामदास ने प० रामदुलारे वाजपेयी को बुलाया और कहा था कि यह मेरा पुत्र हरिदास आपका बच्चा है इसको अपनी शरण दीजिये उत्तर में प० रामदुलारे ने कहा तुम निश्चिन्त रहो मैं इसका बाल भी बांका न होने दूँगा अन्तत रामदास तो इस संसार को छोड़कर चला गया और हरिदास को प० रामदुलारे अपने घर ले आया। दो मास भी न होने पाये थे कि प० रामदुलारे की बिरादरी ने उन्हें तङ्ग करना शुरू कर दिया और कहा कि तुम इस अन्त्यज बालक को छोड़ दो अपने यहाँ से निकाल दो वरना तुम्हारा हुक्का पानी गिरा देंगे। रिश्ता नाता छोड़ देंगे बिरादरी से तुम्हे पृथक कर देंगे इस भय से प० रामदुलारे ने उस बालक को एक चमार के सुपुर्द कर दिया और उसका खर्च मासिक देना स्वीकार कर लिया परन्तु वह दुष्ट चमार उस बालक को अच्छी तरह न रखता था। खाने पीने मे तङ्ग करता तथा घर और खेत के काम में जुटाये रखता था खैर लड़के के जैसे तैसे चार साल बीते वह आठ वर्ष का हुआ प० रामदुलारे सख्त बीमार हो गया इस मास खर्च उस चमार के पास न भेजा जा सका। अब क्या था बालक हरिदास पर एक आपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा, कार्य भार का आधिक्य

तो था ही, परन्तु साथ में बातों का तानाबाली और मारामारी मे तङ्ग आकर अन्तत हरिदास को उस चमार का घर भी छोड़ देना पड़ा। घर से बाहर निकल कर कहा पहुँचा, उसी नदी के किनारे जहाँ उसके पिता ने प० रामदुलारे के लड़के को डूबने से बचाया था

हरिदास जैसे ही नदी तट पर पहुँचा तो एक शवविमान को लिये हुए कुछ लोग वहाँ आ पहुँचे। लड़के ने आश्चर्य से देखा कि यह क्या तमाशा है। पर जब काष्ठ चिता पर प० रामदुलारे का मृत शरीर स्नान करा कर रक्खा गया तो बालक हरिदास को कुछ स्मृति आई कि सम्भवत यह उसी व्यक्ति का शरीर है जिसके प्रति मेरे पिता ने मुझे सौंपा था और उन्हीं व्यक्ति के व्यय से मैं उस चमार के घर पलता रहा। पूँछने पर ज्योंही निश्चय हुआ कि यह वही महानुभाव प० रामदुलारे हैं तो लड़के की आंखों से आंसुओं की झड़ी बन्ध गई किन्तु उसके अन्तर को कौन जाने और कौन उसे धैर्य दे। लोग प० रामदुलारे के शव को भस्म कर नदी मे बहा कर चले गये परन्तु वह बालक सुबकियाँ लेता हुआ वहीं नदी के किनारे अपने भाग्य पर रोता रहा।

हरिदास को जब अपने जीवन का कोई सहारा न दिखाई दिया और न कोई निर्वाह का ही उपाय सूझा तब उसने आंखें बन्द करके अपने को जल प्रवाहित कर दिया। दैव की गत निराली है, साय का समय था प० परमात्मशरण आर्य सन्ध्या वन्दनार्थ नदी की ओर आये और बहते बालक को देख तुरन्त वस्त्रों सहित जल में कूद पड़े वेग से तैर कर बालक को पकड़ ही लिया और जल से बाहर ले आये। बालक घबराया हुआ था उसे प० परमात्मशरण सान्त्वना देने लगे। लड़के ने कहा मुझे आपने डूबते से पकड़ा, अब आप मेरा क्या बनावेंगे। प० परमात्मशरण ने कहा क्या तुम्हारा कोई है बालक ने उत्तर दिया मेरा संसार में कोई नहीं है बचपन में माता पिता मर गये और प० रामदुलारे को सौंप गये थे, किन्तु फिर चमार बालक होने से बिरादरी वालों ने उनके घर से मुझे निकलवा दिया। हाँ, उन्हीं के खर्च से अब तक पेट पालता रहा। अब प० रामदुलारे भी इस संसार से चल बसे, उनको भस्मीभूत होते देखकर अति दुःख हुआ। इतना कह बालक रोने लगा और आगे कुछ न कह सका। प० परमात्मशरण आर्य ने बालक हरिदास को प्यार किया धैर्य दिया और कहा कि तू मेरा बेटा है मैं तेरा पालन करूँगा कुछ चिन्ता न कर मैं आर्य हूँ, आर्य लोग छूत छात और ऊँच-नीच नहीं मानते चलो मेरे साथ मैं अच्छी तरह तुम्हें रक्खूँगा और पालूँगा।

परमात्मशरण उस हरिदास बालक को अपने साथ ले आये। परमात्मशरण के अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई थी, उनकी धर्मपत्नी का नाम प्रभा देवी था, वह भी

हरिदास बालक को देखकर अति प्रसन्न हुई। और उसे अपने घर का दीपक समझ कर अपनाया, है भी ठीक, दीपक से हो तो प्रभा चमकती है। आज हरिदास का नाम हरिशर्मा हो जाता है और वह डी ए वी स्कूल में पढ़ने लगता है अब दस साल तक पहुंचता है तब प० परमात्मशरण के एक पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम देवशर्मा रक्खा गया। यद्यपि परमात्मशरण तथा प्रभादेवी के निज पुत्र हो गया, परन्तु हरिशर्मा पर वही प्रेम की दृष्टि रही जो पहिले थी। अब हरिशर्मा की आयु १६ वर्षकी हुई उस समय देवशर्मा ६ वर्ष का हो गया था इन दोनों में भी परस्पर अटूट प्रेम उत्पन्न हो गया। आश्चर्य की बात है कि ६ वर्ष के बालक देवशर्मा को भी उसके माता पिता ने यह पता न दिया कि हरिशर्मा तुम्हारा भ्राता नहीं यह अन्य का बालक है। धन्य हो ऐसे सहृदय दम्पति!

हरि शर्मा दसवीं क्लास में पढ़ता था परीक्षा में अभी ३ मास शेष थे, दुःख है कि इनफ्लूऐन्जा में प० परमात्म शरण और प्रभादेवी का शरीरान्त हो गया। हरि शर्मा और देव शर्मा दो बालक ही घर में रह गये। देव शर्मा के मामा आये उसे अपने साथ लिया और सारी सम्पत्ति भी। हरि शर्मा को साथ नहीं लिया इस कार्य में देव शर्मा के मामा ने दोनो बच्चो के हृदयो पर कुठाराघात किया। हरि शर्मा छुटपन से देव शर्मा को प्यार से खिलाता रहा अपना साथी छोटा भाई समझता रहा और देव शर्मा भी हरि शर्मा को अपना सगा बड़ा भाई समझता था। मामा जब देव शर्मा को मोटर पर सवार करने के लिये उठाने को तैयार हुए तो भाग कर वह अपने बड़े भाई हरि शर्मा से लिपट गया और मामा को कहा कि मैं भाई को छोड़कर नहीं जाता भाई को भी साथ ले चलो तो चलूँगा। हरि शर्मा ने भी छोटे प्यारे भाई को छाती से लगा लिया। जैसे बन्दरी अपने बच्चे को नहीं छोड़ती ऐसे छोड़ना नही चाहा, परन्तु मामा ने उससे बलात् छुड़ा लिया और मोटर मे बिठा लिया। प्रेम के आँसू टपकाते हुए हरि शर्मा ने दौड़ कर मोटर के आगे आना चाहा परन्तु उस कठोर हृदय मामा ने उसके एक बेंत मारा और एक तरफ धक्का दे दिया मोटर दौड़ा दी गई। हरि शर्मा अत्यन्त निराश और उदास हो आँखों से आँसू टपकाता हुआ घर आया, परन्तु घर में क्या था दो चार बर्तनों स्कूल की पुस्तकों, थोड़े कपड़ो के सिवाय और कुछ न था। सारा दिन रो रो कर बीता, रात को अकेले नींद न पड़ी प्रात होते ही घर को छोड़ उसने जंगल की राह ली।

उधर देव शर्मा बालक मोटर में बैठा २ रोता चिल्लाता रहा लगातार कई घण्टों रोने से उसे रास्ते में ही ज्वर हो गया और भाई भाई कह कह कर बेहोश हो गया, हृदय

की चोट मार्मिक होती है। देव शर्मा न जाने कैसा बेहोश हुआ कि वह पुन होश में आया ही नहीं। मामा की कठोरता का ही यह दुष्परिणाम हुआ।

इधर हरि शर्मा जगल २ भटकता था और चाहता था कि उसे कोई जगली पशु खा जावे, अचानक देखता है कि सामने से एक भयानक रीछ आ रहा है, रीछ ने ज्यों ही उस पर आक्रमण करना चाहा था त्यो ही एक सिंह दूसरी ओर से गर्जता हुआ आया। सिंह की झपट यद्यपि थी हरिशर्मा के लिये परन्तु प्रतिद्वन्द्वी रीछ को देख कर सिंह हरि शर्मा को छोड़ कर रीछ पर झपटा। रीछ आगे और सिंह पीछे झपटते हुए घने जगल में हरिशर्मा की आँखो से ओझल हो गये। हरि शर्मा वहाँ से एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ा और उसने अपने आपको वहाँ से लुढ़का दिया, लुढ़कते लुढ़कते चोटें खाते २ वह अचेत हो गया और एक संत की कुटी के पास आ भटका। सन्त ने देखा कोई आहत कुमार है, वह उसे उठा कर अन्दर लाये और कुछ जड़ी बूटी पिला कर सचेत कर दिया पुन गरम २ दूध में हरिद्रा और शिलाजीत पिलाने से चोट भी ठीक हो गई। सन्त ने उसका वृत्तान्त पूछा उसने सब वृत्तान्त कह सुनाया। महात्मा ने उसे उपदेश दिया कि बेटा आत्महत्या करना महा पाप है तुम अब बच्चे नहीं हो अपने पैरो पर खड़े हो सकते हो, कुछ ट्यूशन या अन्य कार्य करके आगे विद्या को बढ़ाओ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते रहो, स्मरण रक्खो जब तक तुम २५ वर्ष के न हो जाओ और कमाने खाने के योग्य न बन जाओ तब तक कदापि विवाह न करना वरना पछताओगे और किसी गहरे रोग में अति दु खी होकर शीघ्र संसार से चल बसोगे।

हरिशर्मा के मन में सन्त जी का उपदेश बैठ गया। वहाँ से चलकर एक मासिक पत्रिका के कार्यालय में पहुँचा। वहाँ एक ८ रु० मासिक के चपरासी का स्थान खाली था। उसने सन्तोष और हर्ष के साथ उस कार्य को करते हुए आयुर्वैदिक कालेज में आयुर्वैदिक और ऐलोपैथिक का अध्ययन करना आरम्भ कर दिया। दो वर्ष के पश्चात् योग्य सिद्ध होने पर उसको १५) रु० मासिक छात्रवृत्ति भी हो गयी अब उसका सारा समय अध्ययन में ही व्यतीत होने लगा। पुन दो वर्ष के बाद वह इतना कुशल हो गया कि अन्दर के रोगियो की चिकित्सा तो करनी ही पड़ती थी, परन्तु बाहर रोगियो को देखने को भी जाना पड़ता था। इस प्रकार फीस की आय भी होने लगा। अब उसको २५), ३०) रुपया मासिक आसानी से प्राप्त होने लगे दो वर्ष के उपरान्त कविराज की उपाधि प्राप्त की तथा अनेक स्वर्ण पदक भी। कालेज छोड़ते ही योग्यता के कारण तुरन्त दक्षिण गुजरात में १२५) रु० मासिक पर राजवैद्य हो गया राज्य में अपनी योग्यता तथा रोगियों

कारणवाद

[ले०—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज]

वेदान्त सिद्धान्तानुकूल दो कारण माने जाते है, उपादान कारण, निमित्त कारण।

जिसमें तादात्म्य सम्बन्ध से कार्य रहे अर्थात् जिस प्रकार मिट्टी से घर स्वर्ण से भूषण धागा से कपड़ा बनता है और घर भूषण, वस्त्र क्रम से मिट्टी, स्वर्ण सूत में ही रहता है इस लिये यह उपादान कारण हैं। उपादान से भिन्न कारण निमित्त कारण होता है उस निमित्त कारण के कई भेद हो सकते हैं वह कहीं जड़ है कहीं चेतन है, कहीं स्वतन्त्र है कहीं परतन्त्र है, कहीं कार्य के साथ रहता है कहीं भिन्न रहता है इत्यादि

न्याय दर्शन में समवायि, असमवायि, निमित्त भेद से कारण तीन प्रकार का होता है।

जिसमें समवाय सम्बन्ध से कार्य उत्पन्न हो उसे समवायी कारण कहते है यथा धागा वस्त्र को कपाल घट के समवायी कारण हैं क्योंकि वस्त्र और घर सूत्र और कपाल में समवाय सम्बन्ध से रहते हैं। समवायी कारण का सम्बन्धी कार्योत्पादक असमवायी कारण होता है जैसे तन्तु और कपाल संयोग यह संयोग तन्तु में, कपाल मे समवाय सम्बन्ध से रहता है और उनके कार्य वस्त्र घट को उत्पन्न करता है यदि यह संयोग न हो तो कार्य

पर सहानुभूति और जनसेवा कार्य का इतना प्रभाव पड़ा कि बच्चा २ उसका नाम जान गया। सरकारी वेतन भी दो वर्ष में १२०) रु० हो गया इधर निजी फार्मेसी तथा सिद्ध औषधों की आय भी १२०) रु० मासिक होने लगी धीरे २ कुछ कालोपरान्त राज-पुरोहित का आसन भी हरिशर्मा को मिल गया उससे भी ०) मासिक की आय होने लगी। एवं लगभग ४००) रु० मासिक हरिशर्मा को प्राप्त होने लगे। कौन जानता था कि सकट का मारा हरिदास हरिशर्मा बनेगा और उसका निराशा का जीवन आशा में परिवर्तित होगा। अस्तु परमात्मा करे आजकल के नवयुवक निराशा को छोड़ ऐसे पुरुषार्थी बन उच्चासपद को प्राप्त करें।

उत्पन्न नहीं होता है वह असमवायी कारण कहीं साक्षात सम्बन्ध से और कहीं परम्परा सम्बन्ध से उत्पादक होता है । उपरिलिखित दृष्टांत में तंतु कपाल सयोग साक्षात सम्बन्ध से उत्पादक हैं परन्तु घट और पट के रूप का असमवायी कारण तंतु और कपाल का रूप माना जाता है उस अवस्था में घट, पट रूप का समवायी कारण तो घट, पट ही हैं उसमें तंतु कपाल रूप का साक्षात सम्बन्ध न होने से वह कार्य के साथ कारण में न रह कर कारण के कारण में रहता है अर्थात् पट रूप कार्य का समवायी कारण जो पट उसका समवायी कारण तंतु है उसमें तंतु रूप रहता है इसलिए इसका उसके साथ परम्परा सम्बन्ध है इसलिए कई जगह इसका लक्षण भी कार्य वा कारण के साथ एकार्थ में रहने वाला असमवायी कारण होता है ऐसा किया गया है ।

समवायी, असमवायी से भिन्न कारण को निमित्त कारण कहते हैं । पुनः उसके भेद अनेक हैं जैसा पूर्व लिखा है वैसे ही समझलें ।

वेदांत दर्शन में इस असमवायी कारण को भी निमित्त कारण ही माना जाता है ।

इनके अतिरिक्त साधारण कारण के नाम से भी पुस्तकों में अनेक कारण माने गये हैं वह प्रायः ९ माने गये हैं ।

ईश्वर ज्ञान, इच्छा, प्रयत्न दिशा, काल, अदृष्ट प्रागभाव, प्रतिबंधकाभाव, यह सब कार्य मात्र प्रति कारण हैं अर्थात् कोई भी कार्य इनके बिना नहीं होता इसलिए यह साधारण कारण है । इस दृष्टि से जो पूर्व निमित्तादि लिखे हैं वह असाधारण कारण हो जाते हैं, इन दोनों के लक्षण यही मान लेने चाहिये जो कार्य मात्र का, अर्थात् सब कार्यों में जिसकी आवश्यकता हो, जनक हो वह साधारण कारण है और जो किसी किसी कार्य का जनक हो वह असाधारण कारण है । ईश्वर के बिना कोई कार्य नहीं होता प्रतिबंधक होने पर किसी की उत्पत्ति नहीं होती अतः प्रतिबन्धकाभाव कारण है इसी प्रकार प्रत्येक कार्य में देश कालादि की अपेक्षा होने से वह भी सहायक हैं ऐसे बिना इच्छा ज्ञान, प्रयत्न से कुछ बनता ही नहीं है अत यह सब कार्य मात्र के कारण होने से साधारण कारण माने जाते हैं और कपाल कपाल सयोग, कुलाल अथवा कपाल कुलाल, चक्र, दण्डादि सब घट के उत्पादक हैं अन्य कार्यों के नहीं हैं इसलिये वह असाधारण कारण कहे जाते हैं ।

इतना लिखने के पश्चात् अब सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास में महर्षि जी लिखित कारण वाद पर विचार करना चाहिये ताकि पता लग जाय महर्षि जी इनमें से क्या मानते हैं और क्या नहीं मानते हैं ।

(प्रश्न) जगत् के कारण कितने होते हैं ? (उत्तर) तीन, एक निमित्त दूसरा उपादान तीसरा साधारण। निमित्त कारण उसको कहते हैं कि जिसके बनाने से कुछ बने न बनाने से न बने। आप स्वयं कुछ बने नहीं दूसरे को प्रकारान्तर बना देवे। दूसरा उपादान कारण उसको कहते हैं जिसके बिना कुछ न बने। वही अवस्थांतर होके बने और बिगड़े भी। तीसरा साधारण कारण उसको कहते हैं कि जो बनाने में साधन और साधारण निमित्त हो। निमित्त कारण दो प्रकार के हैं एक सब सृष्टि को कारण से बनाने, धारने और प्रलय करने तथा सबकी व्यवस्था करने वाला मुख्य निमित्त परमात्मा दूसरा परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेक विधि कार्यान्तर बनाने वाला साधारण निमित्त कारण जीव। उपादान कारण प्रकृति परमाणु जिसको सब संसार के बनाने की सामग्री कहते हे।

जैसे घड़े को बनाने वाला कुम्हार निमित्त मिट्टी उपादान और दण्ड, चक्र आदि सामान्य निमित्त। दिशा काल, आकाश, प्रकाश, आँख, हाथ, ज्ञान क्रिया आदि निमित्त साधारण और निमित्त कारण भी होते हैं। सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास। इस लम्बे उद्धरण में उपादान और निमित्त कारण तो वहा है जो वेदांत में लिखे मिलते हैं। न्याय के समवायी कारण को उपादान मान कर निर्वाह हो जायगा परन्तु साधारण कारण चिन्तनीय है। न्याय में असमवायी कारण है परन्तु सत्यार्थप्रकाश में लिखा असाधारण कारण असमवायी नहीं है। महर्षि ने इसके लक्षण में 'जो बनाने मे साधन और साधारण निमित्त हो' तथा 'दण्ड चक्र आदि सामान्य निमित्त दिशा, काल आकाश प्रकाश, आंख हाथ ज्ञान, क्रिया आदि निमित्त साधारण और निमित्त कारण भी होते हैं।" यह लिखा है। इससे प्रतीत होता है महर्षि इसे निमित्त कारण का एक भेद मानते हैं यदि ऐसा स्वीकार किया जाय तो व्यवस्था यह होगी निमित्त कारण के दो भेद हैं महर्षि के शब्दों में एक निमित्त दूसरा साधारण निमित्त और प्रकार से कहना हो तो एक मुख्य निमित्त जैसे कुम्हार दूसरा गौण निमित्त वा अवान्तर निमित्त जैसे दण्ड चक्र आदि। ऐसा व्यवस्था करनेसे यह मानना होगा। एक उपादान कारण है दूसरा निमित्त कारण है। इनमें से निमित्तकारण के दो भेद हैं। एक निमित्त कारण है दूसरा साधारण कारण है और इनके लक्षण यह होंगे जिससे कार्य बनाया जाय जिसमें कार्य की स्थिति हो वह उपादान कारण है और उपादान से भिन्न कारण को निमित्त कारण कहते हैं।

महिला-जगत्

मातृत्व की ओर

माता की पदवी प्राप्त करने वाली कन्याओं के जानने योग्य बातें

[लेखक—रघुनाथ प्रसाद पाठक]

पाठ २

(दिसम्बर के अङ्क से आगे)

दूसरे दिन दोपहर बाद केशव के सो जाने पर कमला ने सुशीला को इधर उधर देखा और उसे घर में न पाकर बड़ा क्रोध आया। वह अपने मन में कहने लगी इस लड़की ने कल तो पाठ सुनने के लिये बड़ा उत्सुकता दिखलाई थी, परन्तु आज समय पर ग़ायब हो गई। कैसे अचरज की बात है! वह सोच ही रही थी कि इतने में दमयन्ती का हाथ पकड़े हुए गुस्से में भरी हुई सुशीला आती हुई देख पड़ी।

दमयन्ती अनमनी और शरमाई हुई थी।

सुशीला ने बहन को देखते ही कहा 'जीजी !! यह नहीं आती थी। यह कहती थी ऐसी बातें करना बुरा है।' कमला मुस्कराई और बोली 'दमयन्ती! बैठ जाओ। क्या तुम बतलाओगी कि ऐसी बातों से तुम क्यों शरमाती हो और ये बातें क्यों बुरी हैं?' कमला के गम्भीर और विनीत भाव को देखकर दमयन्ती की शर्म और झिझक जाती रही और वह बोली।

'जीजी !! बोर्डिङ्ग हाउस की मुझे एक घटना अब तक याद है। एक दिन हम चार पाँच बहनें बैठी ऐसी बातें कर रही थीं। हमारे साथ हमसे बड़ी एक दो लड़कियाँ और थीं, उन्होंने हँसी की एक बात कही थी उस पर हम सब हँस रही थीं इतने में ही हमने अध्यापिका प्रमिला बाई की आवाज़ सुनी। उन्होंने हमारी सब बातें सुनली थीं। वे हम पर नाराज़ हुई थीं उन्होंने उन दोनों लड़कियों को सज़ा दी थी और ऐसी बातें न कहने और सुनने के लिये हमें हिदायत की थी।

कमला ने कहा दमयन्ती! तुम्हारी अध्यापिका जी ने ठीक किया था। ऐसी पवित्र बातों पर हँसना और मज़ाक करना बुरा है। आज मैं तुम्हें जो बतलाना चाहती हूँ वह इन सब बातों से भिन्न है। आज मैं परमात्मा के कुछ विचित्र नियमों के सम्बन्ध में एकान्त में और आदर भाव से चर्चा करना चाहती हूँ जिससे समय आने पर जब तुम मातायें बनो तो ये बातें तुम्हारे काम आयें। मैं सोचती हूँ यदि मेरी बड़ी बहन होती और वे बचपन में ऐसी बातें मुझे बतला देतीं तो मेरा बड़ा उपकार होता। कोई समय था मैं भी सोचा करती थी कि बच्चे पैदा करना बुरा काम है। आज भी बहुत सी बहनें ऐसा ही सोचने की भूल करती प्रतीत होती हैं। भला सोचो तो यदि महात्मा बुद्ध, शङ्कर, ईसा, मुहम्मद साहब, स्वामी दयानन्द सरस्वती और महात्मा गांधी जैसे महान् पुरुषों की मातायें बच्चे पैदा करना पाप समझतीं तो संसार को ऐसी बड़ी हस्तियाँ कैसे मिलतीं। प्यारी बहिनों! ये बातें हँसी में उड़ाये जाने के योग्य नहीं हैं। इनमें हमें परमात्मा की विचित्र लीलाओं के पुण्यदर्शन होते हैं। एक नई ज़िन्दगी के संसार में आने की बात क्या मामूली बात है?

'इस नई ज़िन्दगी की विचित्रता को समझो! संसार में जितनी चेतन चीज़ें हैं और बढ़ती हैं परमात्मा ने नर और मादा के मेल से उनके उत्पन्न होने और पालन पोषण की एक विचित्र व्यवस्था की हुई है। जिससे नई ज़िन्दगियाँ आती रहें और सृष्टि का काम जारी रहे। फूलों, मछलियों, पक्षियों, पशुओं और मनुष्यों के सम्बन्ध में यही बात है। हाँ, उनके उत्पन्न होने के तरीके भिन्न २ हैं।"

"जीजी! फूलों के सम्बन्ध में तो मैं जानती हूँ। अध्यापिका जी ने एक दिन हमें बतलाया था कि फूल के पौदे नर भी होते हैं और मादा भी क्या दमयन्ती तुम्हें याद है?" दमयन्ती ने "कहा हाँ मुझे याद है। उन्होंने समझाया था कि नर पौधों से पक्षी वीर्य कण ले जाकर मादा पौदा के रज कणों पर छोड़ देते हैं और इन दोनों चीज़ों के मेल से फल फूल और वृक्ष पैदा होते हैं। कमला ने पूछा "क्या बतला सकती हो इन दोनों चीज़ों का मेल किस चीज़ में होता है?"

'जीजी!! मुझे तो मालूम नहीं है। सुशीला क्या तुमको मालूम है?

'हाँ मुझे मालूम है", सुशीला ने कहा "बाई जी ने बतलाया था। कि इन दोनों का मेल झिल्ली में हुआ करता है। जब प्राणी इस झिल्ली में इतना बड़ा हो जाता है कि अपनी रक्षा आप कर सके तो वह झिल्ली फट जाती है और उसमें से वह निकल आता है।"

कमला ने यह सुनकर कहा 'ठीक' फूलों, फलों और वृक्षों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में तुम काफी जानती हो। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहने का मेरा इरादा था अब मैं जरूरत नहीं समझती। परन्तु पशु पक्षी इससे बिलकुल भिन्न हैं। क्या यह बात नहीं है? उत्पत्ति का आम नियम सबमें एक सा ही है। उदाहरण के लिये मछली और मेंढक माता के शरीर के बाहर पैदा होते हैं। मेंढका को ले लो। जब मादा अण्डे दे चुकती है और वे माता के शरीर को छोड़ते हैं तब ही नर मेंढक आता है और उन पर वीर्य कण छोड़ देता है और वे शीघ्र बढ़ कर मेंढक बन जाते हैं।

यही हाल मछलियों का है। मछली शांत तालाब म कीचड़ में से कंकड़ निकाल कर उनको एक सर्किल में जमा करके अपना घोंसला बनाती और उसमे अण्डे देती है। ज्योंही वह अण्डे देती है त्योंही नर मछली आती है और उन अडों पर वीर्य कण छोड़ देती है और वे अडे मछलियां बन जाती हैं।

चिड़ियों का तरीका इससे बिलकुल भिन्न है। उदाहरण के लिये मुर्गियों को लेलो। मुर्गियों के अडों पर मादा के शरीर के भीतर वीर्य कण छोड़े जाते हैं मुर्गी के बच्चों का विकास बड़ा मनोरञ्जक होता है पहले दिन अडे के चारों तरफ एक सफेद सर्किल देख पड़ता है। दूसरे दिन यदि अडा गर्म और तर हो तो उसकी शक्ल सेव जैसी हो जाती है और उसका आकार तिगुना चौगुना हो जाता है। दो दिन के बाद उसका हृदय गति करता देख पड़ता है और छः दिन के बाद उसके अडों का पूर्ण विकास हो जाता है।

'इन दिनों में बच्चे क्या खाते हैं और उनकी रक्षा कैसे होती है, क्या तुम बतला सकती हो?" कमला ने लड़कियों से यह प्रश्न किया परन्तु दोनो में से कोई भी इसका उत्तर न दे सकी। तब कमला ने समझाया कि 'मादा अडे के भीतर उसके खाने पीने के लिये कोई चीज रख देती है और तीन हफ्ते तक घासले में बैठकर उन्हें सेती है। अडों के भीतर हवा जाने के लिये बहुत छोटे २ बारीक छिद्र होते हैं। इन छिद्रों को देखकर मनुष्य दांतों तले अंगुली दबा लेता है और परमात्मा के विचित्र नियमों पर मुग्ध हो जाता है। दिन को मादा चुग्गे की फिक्र में बाहर फिरती है और रात का अपने परों के नीचे बच्चों को लाकर बैठ जाती है। दमयन्ती ने कहा 'हाँ जीजी! वह अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखती है।" कमला ने अपनी बातें जारी रखते हुए कहा "अब हम उत्पत्ति और विकास के सबसे ज्यादा महत्व पूर्ण विषय पर आते हैं। क्या तुम बतला सकती हो बिल्ली और कुत्ते कैसे पैदा होते और बढ़ते हैं? बिल्ली और कुत्तों की सृष्टि मादा के शरीर के भीतर होती है और वहीं वे बढ़ते हैं यदि वे हवा में रख दिये जायें तो नष्ट हो जायें इसीलिये

परमात्मा ने उनकी उत्पत्ति और रक्षा की व्यवस्था माता के शरीर के भीतर ही की है। बिल्ली और कुत्ते के बच्चे दो या तीन महीने में पैदा होते हैं। गाय के बच्चे ९ मास में और घोड़ी के बच्चे ११ महीने में।

"इन्हीं प्राणियों में से हम मनुष्य प्राणी हैं, क्या यह बात नहीं है?" सुशीला ने उत्सुकता से पूछा।

कमला ने उत्तर दिया "हाँ यही बात है। परन्तु क्या तुम्हें याद है सच्ची माँ बनने के सम्बन्ध में कल मैंने क्या कहा था?"

सुशीला ने कहा "जीजी!! मुझे याद है बच्चों की सृष्टि करना एक बड़ा कार्य है और यह कार्य परमात्मा ने स्त्रियों को सौंपा है।

कमला ने कहा "अब तुम देखोगी परमात्मा ने इस बड़े कार्य के लिये स्त्री को किस प्रकार समर्थ बनाया है लड़की के जन्म के समय उसके सब अङ्ग पूरे होते हैं। इन्हीं अङ्गों में जननेन्द्रिय और गर्भाशय होता है इसी में बच्चे का सृष्टि होता है और वहीं वह बढ़ता है। १२ या १३ वर्ष का अवस्था में लड़की में गर्भ धारण करने की योग्यता आ जाती है। गर्भाशय की छोटी २ खून की नाड़िया इस उम्र में टूट जाती हैं और यही कारण महीने में गर्भाशय से खून बहने का है जिसे हम मासिक धर्म कहते हैं। उस समय लड़की बच्चे पैदा करने में समर्थ समझी जाती हैं।

इस काल में लड़की की चाल ढाल और शक्ल-सूरत में परिवर्तन हो जाता है। उसके चेहरे का भद्दापन दूर होकर उस पर खूबसूरती आ जाती है इसका कारण यह है कि इस समय गर्भाशय में एक आश्चर्यजनक चीज पैदा हो जाता है और उसके खून में मिल जाने से लड़की के तमाम शरीर में परिवर्तन हो जाता है। माता बनने की परमात्मा ने यही सब तय्यारी निर्धारित की है।

लड़की के जीवन के इस काल में कई बातें ध्यान में रखने योग्य है। सबसे प्रथम खुले तौर पर इन बातों की चर्चा होनी चाहिये। वस्तुतः यह पवित्र रहस्य होता है जिसे सिर्फ माताएँ और लड़कियाँ ही जानती हैं इस समय यद्यपि लड़की बच्चा पैदा कर सकती है परन्तु मासिक धर्म होने के ३—४ साल बाद तक जब तक लड़की के शरीर का पूरा विकास न हो जाय और उसमें पूरी ताकत न आ जाय गर्भ धारण करना ठीक नहीं होता। १२—१३ वर्ष की अवस्था में हड्डियों का वह ढाँचा जिसमें से होकर बच्चा बाहर निकलता है, पूर्ण रूप से विकसित नहीं हो पाता और इस अवस्था में बच्चा जनने में माता का देहान्त तक हो जाता है या उसे जीवन पर्यन्त कष्ट भोगना पड़ता है। मैंने तुम्हें कल

बतलाया था कि बच्चों के पालन पोषण का ज्ञान रखना माता के लिये बड़ा आवश्यक है। जब माता ही बच्चा हो तब वह किस प्रकार अपने बच्चे की रक्षा कर सकती है ?

कमला की ये बातें सुनकर सुशीला प्रसन्न हुई मानो उसे कोई खोई हुई वस्तु मिल गई। उसने दमयन्ती से कहा प्रियम्वदा की माता और उसके पिता जी का झगड़ा मेरी समझ में अब अच्छी तरह आ गया है कल प्रियम्वदा की माता सुनीति के घर गई थी। मैं भी वहाँ थी। वह प्रियम्वदा के पिता को बहुत बुरा भला कह रही थी। वे कहती थी प्रियम्वदा के पिता जी १६ साल से पूर्व प्रियम्वदा की शादी करने को राज़ी नहीं होते हैं। मारे फिक्र के उसकी माँ को नींद नहीं आती है उसके पिता के लिये १३ वर्ष की बिन ब्याही लड़की का घर में बैठा रहना मानो कोई बात नहीं है। वे रोती थीं कि पास पड़ौस की औरतों की बातें उनसे नहीं सुनी जातीं "

कमला ने कहा वे अच्छे विचार के आदमी मालूम होते हैं "

दमयन्ती ने कहा 'जीजी' उसके पिता आर्य्य हैं और प्रियम्वदा की उम्र अभी १३ साल की है। वह उम्र में मुझ से १ साल छोटी है।

'तब तो उसके पिता सही रास्ते पर हैं। मेरी ससुराल में हमने एक समाज-सुधारक सोसायटी खोली है। उसका एक कार्य्य बाल-विवाह प्रथा का अन्त करना है। हमारी कोशिश होती है कि शारीरिक और मानसिक विकास के पूर्व किसी लड़की की शादी न हो। हमारा विश्वास है कि शादी से पहले लड़कियों को शरीर और दिमाग़ में बलवान होने और हर प्रकार के गुणों को धारण करने का पूरा २ अवसर दिया जाना चाहिये जिससे आने वाली संतान बुद्धिमान बलवान और श्रेष्ठ बने।'

वाह कितना उत्तम विचार है ?' हम भी अपने स्कूल में लौटकर ऐसी ही सभा बनायेंगी क्यों दमयन्ती अच्छा रहेगा न ? सुशीला ने प्रसन्न होकर कहा।

दमयन्ती ने कहा— बड़ा अच्छा रहेगा' जीजी ! अपनी सभा के अन्य काम भी हमें बताओ।

कमला हंसी और बोली 'हमारी सोसायटी बाल-विवाहों को रोकने के लिए शारदा एक्ट का भी प्रचार करती है। मेरे पास समय कम है नहीं तो मैं सोसायटी के कार्य ब्यौरेवार बतलाती। हां ससुराल लौटकर अपनी सोसायटी के सम्बन्ध में मैं तुम्हें कुछ पुस्तकें भेजूंगी। तुम उनसे सब बातें जान जाओगी।

अब मैं मातृत्व के सम्बन्ध में कुछ और ज़रूरी बातें बतला देना चाहती हूँ। शादी के बाद गर्भ स्थापित हो जाने पर बच्चा माँ के पेट में धीरे २ बढ़ता और विकसित होता

है। नौ महीने तक वह वहां ही सुरक्षित रहता और माता के खून से उसे भोजन प्राप्त होता है। शरीर के सब अङ्गों के पूर्ण और बाहर प्रवेश के योग्य हो जाने पर एक नई ज़िन्दगी बाहरी दुनियां में प्रवेश करती है। क्या तुम लोगों ने छोटा और नि सहाय नवजात शिशु देखा है?

लड़कियों ने सिर हिलाकर स्वीकृति देदी। सुशीला ने कहा 'जीजी बच्चे के पैदा होने में मां को बहुत तकलीफ़ होती होगी। यह तो बड़ी मुसीबत का काम मालूम पड़ता है? तुमने आज की तमाम बातों में इसका ज़िक्र ही नहीं किया।"

कमला ने कहा 'तुमने देखा है कि मुर्गी अपने बच्चे की कितनी चौकसी करती है। *तमाम माताएँ अपने बच्चे की रक्षा के लिये जान तक की बाज़ी लगा देती हैं। त्याग का* यह भाव जैसा माताओं में पाया जाता है ऐसा अन्य किसी में नहीं पाया जाता। यही हाल मनुष्य प्राणियों का है। नवजात बच्चे की मनोहर मूर्ति और मुसकान मां के हृदय में अलौकिक प्रेम का सन्चार करती है और यह असीम आश्चर्य होता है। वह समझती है सृष्टि उत्पत्ति के महान कार्य्य में भाग लेने का उसके लिये परमात्मा की आज्ञा है और उसने उस आज्ञा का उत्तम रीति से पालन किया है।

इस खुशी और सतोष में यह बच्चा होने के कष्ट को भूल जाती है। इतना कहकर कमला रुक गई। कुछ क्षण के बाद बोली 'अब हमें यह चर्चा बन्द कर देनी चाहिये। केशव की तरफ इशारा करके उसने कहा देखो केशव जाग गया है।' सुशीला और दम यन्ती ने देखा कि केशव जगा हुआ है और चुपचाप पड़ा हुआ धीरे २ हस रहा है। दमयन्ती उठी और दौड़कर बच्चे का मुँह चूमकर कर उसे प्यार करने लगी

कमला ने देखा कि लड़कियां उसकी बातो का *मतलब समझ गई हैं और माता* बनन की पवित्रता उन पर अंकित हो गई है। उसने कहा—

'मुझे एक बात और कहनी है। उसके बाद हमारा आज का पाठ समाप्त हो जायगा। बच्चे प्राय अपने माता-पिता की शक्ल सूरत और सस्कारों के होते हैं।'

सुशीला ने कहा 'ठीक तब ही मैं पढ़ने में सुस्त हूं। माता जी भी पढ़ने में सुस्त *थीं*।'

कमला ने उठते हुए कहा 'बाद में हम इस सम्बन्ध में और बातचीत करेंगी। अब पाठ समाप्त कर दो। कहो दमयन्ती! तुम्हारा क्या विचार है! क्या तुम्हें यहाँ आने का दुःख है? क्या हमने कोई ग़लत बात कही है?''

दमयन्ती ने कमला की ओर विचार पूर्ण मुस्कान के साथ देखा जो सीधी उसके हृदय से निकली थी। उसने कहा 'जीजी! आपकी बात का एक एक शब्द सुन्दर था। मैं समझती हूँ जीवन के सम्बन्ध में प्रत्येक बात सुन्दर ही है।'

सुमन-संचय

(१)

शुक्राचार्य तथा स्त्रियां

एक बार वेद व्यास के पुत्र शुक्राचार्य कहीं जारहे थे। मार्ग में एक नदी पड़ी। उसमें कुछ स्त्रियां नगी स्नान कर रही थीं। शुक्राचार्य्य नदी को पार करने के लिए उसमें घुसे और वे सब स्त्रियां उसी प्रकार नग्नावस्था में स्नान करती रहीं। किसी ने अपने शरीर को न ढका। दूसरे अवसर पर वेद व्यासजी उस नदी को पार करने लगे। उस समय भी वे स्त्रियां उसी दशा में स्नान करती हुई देख पड़ीं। बूढ़े वेद व्यासजी को देखते ही स्त्रियों ने अपने शरीरों को कपड़ा से ढक लिया। वेद व्यासजी को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्होंने उनके निकट जाकर इसका कारण पूछा, स्त्रियों ने कहा 'महाराज! शुक्राचार्य्य ब्रह्मचारी हैं। उसे इन्द्रिय रस का ज्ञान नहीं है। इसीलिये हमने उसे देखकर पर्दा नहीं किया।" यह उत्तर सुनकर वेद व्यास निरुत्तर हो गए।

(२)

महात्मा बुद्ध और एक माता

एक माता का पुत्र मर गया। उसको महात्मा बुद्ध का पता मिला। वह अपने पुत्र के मृतक शरीर को लेकर महात्मा बुद्ध के पास गई और कहा, 'इसे जीवित करदो।" महात्मा ने उत्तर दिया, 'देवि! मैं इसे जीवित कर दूँगा यदि आप थोड़ी सी मिट्टी उस घर से ले आएँ जिसका कोई न मरा हो।" वह स्त्री सारे नगर में फिरी परन्तु उसे कोई घर ऐसा न मिला जिसका कोई न मरा हो। इस पर उसे बोध हो गया कि मृत्यु एक अनिवार्य घटना है और कोई घर उससे खाली नहीं।

(३)

डाकू और महात्मा

एक डाकू सदैव मुसाफिरों को मारा करता और उनका माल असबाब लूट लिया करता था। एक दिन एक महात्मा पुरुष घोड़े पर सवार हुए उधर से आरहा था। डाकू ने

कहा, अपना घोड़ा मुझे देदो और यदि तुमको कहीं तर पहुँचना हो तो मेरा ऊँट तुम लेलो परन्तु वह न माना। तब डाकू ने कहा कि अब तुम सावधान रहना ! मुझे यह घोड़ा अवश्य लेना है। यह कह कर वह दूसरे रास्ते से होकर रोगी साधु का वेश बनाकर रास्ते में पड़ गया और हाय २ करने लगा। इतने में वह महात्मा भी वहाँ आपहुँचा। साधु को इस प्रकार तड़पता देखकर उससे न रहा गया, उसने साधुसे पूछा, 'आपको क्या कष्ट है।' उत्तर मिला मैं पेट-दर्द से मर रहा हूँ। महात्मा ने कहा, "आप मेरे घोड़े पर चढ़ जायँ मे आपको हस्पताल में छोड़ आता हूँ।" साधु ने कहा, मुझसे हिला नहीं जाता। महात्मा ने अपनी पीठ पर चढ़ाकर घोड़े पर बैठा दिया। ज्योंही वह घोड़े पर चढ़ा उसने एड़ लगाई और महात्मा से पचास गज़ दूर हो अपने वास्तविक वेष मे आकर कहा, "क्यों भाई ! घोड़ा ले लिया कि नहीं उस समय तो ऊँट लेकर भी घोड़ा नहीं देता था।" महात्मा ने कहा, निस्सन्देह तुमने घोड़ा ले लिया और मैं उसे वापस भी नहीं मांगता। परन्तु मेरी एक बात अवश्य मानना ' डाकू ने कहा वह क्या ? महात्मा ने उत्तर दिया कि किसी को कहना नहीं कि हमने साधु का वेष बनाकर घोड़ा लिया है। वर्ना नेकी का दरवाज़ा सबके लिए बन्द हो जायगा, अच्छे से अच्छे साधु को भी लोग डाकू होने का सन्देह करेंगे।" इन शब्दों से डाकू के हृदय पर चोट लगी। वह हाथ बांधकर खड़ा हो गया और घोड़ा वापस देकर कहा मुझे कुछ और भी उपदेश दो "

(४)

फ़िलास्फ़र और किसान

संसार में तुम्हारी ज़िन्दगी से क्या लाभ है ? तुम फ़िलासफ़ी का एक अक्षर भी नहीं जानते हो ! एक अहङ्कारी फ़िलास्फ़र ने किसान से पूछा। किसान ने उत्तर दिया तुम्हारी अपेक्षा समाज का मैं ज्यादा उपयोगी अंग हूँ। मैं फ़िलासफ़ी के बिना रह सकता हूँ परन्तु तुम बिना भोजन के नहीं रह सकते हो।"

(५)

वाशिंगटन और सुअर

अमेरिका के प्रेसीडेण्ट श्रीयुत वाशिंगटन एक बार कौंसिल की बैठक में शरीक होने पैदल जारहे थे। मार्ग में कीचड़ में फँसा हुआ एक सुअर देख पड़ा। तालाब के किनारे मनुष्यों की बहुत बड़ी भीड़ जमा थी और तमाशा देख रही थी। सुअर कीचड़ से निकलने का बहुत प्रयत्न करता था परन्तु निकल न पाता था। उस समय ऐसा प्रतीत होता था

मानो वह जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा है। वाशिंगटन महोदय को उस जानवर की दुर्दशा पर बड़ी दया आई और वे तत्काल कपड़ों सहित तालाब में घुस गए और यत्न से सुअर को कीचड़ से बाहर निकाल लाए। दर्शक अवाक् रह गए और उनके निकट आकर उनसे पूछा आपने यहाँ इतना परिश्रम और अपने शरीर और वस्त्रों को गंदा किया है। इस पर इतना उपकार करने का क्या आवश्यकता थी? प्रेसीडेण्ट ने कहा, 'मैंने इस जानवर पर कोई उपकार नहीं किया है। इसकी दुर्दशा को देखकर मेरा मन बेचैन होगया था और मैंने अपने मन की बेचैनी को दूर करने के लिए ही ऐसा किया है।" वाशिंगटन का यह उत्तर सुनकर सब लज्जित हो गए।

(६)

करोड़पति और मनुष्य भक्षक

अमेरिका का एक करोड़पति न्यू गाइना गया और यह जानकर बड़ा दुःखी हुआ कि उस द्वीप मे मनुष्य-भक्षक लोग रहते हैं। उसने मनुष्य भक्षकों के सरदार को अपने पास बुलाकर पूछा, 'जो भयंकर प्रथा तुम लोगों में प्रचलित है क्या उस पर तुम्हें शर्म नहीं आती "

सरदार ने शान्ति पूर्वक उत्तर दिया, 'इसमें क्या हानि है। आप लोग ग़रीब आदमियों का भोजन खाते हैं। मैं ग़रीब आदमी को बतौर भोजन के खाता हूँ। जब मैं उसे खा लेता हूँ तो उसके सब कष्टों का अन्त हो जाता है और जब आप उसका भोजन खाते हैं तब उसके कष्टों का आरम्भ हो जाता है।"

मन-मन्दिर

(ले० बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकेट आगरा)

[२]

(जनवरी के अङ्क से आगे)

हम ने पिछले लेख में आचमन मन्त्र पर विचार करते हुए यह लिखा था कि मनुष्य के जीवन को सुखी बनाने के लिए तीन चीजों की आवश्यकता है:—

(१) संसार के भोग पदार्थों का हमारे पास बहुतायत से होना और पर्याप्त मात्रा से होना।

(२) हमारे अन्दर उनको भोग में लाने की शक्ति होना।

(३) हमारी मानसिक भावनाएं इस प्रकार की होनी चाहियें कि जब हम अपने परिश्रम से प्राप्त की हुई वस्तुओं को उपयोग में ला चुकें तो हमको तृप्ति हो जावे। अधिक की अनुचित लालसा न बनी रहे।

भोग पदार्थों को पर्याप्त मात्रा में प्राप्त करने के लिए और उनको उपयोग में लाने की शक्ति होने के लिए हमारी इन्द्रियों को अर्थात् कर्म करने की शक्ति को बलयुक्त और स्वस्थ होने की आवश्यकता है।

वैदिक सभ्यता इन्द्रियों को निकम्मा रखकर झूठे त्याग की शिक्षा नहीं देती। तीर्थ स्थानों में बहुत से साधु और नामधारी महात्मा ऊपर को हाथ उठाए और मौन धारण किए हुए पड़े रहते हैं। क्या यह सच्चा त्याग है?

ईश्वरीय ज्ञान-वेद जीवन पर्यन्त कर्म करने की आज्ञा देता है और कर्म करने के लिए इन्द्रियों का बलवान और रोग-रहित रहना महान् आवश्यक है इसलिए आचमन मन्त्र में जो प्रार्थना ईश्वर से की गई उसको चरितार्थ करने के लिए इन्द्रिय स्पर्श और मार्जन की विधि रक्खी गई है।

इन्द्रिय स्पर्श से हमारे अन्दर इन्द्रियों को बलयुक्त रखने की भावना उत्पन्न होती है। इन्द्रियां दो प्रकार की हैं ज्ञान-इन्द्रियां भी हैं और कर्म-इन्द्रियां भी हैं। इन्द्रिय स्पर्श करते समय हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमारी वाक् इन्द्रिय बलयुक्त रहे।

जिह्वा खाने के लिए भी है, पीने के लिए भी, चखने के लिए भी और बोलने के लिए भी है। खाते पीते रहना और बोलने की शक्ति रखना जीवन का चिह्न है। यदि

निर्बलता या रोग के कारण हमारे अन्दर प्राने की शक्ति या खाना हजम करने की शक्ति न रहे तो हमारी जिन्दगी मौत से बदतर है। नासिका श्वास के लिए है और संसार के पदार्थों की सुगन्ध या दुर्गन्ध इसी के द्वारा हम तक पहुंचती है। एक प्रकार से तो प्राण जीवन का ही नाम है। प्राण के रहते हुए ही मनुष्य प्राणी समझा जा सकता है। इसलिए प्राण-शक्ति का सुरक्षित रहना महान् आवश्यक है। इसी प्रकार आंखों और कानों के स्वरक्षित रहने की आवश्यकता है

नाभि-प्रदेश भी जीवन क्रिया को मर्यादित और सुरक्षित रखने के लिए एक महान आवश्यक अंग है हृदय और कण्ठ भी यदि रोग-रहित न होंगे तो हमारा सारे जीवन का प्रोग्राम गड़बड़ में पड़ जायगा। शिर तो ज्ञान-इन्द्रियों और कर्म-इन्द्रियों का खजाना है। एक शिर के अर्थात् मस्तिष्क के निर्बल हो जाने से शेष सब इन्द्रियाँ निर्बल हो जाती हैं।

हमारी दोनों बाहुएं बल की द्योतक हैं, परन्तु हमारा बाहु-बल हमें यश को देने वाला होना चाहिए। ऐसा न हो कि हमारे बाहुओं के बल से संसार के दूसरे मनुष्य पीड़ित और दुखित हों और हम अपने बल के दुरुपयोग के कारण अपयश के भागी बनें।

बाहुओं के साथ कर अर्थात् हाथों का घनिष्ट सम्बन्ध है। बाहुबल का द्वारा क्रिया के रूप में प्रगट होता है। हाथ की हथेली और हाथ के पीछे का हिस्सा दोनों के ही मर्यादित रहने की आवश्यकता है। ऐसा न हो कि हम सदा हाथ पसार कर मांगते ही रहें। हाथ को लौटाकर मांगने के साथ देना भी सीखें। दुनिया में दान और अदान जीवन के लिए आवश्यक अंग हैं जिस व्यक्ति या राष्ट्र में give and take अर्थात् लेने और देने की विधि ठीक २ प्रचलित रहती है, वहाँ संगठन ठीक रहता है। इसी लिए तो यज्ञ का अभिप्राय संगति-करण और दान दोनों रक्खे गए हैं इस भावना को दृष्टि में रखकर हमें जो दूसरों से लेना है वह लें और जो हमें दूसरों को देना चाहिए वह दें।

जीवन को सफल और सुखी बनाने के लिए अस्तेय अर्थात् चोरी न करना और अपरिग्रह अर्थात् कंजूसी न करना दोनों ही आवश्यक हैं। हम को मेहनत करके ही मजदूरी के लिए हाथ पसारने की आवश्यकता है। चोरी या जेब कतरने के लिए हाथ बढ़ाना अनुचित है।

इस इन्द्रिय-स्पर्श की क्रिया से जो शिक्षा हमें व्यक्तिगत जीवन के लिए मिलती है अर्थात जो इस शरीर रूपी राष्ट्र के लिए इस से शिक्षा मिलती है वह इस बाहर के राष्ट्रों के लिए भी शिक्षा मिल सकती है। सम्प्रति संसार में कुछ राष्ट्र और देश तो ऐसे हैं जहां

आत्मा को खोकर संसार का अधिपति बनने से क्या लाभ ?

(लेखक—रघुनाथ प्रसाद पाठक)

दीन बन्धु सी० एफ० ऐन्ड्रज ने 'माडर्न रिव्यू' मे संसार का वर्तमान प्रवाह' शीर्षक एक लेखमाला लिखनी शुरू की है। इस लेखमाला का पहला लेख जनवरी मास की माडर्नरिव्यू मे प्रकाशित हुआ है। उसमे उन्होंने अमेरिका के दो प्रसिद्ध लेखको के पत्र उद्धृत करके जो उन्हे प्राप्त हुए हैं अपने विचार प्रगट किए है। उनमे से एक पत्र का साराश इस प्रकार है —

"पिछले कुछ महीनों से मेरा मन बड़ा अशान्त रहता है। यहाँ (अमेरिका में) जो घटनाएँ हो रही हैं उन्हें देख और सुनकर मेरा चित्त आपसे मिलने के लिए अधीर हो जाता है। धार्मिक और राजनैतिक जगत् में यहाँ जो हो रहा है उसके सम्बन्ध में कुछ न पूछिए।"

उनकी आवश्यकता के अनुसार खाद्य पदार्थ और अन्य कच्चा माल (Raw material) पैदा नहीं होता और वह इस लिए दुखी हैं। कुछ राष्ट्र ऐसे है जिन मे यहा कच्चा माल बहुतायत से पैदा होता है परन्तु उसको वह (Consume) अर्थात् उपयोग में नहीं ला सकते। इसलिए उनके कच्चे माल को देखकर दूसरों को प्रलोभन होता है और वह दूसरो के आक्रमण से दुखी रहते हैं।

तीसरे प्रकार के राष्ट्र वह हैं जो कच्चा माल भी खूब पैदा करते हैं और उनको उपयोग में लाने की शक्ति भी रखते हैं परन्तु उनकी लालसा इतनी बढ़ी हुई है कि उनकी तृप्ति नहीं होती और वह अधिक प्राप्ति के लिए दूसरो पर आक्रमण करते रहते हैं और इसलिये वह स्वयं और उनके कारण और बहुत से दूसरे राष्ट्र दुखी और अशान्त रहते हैं इसलिए यदि इन्द्रिय स्पर्श के समय हम यह प्रार्थना करते हैं कि हमारी ज्ञान और कर्म इन्द्रियां स्वस्थ रहें तो हमें यह भी प्रार्थना करनी आवश्यक है कि इन्द्रियां न केवल बल-युक्त बल्कि पवित्र भी रहें। इन्द्रियों के पवित्र होने से ही तृप्ति प्राप्त हो सकती है। इसके लिए मार्जन की विधि है जिसपर फिर विचार करेंगे।

'आप सोचगे मैं एक गंभीर विषय को छेड़ रहा हूँ परन्तु आप मुझ जैसे एक 'पुराने भारतीय' को क्षमा करेंगे, ऐसी आशा है। महात्मा गांधी की उक्ति कि 'राजनीति का धर्म से पृथक् करने की बात का हम विचार मे भी नहीं ला सकते हैं।" मुझे एक क्षण के लिए भी नहीं भूलता है। इस विषय में मैं उनसे सहमत हूँ भले ही अन्य विषयों में मेरा उनसे मतभेद हो। जब मैं बंगाल में था तब मुझ पर यह बात भले प्रकार स्पष्ट हुई थी कि ग्रामीण लोग जीवन को समष्टि रूप से समझते हैं और उनकी राजनीति एवं अर्थ नीति धर्म नीति के साथ मिली रहती हैं। पश्चिम में हमने धर्म और राजनीति को पृथक् २ रखा है परिणाम यह हुआ है कि मानव-जीवन अस्त व्यस्त हो गया है।'

'यह साफ देख पड़ता है कि हम सब या तो एक साथ डूबेंगे या उबरेंगे भले ही हम रूस में हों, भारत में हों, चीन में हों फ्रांस या जर्मनी में हों, ब्रिटेन या अमेरिका में हों। हमारी समस्याएँ दिन प्रतिदिन एक सी होती जाती हैं। जहाँ तक मैं सोच सकता हूँ इतिहास में एक ही उदाहरण अंकित है जो आज जैसी ऐतिहासिक अवस्थाएँ उपस्थित करता है और वह ५ वीं शताब्दी थी जब रोम का विशाल साम्राज्य धाराशायी हुआ था।'

'क्या नैतिक और धार्मिक विप्लव के तूफान को छिन्न-भिन्न करने के लिए आध्यात्मिकता अपना चमत्कार नहीं दिखलायगी। संसार के मामलों में दैवी हस्ताक्षेप के लिए आज जैसा उपयुक्त अवसर शायद ही कभी रहा हो।'

'मानव जाति की रक्षा के लिए 'यांत्रिक सभ्यता' पर कड़ा प्रतिबन्ध रक्खे जाने की आवश्यकता है। महात्मा गांधी भारतवर्ष में 'यान्त्रिक युग' को एक दम लाने के विरुद्ध हैं। उनका यह विचार दूरदर्शिता पूर्ण है।'

रोम का साम्राज्य संसार के बहुत विस्तृत और वैभव शाली साम्राज्यों में से था। रोमन जाति के किन गुणों से इस साम्राज्य का उद्भव और उत्थान हुआ और किन अवगुणों से उसका पतन हुआ, इसके इतिहास में कई उदाहरण मिलते हैं।

'यूनान का राजा पाइरस रोम से युद्ध और विजय प्राप्त कर रहा था। इसी बीच में पाइरस का वैद्य रोमनों से आकर मिल गया और उसने प्रस्ताव किया कि यदि वे सहमत हों तो वह राजा पाइरस को विष खिला सकता है। रोमन इस पतित कर्म के लिये उद्यत न हुए और उस वैद्य को पाइरस के पास भिजवा कर सब भेद खोल दिया। रोमनों की उदाशयता से पाइरस बड़ा प्रभावित हुआ।'

"ब्रूटस एक कौन्सल (सभापति) था। रोम के एक बहिष्कृत राजा सुपर्बस ने आस पास के राजाओं से मिलकर और एक बड़ी सेना लेकर रोम पर आक्रमण किया। परन्तु होरेशस नामक एक वीर ने शत्रुओं का सामना किया और आक्रमणकारियों को भगा दिया। इस विद्रोही राजा के दल में ब्रूटस के २ पुत्र भी सम्मिलित थे। ब्रूटस ने अपने उन दोनों पुत्रों पर राजद्रोह का अभियोग चलाया और वे अपराधी ठहराये गए। ब्रूटस ने अपने दोनों पुत्रों को गोली से उड़ा कर रोम जाति के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन किया।"

"रोम के नीरो नामक राजा की क्रूरता और विलासिता इस कहावत के रूप में जगत प्रसिद्ध है। 'रोम जल रहा था और नीरो एक पहाड़ी पर बैठा बांसुरी बजा रहा था' इस क्रूर राजा ने तमाशा देखने के लिए रोम में आग लगवा दी थी। उस आग के दृश्य पर वह प्रसन्न हो रहा था और लोगों का जलना, चिल्लाना और कराहना उसके लिए मनोरंजन की वस्तु थी।"

'रोम का एक दूसरा राजा था। वह दिन में कई २ बार स्वादिष्ट भोजन खाता और पेट को खाली करने के लिए उल्टी कर दिया करता था। उसका यह दौर सदैव जारी रहता था।'

'रोम की शासन-समिति की बैठक हो रही थी। पास के एक मकान से मनुष्यों के रोने की आवाज़ आई। उसमें, १० हजार मनुष्यों का वध किया जा रहा था। सभासदों ने कारण पूछा तो कौंसल ने कहा 'दो चार विद्रोहियों को दंड दिया जा रहा है और कुछ भी नहीं है।'

एक सुनहरी नियम है और वह यह है कि 'आत्मा को खोकर समस्त संसार को जीतने से कोई लाभ नहीं होता।' रोमन लोगों में जब तक इसका आदर रहा तब तक वे अपने राज्य को कायम रख सके। जब निरादर आरम्भ हुआ और वे धन लोलुप विलासी और साम्राज्यवादी बन गये तब ही उनका पतन हो गया। यही अवस्था आज युरोप और अमेरिका की है जिसका उल्लेख उपर्युक्त लेखक ने अपने पत्र में किया है। आज वहां के लोग आत्मा को खो चुके हैं? इसका अन्तिम परिणाम क्या होगा वह रोम के उदाहरण से सहज ही जाना जा सकता है।

गुलबर्गा जेल

[ले०—राजगुरु श्री प० धुरेन्द्र जी शास्त्री प्रधान आर्य्य प्रतिनिधि सभा यू० पी०]

—*—

भारत-वर्ष के इतिहास में हैद्राबाद आर्य्य सत्याग्रह ने एक विशेष स्थान पैदा किया है। इस सत्याग्रह में दो स्थानों ने (एक शोलापुर दूसरा गुलबर्गा सेन्ट्रल जेल) वैशिष्ट प्राप्त किया है। इन दो स्थानों ने किस दृष्टि से वैशिष्ट प्राप्त किया है। इसका सम्पूर्ण दर्शन इस लघु लेख में नहीं कराऊंगा तथापि इतना लिखना आवश्यक समझता हूँ कि शोलापुर को वैशिष्ट इसलिए प्राप्त है कि सत्याग्रह का संचालन यहां से हा होता रहा था। और गुलबर्गा सेन्ट्रल जेल को इसलिए प्राप्त है कि आर्य सत्याग्रह के पांच सर्वाधिकारियों ने इसी जेल में विश्राम किया था।

सत्याग्रह के समय शोलापुर में और इस समय के शोलापुर में महत् अन्तर है। मुझे तो अब ऐसा ही महत् अन्तर शोलापुर से आगे हैद्राबाद राज्य की ओर सर्वत्र दिखाई दे रहा है। उस महत् अन्तर का कुछ विवरण 'सार्वदेशिक' के पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ।

२१ जनवरी को प्रातःकाल श्री पं० बंसीलाल जी मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य ने मुझ से कहा कि कल प्रातःकाल गुलबर्गा में व्याख्यान देने जाओ। मैं गुलबर्गा जाने के लिए निषेधात्मक अपनी गर्दन हिला ही रहा था कि उन्होंने भूतपूर्व मन्त्री आर्य्य समाज गुलबर्गा को यह कहकर भेज दिया कि तुम जाओ। कल व्याख्यान का प्रबन्ध करो। मेरे देखते देखते भूत मन्त्री विद्यालय से बाहर चले गए। तब मैं अपने दोनों हाथों से सिर को पकड़ विद्यालय की सीढ़ियों पर बैठकर सोचने लगा कि कैसा विलक्षण समय है कि २१ अप्रैल सन् १९३९ को भी मैं शोलापुर में था। और २२ अप्रैल को शोलापुर से गुलबर्गा जाने की तैयारी में था। आज भी २१ तारीख है और कल भी २२ तारीख को मुझे जाना पड़ेगा। अप्रैल न सही जनवरी ही सही परन्तु उस दिन मेरे साथ चलने वाले २२८ धर्मवीर थे किन्तु आज आठ भी नहीं। उस दिन मेरे लिये स्पेशल ट्रेन थी किन्तु आज एक बोगी भी रिजर्व नहीं। आज शोलापुर में ही मेरे लिए स्वागत और शिष्टाचार और समारोह सब है तो गुलबर्गा में उस से भी अधिक दर्शनीय मेरी दशा होगी।

२३ जनवरी को मैं स्टेशन पर पहुँचा। उस दिन भारी ट्रेनें मेरे और मेरे साथियों के लिये थीं किन्तु आज इस ट्रेन में मेरे लिये थोड़ा सा स्थान है। उस दिन नगर के हजारों नर नारी मुझे और मेरे साथियों को देखने के लिये स्टेशन पर प्रस्तुत थे किन्तु आज केवल १ मनुष्य ही सी० आई० डी० के देख पड़ रहे हैं। इस प्रकार के अनेक विचार करता हुआ साढ़े दस बजे गुलबर्गा स्टेशन पर पहुंचा। २२ अप्रेल सन् १९३९ को गुलबर्गा स्टेशन शोभा सम्पन्न प्रतीत होता था किन्तु आज पतझड़ वृक्ष के सदृश शोभा शून्य प्रतीत हो रहा है। उस दिन नगर के ४ प्रतिष्ठित हिन्दू व्यक्ति मुझे (वापिस चले जाओ) कहने आये थे किन्तु आज मुझे शहर में ले चलने के लिये नगर के कई प्रतिष्ठित व्यक्ति आये हैं। उस दिन कलक्टर सुपरिन्टेडेन्ट आदि उच्च राज्य कर्मचारी स्टेशन पर थे किन्तु आज एक पुलिस का कान्सटेबल भी नहीं है। केवल सब-इन्सपेक्टर पुलिस ही बिना वर्दी में उपस्थित हैं। उन्हों ने हाथ मिलाकर कहा 'गुरु जी' बहुत दिनों में आए हो। मैंने कहा था 'अब आप की ऐसी ही इच्छा है अब जल्दी आया करूंगा" उस दिन स्टेशन से बाहर होते कड़कती हुई धूप में ही मुझे पुलिस ने पैदल चलाकर गुलबर्गा सेन्ट्रल जेल में बन्द कर दिया था किन्तु आज स्टेशन से बाहर होते ही मोटर में बैठकर श्रीयुत परसराम जी गम्वा के घर पर जा उतरा। उस दिन जेल में बदबूदार तेल में छुकी हुई दाल और भयावह अरक्षित ज्वार की दो रोटी, बिछाने के लिये बोरी का टाट, ओढ़ने के लिये एक कम्बल सोने के लिये कंकरीली जमीन मिली थी किन्तु उन चीजों का दर्शन भी न था।

आज ही दिन के दो बजे सय्यद मुहम्मद गेसू दराज ख्वाजा बन्दे निवाज हज़रत गुरबल, किला और स्वग विश्वेश्वर का मन्दिर देखा। इस किले का समाचार तो मैंने अपने व्याख्यान में कई बार कहा है किन्तु देखा आज ही है। २२ वा २१ सन् में यहां दंगा हुआ था। इसी में इस मन्दिर पर आक्रमण हुआ और मूर्तियां तोड़ी गईं। मन्डाव था में अभी तक खड़ा है। स्वर्ण के जिन कलशों का वर्णन मैं अपने व्याख्यान में किया करता था उनको भी आज ही तिमिराछिन्न एक कोठरी में रखे हुए देखा है। पांच बड़े और चार छोटे कलश हैं। उन कलशों को अभी तक मन्दिर के ऊपर चढ़ने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ है।

मन्दिर से लौटकर मोटर में बैठे बैठे ही सेन्ट्रल जेल की परिक्रमा की और सोचने लगा कि यही दीवार मुझे अन्दर से बाहर नहीं आने देती थी किन्तु यही दीवार मुझे अन्दर जाने में बाधक हो रही है। बहुत ही चित्त चाहता रहा कि अपने पुराने निवासस्थान सैप्रेशन वार्ड को जाकर देखूँ परन्तु मेरी आशा निराशा में ही परिणत रही।

फ्रांस के एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक और आविष्कारक के हृदय के उद्गार

A Noted Inventors Confession

आज आविष्कारों के इस चामत्कारिक युग की बहुत चर्चा सुनी जाती है परन्तु इन यान्त्रिक चमत्कारों के सम्बन्ध में फ्रांस के प्रसिद्ध आविष्कारक एडवर्ड बेलिन के विचार बड़े मनोरञ्जक हैं। वे कहते हैं —

"जितनी पूर्णता के साथ हम अपने वाह्य जगत् पर विजय प्राप्त करते हैं उतना ही कम हम अपने साथियों के आन्तरिक जीवनों की ओर ध्यान देते हैं। हजारों मीलों को तय करने के लिये, हम इतनी अधिक जल्दी मे होते हैं कि अपने निकट सम्बन्धियों—स्त्री, बच्चों और मित्रों की देख रेख करने अथवा उनसे मिलने-जुलने का हमें अवकाश नहीं मिलता। हम रे लिये पारिवारिक जीवन गौण हो जाता है और मनुष्य अपने पास-पड़ौस के व्यक्तियों के लिये पराया बन जाता है। उद्योग धन्धों और यंत्रों की उन्नति एवं प्रकृति पर विजय प्राप्त करने की अपेक्षा दूसरे व्यक्तियों के मनों को प्रभावित करना ज्यादा उपयोगी कार्य होता है।"

रात्रि में ८॥ बजे से १ बजे तक 'ईश्वर का न्याय' इस विषय पर व्याख्यान हुआ। उपस्थिति ५ हजार से अधिक ही थी। श्री० फजल महमद खां सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस मेरे व्याख्यान में थे। मैंने कहा कि उस दिन इसी न्याय के लिए आया था, व्याख्यान भी नहीं दिया था किन्तु इन ही सुपरिन्टेन्डेन्ट ने मुझे जेल भेज दिया था। आज व्याख्यान दे रहा हूँ और सुपरिन्टेन्डेन्ट साहेब बैठे २ सुन रहे हैं और हंस भी रहे हैं। व्याख्यान के बाद सुपरिन्टेन्डेन्ट साहेब ने आर्य्य समाज को १०) रुपया दान दिया।

दूसरे दिन के लिये श्रीयुत सेठ बालमैया जी ने मुझे वायदा किया कि प्रातःकाल बाबा जी के मन्दिर में व्याख्यान देकर शोलापुर आना। २१ जनवरी को प्रातःकाल १० बजे से १२ बजे तक बाबा जी के मन्दिर में व्याख्यान दिया। वहां पर इतनी उपस्थिति हुई कि बैठने के लिये स्थान न मिलने के कारण बहुत से मनुष्य लौट गये।

इन शब्दों की यथार्थता स्पष्ट है। हम अपने मोटरों एवं हवाई जहाज़ों इत्यादि के जगत् में इतनी जल्दी में होते हैं कि अपने मित्रों आदि का सत्कार और सेवा के लिए हमें समय नहीं मिलता।

हमारे बड़े बड़े आविष्कारों ने हमें वह संस्कृति प्रदान की है जिसमें हम प्राय व्यथित रहते हैं। मनुष्य प्रकृति के रहस्यों को ज्ञात करता फिरता है परन्तु परमात्मा को खो बैठा है। उसने अपनी दूरबीन विशाल विश्व का अनुवेक्षण करने के लिये लगाई हुई है परन्तु विश्व निर्माता परमात्मा को देखने में असमर्थ हो गया है। उसके सूक्ष्म दर्शन यन्त्र इतने अधिक शक्तिशाली हैं कि वे छोटे से छोटे कीटाणु को देख सकते हैं परन्तु उसके अनुसंधान पाप के कीटाणुओं को ज्ञात नहीं कर पाते हैं। उसके एक्सरे इतने प्रभाव युक्त हैं कि वह उससे भौतिक शरीर के गूढ़तम रहस्यों को जान लेने में समर्थ हो जाता है परन्तु ये चमत्कारिक एक्सरेज उसे हृदय की नैतिक गिरावट का दिग्दर्शन कराने में चूक जाते हैं। मनुष्य ने प्रकृति पर तो विजय प्राप्त करली है परन्तु पाप की शक्तियों का दमन करने का उसे मार्ग नहीं सूझ पड़ता है।

जहाँ तक मुक्ति प्राप्त करने की वास्तविक समस्या के हल का सम्बन्ध है हमारा चमत्कारिक वर्तमान युग हमारे लिए उपयोगी सिद्ध नहीं हुआ है। भले ही हम परमात्मा से विमुख हो गये हों परन्तु हमें शान्ति उसी की शरण में आने से मिलेगी। जहाँ हम शोर, भीड़ और उतावलेपन से मुक्त होकर स्वच्छन्दता का मधुर श्वास लेंगे

Present Tiuth

('वर्तमान सत्य' से)

बिहार में रामगढ़ कांग्रेस के ५३ वें अधिवेशन

राष्ट्रीय महायज्ञ के शुभ अवसर

पर

वैदिक धर्म प्रचार का विराट् आयोजन

बिहार प्रान्त के लिये यह बड़े सौभाग्य की बात है कि इस वर्ष मार्च के तीसरे सप्ताह में अखिल भारतीय राष्ट्रिय महासभा कांग्रेस का ५३ वाँ अधिवेशन हजारीबाग जिले के रामगढ़ ग्राम में होने जा रहा है। इस राष्ट्रिय महायज्ञ में सम्मिलित होने के लिए देश के कोने कोने से लाखों नर नारी और स्वतन्त्रता के पुजारी, वीर नवयुवक, मातृभूमि की आजादी के नारे लगाते हुये पधारेंगे। इस अवसर पर देश के माननीय नेताओं, ताल्लुकेदार और सेठ साहुकारों के अतिरिक्त प्रान्त के दूरस्थ ग्रामों से पैदल चल कर, हजारों किसान एवं छोटा नागपुर बीहड़ वनमय प्रदेश के आदि निवासी संथाल, कोल, उरांव, हो आदि दलित जातियां लाखों की संख्या में पधारेंगी।

आर्य समाज कांग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन के अवसर पर इस राष्ट्रिय महासम्मेलन में सम्मिलित होने वाले नर-नारियों को वैदिक धर्म का संदेश पहुँचाता आ रहा है। दूर-दूर से आये हुये राष्ट्रिय यज्ञ के सेवक जहाँ मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये व्रत धारण करते हैं और राष्ट्रिय भावनाओं से अपने अन्त करण को पूरितकर, भारत-माता के पुजारी बनने का पवित्र भाव लेकर जाते हैं, वहां आर्य समाज के मंडप से वैदिक धर्म के उच्च, आदर्श सिद्धान्त, विश्वबन्धुत्व का सन्देश, स्वामी दयानन्द के क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित हो, देश, जाति, संस्कृति के सच्चे स्वरूप को समझ कर देश सेवा में संलग्न होते हैं। आर्य समाज किसी प्रकार का साम्प्रदायिक वातावरण तैयार नहीं करता, वह उससे बहुत दूर है, वह मानवीय जीवन के सच्चे स्वरूप को वैदिक धर्म के पवित्र सांचे में ढाल कर मानव जाति का कल्याण करना चाहता है और यह अवसर इस शुभ कार्य के लिये बड़ा ही उपयुक्त है, जहां सत्य और अहिंसा के पुजारी और भारत माता के सपूत सच्चे हृदय से पवित्र भावना को लेकर आते हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार ने इस अवसर पर १५ मार्च से २५ मार्च तक वैदिक धर्म प्रचार के अखण्ड आयोजन करने का निश्चय किया है। उसके सामने इस अधिवेशन के अवसर पर प्रचार करने का एक और विशेष उद्देश्य है जो आर्य्य समाज के सामने एक समस्या के रूप में उपस्थित है। छोटा नागपुर प्रान्त एक पिछड़ा हुआ जङ्गली इलाका है, जहां के किसान और कथिन आदि निवासी कोल, भील संथाल उरांव आदि जो कई लाखों की संख्या में हैं, आज अपनी प्राचीन सभ्यता संस्कृति भाषा धर्म और जातीयता को सर्वथा भूलते जा रहे हैं। आर्य समाज तो किसी मजहब या जाति का विरोधी नहीं है परन्तु वह अपना कर्त्तव्य समझता है कि इस प्रकार ऐसी पिछड़ी जाति

जिसको अपने धर्म, कर्म का बोध नहीं है, अपनी संस्कृति और सभ्यता को न खो दे। हमारी सभा इसी विशेष उद्देश्य से रामगढ़ कांग्रेस के शुभ अवसर पर वैदिक धर्म प्रचार का विराट् आयोजन करने जा रही है, जिसके द्वारा दक्षिणी बिहार मुख्यतः छोटा नागपुर डिवीजन के आदि वासियों में आर्य समाज का सन्देश घर घर पहुँच सके, और आर्य समाज, उन मूक भाईयों को, अपने वैदिक धर्म के सन्देश से सच्ची शान्ति और कल्याण का पथ बता सके।

इस प्रचार के शुभ अवसर पर आर्य सम्मेलन दलित सम्मेलन, आर्यकुमार सम्मेलन, आर्य वीरदल सम्मेलन, महिला सम्मेलन आदि का आयोजन रहेगा और दस दिनों तक लगातार विशाल यज्ञ मण्डप में समस्त यजुर्वेद से यज्ञ होगा। इस पवित्र प्रचार यज्ञ के लिये हम बिहार बङ्गाल तथा अन्य स्थानों के दानी मानी महानुभावों से ५०००) पांच हजार रुपये की अपील करते हैं।

रामगढ़ में हमारा यह यज्ञ छोटा नागपुर में वैदिक धर्म प्रचार का प्रारम्भिक कार्य होगा। हमारी सभा इसी अखण्ड प्रचार के पश्चात् एक निश्चित कार्य क्रम के साथ छोटा नागपुर में प्रचार कार्य आरम्भ करेगी। परन्तु हमारे भावी प्रोग्राम की सफलता इसी प्रचार की सफलता पर निर्भर करती है। यदि सहृदय दानी-मानी महानुभावों और बिहार के आर्य समाजों ने सचेष्ट हो, सभा के इस यज्ञ में अपनी थोड़ी थोड़ी आहुति दी और तन मन से सहयोग प्रदान किया तो हमें पूरा विश्वास है कि ईश्वर की कृपा से प्रभु के आदेश के प्रचार करने में हम समर्थ सिद्ध होंगे। आशा है—आर्य जनता हमारी इस हार्दिक अपील को अवश्य सुनेगी और सभा के प्रचार की इस प्रगति में, उनकी इस मांग को पूरा कर, सहयोग प्रदान करेगी।

निवेदक –

ब्रजनन्दन सिंह (राय बहादुर)
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा।

वेदव्रत वानप्रस्थ
श्यामकृष्ण सहाय बार-ऐट ला
प्रधान, आर्य समाज, रांची।

सिपाही भगत
एम० बी० डावरी कम्पनी दानापुर
कोषाध्यक्ष, सभा।

रामेश्वर प्रसाद वाजपेयी
प्रधान, आर्यसमाज, लालगंज (मुजफ्फरपुर)

रामानन्द सन्यासी

अयोध्या प्रसाद गुप्त
प्रधान, आर्य समाज, छपरा।

बलिराम तनेजा
प्रधान, आर्य समाज, झरिया।

मेहता चूड़ामणि वर्मा
प्रधान, आर्य समाज, पटना सीटी।

कार्तिक प्रसाद देव
प्रधान, आर्य समाज, मुंगेर।

सरयू प्रसाद
प्रधान, आर्य समाज दरभंगा।

गणेश प्रसाद साह एम० एल० ए०
प्रधान, आर्य समाज, मोतीहारी।

महादेव शरण प्रधान मन्त्री,
आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार।

भारत की समस्या

[ले०—श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर]

—※※※—

(१)

आज-कल पश्चिम में वर्ग-युद्ध की जो चर्चाएँ सुनी जाती हैं उनका मूल भूत कारण आर्थिक है। खानों में काम करने वाले, मज़दूर लोग, रेलवे के कर्मचारी जब तब झगड़ा खड़ा कर देते हैं जिनके दबाने के लिये नए कानून बनाये जाते हैं पुराने क़ानूनों का प्रचलन रोका जाता है और कभी २ फौज़ बुलाई जाती है तथा रक्तपात होता है। संसार के उस भाग में इन झगड़ों से सम्बन्धित दो दल होते हैं। एक तो झगड़ा करने वाला दल होता है और दूसरा उन झगड़ों को दबाने वाला। वहां तीसरा दल नहीं होता जिसे इन झगड़ों में आनन्द आता हो।

इङ्गलैण्ड में कोई समय था जब वहाँ का शासन-विधान परिपक्व अवस्था में नहीं आया था और रोमन कथैलिकों और प्रोटेस्टेंटोंमें झगड़े हुआ करते थे और उन झगड़ोंमें बहुत ज्यादतियाँ हुआ करती थीं। सचाई यह है कि रोमन कैथैलिक लोग बहुत दिनों तक हर प्रकार की ज्यादतियों और कठिनाईयों का शिकार बने रहे थे। आज भी समष्टिरूप से इंगलैण्ड की प्रजा को एक विशेष धर्म को बनाये रखने का मूल्य चुकाना होता है और यह बाहर वालों की दृष्टि में अनुचित देख पड़ता है। परन्तु यदि य अ ये असमानताएँ वहां की शान्ति को भंग नहीं करती हैं तो इसका एकमात्र कारण यह है कि इंगलैण्ड के समस्त नर-नारी एक सम्मिलित शासन-पद्धति का उपयोग करते हैं जिसे वे अपना कह सकते हैं। यदि उन पर किसी बाहर वाले का शासन होता तो उनकी सामाजिक अवस्था की ये कमज़ोरियां निरन्तर कलहों और उत्पातों का कारण बनी रहतीं

ब्रिटिश राजनीति के प्रारम्भिक काल में स्काटलैंड और इंगलैण्ड में बहुत शत्रुता रहती थी क्योंकि उनमें भाषा, भाव और ऐतिहासिक परम्पराओं की वास्तविक विभिन्नता थी परन्तु इन दोनों के सम्मिलित यत्नों के फल-स्वरूप जो शासन विधान बना उसने उनकी शत्रुता को मिटा दिया और उस विधान की रक्षा दोनों का सम्मिलित कार्य बन गया था। दूसरी ओर चूँकि आयरलैण्ड के लोगों को इंगलैण्ड के समान समानता के

अधिकार नहीं मिले थे इसलिए इंगलैण्ड और आयरलैण्ड में इस प्रकार का भेद कभी सम्भव नहीं हुआ ।

पश्चिम के धर्म युद्धों और झगड़ों के ये उदाहरण आंशिक रूप में हमारी राष्ट्रीय दुर्बलता को स्पष्ट कर सकते हैं। यह स्वीकार करना होगा कि हमारे देश में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच में भेद-भाव की रेखा बड़ी कठिन है। जहाँ सत्य को निर्वासित कर दिया जाता है वहाँ बुराई घर कर लेती है और यह बुराई दण्ड को भी अपने साथ लाती है। जब धर्म को हृदय में रहने के बजाय बाह्य कर्म काण्ड और रूढ़ियों पर बल देने की खुली छुट्टी देदी जाती है तब यह शान्ति के मार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा बन जाता है।

मैं तो यही आशा करूंगा कि हमारे मज़हब बाह्य क्रियाकलाप पर सदैव बल नहीं देते रहेंगे। मुझे यह भी आशा है कि जब कभी राष्ट्रीय कल्याण का हिन्दुओं और मुसलमानों का सम्मिलित आदर्श होगा और यह आदर्श सम्मिलित शासन प्रणाली में मूर्त रूप धारण करेगा तब उनके ये बाह्य उत्पात नगण्य हो जायँगे।

एक बार मैं एक अँग्रेज़ के साथ रेल में यात्रा कर रहा था। उस समय के बिहार के दंगे की चर्चा छिड़ी। उस अंग्रेज़ महाशय ने मुझे बड़े उत्साह से एक अँग्रेज़ फौज़ी अफ़सर की कहानी सुनाई जिसने एक स्थानीय ज़मींदार को निम्न शब्दों में डांटा था:—

"तुम अपने आसामियों को अपने क़ब्ज़े में नहीं रख सकते हो इस पर भी तुम स्वराज्य चाहते हो।" ज़मींदार ने क्या उत्तर दिया यह मैंने नहीं सुना परन्तु उसे यह कहते हुए कल्पना कर सकता हूँ। "नहीं हुजूर। हम जब तक अयोग्य और निकम्मे हैं तब तक आप हम पर शासन करते रहिये।" अपने साथी को मैंने केवल इतना कह दिया, ये "दंगे स्वराज्य के दिनों में नहीं हुए हैं। उस ग़रीब ज़मींदार का ध्यान फौजी अफ़सर की फ़ौज की तरफ़ चला गया होगा। एक का काम तो साधनों को अपने क़ब्ज़े में बनाये रखना है और दूसरे का ध्येय को प्राप्त करना है। श्रम का यह विभाजन कभी नहीं सुना गया। कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम की छाया के नीचे जो साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं उनके सम्बन्ध में आप क्या कहते हैं? निश्चय ही ये दंगे शासकों और शासितों दोनों के लिये लज्जा की वस्तु हैं। यदि ये दंगे निज़ाम अथवा मैसूर राज्य में होते तो निश्चय ही फौजी अफ़सर के ताने का उत्तर न बन पड़ता।"

यहाँ ही हमारी शिकायत है। अपनी रक्षा भी हम नहीं कर सकते क्योंकि बाहरी शक्ति ने रक्षा का अधिकार हमसे छीन लिया है।

एकता बनाम न्याय

[ले०—श्री महात्मा गांधी]

—०(❀)०—

दूसरे दिन एक महाशय मेरे पास आये और कहा 'साम्प्रदायिक एकता के बिना स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सकता' आपने यह कहकर भारतवर्ष का बड़ा अहित किया है। आप को यह कहना चाहिए कि विभिन्न जातियों के प्रति तथा उनमें आपस में बिना न्याय के स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सकता।' मैंने आगन्तुक महाशय के साथ तर्क किया परन्तु उन्हें सन्तोष न हुआ। उन्होंने कहा अपने मुसलमान मित्रों को प्रसन्न करने के लिये आपने अपनी आत्मा बेचदी है।" मैंने इसका प्रतिवाद किया और कहा 'निश्चय ही तुम जानते हो और दुनिया जानती है कि भारत की स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए मैं अपनी आत्मा को नहीं बेचूँगा। यदि मैं मुसलमानों की मित्रता चाहता हूं तो व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं वरन् भारत के हित के लिए चाहता हूँ। आप मेरे साथ अन्याय करते हैं। आगन्तुक महोदय ने कहा 'मैं आपके देश प्रेम को जानता हूँ। यदि न जानता होता तो आपके पास न आता परन्तु आपका देश-प्रेम आपको अन्धा बनाकर आपसे गलती करा रहा है। आपको पता नहीं है कि हिन्दू लोग क्या कहते और करते हैं। मुसलमानों को अप्रसन्न करने के भय से, वे मुसीबतें उठाते हैं क्योंकि उनका आपमें विश्वास है। मैं आपसे निवेदन करूँगा कि आप 'एकता' के स्थान में 'न्याय' शब्द रक्खें।" अपने मित्र से विवाद

यही चीज़ हमें निर्बल और निरुपाय बना रही है। यदि हमारी दशा पर वे लोग हँसे जिन्होंने हमें उस दशा में पहुंचाया है तो यह सत्य है हम कोई ठीक जवाब नहीं दे सकते। परन्तु हम जो कुछ अपने मन में कहते हैं वह बहुत अशिष्ट समझा जाता है। यदि हमारे पास शक्ति और अधिकार होता तो हिन्दुओं और मुसलमानों का यह कर्त्तव्य होता कि उन्हें सुरक्षित रखते। दोनों पक्ष इस बात का भी पूरा २ ध्यान रखते कि दंगे और फ़िसाद की खुली छुट्टी न दी जाय। उस अवस्था में भारतवर्ष उस नींव को दृढ़ बना देता जिस पर वह खड़ा हुआ है।

(माडर्न रिव्यू)

—❀—

करने में कोई काम न था और मेरे पास समय भी न था। मैंने उन्हें वचन दिया कि 'हरिजन' के स्तम्भों में इस प्रश्न पर प्रकाश डालूँगा। इस वायदे से उन्हें सन्तोष हुआ। मेरा उत्तर उन्हें सन्तोष प्रदान करेगा या नहीं मैं यह नहीं जानता।

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि बिना साम्प्रदायिक एकता के अहिंसा के द्वारा स्वराज्य प्राप्त नहीं हो सकता। परन्तु जातियों में एक दूसरे के प्रति न्याय भावना के बिना एकता स्थापित नहीं हो सकती। मुसलमानों अथवा अन्य किसी की मित्रता घूस देकर नहीं क्रय की जा सकती। घूस का अर्थ होगा भीरुता और इसी लिये हिंसा। परन्तु यदि अपने भाई को उसके उचित भाग से अधिक देता हूँ, तो मैं उसे घूस नहीं देता और न मैं कोई अन्याय करता हूँ। उदार बनने से ही मैं सन्देह को दूर कर सकता हूँ। बिना उदारता के न्याय सहज ही शैलाक का न्याय बन सकता है। फिर भी मुझे यह ध्यान रखना चाहिए कि उस उद्देश्य के बलिदान पर जिसके लिए यह की जाय यह नहीं होनी चाहिये।

अत मैं हिन्दू मुस्लिम एकता के विचार और यत्न का परित्याग नहीं कर सकता। सबसे बड़ी चीज़ जिसकी ज्यादा आवश्यकता है वह न्याय नहीं है वरन् ठीक कार्य का करना है। श्रीयुत जिन्ना ने मुझे जो उत्तर दिया है और जो समाचार पत्रों में प्रकाशित हुआ है उससे एकता की आशाएँ यदि जिन्ना साहब मुस्लिम मस्तिष्क को प्रतिबिम्बित करते हैं, मिट्टी में मिल जाती हैं। उनका भारतवर्ष का चित्र यह है कि यह देश एक महाद्वीप है। उसमें धर्म के अनुसार कई जातियाँ हैं। यदि यह चित्र मूर्त्तरूप धारण करले तो यह कांग्रेस के यत्नों को धूल में मिला देगा जो गत ६० वर्ष से हो रहे हैं। परन्तु मुझे आशा है कि मुस्लिम लीग के इतिहास में श्रीयुत जिन्ना की सम्मति क्षणिक अवस्था है। विभिन्न प्रांतों के मुसलमान अपने को अपने हिन्दू या ईसाई भाइयों से कभी पृथक् नहीं करेंगे। मुसलमान और ईसाई दोनों हिन्दू धर्म से आये हैं अथवा मुसलमान और ईसाई बने हुओं की सन्तान हैं। धर्म परिवर्तन के कारण अपने प्रान्तों से उनका सम्बन्ध विच्छेद नहीं हो जाता है। जो अँग्रेज़ इस्लाम धर्म को अंगीकार करते हैं उनकी जाति नहीं बदल जाती हैं।

(हरिजन)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के

प्रधान माननीय घनश्यामसिंह जी का

वक्तव्य

हैदराबाद सत्याग्रह की समाप्ति के पश्चात् से अब तक की स्थिति पर सिंहावलोकन

हैदराबाद सत्याग्रह को बन्द हुए पाच मास से अधिक समय व्यतीत हो चुका है

सर्व साधारण मुख्यतः आर्य भाई यह जानने के लिये उत्सुक होंगे कि इस समय तक हमें क्या प्राप्त हुआ है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग सभा ने अपनी ८-८-३९ की नागपुर को बैठक में जिसमें सत्याग्रह बन्द करने का निश्चय हुआ था, निज़ाम सरकार के सुधारों तथा आर्य समाज की माँगों के प्रकाश में बाद के स्पष्टीकरण पर विस्तार पूर्वक विचार किया था। मुख्य विषय इस प्रकार थे:—

(१) प्रचार की स्वतन्त्रता।

(२) आर्य समाजों की स्थापना की स्वतन्त्रता।

(३) आर्य मन्दिरों के निर्माण की स्वतन्त्रता।

(४) आय स्कूलों के खोले जाने की स्वतन्त्रता।

(५) सत्याग्रहियों की रिहाई।

सत्याग्रह के बन्द होने पर सत्याग्रही बन्दी शीघ्र ही मुक्त कर दिये गये थे और उनको घर जाने का रेल किराया भी निज़ाम सरकार ने दे दिया था। निज़ाम सरकार की इस कार्यवाहि के प्रति मैं आदर और प्रशंसा के भाव प्रदर्शित करता हूँ। परन्तु उस समय श्रीयुत पं० नरेन्द्र जी मुक्त नहीं किये गए थे जो सत्याग्रह प्रारम्भ होने से पहले राजबन्दी के रूप में कारागार में डाल दिये गये थे और प० बंसीलाल जी के राज्य में प्रवेश पर जो प्रतिबन्ध लगे हुए थे वे भी नहीं उठाये गये थे। यह बड़े सन्तोष की बात है कि अब पं० नरेन्द्र जी मुक्त कर दिये गये हैं और पं० बंसीलाल जी पर से प्रतिबन्ध हटा दिए गए हैं।

बाहर के प्रचारकों के प्रवेश पर से भी पाबन्दी हटा ली गई है और अब आर्य समाज के प्रचारक स्वतन्त्रता से हैदराबाद राज्य में दाखिल हो सकते हैं। उनमें से कुछ हैदराबाद हो आये हैं और उन्होंने वहाँ २ समाजों में व्याख्यान भी दिये हैं।

निजी और किराये के मकानों में आर्य समाजों की स्थापना के आर्य समाज के अधिकार को निज़ाम सरकार स्वीकार कर चुकी है और मुझे सूचना मिली है कि सत्याग्रह के पश्चात् बिना किसी विघ्न बाधा के कई आर्य समाजें खुल भी गई हैं। आर्य मन्दिरों की इमारतों के सम्बन्ध में निज़ाम सरकार ने वर्तमान नियमों के संशोधन का वचन दिया था। यह संशोधन तथा जलूस और स्कूलों के नियमों का संशोधन होना अभी शेष है। मुझे पूर्ण आशा है कि धार्मिक विषयों पर प्रभाव डालने वाले इस प्रकार के समस्त नियमों के संशोधन नए विधान के क्रिया में आने तक नहीं रोके जायेंगे। सार्वदेशिक सभा यह देखने के लिये उत्सुक है कि नये नियमों में ग़लत फ़हमी की ज़रा भी गुञ्जाइश नहीं छोड़ी जायगी।

हैदराबाद राज्य में आर्य समाज की कठिनाइयों के निवारण के लिये सभा पूरा २ यत्न कर रही है। इस समय तक निज़ाम सरकार ने जो किया है उसे मैं कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार करता हूँ। मैं यह देखने के लिये उत्सुक हूँ कि हैदराबाद सरकार और आर्य समाज के सम्बन्ध जो अच्छे बन रहे हैं वे इसी भाँति अच्छे बनते रहें।

सार्वदेशिक सभा आवश्यक सावधानता के साथ कार्य कर रही है और समस्त समाजों को पूर्व ही सूचित कर दिया गया है कि सार्वदेशिक सभा की आज्ञा प्राप्त किये बिना कोई प्रचारक हैदराबाद न जाय।

रचनात्मक कार्य के लिये सभा ने हैदराबाद को मिलाकर समस्त दक्षिण भारत में आर्य समाज के प्रचार को सगठित करने के लिये 'दक्षिण प्रचार समिति' नाम की एक कमेटी नियत की है। सभा ने प्रचारकों को तय्यार करने के लिये शोलापुर में उपदेशक विद्यालय खोला है जो मराठी कनाडी और अन्य लोक भाषाओं में प्रचार करेंगे। विद्यालय का सौभाग्य है कि उसे राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री तथा प० गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वानों और कार्य कर्त्ताओं की सेवाएँ प्राप्त हो गई हैं। दक्षिण भारत की भाषाओं में उपयोगी साहित्य प्रकाशित किए जाने की व्यवस्था हो रही है। आर्य समाज के प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध प्रचारकों को प्रार्थना की गई है कि वे दक्षिण भारत के लिए अपना समय और ध्यान देवें। दक्षिण भारत के आईयों की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्त्यर्थ मन्दिर निर्माण सहायता की एक स्कीम क्रियात्मक लाई जा रही हैं। सभा ने हैद-

राबाद नगर में एक आर्य हाई स्कूल खोलने का निश्चय किया हुआ है, उसमें धार्मिक शिक्षा भी दी जायगी। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शोलापुर में डी० ए० वी० कालेज खोला जाने वाला है। मैं डी० ए० वी० कालेज कमेटी लाहौर का आभारी हूँ जिसने मेरी प्रार्थना पर यह बड़ा कार्य्य अपने हाथ में लिया है।

उन्होंने इस काम के लिये २ लाख रुपयों की स्वीकृति दी है और शोलापुर में एक बहुत बड़ी राशि की विस्तृत ज़मीन क्रय की है।

कई और रचनात्मक कार्य हैं जो सार्वदेशिक सभा की दृष्टि में हैं और जो उचित समय पर हाथ में लिये जायेंगे। इस सब कार्य के लिये सभा को पर्याप्त धन की आवश्यकता होगी। सत्याग्रह के दिनों में सभा को जो योग और सहायता मिली है उससे सभा को आशा है कि रचनात्मक काम को जो सत्याग्रह आन्दोलन से एक प्रकार से किसी अंश में भी कम महत्वपूर्ण नहीं है धन की कमी से हानि न होगी।

सार्वदेशिक सभा का अत्यन्त महत्वपूर्ण निश्चय

भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों की कतिपय साम्प्रदायिक संस्थाओं और उनके नेताओं के अत्यन्त अनुचित ढङ्ग के फल स्वरूप देश की जो साम्प्रदायिक स्थिति इस समय है उस पर आर्य नेताओं ने सार्वदेशिक सभा की १८—१—४० की अन्तरङ्ग सभा में भली-भांति विचार किया था। साम्प्रदायिक आधार पर भारतवर्ष के विभाजन जैसी चीजों के घटित होने पर आर्यसमाज के लिये तथा उस सबके लिये जिसके लिये आर्यसमाज का अस्तित्व है जो ख़तरा है उसपर सरकार तथा अन्य स्थानों के सूत्रों के प्रकाश में विचार हुआ था। सभा ने सर्व सम्मति से निम्न निश्चय किया —

"राजनैतिक प्रगतियों में सीधे भाग न लेने की आर्यसमाज की नीति रही है। यह सभा उस नीति को जारी रखने की इच्छा रखते हुए भी कतिपय साम्प्रदायिक संस्थाओं और उनके उत्तरदायित्व पूर्ण नेताओं की प्रगतियों और घोषणाओं से साधारण हिन्दुओं के मनों पर जो प्रतिक्रिया हो रही है तथा उन (हिन्दुओं) में आत्म-सरक्षण एवं अपने सांस्कृतिक और धार्मिक मुख्य हितों की रक्षा की जो चिन्ता बढ़ रही है, उसे सार्वदेशिक सभा अनुभव किये बग़ैर नहीं रह सकती।

सभा स्थिति के अध्ययन और उचित कार्यवाही सुझाने के लिये निम्न सज्जनों की एक उपसमिति नियत करती है।

(१) श्रीयुत रायसाहब मदनमोहन सेठ रिटायर्ड सेशन जज।

(२) ,, म० कृष्ण जी ए, मालिक 'प्रताप' व 'प्रकाश' लाहौर (संयोजक)।

(३) ,, ला० देशबन्धु गुप्त 'तेज' देहली।

(४) ,, पं० वेदव्रत जी वानप्रस्थी बिहार।

(५) ,, बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट आगरा।

निश्चय हुआ कि यह समिति ३० मार्च तक अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दे।

सुधाकर एम ए

मन्त्री—सार्वदेशिक सभा

आर्य कुमार-जगत्

२६ वां अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की कार्य कारिणी सभा की ६ वीं बैठक ता० ११ दिसम्बर दीवान हाल दिल्ली में श्री प्रोफेसर सुधाकर जी की प्रधानता में हुई।

परिषद् के वार्षिक अधिवेशन के लिये निम्न लिखित निश्चय किया गया, —

क्योंकि रामगढ़ में होनेवाली कांग्रेस की तिथियों पर परीक्षा आदियों के कारण बहुत कम कुमारों के सम्मिलित होने की आशा है और इन्दौर आर्य कुमार सभा की विशेष इच्छा है कि सम्मेलन उनके यहाँ किया जावे, इसलिये यह कार्य कारिणी निश्चित करती है कि परिषद् का आगामी २६ वां सम्मेलन अप्रैल मास में इन्दौर में किया जावे और क्योंकि रामगढ़ कांग्रेस और इस सम्मेलन में बहुत कम समय का अन्तर है इसलिये रामगढ़ में परिषद् का होने वाला विशेष अधिवेशन किया जावे।

प्रधान पद के लिये नाम

आर्य कुमार सभाओं से प्रार्थना है कि आगामी वर्ष के प्रधान पद के लिये नाम शीघ्र परिषद् कार्यालय में भेजकर अनुगृहीत करें।

प्रतिनिधियों का चुनाव

परिषद् के नियम ९ के अनुसार सम्मेलन के लिये प्रतिनिधि चुनने का अधिकार आर्य कुमार सभाओं को होगा, प्रत्येक आर्य कुमार सभा १० सभासदों पर एक प्रतिनिधि सम्मेलन में भेज सकती है। सम्मेलन पर वे ही कुमार सभायें अपना प्रतिनिधि भेज सकेंगी जो परिषद् से सम्बन्धित है।

प्रतिनिधियों का शुल्क

कुमार सभाओं से चुने हुए प्रतिनिधियों का चन्दा कुमार सभाओं द्वारा लिया जायगा, कुमार सभाओं को अधिकार है कि वे अपने प्रतिनिधियों से लेव अथवा अपने कोष से देवें, प्रतिनिधियों की फीस एक रुपया प्रति प्रतिनिधि है।

जो कुमार सभायें अभी तक परिषद् से सम्बन्धित नहीं हैं उनसे प्रार्थना है कि वे अपना सम्बन्ध भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् से करावें और सम्मेलन पर अधिक से अधिक प्रतिनिधि भेजने का प्रयत्न करें।

मन्त्री— भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

यू० पी० सरकार

की

एक विचित्र आज्ञा

आजकल संयुक्तप्रान्त में जिला गढ़वाल में नया बन्दोबस्त हो रहा है। इस जिला में हजारों की संख्या में आर्य भाई निवास करते हैं जो नियमपूर्वक आर्य धर्म की दीक्षा ले चुके हैं और वर्षों से आर्य कहलाते हैं। स्वभावतया उन्होंने इस बन्दोबस्त में बन्दोबस्ती अफसरों द्वारा पूछे जाने पर अपने आप को आर्य लिखवाना चाहा। परन्तु बन्दोबस्ती अफसरों ने इस बात पर जोर दिया कि वे लोग आर्य धर्म ग्रहण करने से पूर्व का अपनी अपनी जात लिखवावें। गोदी छोटी, सावक सैम उमथ गांव, वीर गांव आदि कुछ ग्रामों के आर्य भाइयों ने असिस्टेन्ट रिकार्ड आफीसर सरकल न० २ की सेवा में लिखित प्रार्थना पत्र दिया कि हम लोग आर्य समाजी हैं, आर्य समाज के सदस्य हैं और सिवाय आर्य के हमारी कोई जाति नहीं है। इस पर उन्हें उत्तर दिया गया कि आप लोगों की जाति आर्य नहीं लिखी जा सकती और संयुक्त प्रांतीय सरकार की आज्ञा नं० ८०१ ता० ११-११-३१ के अनुसार आर्य लोगों की जात शिल्पकार लिखी जायेंगी।

इस पर इस प्रदेश के आर्य भाइयों ने सारा वृत्तान्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली को लिखकर भेजा। प्रशंसित सभा ने इन भाइयों को यह सम्मति दी कि आर्य लोग अपने अपने ग्रामों में यू० पी० सरकार की आज्ञा नं० ८०६ ता० १२-१२-३१ के विरुद्ध प्रतिवाद सभाएं करें और प्रस्ताव पास करें जिसे गढ़वाल के कलेक्टर साहब तथा यू० पी० सरकार की सेवा में भेजें और एक डेपूटेशन भी कलेक्टर साहब की सेवा में लेजाकर अपनी शिकायत उनके सामने रखकर उसे दूर करने की प्रार्थना करें। इस के अनुसार गढ़वाल के जिले में बहुत सी प्रतिवाद सभाएं हो चुकी हैं। आर्य भाइयों का एक डेपूटेशन कलेक्टर साहब से ता० १९-१२-३१ को दुगड्डा के बंगले पर मिला। उन्होंने विशेष तौर पर निम्न दो बातों की ओर कलेक्टर महोदय का ध्यान दिलाया —

(१) १९३१ की जन-गणना के सम्बन्धमें भारत सरकार जन-गणनाके गणकों के नाम स्पष्ट लिख चुकी है कि जो लोग अपने आप को आर्य अथवा आर्य समाजी प्रकट करें उन

से जाति न पूछी जाए। और यदि वे लोग जाति के खाने में कुछ न लिखवायें तो वह खाना खाली छोड़ दिया जावे।

(२) यू० पी० सरकार के चीफ सेक्रेटरी ने १३ जून १९३४ को निम्न प्रकार आज्ञा निकाली थी —

No 1235/III-39

From

H Bomford Esq C I E,
Chief Secretary to Government of U P

To

(1) All District Officers and Commissioners of Divisions and Deputy Commissioners in-charge Kumaun Division, United Provinces

(2) All District and Sessions Judges, United Provinces

(3) The Inspector General of Police United Provinces

(4) The Secretarys to Government, Public Works Department, Irrigation Branch, U P

Dated Lucknow June 13, 1934

Sir,

It has been brought to the notice of Government what in certain places 'Bhangis' and "Chamars" who have been converted to Christianity, are described by the Police and Courts as "Bhangis" and "Chamars despite their conversion I am directed to ask you to issue instructions

(1) and (4) officers subordinate to you

(2) Courts ,

(3) Police Officials

to describe such Converts as "Christians" in future

डेपुटेशन ने कलेक्टर महाशय से प्रार्थना की कि भारत सरकार की उपरिलिखित आज्ञा के होते हुए और स्वयं यू० पी० सरकार की ईसाइयों के सम्बन्ध में स्पष्ट आज्ञा

के होते हुए कि उनको ईसाई हो जाने के पश्चात् भंगी, चमार आदि न लिखकर उन्हें ईसाई ही लिखा जावे तो फिर आर्यों को आर्य क्यों नहीं लिखा जाता। इस पर कलेक्टर महाशय ने कहा कि मैं इस मामले में कुछ नहीं कह सकता जब तक कि यू० पी० सरकार की मुझे आज्ञा नहीं आती है।

यू० पी० सरकार तक गढ़वाल के आर्य भाइयों की फरयाद पहुँचाने का एक मात्र उपाय यही है कि संयुक्त प्रान्त की सभी आर्य समाजें इस विषय पर यू० पी० सरकार की उपरिलिखित आज्ञा सं० ८०६ तिथि १२-१२-३१ के विरुद्ध प्रतिवाद के प्रस्ताव पास करके यू० पी० सरकार को शीघ्र से शीघ्र भेजकर प्रार्थना करें कि वे इस अन्यायपूर्ण आज्ञा को शीघ्र ही लौटाकर गढ़वाल के आर्यों को बन्दोबस्ती कागजात में आर्य लिखे जाने के लिये आज्ञा निकालने की कृपा करें।

इस सम्बन्ध में सार्वदेशिक सभा ने संयुक्तप्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा को सम्मति दी है कि वह शीघ्र ही यू० पी० सरकार से पत्र व्यवहार करके तथा उसकी सेवा में एक डेपूटेशन लेजाकर गढ़वाल के आर्यों की शिकायत दूर कराने का उपाय करें। हर्ष की बात है कि यू० पी० सभा यथोचित कार्यवाही कर रही है।

मन्त्री,

सार्वदेशिक सभा।

सम्पादकीय

आर्यसमाज का नया क़दम

सार्वदेशिक सभा की अन्तरङ्ग सभा ने जो प्रस्ताव पास किया है, वह समाचार पत्रो में प्रकाशित हो चुका है और इसी अङ्क में अन्यत्र दिया जा रहा है। यह प्रस्ताव बहुत से भाइयो को नवीन मालूम होगा। परन्तु परिस्थिति की गम्भीरता की ओर जब वे दृष्टि डालेंगे तो उन्हे पता लगेगा कि सार्वदेशिक सभा ने जो प्रस्ताव पास किया है वह उसके लिये न केवल उचित ही था वरन् अनिवार्य भी था। यदि सार्वदेशिक सभा यह प्रस्ताव न करती तो वह अपने एक आवश्यक कर्त्तव्य का पालन न करने की दोषी ठहरती।

आर्यसमाज एक धार्मिक सस्था है और वह धार्मिक सस्था ही बनी रहनी चाहिये। परन्तु धार्मिक क्षेत्र मनुष्य जीवन का एक अङ्ग है और उसी प्रकार सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र मनुष्य जीवन से सम्बन्ध रखते है। ये सब क्षेत्र एक दूसरे पर आश्रित रहते है और एक दूसरे को प्रभावित करते रहते है। यह बात निम्न उदाहरण से समझ मे आजायगी। दलितोद्धार का काम धार्मिक व सामाजिक काम है। परन्तु काग्रेस ने भी इस कार्य को इसलिये अपनाया कि उसका असर वर्तमान राजनैतिक अवस्था मे इतना जबरदस्त है कि जिससे राजनैतिक स्वतन्त्रता के मार्ग मे बाधा हो जाती है। यहाँ हम देखते है कि काग्रेस सरीखी शुद्ध राजनैतिक सस्था ने धार्मिक व सामाजिक क्षेत्र मे सुधार करना अपना कर्त्तव्य समझा और यह समझना बिलकुल ठीक है। इसी तरह ऐसी परिस्थिति पैदा हो जाती है जब कि राजनैतिक क्षेत्रो मे जो काम होते है उनका असर इस प्रकार हो सकता है कि जिसके लिये शुद्ध धार्मिक समाजे भी अपनी आँख बन्द नही कर सकतीं और उन्हे भी उसके लिये सोचने की आवश्यकता हो जाती है। यदि ऐसी अवस्था आज भारतवर्ष मे हो गई है तब तो आर्यसमाज भी शुद्ध धार्मिक समाज होते हुए भी अपनी आख उधर से बन्द नही कर सकता। देखना यह है कि ऐसी

परिस्थिति आईहै या नहीं ? इसके लिये एक बात और हमें दृष्टि में रखनी होगी। हैदराबाद सत्याग्रह के बाद आर्यसमाज की जिम्मेवारी अधिक हो गई। आर्यसमाज ने हैदराबाद में केवल अपने लिये ही बलिदान नहीं किया बल्कि सम्पूर्ण हिन्दुओं के धार्मिक और सास्कृतिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये उसने बलिदान किया है और अब साधारण हिन्दू जनता की आर्यसमाज के प्रति यह आशा हो गई है कि जहाँ भी उनके धार्मिक, सास्कृतिक तथा अन्य अधिकारों का अब खतरा होगा वहाँ आर्यसमाज सहायक होगा।

सार्वदेशिक सभा ने जो प्रस्ताव पास किया है और जिन शब्दों में पास किया है उससे स्पष्ट है कि उसे इस प्रकार क़दम बढ़ाने में प्रसन्नता नहीं। उन्होंने तो मजबूर होकर इस प्रस्ताव को पास किया है। जो भारतवष के वातावरण को देखते हैं और जिन्होने इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने का कष्ट किया है उनके सामने तो प्रश्न साफ है। भारतवर्ष की कुछ साम्प्रदायिक सस्थाओं और उनके जिम्मेवार नेताओं ने इस प्रकार घोषणा की है कि जिससे हरेक को सचेत होना चाहिये। कुछ लोग तो यह घोषित करते हैं कि हिन्दुस्तान के इस प्रकार टुकड़े किये जाँय कि मुस्लिम प्रान्त और हिन्दू प्रान्त बना दिये जायँ। यदि यह हुआ तो इसका परिणाम क्या होगा। यह तो हम देख सकते हैं। सक्खर का उदाहरण मौजूद है। जो बात सिन्ध प्रान्त मे अब हुई है वह अन्य प्रान्तो मे भी भयङ्कर रूप से हो सकती है। खाकसारो के बारे मे तो यह कहा जाता है कि वे खुलमखुल्ला हिन्दुओं के विरोधी हैं और उनका उद्देश्य भी इसी तरह का है। ऐसी परिस्थिति में आर्य-समाज आखें कैसे बन्द कर सकता है ? पञ्जाब को या सिन्ध को अगर मुस्लिम प्रान्त बना दिया जाय तो वहा वैदिक-धर्मावलम्बियों की, उनकी सस्कृति की और उनके धर्म की क्या दशा होगी। यदि और किसी लिये नहीं तो सिर्फ इसलिये कि भविष्य में हमारी समाज, हमारी सस्कृति और हमारा धर्म खतरे में न हो उसके लिये यह आवश्यक है कि हम परिस्थिति को ठीक तौर से समझें और उसपर गम्भीरता पूर्वक विचार करें। इसलिये सार्वदेशिक सभा ने जल्दी में बिना सोचे किसी नतीजे पर पहुँचने की कोशिश नहीं की बल्कि सारी परिस्थिति का अध्ययन करके और उसपर क्या कार्यवाहि करनी चाहिये इसके लिये इस रूप में प्रस्ताव पास किया है और इसीलिये ५ योग्य सज्जनों की एक कमेटी बनाई गई है। आशा है कि सार्वदेशिक सभा के इस प्रस्ताव का कारण जनता को स्पष्ट हो जावेगा।

सक्खर के हत्याकाण्ड में हिन्दुओं पर अमानुषिक अत्याचार

सक्खर मे हत्याकाण्ड हुए लगभग डेढ मास हो चुका है। इस काड मे सक्खर शहर तथा जिला के हिन्दुओ पर जो अमानुषिक अत्याचार हुए उनके हृदय विदारक समाचार अखबारो मे जनता के सामने आते रहे है। हाल ही मे सिन्ध सरकार और सिन्ध काग्रेस की ओर से इस दगे की रिपोर्ट छापी गई है। हम इन दोनो रिपोर्टों मे से कुछ भाग नीचे उद्धृत करते है —

सिन्ध सरकार की रिपोर्ट के अनुसार इस भीषण काड मे —

१४२ हिन्दू जान स मारे गये।

१० हिन्दू जीवित जलाये गये।

५८ हिन्दू घायल हुए जिनमे से ८ पीछे मर गये।

१४ मुसलमान मारे गये।

१२ मुसलमान घायल हुए।

१६४ मकान जलाये गये जिनमे अधिकतम हिन्दुओ के थे। इस प्रकार १४८०००) का हानि हुई।

४६७ घर लूट गये। इस प्रकार ६५३०००) की हानि हुई।

६ हिन्दू स्त्रिया का अपहरण हुआ।

७ डाकू गोली से उडाये गये।

५०० गिरफ्तारियाँ हुई।

काग्रेस की रिपोर्ट के अनुसार —

(१) सक्खर शहर मे —

५० आदमी मारे गये जिनमे से ८ अथवा ६ मुसलमान थे। शेष हिन्दू थे।

४० दुकाने जलाई गई।

२१ घर जलाये गये।

३० लडकी के गोदाम जलाये गये।

२ कारखाने जलाये गये।

१२६ दुकाने विक्टोरिया मारकेट म जलाई गई।

(ये सब हिन्दुओ के थे)

१ दुकान एक मुसलमान की जल गई। कारण यह हुआ कि वह हिन्दुओं की उन दुकानों के साथ लगती थी, जिनमें आग लगाई गई।

१ दुकान एक मुसलमान की लूटी गई। यह सारे हत्याकाण्ड पूर्व से किये गये षडयन्त्र का परिणाम था।

जो हिन्दू मारे गये उनमें से बहुतों को निरपराध मारा गया और कुछ को जीवित अग्नि में डाल कर भून दिया गया। कुछ को काट कर उनके टुकड़े आग में फैंके गये।

सक्खर जिला के ग्रामो मे —

१०० से अधिक हिन्दू मारे गये और उनमें से कुछ जीवित अग्नि मे भून दिये गये।

इनमे से १० की लाशे नहरों में मिलीं, जिनमें मे एक स्त्री की थी।

४ स्त्रियो का अपहरण किया गया।

२ स्त्रियो से बलात्कार किया गया।

१ स्त्री के स्तन काट लिये गये।

१ स्त्री की नाक काट ली गई।

१ गर्भवती स्त्री का पेट चाक किया गया। बच्चे को माँ के सामने टुकड़े २ कर दिया गया। पश्चात् माँ का भी बध किया गया।

इस हत्याकाड की पूर्व से आशका होने पर भी सरकारने इसे रोकने के लिये कोई भी उचित उपाय न किया। खतरे के स्थानों पर पोलीस की पर्याप्त सख्या न लगाई और न मिलिटरी को सहायतार्थ बुलाया।

सक्खर शहर मे बहुत से कतल पोलीस के बड़े थाने से चार सौ फुट के वृत्त के अन्दर हुए और बहुत से घरो, मकानो और दुकानो को पोलीस की आखो के सामने आग की भेंट किया गया। परन्तु पोलीस ने इस सारे काड को रोकने का कुछ भी उपाय नहीं किया।

कुछ स्थानो पर पोलीस की उपस्थिति बलवाइयों को रोकने और डराने का नहीं प्रत्युत उत्साहित करने का कारण हुई।

इस समय हजारों की सख्या मे सिन्ध के हिन्दू बे घरबार होकर भटक रहे हैं और उनके दुख की कोई सीमा नहीं है।

ऊपर लिखी हृदयविदारक भीषण घटनाओं पर कुछ टिप्पणी की आवश्यकता

नहीं। कौन मनुष्य है जिसके रोंगटे इन्हे पढकर खड़े न हो जाय और जिसका हृदय न कांप उठे। यह सत्य है भारतवर्ष भर के हिन्दुओ की ओर से सिन्ध के पीड़ितो के साथ सहानुभूति प्रकट की जा रही है और कुछ धन आदि से भी उनकी सहायता की जा रही है। यह सब कुछ ठीक है। इस सम्बन्ध मे जितना भी यत्न किया जाय थोड़ा है।

परन्तु इस दुर्घटना ने भारतवर्ष भर के हिन्दुओ के सामने और विशेष कर उन प्रान्तो के हिन्दुओ के सामने कि जिनमे हिन्दू अल्प सख्या मे हैं एक गम्भीर प्रश्न ला खड़ा किया है। वह इस प्रकार है कि इस घटना से सिद्ध हो गया है कि जिन प्रान्तो मे हिन्दुओ की संख्या अल्प है वहाँ की मुस्लिम सरकारो से वहाँ के हिन्दुओ को अपनी जान और माल की रक्षा की कोई आशा नहीं रखनी चाहिये। अन्य प्रान्तो मे भी इस समय ऐसी परिस्थितियाँ पैदा हो रही है और इस प्रकार के सङ्गठन बन रहे है जिनके विद्यमान होते हुए यदि उन प्रांतोकी सरकारे हिन्दुओंकी रक्षा करना चाहे भी तो कदाचित न कर सकेगी क्योकि ऐसे हालात हो सकते है कि इससे पहले कि सरकारी सहायता पहुँचे बलवाई लोग अपना काम कर चुके होंगे।

अत हम समझते है कि अब वह समय आ गया है कि जब हिन्दुओ को अपनी रक्षा के उपाय स्वयं करना चाहिये और आने वाली मुसीबत के लिये स्वय अपने पावो पर खड़ा होना चाहिये और वेद की आज्ञानुसार हिन्दुओ के लिये एक ही उपदेश है —

उत्तिष्ठत सनह्यध्वं उदाराः केतुभिः सह।

जागो, अपने पावो पर खडे हो, कमर कस कर तैयार रहो, बडे से बडे त्याग के लिये उतारू हो जाओ और एक झण्डे के तले सगठित होकर अपनी रक्षा आप करो।

देश की वर्त्तमान स्थिति को दृष्टि मे रखते हुए प्रत्येक नगर और गांव के हिन्दुओ को अपनी रक्षार्थ दोनो आँखे खोलकर वर्त्तमान और आने वाली स्थिति का चिन्तन करना चाहिये। परस्पर वैर-विरोध और भेद-भाव को मूल से उखाड़ देना चाहिये और समय आने पर बड़े से बड़े त्याग के लिये तैयार रहना चाहिये। इस सम्बन्ध मे सबसे आवश्यक तथा तुरन्त करने योग्य कार्य प्रत्येक गांव और नगर मे आर्यवीर दल का सङ्गठन है। अत. सब कार्यों को छोड़कर इस सङ्गठन के बनाने मे लग जाना चाहिये।

अखिल भारतीय श्रद्धानन्द मेमोरियल ट्रस्ट

अखिल भारतीय श्रद्धानन्द मेमोरियल ट्रस्ट देहली की वार्षिक रिपोर्ट हमारे सामने है। सन् १९३६ से १९३८ तक श्री प० धर्मवीर जी वेदालंकार की अध्यक्षता में छोटा नागपुर (बिहार प्रांत) में श्रद्धानन्द ट्रस्ट की ओर से जो कार्य हुआ है उसका विवरण इस रिपोर्ट में दिया गया है। ट्रस्ट के संयोजक मन्त्री उक्त पं० जी ने मई सन् १९३६ में श्रद्धानन्द हिन्दू मिशन की स्थापना करके इसके कार्य को व्यवस्थित और संगठित किया। बिहार प्रांत का छोटा नागपुर ईसाइयों का एक भारी केन्द्र है। केवल रांची ज़िले में २६२६०८ ईसाई हैं। ईसाई मिशन लगभग एक शताब्दी से ईसाइयत का प्रचार इस इलाके में कर रहे हैं। छोटा नागपुर में उरांव, मुंडा, सन्थाल प्रभृति ऐसी जातियां बसती हैं जो Tribal या aborigines कहलाती है जिन्हें सरकार आमज़हब, आदिवासी आदि नाम देकर हिंदुओं से पृथक समझती है यद्यपि वे हिंदू हैं। ऐसी पिछड़ी हुई जातियों की संख्या भारत में १ करोड़ है। उनकी समस्या विकट है, उनके अन्दर उत्थान का कार्य करना बहुत महत्वपूर्ण है। श्रद्धानन्द ट्रस्ट ने इस दिशा में प० धर्मवीर जी की अध्यक्षता में तीन वर्ष में जो कार्य किया है वह सराहनीय है। छोटा नागपुर में १२ केन्द्र प्रचार निमित्त बनाये गये। एक वर्ष के लिए उपदेशक विद्यालय स्थापित कर कुछ उत्साही नव-युवक उरांव, मुंडा आदि जातियों को प्रचारक बनने की ट्रेनिंग दी गई जिनमें से कई आज श्रद्धानन्द हिंदू-मिशन रांची की ओर से गांवों में प्रचार कार्य करते हैं। श्री पूज्य नारायण स्वामी जी तथा श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने अपने दौरों में इन प्रचारकों की योग्यता और प्रचारशैली को देखकर बहुत प्रसन्नता प्रकट की थी। १२ स्कूलों द्वारा ग्राम-निवासी तथा कथित आदि वासी छात्र शिक्षा पा रहे हैं। श्रद्धानन्द आश्रम खूंटी में स्थापित है जो बोर्डिंग हाउस के समान है। भवन ट्रस्ट का अपना है। बिहार सरकार के माननीय प्रधान मन्त्री श्रीकृष्णसिंह जी ने इस आश्रम की उपयोगिता को समझकर और यह देखकर कि यह संस्था ग्राम सेवा कार्य और ग्राम निवासियों को नैतिक शिक्षा देने का एक अच्छा साधन है—भवन विस्तार के लिए १०००) ग्रान्ट दी थी। ट्रस्ट के कार्य-कर्त्ताओं ने बहुत से सम्मेलन पंचायतें और सभाएँ करा कर उन जातियों में प्रचलित बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया और उन्हें ईसाई मिशनरियों के चंगुल से बचने के लिए सावधान किया। निरक्षरता निवारण, मद्य निषेध, सामाजिक कुरीतियों का दूरीकरण आदि पर बहुत बल दिया जिसका परिणाम उन जातियों के लिए हितकर सिद्ध हुआ है। लगभग ७००० रोगियों की मुफ्त चिकित्सा कीगई। एक श्रद्धानन्द हिंदू अनाथालयकी स्थापना रांचीमें हुई,

जो संस्था भली भांति चल रही है। गरीब हिंदुओं के बच्चे ईसाई मिशन में पलने जाते थे। ट्रस्ट के कार्य-कर्ताओं ने उनकी रक्षा के लिए अनाथालय जैसी उपयोगी संस्था खोल कर महान् उपकार का कार्य किया है। हम दानवीर सेठ जुगलकिशोर जी बिड़ला तथा अन्य दानी महोदयों के सम्बन्ध में उनकी उदारता और दान पर हर्ष और धन्यवाद प्रकट करते हैं। सन् १९२६ से १९३८ तक विविध कार्यों के लिए ट्रस्ट को उस इलाके में १९२०२८)॥ दान में प्राप्त हुए हैं। इस दानराशि से यह स्पष्ट विदित होता है कि ट्रस्ट के कार्य को जनता ने अपनाया है। ट्रस्ट के प्रधानमन्त्री श्री ला० नारायणदत्तजी का कहना है कि छोटा नागपुर में ट्रस्ट का कार्य अपने ढंग का पहला कार्य है जो कि हिंदुत्व की रक्षा और वृद्धि के लिए रचनात्मक शैली पर किया जा रहा है। यह एक ऐसा कार्य है जिसमें असीम कठिनाइयों और महान् वैभवशाली ईसाई मिशन से मुकाबिला है। हमें यह जानकर बहुत सन्तोष और हर्ष है कि श्रद्धानन्द ट्रस्ट ने अपने २४ जनवरी सन् ४० के वार्षिक अधिवेशन में छोटा नागपुर में होने वाले कार्य की उपयोगिता और महत्व को समझते हुए यह निश्चय किया है कि स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी की भावना के अनुसार समस्त भारत में दलित जातियों और पिछड़ी हुई तथा कथित आदि वासी जातियो के उत्थान का कार्य बहुत वेग से किया जाए। ट्रस्ट ने स्वल्पकाल में अब तक इस दिशा मे जो कुछ किया है उस पर हम उन्हें बधाई देते हैं और जनता से आशा करते हैं कि वह इस महान् कार्य को अवश्य अपनाएगी।

लेख-सूची

पं० [illegible] प्रिंटिंग प्रेस [illegible] में मुद्रित ।

गुरुकुल कांगड़ी

मार्च १९४० Reg No L 2121

ऋग्वेद यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक— प्रो० सुधाकर, एम० ए०

स० सम्पादक—श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक मू० स्वदेश ३), एक प्रति का ≡) विदेश से ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद सामवेद

"मनुष्य मात्र से प्रार्थना"

[लेखक—श्री ला० तोलाराम जी रिटायर्ड स्टोरकीपर, N. W R., आनरेरी मन्त्री, पंजाब केन्द्रीय अनाथालय, रावीरोड, लाहौर]

"देह धरे का नाम है दे सके तो देह,
फिर पीछे पछताएगा जब देह हो जावेगी खेह।"

आपको मालूम है कि रावीरोड पर एक अनाथालय बनाम पंजाब केन्द्रीय अनाथालय लाहौर में खुला हुआ है, जो पंजाब भर में अपनी श्रेणी की एक ही संस्था है जहां सारे देश से बालक-बालिकाएं आकर दाखिल होते हैं। इसमें न सिर्फ उनका पालन-पोषण किया जाता है, बल्कि उनको आश्रय देकर विद्या अध्ययन कराया जाता है और इनको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए कोई न कोई कार्य सिखाया जाता है। इस अनाथालय के आधीन एक इण्डस्ट्रीयल मिडिल स्कूल है, जिसमें विद्या पढ़ाने के अतिरिक्त कटिंग और दर्जी का कार्य भले प्रकार सिखाया जाता है। यह स्कूल सरकार की ओर से स्वीकृत है, इसमें बाहर के बालक भी लिए जाते हैं।

इस अनाथालय में न सिर्फ पब्लिक के बालक आते हैं, बल्कि पुलिस डिपार्टमेण्ट से भी ऐसे बच्चों को जो कभी भगाये जाते रहे हैं, उनको गुण्डों से बरामद करके यहाँ दाखिल कराया जाता है और जो अनाथ बच्चे उसको शहर हस्पताल या जेल से मिलते रहते हैं, उनको भी यहाँ लाकर दाखिल कराया जाता है गर्ज़ कि इस अनाथालय में हर प्रकार के लड़के और लड़कियाँ जिनकी आयु १६ वर्ष से नीचे हो दाखिल किये जाते हैं। आजकल हालत ऐसी है कि जिन नवजात बच्चों की माताओं का स्वर्गवास होजाता है और जिनके पालने का प्रबन्ध उनके सरपरस्तों से नहीं हो सकता वे उनको यहाँ लाकर दाखिल कर देते है। ऐसे बच्चों की देख-भाल के लिए एक दानी रायसाहिब ने जो अपना नाम देना नहीं चाहते, एक ट्रेण्ड नर्स अपने व्यय पर रखी हुई है। आजकल हमारे पास एक सौ के लगभग लड़के और ३० के लगभग लड़कियाँ हैं। उनके व्यय के लिये आप सोच सकते हैं कि कितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती होगी। यह सब आप जैसे दानवीरों से इकट्ठा होकर आता है और उससे इनका खर्च चलाया जाता है। अब गर्मी का मौसम आरहा है अत. इन सबके लिए गर्मी के वस्त्रों की आवश्यकता है। इसलिए आप से प्रार्थना है कि जहाँ आप अपने बच्चों के लिए कपड़े सिलवायें वहाँ इन यतीम बच्चों का भी ध्यान रखें और इनके खाने पीने के लिए आटा, दाल, चावल घी सब्जी इत्यादि भी भेजें। जिस प्रकार हमारी सहायता करना चाहें, धन्यवाद सहित स्वीकार की जायगी। आशा है कि आप इस अपील पर ध्यान देंगे और जैसे पहले हमारी सहायता करते रहे हैं वैसे ही अब हमारी सहायता करके पुण्य के भागी बनेंगे।

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १५ | फाल्गुन १९९६ | अङ्क १

मार्च १९४० ई०] [दयानन्दाब्द ११६

* वेद की शिक्षाएँ *

न विन्धे अस्य सुष्टुतिम्। ऋ० १।७।७॥

मैं परमात्मा की स्तुति का पार नहीं पाता।

The Lord is too great for my praises

तरत् स मन्दी धावति। सामवेद १।१४॥

ईश्वर के आनन्द में मग्न तर जाता है और आगे बढ़ जाता है।

One who revels in Gods' love always succeeds and goes ahead in the march of life

हिन्दुस्तानी की ओट में उर्दू का प्रचार

[ले०—श्री प० वेङ्कटेशनारायण जी तिवारी एम० ए०]

—❀*❀—

कुछ दिन हुए 'लीडर' में डाक्टर बाबूराम सक्सेना का बिहार सरकार की नियुक्त की हुई हिन्दुस्तानी कमेटी से त्यागपत्र छपा था डाक्टर साहब ने इस कमेटी से इस्तीफा दे दिया है, क्योंकि उनकी राय मे इस कमेटी के द्वारा हिन्दुस्तानी की ओट में उर्दू के प्रचार की कोशिशें की जा रही हैं। हमें यह भी नहीं मालूम कि जिस कमेटी से डाक्टर बाबूराम सक्सेना ने त्यागपत्र दिया है उस कमेटी ने अभी तक क्या किया है। हाँ, इतना है कि उस कमेटी के सदस्यों में प्रयाग विश्वविद्यालय के वाइसचांसलर पं० अमरनाथ झा और डाक्टर ताराचन्द्र के से विद्वान् हैं। डाक्टर बाबूराम सक्सेना तो इस्तीफा दें और हिंदी के हिमायती प० अमरनाथ झा टस से मस भी न हों, यह एक ऐसी रहस्यमय बात है जिस पर शीघ्र प्रकाश पड़ना चाहिए क्या झा महोदय डा० बाबूराम सक्सेना के त्यागपत्र में कही गई बातों से सहमत हैं या नहीं? यदि हाँ तो उन्हे भी त्यागपत्र दे देना चाहिये था यदि नहीं तो उनका मौन रहना राष्ट्रभाषा के हित की दृष्टि से अनुचित है, क्योंकि डा० बाबूराम सक्सेना के त्यागपत्र से हिन्दी जगत् मे एक तरह स सनसनी सी फैल गई है

जो कुछ उन्होंने लिखा है उसी को पढ़कर हमारे कान खड़े हो गये हैं। लेकिन इस समय डा० बाबूराम सक्सेना के इस्तीफे के सम्बन्ध में जो अफवाहें फैल रही हैं वे और भी अधिक चिन्ताजनक हैं। मुझे इन किंवदन्तियों में विश्वास नहीं है, लेकिन बिहार की गवर्नमेंट की नियत पर यदि बेजा हमले हो रहे है तो पण्डित अमरनाथ झा और डाक्टर ताराचन्द का यह कर्तव्य है कि वे सही बातो को प्रकाशित कर दें। सम्भव है कि वे डाक्टर बाबूराम सक्सेना के अनौचित्य को सिद्ध कर सकते हों तभी इन दो विद्वानों ने कमेटी से इस्तीफा नहीं दिया। यदि इनका डा० सक्सेना से मतभेद है तो इतने बड़े महत्वपूर्ण मसले पर इन दो सम्मानित विद्वानों का मौन-मन्त्र का जप करना उचित नहीं। कम से कम पण्डित अमरनाथ झा का चुप रहना तो समझ में आ ही नहीं सकता। क्या झा महोदय बिहार में इस समय जो कुछ हो रहा है उससे सन्तुष्ट हैं? यदि हैं तो उसकी स्थिति का सही सही बोध हमें हो जाना चाहिये। यदि उन्हें सन्तोष नहीं है तो उन्हें

हिन्दी के चीर-हरण को भीष्म पितामह की तरह हाथ पर हाथ रखकर चुपचाप देखते रहना शोभा नहीं देता।

हम ऊपर कह चुके हैं कि बिहार में जो कुछ हो रहा है उस सम्बन्ध में हमें पूरा २ ज्ञान नहीं है। सिर्फ इतना मालूम है कि उस प्रान्त के शिक्षा-मन्त्री डाक्टर सैयद महमूद गाज़ीपुरी—आपका जन्म स्थान युक्त-प्रान्त का गाज़ीपुर जिला है—कांग्रेस के अनुरोध के अनुसार हिन्दुस्तानी भाषा के प्रचार में दत्त-चित्त हैं। जो आज बिहार में हो रहा है कल वही युक्त-प्रांत में होने वाला है यहां भी सरकारी दफ्तरों और सरकारी मदरसों में हिन्दी और उर्दू के स्थान में 'हिन्दुस्तानी' को पढ़ाने की योजना मंजूर हो चुकी है। इस दृष्टि से हिन्दुस्तानी का मसला हमारे लिए प्रान्तिक और राष्ट्रीय दृष्टि से न केवल महत्वपूर्ण किन्तु परमावश्यक सा हो गया है। इसकी उपेक्षा करना प्रत्येक दृष्टि से हानिकारक सिद्ध होगा। इसी लिए मैं इस लेख के द्वारा पाठकों का ध्यान 'हिन्दुस्तानी' के मसले की ओर दिलाना चाहता हूँ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने महात्माजी के आदेश से 'हिन्दी यानी हिन्दुस्तानी' को राष्ट्र-भाषा बनाने की घोषणा की है। लेकिन कठ मुल्लाओं ने अपनी साम्प्रदायिक संकीर्णता और सांस्कृतिक असहिष्णुता से 'हिन्दी यानी हिन्दुस्तानी' में से हिन्दी को विशुद्ध उर्दू का जामा पहनाने की ठान ली है। हमारी उदासीनता से लाभ उठाकर वे इस समय उर्दू को हिन्दी के स्थान में प्रभावसत्तात्मक राज्यों की मदद से राष्ट्र भाषा बनाने का स्वप्न देख रहे हैं। सम्भव है, यह मार्ग सही हो लेकिन सही हो या ग़लत, हमें यदि इस मार्ग पर चलना ही है तो महज़ दूसरे के कहने पर बिना कुछ समझे बूझे न चल पड़ना चाहिये। भेड़िया-धसान की निन्दा हम सभी करते हैं। ऐसी दशा में इस भाषा के प्रश्न पर जिसका हमारे राष्ट्रीय जीवन से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है, आँख मींचकर भेड़ों की नकल करना एक स्वतन्त्र जाति के लिये परम लज्जा की बात होगी। भाषा किसी समुदाय विशेष की अन्तरात्मा का प्रतिबिम्ब है। उसके विकास की कहानी है। उस भाषा के शब्दों में अमर हैं हमारे सांस्कृतिक अनुभव, हमारी जातीय जय और पराजय, हमारे राष्ट्रीय करुण-क्रन्दन और आनन्दोल्लास, भारत की अभिलाषायें और आकांक्षायें। वे शब्द ही समाज और राष्ट्र के प्राण हैं। वे केवल शब्द नहीं वे तो हमारे राष्ट्र के हृत्पिण्ड के टुकड़े हैं। करोड़ों भारतवासियों के रक्त से इन शब्दों का भरण पोषण हुआ है। मातृ भाषा के शब्दों में हृदय के स्नायुओं को झंकृत करने की अद्भुत शक्ति होती है। मातृ-भाषा अनन्त अमोघ शक्ति-राशि का विशुम्भय आकार है। मन्त्र-रूपी ये शब्द हमारे पूर्वजों की अनमोल देन हैं। इसी दुर्लभ बपौती को भ्रष्ट और विकृत करने का भगीरथ प्रयत्न आरम्भ हो चुका है। इसीलिये हमें सतर्क हो जाना चाहिये।

हिन्दुस्तानी क्या है ?

महात्मा गांधी के अनुसार 'हिन्दुस्तानी' वह भाषा है जो देवनागरी और उर्दू दोनों ही लिपियों में लिखी जाय। अर्थात् इस भाषा की दो लिपियां हैं। इसके बोलने और लिखने वालों को शब्दों के प्रयोग के विषय में पूर्ण स्वतन्त्रता है। इस भाषा में किसी शब्द का सांप्रदायिक दृष्टिकोण से बहिष्कार करना अनुचित होगा। कांग्रेस ने केवल भाषा का नाम बदला है, इससे अधिक कुछ नहीं किया है इसीलिये हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने भी अपने पिछले अधिवेशनों में हिन्दी याने 'हिन्दुस्तानी' का समर्थन किया अर्थात् हिन्दुस्तानी का वह रूप जो हिन्दुस्तान की भाषा का रूप हो जिसे हिन्दुस्तान के रहने वाले 'हिदुस्तानी' कहें। हमारे हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इसी राष्ट्रीय दृष्टिकोण से हिन्दी भाषा की दो लिपियां स्वीकार की। महात्मा गाँधी ने अभी हाल ही में यह भी सलाह दी है कि हिन्दुस्तान की जितनी आर्य भाषायें हैं उन सब को देवनागरी लिपि को अपनाना चाहिये, अर्थात् हिन्दी बँगला, आसामी उड़िया राजस्थानी, गुजराती, मराठी आदि हिन्दुस्तान में जितनी प्रांतिक आर्य-भाषाय हैं उन सब की एक ही लिपि मानी जाय, अतएव बँगला, आसामी गुजराती, उड़िया की लिपियों के स्थान में देवनागरी लिपि का चलन होना जरूरी है।

महात्मा जी ने एक बार नहीं, अनेक बार इस बात को कहा है कि 'हिन्दी याने हिन्दुस्तानी' में संस्कृत के तत्सम और तद्भव शब्द प्राकृत भाषाओं के शब्द देशज शब्द और प्रान्तिक शब्दों के साथ साथ अरबी फारसी, अंग्रेजी भाषाओं से लिये गये शब्दों का प्रयोग साधु है। इसी बात पर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भी अपने एक निबन्ध में जोर दिया है। लेकिन इसे हमारे मुसलमान भाई नहीं मानते। अतएव काश्मीर की धारा-सभा के निर्वाचित मुसलिम सदस्यों के अनुसार महात्मा जी और पंडित जवाहरलाल नेहरू साम्प्रदायिकता के प्रचारक हैं। काश्मीर के मुसलमान नहीं चाहते कि वहां हिन्दुओं को देवनागरी लिपि के द्वारा शिक्षा दी जाय या सरकारी दफ्तरों में इस लिपि को भी वही स्थान वहाँ मिले जिसे वे उर्दू लिपि को देना चाहते हैं। जामिया मिलिया के प्रसिद्ध डाक्टर जाकिर हुसैन साहब उस शिक्षा-समिति के सभापति थे जिसको काश्मीर दरबार ने कुछ दिन पहिले नियुक्त किया था। इस जाकिर हुसैन कमिटी ने काश्मीर के लिये यह सिफारिश की है कि उस राज्य के लिये उर्दू-लिपि ही राज-लिपि करदी जाय उनकी सम्मति है कि इस राष्ट्रीयता के भाव को सबल करने के लिये यही आवश्यक है कि राज्य एक से अधिक लिपियों को राज-लिपि का पद दे। इधर डा० जाकिर हुसैन युक्तप्रान्त के लिये उर्दू और

नागरी की लिपियों का समान प्रचार आवश्यक समझते हैं—निश्चय ही राष्ट्रीयता के हित में इसी तरह साम्प्रदायिक कठमुल्लाओं ने 'हिन्दुस्तान के नाम पर संस्कृत के तत्सम और तद्भव आदि शब्दों के विरुद्ध जिहाद बोल दी है।

इन संकीर्ण साम्प्रदायिकता-वादियों में आपको बहुत से ऐसे मुस्लिम और हिन्दू सज्जन मिलेंगे जो कौंग्रेसी हैं महात्मा गाँधी हिन्दी को हिन्दुस्तानी कहते हैं। इन बुजुर्गों ने हिन्दुस्तानी शब्द को तो पकड़ लिया और हिन्दी पर हरताल फेर दी। इनका तो यहाँ तक कहना है कि हिन्दी तो कोई भाषा ही नहीं है वह तो महज उर्दू का विकृत रूप है, जिसमें अरबी और फारसी के शब्दों के स्थान में संस्कृत के शब्द ठूसठांस कर रक्खे जाते हैं। अतएव हिन्दुस्तानी वह ज़बान है जिसे मौलाना जाकिर हुसैन, डा० अब्दुलहक़ तथा ऐसे ही और दूसरे सम्मानित बुजुर्ग हिन्दुस्तानी कहें। सहज उर्दू ही उनकी राय में सच्ची हिन्दुस्तानी है और उसका हिन्दुस्तानी सहज उर्दू के अलावा और कोई ज़बान नहीं है।

हिन्दी; उर्दू से पैदा हुई

ऊपर जो कुछ मैंने कहा है उसके समर्थन में, मैं कुछ प्रमाण पाठकों के मनोरंजन के लिये नीचे उद्धृत करता हूं। मेरा अनुरोध है कि पाठक इन्हें ध्यान पूर्वक पढ़ें और इनके परिणामों का मनन करें। प्रमाण के लिये हमें आपको कहीं दूर नहीं जाना है दिल्ली से एक पुस्तक हाल ही में प्रकाशित हुई है। उसका नाम है 'हिन्दुस्तानी'। इसके प्रकाशित करने का श्रेय मकतबा जामिया, देहली को प्राप्त है। इसके दो संस्करण हैं—नागरी अक्षरों में और उर्दू में। इस पुस्तक में हिन्दुस्तानी विषयक उन ६ व्याख्यानों का संग्रह है जो ६ विभिन्न सज्जनों ने दिल्ली के आल इण्डिया रेडियो से २० फरवरी १९३९ से २५ फरवरी १९३९ की अवधि में दिये थे। व्याख्याताओं के निम्न नाम हैं —

(१) डाक्टर ताराचन्द (२) डाक्टर मौलवी अब्दुलहक़ (३) बाबू राजेन्द्रप्रसाद (४) डाक्टर जाकिर हुसैन (५) पंडित ब्रजमोहन दत्तात्रेय और ( ) मिस्टर आसफअली साहब डाक्टर अब्दुलहक़ साहब, 'अन्जुमन-ए तरक़्क़ी-ए उर्दू के सचालक हैं। उर्दू का एक बहुत बड़ा कोष भी आपने तैयार किया है। उर्दू के प्रबल प्रचारक हैं, हिन्दी के ऊपर आप की अकृपा है। अन्जुमन-ए-तरक़्क़ी-ए-उर्दू के प्रतिनिधि डाक्टर अब्दुलहक़ को हिन्दुस्तानी पर बोलने के लिए दिल्ली के आल इण्डिया रेडियो ने आमन्त्रित किया। लेकिन युक्तप्रांत में उन्हें डा० ताराचन्द के अतिरिक्त और कोई विद्वान् न मिला, जो इस मसले पर बोलता। जामिया के प्रिंसिपल तो बुलाये गये, लेकिन गुरुकुल के अध्यापकों में दिल्ली के आल-

इण्डिया रेडियो वालों को एक भी विद्वान् न मिला जो हिन्दुस्तानी के मसले पर कुछ कह सकता।

इन सज्जनों ने अपनी उपर्युक्त वक्तृताओं में जो कुछ कहा है, उससे एक एक, दो दो वाक्य मैं यहाँ उद्धृत कर देना चाहता हूँ। सुनिये! डा० ताराचन्द हिन्दुस्तानी उर्दू और हिन्दी के विषय में क्या कहते हैं—

'फोर्ट विलियम कालिज के प्रिन्सिपल जानगिल क्राइस्ट ने इस कमी को इस तरह से पूरा किया कि हिन्दुस्तान से अमीन अम्मन, अफसोस, हैदरी, काजिमअली जवाँ, विला जैसे उर्दू के अच्छे अच्छे लिखने वालों को कलकत्ते में बुलाया और उनसे नस्र में किताबें लिखवाईं। हिन्दुओं के लिये लल्लूजी लाल, बेनीनरायन वगैरह को हुक्म मिला कि नस्र में किताबें तैयार करें। इन्हें और भी ज्यादा मुश्किलों का सामना करना पड़ा। ब्रज या साहित्य की भाषा तब थी, लेकिन उसमें गद्य या नस्र नाम के लिये ही था। क्या करते? इन्होंने यह रास्ता निकाला कि मीर अम्मन, अफसोस वगैरह की जबान को अपनाया पर इसमें से फारसी और अरबी के अल्फ़ाज़ छोड़ दिये और संस्कृत और हिन्दी के रख दिये।"

डाक्टर ताराचन्द की सम्मति में हिन्दी उर्दू का संस्कृत मिश्रित रूपान्तर है।

डाक्टर अब्दुलहक कहते हैं—

"गांधी जी ने हिन्दी हिन्दुस्तानी का अल्फ़ाज़ ईजाद किया है। चूँकि बेजोड़ था, मकबूल न हुआ।"

"नतीजा यह है कि आसान उर्दू का नाम हिन्दुस्तानी हुआ। आप फरमायेंगे कि आसान हिन्दुस्तानी को हिन्दी क्यों न कहें? जरूर कहिये क्योंकि जैसा कि मैं अभी कह चुका हूँ जदीद हिन्दी उर्दू का ही तो बच्चा है।"

जदीद हिन्दी उर्दू का बच्चा है, इस वाक्य को पढ़कर पाठक चौंकेंगे, अतएव डा० अब्दुलहक की इस विषय में सम्मति को मैं नीचे उद्धृत करता हूँ—

'जदीद हिन्दी जिसकी अशायत की आजकल कोशिश की जा रही है, नये जमाने की पैदावार है। इसने फोर्ट विलियम कालिज कलकत्ते में जन्म लिया दरअसल यह उर्दू का बच्चा है। वहां इस तरह के अरबी, फारसी के अल्फ़ाज़ निकाल कर इनकी जगह संस्कृत के शब्द मिला दिये थे।"

ऊपर के अवतरणों से दो बातें सिद्ध हुईं। डा० ताराचन्द और डा० अब्दुलहक इस बात को मानते हैं कि आजकल की प्रचलित हिन्दी वास्तव में उर्दू का हिन्दी रूपान्तर है। दूसरी बात यह कि संस्कृत और हिन्दी के शब्दों को अरबी और फारसी के शब्दों के स्थान में बिठा देना अनुचित काम है जिसको हिन्दुओं ने अपनी साम्प्रदायिक संकीर्णता से प्रेरित होकर कर डाला है। इस पाप का प्रायश्चित कैसे हो यह एक जटिल समस्या थी। लेकिन इसको हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भूतपूर्व और इण्डियन नेशनल कॉंग्रेस के वर्तमान सभापति बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी ने इन शब्दों में बताया है कि 'जितने अरबी फारसी के लफ्जों को हिन्दी के अच्छे लिखने वालों ने इस्तेमाल किया है और जितने संस्कृत के शब्दों को अच्छे उर्दू लिखने वालों ने व्यवहार किया है उनको हिन्दुस्तानी में ले लेना चाहिये। इनके अलावा आवश्यकतानुसार और भी शब्द लिये जा सकते हैं।'

शायद बाबू राजेन्द्रप्रसाद को यह मालूम नहीं कि डाक्टर अब्दुलहक के द्वारा रचित फरहंगे आसफिया नामक उर्दू कोष में उस कोष के रचयिता के अनुसार केवल ५०० संस्कृत के शब्द है। इसका कारण प्रत्यक्ष है।

उर्दू के लेखक फारसी और अरबी की जबानों को पढ़ते थे, देशी भाषाओं जिनमें संस्कृत भी एक है—से उनको कोई सरोकार न था इसीलिये फ़रहंगे आसफिया में जहाँ ७,००० अरबी के, और ६ ५०० फारसी के शब्द हैं। वहां संस्कृत के केवल ५०० हैं। संस्कृत के शब्दों के चुनाव के मोल का निपटारा बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी ने शायद इस सिद्धांत पर किया है कि अज्ञानी का अज्ञान ही माप दण्ड होसकता है किसी शब्द विशेष की साहित्यिक उपयुक्तता के नापने का। दुनियां में शब्दों की परख होती है उनके प्रचार विस्तार के आधार पर बाबू जी ने इस सिद्धांत को तिलांजलि दे दी। इस सम्बन्ध में क्या इससे अधिक कहने की जरूरत है ?

हमने ऊपर डाक्टर ताराचन्द और डा० अब्दुलहक के दिये भाषण के जो अवतरण दिये हैं उनमें आधुनिक हिंदी गद्य को उर्दू गद्य का संस्कृत शब्दों से रचित रूपान्तर मात्र सिद्ध करने की चेष्टा की गई है डा० अब्दुलहक के विषय में हमें कुछ नहीं कहना।

[क्रमशः]

महिला-जगत्

मातृत्व की ओर

माता की पदवी प्राप्त करने वाली कन्याओं के जानने योग्य बातें

[ले०—रघुनाथप्रसाद पाठक]

—**—

पाठ संख्या ३

अछूत की बीमारियाँ तथा उनके निराकरण के उपाय

उस दिन रात को सुशीला बहुत देर तक जागती रही और जीवन के सम्बन्ध में बड़ी बहन ने जो कहानियां सुनाई थीं उस पर विचार करती रही। उसके लिए ये सब बातें एक दम नई और आश्चर्यजनक थीं। परमात्मा ने छोटे से जीव से लेकर बड़े से बड़े जीव की निरन्तर उत्पत्ति के लिये विचित्र व्यवस्था की हुई है तथा छोटे से छोटे जीव के लिये हवा और खाने का अद्भुत प्रबन्ध किया हुआ है सुशीला के लिए ये बातें बहुत बड़ी थीं। "कमला जीजी ठीक कहती हैं। माता बनना बड़ा आश्चर्यजनक कार्य है। मैं सोचा करती थी कि यदि मैं लड़का होती तो अच्छा होता परन्तु अब मैं ऐसा नहीं चाहूँगी।" यह सोचती हुई वह सो गई।

दूसरे दिन सुबह जब वह सोकर उठी तो उसे घर में कुछ गड़बड़ देख पड़ा। केशव रो रहा था और उसके पिता उसे चुप करने की कोशिश कर रहे थे।

उसने इधर उधर देखा परन्तु कमला घर में न देख पड़ी तब उसने बच्चे को गोद में लेकर चुप कर दिया।

सुशीला के पूछने पर उसकी माँ ने कहा पड़ोस में एक बुढ़िया को हैजा होगया। कमला उसे देखने के लिए गई थी। ४-५ घंटे हो गये अभी तक नहीं लौटी है। मैंने उसे जाने से रोका था परन्तु वह नहीं मानी थी केवल मेरी बात पर हँस दी थी। उसने मुझे

दवाइयों का एक डब्बा दिखाकर कहा था कि इसके भी कोई बात नहीं है मुझे कुछ न होगा। छीः !! इन नये नये फैशनों को मैं तो जानती नहीं और न पसन्द ही करती हूँ। आजकल की औलाद हम बड़े बूढ़ों को मूर्ख समझती है। कमला के रानी-खुशी घर लौटने पर ही मेरे जी में जी आयगा।"

दोपहर हो जाने पर सुशीला के पिता चलते फिरते पुस्तकालय की पुस्तकें लेकर देहात को चले गये और छोटी माता का काम सुशीला पर आ पड़ा। उसने बच्चे को कमला जो खाना रख गई थी वह खिलाया और दिल भरकर माता की खूब ही पूरी की। बीच बीच में सुशीला और उसकी माता डरते २ कमला को देखने के लिये दरवाजे पर आती और देखती कि बुढ़िया के घर से रोने पीटने की आवाज़ तो नहीं आ रही है।

दोपहर ढल जाने पर कमला घर आई और आते ही स्नानालय में घुस गई और कह गई 'मेरे पास कोई न आना।' आधे घण्टे के बाद सुशीला स्नानालय की तरफ गई और देखा कि सफेद रङ्ग का पानी स्नानालय से निकल रहा है और उससे एक अजीब तरह की गन्ध आ रही है। कुछ क्षण के बाद कमला ने स्नानालय का दरवाजा खोला और सुशीला को अपने पास बुलाकर कहा अब तुम मेरे पास आ सकती हो। यह सफेद चीज़ फिनाइल कहलाता है। इससे मैंने अपने हाथ धोये हैं और अपने सब कपड़ इसमें भिगोये हैं। अगर मुझे यह चीज़ न मिलती तो मैं गर्म पानी और साबुन से काम लेती। इस रीति से हैजे के कीटाणु (जर्म) मर जाते हैं और आदमी बीमारी से बच जाता है।'

'कीटाणु!' जीजी! यह क्या चीज़ है और क्या बुढ़िया मर गई है? सुशीला ने आश्चर्य से पूछा।

कमला ने उत्तर दिया 'मैं समझती हूँ बुढ़िया अच्छी हो जायगी। आज मैं कीटाणुओं के सम्बन्ध में तुम लोगों को कुछ बतलाऊँगी। इस समय मैं थकी हुई हूँ और केशव की मुझे ख़बर लेनी है इसलिए खाना खाने के बाद हम बैठेंगे।"

दोपहर के बाद खाने इत्यादि से निश्चिन्त हो जाने और दमयन्ती के आजाने पर कमला ने पाठ शुरू किया। उसने कहा 'कीटाणुओं के शरीर में घुस जाने से एक पुरुष से दूसरे पुरुष में बीमारी पैदा होती है। ये कीटाणु बहुत ही महीन छोटे २ कीड़े होते हैं जिन्हें हम सहज ही नहीं देख पाते हैं हम लोग ख़ुर्दबीन (microscope) के द्वारा इन्हें देखते और इनका ज्ञान प्राप्त करते हैं। ये भिन्न २ प्रकार के होते हैं और हर बीमारी के कीटाणु अलग २ होते हैं। रोगी के ख़ून, टट्टी और थूक को देखकर हम बतला सकते हैं कि उसके रोग का क्या कारण है। बहुत से कीटाणु पुरुष के शरीर में गले और नाक के रास्ते

प्रविष्ट होते हैं। तपेदिक, चेचक और मामूली जुकाम के कीटाणु नाक और गले के द्वारा शरीर में दाखिल होते हैं। मलेरिया के कीटाणु मच्छरों के काटने से प्रविष्ट होते हैं। बीमार आदमी के शरीर से कीटाणु लेकर और स्वस्थ आदमी को काटकर मच्छर उसके शरीर में कीटाणुओं का प्रवेश कर देते हैं। हैज़े के कीटाणु केवल मुँह के रास्ते शरीर के भीतर जाते हैं। यदि मैं लौटकर आज फिनायल या गर्म पानी और साबुन से अपने हाथ और कपड़े न धोती और उन्हीं हाथों से खाना खाती तो जो कीटाणु मेरे साथ आये थे उनका अन्त न होता और बहुत सम्भव था मुझे हैज़ा हो जाता" बहुत से आदमी सोचते हैं कि हैज़ा और प्लेग इत्यादि महामारियों का कारण देवी देवताओं का कोप होता है और वे सैकड़ों जानें लेकर शान्त होते हैं। यह उनकी बड़ी भूल होती है। इस भूल के कारण लोग महामारी के रोकने का सही इलाज नहीं करते और परिणाम यह होता है कि हज़ारों जानें योंही नष्ट हो जाती हैं। प्लेग और हैज़ा ओह! ये कितनी भयंकर बीमारियाँ हैं। ये भय और उपद्रव को अपने साथ लाती हैं। यदि इनके रोकने का तत्काल और सही यत्न किया जाय तो ये बड़ी आसानी से रोकी जा सकती हैं। इनके रोकने का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। हैज़ा मक्खियों से फ़ैलता है। मक्खियाँ बीमार आदमी के पाख़ाने से कीटाणु लाती और बाज़ार या घरों में खाने की पकी हुई चीज़ों पर बैठकर उन पर कीटाणु छोड़ जाती हैं। उन चीज़ों के खाने से मनुष्यों के शरीरों में ये कीटाणु घुस जाते हैं यदि ये चीज़ें खाने से पहले धोकर साफ़ न की जायँ या गर्म न की जांय तो हैज़ा होने की आशंका रहती है।

'आज प्रातःकाल मैंने बुढ़िया के कमरे का फ़र्श फिनायल से धुलवाया था। बुढ़िया के रिश्तेदारों के हाथ भी फिनायल से धुलवाये थे। बुढ़िया को दवाई भी हाथ धुला देने के बाद दी थी और उन सब लोगों को फिनायल का प्रयोग करने की हिदायत की थी। यदि वे लोग मेरी हिदायत पर चलेंगे तो कीटाणु मर जायेंगे और हैज़े का प्रसार रुक जायगा।

दमयन्ती ने सन्देह से कहा जीजी! यह तो जादू की सी बात मालूम होती है। क्या तुम्हें निश्चय है कीटाणु मर जायँगे। मुझे तो बड़ा भय लगता है।

कमला हँसी और बोली 'कीटाणु ज़रूर मर जायेंगे। मुझे तो पूर्ण विश्वास है।'

अब तपेदिक को लेलो। यह बीमारी बड़ी घातक होती है। इस बीमारी में खाँसी के द्वारा फेफड़ों से बहुत से कीटाणु थूक के ज़रिये बाहर आते हैं और तन्दुरुस्त आदमी के शरीर में प्रविष्ट हो जाते हैं। थूकना अपकर रोगों के प्रसार का एक मामूली तरीका है। रोगियों के मल-मूत्र को घरों के आस पास और सड़कों पर डाल देने तथा उन तालाबों में

नहाने और उसका जल पीने से जहां मनुष्य अपनी गन्दगियों का परित्याग करते हैं अनेकों बीमारियाँ फैलती हैं। ख़राब पानी भी बीमारी की जड़ होता है। यदि तालाब का पानी पिया ही जाय तो उसे गर्म करके पीना चाहिये। इस पर दमयन्ती ने प्रसन्न होकर कहा जीजी !! ठीक कहती हो। एक बार बोर्डिङ्ग हाउस के दोनों कुएँ सूख गये थे। तालाब से पानी की व्यवस्था की गई थी इस्तेमाल से पहले पानी गर्म किया जाता था। 'अध्यापिका महिला बाई खड़ी होकर अपने सामने पानी गर्म कराया करती थीं।"

कमला ने कहा ठीक ! कीटाणु तेज गर्मी में नहीं रह सकते पीने से पूर्व दूध को गर्म करके कीटाणु रहित कर लेना चाहिये। सूर्य की गर्मी में भी कीटाणु मर जाते हैं। तुम्हें जब कभी अपने कपड़ों में कीटाणुओं के होने का भय हो तो उन्हें पानी में डालकर गर्म करलो। वे कीटाणु रहित हो जायंगे।

'अब मैं तुम लोगों से एक प्रश्न करती हूँ ! बताओ बीमारी से बचने का साधारण (आम) नियम क्या है ? इस प्रश्न ने दोनों लड़कियों को चक्कर में डाल दिया, और वे आश्चर्य और लज्जा से एक दूसरे की ओर देखने लग गईं। कमला उठी, और रसोई घर में जाकर एक थाली उठा लाई। इस थाली को सुशीला ने खाना खाने के बाद बिना धोए रख दिया था। कमला ने सुशीला को थाली देते हुए कहा, 'शीला ! जाओ इसे धो लाओ। सुशीला इसका मतलब न समझ सकी। वह सोचने लगी कि हमारे पाठ से इस थाली का क्या सम्बन्ध हो सकता है ? बहिन की आज्ञा का पालन करने के लिए सुशीला नल पर गई और उस पर पानी डालकर और हाथ से मलकर बहिन के पास ले आई। कमला ने थाली को देखकर पूछा, शील ! क्या यह साफ है ? शील ने उत्तर दिया, हाँ, जीजी ! यह साफ है।' कमला ने कहा, 'इसके काले धब्बों को देखो' सुशीला ने कहा, 'जीजी ! यह नहीं छूट सकते।'

इस पर दमयन्ती उठी और कहा, 'लाओ ! मैं साफ करूं। यह कहकर नल पर गई और राख से धो-पोंछकर ले आई। थाली के धब्बे छूट गए थे परन्तु उसमें चमक नहीं आई थी। कमला ने यह देखकर मुस्कराकर कहा, 'धब्बे मिट गए हैं परन्तु यह साफ नहीं दिख पड़ती है। अब इसकी सफाई की मेरी बारी है। यह कहकर वह उठी और उसे अच्छी तरह साफ करके कपड़े से पोंछा और उसमें शीशे जैसी चमक आगई। लड़कियों को दिखलाकर कमला ने पूछा, 'क्या अब यह साफ है ? दोनों लड़कियों ने शर्माते हुए कहा, हाँ अब यह साफ है।

'परन्तु तुम दोनों ने मुझे कहा था कि पहले ही वह साफ थी क्या सफाई की भिन्न भिन्न किस्में होती हैं ?"

सुशीला ने शर्माते हुए कहा वास्तव में पहले वह साफ नहीं थी । एक प्रकार से साफ अवश्य थी ''

कमला ने कहा यदि मैं इस थाली को उस बीमार बुढ़िया के घर से लाती तो मुझे कैसे विश्वास होता कि उसमें कीटाणु नहीं थे ।

दमयन्ती ने कहा आप उसे फिनायल व साबुन और गर्म पानी से धोकर कीटाणु रहित करतीं ।

ठीक है ! तुम लोग इस विषय को समझ गई हो । अब तुम बीमारी के रोकने का साधारण नियम बतलाओ !"

सुशीला ने तत्काल उत्तर दिया 'सफाई रखना साधारण नियम है ।'

कमला ने कहा ठीक ! गन्दगी और बीमारी साथ २ चलती हैं । घर के आस पास के कूड़े-कचरे और सड़कों की गन्दगी से रोग पैदा होते हैं । दूषित धूल भी बीमारी की जड़ होती है नालियों का गन्दा पानी जहरीला होता है । शरीर के मैल से दाद इत्यादि चर्मरोग होते हैं । बीमारी से बचने का मूल मंत्र 'स्वच्छता' है ।

सुशीला ने कहा 'बीबी ! हवा और पानी को स्वच्छ करने का यज्ञ-हवन का तरीका भी तो काम में लाया जाता है । पिछले साल जब यहाँ प्लेग हुई थी तो डाक्टरों के सिर तोड़ कोशिश करने पर भी वह काबू में नहीं आई थी । तब प्रियम्वदा के पिताजी ने घर २ मुहल्लों २ में हवन कराए थे और देखते २ ही बीमारी शान्त होगई थी   सुनते हैं हवन यज्ञ नित्यप्रति करने से कोई संक्रामक रोग पास नहीं भटकता । प्रियम्वदा के पिताजी को फिनायल से बड़ी चिढ़ है । वे कहते हैं कि इससे कीड़े तो भाग या मर जाते हैं पर मनुष्य के दिमाग़ पर इसकी भभक का बहुत बुरा असर होता है । इसकी गंध से मेरा तो सिर चकराने लगता है ।"

कमला ने कहा, 'हवन-यज्ञ का तरीका भी बहुत अच्छा है ।'

'जब मैं उस थाली से अपनी बहिनों की सफाई की अवस्था की तुलना करती हूँ तो मुझे बड़ा असन्तोष होता है', हमारी बहुत सी बहिनें बड़ी गन्दी रहती हैं । उनके सिरों में मैल और जुएँ भरी होती हैं उनके बच्चे गन्दे, भद्दे और मैले होते हैं जिन्हें देखने को जी तबीयत नहीं करती ।

कुछ बहनों की हालत वैसी होती है जैसी सुशीला के द्वारा धोए जानेपर थाली

की थी। वे अपने पड़ोसियों से गन्दी और मैली कहाये जाने के डर से कुछ लोगों की सफ़ाई रखती हैं।"

कुछ बहनों की अवस्था दमयन्ती द्वारा साफ़ की हुई थाली के सदृश होती है। वे बाहरी सफ़ाई पर ध्यान देती हैं। उनकी भीतर की आत्मा भले ही गन्दी हो वे इसकी परवा नहीं करतीं और अपनी बाहरी टीप टाप से दुनियां के सामने अपने को स्वच्छ और साफ़ दिखाया चाहती हैं।"

हमारा आदर्श शीशे के समान चमकती हुई थाली होना चाहिये, सच्चे रूप में हमें स्वच्छ बनना चाहिये। अपने घरबार आंगन शरीर और कपड़ों में सफ़ाई रखनी चाहिए। सफ़ाई का शत्रु आलस्य है इसे पास नहीं फटकने देना चाहिये तुम लोगों की कोशिश यह होनी चाहिये कि तुम सफ़ाई से ओत-प्रोत हो जाओ। जिससे संसार के सामने तुम अपना सिर ऊँचा उठा सको!

एक और बात। बहुत सी सफ़ाइयां ऐसी हैं जिनके करने में पैसे की ज़रूरत नहीं होती, केवल आलस्य को छोड़कर परिश्रम करने की ज़रूरत होती है। सफ़ाई के लिये अपने मन और रुचि को साफ़ करो। रुचि के साफ़ हो जाने पर सफ़ाई के लिए किसी बाहरी शिक्षा और प्रेरणा की ज़रूरत नहीं रहेगी।

इस समय तक हम बाहरी सफ़ाई की चर्चा करते हैं। भीतरी सफ़ाई भी उतनी ज़रूरी है जितनी बाहरी एक के बिना दूसरी अधूरी है अपने अन्दर गन्दगी और बुराइयों के भरे रखने की अपेक्षा बाहर से गन्दा और मैला रखना अच्छा है। बुरे और दुष्ट लोगों को घर में रखने की अपेक्षा घर को गन्दा रखना अच्छा है। हम अपने भीतर की अपवित्रता और बुराइयों को भले ही संसार की आंखों से छुपा लेवें परन्तु परमात्मा की आंखों से नहीं छिपा सकते। बाहर और भीतर दोनों ओर से हमें अपने को स्वच्छ और पवित्र रखना चाहिए।"

इस सम्बन्ध में किसी दूसरे अवसर पर तुम्हें और बात बतलाऊँगी। इस समय केवल एक चीज़ की चर्चा करूंगी, वह चीज लज्जा-शीलता है। लज्जा-शीलता स्त्रियों को सबसे ज़्यादा मूल्यवान आभूषण होता है। अच्छी स्त्रियां प्राणों की बाजी लगाकर भी इसकी रक्षा करती हैं। भले घरों की लड़कियां अपनी रहन-सहन बातचीत और वेश-भूषा में लज्जा-शीलता का उत्तम परिचय देती हैं। घर बाहर और गली-हाट में वे अपने कपड़ों पर विशेष ध्यान रखती हैं। उनके कपड़े स्वच्छ और सलीकेदार होते हैं। बातचीत में उनके मुँह से फूल झड़ते प्रतीत होते हैं। वे कोई ऐसा कार्य नहीं करतीं जिससे लोग उनकी तरफ़

धातुकी उठा सकें या उन्हें पहचान कर सकें। स्त्रियां निर्दोष होती हैं फिर भी लोग सहज ही उनमें बुराई का सन्देह करने लग जाते हैं। लड़कियों को इस बात पर विशेष ध्यान रखना चाहिए। कन्याओं को चमकती हुई थाली के समान साफ होना चाहिए। शरीर, हृदय और जीवन में मधुर, पवित्र और स्वच्छ होना चाहिये।

'आज इतना ही पाठ काफ़ी है। लड़कियो! अब तुम थक गई होगी।"

'दमयन्ती ने कहा, "बिल्कुल नहीं, बीबी! आपने मुझे लज्जित कर दिया है। मैं जानती हूँ मैं आलसी हूँ। साफ़ रहने का जो ढंग आपने बतलाया है उसे तो मैं बिल्कुल नहीं जानती थी। सफ़ाई का काम बड़ा कठिन काम है। परन्तु स्वच्छता और सुन्दरता स्त्रियों के ही हिस्से में आई है इस बातसे यह काम आसान हो जायगा।"

कमला ने कहा, 'दमयन्ती! तुम इस थाली को, नीले स्वच्छ आकाश को और फूलों की मधुरता और पवित्रता को अपने ध्यान में रक्खा करो और उन जैसा पवित्र और स्वच्छ बनने और संसार को अपने साथ सुगन्धित और स्वच्छ बनाने का यत्न किया करो। अब मैं बुढ़िया की ख़बर लेने जाती हूँ। क्या तुम केशव का ध्यान रखोगी?

सुशीला एक दम रज़ामन्द होगई। उसने आज के पाठके सम्बन्ध में कुछ न कहा। कमला और दमयन्ती के चले जाने पर उसने बुहारी उठाई और कमरे के एक कोने में बुहारकर जो कूड़ा इकट्ठा कर दिया था वह साफ़ करके बाहर फेंक आई।

सुमन-संचय

[१]

मर्व श्रेष्ठ बदला

चीन के सम्राट् मगफू को सूचना दी गई कि उसके विरोधियों ने राजविद्रोह कर दिया है। वह तत्काल उनका दमन करने के लिए चल दिया और प्रतिज्ञा की कि मैं उनको समूल नष्ट कर के राजधानी को लौटूँगा। ज्यों ही वह विद्रोहियों के निकट पहुँचा त्यों ही उन्होंने आधीनता स्वीकार करली। सब लोगों का विचार था कि सम्राट् उन विद्रोहियों से बड़ा भयङ्कर बदला लेगा परन्तु जब उन्हों ने बन्दी हुए विद्रोहियों के साथ सम्राट् को नम्रता का बर्ताव करते देखा तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। सम्राट् के प्रधान मन्त्री ने कहा 'राजन्! क्या अपनी प्रतिज्ञा का पालन आप इस प्रकार कर सकते हैं?' सम्राट् ने उत्तर दिया 'मैं अपनी प्रतिज्ञा पर अटल हूँ। मैंने अपने विद्रोहियों को नष्ट कर दिया है। देखो! अब वे मेरे शत्रु नहीं रहे हैं वरन् मैंने अपना मित्र बना लिया है' मन्त्रीने लज्जित होकर कहा "निस्सन्देह आपने ऐसा बदला लिया है जो प्रशंसा और अनुकरणके योग्य है।"

[२]

देश प्रेम

रोम और कार्थेज का घमासान युद्ध हो रहा था। रोम के सेनापति रेगुलस को कार्थेज वाले बन्दी करके अपने यहाँ ले गए। कार्थेज की इतनी भयंकर हानि हुई कि अन्त में उन्हें सन्धि के लिए विवश हो जाना पड़ा। उन्हों ने इस मिशन पर सेनापति रेगुलस को भेजा क्योंकि वे समझते थे कि सेनापति अपने देश वासियों को सन्धि के लिए मना लेगा परन्तु उन्हों ने उस से यह वचन लिया कि यदि वह अपने मिशन में असफल रहा तो उसे बन्दीगृह में लौट आना होगा। सेनापति ने क्या किया? उस ने अपने देश वासियों को सन्धि न करने और कार्थेज की निर्बलता से लाभ उठाने की सलाह दी। अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए सेनापति कार्थेज के बन्दीगृह में लौट गया और कार्थेज वालों ने बड़ी निर्दयता से उसका वध कर दिया।

[३]

माता का प्रेम

सिकन्दर महान् अपनी माता का बड़ा भक्त था। रक्तपात करने और गाँवों को उजाड़ने और उन में आग लगवाने में उसे ज़रा भी संकोच न होता था। परन्तु अपनी माता को नाराज़ करने से बहुत डरता था। एक बार उस के राज प्रतिनिधि ने उसकी माता की शिकायत लिखकर उस के पास भेजी सिकन्दर ने राज प्रतिनिधि को लिखा राज प्रतिनिधि महाशय को पता नहीं है कि मेरी माता के आँसुओं का एक बूंद उन के हज़ारों लेखों को नष्ट कर सकती है।"

[४]

असभ्यता गन्दे कपड़े के सदृश है

एक बार महात्मा सुकरात अपने कई शिष्यों के साथ कहीं जा रहे थे मार्ग में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति उन्हें मिला। सुकरात ने उसे प्रणाम किया परन्तु उस ने महात्मा सुकरात के अभिवादन का कोई उत्तर न दिया और चुप चाप उन के पास से होकर चला गया। इस पर उनके शिष्यों को बड़ा क्रोध आया। वे उस असभ्य व्यक्ति को दण्ड देने के लिए उतारु हो गए। सुकरात ने उनको रोक कर कहा यदि कोई आदमी गन्दे वस्त्र पहने हुए तुम्हारे पास से गुज़रे तो क्या तुम उस से नाराज़ होकर उस मारने पीटने लग जाओगे? असभ्यता तो गन्दे कपड़े के सदृश है जिसे कोई भी भला व्यक्ति पहनना पसन्द न करेगा।

[५]

निस्पृहता

एक दिन सिकन्दर महान् प्रसिद्ध तत्ववेत्ता डायोजिनीज से मिलने उस के घर गया सिकन्दर ने कहा मैं सिकन्दर महान हूँ। डायोजिनीज ने उत्तर दिया मैं नाचीज़ डायोजिनीज़ हूँ सिकन्दर ने तत्ववेत्ता से कहा कि आप मेरे योग्य सेवा बताएं मैं अपना आधा राज्य भी आपके चरणों में अर्पण करने के लिए तैयार हूँ

तत्ववेत्ता ने मुसकरा कर उत्तर दिया मुझे राज पाट की आवश्यकता नहीं। कृपा करके उस धूप को छोड़ दो जो आप ने सूर्य के सामने खड़े होकर रोक रखा है"

[६]

जनोपकार और कृपण धनी

एक धनी व्यक्ति बड़ा कृपण था। लोकोपकार के कार्य में वह एक कौड़ी भी व्यय न करता था। नगर के लोगों ने महात्मा नानक से शिकायत की और प्रेरणा की कि वे उस

कृपण धनी को सच्चे मार्ग पर लाऊँ जिससे जनोपकारक कार्यों में धन व्यय करने की उसकी रुचि हो। एक दिन महात्मा नानक उस धनी के घर गये और उसे १) देकर कहा मैं परलोक को जाता हूं। तुम मेरा यह रुपया बतौर अमानत के अपने पास रक्खो। जब तुम इस दुनियाँ को छोड़कर परलोक में आओ तब इस रुपये को अपने साथ लेते आना उस धनी ने आश्चर्य में आकर कहा महाराज! मैं आपका रुपया किस प्रकार अपने साथ ला सकता हूं महात्मा ने उत्तर दिया जिस प्रकार तुम अपना लाखों करोड़ों रुपया अपने साथ लाओगे उसी प्रकार मेरा यह रुपया लेते आना।" महात्मा का उत्तर सुनकर धनी बहुत लज्जित हुआ और उस दिन से जनोपकार में धन व्यय करने लग गया

[७]

शिष्टाचार

अमेरिका के एक राष्ट्रपति एक बार अपनी स्पेशल गाड़ी में बैठे सफ़र कर रहे थे। एक स्टेशन पर यह गाड़ी कुछ मिनटों के लिये ठहरी वहां पर एक बुढ़िया जिसको यह ज्ञात न था कि यह अमेरिका के राष्ट्रपति की स्पेशल है घबराई हुई उस कम्पार्टमेंट (डब्बे) मे घुस गई जिसमें राष्ट्रपति महोदय बैठे थे गाड़ी चल दी और उस बुढ़िया को यह ख्याल था कि मैं एक साधारण गाड़ी में सफर कर रही हूँ राष्ट्रपति उस समय सिगरेट पी रहे थे इस बुढ़िया ने जब उसको अपने सामने सिगरेट पीते देखा तो झुंझला कर कहा क्या तुम शिष्ट व्यवहार नहीं जानते। राष्ट्रपति ने चुपके से सिगरेट गाड़ी के बाहर फेंक दी। गाड़ी दूसरे स्टेशन पर पहुँची। वहां पर राष्ट्रपति के स्वागत के लिए बहुत से लोग इकट्ठे थे अब इस बुढ़िया को पता लगा कि जिस व्यक्ति को उसने झिड़क बताई थी वह वास्तव अमेरिका का राष्ट्रपति था यह बुढ़िया भयभीत होकर कांपती हुई राष्ट्रपति से क्षमा मांगने लगी। परन्तु उस शिष्टाचारी राष्ट्रपति ने उत्तर दिया माता! तुमने मुझे शिष्टाचार की शिक्षा दी है इसलिए मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूँ"

अध्यात्म धारा

धार्मिक जीवन तथा उसके विकास के उपाय

[ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज]

एक विद्वान् का कहना है कि मनुष्य को अपना जीवन संसार में इस ढङ्ग से व्यतीत करना चाहिये कि जब वह दुनिया को छोड़े तो दुनिया का जितना हर्ष समुदाय है, जगत् में उल्लास का जितना जोड़ है, उसमें उसे कुछ वृद्धि करके जाना चाहिये। यदि हम वृद्धि करके जाते हैं तो समझ लो कि हमने धर्म का जीवन व्यतीत किया है, परन्तु यदि हम दुनिया की हर्ष की मात्रा को कम और शोक की मात्रा बढ़ाकर दुनिया को छोड़ते हैं तो सभी स्वीकार करेंगे कि हमने धार्मिकता का जीवन व्यतीत नहीं किया। धार्मिक जीवन व्यतीत करने के लिये आवश्यक है कि उसकी तय्यारी की जाय। कोई काम तय्यारी किये बिना नहीं हुआ करता, इसलिए उसकी तय्यारी करनी ही होगी। तय्यारी का उपाय यह है कि एक मनुष्य की हैसियत से हमें सोचना चाहिये कि हमारे कर्तव्य क्या हैं। यदि हम उन्हें समझ कर पूरा करने का यत्न करेंगे तो यह, न केवल तय्यारी होगी अपितु तय्यारी के साथ 'हर्ष की मात्रा में वृद्धि" इस उद्देश्य की पूर्ति का क्रियात्मक साधन होगा।

मनुष्य के कर्त्तव्य

मनुष्य के कर्तव्य संक्षिप्त रीति से यदि कहा जाय तो तीन भागों में विभक्त हो सकते हैं वे विभाग ये हैं.—

(१) मनुष्य को अच्छा मनुष्य बनने के लिये अपने सम्बन्ध में क्या करना चाहिये।

(२) उसके दूसरे प्राणियों के प्रति क्या कर्तव्य हैं।

(३) ईश्वर के सम्बन्ध में उसे क्या करना चाहिये।

इन्हीं को दूसरे शब्दों में (१) शारीरिक (२) सामाजिक और (३) आत्मिक उन्नति कहते हैं। कर्तव्य के विभागों का कुछ विवरण देना उचित है, जिससे सभी को उस का ज्ञान हो सके:—

कर्तव्य का पहला विभाग

इस विभाग में, मनुष्य को अपने सम्बन्ध में क्या करना चाहिये, इस पर विचार करना होगा। उन्हीं का यहाँ संक्षिप्त विवरण दिया जाता है। (१) पहला कर्तव्य, अपनी

इन्द्रियों को बलवान् बनाना है। शारीरिक-बल प्राप्त करने की प्रत्येक को चिन्ता बनी रहती थी कि चार आश्रमों में से पहले आश्रम में विद्याध्ययन के सिवा ब्रह्मचर्य के द्वारा अपने को बलवान् बनाना मुख्य कर्तव्य था। इस देश की मातायें, यदि उनसे निर्बल सन्तान पैदा हो जाय तो वे उन्हें अपने लिए घातक समझती थीं। महाभारत में एक जगह आया है कि सात ऋषि जिनमें अरुन्धती नामवाली एक ऋषिका भी थी, यात्रा कर रहे थे। एक सरोवर से कमल के डंठल तोड़ कर उन्होंने एक जगह रक्खे परन्तु उन्हें वहाँ से कोई उठा ले गया। जब ले जाने वाला कोई दिखाई नहीं दिया फिर एक दूसरे पर सन्देह होने पर यह ठहरा कि प्रत्येक अपने को निर्दोष रखने के लिये कसम खाये उस मौका पर देवी अरुन्धती की कसम यह थी —

'अबोग्याऽबीर सूरस्तु बिसस्तैये करोति च" अर्थात् जो पाप माता को अनाचार करने और निर्बल सन्तान पैदा करने से लगता है, वही उसको लगे, जिसने इन डठलों को चुराया हो स्पष्ट है कि उस समय मातायें निर्बल सन्तान पैदा करने को अनाचार और चोरी जैसा घातक समझतीं थीं। इस लिए निर्बलता को घातक समझते हुए शारीरिकोन्नति प्रत्येक को करनी चाहिये।

दूसरा कर्तव्य

अपने को पवित्र बनाना है। पवित्रता से बल का दुरुपयोग नहीं हुआ करता। इन्द्रिय और मन में, पवित्रता का सञ्चार होने से मनुष्य सदाचारी बना करता है। पवित्रता के लिए मन का शुद्ध होना अनिवार्य है। मन, शुद्ध अन्न के सेवन और सत्य के क्रियात्मिक प्रयोग से शुद्ध हुआ करता है। छल और कपट से पैदा किया हुआ अन्न, मन को दूषित कर दिया करता है। संस्कृत में कहावत है— 'यथा अन्नं तथा मनः।"

तीसरा कर्तव्य

अपने को अच्छा बनाने के लिये मनुष्य का तीसरा कर्तव्य यह है कि वह अपने अन्दर श्रद्धा भाव पैदा करे।

श्रद्धा, यास्काचार्य के निर्वचनानुसार "श्रत् सत्यं दधाति या सा श्रद्धा" सचाई का धारण करना है। सचाई का ज्ञान और चीज़ है, सचाई का धारण करना दूसरी चीज़ है। सचाई का ज्ञान रखने से मनुष्य सचाई पर अमल करने के लिये बाधित नहीं होता परन्तु सचाई के धारण कर लेने अर्थात् स्वाद चखने के सदृश, उसके अनुभव कर लेने से, वह उस सचाई के विरुद्ध अर्चना न कर सकने के लिए मज़बूत हो जाता है।

कर्तव्य का दूसरा विभाग

मनुष्य को दूसरों के प्रति क्या करना चाहिये, इस सम्बन्ध में उसके कर्तव्य इस प्रकार है —

(१) अपने हृदय में उसे किसी के लिये भी, ईर्षा और द्वेष के भाव नहीं रखने चाहिएँ। इन भावों के रखने से किसी दूसरे को हानि हो या न हो, यह तो संदिग्ध है, किन्तु यह निश्चित है कि इससे उसका हृदय मलिन हो कर किन्हीं अच्छी बातों के सोचने और विचारने के योग्य नहीं रहता।

२) मनुष्य नास्तिक हुए बिना किसी दूसरे को तकलीफ नहीं दे सकता। ईश्वर व्यापकरूप से सभी मनुष्यों के 'शरीरों में व्याप्त" रहता है। जब प्रत्येक प्राणी के शरीर में मौजूद है तब उस का निरादर किये बिना कैसे उसके निवास-मन्दिर को कोई तोड़-फोड़ सकता है? यही निरादर तो नास्तिकता है।

(३) मनुष्य को दूसरों की भी उतनी ही चिन्ता करनी चाहिये जितनी कि वह अपनी करता है। उसे अच्छी तरह से यह बात समझ लेना चाहिये कि उसकी उन्नति का रहस्य अन्यों की उन्नति में छिपा हुआ है।

कर्तव्य का तीसरा विभाग

ईश्वर प्रेम और ईश्वर विश्वास से मनुष्य अपनी आत्मा को बलवान् बना सकता है। ईश्वर को जानने के लिए, अपने को पहले जान लेना आवश्यक है क्यों इस लिये कि ईश्वर ज्ञान प्राप्ति इन्द्रियों के द्वारा नहीं हुआ करती। इन्द्रियों की प्रवृत्ति अपने बाह्य विषयों की ओर है और इसलिए वे अपने बाह्य विषयों के सिवा अन्य कुछ नहीं देख सकते और इस लिये उन्हें बहिर मुखा कहा जाता है। इनके विपरीत आत्मा अन्तर्मुखी होने से अपने को भी देख सकता है और अपने भीतर मौजूद परमात्मा को भी देख सकता है। यदि वह अपने को नहीं देख (जान) सकता होता तो फिर परमात्मा को किस प्रकार देख सकता? इसलिए अपने को जान लेने की शिक्षा, विद्वान्, जगत् के प्रारम्भ से अब तक, बराबर देते चले आये हैं। "Know thy self" प्रसिद्ध कहावत है। विनोबा ने एक जगह लिखा है कि 'जिस व्यक्ति को अपना और अपनी भावनाओं का ज्ञान है, उसके लिए स्वीकार करना पड़ेगा, कि वह परमात्मा से प्रेम करता है।" जब हम कहते हैं कि परमात्मा का ज्ञान हमें है तो इसका केवल अभिप्राय इतना होता है कि हम उसे जानते हैं जो हमारे कल्याण के लिये आवश्यक है। उसे ठीक २ जान लेना मनुष्य की शक्ति से बाहर है। एक उर्दू के कवि ने लिखा है और बहुत अच्छा लिखा है.—

क्या तुरफ़ा है ख़ूबी मेरे महबूब की देखो।
दिल में तो वह आता है, समझ में नहीं आता ॥

हमें क्यों उसके जानने अथवा उससे प्रेम करने की ज़रूरत है ? इस प्रश्न के उत्तर में निम्न पंक्तियां विचारणीय है।

संसार में शान्ति, मनुष्यों में भ्रातृ भाव बिना लिहाज़ रंग, नस्ल और देश के समस्त देशवासियों को एक उत्कृष्ट सूत्र में बांधे रखने के कारण और एक मात्र कारण, वास्तविक आस्तिकता है। वेद में इस बात को असंदिग्ध शब्दों में कहा गया है कि इस पृथ्वी पर बसने वाले समस्त मनुष्यों का एक विशाल परिवार जिन में न कोई छोटा है न कोई बड़ा अपितु सब भाई हैं। उन सबका पिता ईश्वर और उन सब की माता पृथ्वी है। वेद प्रतिपादित इस सार्वत्रिक भ्रातृ भाव का अनुभव मनुष्य उसी समय कर सकता है जब पहिले ईश्वर के सार्वत्रिक पितृ-भाव का विश्वास हो जाय इसी विश्वास को पहिले जगाने की जरूरत है ईश्वर के प्रेम का प्रारम्भिक रूप वह होता है जब मनुष्य के हृदय में ईश्वर विश्वास का सूत्रपात हुआ करता है। यह विश्वास बढ़ते २ निश्चयात्मक ज्ञान का रूप धारण कर लेता है और तभी प्रेम का उत्कृष्ट रूप प्रादुर्भूत होता है उस में प्रेमी प्रियतम के रूप में मग्न होकर अपनी सुध बुध भुला देता है यही प्रेम की उत्कृष्ट अवस्था भक्ति है। भक्ति की अवस्था में भक्त केवल स्वयं ही शान्त और प्रसन्न बदन नहीं रहता अपितु अपने सम्पर्क में आने वाले प्राणी मात्र के आह्लाद का कारण बन जाता है। यह निश्चित है कि संसार के अधिकतर प्राणी ऐसे नहीं हो सकते परन्तु यदि ध्येय सब का यही होजाय तो जो कोई इस मार्ग में जितना भी चलेगा वह उतने ही सुख और शान्ति के साम्राज्य की वृद्धि का एक पुर्जे तक अवश्य कारण बनता जायगा। इसलिए आस्तिक भावना आज भी पुराने ढांचे की त्याज्य वस्तु नहीं, अपितु आती जागती, संसार के वर्तमान अशान्ति रूप रोग की एक मात्र चिकित्सा है। फलतः अशान्ति से पीड़ित सांसारी पुरुषों को चाहे वे यूरोप में निवास करते हो या एशिया मे खुशी और नाखुशी से इस चिकित्सा विधि का सेवन करना ही पड़ेगा। अस्तु यह बात कही जाचुकी है कि इस चिकित्सा विधि के सेवन रूप ईश्वर विश्वास से मनुष्य का आत्मा बलवान बना करता है। अब हम यहां यह बता देना चाहते हैं कि किस प्रकार आत्मा में शक्ति और बल आया करते हैं ? इसके मुख्यतया पांच साधन हैं —

पहिला साधन

आत्मा के प्रतिकूल कार्यों से बचना और आत्मानुकूल कार्यों का करना।

प्रतिकूल कार्यों से निर्बलता और अनुकूल कार्यों से आत्मा में सबलता आया करती है।

ईश्वर के दिव्य गुण, एक से लेकर अन्त तक प्राणी मात्र के कल्याण के लिए काम में आया करते है। इसलिए मनुष्य का कर्तव्य है कि यथा सम्भव, वह उनमें से जितने गुणों को भी अपने आत्मा में ला सके लाए। आत्मा के प्रतिकूल कार्य वही होते हैं, जिनसे अन्य को कष्ट पहुँचे ईश्वरीय गुणों के अनुसरण से वह ऐसे ही कार्य कर सकेगा जो आत्मानुकूल हैं और किसी को भी कष्ट देने वाले न हों गुणों को अपने अन्दर लाने का साधन जप है। इसलिए दैनिक जप में कुछ समय अवश्य प्रत्येक व्यक्ति को लगाने का यत्न करना चाहिए।

दूसरा साधन

आत्म निरीक्षण (Self Introspection) से मनुष्य के भीतर से वे सारे कार्य जो आत्मा के प्रतिकूल होते हैं दूर हुआ करते हैं। आत्म निरीक्षण का अभिप्राय यह है कि मनुष्य किसी एक समय दूसरों पर ध्यान न देकर केवल अपने कृत्यों पर विचार किया करें और उन कृत्यों में जो उसे मालूम हो कि दुष्कृत्य हैं उन्हीं को छोड़ने का निश्चय परमात्मा को साक्षी करते हुए कर लेना चाहिये और फिर उस निश्चय को बराबर स्मरण करते रहना चाहिए। सोते समय यह काम अधिक से अधिक उत्तम रीति से किया जा सकता है फलतः प्रति दिन उसी समय २० मिनट इस कार्य में लगाने चाहिए। इस का फल यह होगा कि अनेक दुर्गुण और कुकृत्य उससे छूटते रहेंगे। जप से जहां मनुष्य में अच्छे गुण आया करते हैं आत्म निरीक्षण से वहां उसके अन्दर से दुर्गुण निकला करते हैं।

तीसरा साधन

आत्मबल वृद्धि का तीसरा साधन तप है। तप कहते हैं कठोरता के सहन करने को। कठोरताओं को सहन करने से मनुष्य के भीतर साहस की वृद्धि होती है, जिस से उसे कोई कष्ट, कष्टित नहीं कर सकता। आराम तलब आदमी सदैव दुःख उठाया करते हैं परन्तु तपस्वी और अपनी ओर से प्रसन्नता के साथ साथ दुःखों को सहन करने वाले व्यक्ति सुख मय जीवन व्यतीत किया करते हैं। महाभारत में एक जगह द्रौपदी द्वारा सत्यभामा को शिक्षा देने की बात अङ्कित है। द्रौपदी ने उसे कहा कि "सुखं सुखे नेह न जातु लभ्यम्। दुःखेन साध्वी लभते सुखानि" दुःख और सुख के चक्र एक के बाद दूसरा मनुष्य के सामने क्रमशः आया करते हैं। यदि एक व्यक्ति अपनी ओर से दुःख के चक्र को तपस्या द्वारा अपने सामने ले आता है, तो निश्चित रीति से उस के बाद का चक्र सुख का होगा और मनुष्य तपस्वी जीवन रखते हुए, जब तक चाहे इस सुख के चक्र को अपने सामने रखता है। दुःखी मनुष्य निर्बलात्मा, और सुखी, सदैव सबलात्मा हुआ करता है।

चौथा साधन

स्वाध्याय चौथा साधन है। उत्तम ग्रन्थों के अध्ययन से मनुष्य के विचार विशाल हुआ करते हैं और तङ्ग दिली और सङ्कोच के सङ्कुचित क्षेत्र से वह बाहर होजाया करता है। सङ्कोच से आत्मा में ग्लानि और उदारता से आत्मा आह्लादित हुआ करता है। ऐसे ग्रन्थ जो मनुष्य की रुचि बिगाड़ने और उसमें कुवासना और कुरुचि पैदा करने वाले हैं, कभी नहीं पढ़ने चाहिए। उत्तम पुरुषों और महान व्यक्तियों के जीवन चरित्र और धार्मिक तथा आचारिक जीवन का दर्जा ऊँचा करने वाले ग्रन्थ ही स्वाध्याय के ग्रन्थ हो सकते हैं।

पाचवां साधन

उत्कृष्ट सेवा के भावों का मनुष्य के हृदय में उत्पन्न होजाना पांचवा साधन है। सेवा से मनुष्य का हृदय विशाल होता है और उसके भीतर निराभिमानता आती है। सेवा से केवल सेवक का ही उपकार नहीं होता किन्तु जिनका सेवा करते हैं, उसका भी भला हुआ करता है। मानलो तुम्हारे पड़ौस में एक व्यक्ति रहता है जिसमें चोरी करने की कुटेव आगई है, तो तुम किस प्रकार उसका सुधार कर सकते हो? यदि तुम उसे बार बार चोर कह कर लज्जित करना चाहते हो और चाहते हो कि इससे उसका सुधार हो जाय तो यह सम्भव नहीं तुम्हारे बार बार चिढ़ाने से खिज कर वह एक दिन कह देगा कि अच्छा मैं चोर हूँ। तुम जो कुछ करना चाहते हो करो। जब वह निर्लज्ज होगया अब उसे चोर कहे जाने की लज्जा बाकी नहीं रही। किसी भी पतित व्यक्ति का सुधार उसके अवगुणों को बार बार दुहरा कर चिढ़ाने से नहीं हुआ करता। सुधार का मार्ग दूसरा है। उसका अवलम्बन करने से ही सफलता हुआ करती है तुम किसी व्यक्ति में, जो अवगुण हैं उसका जिक्र भी न करो किन्तु यत्न करो कि उस के दुःख सुख और विशेष कर दुःख में सहायक बनो। ऐसा दो चार बार करने से वह तुम से इतना प्रभावित और तुम्हारा इतना कृतज्ञ होगा कि बिना तुम्हारे कहे, स्वयमेव अपने अवगुणों को छोड़ देगा।

मन-मन्दिर

(लेखक—श्री बाबू पूर्णचन्द जी एडवोकेट, आगरा)

[जनवरी अङ्क से आरम्भ]

(३)

मार्जन

हमने इस लेखमाला के द्वितीय लेख में इन्द्रिय स्पर्श वाले मन्त्र पर विचार करते हुये यह लिखा था कि भोग पदार्थ बहुतायत से तभी प्राप्त होंगे और उनका उपयोग में लाने की शक्ति उसी समय प्राप्त होगी जब हमारी इन्द्रियां बलयुक्त और स्वस्थ होंगी। इन्द्रियों के बलयुक्त होने के साथ उनका पवित्र होना भी आवश्यक है क्योंकि तृप्ति का प्रश्न इन्द्रियों की पवित्रता पर अवलम्बित है, जब तक हमारे अन्दर ऐसी मानसिक भावना न हो कि हम अपने भरसक प्रयत्न से जो भोग पदार्थ एकत्रित कर सकें उनको भोग लेने पर तृप्ति आ जावे और अधिक की लालसा न रहे उस समय तक हमारी इन्द्रियों का बलयुक्त होना और हमारे पास भोग पदार्थों की बहुतायत होना सुखदायक नहीं परन्तु दुःख का कारण होगा, इसलिये मार्जन की आवश्यकता है जिस प्रकार लकड़ी की बनी हुई चीजों को पौलिश की आवश्यकता है या बर्तनों को माजने की इसी प्रकार स्वस्थ और बलयुक्त इन्द्रियों के लिये पवित्र भावनाओं की आवश्यकता है। मार्जन मन्त्र इस प्रकार है:—

(१) ॐ भूः पुनातु शिरसि (२) ॐ भुवः पुनातु नेत्रयोः ।
(३) ॐ स्वः पुनातु कण्ठे (४) ॐ महः पुनातु हृदये ।
(५) ॐ जनः पुनातु नाभ्याम्, (६) ॐ तपः पुनातु पादयोः ।
(७) ॐ सत्यं पुनातु पुनः शिरसि, (८) ॐ खं ब्रह्म पुनातु सर्वत्र ।

सब इन्द्रियों के ठीक ठीक सञ्चालन के लिये बुद्धि की आवश्यकता है और निर्मल बुद्धि के लिये शिर की पवित्रता की आवश्यकता है। इस मन्त्र में या इन मन्त्रों में ईश्वर से प्रार्थना एक विशेष इन्द्रिय की पवित्रता के लिये की गई है और ईश्वर को विशेष नामों से या गुणों से सम्बोधित किया गया है शिर की पवित्रता के लिये भूः शब्द से ईश्वर को पुकारा गया है। मनुष्य और पशु में केवल शुद्ध बुद्धि का ही भेद है निर्बुद्धि या विक्षिप्त मनुष्य पशुओं से भी अधिक भयानक है। यदि मनुष्य रूपी पशु एक स्थान में जमा देखने हों तो किसी पागलखाने का निरीक्षण करना चाहिये। भूः शब्द सत्ता या स्वत्व का

द्योतक है। मनुष्य का मनुष्य पन बुद्धि के शुद्ध होने पर ही है। इसलिये शिर की पवित्रता के लिए परमात्मा को भू शब्द से पुकारा गया है इसी प्रकार शरीर में आँखें ज्ञान प्राप्ति के लिए हैं और चेतन्यता का विशेष चिह्न हैं इसलिए परमात्मा को भुव कह कर अर्थात् चैतन्य कह कर आँखों की पवित्रता के लिए भुव शब्द से प्रार्थना की गई है—कण्ठ खाने के लिए और बोलने के लिए तो है हा परन्तु विशेषकर हसने के लिए है और आनन्द के भाव प्रकट करने के लिए है। इसलिए कण्ठ की पवित्रता के लिए परमात्मा को स्वः शब्द स याद किया गया दुनियाँ में परमात्मा सब से महान है हृदय को महान होने की आवश्यकता है जिनके दिल छोटे हैं वह करोड़पती और चक्रवर्ती राजा होते हुए भी दूसरों का उपकार नहीं कर सकते, दिल छोटे होने से बड़े से बड़ा आदमी तुच्छ हो जाता है इसलिए महान परमात्मा से हृदय की महानता के लिए याचना की गई है, परमात्मा जनक हैं और सृष्टि के रचियता है और हमारे शरीर में नाभि प्रदेश सन्तान उत्पत्ति और सृष्टि क्रम को जारी रखने से सम्बन्धित है इसलिए नाभि की पवित्रता ईश्वर को जनक के रूप में मनन करने से हो सकती है, परमात्मा बड़ सहनशील हैं जो उनकी रात दिन उपासना करते हैं और उनकी सत्ता से भी मुनकिर हैं दोनो पर उनकी कृपा एक समान है शरीर में पैर सहनशीलता के लिए हैं और तमाम शरीर की सेवा के लिए हैं पैरों की पवित्रता के लिए परमात्मा को तपः शब्द से स्मरण करने की आवश्यकता है। सब इन्द्रियों के पवित्रता के लिए शिर के या बुद्धि के पवित्र होने की आवश्यकता है और इसलिए बुद्धि की पवित्रता के लिए फिर एक बार परमात्मा को सत्य के रूप में ध्यान करके पुन याचना की गई है एक परमात्मा सत्य अर्थात् सदा एक रस रहने वाला है बुद्धि के लिए भी सदा सुरक्षित रहने की आवश्यकता है हमारे अकेले पवित्र रहने से हमारी पवित्रता सदैव सुरक्षित नहीं रह सकती—इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे आस पास का वातावरण और हमारे रहने का संसार पवित्र होना आवश्यक है। शराबखाने में बैठकर सध्या सफल नहीं हो सकती और न छल और कपट करने वालों के साथ में बैठकर ईमानदारी स्थिर रखना असम्भव नहीं तो महान् कठिन है इसलिये परमात्मा से उसके सत्य ब्रह्म स्वरूप को लक्ष्य में रख कर सर्वत्र अर्थात् हर स्थान और हर आदमी की पवित्रता के लिए प्रार्थना की गई है

मार्जन प्रक्रिया पर विचार करते हुए दो शब्द पवित्रता और अपवित्रता के सम्बन्ध में भी लिखने आवश्यक हैं जो वस्तु जिस काम के लिए है जब तक वह उसका रहे तभी तक वह पवित्र है जब उस काम का नहीं रहे तो अपवित्र हो जाती है हमारा शरीर जीवात्मा के निवास के लिए है जब इसमे से आत्मा निकल जाता है तो यह मृतक अर्थात्

अपवित्र हो जाता है और इसको छूने वाला भी अपवित्र होजाता है। हमें मनुष्य शरीर किसी विशेष प्रयोजन की सिद्धि के लिए मिला है और हमारी इन्द्रियाँ उस सिद्धि के लिए साधक हैं जब तक हमारी आंख और अन्य इन्द्रियाँ हमारे जीवन के लक्ष्य की पूर्ति में सहायक होंगी वह उसी तक पवित्र रहेंगी जहां लक्ष्य से विपरीत इनका कार्य हुआ वहां ही इन में अपवित्रता आई मार्जन की विधि के समय हमको पवित्रता के उपरोक्त लक्षण और अभिप्राय को ध्यान में रखना चाहिए। इन्द्रियां आत्मा को परमात्मा की शरण में लेजाने के लिए साधन या वाहन हैं यदि इनके सहारे परमपिता परमात्मा की याद आवे और बनी रहे तो ये पवित्र होंगी। यदि यह इसके विपरीत जीवात्मा को प्रकृति प्रलोभन में फंसा देंगी तो यह अपवित्र होजायगी इन्द्रियों का बल युक्त होना और पवित्र होना दोनों ही आवश्यक हैं। किसी उर्दू कवि ने ठीक कहा है

आंख वाला तेरे जलवे का तमाशा देखे।
दीदये कोर को क्या आवे नज़र क्या देखे॥

अर्थात अन्धा कुछ नहीं देख सकता आंख वाला ही देख सकता है परन्तु वही आंख वाला है जो वसन्त ऋतु में सुन्दर पुष्प और लताओं को देख कर नई २ कोंपलों को देख कर परमप्रसन्न और मग्न परमात्मा के दर्शन करे नहीं तो अपवित्र आंखों वाला अन्धों से बदतर है।

आंखों द्वारा काम चेष्टा

(Lusting with the eye)

एक जिज्ञासु की जिज्ञासा और महात्मा गाँधी का समाधान

प्रश्न—'मैं एक निर्धन व्यक्ति हूँ और एक मिल में कार्य करता हूं। मैं बड़ा परेशानी में व्यस्त हूँ। जब कभी मैं बाहर जाता हूँ तो किसी सुन्दर स्त्री को देखकर मेरा मन वश में नहीं रहता। कभी कभी मुझे भय होता है कि कहीं मैं कुचेष्टा न कर बैठूँ। एक बार मैंने आत्म हत्या का भी विचार किया था। परन्तु मेरी धर्म पत्नी ने मेरी रक्षा करली थी। उसने मुझे कहा था कि जब कभी मैं बाहर जाया करूँ तो उसे साथ ले जाया करूँ। यह उपाय काम में लाया गया परन्तु सदैव यह सम्भव नहीं है। निराश और दुखी होकर कभी कभी यह विचार हो जाता है कि इन अपराधिनी आंखों को फोड़ डालूँ परन्तु पत्नी का खयाल मुझे इस कार्य से रोक देता है। आप धर्मात्मा हैं। क्या कोई उपाय नहीं बता सकते ?'

उत्तर—'तुम सच्चे और स्पष्टवादी हो। तुम्हें जानना चाहिए कि तुम्हारी जैसी अवस्था में बहुत से व्यक्ति ग्रस्त हैं। आंख द्वारा काम चेष्टा एक आम रोग है और वृद्धि पर है। इस रोग ने एक प्रकार की भद्रता का रूप ग्रहण कर लिया है। परन्तु यह तुम्हें सन्तोष की वस्तु नहीं होनी चाहिए। तुम्हारे पास वीर पत्नी मौजूद है। उसके प्रति झूठा बनने का तुममें साहस नहीं है। परस्त्री पर कुदृष्टि डालना विश्वासघात की पराकाष्ठा होती है। यह तो विवाह को मज़ाक वा खेल बना डालती है। तुम्हें दृढ़ता पूर्वक इस शत्रु से लोहा लेना चाहिये। इस भाव को अपने हृदय में प्रतिष्ठित करो कि अन्य समस्त स्त्रियाँ तुम्हारी सहोदरा हैं। अश्लील साहित्य, सिनेमा तथा उन चित्रों का पढ़ना और देखना छोड़ दो जो प्रेम को कलुषित करते हैं। जब चलो तो पृथ्वी की ओर दृष्टि रखो और ऐसा करते हुए अपने हृदय में परमात्मा से प्रार्थना करो कि वह तुम्हारे हृदय को पवित्र बनाएँ और यह विश्वास रक्खो कि वह प्रभु तुम्हें इस अभिशाप से मुक्त कर देंगे। यदि आवश्यकता समझो तो धुंधले शीशे का चश्मा लगाओ। उनमें तुम्हें उच्च कोटि की बाह्य सहायता का अनुभव होगा। दुख देने वाले विस्तार और घनी आबादी से परिपूर्ण नगरों में वस्तुत कोई वस्तु ऐसी नहीं होती जिसमें हम आनन्द अनुभव कर सकें। वहां तो प्रति दिन एक जैसा गुल-

गुफाका सुख पड़ता है और एक जैसी मूर्तियों के दर्शन होते रहते हैं। यदि हम अकर्मण्यता की प्रबल शक्ति के शिकार न हुए होते तो एक रस रहने वाले विकराल चमत्कार की पुनरावृत्ति से तंग आ गये होते। दिन के समय अपने काम में व्यस्त रहो और रात्रि को साधारण यान्त्रिक सहायता से नक्षत्र दर्शन का अभ्यास करो। ऐसा करने से तुम्हारे नेत्रों के सम्मुख वह दृश्य उपस्थित होगा जिसे संसार का कोई सिनेमा प्रस्तुत नहीं कर सकता और एक न एक दिन तुम नक्षत्रों के प्रतिबिम्ब में से परमात्मा को झांकते हुए देखोगे यदि तुम रात्रि के उस दिव्य दृश्य के साथ अपने मन की वीणा के तार लगा दोगे तो कोमल और मधुर संगीत सुनोगे प्रतिदिन रात को इसका अभ्यास करो और तुम्हारे नेत्र ठीक प्रकार काम करेंगे और तुम्हारा हृदय स्वस्थ और पवित्र बनेगा परमात्मा तुम्हारा कल्याण करें।

सत्यार्थ प्रकाश लेख-माला -

ऋतु समय गमन में निषेध

(ले०—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी)

—※※—

सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि जी ने ऋतु गमन के विषय में द्वितीय समुल्लास के आरम्भ में निम्न पाठ लिखा है।

'जैसा ऋतु गमन की विधि अर्थात् रजोदर्शन के पाँचवें दिवस से लेके सोलहवें दिवस तक ऋतुदान देने का समय है, उन दिनों में से प्रथम के चार दिन त्याज्य हैं।" इससे सिद्ध है कि ऋतु समय के चार दिन स्त्री सम्बन्ध में सर्वथा त्याज्य हैं।

मनुस्मृति में इस विषय में यह श्लोक है।

ऋतु स्वाभाविक स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृता।

चतुर्भिरितरैः सार्धमहोभिः सद्विगर्हितैः ॥ मनु० अध्याय ३ श्लोक ४६ ॥

भावार्थ – स्त्रियों के ऋतु गमन का समय १६ दिन हैं उनमें से ४ दिन जो रजोदर्शन के दिन हैं वह निन्दनीय हैं।

महाभारत में यह विषय ३ स्थानों पर आता है। प्रथम तो शान्ति पर्व में जहाँ ब्रह्म हत्या का विभाग किया गया है। भूमि वनस्पति स्त्री को ब्रह्म हत्या दी गई है। स्त्री ने जब इस विषय में प्रश्न किया है तब वहाँ लिखा गया है आप मन से दुःख को दूर कर दें। क्योंकि—

(१) रजस्वलासु नारीषु यो वै मैथुनमाचरेत्।

तमेषा यास्यति क्षिप्रं व्येतु वो मानसो ज्वरः ॥ म० भा० शा० पर्व अ० २८२।४६ ॥

भावार्थ—जो पुरुष रजस्वला स्त्री से मैथुन करेगा उसे ब्रह्महत्या का पाप लगेगा आप इस चिन्ता को छोड़ दें।

(२) न दिवा मैथुनं गच्छेन्न च कन्यां न च बन्धकीम्।

न चास्नातां स्त्रियं गच्छेत्तथायुर्विन्दते महत् ॥

महाभारत अनुशासन पर्व अध्याय १०४ । १०८

भावार्थ—दिन में, कन्या के साथ, बन्धकी के साथ और रजोदर्शन के समय में जो मैथुन न करे वह दीर्घायु को प्राप्त करता है।

यह अनुशासन पर्व में भीष्म जी ने धर्म विषयक आयु को बढ़ाने के काम बतलाते समय उपदेश दिया है।

(३) तीसरा उस समय का है जब श्रीकृष्ण जी का यादवों सहित नाश हो गया अर्जुन उनकी अन्तिम क्रिया करके द्वारका से इन्द्रप्रस्थ को लौटा तो पचनद वर्तमान भावलपुर के इलाके में उस पर वहाँ के निवासियों ने आक्रमण करके उससे धनादि छीन लिया और अर्जुन पराजित होकर आगे बढ़ा कुरुक्षेत्र भूमि में वह व्यास जी से मिला। व्यास जी को जब नमस्कार की तो उन्होंने उदास देखकर यह प्रश्न किये हैं।

नख केश दशाकुम्भ वारिणा किं समुक्षित ।

आवार जानु गमन ब्रह्मणो वा हतस्त्वया ॥

युद्धे पराजितो वाऽसि गत श्रीरिव लक्ष्यते।

न त्वा प्रभिन्न जानामि किमिदं भरतर्षभ ॥ महाभारत मौसल पर्व अ० ८०१ ६ ॥

भावार्थ—नख, केश दशा कुम्भ के जल से स्नान किया है, रजोदर्शनकाल में जो गमन किया है अथवा ब्रह्महत्या की है या युद्ध मे पराजित हुआ है क्योंकि आप श्री रहित दिखाई देते है। हे अर्जुन तुझे क्या हो गया जो प्रसन्न नही हो।

इसमें अन्य कुकृत्यो में रजोदर्शन काल में की सगम का भी उल्लेख है। महाभारत में जहाँ तक मुझे ज्ञात है इन तीन स्थानो में रजस्वला गमन का निषेध साफ २ है।

महाभारत इतिहास है मनुस्मृति धर्म प्रतिपादक ग्रन्थ है अब एक प्रमाण चिकित्सा का भी लिखना उचित प्रतीत होता है। अत सुश्रुत में यह श्लोक है।

तत्र प्रथमे दिवसे ऋतुमत्या मैथुन गमनादनायुष्य पुसा भवति ।

द्वितीयोऽप्येवम् तृतीयोऽप्येवम्

चतुर्थेतु सपूर्णाङ्गो दीर्घायुश्च भवति ।

न च प्रवर्तमाने रक्ते बीज प्रविष्ट गुणकरं भवति यथा नद्या प्रतिस्रोत प्लावि द्रव्य प्रक्षिप्तं प्रतिनिवर्तते नोर्ध्वं गच्छति तद्वदेव द्रष्टव्यम् तस्मान्नियमवती त्रिरात्र परिहरेत् ।

सुश्रुत शरीर स्थान अध्याय २ । ३१

भावार्थ रजोदर्शन के प्रथम दिवस मैथुन करने से पुरुष की आयु क्षीण होती है। इसी प्रकार दूसरे तीसरे दिन चतुर्थ दिन मे ऋतु स्नान के पश्चात् गर्भाधान से संतान पूर्णाङ्ग दीर्घायु होती है। वेद में यह मन्त्र आता है।

अश्रीरा तनुर्भवति रुशती पापयामुया ।

पतिर्यद्वध्वो वाससा स्वमङ्गमभिधित्सते ॥ ऋ० १०, ८५, ३०

अश्लीला तनुर्भवति रुशति पापयामुया ।

पतिर्यद्वध्वो वाससा स्वमङ्गमभ्यूर्णुते । अ० १४ १, २७

भावार्थ—जब पति वधु वस्त्र से अपने अङ्ग को ढापे तो उसका अच्छा शरीर इस पाप कर्म से अश्लील हो जाता है।

ऋग्वेद अश्रीरा' और अथर्ववेद में अश्लीला' पाठ है दोनों का अर्थ सम ही है। इसी के अन्त में ऋग्वेद में 'अभिधित्सते' और अथर्ववेद मे अभिऊर्णुते' पाठ हैं।

दोनो में पति जब वधु के वस्त्र से (पतिर्यद्वध्वो वाससा) पाठ हैं अर्थात् पति वधु के वस्त्र से अपने अङ्ग को ढापे तो उसका शरीर अश्लील हो जाता है। इसमे चिन्तनीय यह है वधु शब्द स्त्री का उपलक्षण है वा वधु स्वकीया स्त्री का नाम है। वस्त्र पट का शक्तिवृत्ति से वाचक है अथवा लक्षणा वृत्ति से किसी अन्य अर्थ का द्योतक है।

यदि वधु के अर्थ स्त्री मान लें तो यह निश्चय करना होगा स्त्रीवत् वस्त्रो का निषेध है वा स्त्री के शरीर पर धारण किये हुए वस्त्र के पहनने का निषेध है। यदि प्रथम पक्ष मान लें तो आजकल और पूर्वकाल में भी स्त्रियो के वस्त्र पहनने वाले अनेक व्यक्ति हैं। यथा थियेटर, स्वांगादि में पहनते हैं, उनके शरीर अश्लील नहीं होते यदि पहने हुए वस्त्र स्वीकार किये जाय तो बहुत स्त्री पुरुषों के वस्त्र सम ही वहां ऐसे भी पहने जाते हैं। उनके शरीर भी श्री रहित नहीं होते हैं, जब यह अनुभव सिद्ध बात है तब इस मन्त्र में 'वाससा' शब्द को लाक्षणिक मानना ही ठीक है। लक्षणा से इसके अर्थ रजस्वला होते हैं जैसे कि पूर्व मीमांसा में मलवद्वास प्रकरण है। मलवद्वासा एक योग रूढ़ि से रजस्वला का वाचक है इसी कारण वेद ने वध्वोवास शब्द दिया है क्योंकि वेद स्मृति सदाचार से मैथुन स्वकीया स्त्री अर्थात् विवाहिता स्त्री से ही विहित है परकीया तथा सामान्तर निषिद्ध है इस प्रकार इस मन्त्रका अर्थ यह होगा। जब पति रजस्वला पत्नी से मैथुन करता है तो इस पाप से उसका शरीर श्री रहित (अश्रीरा अश्लीला) हो जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश की पुष्टि स्मृति, इतिहास वेद करते हैं। अत महर्षि का लेख सर्वथा माननीय है।

साहित्य समीक्षा तथा प्राप्ति स्वीकार

प्राप्ति स्वीकार

(१) जेल कहानी—लेखक-ला० खुशहालचन्द जी खुर्सन्द । प्रकाशक श्री ओमप्रकाश सूरा मिलाप पुस्तकालय, लाहौर मूल्य १) एक रुपया

(२) कर्तव्य दर्पण—लेखक-महात्मा नारायण स्वामी जी । प्रकाशक-गोविन्दराम हासानन्द आर्य साहित्य भवन, नई सड़क देहली मूल्य ।=) पांच आने

(३) वेदान्त विज्ञान—लेखक श्री पण्डित गोपाल जी B. A । प्रकाशक-प्राच्य साहित्य सेवा मण्डल १२ हनुमान रोड नई देहली । तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ दिल्ली । मूल्य सजिल्द १।) एक रुपया चार आने सदस्यों के लिये १) एक रुपया

(४) निज़ाम जेल की कष्ट कहानी—लेखक श्री सदानन्द परिव्राजक, "विद्रोही" प्रकाशक-परिव्राजक कुटीर स्वतन्त्रानन्द पुस्तकालय, गुरु बाज़ार अमृतसर पञ्जाब । मूल्य ।=) पांच आना

(५) प्यारा ऋषि—लेखक ला० खुशहाल चन्द जी खुर्सन्द प्रकाशक-केशोराम, अधिष्ठाता महात्मा हंसराज साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर । मूल्य ।) चार आने

(६) प्रवासी की कहानी—प्रकाशक-कामता प्रसाद वर्मा बाल साहित्य प्रकाशक समिति १७१ ए हरिसन रोड, कलकत्ता । मूल्य २॥) ढाई रुपये विदेश में ४ शिलिङ्ग ६ पेंस ।

(७) काया कल्प—लेखक श्री प० बुद्धदेव विद्यालङ्कार । प्रकाशक-प० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार गुरुदत्त भवन लाहौर मूल्य १) एक रुपया

(८) गीता परिशीलन—लेखक विद्या भास्कर पं० रामावतार शास्त्री । प्रकाशक-श्री मोती लाल माणकचन्द उर्फ़ प्रताप सेठ 'तत्वज्ञान मन्दिर' अमलनेर पूर्व खान्देश) । मूल्य ३॥) तीन रुपये आठ आने

साहित्य समीक्षा

प्रभु भक्ति—

लेखक—श्री ला० खुशहाल चन्द 'खुर्सन्द'

प्रकाशक—श्री केशव राम अधिष्ठाता महात्मा हंसराज साहित्य विभाग आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पञ्जाब, लाहौर।

मूल्य ॥), राज संस्करण १॥)

श्री ला० खुशहाल चन्द जी ने हैदराबाद सत्याग्रह के समय गुलबर्गा (हैदराबाद स्टेट) सेण्ट्रल जेल में तीन पुस्तकें लिखीं थीं प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। पुस्तक 'राम कहानी', निवेदन 'असार संसार', 'प्रभु भक्ति', 'भगवान का मन्दिर', 'प्रभु भक्ति की विधि', 'मन को बात' 'मन की निर्बलता' 'उसके अपात्र' 'उसके पात्र' भक्त की पुकार', 'श्री आर्ति और भक्ति', 'प्रतीक्षा काल' भक्तों के लिए उपयोगी बातें' और भक्तों के भजन' १९ शीर्षकों में विभक्त है। 'प्रभु भक्ति' का वास्तविक अभिप्राय और रीति क्या है, इसका उपर्युक्त शीर्षकों में सम्यक्तया बयान किया गया है। पूज्य नारायण स्वामी जी की प्रस्तावना ने पुस्तक के गौरव और उपयोगिता को बढ़ा दिया है आर्य समाज के साहित्य में इस प्रकार के साहित्य की कमी है। प्रस्तुत पुस्तक वस्तुतः उस कमी की पूर्ति में उत्तम योग है। पुस्तक में कहीं २ वास्तविक सचाई की अशुद्धि भी होगई है। उदाहरणार्थ पृष्ठ १० पर क्वेटे के भूकम्प की तिथि २१ जुलाई लिखी गई है। वास्तव में जहां तक हमें स्मरण है यह तिथि ३१ मई थी। पुस्तक का आकार प्रकार छपाई इत्यादि बढ़िया है।

I and my God —

By—Pandit Ganga Prasad ji Upadhyaya M. A.

Published by—Arya Samaj Chowk Allahabad U. P.

Pages [illegible] Price Paper bound As 6

Cloth bound Rs One

श्री पं० गङ्गाप्रसाद जी एम ए आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् लेखक हैं। आप 'आस्तिकवाद' 'अद्वैतवाद' जीवात्मा आदि सर्वोत्तम ग्रन्थ रत्नों के कारण हिन्दी भाषा भाषियों में विशेष प्रसिद्धि पा चुके हैं। अंग्रेज़ी में भी आपके छोटे २ ट्रैक्टों से आर्य सिद्धान्तों को लोक प्रिय बनाने में बड़ी सहायता मिली है। यह बड़े हर्ष की बात है कि अब गत वर्ष से उनकी प्रधान सम्पादकता में Religious Renaissance Series

से धार्मिक आवृत्ति माला के नाम से अंग्रेज़ी में लगभग १२०, १६० पृष्ठों की बड़ी उत्तम पुस्तकें प्रकाशित हो रही हैं। इस माला में ३ ग्रन्थ अभी तक प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम Religion and Reason (धर्म और तर्क) द्वितीय 'Swami Dayanand's contribution to Hindu Solidarity' (हिन्दू सङ्गठन विषयक स्वामी दयानन्द की देन) और तृतीय 'I and my God" (मैं और मेरा परमात्मा) है। इस तृतीय ग्रन्थ की सक्षेप से यहां समीक्षा की जाती है जो हाल ही में प्रकाशित हुआ है। राम कृष्ण मिशन, थियासोफिकल सोसाइटी रामतीर्थ लीग तथा अन्य अनेक सस्थाओं द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों में विज्ञानादि के नाम पर अद्वैतवाद का सर्वत्र (विशेषत दक्षिण भारत में) काफी प्रचार हो रहा है इसलिए मैंने गत जनवरी सन् ३३ में श्री गङ्गा उपाध्याय जी से निवेदन किया था कि इस विषयक एक उत्तम पुस्तक का अंग्रेजी में लिखा जाना आवश्यक है जो अद्वैत का निराकरण शास्त्रीय तथा तर्क दृष्टि से करने वाली हो। प्रस्तुत पुस्तक उसी निवेदन का फल है जिस के लिए मुझे विश्वास है कि प्रत्येक निष्पक्ष विचार शील पाठक मेरे साथ सुयोग्य लेखक महानुभाव को बधाई तथा धन्यवाद देगा। पुस्तक का विभाग ०१ अध्यायों में किया गया है जिन में क्रमश निम्न विषयों का विचार है।

(१) प्रथम अध्याय में "I am" (मैं हूँ) यह शीर्षक देकर जीवात्मा के अस्तित्व पर प्रकाश डाला है

(२ द्वितीय अध्याय में 'That thou Art" अथवा सुप्रसिद्ध उपनिषद्वाक्य 'तत्वमसि" की जिसे अद्वैतवाद का प्रबल स्तम्भ समझा जाता है प्रकरण सहित विवेचना की गई है।

(३) तृतीय अध्याय में 'The inference' इस शीर्षक से उपर्युक्त विवेचना का उपसंहार करते हुए सिद्ध किया है कि उपर्युक्त वाक्य में जीवात्मतत्त्व का प्रतिपादन है न कि ब्रह्म का अतः यह अद्वैत समर्थक नहीं।

(४) चतुर्थ अध्याय में Lower selves and Highest self इस शीर्षक से अनेक आत्माओं के परमात्मा के साथ सम्बन्ध का कुछ विवेचन है।

(५) पञ्चम में जीवात्मा की नित्यता का प्रतिपादन है।

(६) षष्ठ में क्या जीवात्मा परमात्मा के अंश माने जासकते हैं इस विषय की तार्किक विवेचना बड़ी उत्तमता से की गई है।

(७) सप्तम अध्याय में "मायावाद" पर विचार बड़ी उत्तम रीति से करते हुए उसकी असारता को सिद्ध किया गया है।

(८) अष्टम अध्याय में श्री रामानुजाचार्य के श्री शङ्कर सम्मत अद्वैतवाद के निराकरण का निर्देश समालोचना पूर्वक किया गया है।

(९) नवम अध्याय में ऋषि दयानन्द के अद्वैतवाद के निराकरणार्थ दिए गए तर्क तथा द्वैत समर्थक सिद्धांत का प्रतिपादन है।

(१०) दशम अध्याय में "On Relationship and Plurality" इस शीर्षक में सम्बन्धवाद और अनेकता पर प्रकाश डाला गया है।

(११) ग्यारहवें अध्याय मे वेद की दृष्टि से द्वैतवाद का समर्थन करते हुए अद्वैतवाद का समर्थक समझे जाने वाले नासदीय सूक्तादि के मन्त्रों पर विचार करते हुए सिद्ध किया गया है कि वे वस्तुत अद्वैत समर्थक नहीं।

(१२) बारहवें अध्याय में श्री स्वामी विवेकानन्द, श्री स्वामी रामतीर्थ आदि के ग्रन्थों से अद्वैतवाद समर्थक कुछ वाक्यों का A few fascinating Fallacies (कुछ आकर्षक भ्रम) इस शीर्षक से उल्लेख करके उन पर टिप्पणी चढ़ाई गई है।

(१३) तेरहवें अध्याय में "My God" (मेरा परमात्मा) इस शीर्षक से परमात्मा के साथ जीवात्मा के सम्बन्ध का प्रतिपादन किया गया है।

इस विषय में सूची से पाठक समझ सकेंगे कि सुयोग्य लेखक ने किस प्रकार विषय के सब दृष्टियों से उत्तम विवेचन का प्रयत्न किया है। उनकी विवेचन शैली ऐसी आकर्षक है कि इस नीरस विषय को भी उन्होंने पर्याप्त सरस और सुगमता से समझने योग्य बना दिया है। दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध द्वैतवादी विचारक श्री माधवाचार्य का सारे ग्रन्थ में कहीं उल्लेख तक न होना एक बड़ी त्रुटि है जिसको आशा है अगले संस्करण में दूर कर दिया जायगा। अद्वैतवाद का वेदादि शास्त्र तथा तर्क की दृष्टि से श्री माधवाचार्य ने अपने ग्रन्थों में अच्छा निराकरण किया है अत उनके सिद्धांतों का आवश्यकतानुसार समालोचना सहित संक्षिप्त निर्देश ऐसे ग्रन्थ में उचित था। 'A few Fascinating Fallacies' शीर्षक १२ अध्याय कुछ जल्दी में लिखा गया प्रतीत होता है। स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ जैसे प्रसिद्ध महानुभावों के वाक्यों को उद्धृत करके कई जगह केवल "Comments are needless Let the reader analyse the analogy for himself (P 153) "A charming analogy ! But does it stand examination ? (P 154)" We commend the portion in italics to the criticism of the veda" (P 154) ऐसी टिप्पणी मेरे विचार में अपर्याप्त है। साधारण पाठक उन वाक्यों में निर्दिष्ट युक्ति की अशुद्धि को स्वयं सुगमता

से न समझ सकेंगे ऐसा मुझे प्रतीत होता है अत अन्य भागों की तरह उपर्युक्त वाक्यों के कुछ विस्तृत विवेचन की आवश्यकता है जिससे सर्वसाधारण पाठक वहां दी गई युक्ति की अशुद्धि वा भ्रान्ति को समझ सकें।

संस्कृत उद्धरणो में छापे की कई अशुद्धियां रह गई हैं उदाहरणार्थ पृष्ठ ४८ पर तस्मादसत सदजायत' के स्थान पर सदजायत (पृष्ठ ८१) 'शशविषाणादीनाम्' के स्थान पर शशविषाणादिनाम् पृष्ठ ७६ 'अपि च स्मृतिरेषा यत् स्वप्न दर्शनम्' के स्थान पर स्मितिरेषा। इत्यादि। आशा है इनको अगले संस्करण में ठीक कर दिया जायगा।

इस अत्युत्तम ग्रन्थ रत्न के लिए मैं सुयोग्य लेखक महोदय को पुन. हार्दिक धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूँ कि आजकल के शिक्षित लोगों में इसका खूब अच्छी तरह से प्रचार किया जाएगा। इसी प्रचार दृष्टि से १४८ पृष्ठ की पुस्तक का दाम केवल ६ आ ॥ रक्खा गया है जो बहुत ही थोड़ा है।

धर्मदेव विद्यावाचस्पति

समाज के शिकार–

लेखक—श्री रमेशचन्द्र आर्य, वीर अर्जुन' देहली।

समाज के शिकार' नामक छोटी सी पुस्तिका मैंने बड़े चाव से सुनी। इसके नवयुवक लेखक प० रमेशचन्द्र आर्य ने अपने अदम्य उत्साह और पुरुषार्थ को पुस्तक का भाषा और शैली मे दर्शाया है। इस पुस्तिका में बहुत से ऐसे व्यक्तियों की जीवन गाथा का संक्षिप्त विवरण है जो समाज के शिकार बनकर, समाज के संघर्षण में आकर अपना वीरता और साहस का परिचय देकर ऊंचे उठे है। इसके पाठ से नवयुवकों और नवयुवतियों के हृदय में स्फूर्ति और प्रेरणा उत्पन्न होगी ऐसा मेरा विचार है वस्तुत समाज द्वारा उपस्थित की गई कठिनाइयो को झेलकर जो व्यक्ति आगे बढ़ते हैं वे ही अपना तथा समाज का गौरव स्थापित करते हैं।

पुस्तक का शीर्षक 'समाज के शिकार', मुझे अखरता है। वे लोग जिन्होंने समाजकी रूढ़ियों, कुरीतियों और कुप्रथाओं का डटकर मुकाबिला किया वे वस्तुत समाज के शिकार नहीं बने बल्कि समाज के विजेता बने। आज उनको सभ्य संसार आदर, मान तथा प्रेम की दृष्टि से देखता है।

आर्य कुमार-जगत्

"कुमारों के कर्त्तव्य"

(लेखक—श्री पण्डित देवव्रत जी धर्मेन्दु देहली)

—***—

किसी भी देश और जाति के उत्थान तथा गौरव प्राप्ति के लिए उसके "कुमार" ही कार्य कर सकते हैं। कुमारों में अथाह शक्ति, असीम उत्साह और महान् साहस होता है। कुमारों में नया रक्त, नया जीवन और नयी स्फूर्ति विकसित होती है। यही वे गुण हैं, जिनसे देश और समाज की उन्नति होती है।

कुमार अवस्था को प्राप्त होते ही बालक कुछ गम्भीर हो जाते हैं और वे अपने उत्तरदायित्व को भली भाँति समझने लगते हैं। यदि उन्हें इसी अवस्था में ही उनके कर्तव्यों और अधिकारों का ज्ञान करा दिया जावे तो वे अपने भले बुरे, हानि लाभ का विचार कर अपना, अपने देश और अपनी जाति का कुछ हित कर सकते हैं और वे संसार में पदार्पण कर पथ-भ्रष्ट नहीं होते हैं। इसी भावना से प्रेरित होकर अपने कुमारों के कर्तव्यों के सम्बन्ध में निम्न लिखित कुछ पंक्तियाँ लिखी जाती हैं। कुमारों को इन्हें बड़े ध्यान से पढ़ना चाहिए और इन कर्तव्यों को सदा अपने सामने रख कर इन्हें पूरा करने के लिये सर्व भावेन प्रयत्न शील रहना चाहिए। ताकि उनका आगामी जीवन उत्तम तथा आदर्श जीवन बन सके।

(१) कुमारों को अपने जीवन का "आदर्श" ऊँचा रखना चाहिए और उसे अभी निश्चित कर साधनानुकूल उस की प्राप्ति के लिए बड़े साहस और उत्साह से उद्यत रहना चाहिए।

(२) कुमारों को अपने धर्म और ईश्वर में श्रद्धा, प्रेम तथा विश्वास के भाव सदा बनाये रखने चाहिए और ईश्वराराधना के लिये नियमित रूप से प्रति दिन दोनों समय सन्ध्या, प्रार्थना और भजनादि विचार पूर्वक करते हुए ईश्वरीय गुणों को अपने जीवन में धारण करना चाहिए।

(३) कुमारो को अपने देश, अपनी जाति, अपनी भाषा अपनी सभ्यता, शिष्टाचार और संस्कृति का सदा सम्मान करना चाहिए और उनकी रक्षा तथा सेवा के लिये प्राणपण से उद्यत रहना चाहिए।

(४) कुमारो को ब्रह्मचर्य व्रत का पूर्णतया मनसा, वाचा और कर्मणा पालन करते हुए दैनिक तथा नियमित व्यायाम आदि द्वारा अपनी शारीरिक शक्ति सदा बढ़ानी चाहिए। जिससे उनके शरीर सुदृढ़, सुडौल, हृष्टपुष्ट और स्वस्थ बन सकें। स्वस्थ तथा बलवान बच्चो की ही देश और जाति को आवश्यकता है। और वे ही देश, जाति और समाज की उन्नति, रक्षा और सेवा कर सकते हैं।

(५) कुमारों को अपना खानपान और रहन सहन सदा सादा, कम खरचीला और स्वच्छ पवित्र रखना चाहिए। उत्तेजना पैदा करने वाले, बुद्धि और शक्ति का ह्रास करने वाले पदार्थों का सेवन न कर सदा सात्विक और पौष्टिक पदार्थों को ही सेवन करना चाहिए।

(६) कुमारो को अपनी बुद्धि के विकास और ज्ञान की वृद्धि के लिये अपनी पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त पुस्तकालयों" आदि से भी सदा अच्छी २ धार्मिक पुस्तकें लेकर स्वाध्याय करते रहना चाहिए। विचार शक्ति के जागृत और उत्तम होने पर 'अच्छे अच्छे विचार" लिख करके लेखन कला की भी वृद्धि करनी चाहिए।

(७) कुमारो को अपना सम्पूर्ण शक्तियों को विकसित करने का प्रयत्न करना चाहिए। विशेषत कुमार समाजो के सत्सङ्गो उत्सवों और सम्मेलनो आदि में निस्सकोच होकर भाग लेते हुए बोलने की शक्ति को बढ़ाना चाहिए तथा विचार शक्ति के जागृत होने पर समाचार पत्रों में लेख आदि लिख कर 'लेखन शक्ति" को बढ़ाना चाहिए।

(८) कुमारो को अपने आचार, विचार और व्यवहार को सदा शुद्ध ही रखना चाहिए जिससे उनके सदाचार की रक्षा हो सके। इसके लिये उन्हें समाज और कुमार सभा क सत्सङ्गो आदि में बैठने का अभ्यास कर अपना जीवन सत्सङ्गमय बनाना चाहिए।

(९) कुमारों को अपने समय को मूल्यवान समझ कर उसका सदा सदुपयोग करना चाहिए और अपनी दिनचर्या निश्चित कर सब काम नियम पूर्वक करते रहना चाहिए जिससे समय नष्ट न हो। सिनेमा, थियेटर और अन्य कुदृश्यों का परित्याग करके अपने मन को परोपकार, सेवा आदि सत्कार्यों में ही लगाए रखना चाहिए और जहाँ तक बन सके प्रत्येक काम को निष्काम और निःस्वार्थ भाव से करना चाहिए।

(१०) कुमारों को अपना जीवन उत्साह, पुरुषार्थ और साहसमय बनाना चाहिए। आलस्य, प्रमाद, भीरुता और कायरता आदि जीवन की उन्नति के बाधक दुर्गुणों को त्याग कर निर्भयता आत्मविश्वास, स्वावलम्बन और आत्म सम्मान की भावना मन में उत्पन्न करनी चाहिए।

(११) कुमारों को सदा सत्य, सरल और मधुर भाषण ही करना चाहिए उन्हें वचन का पक्का, (दृढ़ प्रतिज्ञ) और सच्चा रहना चाहिए और यथासम्भव मन, वचन तथा कर्म से एक ही रहना चाहिए।

(१२) कुमारों को परस्पर भ्रातृ भावना तथा प्रेम बढ़ाना चाहिए। सबको अपने समान समझ कर सबसे सम्बन्धियों जैसा व्यवहार करना चाहिए। अपने मनों को ईर्षा, द्वेष और डाह आदि दुर्गुणों से बचा कर शुद्ध, पवित्र और सहानुभूति पूर्ण रखना चाहिए। और यथा सम्भव किसी का अवहित चिन्तन नहीं करना चाहिए।

(१३) कुमारों को अपने से बड़ों की सेवा, आदर और सम्मान करना चाहिए। उनकी आज्ञा मानना, उन्हें प्रसन्न तथा सुखी रखना चाहिए। इससे कुमारों की विद्या, आयु यश और बल बढ़ेंगे।

(१४) कुमारों को असंयम विलासिता, अनियमता, उच्छृङ्खलता का त्याग कर देना चाहिए और अपने को सदा देश, जाति और समाज के रचनात्मक कार्यों में लगा सेवा, परोपकार और लोकहित के कामों को करते रहना चाहिए।

(१५) कुमारों को सच्चा नागरिक बनने के लिये आवश्यक है कि कुमार अपनी शिक्षा समाप्त कर 'केवल नौकरी'' के पीछे ही मारे २ न फिरें, प्रत्युत ग्रामो में जा २ कर ग्रामीण जनता की सेवा कर उनकी स्थिति सुधारें।

(१६) कुमारों को ऊँचे दरजे की शिक्षा पाकर दहेज'' में विपुल राशि या दूसरे के धन द्वारा विलासिता का जीवन व्यतीत करना ही अपना ध्येय नहीं बना ना चाहिए प्रत्युत,

(१७) कुमारों को अपने जीवन में "वित्त" की अपेक्षा "वृत्त" की सदा जैसे भी हो सके रक्षा करनी चाहिए। एक चरित्रवान् व्यक्ति लाखों लखपतियों से जो कि चरित्र-हीन हो अच्छा होता है। अतः कुमारों को अपने बड़ों के जीवनों का सदा पाठ करते हुए सदा उनके पदचिह्नों पर आचरण करना चाहिए। तथा पुराने शिष्टाचार संस्कृति और शील को भुलाना नहीं प्रत्युत अपनाना चाहिए।

मुझे आशा ही नहीं अपितु विश्वास है कि कुमार उपरोक्त कर्तव्यों को अपना कर

उनका पूर्ति कर अपने जीवनों को सर्वाङ्गपूर्ण और सुन्दर बना अपना, अपने देश का और अपनी जाति का यश बढ़ा कल्याण करेंगे।

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् दिल्ली

सूचनाएँ

(१) आर्य कुमारों की वर्दियां निम्न दो प्रकार की होनी चाहिए।

१ विशेष अवसरों के लिए अर्थात् उत्सवों, जलसे इत्यादि पर खादी का सफेद कुर्ता, गांधी टोपी तथा धोती।

२ सेवा कार्य के अवसर पर (अर्थात् जब स्वयं सेवक का कार्य करना हो) खादी की आधी बाँह की सफेद कमीज तथा खाकी निकर।

(२) आर्य कुमार सभाओं के साप्ताहिक अधिवेशनों का कार्यक्रम निम्न प्रकार है।

हवन, संध्या, प्रार्थना, सामूहिक भजन गायन, स्वामी दयानन्द अथवा अन्य किसी महानुभाव का जीवन चरित्र (आरम्भ स्वामी जी के जीवन चरित्र से हो, सत्यार्थ प्रकाश आदि की कथा या किसी महात्मा का व्याख्यान) ऊपर लिखा सब कार्य क्रम अनिवार्य होगा। इसके अतिरिक्त क्रम से वाद विवाद व्याख्यान इत्यादि रहें।

(३) सब आर्य कुमार सभाओं को सूचित किया जाता है कि पत्र व्यवहार मन्त्री-भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् चाँदनी चौक दिल्ली के पते से करें।

(४) आर्य कुमार सभाओं के मन्त्रियों से प्रार्थना है कि वे अपनी सब कार्यवाही हिन्दी में करें।

(५) परिषद् के वर्तमान प्रतिष्ठित सदस्यों से सानुरोध प्रार्थना है कि वे अपना वार्षिक शुल्क ५) कृपा करके सम्मेलन से पहिले परिषद् कार्यालय में भेज देवें। क्योंकि परिषद् को धन की बड़ी आवश्यकता है।

(६) आर्य कुमार सभाओं के मन्त्रियों से प्रार्थना है कि वे 'सार्वदेशिक' मासिक पत्रिका के अथवा 'आर्य मित्र' के ग्राहक अवश्य बन जावें। क्योंकि इनमें आर्य कुमार परिषद् की सब सूचनाएँ नियम- पूर्वक निकलती रहती हैं।

(७) भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् के अन्तरङ्ग सदस्यों से प्रार्थना है कि वे 'सार्वदेशिक' अथवा 'आर्य मित्र' किसी एक पत्र के ग्राहक अवश्य बनें, क्योंकि आगे से अन्तरङ्ग सभाओं की कार्य कारिणी सभा को तथा सम्मेलनों की ओर सब सब आर्य कुमार सभाओं की सूचनायें इनमें अवश्य छपा करेंगी।

(८) आर्य कुमार सभाओं के मन्त्रियों से प्रार्थना है कि परिषद् की आय का ध्यान

रखते हुए उनको अपने नगर में परिषद् के प्रतिष्ठित सदस्य अधिक से अधिक संख्या में बनाने चाहिए। प्रतिष्ठित सदस्य का शुल्क २) वार्षिक है।

(६) आर्य कुमारों से प्रार्थना है कि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् के २५ वें सम्मेलन बिजनौर के अवसरपर उन्नतिस्मारक पुस्तक का 'उन्नति की ओर' नाम की प्रकाशित हुई थी उसे कार्यालय परिषद् से मंगाकर पढें। पुस्तक का मूल्य ।=) है जो कुमार उस मँगावें तो साथ में ≈) के टिकट डाक व्यय के लिये भेजे

इस पुस्तक में चरित्र निर्माण (Character Building) पर नव युवकों के लिये श्री नारायण स्वामी जी, महात्मा गांधी, प्रो० सुधाकर जी प्रो० परमात्माशरण जी, माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त, पं० गंगाप्रसाद जी, महात्मा हंसराज जी, श्री केलकर जी आदि २०-२२ नेताओं के विचार पूर्ण लेख हैं। पं० नारायण प्रसाद जी बेताब, प० सूर्यदेव जी, प० हरिशंकर जी आदि कवियों की ओजस्वी कवितायें हैं, इस पुस्तक का एक २ शब्द कुमारों और युवकों को जीवन पथ पर उन्नति की ओर ले जाने वाला है। हर एक नव युवक को इस पुस्तक को पढ़ना और मनन करना चाहिए।

(१०) प्रत्येक सम्बन्धित आर्य कुमार सभाओं के मन्त्रियों से प्रार्थना है कि वे अपनी सभा का वार्षिक शुल्क १ मार्च से पहिले कार्यालय परिषद् में भेज देवें।

नोट—१ प्रत्येक सम्बद्ध कुमार सभा को अपने प्रथम २० सभासदों पर २) वार्षिक तथा फिर प्रति १० सभासदों पर) वार्षिक परिषद् को देना होता है।

नोट—२ प्रत्येक कुमार सभा का वार्षिक चन्दा अधिवेशन से पूर्व आ जाना चाहिए वरना वे परिषद् के अधिवेशन में भाग न ले सकेंगे।

(११) प्रत्येक ऐसी कुमार सभाओं के मन्त्रियों से प्रार्थना है कि जिनका सम्बन्ध परिषद् से नहीं हुआ है, वे अपना सम्बन्ध सम्मेलन से पहिले परिषद् से करा लेवें।

(१२) सम्बन्धित कुमार सभाओं की सूची—

(१) दीवान भवन दिल्ली (२) बिजनौर (३) मुरादाबाद (४) पलवल (५) बौंड (६) शिकोहाबाद (७) सिरसा (८) इन्दौर (९) रामपुर (१०) गुलबर्गा (११) अजमेर (१२) गाजियाबाद (१३) कानपुर (१४) पटौदी हाउस (१५) बरहामपुर (१६) मेरठ (१७) मवाना कलाँ (१८) पीलीभीत (१९) नगीना (२०) नजीबाबाद (२१) मुजफ्फरपुर (२२) मेंडू (२३) बलरामपुर (२४) चदौसी (२५) देहरादून (२६) इलाहाबाद (२७) लखनऊ (२८) सीतापुर (२९) पुरैनी (३०) हरदोई (३१) इटावा (३२) अजीतमल (३३) वृन्दावन (३४) रुड़की (३५) बदायूँ (३६) बहराइच (३७) हसनपुर (३८) लाहौर (३९) गुज

रान (४०) लौसा (४१) फ़ीरोज़पुर (४२) गोज़रा (४३) श्रीनगर (४४) पटना (४५) सीवान (४६) झरिया (४) बाँकीपुर (४८) खगड़िया (४९) गया (५०) बड़ौदा (५१) कोल्हापुर (५२) नागपुर (५३) जबलपुर (५४) जयपुर (५५) भरतपुर (५६) जोधपुर (५७) भूड़ बरेली (५८) कन्नौज (५९) रांची (६०) हैदराबाद (६१) निमडेगा (६२) मुज़फ़्फ़र नगर (६३) मुलतान नगर (६४) इस्लामनगर (६५) सूर्यकुण्ड बदायूँ (६६) सराय तरिन (६७) बस्ती (६८) देव नगर दिल्ली (६९) सुलतान बाज़ार हैदराबाद (७०) लल्लापुरा काशी (७१) हेमारा (गया) (७२) सब्ज़ी मण्डी दिल्ली (७३) शिवपुर (हावड़ा) (७४) मंडला (७५) चाँदपुर (७६) डा० ए० वी० हाइ स्कूल नई दिल्ली (७७) इन्दौर (७८) हापुड़ (७९) मोर सराय दिल्ली (८०) लखड़वा ।

(१३) स्वागत कारिणी सभा के नियम—

१ इस सभा के सदस्य स्थानीय आर्य कुमार सभा और आर्य समाज के सदस्य तथा वे अन्य सज्जन हो सकेंगे जो सम्मेलन को सहायतार्थ कम से कम २) देंगे।

नोट—१ परिषद् की कार्य कारिणी सभा को अधिकार होगा कि वह विद्यार्थियों अथवा कुमारों के लिये इस फ़ीस का कुछ कम कर सके।

नोट—२ परिषद् की अन्तरङ्ग सभा को यह अधिकार होगा कि किसी स्थान विशेष की कठिनाइयों को दृष्टि में रखते हुए वह इस फ़ीस में कुछ कमी कर दे।

२ स्वागत कारिणी को सम्मेलन के पूर्ण प्रबन्ध करने का पूरा अधिकार होगा। सम्मेलन के कार्य क्रम की अन्तिम स्वीकृति परिषद् की कार्य कारिणी सभा से लेनी होगी।

३ सम्मेलन के सम्पूर्ण व्यय के अतिरिक्त सभापति और स्वागताध्यक्ष के भाषण तथा परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट आदि की छपाई का खर्च भी स्वागत कारिणी के कोष से होगा।

४ समस्त व्यय के लिये अपने प्रान्त तथा नगर में चन्दा एकत्रित करने का पूर्ण अधिकार स्वागत कारिणी सभा को होगा।

५ सम्मेलन में आने वाले प्रतिनिधियों के शुल्क का पाँचवाँ भाग परिषद् स्वागत कारिणी को देगी।

६ स्वागत कारिणी सभा के निम्नलिखित अधिकारी होंगे जो स्वागत कारिणी की सब से पहिली बैठक में चुने जायेंगे, लेकिन यह चुनाव कम से कम १५ सभासद् बन जाने पर ही होगा। प्रधान, उपप्रधान, मन्त्री, उपमन्त्री, कोषाध्यक्ष।

स्वागत कारिणी सभा को अधिकार होगा कि इन अधिकारियों में कमी बेशी कर सके।

७ स्वागत कारिणी सभा का हिसाब सम्मेलन होने के तीन मास के अन्दर २ परिषद् की अन्तःरङ्ग सभा द्वारा नियुक्त आडीटर से जांच करा कर परिषद् को भेज दिया जावेगा।

८ सम्मेलन की बचत का दो तिहाई स्वागत कारिणी सभा परिषद् को देगी और शेष स्थायी कुमार सभा को।

९ स्वागत कारिणी सभा को सम्मेलन के किसी भी खर्च के लिये कर्ज़ लेने का अधिकार न होगा और अपना खर्च अपनी आय के अनुसार ही करना होगा।

दसवाँ बिहार प्रांतीय आर्य कुमार सम्मेलन रामगढ़ कांग्रेस के अवसर पर होगा। बिहार प्रान्तीय आर्य कुमार सभाओं को धन से जन से हर प्रकार से प्रान्तीय परिषद् को इस कार्य में सहायता करनी चाहिए।

मन्त्री—

आर्य कुमार परिषद्

दक्षिण भारत प्रचार

मेरे दक्षिण-भ्रमण का संक्षिप्त वृत्तान्त

(ले०—पं० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय)

मैं ३० अक्टूबर १९३९ को प्रयाग से चल कर ३१ अक्टूबर १९३९ को सायंकाल के समय शोलापुर पहुँचा। श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री जी भी उसी दिन वहां पहुँच गये। श्री पं० वंशीलाल जी तथा श्री वैरिस्टर विनायक राव जी भी वहाँ उपस्थित थे क्योंकि उन्हीं दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य की शोलापुर में बैठक थी। श्री पं० वंशीलाल जी ने आर्य्योपदेशक विद्यालय के लिये एक भवन किराये पर ले रक्खा था और कुछ विद्यार्थियों के साथ उसका उद्घाटन भी कर दिया था।

पहली नवम्बर १९३९ को हम सबने परामर्श करके विद्यालय चलाने की व्यवस्था की।

तीसरा नवम्बर को मुझे महाराष्ट्र युवक संघ का निमन्त्रण मिला जो पांढरपुर में होने वाला था और जिसके प्रधान श्री कुवर चान्दकरण जी शारदा थे। मैंने इस समय से लाभ उठाने की इच्छा से ५ नवम्बर को पान्डरपुर को प्रस्थान किया। वहा ५ और ६ नवम्बर को रहा। ७ नवम्बर को प्रात काल शोलापुर वापिस आ गया। पांढरपुर में श्री शारदा जी के सभापतित्व के कारण आर्यसमाज का अच्छा प्रचार रहा। मेरी भी एक वक्तृता हुई। वहाँ बहुत से ऐसे महाराष्ट्रीय सज्जनों से भेंट हुई जो आर्यसमाज से प्रेम रखते हैं। श्री वीर सावरकर जी भी वहा थे। उनसे कई बातों पर परामर्श भी किया।

जब मैं शोलापुर लौटा तो श्री मन्त्री जी आर्यसमाज चायना बाजार मद्रास का आग्रहपूर्वक पत्र मिला कि मैं १० नवम्बर के दीपमालिका के उत्सव में सम्मिलित होऊँ। उनका एक निमन्त्रण पहिले भी आ चुका था। इसलिये मैं ९ नवम्बर को मद्रास के लिये चल पड़ा। १० नवम्बर को प्रात काल वहां पहुँचा और १३ नवम्बर की शाम तक रहा। इस बीच में मद्रास के आर्य भाइयों से मिला। वहां के कार्य्य के विषय में परामर्श हुआ। मद्रास आर्य मन्दिर के निर्माण के विषय में जो योजना होरही है उस में भी भाग लिया और तीन वक्तृतायें भी दीं।

मैं मद्रास पहुँचा ही था कि मुझे मंगलौर आर्यसमाज के मन्त्री का तार द्वारा निमन्त्रण मिला मैं १३ नोम्बर की रात को मंगलौर की ओर चल पड़ा और १४ नवम्बर को कालीकट पहुचा। वहाँ चार दिन रहा। श्री मिस्टर के० सी० भल्ला आर्य मिशनरी वहां

ज़ोर से प्रचार कर रहे हैं। अँग्रेज़ी का एक साप्ताहिक पत्र हार्बिंजर (Harbinger) निकलता है और कई शुद्धियां भी कर चुके हैं। वहाँ हिन्दूमहासभा की ओर से १६ नोम्बर को एक व्याख्यान के लिए विज्ञापन दिया गया परन्तु वर्षा इतनी अधिक हुई कि व्याख्यान न हो सका। १७ नोम्बर को थियोसोफीकल सोसाइटी के जन्मदिवसोत्सव में मेरा तथा श्री मञ्जा जी का व्याख्यान हुआ। कालीकट मौरलों का गढ़ है। वहाँ कई प्रसिद्ध पुरुषों से मिला। विशेषकर थिया जाति के नेता से।

१८ नोम्बर की रात को मंगलौर पहुँचा। वे लोग मेरी प्रतीक्षा में थे परन्तु किसी कारण मेरा कालीकट से डाला हुआ पत्र उनको समय पर न मिला। मगलौर (साउथ कनारा) में दो और मुख्य समाजें है एक कराकल में और दूसरी उडुपी में। १६ नोम्बर को प्रातःकाल मगलौर में रविवार का सत्सङ्ग था। मैंने वहां एक व्याख्यान दिया। कराकल समाज के प्रधान श्री वेंकटेश प्रभु जी मुझे लेने के लिए आये हुए थे। मैं उनके साथ १६ तारीख को कराकल चला गया और २० तारीख को समाज के विशेष सत्सग में एक व्याख्यान दिया और रात को एक सार्वजनिक व्याख्यान अग्रेज़ी में हुआ। उसी दिन उडुपी समाज के मन्त्री श्री रगराव शेनै बुलाने आ गये। अत २१ तारीख को उडुपी में एक सार्वजनिक व्याख्यान अंग्रेज़ी में दिया। उडुपी माधवाचार्य के सम्प्रदाय का एक प्र सद्ध गढ़ है। वहाँ सस्कृत कालेज और कैथोलिक गिरजा भी देखा।

२२ तारीख को मगलौर लौट आया और वहाँ अँग्रेज़ी में एक सार्वजनिक व्याख्यान दिया।

२३ नवम्बर को ट्रावनकोर के लिए चल पड़ा और कोचीन, अर्नाक्यूलम अलपी तथा कुइलन होता हुआ २५ नोम्बर को प्रात काल ट्रावन्कोर की राजधानी त्रिवेंद्रम में प्रवेश किया। कोचीन में तलाश करने पर भी कोई चिह्न आर्यसमाज का न मिला। अर्नाक्यूलम में कुछ पञ्जाबी भाई मिले जिन्होंने बताया कि वे तो व्यापारी हैं और स्वयं कुछ नहीं कर सकते परन्तु यदि कोई वहाँ आकर बैठ जाय तो आर्यसमाज से प्रेम करने वाले वहाँ काफ़ी हैं और आर्यसमाज खुल सकता है। अलपी में तलाश तो की परन्तु मालूम हुआ कि पहले कुछ आर्य सज्जन थे वह अब नहीं हैं।

२५ नोम्बर को त्रिवेन्द्रम में होटल में ठहरा और वहां के कई प्रसिद्ध नेताओं से मिला। वहाँ के श्री निवासम् बैरिस्टर ने मुझे बहुत सहायता दी। उन्हीं के द्वारा लोगों से भेंट करता था। वहाँ एक केराला हिन्दू मिशन नामी एक संस्था है जिसने गत चार वर्ष में पचास हज़ार ईसाइयों को शुद्ध किया है। इसके मन्त्री श्री नारायण अइयर हैं और सभापति

भूतपूर्व दीवान श्री राय बहादुर सुब्रह्मण्य अइयर। इनके द्वारा दो सार्वजनिक व्याख्यानों की आयोजना हुई। २८ नौम्बर को सेन्ट्रल हिन्दू रिलीजस आयमेरो के हाल में "वैदिक आदर्श" पर व्याख्यान हुआ जिसके सभापति ट्रिवेण्ड्रम के प्रसिद्ध विद्वान् महाकवि उल्लूर परमेश्वर्या रिटायर्ड मैजिस्ट्रेट थे। २६ नवम्बर को उसी स्थान में "हिन्दू प्रोग्रेम" पर भूतपूर्व दीवान श्री राय बहादुर सुब्रह्माण अइयर के सभापतित्व मे हुआ।

मैं २७ ता० को वर्कला गया यह एक छोटा सा स्थान है जहां शिवगिरि मठ है। यहाँ पहले स्वामी नारायण नामक एक सुधारक सन्यासी हो चुके हैं जिनकी वहीं समाधि है, एक स्कूल चल रहा है मुझे बताया गया था कि वर्कला में समाज का अच्छा केन्द्र बन सकता है। वहां मुझको एक साधु स्वामी विरजानन्द मिले, जो हिन्दी जानते थे। उन्होंने गुरुकुल नरसिंह पुर (सी० पी०) में सत्यार्थ प्रकाश भी पढ़ा था, परन्तु मुझे वर्कला में कोई आशाजनक बात दिखाई न पड़ी।

३० ता० को एक और नगर 'कोटायम' में व्याख्यान होना था परन्तु किसी कारण तार मिला कि ३० ता० को योजना न हो सकेगी। अतः मैं २६ नवम्बर की रात को ही व्याख्यान के पश्चात् मदुरा के लिये चल पड़ा।

३० नवम्बर को दस बजे प्रातःकाल मदुरा पहुँचा। वहां कई घण्टे घोर प्रयत्न करने पर भी समाज का पता न चला पहले श्री एम जे शर्मा ही मदुरा में आर्य समाज के कर्त्ता धर्त्ता थे। उनका देहान्त हो चुका है। मैं उनकी पत्नी से मिलना चाहता था परन्तु कुछ पता न चला। वहां हरिजन संघ के प्रधान और सार्वजनिक नेता श्री वैद्यनाथ अइयर बी ए बी एल एडवोकेट से भेंट हुई। उन्होंने बताया कि कई वर्ष पूर्व श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी यहां आये थे और Criminal Tribe सुधार को अपने हाथ में लेने का विचार था परन्तु कुछ हो न सका। १० के लगभग Criminal Tribe सम्बन्धी स्कूल ईसाइयों के हाथ में हैं और इसका कोई उपाय नहीं है। मैंने कहा लोकल सपोर्ट होनी चाहिए। वह कहते हैं कि आरम्भ में समाज का काम जमने पर ही जनता की सहानुभूति हो सकती है। उनका विचार था कि अब तक मदुरा में आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं की ख्याति अच्छी नहीं रही इसलिये समाज की जड़ नहीं जम सकी।

इच्छा थी कि इधर आया हूँ तो रामेश्वर पर भी दृष्टि डालता चलूँ। अतः रामेश्वर, धनुष-कोडी तथा त्रिचनापल्ली होता हुआ ३ दिसम्बर को प्रातःकाल मद्रास वापिस आ गया। त्रिचनापल्ली में तलाश की कि कोई आर्य समाजी है या नहीं। बहुत खोज के पश्चात् पता चला कि मिस्टर एफ जी अटेकारिया वोरयूर में रहते हैं। यह ईसाई मत से

शुद्ध हुए हैं। अवश्य ही आर्य समाजी होंगे। मैं बस में बैठकर वोरयूर पहुँचा। उन से भेंट हुई। वह कांग्रेसी हैं। धर्म के विचार से अद्वैतवादी हैं। वह ईसाई हो गये थे। फिर शुद्धि करा ली। आर्य समाज को सामाजिक सुधार में अच्छा समझते हैं। वह कहते हैं कि यदि कोई धुन का आदमी बैठ जाय और अछूतोद्धार का काम करे तो काम हो सकता है।

मद्रास में इस बार दो दिन रहा। मुझे डाक से पता चला कि श्री राजगुरु सुरेन्द्र शास्त्री जी रोगी होने के कारण आर्योपदेशक विद्यालय शोलापुर में वापिस नहीं आ सके। अतः शीघ्र लौट जाना आवश्यक प्रतीत हुआ। मेरा एक व्याख्यान १ दिसम्बर को सायंकाल को मद्रास बीच (समुद्र तट) पर हुआ और ४ दिसम्बर को हिन्दी वाग्वर्धिनी सभा में भी ४ दिसम्बर की रात को वहाँ से चलकर ५ दिसम्बर को प्रातःकाल बेजवाड़ा आया क्योंकि यह देखना था कि इस केन्द्र में क्या काम हो रहा है। बेजवाड़ा आन्ध्र प्रान्त का केन्द्र है। भाषा तिलगू है। श्री प० मदनमोहन विद्याधर जी स्टेशन पर पहुँच गये थे। उनके साथ निवास स्थान पर आया। मैं यह धारणा लेकर आया था कि बेजवाड़ा केन्द्र में कोई काम नहीं हो रहा। मुझ को यही रिपोर्ट मिली थी। मैं स्वयं आरम्भ से देखना चाहता था। वस्तुतः बेजवाड़ा में न तो समाज है न समाज के प्रेमी। और न यह आशा ही है कि शीघ्र समाज खुल जाय। परन्तु बेजवाड़ा नगर को देख कर अनुमान निकालना भूल है और मुझे दो दिन रह कर ज्ञात हुआ कि मैं बड़ी भूल में था। मेरा विचार था कि दो चार घण्टे रह कर उसी दिन हैदराबाद चला जाऊं। सभा के कार्यालय से जो पत्र मुझे दो दिन पूर्व मिला था उसमें श्री गोपदेव जी से मिलने का परामर्श किया गया था। मैंने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की। श्री मदनमोहन विद्याधर जी ने अपने काम तथा कठिनाइयों के विषय में मुझसे बातचीत की थी। ज्ञात हुआ कि श्री गोपदेव जी तिनाली हैं जो वहाँ से एक स्टेशन दूर है। मैंने उचित समझा कि उनको बुलाने के बजाय मैं स्वयं तनाली जाऊँ, अतः श्री मदनमोहन जी के साथ तनाली पहुँचा। वहाँ ज्ञात हुआ कि वह प्रचारार्थ इडकपल्ली ग्राम में गये हुए हैं जो वहाँ से ५ मील है। मैं तुरन्त ही तांगा करके वहाँ पहुँच गया। वे वहाँ थे। उनसे आंध्र प्रांत के कार्य के विषय में बातचीत हुई। मैंने हैदराबाद को तार द्वारा सूचना दे दी थी कि मैं ६ दिसम्बर को वहाँ पहुँच जाऊंगा। परन्तु इडकपल्ली में ग्राम निवासियों ने मेरे रुकने के लिये आग्रह किया। अतः मुझे उचित प्रतीत हुआ कि तनाली में भी व्याख्यान का प्रबन्ध हो जाय। अतः मैं तो उसी ग्राम में रुक गया और श्री मदनमोहन जी को व्याख्यान के प्रबन्ध के लिये

तनाली भेज दिया गया। इडकपल्ली बहुत बड़ा ग्राम है। धनी मानी पुरुषों के बड़े बड़े मकान हैं। मुझे आश्चर्य हुआ कि आध घण्टे में ही दो ढाई सौ आदमी आ गये और मेरा व्याख्यान हुआ। उसके पश्चात् लोगों ने भी प्रश्न पूछे। लोगों के हृदयों में बड़ा उत्साह था। वहाँ से व्याख्यान देकर श्री गोपदेव जी के साथ उनके ग्राम कूचपुडी में पहुँचा वहां भी रात को व्याख्यान दिया। यह ग्राम उत्तरी भारत के समान छोटे गांव नहीं किन्तु क़स्बे हैं। ६ ता० को तनाली आया। साय काल को एक व्याख्यान दिया। मुझको ज्ञात हुआ कि श्री मदनमोहन जी और गोपदेव जी ने इन गावों में बहुत कार्य किया है और समाज के प्रेमियों की संख्या बढ़ती जा रही है। मैंने उनको सम्मति दी है कि नियमित समाज खोलना आरम्भ कर दिया जाय। तनाली रेल के मेन लाइन (Main Line) पर है और बेजवाड़ा से कुछ कम नहीं है। तनाली से चलकर नहर के किनारे किनारे ८० बड़े ग्राम हैं जो दो दो मील की दूरी पर बसे हैं। उपजाऊ हैं और धनिक लोग रहते हैं। विशेषकर यह ग्राम 'कम्मा" जाति के क्षत्रियों के हैं। 'कम्मा लोगों के आर्य होने की शीघ्र आशा है।

तनाली में एक देवी ने ८०० गज ज़मीन आर्यसमाज के लिये दी है। उसमें इस समय श्रद्धानन्द हरिजन आश्रम है। मैं १२ बजे रात के तनाली से बेजवाड़ा आया और ७ ता० को ४ बजे प्रात काल हैदराबाद को चल पड़ा। श्री बैरिस्टर विनायकराव जी को तार दे दिया था। तीन बजे अपरह्न में हैदराबाद पहुँचा। वहां उनसे दक्षिण प्रचार के विषय में परामर्श किया। ८ ता० को प्रात काल चल कर सायकाल को शोलापुर आगया।

२. हैदराबाद प्रचार

श्रीमान् जी, यह जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि अकेले हैदराबाद नगर में २१ समाजें खुल गई हैं। अभी तक मैं सब समाजों में प्रचार नहीं कर सका हूँ। हैदराबाद के समाजों में एक एक बार होजायगा फिर बाहर का प्रोगाम बनेगा।

आज का हैदराबाद

आज का हैदराबाद कुछ और ही है। जब से निज़ाम साहब का फरमान निकला है हिन्दुओं में जोश है। प्रचार का कार्य बड़ी तीव्र गति से चल रहा है। अभी स्वामी अभय देव और स्वामी सत्यदेव जी पधारे उनके दो तीन दिन भाषण हुए। श्री प० नरेन्द्र जी मुक्त होकर हैदराबाद आगये हैं। उनका नित्यप्रति किसी न किसी समाज में स्वागत होता है। पं० प्रियरत्न आदि भी पधारे हुए हैं उनके भी उपदेश होरहे हैं। जिन लोगों की यह धारणा है कि सत्याग्रह से कुछ नहीं मिला वे हैदराबाद आकर देखें कि क्या कुछ नहीं मिला।

--माधुर शर्मा

आन्ध्र

सहर्ष सूचना है कि श्री मदनमोहन विद्याधर जी का तिनाली के निकटस्थ ग्रामों में बड़ी धूम से प्रचार होरहा है। ग्रामीण सहस्रों की संख्या में इकट्ठे होते हैं। उनके लिये निमन्त्रण पर निमन्त्रण आते हैं। सनातनी पंडितों ने भी विरोध करना आरम्भ कर दिया है।

—एक सम्वाददाता द्वारा

सम्पादकीय

राष्ट्रीय एकता

हिन्दू महासभा के कलकत्ता अधिवेशन में उसके कर्णधारों ने जिस बात पर सबसे अधिक बल दिया था वह यह थी कि हिन्दुओ को अपने घर की सुव्यवस्था करनी चाहिए। यह बात सामयिक और उचित ही थी। अन्य जातियों और वर्गों के साथ हिंदुओ का व्यवहार कैसा होना चाहिए इस सम्बन्ध में उन्होंने स्पष्ट रूप से बतलाया कि निष्पक्ष न्याय ही सुनिश्चित आधार है जिस पर साम्प्रदायिक एकता स्थापित की जा सकती है। उन्होने यह भी स्पष्ट किया कि यदि इसकी स्थापना अनुचित रिआयतों की क्षणिक दीवारों पर की गई तो इसका नष्ट हो जाना सुनिश्चित है।

श्रीयुत मनमथनाथ मुकर्जी ने जो स्वागत कारिणी समिति के अध्यक्ष थे अपने भाषण में बतलाया कि लोगों के एक राष्ट्र में संगठित होने के लिए सबसे ज्यादा आवश्यक बात यह होती है कि उनमें एक ही प्रकार की इकाई में संगठित होने की इच्छा होनी चाहिए और यदि दो जातिया भाषा, धर्म, संस्कृति और सम्मिलित रूप से इन सबकी दृष्टि से भिन्न २ भी हों तो भी उनमें यह भावना होनी चाहिए कि उन सबकी जन्म भूमि एक ही है और उन्हें एक जैसे राजनैतिक और आर्थिक हितों मे घुल मिल जाना है। साथ ही उनमें एक दूसरे के मूल्य पर अपना हित साधन करने का तनिक भी भाव न होना चाहिए। ऐसा होने पर ही एक राष्ट्र का विकास सम्भव होता है। परन्तु यदि एक जाति इस बात की पर्वा किये बिना कि दूसरी जाति का क्या बनेगा, अपने धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक हितो का सम्पादन करने लग जाय तो राष्ट्रीय एकता स्वप्नवत् हो जायगी।

इन पक्तियों को पढ़ने और उन पर गंभीरता पूर्वक विचार करने के लिए हम अपने समझदार और जिम्मेवार मुसल्मान भाईयो और नेताओ को आमन्त्रित करते है। दुर्भाग्य यह है कि हमारे अधिकाश मुसल्मान भाई इस देश को अपना देश नहीं समझते और यही बात हिन्दू-मुस्लिम समस्याके हलमे मूल-भूत रूपसे बाधक है। क्या

ही अच्छा हो मुसल्मान भाईयों में यह भाव घर कर जाय और वे इस भूमि को यह समझकर कि इसी के अन्न जल से उनका शरीर बना और पोषित हुआ है और इस के सौभग्य और दुर्भाग्य से उनका हिताहित जुड़ा है प्यार करने लग जाँय।

हिन्दू महासभा ने जाति, धर्म के भेद भाव से ऊपर होकर समस्त जातियो और वर्गों की सेवा करने का प्रोग्राम निश्चित किया है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। यह प्रोग्राम निश्चय ही हिन्दू मस्तिष्क के स्वाभाविक औदार्य का परिचायक परन्तु इसके सम्यक् सम्पादन के लिए हमें साम्प्रदायिक भावनाओं और सकीर्णता से ऊपर उठना होगा। यदि हम ऊपर न उठ सके और हममें वही अकर्मण्यता और संकीर्णता रही जिसके लिए हिन्दू महासभा का अच्छा यश नही है तो यह प्रोग्राम केवल कागजों की वस्तु बनी रहेगी।

निजाम महोदय और 'हिज़मैजेस्टी' की उपाधि

हैदराबाद का नवाब पुश्तैनी जायदाद और उपाधियों का स्वामी होने से बड़ा आदमी हो सकता है परन्तु वर्तमान राजनैतिक प्रश्नों के सम्बन्ध में उसकी सम्मतियों का तब तक कोई मूल्य नहीं जब तक वह निजाम सरकार का मन्त्री न हो अथवा उक्त सरकार की ओर से बोलने का उसे अधिकार न हो। नवाब बहादुर यारजङ्ग जिनके 'इत्तिहादे मुसल्मान' के वार्षिक अधिवेशन में दिए हुए भाषण की रिपोट अखबारों में छपी है निज़ाम सरकार के मन्त्री नहीं है अत. उस भाषण की जांच पड़ताल उसके गुण दोषों पर होनी चाहिए। नवाब साहब ने कहा कि निज़ाम महोदय 'हिज़ मैजेस्टी' कहे जाने चाहियें। आज बहुत से भूतपूर्व 'हिज़ मैजेस्टी' है परन्तु इस उपाधि के साथ कोई आकर्षण नहीं देख पड़ता है। आज भले ही कोई शासक हिज हाईनैस' हो या 'हिज मैजेस्टी' हो उसकी परख तो दुनिया उसके शासन की सफलता या विफलता, समस्त प्रजा वर्ग में उसकी लोक प्रियता तथा उसके व्यक्ति गत आचार विचार से ही करती है। निजाम महोदय स्वय एक महा महिम सत्ता हैं। उनके ऐश्वर्य और गौरव की वृद्धि के लिए 'हिज मैजेस्टी' जैसे दूसरों के दिए हुए पदों की आवश्यकता नहीं है क्योंकि ये वापस भी लिए जा सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि उनकी सरकारी मैशनरी में जो साम्प्रदायिक कटुता घर किए हुए है और जिसकी प्रति क्रिया संसार ने गत धर्म युद्ध में देखी हैं और जिसके कारण निज़ाम महोदय और उनकी सरकार अच्छे प्रकाश में नहीं आए हैं उसका एक दम अन्त कर दिया जाय और हिन्दू प्रजा के दुखी और असन्तुष्ट हृदयों को सुखी बना कर समस्त प्रजाका हित सम्पादन किया जाय। यही सबसे बड़ा आनन्द है जो कोई शासक अनुभव कर

सकता है और सन्तुष्ट तथा सुखी प्रजा के हृदयों के द्वारा प्रदत्त किसी भी पदवी के मुकाबले में 'हिज़ मैजेस्टी, हिज हाईनेस' इत्यादि दूसरों की दी हुई विविध पदवियों का कोई स्थान नहीं है ।

अहिंसा

पिछले दिनों 'अखिल भारतीय सनातन धर्म सभा' के अधिवेशन में जो प्रयाग में हुआ था श्री मालवीय जी ने 'हिन्दुओं की रक्षा तथा उस के उपायों पर एक महत्व पूर्ण भाषण दिया था उस में उन्होंने 'अहिंसा' के सिद्धान्त की जो व्याख्या की थी वह हम पाठकों के लाभार्थ यहां उद्धृत करते हैं :—

"मैं अहिंसा जैसे जनोपकारक और मानवी सिद्धान्त का विनम्र भक्त हूँ। परमात्मा के किसी निर्दोष प्राणी को दुःख देना मैं पाप समझता हूँ। परन्तु अहिंसा के इस सिद्धान्त के अपवाद भी हैं जो बहुत प्राचीन काल से स्वीकृत हुए चले आरहे हैं। मनु महाराज ने कहा है कि किसी निर्दोष प्राणी को दुःख नहीं देना देना चाहिए, परन्तु अपने जीवन और इज्जत की रक्षा के लिए आततायियों का वध करने का मनुष्य को अधिकार है जो किसी की हत्या करने आयें, सम्पति लूटें घरो में आग लगायें अथवा स्त्रियों के सतीत्व पर आक्रमण करें। रोमके न्यायशास्त्रियो ने भी इस सिद्धान्त को व्यक्तिगत रक्षा के अधिकारो के अन्तर्गत रक्खा है। यही सिद्धान्त भारतीय दण्ड विधान में सन्निहित है। महात्मा गांधी ने भी जो अहिंसा के सब से प्रबल समर्थक हैं कुछ दिन हुए कहा है कि अहिंसा के शस्त्र का प्रयोग उन्हीं को करना चाहिए जो बलवान हों और अपनी रक्षा करने में समर्थ हों।"

हिन्दुस्तान को बाँटने का प्रयत्न

हिन्दुस्तान को हिन्दू तथा मुस्लिम नामक दो पृथक् देशों में बाँटने का मि० जिन्ना का प्रयत्न दिन-प्रति-दिन प्रबल होता जा रहा है। उन्होंने अपना यह विचार अपने वक्तव्यों में ही पेश करने से सन्तुष्ट न होकर, विदेशों के अखबारों में भी इस विचार का समर्थन आरम्भ कर दिया है। इसका हिन्दुस्तान पर जो प्रभाव होने की सम्भावना थी वह भी अब धीरे २ प्रत्यक्ष होने लगी है। हिन्दू और सिक्ख आदि गैर-मुस्लिम जातियों ने तो इस विचार का विरोध किया ही है, मुसलमानों में भी अनेक प्रभावशाली सज्जन इस विचार का विरोध कर रहे हैं।

आगाखानी मुसलमानों की बम्बई प्रान्तीय शाखा के प्रधान श्री मुहम्मद भाई जे० राऊ जी ने एक बड़े विचार पूर्ण लेख में मि० जिन्ना की योजना का दृढ़ता से खण्डन किया

है। उन्होंने बताया है कि यह योजना व्यावहारिक दृष्टि से तो निन्दनीय है ही, धार्मिक दृष्टि से भी स्वीकरणीय नहीं। व्यावहारिक दृष्टि से इस योजना पर अमल करने में बड़ी भारी कठिनाई यह होगी कि मि० जिन्ना के हिन्दू भारत में जो सम्पन्न मुसलमान बस रहे होंगे उनको अपनी सब सम्पत्ति छोड़ कर मुस्लिम भारत में चला जाना पड़ेगा। इस बात की कोई आशा नहीं है कि इन सम्पन्न मुसलमानों को मुस्लिम भारत में भी अपनी सम्पत्ति का विकास करने की वही सब सुविधाएँ प्राप्त हो जायँगी, जो अब हिन्दू भारत में प्राप्त हैं।

जानकार व्यापारियों और व्यावसायियों से यह छिपा नहीं है कि प्राकृतिक परिस्थियों का धन के उपार्जन में बहुत बड़ा भाग होता है। उदाहरणार्थ, कपड़ा बनाने के कारखाने स्वभावत ऐसी जगह खोले जाएँगे जहां रुई प्रचुरता से उत्पन्न होती होगी खांड के कारखाने अधिकतर सयुक्त प्रांत और बिहार में होने का मुख्य कारण यह है कि इन प्रांतों में गन्ने की खेती बहुत होती है। बन्दरगाह के शहरों में कारखाने इस कारण अधिक खुलते हैं कि वहाँ से माल मँगाने, भेजने में सुगमता होती है। मि० जिन्ना देश के जिस भाग को मुस्लिम भारत बनाने का स्वप्न ले रहे हैं, उसमें स्वभावत. व्यापार व्यवसाय की वे सब सहूलियतें नहीं होंगी जो उनके हिन्दू भारत के अनेक भागों में आज मौजूद हैं इस कारण सम्पन्न व्यवसायी मुसलमान इस योजना को कभी भी पसन्द नहीं कर सकते।

श्री मुहम्मद भाई राऊ जी ने उक्त व्यवहारिक दृष्टिकोण के अतिरिक्त, मि० जिन्ना की योजना पर यह आपत्ति भी की है कि इस पर अमल करने से शिया और सुन्नी मुसलमानों का आपसी विरोध बढ़ जायगा। अब तक तो मुसलमान हिन्दुओं से ही लड़ते हैं, उनका देश अलग बन जाने पर वे आपस में लड़ने लगेंगे धर्मान्धता का आधार बुद्धिवाद न होने के कारण, उससे जो अनर्थ होते हैं, उनकी कोई सीमा नहीं है। धर्मान्ध व्यक्ति तो धर्म के नाम पर किसी न किसी से लड़ेगा ही। जब धर्मान्ध मुसलमानों के सामने हिन्दू न रहेंगे तब वे शियाओं या अहमदियों से ही लड़ना आरम्भ कर देंगे।

श्री मुहम्मदभाई राऊ जी अगाखानियों की एक संस्था के प्रधान हैं इसलिए यह कल्पना की जा सकती है कि आगाखानी मुसलमानों ने मि० जिन्ना की योजना के दोषों को समझ लिया है। भारतीय मुसलमानों में आगाखानियों की संख्या यद्यपि थोड़ी है परन्तु उनका प्रभाव बहुत है। इसलिए आशा रखनी चाहिए कि उनकी ही भान्ति अन्य मुसलमान भी मि० जिन्ना की योजना के दोषों को शीघ्र समझ जायेंगे।

'वीर अर्जुन

लेख-सूची

|| ओ३म् ||

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १५ | चैत्र १९९७ | अप्रैल १९४० ई०] [दयानन्दाब्द ११६ | अङ्क २

* वेद की शिक्षाएँ *

यज्ञं दधे सरस्वती । ऋ० १।३।११।

विद्या परोपकार को धारण किये हुए है ।

Wisdom is based apon Service and Sacrifice.

न रिष्यते त्वावतः सखा । ऋ० १।९१।८।

हे प्रभो ! तेरे जैसे से मित्रता रखने वाला नष्ट नहीं होता ।

O Lord ! Those whom Thou accepteth in Thy Friendship are never destroyed !

* * *

हिन्दुस्तानी की ओट में उर्दू का प्रचार

[लेखक—श्री पं० वेङ्कटेशनारायणजी तिवारी एम.ए.]

[क्रमागत]

विद्वान् होते हुए भी वे पक्षपाती है। अतएव उनमें ज्ञान और विवेक की सकीर्णता स्वाभाविक है। लेकिन डा० ताराचन्द न केवल बहुश्रुत पण्डित है, बल्कि हिन्दी और उर्दू के निष्पक्ष समालोचक के पद को जनता की निगाहों में बहुत दिनों से सुशोभित कर रहे है। ऐसे पढे-लिखे आदमी का यह कहना कि लल्लूजी लाल आदि ने मीर अम्मन, अफसोस वगैरह की जबानको अपनाया, पर इसमें से फारसी, अरबी के लफ्ज छांट दिये और संस्कृत और हिन्दी के शब्द रखकर एक नई जबान रङ्गमञ्च पर खड़ी करदी। क्या डाक्टर ताराचन्द की राय में हिन्दी, उर्दू मे केवल इतना ही भेद है कि हिन्दी वाले हिन्दी और संस्कृत के शब्दों को और उर्दू वाले उनके स्थान में फारसी और अरबी के शब्दों को तरजीह देते हैं? यदि उनकी यह राय है तो मुझे कहना पड़ेगा कि उन्हे हिन्दी, उर्दू की भाषाओं के बुनियादी भेदों का कुछ भी बोध नही। जो बात डा० ताराचन्द ने कही उसे यदि कोई नासमझ, तंगदिल मौलवी कहता तो उसे मै अनपढ़ गवार की बात समझ हँसकर टाल देता। डा० ताराचन्द तो हिन्दुस्तानी एकेडेमी के बहुत दिन से मन्त्री हैं। इसी एकेडेमी के तत्वावधान में डाक्टर ताराचन्द ही ने दिवगत श्री पद्मसिंह शर्मा का 'हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी' पर एक व्याख्यान कराया था। उस व्याख्यान ही को यदि डा० साहब फिर से एक बार पढ़ने की कृपा करते तो ऐसी भ्रामक और निस्सार बात की जिम्मेदारी उठाने की नौबत न आती। डाक्टर ग्रियर्सन के भारतीय भाषाओं संबधी बृहद् ग्रन्थ का अवलोकन अब भी करलें तो उन्हें पता लग जायगा कि हिन्दी और उर्दू में क्या वास्तविक विभेद है। उर्दू भाषा शब्द योजना, व्याकरण सम्बन्धी नियमों, विषय और अलङ्कार की दृष्टि से शामी भाषाओं की अनुवर्तिन है। उसकी प्रेरणा परदेशी है; स्वदेशी नहीं है। वह तो परमुखापेक्षिणी है। उसकी वस्तु स्थिति में हिन्दुस्तानी का नामोनिशान नहीं है। विषय चयन में भारतीयता से वह कोसों दूर भागती है। क्या लल्लूजी लाल, सदल मिश्र आदि ने अमीर अम्मन की इन सब

बातों में नकल की है ? एक के कण कण से विदेशीपन टपकता है, दूसरा रग रग में भारतीय है। लल्लूजी लाल की वाक्य-रचना से इन्शा की 'रानी केतकी' की वाक्य-रचना का मिलान कीजिये और दोनों में जो व्यापक अन्तर है उसका आपको सहज ही में बोध हो जायगा। लेकिन डाक्टर ताराचन्द को इन सब बातों की क्या परवा ! शायद उन्हीं के से विद्वानों को देखकर एक विद्वान् ने किसी वक्त यह लिखा था.—

"आखिर हिंदी अलफाज़ का सखीफ़ और मुब्तज़न समझने की वजह क्या है ? इसकी वजह साफ़ जाहिर है। जो कौम अपने दर्जे से गिर जाती है वह अपनी हर चीज को पस्तोज़लील समझने लगती है इसी तरह अपनी ज़बान भी उन्हें गैरों की ज़बान की निस्बत नाशाइस्ता (अशिष्ट) और कममाया (दरिद्र) मालूम होती है यह मैलान गिरी हुई क़ौम के तमाम मामलात व हालात पर यकसाँ तौर से हावी हो जाते हैं।" डा० ताराचन्द ने ऐसी दशा मे जो कुछ लिखा वह अचरज की बात नहीं है। उनकी राय में हिन्दुस्तानी वही खड़ी बोली है जिसे मेरठ और दिल्ली के आस-पास के रहने वाले बहुत पुराने वक्त से बोलते चले आये हैं और मुसलमानो ने जब दिल्ली को राजधानी बनाया तब से इस बोली की किस्मत पलटी। ऐसी दशा में डा० ताराचन्द यह स्वीकार करने के लिए विवश होंगे कि मेरठ और दिल्ली के आस-पास बोली जाने वाली 'बोली' भारतीय आर्य-भाषाओं के ढाँचे में ढाली गई होगी। उस पर शामी व्याकरण के नियमों का यदि असर पड़ा तो उर्दू लिखने वालों की बदौलत ही पड़ा।

लल्लू जी लाल आदि ने जो काम किया वह यह था कि उन्होंने हिन्दी हिन्दुस्तानी गद्य के, विदेशी प्रभावों के कारण विकृत रूप को शोध कर भारतीय आर्य भाषाओ की पंक्ति में ला बिठाया। उन्हों ने स्वदेश-पद्धति का अनुकरण किया। मीर अम्मन वगैरह और उन के अनुयायियों ने उसको विदेशी अर्थात् शामी भाषाओं के ढाँचे में ढालने की अनुचित चेष्टा की। लेकिन डा० ताराचन्द से बहस करना समय को नष्ट करना है। हाँ, डाक्टर साहब यदि यह समझते हैं कि उनकी अनर्गल किंवदन्तियों को लोग ऐतिहासिक सत्य मान लेंगे तो यह उनकी भारी भूल होगी। हाँ, "उर्दू दिवस" के जलसो में लोग भले ही उनकी पीठ ठोंक दें। अगर इस से उन्हें सन्तोष है तो मैं उन्हें हताश कदापि नहीं करना चाहता। मेरी निश्चित सम्मति यह है कि लल्लू जी लाल ने मीर अम्मन का अनुसरण नहीं किया। उन्हों ने अनुसरण किया भारतीय आर्य भाषाओं की परम्परा का जिस के

विरोध में मीर अम्मन वगैरह ने बगावत की और शामी भाषाओं की अनुवर्तिनी भाषा के फैलाने का देश मे असफल प्रयत्न किया।

हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू का प्रचार

जैसा पाठकों को मालूम है, डा० अब्दुलहक़ आदि की राय मे हिन्दुस्तानी सहल उर्दू है और सहल उर्दू हिन्दुस्तानी, जिस का अर्थ यह है कि आर्य भाषा के आधार पर एक नई जबान तैयार की जाय, जिस में से हिन्दी और सस्कृत के शब्द निकाल लिये जाय और उन के स्थान मे फारसी और अरबी के शब्दों का जोरों से चलन किया जाय। इसी का नाम हिन्दुस्तानी जबान है। हिन्दी और सस्कृत के शब्दों से इतनी घृणा क्यों? उनको निकाल फेंकने के लिये इतना उतावलापन क्यों? इसका कारण है। अभी तक तो हम से यह कहा जाता था कि फारसी और अरबी के शब्दो के स्थान में यदि हिन्दी और सस्कृत शब्द इस्तेमाल किये जाते है तो केवल इस गरज़ से कि हिन्दुस्तानी से मुस्लिम कल्चर और इस्लामी असरात और जज्बात का अन्त कर दिया जाय। डा० अब्दुलहक़ साहब ने एक नई वजह बताई है। आप फरमाते हैं—

अजीब बात है कि इस सँस्कृत मिली जबान ही की वजह से जुनूबी हिन्दवाले हिन्दी या हिन्दुस्तानी की सख्त मुखालिफत कर रहे है। उनको यह बदगुमानी है *कि हिन्दी के हीले से सस्कृत जबान फैलाने की कोशिश की जा रही है और हम उनकी जबान और कल्चर को मिटाना चाहते हैं।" इसीलिए शायद दक्खिन* हैदराबाद के रहने वाले डा० अब्दुलहक़ जो हिन्दुस्तानी जबान के इस वक्त बड़े हिमायती हैं 'दक्खिनी हिन्द' को जुनूबी कहते हैं ताकि उनके सम्बन्ध मे मदरासियो को यह बदगुमानी न हो जाय कि डा० साहब सहल उर्दू के हिमायती हैं। अपनी तकरीर मे उन्हों ने खुद लिखा है कि जिस जबान में वे बोले थे वही हिन्दुस्तानी जबान है। इसी लिए शायद उन्हो ने 'दक्खिन हिन्द' को जुनूबी हिन्द कहा, क्योकि आप की राय में इस मुल्क मे 'दक्खिन' के मुकाबिले में जुनूब का कई हजार गुना अधिक प्रचार है।

नई हिन्दुस्तानी के कुछ नमूने

बिहार-प्रान्त में डा० अब्दुलहक़ के बनाये हुए मार्ग पर हिन्दुस्तानी जबान की लढ़िया ढकेली जा रही है। वहाँ इसी नई जबान में 'महमूद सीरीज' में

'राजेन्द्र रीडर्स' प्रकाशित हुई है। 'होनहार' नाम का एक मासिक पत्र भी प्रकाशित हो रहा है। प्रौढ़ शिक्षा प्रचार का जिस तरह का प्रयत्न हमारे सूबे में सरकार की ओर से किया जा रहा है, वैसे ही विहार में भी वहां की सरकार इस समय कर रही है। विहार में 'सयानों' के पढ़ने के लिये कुछ चार्ट तय्यार किये गये हैं। मैं नीचे इन्हीं चार्टों, पोथियों और 'होनहार' से उर्दू हिन्दुस्तानी जबान के कुछ नमूने देता हूँ ताकि पाठको को मालूम हो जाय कि हिन्दुस्तानी की आड़ में उर्दू फैलाने का कितना सगठित रूप से प्रयत्न किया जा रहा है।

आओ, पहले आपको 'सयानों' के चार्टों से 'दो सबक' पढ़ायें—

(१)

रऊफ बड़ा बदशौक था। जरा भी नहीं पढ़ता था। एक दिन वह सफर करने निकला। किसी मुकाम पर बहुत-सी बरफी खाकर बीमार पड़ा, रात का वक्त था, चिराग भी पास न था। उस मुकाम पर अपना कोई न था। ग़रीब बड़े अफ़-सोस में पड़ा। रोते रोते आँखें सुर्ख होगईं। जरा भी न सोया। खुदा खुदा करते रात कटी। घर बाहर के फर्क का पता चला। रऊफ की सारी शेखी भूल गई। ज्यों-त्यों घर पहुँचा। घर के सब लोग बहुत खफ़ा थे मगर उसे बीमार देखकर अफसोस करने लगे।

(२)

रशीद ने अपने भाई को खत लिखा। उसने उस खत में अपने तोते का हाल *लिखा था और यह भी बताया था कि वह तोता उसको किस तरह मिला?* तोते के लिए कर्ज लेकर उसे नैपाल की तरफ जाना पड़ा था। लौटकर उसने कर्ज का रुपया दे दिया। खास २ तोता आदमी को तरह बोल सकते हैं। तोता का नजर बदलना मशहूर है। लेकिन उसको कैद कर रखना एक बड़ा जुल्म है। उनको पकड़ने वाले एक खास जात के होते हैं। यही काम उनकी रोजी का जरिया है। मगर यह काम उनका रोजी के वास्ते जरूरी नहीं कहा जा सकता। किसी पर जुल्म करना ठीक नहीं। नैपाल की तरफ अजदहा भी पाया जाता है। अजदहे को लोग अजगर भी कहते हैं।

माननीय डा० सैयद महमूद बिहार प्रान्त के शिक्षा-मन्त्री हैं। आप उर्दू उर्फ हिन्दुस्तानी भाषा के प्रचार में दिलोजान से लगे हुए हैं। 'सयानों की पोथी' के कवर पर आपका एक सन्देश है, उसे कृपया देखियेः—

"पैगाम"

"अपने अनपढे ? भाइयो को कम से कम वक्त मे पढ़ा-लिखा कर उनकी जिन्दगी खुशगवार बनाना और उन्हे देश और समाज के मुफीद बनाना हमारा क़ौमी फर्ज है।"

(क्रमश.)

महिला-जगत्

मातृत्व की ओर

माता की पदवी प्राप्त करने वाली कन्याओं के जानने योग्य बातें

(ले०—रघुनाथप्रसाद पाठक)

[पाठ ४]

रविवार के दिन सुशीला बड़ी प्रसन्न रहती थी। उस दिन अन्य दिनो की अपेक्षा काम बहुत कम रहता था। यह भी उसकी प्रसन्नता का एक कारण था परन्तु मुख्य कारण यह था कि उस दिन उसके पिता घर पर रहते थे और घर मे मनोहर चहल पहल रहती थी। समाज मन्दिर जाने की तय्यारी, समाज में मित्रों से मिलना जुलना, उपदेश सुनना और शाम को सुशीला के पिता जी का घर के सब लोगों को बिठाकर उत्तमोत्तम शिक्षाएँ देना—इन सबसे रविवार का दिन बड़ा सुहावना रहता था। इस सब चहल-पहल का सर्वोत्तम भाग धर्म सकीर्तन था। सुशीला को गाने का बड़ा चाव था और उसका कण्ठ बड़ा मधुर और कोमल था। रविवार के दिन उसका हृदय सगीतमय रहता था। वह कभी कभी सोचा करती थी कि परमात्मा ने रविवार को और दिनों से ज्यादा मनोहर क्यों नहीं बनाया।

रविवार का प्रातःकाल था। दमयन्ती समाज-मन्दिर जाने के लिये तय्यार होकर सुशीला के घर आई। उसके कपड़े बहुत साफ़ थे और सलीके से पहने हुए थे। ऐसा प्रतीत होता था कि पिछले दिन का स्वच्छता का पाठ दमयन्ती के हृदय में घर कर गया है। समाज मन्दिर जाने में देर थी इसलिये सुशीला और दमयन्ती एक चटाई पर बैठ कर गाने लगीं। उन्होने ईश्वर-भक्ति का यह प्रसिद्ध भजन गाया :—

'पितु मात सहायक स्वामी सखा,
तुमही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और अधार नहीं,
तिनके तुम ही रखवारे हो॥

महाराज ! महा-महिमा तुम्हरी,
समझें विरले बुधवारे हो।
शुभ शान्ति-निकेतन प्रेम-निधे,
मन मन्दिर के उजियारे हो॥
यहि जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्रानन के तुम प्यारे हो।
तुमसों प्रभु पाय प्रताप हरो,
केहि के अब और सहारे हो॥

जब दोनों सखियाँ यह भजन गा रही थी, सुशीला की माता तथा कमला चित्रवत् खड़ी उसे सुन रही थीं।

गान समाप्त हो जाने पर कमला ने मुस्कराते हुए पूछा।

'बोलो किसी दूसरे पाठ के लिये तय्यार हो ?' दोनो लड़कियो ने तत्काल उत्तर दिया।

"हाँ ! हाँ ! जीजी हम तय्यार हैं।"

'इस बार मैं तुम दोनों से कुछ मदद लेना चाहती हूँ। मैं तुम्हें एक धर्म पुस्तक देती हूँ। इसमें से तुम लोगो को कुछ छाटना और अलग २ कागज़ों पर लिखना होगा। जाओ कागज़ और पेन्सिल ले आओ।'

'यह पाठ किस विषय पर होगा। यह कहती हुई सुशीला कागज़ और पेन्सिल लेने के लिये दौड़ी।'

कमला ने कहा 'यह पाठ हमारे हाथों, पैरों, कानों, आंखों और होठों के सम्बन्ध में होगा। सुशीला, तुम इस पुस्तक में से होठों के सम्बन्ध में बुरी बातें छांटकर अपने कागज़ पर लिखलो और दमयन्ती तुम इनके सम्बन्ध में अच्छी अच्छी बातें छांटलो। यह पुस्तक बहुत बड़ी है इसलिये तुम लोगों के काम को आसान करने के लिये मैं खास २ स्थलों का निर्देश किये देती हूँ। अध्याय ५, ६ और ७ में से छांटलो।

शीला तुम ५ वें अध्याय के पृष्ठ ११ की छठी लाइन को देखो और बताओ वह वाक्य बुरा है या नहीं ?

'चापलूसी के वचन ? निस्सन्देह जीजी !! ये बुरे वचन हैं।'

कमला ने कहा 'शीला इस वाक्य को तुम अपने कागज़ पर लिखलो।

दमयन्ती ! तुम ७ वीं लाइन का अन्तिम वाक्य देखो। यह वाक्य वाणी के अच्छे प्रयोग के सम्बन्ध में है।' दमयन्ती ने वाक्य देखकर कहा, 'प्रभो ! मेरी वाणी तेरी स्तुति करे।' जीजी !! यह वाक्य बहुत अच्छा है।' कमला ने कहा 'दमयन्ती ! इस को तुम अपने काग़ज़ पर लिखलो और इसी प्रकार तुम दोनों अच्छे और बुरे वाक्य छाटलो।'

इसी बीच में समाज जाने का समय हो गया और सब लोग समाज मन्दिर को चले गये।

दोपहर के बाद खाने इत्यादि से निश्चिन्त होकर और दमयन्ती के आजाने पर कमला और सुशीला अपना पाठ लेकर बैठ गईं। पाठ शुरू होने से पूर्व उन्होंने फुलीसकेप साइज के कई २ पृष्ठ भर लिये थे।

कमला उन काग़ज़ों को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और कहा 'आओ हम इन्हें एक सिलसिले में ले आएँ। ऐसा करने से हम एक अत्यन्त शिक्षाप्रद लेख लिख डालेंगे। परन्तु प्रारम्भ करने से पूर्व मै रास्ते की आज की एक घटना की तरफ़ तुम लोगों का ध्यान खींचती हूँ। तुम लोगों ने देखा होगा कि बाजार मे दो बहनें आपस में लड़ रही थीं। एक दूसरे को गन्दी गालियां दे रही थी और बुरा-भला जो मुँह मे आता था बक रही थी। वे अपने हाथों और मुट्ठियों को एक दूसरे की तरफ फेंक रही थी। दमयन्ती ! मैंने तुम्हारी सूची में एक वाक्य देखा है जो उन दोनों पर पूरा पूरा घटता है। तेज छुरी की नाईं वे अपनी वाणियों का प्रयोग कर रही थी। यही बात है न ?

दमयन्ती ने उस वाक्य को पढ़कर कहा 'जीजी !! आप ठीक कहती है।'

कमला ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा 'इस प्रकार के कटुवचनों के प्रयोग के हम बहुधा अपराधी होते हैं। क्रोध की दशा में दूसरे लोगो को कटुवचन कहना बड़ा सरल है परन्तु बाद में हमें इन वाक्यों के लिये बहुत पछताना और लज्जित होना पड़ता है। मैं ऐसी बहनों को जानती हूँ जो एक दूसरे को बहुत प्यार करती थीं और आपस में बड़े प्रेम से रहती थीं। दुर्भाग्य से जरा सी बात पर उनमें मन-मुटाव हुआ। तीखे और कटुवचनों के प्रयोग ने उन्हें एक दूसरे से ऐसा अलग कर दिया मानो उनमें आपस में कभी प्रेम रहा ही न था। तभी तो कहा जाता है 'तलवार का घाव भर आता है पर बात का घाव मुश्किल से भरता है।' यह बात हमें पल्ले में बांध लेनी चाहिये कि गुस्से के वचनों से गुस्सा बढ़ता है और मामला

घटने के बजाय बढ़ता है। मामले को शान्त करने के लिये क्रोध का सामना क्रोध से कभी न करना चाहिये। मधुर और कोमल शब्दों से हम अपने प्रतिपक्षी पर न केवल विजय प्राप्त कर सकते हैं वरन् उसे लज्जित भी कर सकते हैं।"

कमला ने पूछा 'शीला! क्या तुम्हारे पास झूठे वचनों के सम्बन्ध में कुछ नोट किया हुआ है ?'

सुशीला ने उत्तर दिया 'मेरे पास बहुत कुछ नोट किया हुआ है।' इतना ही नहीं वरन् मेरे पास चापलूसी, छल-कपट और निन्दा इत्यादि के बुरे वचनों के सम्बन्ध में भी बहुत कुछ मसाला है। जीजी !! क्या ईश्वर इन चीजों से घृणा नहीं करता ?"

कमला ने कहा 'क्यों नहीं ? इन बुरी चीजो से ईश्वर बहुत घृणा करता है। झूठ को लेखो! झूठ बड़ा भयङ्कर जहर होता है। यह हमारे शरीर और मन को गन्दा कर देता है। हमें जीवन में सत्य और ईमानदारी धारण करनी चाहिये। ईश्वर को प्रसन्न करने और अपने जीवन को सुखी बनाने का यह सर्वोत्तम मार्ग है।

बहुत से लोगो का खयाल है कि कभी २ बिना झूठ के काम नहीं चलता। वे लोग उदाहरण दिया करते हैं कि यदि माँ अपने अबोध बच्चे और डाक्टर अपने रोगी के प्रति सत्य पर दृढ़ रहे तो उनका कार्य नहीं चल सकता। ये लोग सत्य भाषण का ठीक २ अर्थ न जानने के कारण ही ऐसा कहते और मानते प्रतीत होते हैं। वे बातें झूठ में शामिल नहीं हैं। सत्य के तक़ाजे पर हमें सत्य ही बोलना चाहिये। झूठ कदापि नहीं बोलना चाहिये।

'मनुष्य के मुँह पर मीठी और चिकनी-चुपड़ी बातें करना तथा पीठ पीछे उससे भिन्न बातें करना चापलूसी कहलाती है। दूसरों के साथ ऐसे वायदे करना जिन्हें हम पूरा करना नहीं चाहते होते, दूसरों के सामने अपने को ऐसा प्रस्तुत करने की कोशिश करना जो वास्तव में हम नहीं होते और मन में कुछ और वचन में कुछ और होना छल-कपट कहलाता है। पीठ पीछे दूसरों की बुराई करना निन्दा कहलाती है। हम इन बुराइयों के दोषी हैं या नहीं ? इस प्रश्न का उत्तर मैं तुम लोगों से नहीं माँगती हूँ केवल तुम लोगों के विचार के लिये यह विषय छोड़ती हूँ।'

'मेरे जीवन में छल-कपट की बहुत सी भूलें हुई हैं। कुछ साधारण और कुछ भयङ्कर। कभी २ उन्हें याद करके मैं व्याकुल हो जाती हूँ और ईश्वर से प्रार्थना किया करती हूँ कि वह आगे अपनी असीम दया से मुझे उन भूलों से बचाए।'

यदि हम वाणी के विष से अपने को पवित्र नहीं रखते है तो हम भले आदमी नहीं हैं। लोगों को हमारे व्यवहार और वचनो से यह विदित होते देर न लगेगी कि हम सच्चे और ईमानदार हैं या नहीं और वे लोग हम पर विश्वास कर सकते हैं या नहीं ?'

हमारी धर्म पुस्तको में उत्तम व्यवहार की बहुत उत्तम शिक्षाएँ पाई जाती हैं। हमारे मन, वचन और कर्म में सादृश्य होना चाहिये। व्यवहार का यह आदर्श सर्व श्रेष्ठ समझा जाता है। हमें प्रिय और सत्य बातें कहनी चाहिएँ। अप्रिय और सत्य बातें भी कहनी हों तो ढङ्ग से कहनी चाहिएँ।"

'सुशीला अब हमें दूसरे प्रकार के वचनों को ले लेना चाहिये।'

सुशीला ने कहा 'जीजी !! अब अपवित्र वचनो को ले लेना चाहिये।

कमला ने कहा 'ठीक ! अपवित्र वचनो के सम्बन्ध मे बहुत कुछ कहे जाने की जरूरत है। यह विषय भी अच्छा है। यह इससे पूर्व के हमारे स्वच्छता के पाठ को पुनः शुरू करने के सदृश है। यही बात है न ? गन्दे हाथ-पैरों और कपड़ों के समान गन्दे मुँह से गन्दे शब्द निकला करते हैं। गन्दे वचन भी एक प्रकार का विष होता है। पिछले एक पाठ में मैंने अच्छी माता का जिक्र किया था, शायद तुम्हे याद होगा। एक दिन उसके लड़के के मुँह से कोई गाली निकली। उसने लड़के को बुरा-भला नही कहा और न मारा-पीटा ही। वरन् साबुन से उसकी जीभ धो डाली। इस प्रकार गाली की गन्दगी का लड़के को वास्तविक ज्ञान हो गया।

एक बार जब मैं छोटी थी, अपनी एक सहेली के साथ सैर के लिये गई। चलते २ हम दोनों एक तालाब के किनारे पहुँचे। किनारे पर हरी २ घास और खूबसूरत फूल खिले थे। तालाब का पानी शान्त और निर्मल था। हमारे मन में उसमें घुसने की शरारत सूझी। ज्यों ही हम पानी में घुसे त्यो ही हमें मालूम हुआ कि तालाब में बड़ी मोटी और चिकनी कीचड़ जमी हुई है। हम जल्द ही तालाब में से बाहर निकल आये और कठिनाई से अपने पैर धो पाए। बाहर आने के बाद हमने देखा कि पैर धोने से, पानी के हिलने-जुलने से तालाब का तमाम पानी गन्दा होगया है।'

'ठीक इस तालाब जैसी कई बहनों को मैं जानती हूँ। वे देखने में बड़ी आकर्षक और सुन्दर होती हैं परन्तु गुस्से की हालत में वे गन्दगी और कुरूपता की सजीव मूर्ति बन जाती हैं। शायद ही कोई गन्दा शब्द हो जो उनके मुँह से न

निकलता हो। उस समय वे अपने हृदय की तली में पड़ी हुई सब कीचड़ और गन्दगी को बाहर निकाल देती हैं।'

ऐसी भी बहनें हैं जो बड़ी शान्त और सभ्य होती हैं परन्तु वे एकान्त में दूसरी बहनो से अश्लील और भद्दी मजाक करती हैं। दूसरों से सुनकर वे ऐसे शब्दों का उच्चारण करती हैं जो कानों को बड़े अप्रिय मालूम होते हैं साथ ही वे पवित्र चीजों का महा मखौल उड़ाती हैं। मैं बहुत चाहा करती हूँ कि ऐसी सब बहनों को लेकर उस थाली की तरह उनके हृदयों की स्याही और धब्बों को साफ करके चमका दूँ। मेरी यह भी इच्छा होती है कि मैं उन्हें यह भी दर्शा दूँ कि ये सस्कार उनके तमाम जीवन को बिगाड़ देते हैं। बिगड़े हुए सस्कारों का दूर होना बड़ा कठिन होता है। ऐसी बहनें भले ही बाद मे स्वच्छ और पवित्र बन जायँ, परन्तु इन बुरी बातों के सस्कार जो उनके कोमल हृदय पर पड़ जाते हैं वे प्रायः बने ही रहते हैं।

'जो बहनें ऐसी बातों का सुनना पसन्द करती हैं वे भी सर्वथा इन संस्कारों से शून्य नहीं होती हैं। यदि संस्कारों की छाप उनके हृदयों पर न हो तो वे क्यों कर ऐसी बातों का सुनना गवारा कर सकती हैं और किसी को उनके सामने गन्दी बातें कहने का क्योंकर साहस हो सकता है ?

"एक दिन जब मैं कालेज में पढ़ती थी। अपनी सहेली वीणा से बातचीत कर रही थी। हमारी बातचीत में दो और बहिने आकर शामिल हो गईं। आने से पहिले वे आपस में हसी मजाक कर रहीं थीं। उन मे से एक ने दूसरी से कहा 'बहन! वह बात इन दोनो बहनों को भी सुनाओ' यह सुनकर वह बहन एक दम गम्भीर हो गई और कहा 'चल हट, कुमारी वीणा के सामने वह बात कहने योग्य नहीं है।' वस्तुत कुमारी वीणा का यह सस्कार था। वे दोनों जानती थीं कि वीणा का दिमाग बड़ा पवित्र और शुद्ध है। किसी गंदी बात का सुनना उसे गवारा (सह्य) न होगा इसी लिये उस बात को उस के सामने कहने में उन्हें शर्म अनुभव हुई।

अब समय खत्म हो रहा है। मैं देखती हूँ तुम्हारी सूची में घमंड तथा शेखी इत्यादि के वचनों के सम्बन्ध में बहुत कुछ है। परन्तु उन्हें अब मैं नहीं लेती हूँ। किसी दूसरे समय उनकी चर्चा की जायगी।

'दमयन्ती! तुम अपनी सूची को देखो और वाणी के अच्छे प्रयोग के सम्बन्ध में वाक्य पढ़ो। हम ने पहले क्रोध के वचनों की चर्चा की थी। तुम अपनी सूची को देखकर बताओ कि उन के विरोध में तुम्हारे पास कोई वाक्य है या नहीं ?

दमयन्ती ने कुछ देर तक अपनी सूची को देखा और देखकर कहा, 'मेरी सूची में कई वाक्य हैं। 'कोमल वचन पत्थर को भी पिघला देते हैं' देखो एक वाक्य यह है' कमला ने कहा।

'ठीक ! इन वचनों के सम्बन्ध में इस से पूर्व हम काफी चर्चा कर चुके हैं।'

'अब छल कपट, झूठ और मक्कारी इत्यादि बुरे वचनों को एक साथ लेलें और उनके विरोध में उत्तम वचनों को छाँट लें।'

कमला दमयन्ती की सूची अपने हाथ में लेकर पढ़ने लगी। 'सत्य मनुष्य के जीवन का प्रकाश है।' 'सत्य परमात्मा का स्वरूप है।' हमें मन, वचन और कर्म में सत्य का व्यवहार करना चाहिए। सत्य से शुद्ध करके वचन कहने चाहियें' सत्य के सम्बन्ध में इन वाक्यों को पढ़ते २ कमला एक दम ठहर गई।

सुशीला ने पूछा 'जीजी ! आप पढ़ते २ क्यों रुक गई हैं ?'

कमला ने कहा 'शील ! इस समय मुझे महाराज हरिश्चन्द्र की अमर कहानी याद आगई है। शायद तुम लोगों ने भी उनकी कहानी पढ़ी होगी। अपनी सच्चाई और शुद्ध व्यवहार के कारण वे अपना नाम सदा के लिए अमर कर गए हैं। सत्य की रक्षा के लिए उनके कष्टों को याद करके मैं अनेक बार रोई हूँ।'

दमयन्ती ने कहा 'जीजी ! हमने महाराज हरिश्चन्द्र की कहानी पढ़ी है। उनकी वह प्रतिज्ञा हमें याद है :—

चन्द्र टरै, सूरज टरै, टरै जगत् व्यवहार।
पै सत्य हरिश्चन्द्र का टरै न सत्य विचार॥

सुशीला ने कहा 'जीजी ! मैंने कल एक मोटर ड्राइवर की एक बड़ी अच्छी कहानी पढ़ी है।

कमला ने कहा ' तुम लोगों ने स्कूल की किताबों में सच्चाई और ईमानदारी की बहुत सी कहानियां पढ़ी होंगी। शायद उस सच्चे लड़के की कहानी पढ़ी हो जिसकी मां ने उसके कोट के अस्तर में रुपए सी दिए थे और जिसकी सच्चाई ने डाकुओं को साधु बना दिया था।' 'शील ! जरा मैं तुम्हारी कहानी भी सुनूं।' सुशीला ने इस प्रकार अपनी कहानी सुनानी प्रारम्भ की।

'एक ड्राइवर किराए की मोटर चलाता था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि उसके पास अपनी मोटर हो जाय। परन्तु पैसा पास में न होने के कारण वह अपनी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकता था। एक दिन एक अमीर स्त्री ने उसकी मोटर

किराए पर ली और यात्रा की समाप्ति पर मोटर छोड़ते वक्त वह अपना रुपयो का बटुआ गाड़ी मे भूल गई। ड्राइवर ने बटुआ खोलकर देखा तो उसमे इसे २०००) के करेन्सी नोट मिले। वह चाहता तो उस रुपए से मोटर खरीदकर अपनी इच्छा पूरी कर सकता था। परन्तु उसने ऐसा नही किया। उस ने स्त्री की इधर उधर तलाश की परन्तु उसका कहीं पता न लगा। अन्त मे उसने अखबार का सहारा लिया और पता लगने पर उस स्त्री को वह बटुआ भेज दिया। उसने ड्राइवर की ईमानदारी पर प्रसन्न होकर उसे २००) इनाम दिए और अखबारो मे इस इनाम की खबर छपवादी। ड्राइवर की ईमानदारी पर प्रसन्न होकर एक दूसरे भद्र पुरुष ने ५००) बतौर इनाम के ड्राइवर को भेज दिए और यह खबर भी अखबारो मे छपा दी। एक मोटर कम्पनी के मालिक ने इस सब घटना का हाल सुनकर अपने कार खाने की एक अच्छी मोटर उस ड्राइवर के पास भेजकर अखबारो मे छपवा दिया कि ड्राइवर की ईमानदारी का ७००) का इनाम अपर्य्याप्त है उसको पूरा करने के लिए मैने २०००) के मूल्य की मोटर उस ड्राइवर के पास भिजवादी है। इस प्रकार अपनी ईमानदारी के कारण ड्राइवर की इच्छा पूरी हो गई।

कमला ने प्रसन्न होकर कहा, 'ठीक! अब तुम लोगो को सचाई और ईमान-दारी के सम्बन्ध मे और कुछ बतलाए जाने की जरूरत नही रही।'

तुम लोगो न इस पुस्तक मे पढ़ा होगा कि वाणी, हाथों, पैरो, आँखो और कानो इत्यादि इन्द्रियो की शुद्धि और बल के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई है।

प्रार्थना का भाव यह है कि हमारी आँखे, हाथ, पैर और कान इत्यादि बल वान और यशवाले हो। बल के साथ यश की शर्त बड़ी महत्वपूर्ण है। इन्द्रियों का बलवान होना तो सहज ही मे समझ मे आ सकता है परन्तु उनका यशवान होना ज़रा समझने की बात है। एक तन्दुरुस्त और अत्यन्त बलवान् व्यक्ति है। वह अपनी ताक़त को कमजोरो को सताने और उन पर अत्याचार करने मे खर्च करता है, यह उसकी ताक़त का बुरा इस्तेमाल है। इससे उसकी इन्द्रियाँ यशवाली इन्द्रियाँ नही कही जा सकती है। यशवाली तभी कही जा सकती हैं जब वे निर्बलो की रक्षा मे लगे। हाथ कितने ही अच्छे और बलिष्ठ क्यो न हो यदि वे गरीबो और कमजोरो की रक्षा तथा गिरे हुओं को ऊपर उठाने मे काम में नही आते हैं तो उनका अच्छा और बलवान होना बेकार है। हमारे कान यदि बुरी और निन्दा की बातो को सुनने से इन्कार नहीं करते हैं तो उनके सुडौल होने से क्या लाभ? हमारी आँखे यदि

पराई बहू बेटियों को बुरी दृष्टि से देखती हैं और दूसरो की सुख-समृद्धि को नहीं देख सकती हैं तो उनका बड़ा और खूबसूरत होना बेकार है। हमारी जिव्हा से यदि शुद्ध और मधुर वचन नहीं निकलते हैं तो उसका होना न होना समान है। हमारे पैर यदि दूसरों के दुःखो को दूर करने के लिए नहीं दौड़ते है तो उनका बलवान होना व्यर्थ है।'

अब पिताजी ने अपनी शिक्षा की पुस्तक खोल ली है और वे हमारी प्रतीक्षा मे हैं, चलो उनके पास चलें और चलने से पहले प्रार्थना करें —

"प्रभो! आप हमारे हृदय के स्वामी हैं! हमारे हृदय की प्रत्येक बात को जानते हैं! प्रभो! हमारे हृदयों को शुद्ध और पवित्र बनाओ! प्रभो! हमें मन वचन और कर्म सब ओर से पवित्र बनाओ! प्रभो! हमें शक्ति दो, हमारे हाथ, पैर, कान, नाक, जीभ इत्यादि इन्द्रियाँ यशरूपी तथा बलवान बनें!" 'एवमस्तु'

सुमन-संचय

महात्मा नानक के जीवन की एक घटना

एक बार महात्मा नानक अपने एक भक्त के साथ किसी ग्राम में पहुँचे। ग्राम के लोगों ने उनके साथ बड़ा दुर्व्यवहार किया। महात्मा नानक जब उस ग्राम से विदा होने लगे तो उनके उस भक्त ने ग्राम वालों के दुर्व्यवहार पर बड़ा दुःख और रोष प्रकट किया। महात्मा ने भक्त से कहा कि रोष करने की आवश्यकता नहीं है, परमात्मा से प्रार्थना करो कि यह गांव सदैव बसा रहे। दूसरे दिन महात्मा नानक दूसरे ग्राम में गए। वहां के लोगों ने उनके साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया। जब उस ग्राम से विदा होने लगे तो महात्मा नानक ने भक्त से कहा कि परमात्मा से प्रार्थना करो कि यह ग्राम शीघ्र नष्ट हो जाय। इस पर भक्त को बड़ा आश्चर्य हुआ और हाथ जोड़ कर बोला "महाराज! जिस ग्राम के लोगों ने आपके साथ बुरा व्यवहार किया था उसको तो आप बसा हुआ देखना चाहते हैं परन्तु जिस ग्राम के लोगों ने आपके साथ अच्छा व्यवहार किया आप उसके उजड़ने की कामना करते हैं यह कहां का न्याय है। महात्मा ने उत्तर दिया 'उस बुरे ग्राम के लोगों को उसी ग्राम में रहना चाहिए। यदि वे बाहर गए तो अन्यत्र गन्दगी फैलायेंगे और इस ग्राम के लोग इसे छोड़ कर बाहर जायेंगे तो अच्छाई को फैलायेंगे।" यह सुनकर भक्त चुप हो गया।

सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण

चैतन्य एक समय अपने कुछ शिष्यों और अनुयायियों के साथ बंगाल के एक नगर में गए और वाटिका में अपना आसन जमाया। नगर के लोग उनके, दर्शनों के लिए आने लगे। उन्होंने इन आने वालों से एक प्रश्न किया कि तुम्हारे नगर में सबसे अधिक खराब आदमी कौन है? प्रत्येक ने एक ही उत्तर दिया कि मधाई नाम का एक व्यक्ति उनके नगर में सबसे अधिक बुरा और

प्राय: सभी के लिए कष्टों का कारण है। चैतन्य ने अपने दो शिष्यों को भेजा कि जाओ मघाई को बुला लाओ। दोनो शिष्य मघाई के पास पहुँचे। वह उस समय अपने किसी मित्र के साथ बैठा हुआ शराब पी रहा था। जब शिष्य ने गुरु का सन्देश उसे दिया तो उसने एक खाली बोतल उसके सिर में दे मारी। सिर में जख्म हो गया और खून निकलने लग गया। शिष्यो ने गुरु के पास आकर घटना सुना दी। गुरु ने अपने आठ दश शिष्यों को भेजा कि जाओ और यदि मघाई खुशी से न आए तो उसे पकड़ कर ले आओ। इस प्रकार पकड़ा हुआ मघाई चैतन्य के समीप पहुँचा। चैतन्य ने एक अच्छा गुद गुदा फर्श बिछवा रखा था। मघाई उसी फर्श पर लिटाया गया। वह सोच रहा था कि उसे दण्ड मिलेगा परन्तु देखता क्या है चैतन्य उसके पैरो के पास बैठ गए और उन्हों ने अपने हाथ उसके पैर पर इस प्रकार रखे कि जैसे कोई किसी के पैर दबाता है। मघाई घबरा कर उठ बैठा। उसका हृदय उलट पलट हो गया और वह चैतन्य के हाथों को पैर में हटा कर अश्रु पूर्ण नेत्रों से चैतन्य से कहने लगा "महाराज, मै बड़ा पातकी हूँ। मैने अनेक अपराध किए है। आपने क्यों अपने पवित्र हाथों को मेरे शरीर से लगा कर अपवित्र किया। अब यह मघाई पहला मघाई नही रहा था। अब उसके भीतर आत्म ग्लानि उत्पन्न हो चुकी थी और वह अपने दुष्कृत्यों से घृणा करने लगा था। बाद से यही मघाई चैतन्य का सर्व श्रेष्ठ शिष्य बना।

रामानन्द और अन्त्यज

गुरु रामानन्द के शिष्यो मे एक अन्त्यज था इस बात से उनका एक ब्राह्मण शिष्य बड़ा असन्तुष्ट रहता था। एक दिन वह गुरु के पास गया और कहा "महाराज ! इसे यहां से निकाल दो। रामानन्द ने इन्कार कर दिया और कहा "यह बड़ा गरीब है। केवल अन्त्यज होने के कारण मैं इसे नहीं निकाल सकता हूँ। क्या तुम्हे इसके विरुद्ध कोई शिकायत है ?" ब्राह्मण शिष्य ने उत्तर दिया 'नही'। परन्तु यह "अन्त्यज" है क्या यह पर्य्याप्त नहीं है।" रामानन्द ने कहा "परमात्मा की दृष्टि में कोई अन्त्यज नहीं है।" ब्राह्मण शिष्य ने कहा "तो यह आयगा या मैं जाऊंगा आप इन दोनो में से क्या पसन्द करते हैं ?" रामानन्द ने कहा "मैं अन्त्यज को अपने यहा रखूँगा। मुझे दुख है कि तुम यहा

से जाना अपना कर्त्तव्य समझते हो।" तुम्हे दूसरा गुरु मिल जायगा परन्तु उसे न मिलेगा अतः मुझे उसे अपने पास रखना चाहिये।' इस पर ब्राह्मण शिष्य वहाँ से चला गया और उसके कट्टरपन्थी मित्रो ने जो उसे भड़काया करते थे उसकी बड़ी प्रशंसा की। एक दो दिन तक आस पास और पास पड़ौस मे ब्राह्मण शिष्य की वाह २ होती रही परन्तु निस्सार होने के कारण शीघ्र ही समाप्त होगई। गुरु के पास से चले जाने के १५-१६ दिन बाद ही लोग उसे भूल गए। इसके एक मास बाद ग्राम के बड़े लोगों ने गुरु रामानन्द को तथा उनके शिष्यो को एक उत्सव मे आमन्त्रित किया। उसमे उनका अन्त्यज शिष्य भी शामिल था।

ब्राह्मण शिष्य को आमंत्रित नहीं किया गया इसलिए कि कहीं गुरु रामानन्द आना अस्वीकार न कर दें। इस घटना से ब्राह्मण शिष्य का भ्रम दूर हो गया और उसे ज्ञान का बोध हुआ। वह गुरु के पास गया और उनके चरणो मे लेट कर अपनी भूल के लिए क्षमा मागी। गुरु ने तत्काल अपने शिष्य को क्षमा कर दिया।

सात्विक दान

प्रेमसिंह नामक एक बार फौज के एक हिन्दुस्तानी अफसर छुट्टी पर अपने घर आ रहे थे। वे अपनी उदारता और दान शीलता के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। रास्ते में एक नदी पड़ी। वहाँ विश्राम करने के लिये बैठ गये। उसी जगह एक ब्राह्मण सन्ध्या कर रहा था। सन्ध्या से निवृत्त होने पर उस अफसर ने ब्राह्मण का परिचय पूछा। ब्राह्मण ने उत्तर दिया "प्रेमसिंह के पास जा रहा हूँ। मै निर्धन हू। कन्या के विवाह के लिये उनसे कुछ द्रव्य की याचना करूगा। सुनते है वे बड़े दयालु और दानी है। अफसर ने कहा "प्रेमसिंह इस समय छावनी में नहीं हैं। वे छुट्टी पर अपने घर गये है। तुम्हारा छावनी मे जाना व्यर्थ है। इस उत्तर को सुनकर ब्राह्मण बहुत निराश हुआ और बोला "क्या आपको उनके गाँव का नाम मालूम है। मै वहीं जाने का परिश्रम करूगा। प्रेमसिंह ने कहा "मुझे उनके ग्राम का नाम ज्ञात नहीं है।" यह सुनकर ब्राह्मण बहुत दुखी हुआ और उठ कर चल दिया प्रेमसिंह ने तत्काल अपनी जेब से १००) रु० का नोट निकाल कर ब्राह्मण के हाथ मे दिया और कहा "जाओ अपनी कन्या का विवाह करो। गरीब ब्राह्मण ने कृतज्ञता के साथ १००) रु० ग्रहण किए और पूछा "महाराज आप कौन हैं? कृपा करके अपना परिचय दे।' प्रेमसिंह चुप रहे और ब्राह्मण के बार २ पूछने और आग्रह करने पर भी अपना परिचय न दिया। ब्राह्मण महोदय उन्हे मन ही मन आशीर्वाद देते हुए चले गए। सचमुच यह सर्वोत्कृष्ट दान है।

संस्कृत की अवहेलना

एक जिज्ञासु की जिज्ञासा और महात्मा गान्धी का समाधान

प्रश्न—क्या आपको ज्ञान है कि पटना विश्वविद्यालय ने सस्कृत क अध्ययन का क्रियात्मक रूप मे बहिष्कार कर दिया है ? क्या आप इस कार्यवाही को पसन्द करते है ? यदि नही तो क्या 'हरिजन" मे आप अपनी सम्मति प्रगट करेगे ?

उत्तर—पटना विश्वविद्यालय ने क्या किया है यह मुझे ज्ञात नही है। परन्तु मै आपके साथ पूर्णतया सहमत हूँ कि सस्कृत की पढ़ाई की बड़ी खेद-जनक अवहेलना हो रही है। मै उस पीढ़ी का हूँ जिसकी प्राचीन भाषाओ के अध्ययन मे आस्था थी। मेरा यह विश्वास नहीं है कि इस प्रकार का अध्ययन व्यर्थ है और इस मे समय बर्बाद होता है। मेरा तो यह विश्वास है कि सस्कृत के अध्ययन म वर्तमान् भाषाओ के अध्ययन मे सहायता मिलती है। जहां तक भारत वष का सम्बन्ध है, अन्य किसी प्राचीन भाषा की अपेक्षा सस्कृत के सम्बन्ध मे यह बात ज्यादा सच्ची है और प्रत्येक राष्ट्रवादी को संस्कृत का अध्ययन करना चाहिये क्योकि इसके अध्ययन से प्रान्तीय भाषाओं का अध्ययन अन्य उपायो की अपेक्षा सरल हो जाता है। यह वह भाषा है जिसमे हमारे पूर्वज सोचते और अपने विचार प्रगट करते थे। कोई भी हिन्दू लड़का व लड़की संस्कृत के मौलिक ज्ञान से शून्य नही होना चाहिये, यदि उसे अपने धर्म की आन्तरिक भावना को ग्रहण करना हो। इस प्रकार गायत्री का अनुवाद नही हो सकता। किसी भी अनुवाद मे उसके मौलिक सगीत की रक्षा नही हो सकती। जो कुछ मैंने ऊपर कहा है गायत्री उसका एक उदाहरण है।

"मैं सिगरेट कैसे छोड़ूं... ... ?"

[डा० इन्द्रसेन]

इस लेख के लेखक श्री डा० इन्द्रसेन जी दार्शनिक प्रकृति के सज्जन हैं । जब वे कुछ कहते या लिखते हैं तो उसमें अधिक सार रहता है और उनकी शैली शिक्षाप्रद होती है । निम्न लेख सिगरेट पीने वालों तथा उसको छोड़ने वालों के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा । सिगरेट पीने का बुरा विष प्रतिदिन फैल रहा है । इससे छुटकारा चाहने वालों को ऐसे क्रियात्मक उपाय बतलाने चाहिएं जिनको समझकर वे इस बुराई से छुटकारा पा सकें । यह लेख ऐसे व्यक्तियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा । सम्पादक)

अभी थोडे ही दिनों की बात है कि रोज की तरह मै कालेज स घर की ओर लौट रहा था कि डाकखाने की ओर से एक साइकल-सवार विद्यार्थी मेरे साथ आ मिला। इस मे कुछ असाधारण बात न थी। क्योंकि नई देहली का सफर लम्बा होता है, साथी से जरा जल्दी कट जाता है। उसका मिलना साधारण था, पर मिलने के ढंग मे कुछ असाधारणता बेशक थी। खैर, वह आया और साथ होने के थोड़ी देर बाद ही बिना किसी विशेष भूमिका के, उसने कुछ सकोच से, पर तीव्र जिज्ञासा के भाव मे प्रश्न किया—'मै सिगरेट कैसे छोड़ूँ, डाक्टर साहब ?" प्रश्न मैंने सुना और उसकी ओर ताकता रह गया। बड़ा आश्चर्य हुआ, आनन्द भी हुआ कि किसी ने ऐसी जिज्ञासा प्रगट की है। परन्तु जैसी एक बिना किसी सहारे लटके हुये मनुष्य की दशा होती है उसी तरह बात का आगा पीछा मालूम न होने से, मेरी भी हुई। दो तीन मिनिट तो अन्दर ही अन्दर हाथ पांव चलाता रहा, पर सफल न हुआ। साथ ही अपने प्रश्नकर्त्ता को उत्तर के लिए बहुत देर के लिये प्रतीक्षा मे रखना भी अनुचित था। इस लिए कुछ और सोचने के लिए समय लेने के बहाने अथवा बात समझने के लिए, उस से कुछ सहारा पाने के लिए मैंने पूछा "आप सिगरेट क्यों छोड़ना चाहते हैं ?"

"इसमें पैसे बहुत खर्च हो जाते हैं, दूसरे मुझे सदा यही चिन्ता रहती है कि कहीं मेरा सिगरेट पीना घर वालों को पता न लग जाय।"

"अच्छा ! आप सिगरेट कब से पीते हैं ?"

"कोई दो तीन वर्ष से। परन्तु शुरू २ में बहुत अरसे तक तो जब कभी कोई मित्र सिगरेट पेश करता तभी पीता, वैसे अपने आप कभी नहीं पीता था। अब तो लगभग छ मास से आदत के जोर ही पीता हूँ। खाना खाने के बाद सिगरेट की जरूरत महसूस होती है। ऐसे ही रात को पढ़ते समय भी पीता हूँ। इस से नींद दूर होकर पढ़ाई अच्छी हो जाती है।"

"आप को सिगरेट से इतने फ़ायदे हैं, फिर इसे आप छोड़ते क्यों है ?" मैंने फिर सवाल किया।

"नहीं! खर्चा बहुत हो जाता है जी, जो जेब-खर्च मिलता है वह बहुत सारा इसी में लग जाता है। 'और' खाने पीने के लिए कुछ बचता ही नहीं। फिर घर वाले जब पूछते हैं कि तुम जेब-खर्च का क्या करते हो तब झूठ मूठ बात बनाकर कहनी पड़ती है। इस लिए छोड़ तो मै इसे देना चाहता हूँ, पर सवाल सारा यह है कि छोड़ूँ तो कैसे और यह छूट भी सकता है या नहीं ?"

जब नये सिरे से यह जानकर सन्तोष हुआ, कि उनकी सिगरेट छोड़ने की इच्छा तो पक्की है, तब तो मैंने उन्हें आश्वासन देते हुए समझाना शुरू किया।

छूटने को तो छूट ही सकता है, परन्तु आप तो मनो विज्ञान के विद्यार्थी हैं। आप जानते ही हैं कि जबरदस्ती कोई आदत रोकी नहीं जा सकती। ऐसा करना भी अनुचित होता है। इस से परिश्रम घोर पड़ता है और फिर भी मन की इच्छा दूर नहीं होती। बल्कि किसी अभ्यास के दूर करने का ठीक और सफल उपाय वही हो सकता है जिस से कि उस अभ्यास के पीछे जो गहरी मनोभावना काम कर रही है उसे दूर कर दिया जाय और जब वह भावना दूर हो जायगी तो स्पष्ट ही है वह कर्म अपने आप ही दूर हो जायगा। इस वास्ते यदि आप सिगरेट पीने के अभ्यास को छोड़ना चाहते हैं तो पहिले इस अभ्यास के गुप्त कारण-रूप मनो-भावना को खोज के निकालना पड़ेगा। उसके पता लग जाने मात्र से भी इस अभ्यास के दूर करने में बड़ी सहायता मिलेगी।'

"अच्छा, जब आपने सिगरेट पीनाशुरू किया, तब वास्तव में आपके मन का प्रेरक भाव क्या था ?"

"शुरू में, मैं समझता हूँ, सिगरेट पीना एक शानदार चीज मालूम देती थी। मुंह में सिगरेट पकड़े हुए इधर उधर चलते फिरना, सिगरेट के ऊपर से, दाईं बाईं तरफ, कभी इसको कभी उसको देख लेना, फिर कभी कभी जरा मुंह

ऊंचा करके धुआं छोड़ देना। तथा वह धुआं किस प्रकार सुन्दर गोल गोल चक्करो म ऊपर को चढता जाता ह, यह सब देखने मे आनन्द मानना। सारी चीज शान-दार जचती थी। बहुधा शुरू मे मै इस शान को देख देख कर आनन्द लिया करता था।

'आपने देखा होगा जब कोई सिगरेट पीने वाला दम लगाता है तो जोर लगाने के कारण से अथवा वैसे किसी और कारण से वह अपनी आंखे मूद सी लेता है, उस समय उसमे एक बडी मस्ती का भाव आ जाता है। यह मस्ती भी मुझे बहुत अच्छी लगती थी। रैस्टोरैन्ट मे बैठे हुए चाय और चाय के साथ सिगरेट पीते हुए घटो मजे स बैठे रहना यह सब शान मेरे भोले मन के लिए बडी लुभावनी मालूम देती थी। मै इन्हे बडप्पन के आवश्यक अग जानने लगा। फर्स्ट इयर मे पढते हुए मै इन्हे सीनिऑरिटी (seniority) के लक्षण समझता। प्रो फेसर भी जब जरा सिगरेट पीते हुए बात करते तो बडे शानदार मालूम देते। सिगरेट से निश्चय ही उनका प्रभाव मेरी दृष्टि मे दुगना हो जाता था।

"बस सिगरेट पीने वालो की शान और प्रभाव का अनुभव ही मेरा मौलिक प्रेरक भाव था। इसी ने मेरे अन्दर शुरू मे सिगरेट पीने की इच्छा पैदा की।

"परन्तु मैने तभी से ही सिगरेट पीना शुरू नही कर दिया। बचपन से मेरे मन मे इसके लिये विरोध बडा प्रबल था। हमारे घर म कोई सिगरेट तम्बाकू नही पीता, इससे मै भी इसे बुरा समझता था। बहुत समय तक तो म सिगरेट केवल मन ही मन पीता रहा। अपने आपको सिगरेट पीते हुए कल्पना (imagine) किया करता। मन का सिगरेट बना मन के मुह मे लगाकर जोर से दम लगाता और मन अपने 'मन' मे कहता 'अहा हा! क्या मजा आया" फिर चक्कर काटते हुए धूएँ को देखकर कहता "क्या सुन्दर चक्कर पै चक्कर बनते हुए चले जा रहे हैं!" कई बार तो मैने रैस्टोरैन्ट मे बैठे हुए आध आध घण्टा ऐसे ही सिगरेट पिया। बडी मस्ती रहती। जो शान मै दूसरो मे देखा करता था वह मै अब अपने आप मे पाता था। परन्तु यह मेरा दिन का स्वप्न हुआ करता था और जब मै इस स्वप्न से जागता तो लज्जा का अनुभव करता।

"रात को भी मै बहुधा अपने आपको—स्वप्न मे—सिगरेट पीते हुए पाता। एक बार मे कई कई डिब्बे पीते हुए देखा।"

"परन्तु तब तो मन के सिगरेट होते थे। मन स्वयं ही उन्हें बनाता और पी लेता। मेरे पैसे भी खर्च न होते थे और फिर दुनिया भी मुझे सिगरेट पीने वाला नहीं मानती थी। आपने, डाक्टर साहब, अब देख लिया किस प्रकार उस शान का विचार ही मेरा प्रेरक भाव बन गया। वह दिन में मुझे लुभाता और रात को स्वप्नों में भी काम करता।" मैं बड़े ध्यान से उसकी बातें सुन रहा था। मैंने प्रशंसात्मक दृष्टि से उसकी ओर देखा, और कहा —

'आप मनोविज्ञान के विद्यार्थी हैं न? तभी आपने अपने मौलिक प्रेरक भाव की बड़े सुन्दर ढंग से व्याख्या की है। देखिये! आपके इस वक्तव्य में दो बातें मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बड़े महत्त्व की हैं। परन्तु वह मैं पीछे आप से कहूंगा। अब आप यह बताइये कि आपने सिगरेट पीना वास्तव में शुरू कब किया।"

"मैं आप से कह चुका हूं कि बहुत अरसे तक तो सिगरेट मेरा लालसा मात्र की ही चीज थी। पहली बार जब मैंने मन के चिरपरिचित सिगरेट के स्थान असली सिगरेट को अपने स्थूल मुंह से लगाया, वह एक विशेष परिस्थिति थी। परिस्थिति वैसे साधारण थी परन्तु मुझे वह कभी न भूलेगी। वही पुराने ४-५ मित्र रेस्टोरेंट में बैठे हुए चाय पी रहे थे। अचानक एक नया आदमी आया वह मेरा जान पहचान का न था, परन्तु एक साथी का मित्र था। वह मेरे पास ही बैठ गया। मेरे मित्र तो सिगरेट पीते ही थे। उनमें से एक ने सिगरेट-केस निकाल कर बारी २ सब के सामने पेश किया। मेरे सामने भी आया। मैं हमेशा न पिया करता था, इसलिए उन्हें मुझे पेश करने की आवश्यकता भी न थी। पर सिगरेट पीने वालों में सिगरेट की आदत का प्रचार करने का जो उत्साह होता है वह कट्टर धर्म के उपदेशकों में भी कम ही मिलेगा। मैंने यद्यपि सिगरेट लेने में हमेशा 'न' की थी, फिर भी मेरे साथियों ने मेरे सुधार की आशा हर्गिज न छोड़ी थी। उनका धीरज और उनकी दृढ़ता बड़ी प्रशंसा के योग्य थी। सिगरेट स्वीकार कराने लिये वे कोई मौका भी न चूकते थे। सिगरेट के उपदेशक धर्म के उपदेशकों से, क्रियात्मक मन विज्ञान में, कहीं अधिक सिद्धहस्त होते हैं। सिगरेट पेश करने वालों ने उस अवसर की मौलिकता को खूब अनुभव कर लिया था। एक तरफ तो उन्हों ने देखा कि एक नये प्रतिष्ठित व्यक्ति हमारे बीच में उपस्थित हैं। दूसरी तरफ वह पता नहीं किस

Telepathy या thought reading के साधन से यह जान गये कि मैं उस नये व्यक्ति की उपस्थिति में सिगरेट लेने को 'हां, न' के झूले पर लटका हुआ डांवा-डोल हो रहा था। ठीक समय, जब कि मेरे मन की तराजू में 'हा, न' के पलड़े उतार चढ़ाव पर थे, इन्होने बड़े प्रभावशाली, प्रेम और अधिकार के भाव में कहा 'और' तुम भी लो न !'' उनका यह कहना था कि मेरे मन मे 'हां' का पलड़ा फौरन भारी हो गया और मैंने एक सिगरेट उठा कर मुंह में लगा लिया। लगा क्या लिया स्वप्न ने वास्तविक रूप धारण कर लिया। स्वर्ग उतर कर पृथ्वी पर आ गया। फ़ौरन एक दूसरे मित्र ने बड़े प्रेम से दियासलाई जलाई और हाथ आगे बढ़ा कर मेरे सिगरेट को सुलगा दिया। उस दिन के बाद से मै रोज सिगरेट पीता रहा हूँ। परन्तु इसमे भी एक इतिहास की बात है। शुरू के कई महीने तो मुफ्त ही पीता रहा फिर मैंने अपने सिगरेट ख़रीदने शुरू कर दिये। मैं आपसे सच कहता हूँ सिगरेट के उपदेशक बड़े त्याग से काम लेते है। उनका आचार-विचार, वास्तव मे, एक अलग ही नीतिशास्त्र है। कई महीने तक तो मेरे मित्रो ने मुझे सिगरेट अपने पल्ले से ही पिलाई। दूसरे दिन 'सुधार' के लिए यह त्याग वे अपना कर्त्तव्य समझते हैं। यह बात अवश्य है कि वे गीता के निष्काम कर्म के आदर्श से केवल इतना मतभेद रखते हैं कि वे नये आदमी को सिगरेट इस वास्ते पिलाते हैं कि जब उसकी यह आदत पक्की हो जावेगी तब वह उन्हें पिलाया करेगा। अब देखिये जब से मैंने अपने दाम से सिगरेट पीना शुरू किया है तब से मैं भी उन्हे बार बार पिलाता हूँ। फिर मैंने स्वय थोडे समय में ही कई न-पीने वालो को पीने-वाला बनाया है और उनसे मै आशा करता हूँ कि वे भी कुछ समय बाद मुझे पिलाया करेंगे।''

'वास्तव में,'' मैंने कहा, 'सिगरेट के उपदेशकों मे उपकार और त्याग दोनो भावनाये हैं। किसी ने आप पर उपकार किया, आपने आगे किया। इसी प्रकार से उपकार की परम्परा कायम रहेगी और सिगरेट पीने के महोद्देश्य की उत्तरोत्तर पूर्ति होती चली जायगी।''

अब के विद्यार्थी ज़रा तीव्र भाव में बोला।—''अजी नहीं! उपकार और त्याग कहां किस में हैं? निरे स्वार्थ और अहंकार के भाव से ही लोग दूसरों को सिगरेट पीने की प्रेरणा करते हैं। पर हां, ज़रा कहते हैं मीठे पर चालाकी के के भाव से। मेरे मन में उनके प्रति, जिन्होंने मुझे सिगरेट दी, जो दुख और

शिकायत है वह मैं आप से कह नहीं सकता । वह मेरे मित्र हैं। मैं-अब भी उनका मान करता हूँ परन्तु सिगरेट पिलाने मे उन्होंने मेरे साथ मित्रता का नहीं वरन् शत्रुता का व्यवहार किया।"

"अरे भाई ! यह उपकार और त्याग की बात तो मैंने वैसे ही कही थी। अच्छा ! अब हम जरा प्रेरक भावों को विशेष रूप से विचारना चाहते हैं। देखिये प्रथम तो यह बड़े महत्व की बात है कि पहले इसके कि आपने सिगरेट पीना शुरू किया आप इच्छा रूप मे अथवा दिन और रात के स्वप्नो मे बहुत सिगरेट पीते रहे। यह, मनोविज्ञान की दृष्टि मे सवा सोलह आने की बात है। आप सिगरेट पीने की पहले इच्छा करते रहे फिर पीने लग गये। इच्छा ही कर्म का कारण होती है। जैसा मनुष्य सोचता वह वैसा ही बन जाता है। यह एक सर्वमान्य सिद्धात है। यदि आप को जब कि आपके अन्दर सिगरेट पीने की इच्छा पैदा हो रही थी, यह चेतावनी हो जाती कि इस इच्छा का निश्चित फल सिगरेट पीना होगा तो आप उस समय इच्छा बदल कर उसके फल को आसानी से टाल सकते थे। वास्तव मे हम अपने चरित्र के भावी विकास को स्वप्नों में जान सकते हैं। जो मनुष्य अपने आप को बार २ स्वप्न मे सिगरेट पीते दीखते हैं, तो चाहे वह जाग्रत-अवस्था मे सिगरेट की इच्छा न भी करता हो, तब भी वास्तव मे उसमे सिगरेट पीने की प्रवृत्ति पैदा होती जाती है और स्वप्न मात्र के आधार पर ही, वास्तव मे उसे उस प्रवृत्ति को रोकने का प्रयत्न करना चाहिये और यदि वह ऐसा करेगा तो वह पीछे के दुःख से बच जायगा। यह बात सिगरेट की प्रवृत्ति के लिये उपयुक्त है। हमारा चरित्र-विकास प्राय. पहले ही स्वप्नों में प्रगट हो जाता है। उस समय प्रवृत्ति की अवस्था अभी कमजोर होती है, इस लिए तब वह थोड़े परिश्रम से ही वश में लाई जा सकती है ।"

विद्यार्थी ने बात काटते हुए कहा।—"पर जी अब मुझे कौनसा उपाय करना चाहिये।"

"जरा ठहरिये, वर्त्तमान अवस्था का उपाय भी इसी बात में आ गया है।"

"वह कैसे ?"

"जब सिगरेट पीने की आदत प्रारम्भिक अवस्था में थी, तब उसने अभी मन की जटिल भूमि में जड़ न पकड़ी थी। इसलिये उस समय उसका दूर करना असान था। अब वह मन में गड़ गई है। दूर अब भी वैसे ही होगी, परन्तु जरा देर लगेगी और थोड़ा कष्ट भी बीच बीच मे उठाना पड़ेगा।"

"तो क्या मैं आज सिगरेट पीना बिल्कुल छोड़ दू" विद्यार्थी ने उतावली से पूछा।

"नहीं ऐसा करने के लिए मैंने अभी कुछ नहीं कहा। आपकी परीक्षा पास है, इस समय आप विशेष परिश्रम वाली बात न कर सकेंगे। करने का प्रयत्न करेंगे तो ध्यान दूसरी ओर खिच जावेगा और पढाई मे हानि होगी। आप एक 'सरल प्रयोग" का अभ्यास करिए।"

'यह सरल प्रयोग क्या है ?"

"बस धीरे धीरे सिगरेट पीने की इच्छा से अपना सहयोग (Cooperation) अलग करते जाइये।" "वह कैसे" ? "सिगरेट पीने के जो अनेक दोष हैं उनको मनन मे लाया करिए। मन मे समय २ पर विशेष कर सोते हुए, कहा करिए "यह सिगरेट शरीर को हानि पहुँचाती है, इससे बड़ी उमर मे फेफड़ो की बीमारिया हो जाती है, मन को भी हानि पहुँचाती है, क्योकि यह मन को अपना गुलाम बनाती है। मैं इसकी यह गुलामी कभी नहीं सहूँगा। लोग इसे उत्तेजक (stimulant) बतलाते हैं। मै उत्तेजक पदार्थों (stimulants) की गुलामी मे नहीं रहूँगा। शरीर और मन की जो स्वाभाविक शक्ति है उसी से काम लूंगा। उत्तेजक पदार्थों के सहारे नहीं जीना चाहिए, इत्यादि, इत्यादि।

सिगरेट पीने के सम्बन्ध में जो "शान" की भावना आपके मन में गड़ी है, उसके लिए विशेष प्रयत्न करना पड़ेगा। मन को जरा सोचने दीजिये "सिगरेट पीने मे शान क्या है, इससे होंठ काले हो जाते हैं। मुंह से बदबू आने लगती है। इत्यादि २। बस बार २ मन इस अभ्यास की व्यर्थता को अनुभव करता जाय। सिगरेट पीने वालों की संगति को कम करिए और साधारणतया

संकल्प यह रखिए कि सिगरेट नहीं पीनी है। परन्तु अगर किसी समय पीने की इच्छा बहुत प्रबल हो उठे तो जैसे मनुष्य किसी हठी बच्चे को बुरा काम करने की आज्ञा दे देता वैसे ही मन को भी सिगरेट पी लेने दीजिए। पीते हुए यह अनुभव करने का प्रयत्न करिये कि यह सिगरेट मैं नहीं पी रहा बल्कि यह टेढ़ी चाल वाला यह मेरा ही मन पी रहा है।

"साथ यह भी देख लीजिए कि सिगरेट पीने की इच्छा किस समय प्रबल होती है। उन अवस्थाओं में अपने लिए कोई ऐसी व्यस्तता (occupation) जुटाने का प्रयत्न करिए कि उस समय सिगरेट पीने की याद ही न आये।

"बस इन बातों का अभ्यास करते जाइये। मन को धीरे २ मनाते जाइये। सिगरेट पीना, आपको पता नहीं लगेगा और आप से छूट जावेगा। समय लगेगा परन्तु इसमें कष्ट नहीं। यह सरल-प्रयोग ठीक है न ?"

"सरल तो यह है पर प्रयोग कैसे ?"

"आप इसमे मन के अभ्यास को बदलेंगे कि नहीं ? बस इसी वास्ते यह प्रयोग है। यह मन की साधना का ही तो नाम है। आप क्या समझते हैं ? यह जो अभ्यास आप करेंगे वह योगाभ्यास होगा। सरल-प्रयोग बड़ा उत्तम प्रयोग है।

इसमे कष्ट नही और मन का दोष बिल्कुल जड़ से दूर हो जाता है।"

बस अब चिन्ता मत करिये और इस योग में लग जाइये और समय २ पर अपने मन की वृत्ति का हाल मुझे सुनाते रहा करिये।"

"बहुत अच्छा ! इस योग का मैं अब योगी बनूगा—और अपनी उन्नति का समाचार आपको हमेशा बतलाता रहा करूंगा।"

आर्य कुमार-जगत्

अन्तरंग सभा का चौथा अधिवेशन

रविवार ३१ मार्च सन् १९४०

अखिल भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की अन्तरङ्ग सभा का चौथा अधिवेशन रविवार ३१ मार्च सन् १९४० ई० दिन के ११ बजे से दीवानहॉल दिल्ली मे प्रो० सुधाकर जी की प्रधानता मे हुआ।

उपस्थिति निम्न प्रकार थी —

१. प्रो० सुधाकर जी २ डा० युद्धवीरसिंह जी ३ श्री नन्दकिशोर जी खन्ना ४. श्री मनुराम जी ५ श्री महादेवशरण जी ६ मु० लखपतसिंह जी ७ श्री बद्रीदत्त जी ८. श्री गुलाबराय जी ९. श्री वासुदेव जी।

कार्यवाही

१. गत अधिवेशन की रिपोर्ट पढी जाकर स्वीकृत हुई।

२. निम्न आर्यकुमार सभाओ से आये हुए आवेदन-पत्र पेश होकर स्वीकार हुए।

१. हल्दौर २ बोलारम ३ दरियागञ्ज ४ रसूलाबाद जौनपुर ५ सराय तरीन ६. संयोगितागञ्ज ७. बीकानेर ८ खण्डवा।

३ स्वागत कारिणी के नियम कुछ सशोधनो के साथ इस प्रकार स्वीकृत हुए।

४. सम्मेलन बिजनौर की रिपोर्ट तथा हिसाब पेश होकर स्वीकृत हुआ, शेष धन के विषय मे स्वीकार हुआ कि स्वागत कारिणी के पास जो प्रतिनिधियो की फीस ७४) रु० है वही परिषद् को दे दे। शेष बिजनौर आ० भा० को।

५. २६ वें आ० कु० सम्मेलन की तारीखे ४, ५ मई निश्चित हुई यदि स्वागत कारिणी चाहे तो प्रधान के जलूस को ३ मई को सांयकाल रख सकती है।

६. अ० भा० आ० कु० परिषद् की नियमावली मे संशोधन करने के लिये एक उप समिति बनाई गई।

१. सुधाकर जी २ डा० युद्धवीर सिह जी ३ गुलाबराय जी ४. महादेवशरण जी, ५. ईश्वरदयाल जी ६ मनीराम जी।

समय के अभाव के कारण

सम्मेलन के कार्य-क्रम के लिये स्वागत कारिणी को लिखा जावे कि वह कार्यक्रम शीघ्र भेजे और प्रधान जी का नाम, और कार्य-क्रम तथा प्रधान के चुनाव का अन्तिम निश्चय करने का अधिकार कार्यकारिणी सभा को दिया गया।

---

* ओ३म् *

सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा

का

३१वां वार्षिक वृत्तान्त

वियोग

वर्ष का विवरण देने से पूर्व यह प्रगट कर देना आवश्यक है कि इस वर्ष श्री आचार्य रामदेव जी के निधन से आर्य-जगत् को महती हानि उठानी पड़ी है।

(१) निर्माण व्यवस्था

इस वर्ष १३ प्रतिनिधि-सभाएँ इस सभा मे सम्मिलित रहीं उनके नाम और उनके प्रतिनिधि सदस्यो की संख्या प्रत्येक के सामने निम्न प्रकार दीजाती है —

नाम सभा			प्रतिनिधि-सदस्यों की संख्या
(१) आर्य्य-प्रतिनिधि सभा, पञ्जाब			७
(२)	,,	,, संयुक्तप्रान्त	६
(३)	,,	,, राजस्थान	६
(४)	,,	,, बिहार	५
(५)	,,	,, बङ्गाल	७
(६)	,,	,, मध्यप्रदेश	३
(७)	,,	,, निजाम राज्य	२
(८)	,,	,, नैटाल	×
(९)	,,	,, मौरिशस	१
(१०)	,,	,, फिजी	×
(११)	,,	,, सिंध	४
(१२)	,,	,, सुरीनाम डचगायना	×
(१३)	,,	,, बम्बई	×
			४१

नियमानुसार वे आर्य्य-समाज जिनके आर्य्य-सभासदों की संख्या ५० या अधिक हो और जो प्रतिवर्ष इस सभा को दशांश दें वे इस सभा में प्रविष्ट हो सकते हैं। इस वर्ष ३०-९-३१ की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार आर्य्य-समाज गुरुदत्त भवन, लाहौर सभा में प्रविष्ट हुआ। इस वर्ष निम्न २ आर्य्य-समाजों का सभा में प्रतिनिधित्व रहा—

नाम समाज	प्रतिनिधियों की संख्या
(१) दीवान हाल, देहली	३
(२) आर्य्य-समाज गुरुदत्त भवन, लाहौर	२

प्रतिष्ठित और आजीवन सदस्य

इस वर्ष निम्न महानुभाव सभा के प्रतिष्ठित और आजीवन सदस्य रहे—

प्रतिष्ठित

(१) श्री० महात्मा नारायण स्वामी जी (२) श्री स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी
(३) „ स्वामी ब्रह्मानन्द „ (४) „ रायसाहब मदनमोहन सेठ
(५) „ स्वा० सत्यानन्द जी

आजीवन

(१) श्री० म० वेदमित्र जी (२) श्री० बाबू ज्योतीस्वरूप जी
(३) „ पं० गङ्गाप्रसाद जी चीफ जज (४) „ दीवान तुलजाराम
(५) „ „ मूलचन्द „ (६) „ लाला ज्ञानचन्द „
(७) „ लाला रामराय „ (८) „ „ गुलराज गोपाल गुप्त
(९) „ „ नारायणदत्त „

दुःख है कि गत नवम्बर मास में श्री० प० मूलचन्द जी के निधन से सभा उनकी सदस्यता के लाभ से वञ्चित हो गई है।

इस वर्ष के अन्त में यह सभा १३ प्रतिनिधि-सभाओं और २ आर्य्य-सभाओं के ४६ प्रतिनिधि-सदस्यों ५ प्रतिष्ठित तथा ८ आजीवन, कुल ५८ सभासदों का समुदाय थी।

२. सभा के अधिकारी और अन्तरङ्ग सदस्य

गत वर्ष की अपेक्षा कार्य्य-विवरणान्तर्गत वर्ष में अधिकारियों तथा अन्तरंग

सदस्यो में क्या अन्तर रहा था, यह प्रगट हो जाय। इसलिए दोनो वर्षों के अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यो के नाम नीचे दिये जाते हैं:—

गतवर्ष के अधिकारी

(१) प्रधान—श्रीयुत घनश्यामसिंह जी (२) उपप्रधान श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
(३) उपप्रधान श्री प० गङ्गाप्रसाद जी चीफ जज (४) ,, ,, प० इन्द्रजी विद्यावाचस्पति।
(५) मन्त्री श्री० प्रो० सुधाकर जी (६) उपमन्त्री श्री० डा० युद्धवीरसिंह जी
(७) कोषाध्यक्ष श्री ला नारायणदत्त जी (८) पुस्तकाध्यक्ष श्री ला० ज्ञानचन्द जी

कार्य्य-विवरणान्तर्गत वर्ष के अधिकारी

(१) प्रधान—श्रीयुत घनश्यामसिंह जी (२) उपप्रधान श्री० स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी
(३) उपप्रधान , प० गङ्गाप्रसाद चीफ जज (४) ,, ,, रायसाहब मदनमोहन सेठ।
(५) मन्त्री श्री० प्रो० सुधाकर जी (६) उपमन्त्री ,, गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय
(७) कोषाध्यक्ष श्री० ला० नारायणदत्त जी (८) पुस्तकाध्यक्ष श्री० ला० ज्ञानचन्द जी

१९३८-३९ के अन्तरङ्ग सदस्य

(१) श्री० रायबहादुर ठा० ब्रजनन्दनसिंह जी	(बिहार)
(२) ,, प० बशीलाल जी	(हैदराबाद)
(३) ,, बाबू पूर्णचन्द्र जी	(प्रवासियो के प्रतिनिधि)
(४) ,, ला० देशबन्धु जी	(समाजो के प्रतिनिधि)
(५) ,, महात्मा नारायण स्वामी जी	
(६) ,, म० कृष्ण जी	
(७) ,, बाबू ज्योतिस्वरूप जी	
(८) ,, पं० भगवानस्वरूप जी	
(९) , सेठ मदनमोहन जी	(संयुक्त प्रान्त)
(१०) ,, बाबू श्रीराम जी	,,
(११) ,, प्रो० महेन्द्रप्रताप जी	,,

(१२)	,, प० ज्ञानचन्द जी	(पञ्जाब)
(१३)	,, आचार्य रामदेव जी	,,

१९३९-४० कार्य विवरणान्तर्गत वर्षके अन्तरङ्ग सदस्य

(१)	श्री० प० धुरेन्द्र जी शास्त्री	(संयुक्त प्रान्त)
(२)	, प्रो० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री	
(३)	,, कुवर चाँदकरण जी शारदा	(राजस्थान)
(४)	, प० भगवानस्वरूप जी	,,
(५)	, ,, महादेवशरण जी	(बिहार)
(६)	,, बाबू हरिगोविन्द जी गुप्त	(बङ्गाल)
(७)	,, , पूर्णचन्द्र जी	(प्रवासियों के प्रतिनिधि)
(८)	, प० बंशीलाल जी	(हैदराबाद राज्य)
(९)	,, लाला देशबन्धु जी	(सभाओ के प्रतिनिधि)
(१०)	, दीवान तुलजाराम जी	(साधारण)
(११)	,, महात्मा नारायण स्वामी जी	,,
(१२)	, प्रो० शिवदयालु जी एम. ए	(पञ्जाब)
(१३)	,, म० कृष्ण जी	,

वेद-प्रचार

हैदराबाद सत्याग्रह के कारण दक्षिण भारत म जो जागृति उत्पन्न हुई है वहाँ आर्य्य-समाज के कार्य को विस्तृत तथा दृढ करने के लिए उस जागृति से पूरा पूरा लाभ उठाने का सभा यत्न कर रही हैं। इस सम्बन्धमें विविध प्रकार की योजनाएँ सभा के विचाराधीन हैं। सभा के सुयोग्य उपमन्त्री श्री० प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय ने गत नवम्बर मास मे दक्षिण भारत का भ्रमण करके आर्य्य समाज के कार्य्य का निरीक्षण किया है तथा अपनी विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की हुई है।

हैदराबाद राज्य के अतिरिक्त दक्षिण भारत के अन्य भागो में सभा की ओर से निम्न प्रचारको ने प्रचार-कार्य्य किया —

(१) श्री० प० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति वेदालङ्कार

(२) , ,, मदनमोहन जी विद्याधर

(३) ,, ,, मजुनाथ जी

(४) „ , लक्ष्मीनारायण जी
(५) „ कन्हैया जी
(६) „ „ केशवदेव जी ज्ञानी

श्री० प० धर्मदेव जी तथा प० मदनमोहन जी विद्याधर वर्ष पर्यन्त कार्य्य करते रहे हैं। श्री० लक्ष्मीनारायण जी, श्री० कन्हैया जी तथा श्री० मजुनाथ जी ने जनवरी ४० से कार्य आरम्भ किया है। श्री० प० केशवदेव जी ज्ञानी अवैतनिक प्रचारक के रूप में मद्रास में प्रचार-कार्य्य करते हैं।

कर्नाटक

कर्नाटक प्रान्त में प्रचार का मुख्य केन्द्र बंगलोर रहा तथा यह केन्द्र प० धर्मदेव जी के आधीन रहा। लगभग ८० स्थानों पर जिनमें ६ स्थान नये थे प्रचार किया गया। 'वैदिक विवाह संस्कार पद्धति' कर्नाटक भाषा में लिखकर प्रकाशित कीगई। संस्कार विधि आर्य्याभिविनय और वैदिक विनय का कर्नाटक अनुवाद तय्यार किया गया। Religion and Science in the light of the Vedic Dharma नामक अंग्रेजी पुस्तक श्री० प० धर्मदेव जी द्वारा लिखी जा रही है। इस वर्ष इसका बहुत बड़ा भाग समाप्त हो चुका है। १३ यज्ञोपवीत १२ विवाह संस्कार, १२ शुद्धि, ५ नाम करण, २ अन्न प्राशन, १ गृह प्रवेश १ सीमन्तोन्नयन तथा ७ अन्त्येष्टि संस्कार कराए गये। इस वर्ष प्रचारकों ने 'अखिल कर्नाटक लामानी सम्मेलन' आंध्र राज्य के International fellowship Conference और मैसूर राज्य के आर्य्य क्षत्रिय सम्मेलन में विशेष भाग लिया। प्रचारक महोदय आंध के महाराज प्रधान मन्त्री, शिक्षा मन्त्री इत्यादि से मिले और उनको आर्य्य समाज का साहित्य भेंट किया तथा आर्य्य-समाज के उद्देश्य और कार्यों से परिचित कराया। हैदराबाद के श्री० अब्दुल सय्यद लतीफ Problem of muslim India के लेखक तथा भारत के हिन्द-मुस्लिम विभाजन की स्कीम के आविष्कारक से भी भेंट कीगई और International fellowship के अधिवेशन में उनकी स्कीम की अव्यावहारिकता तथा भयङ्कर त्रुटियों पर प्रचारकों ने प्रकाश डाला तथा Glory of the Vedas इत्यादि साहित्य उन्हें सभा में भेंट किया गया। कोलार गोल फील्ड में आर्य्य-समाज की स्थापना कीगई। मॅगलोर में श्रद्धानन्द अनाथालय की स्थापना कीगई।

आन्ध्र

इस प्रचार का केन्द्र तनाली नियत किया गया है। श्री० प० गोपदेव जी ने इस केन्द्र को प्रचार-कार्य्य में सबसे ज्यादा योग दिया है, जिसको यह सभा आदर की दृष्टि से देखती है। इसके अतिरिक्त श्री० सत्यमित्र आर्य्य, श्री० स्वामी योगानन्द जी, श्री० नागभूषण जी इत्यादि ने भी उल्लेखनीय सहायता की है जिसके लिये सभा उनको धन्यवाद देती है। लगभग २५ स्थानों पर व्याख्यानों और उपदेशों द्वारा प्रचार किया गया। १ वैदिक-विवाह, २४ उपनयन, ३ नामकरण ४ कर्णवेध सस्कार कराए गये। ६ पुस्तकें तैलुगु भाषा में लिखवाई तथा अनूदित कराके प्रकाशित की गई। तनाली में समाज मन्दिर निर्माण की व्यवस्था जारी है।

कुमायूँ प्रचार

इस वर्ष केवल अल्मोड़ा, नैनीताल इत्यादि जिलों में श्री० प० बद्रीप्रसाद जी की अध्यक्षता में प० शान्तिस्वरूप जी द्वारा प्रचार-कार्य्य हुआ। जो कार्य्य हुआ उसका विवरण इस प्रकार है —

६० स्थानों पर प्रचार हुआ, १० ईसाइयों की शुद्धि हुई, ४ सस्कार कराये गये, १ शास्त्रार्थ हुआ। सल्तानपुर दर गुड़ौली तथा चौखुटिया में आर्य्य-समाजें स्थापित हुईं।

पुस्तकालय

बिकाऊ पुस्तकों का विवरण

गतवर्ष

गतवर्ष का स्टाक	पुस्तक	मूल्य
	१३०५६	११५४४।।।≡)
आय	×	×
योग	३०५६	(१५५४।।।≡)
बिक्री तथा फ्री वितरण	२०३२	१७६७।।≡)।।
शेष	१००२४	६७४७)।।

कार्य विवरणान्तर्गत वर्ष

	पुस्तक	मूल्य
गतवर्ष का स्टाक	१००२४	६७४७)॥
आय	३१४	११७॥≡)
योग	१०३३८	६८६४॥≡)॥
विक्री	४५८	५८३॥–)॥
शेष	६८८०	६२८१=)

सार्वदेशिक-पत्र

आय

ग्राहक चन्दा तथा विज्ञापन	६५५–)

व्यय

कागज	१७५॥≡)॥
छपाई	२७०।≡)
वेतन लेखक	३६०)
डाक व्ययादि	२४८=)॥
	१०५४॥–)।

गत वर्ष पत्र के ४२४ ग्राहक तथा ५८६।) घाटा था। इस वर्ष ४५२ ग्राहक तथा घाटा ६६॥)। रहा।

कार्यालय व पत्र-व्यवहार

	गतवर्ष	कार्य विवरण
आने वाले पत्रो की	२४४३	×
जाने वाले पत्रो की	३२३७	११५०२

हैदराबाद आन्दोलन सम्बन्धी अनेका गश्तियाँ, इस पत्र-व्यवहार क अतिरिक्त आर्य पर्व्वों की सूचि आर्यसमाजो मे सरक्यूलेट की गई।

इस वर्ष कार्यालय मे स्थायी रूप से २ लेखको ने तथा अस्थायी रूप से ७ लेखको ने कार्य किया। वर्ष के अन्त मे कार्यालय मे ५ लेखक कार्य करते रहे हैं।

अधिवेशनों का विवरण

इस वर्ष इस सभा की साधारण सभा का १ तथा अन्तरङ्ग सभा के १२ अधिवेशन हुए जिनमे सभासदो की उपस्थिति का विवरण इस प्रकार है —

साधारण सभा

	१-१०-३६
(१) श्री प० जगन्नाथ जी निरुक्तरत्न	१
(२) ,, बा० सालिग्राम जी	१
(३) ,, बा० सन्तलाल जी	×
(४) ,, प० विशम्भरनाथ जी	१
(५) ,, म० कृष्ण जी	१
(६) ,, प्रो० शिवदयालु जी	१
(७) ,, बा० उमाशकर जी	१
(८) ,, प० धुरेन्द्र शास्त्री जी	१
(९) ,, डा० बाबूराम जी	१
(१०) ,, प० शिवदयालु जी	१
(११) ,, प्रो० महेन्द्र प्रताप शास्त्री जी	१
(१२) ,, प० गगाप्रसाद उपाध्याय जी	१
(१३) ,, कुँवर जालिमसिह जी	×
(१४) ,, ,, चादकरण शारदा जी	१
(१५) ,, प० भगवान स्वरूप	१
(१६) ,, स्वामी प्रतानन्द जी	१
(१७) ,, प० जयदेव जी	×
(१८) ,, बा० शिवचरणलाल जी	१
(१९) ,, माननीय घनश्यामसिह जी	१
(२०) ,, जयनारायणलाल जी	×
(२१) ,, पं० पन्नालाल व्यास जी	×
(२२) ,, ,, वेदव्रत वानप्रस्थ जी	×
(२३) ,, ,, महादेवशरण जी	१

(२४)	,, रायबहादुर ठाकुर ब्रजनन्दनसिंह जी	×
(२५)	, पं० बद्रीनारायण शर्मा जी	×
(२६)	,, ,, वासुदेव शर्मा जी	१
(२७)	,, ,, हरिगोविन्द गुप्त जी	१
(२८)	,, मेहरचन्द जी	×
(२६)	, प० दीनबन्धु वेदशास्त्री जी	×
(३०)	,, सुरेन्द्रनाथ विद्यालङ्कार जी	×
(३१)	,, विष्णुदास वासल जी	×
(३२)	,, नन्दकिशोर जी	×
(३३)	,, प० अयोध्याप्रसाद जी	×
(३४)	,, प्रो० ताराचन्द गाजरा जी	×
(३५)	,, उदयभानु जी	×
(३६)	,, गगाराम जी	×
(३७)	,, भोलाराम जी	×
(३८)	,, प० विनायकराव जी	१
(३६)	,, प० वशीलाल जी	१
(४०)	, वा० पूर्णचन्द्र जी	१
(४१)	, प्रो० सुधाकर जी	१
(४२)	,, लाला देशबन्धु जी	१
(४३)	,, लाला देशराज जी चौधरी	१
(४४)	,, प० ज्ञानचन्द जी	१
(४५)	,, प० बुद्धदेव जी	×
(४६)	,, , वेदमित्र जी	×
(४७)	,, बा० ज्योतिस्वरूप जी	१
(४८)	, प० गगाप्रसाद जी चीफ जज	१
(४६)	,, दीवान तुलआराम जी	१
(५०)	,, लाला नारायणदत्त जी	१
(५१)	,, लाला ज्ञानचन्द जी	१
(५२)	,, लाला रलाराम मेलाराम जी	१

अन्तरङ्ग सभा

सं०	नाम सदस्य	१०-३-३६ देहली	६-४-३६ शोलापुर	३०-५-३६ देहली	३१-५-३६ देहली	२४-७-३६ देहली	८-८-३६ नागपुर	३०-६-३६ देहली	१-१०-३६ देहली	२-१०-३६ देहली	२७-१-४० देहली	२८-१-४० देहली	२८-१-४०	योग
१	श्री घनश्याम सिंह जी		१	१	१	१	१	१	१	१		१	१	=१०
२	स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी		१			१	१	१		१	१		१	=७
३	श्री प० गङ्गाप्रसाद जी चीफ जज					१			१	१				=३
४	रा० सा० मदन मोहन जी सेठ		१					१	१		१	१	१	=६
५	श्री प्रो० सुधाकर जी	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	=१२
६	श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय							१		१	१	१	१	=५
७	श्री ला० नारायणदत्तजी	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	=१२
८	श्री ,, ज्ञानचन्द जी	१	१			१		१		१	१	१		=७
९	श्री प० धुरेन्द्र जी									१	१	१	१	=४
१०	श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी		१	१		१	१	१	१	१	१	१	१	=१०
११	,, कुँवर चाँदकरण जी शारदा									१				=१
१२	,, प भगवान् स्वरूप जी		१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	=११
१३	,, महादेव शरण जी									१	१	१	१	=४
१४	,, बा० हरिगोविन्द जी								१					=१
१५	,, पूर्णचन्द जी			१		१		१	१	१		१	१	=७
१६	,, प० बशीलाल जी		१						१	१	१	१		=५
१७	,, ला० देशबन्धु जी		१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	= ०
१८	,, दीवान तुल्जाराम									१	१	१	१	=४
१९	,, महात्मा नारायण स्वामी जी							१		१	१	१	१	=५
२०	,, प्रो० शिवदयालु जी									१				=१
२१	,, म० कृष्ण जी		१	१				१	१	१	१	१	१	=८
२२	,, प० ज्ञानचन्दजी	१	१			१	१	१	१	१				=६
२३	,, बा० ज्योति स्वरूप जी	१	१	१	१	१		१	१					=७
२४	,, बा० श्रीरामजी		१	१	१	१	१	१						=६
२५	,, डा० युद्धवीरसिंह			१		१								=१

(५३) ,, गुलराज गोपाल जी १

(५४) ,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

(५५) ,, महात्मा नारायण स्वामी जी

(५६) ,, स्वामी श्रद्धानन्द जी

(५७) ,, राय साहब मदन मोहन सेठ

(५८) ,, स्वामी सत्यानन्द जी

(५९) ,, आचार्य रामदेव जी १

(६०) ,, प० मूलचन्द जी १

३५

आर्य रक्षा समिति

इस वर्ष भी समिति का सङ्गठन इस प्रकार रहा —

सार्वदेशिक सभा के प्रतिनिधि

(१) श्री कुँवर चाँदकरण शारदा

(२) ,, बा० शिवचरणलाल गुप्त

(३) ,, प० वशीलाल जी

(४) ,, ,, वेदव्रत ,,

(५) ,, शिवदयालु ,,

(६) ,, ,, मेहरचन्द धीमान ,,

(७) ,, माननीय घनश्यामसिंह ,,

(८) ,, ला० नारायणदत्त ,,

(९) ,, प्रो० सुधाकर ,,

(१०) ,, ला० देशबन्धु ,,

(११) ,, बा० उमाशङ्कर वकील ,,

आर्य-प्रतिनिधि सभा यू० पी० द्वारा भेजे हुए प्रतिनिधि

(१२) श्री पं० देशबन्धु अधिकारी जी

(१३) ,, ,, रतिराम ,,

आर्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान

(१४) श्री प० भगवान स्वरूप जी अजमेर

आर्य-प्रतिनिधि सभा पञ्जाब

(१५) ,, प० ज्ञानचन्द जी आर्य सेवक

(१६) रिक्त

अन्य निर्वाचित सदस्य

(१७) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी

(१८) ,, म० शिवचन्द्र ,,

(१९) ,, चौधरी चरणसिंह ,,

(२०) ,, स्वामी स्वतन्त्रानन्द ,,

(२१) ,, म० कृष्ण ,,

अधिकारी

इस वर्ष समिति के निम्न अधिकारी रहे —

प्रधान—श्री बा० घनश्यामसिंह जी

उपप्रधान—श्री ला० देशबन्धु ,,

प्रधान मन्त्री—श्री प्रो० सुधाकर ,,

कोषाध्यक्ष—श्री ला० नारायणदत्त ,,

रक्षा-निधि का कुल धन वर्ष के अन्त पर ७५८०१)४ था जिसमें से ५०००) स्थिर निधि है।

सभा की २८-१-४० की अन्तरंग सभा ने आर्य्य वीरदल तथा रक्षा-समिति को भली भाँति संगठित करने के लिए निम्न महानुभावों की एक उपसमिति नियत की है -

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामी जी (संयोजक)

(२) श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द ,,

(३) श्री ला० देशबन्धु ,,

आर्य्य वीरदल का संगठन

इस कार्य के सुचारु रूप से सञ्चालन के लिए, यत्न आरम्भ कर दिया गया है। सम्प्रति रोहतक प्रान्त में कार्य्य प्रारम्भ किया गया है। और २ प्रचार मंडलियाँ तथा एक Instructor इस कार्य को कर रहे हैं। संयुक्तप्रान्त में भी इस कार्य्य की व्यवस्था कर दी गई है।

यू०पी०—१ फैज़ाबाद, २ गाजीपुर, ३ मुग़लसराय, ४ बढ़नी बाज़ार जिला बस्ती, ५ जौनपुर, ६ कुसमरा जिला मैनपुरी।

पजाब—१ फिल्लौर, २ लुध्याना

बगाल—१ हावडा

राजस्थान—१ अजमेर, २ आबू रोड

सिन्ध—१ कराची

बिहार—१ मुज़फ्फरपुर

निज़ाम राज्य—१ हैदराबाद, २ गुलबर्गा ३ निज़ामाबाद, ४ चाकूर

श्री शिवचन्द्र जी का कार्य्य—

बिहार और बंगाल का दौरा

पटना, दरभगा, मुगेर, कलकत्ता तथा दार्जिलिंग का दौरा किया और हैदराबाद सम्बन्धी व्याख्यान दिये।

बिहार मे सर गनेशदास Ex-minister, श्री सच्चिदानन्द सिन्हा बैरिस्टर, Ex-minister, कुँवर गगानन्द सिन्हा M L C, जस्टिस कुलवन्तसिह Retd Judge High Court Patna राजा सर रघुनन्दनसिंह तथा रायबहादुर ब्रजनन्दनसिह आदि स भेंट की और हैदराबाद की समस्या से परिचित कराया।

बगाल में कवि सम्राट् डाक्टर रवीन्द्रनाथ टेगौर, आचार्य सर पी० सी० रे०, डाक्टर सर नीलरतन सरकार, सर एन० एन० सरकार Ex-Law member Govt of India, सर मनमथनाथ मुकर्जी Ex-Law member Govt of India, महाराजा बर्दवान, महाराजा सेमनसिंह, डाक्टर श्यामाप्रसाद मुकर्जी Ex Vice Chancellor Calcutta University, श्रीयुत एन० सी० सेन, mayor of Calcutta Corporation माननीय नलनी रञ्जन सरकार Finance minister Bengal govt, श्रीयुत रामानन्द चटर्जी सम्पादक "Modern-Review," डाक्टर राधाकुमुद मुकर्जी, M L C सेठ घनश्यामदास बिड़ला, श्रीमती सरलादेवी चौधरानी, श्रीमती नलिनी सेन गुप्ता तथा कलकत्ता हाईकोर्ट के अन्य कई प्रसिद्ध बैरिस्टरों से भेंट की और हैदराबाद की परिस्थिति से परिचित कराया।

मनमांड में कार्य

लगभग १ मास तक मनमाड में रहकर कार्य किया।

कैथल का दौरा

कैथल मे गत रामलीला के अवसर पर वहाँ के प्रमुख आर्य तथा हिन्दू गिरफ्तार कर लिये गये थे। इस सिलसिले मे सही हालात मालूम करने तथा उचित कार्यवाही करने के लिये श्रो० लाला देशबन्धु जी के साथ कैथल गये।

सत्याग्रह इतिहास लेखन कार्य में योग

लाला रामप्रसाद जी तथा श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय को इतिहास लेखन कार्य में सब प्रकार की सहायता दी।

सार्वदेशिक भवन

जो यत्न म्यूनिसिपल कमेटी से हर्जाना प्राप्ति के सम्बन्ध मे किया जारहा था उस के सम्बन्ध में कानूनी त्रुटि मालूम होने पर उस यत्नको छोड़ना पड़ा। इस भवन की मरम्मत करा दी गई है। आगामी वर्ष सभा इस का उपयोग करेगी।

बलिदान भवन

इस भवन के नीचे की दूकानों तथा दूसरी मंजिल म कार्यालय के किराए से १४००) की आय हुई। तथा कमेटी इत्यादि के टैक्सों पर ४६२॥≡) व्यय हुआ।

भूकम्प निधि

इस वर्ष भी इस निधि के सूद से ५) मासिक की छात्र वृत्ति बिहार प्रान्त के एक विद्यार्थी को दी जाती रही।

चन्द्रभानु वेदमित्र स्मारक स्थिर निधि

तीतरों (सहारनपुर) के प्रसिद्ध आर्य स्व० श्री चन्द्रभानुजी रईस के सुपुत्र श्री वेदमित्रजी ने मथुरा शताब्दी के अवसर पर ५०००) दान किया था उसी धन से यह निधि स्थापित की गई है। इसका सूद आर्य्य साहित्य के प्रकाशन में व्यय किया जाता है। सभा ने निम्न प्रकाशन इस निधि के ब्याज के धन से अब तक प्रकाशित किए हैं।

१ यम पितृ परिचय

२ वैदिक संध्या रहस्य

३ आर्य सिद्धान्त विमर्श

४ विदेशों में आर्य समाज
५ दयानन्द सिद्धान्त भास्कर

हैदराबाद का धर्मयुद्ध

इस वर्ष हैदराबाद का धर्मयुद्ध और हैदराबाद में रचनात्मक कार्य्य आर्य्य समाज तथा सभा की प्रगतियों का मुख्य अंग रहा। मार्च के अन्त में निज़ाम सरकार की ओर से समझौते की चर्चा आरम्भ हुई और इस विषय पर विचार करने के उद्देश्य से सभा की अन्तरंग सभा की एक आवश्यक बैठक ६-४-३६ को शोलापुर में हुई परन्तु दुर्भाग्य से इस चर्चा का निज़ाम सरकार के पीछे हट जाने के कारण कोई अच्छा परिणाम न हुआ। उस समय आर्य्य नेताओं का यह अनुमान ठीक था कि इस चर्चा के भंग होजाने से आर्य्य जनता को कठोर परीक्षण में से गुज़रना होगा। हुआ भी ऐसा ही। इसके बाद आर्य्य जनता को बहुत त्याग और बलिदान करना पड़ा। निज़ाम सरकार का दमनचक्र प्रबलता से घूमा। परन्तु इस चक्र ने सत्याग्रह की प्रगति को विस्तृत और वेगवान ही बनाया। हज़ारों धर्मवीरों ने अपने संयम त्याग, उत्साह और बलिदान से निज़ाम सरकार की चुनौती का करारा जवाब दिया। इस दमन-चक्र के बावजूद हमारे आन्दोलन को बदनाम करने और हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष के रूप में हमें निरुत्साहित करने के विविध उपाय किए गए परन्तु चूँकि हमारा पक्ष न्याय और सत्य पर आश्रित था और सत्याग्रह के युद्ध की अहिंसा और सत्य की पवित्रता की रक्षा पर हम कटिबद्ध थे, इसलिए इन प्रतिक्रियाओं ने हमारे कार्य्य को जटिल नहीं वरन् सुगम ही बनाया। इस युद्ध के विस्तार का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि समुद्र पार यहाँ तक कि पार्लियामेण्ट के भवन तक भी इसकी गूँज पहुँची। अन्त में निज़ाम सरकार की टस से मस न होनेवाली सरकारी मैशीनरी को हिलना पड़ा और उसे 'सुधारों' की घोषणा करनी पड़ी। यह घोषणा २० जुलाई ३६ को की गई। सभा की २५ जुलाई १६३६ की देहली की बैठक में इन सुधारों के धार्मिक भाग पर विचार हुआ और सभा ने निम्न निश्चय के द्वारा उन संदेहों के स्पष्ट करने की माँग की जो उन सुधारों से सभा के माननीय अधिकारियों को प्रतीत होते थे। इस सम्बन्ध में सभा के अधिकारियों और निज़ाम सरकार के अधिकारियों के मध्य काफ़ी बातचीत और पत्र-व्यवहार हुआ। अन्त में आर्य्यसमाज की माँग के

औचित्य को अनुभव करते हुए ८ अगस्त को निजाम सरकार ने अपने एक विशेष वक्तव्यके द्वारा उन संदेहो का स्पष्टीकरण कर दिया। जो निम्नलिखित है

निजाम सरकार का ८–८–३६ का वक्तव्य

धार्मिक सुधारों का स्पष्टीकरण

निजाम सरकार ने अपने १७–७–३६ के वक्तव्य मे कुछ मामलो की बाबत अपनी आम स्थिति स्पष्ट की थी जिसके सम्बन्ध मे भ्रम फैला हुआ था। इसके बाद १२ शहरवार १३४८ फस्ली (१६–७–३६) को असाधारण गजट निकला था जिसमे सुधार-योजना प्रकाशित हुई थी। इन वक्तव्यो के कुछ अशों का कई जगहो से स्पष्टीकरण चाहा गया है इसलिए सर्व साधारण की सूचना के लिए स्पष्टीकरण प्रकाशित किया जाता है —

सभाओं और संस्थाओं की स्थापना

सभाओ और सोसाइटियो के निर्माण के सम्बन्ध मे वक्तव्य में कहा गया है, 'सुधार-योजना' का यह अश कि इसकी व्यवस्था के लिए कोई कानून नही है समस्त सभाओं और सोसाइटियों पर लागू होता है चाहे वे धार्मिक हो वा अन्य प्रकार की हो तथा समस्त सम्प्रदायो पर भी लागू होता है।

धार्मिक मामलो के लिए परामर्श

वक्तव्य मे धार्मिक मौलिक अधिकारों की पहले ही पुनर्घोषणा की जा चुकी है। धार्मिक परामर्श कमेटी का सम्बन्ध जैसा कि असाधारण गजट से जाना जा सकता है, उस रीति-नीति से होगा जिसके अनुसार कानून और व्यवस्था के हित में धार्मिक अधिकारो से सम्बन्धित कोई कायदा कानून बनाया तथा प्रचलित किया जायगा। रिफार्म कमेटी की सिफारिशो पर सरकार ने कोई सुनिश्चित आर्डर नही दिया है। परामर्श समिति की कार्यवाही गुप्त होनी चाहिए यह बात नियमो के लिए छोड़ दी गई है जो बनाए जायँगे।

'ऐसे खास मामले हो सकते है जिनको गुप्त रखने की जरूरत होगी साधारणतया सरकारो कार्यवाहियो मे परामर्श समिति की सिफारिशे भी सम्मिलित हुआ करेगी। यह कमेटी उन तरीको को बतलायगी जिनके द्वारा कानून और व्यवस्था को दृष्टि मे रखते हुए, धार्मिक अधिकार सम्बन्धी किसी कानून और धार्मिक अधि-

कारों के उचित उपभोग में समय २ पर समन्वय होना रहे। यद्यपि कोई भी अधिकार कभी भी पूर्ण नहीं हो सकता है, तो भी सरकार की नीति जैसा कि पिछले वक्तव्य में स्पष्ट किया जा चुका है, यह है कि सार्वजनिक शांति की रक्षा करते हुए अधिक से अधिक स्वतन्त्रता दी जाय और कायदे कानूनों को ऐसा बनाया जाय जिसे जनता को यथा सम्भव अधिक से अधिक सुविधा रहे।'

सार्वजनिक और धार्मिक सभाएँ

सार्वजनिक और धार्मिक सभाओं के लिये नियम अधिक उदार होंगे यहाँ तक कि जो धार्मिक सभाएँ या कृत्य प्राइवेट या सार्वजनिक मकान के भीतर होंगे उनके लिये अन्य सार्वजनिक जल्सों की तरह सूचना देने की जरूरत न होगी। किसी बिल्डिङ्ग के साथ की घिरी हुई जगह भी इस परिभाषा में आती है यद्यपि व्यवहार में कोई कठिनाई आई हुई नहीं मालूम हुई है फिर भी गाँवों में इस प्रकार की जगह की दिक्कत होती है, यह स्वीकार किया जाता है और इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए मुनासिब नियम बना दिये जायेंगे।

धार्मिक जलूस

किसी जाति के धार्मिक जलूसों के सम्बन्ध में, वक्तव्य का कहना है कि पहले अवसर पर ही आज्ञा लेने की जरूरत होगी और सबके हित में यह अच्छा है कि सुनिश्चित आर्डर होना चाहिए जिसमें रास्ते इत्यादि का निर्धारण होगा जिससे अगले वर्षों में उसी का अनुसरण हो सके। इस सम्बन्ध में सरकारी आर्डर जारी होंगे। नियमों का उद्देश्य किसी जाति के जलूसों पर केवल इसलिये पाबन्दी लगाना नहीं है कि वे 'नए' हैं।

आर्य-मन्दिर वा सार्वजनिक उपासना गृह

वर्तमान नियमों की दृष्टि में मुख्यतया स्थिर मकान थे जो पूजा के लिये प्रयुक्त होते हैं। यह स्वीकार किया गया है कि जातियों के रिवाज भिन्न २ होते हैं। आर्यसमाज का रिवाज इस बात में भिन्न है कि उसकी धार्मिक सभाएँ (हवन, यज्ञ और सम्मिलित प्रार्थनाएँ) किराये के प्राइवेट मकानों में लगती हैं और इन मकानों की कोई स्थिर पवित्रता नहीं होती है और इनमें किसी समय भी साप्ताहिक सत्सङ्गों का होना बन्द हो सकता है। साथ ही ये मकान कालान्तर में सार्वजनिक उपासना मन्दिरों का रूप ले सकते हैं। इस प्रकार के केसों के हल के लिये सरकार

यथावसर उचित नियम बनायेगी और इन नियमों से सार्वजनिक शान्ति के हित में समाजो की 'जगह' के प्रश्न हल हो जायेंगे। यह बात वर्तमान मन्दिरों पर भी लागू होती है। जब तक कोई जाति किन्हीं मकानों को अस्थायी रूप में धार्मिक सत्सगों के लिये प्रयुक्त करेगी तब तक इन सत्सङ्गो व सभाओं पर धार्मिक सभाओ और अनुष्ठानो का कोई भी नियम लागू नहीं होगा और इनके लिये आज्ञा लेने की जरूरत न होगी। परन्तु जो इमारतें केवल उपासना के लिये नई बनी होंगी, खरीदी गई होंगी, अथवा इस कार्य मे प्रयुक्त होने लगी होंगी उन पर सार्वजनिक उपासना मन्दिरों पर लागू होने वाले साधारण नियम लागू होंगे।

इन नियमों पर पहले से ही विचार किया जारहा है कि इन्हे सरल बना दिया जाय। देरी को रोकने के लिए ६ सप्ताह की अवधि भी नियत कर दी गई है।

जैसा कि अन्यत्र स्पष्ट किया जा चुका है इस सम्बन्ध में खास बात सार्वजनिक शान्ति के हित मे समाज की जगह नियत करना ही है। इस बात पर विचार किया जा रहा है कि होम सेक्रेट्रियेट मे इस सम्बन्ध मे किस प्रकार अपील की जाय।

प्राइवेट स्कूलों का खोलना

प्राइवेट स्कूल खोलने के सम्बन्ध मे विविध क्षेत्रों से यह सुझाव मिला है कि 'आज्ञा' लेने के स्थान में सूचना देने से महकमे की आवश्यकताएँ पूरी हो जायँगी। सरकार शीघ्र ही नियमों की आम जाँच पडताल करेगी तब ही इस पर पूरा २ विचार किया जायगा।

सब जातियों के बाह्य प्रचारकों के प्रवेश पर अस्थायी प्रतिबन्ध

यह फिर दुहराया जाता है कि ऐसी आज्ञाएँ केवल तब तक जारी रहेंगी जब तक कि वातावरण साफ नहीं हो जाता। सरकार को पूर्ण विश्वास है कि यह सन्तोषजनक स्थिति निकट भविष्य में ही उत्पन्न हो जायगी।

सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा की २५-७-३६ की अन्तरङ्ग सभा का निश्चय

(१)

इस सभा ने हैदराबाद सरकार के १७ जुलाई के वक्तव्य तथा सुधार योजना को पढा है, जो उनके १२ शहरपुर १३४८ फस्ली के असाधारण गजट में प्रकाशित हुई हैं और जिसमें निज़ाम महोदय का १७-७-३६ का फरमान भी शामिल है।

सभा, भाषण और लिखने की स्वतन्त्रता के प्रश्न से सम्बन्धित पैराग्राफ मे

जिसका आर्यसमाज के साथ सीधा सम्बन्ध है, यह उद्घोषित हुआ है कि अन्य कई रियासतो के सदृश सभा सोसाइटियों के निर्माण को व्यवस्थित करने वाला रियासत मे कोई कानून नही है। अवश्य सार्वजनिक जल्सा के सम्बन्ध मे नियम बने हुए हैं जिनका सार्वजनिक शान्ति के लिये पूर्णतया रद्द किया जाना सम्भव नही है। फिर भी प्रतिनिधि सत्तात्मक सभाओं के विकास के साथ २ कौंसिल की प्रबल इच्छा है कि जहाँ तक वर्तमान अवस्थाये आज्ञा दे, अधिक स अधिक स्वतन्त्रता दी जाय। अत कौंसिल का प्रस्ताव है कि वर्तमान नियम रद्द कर दिये जाँय और ऐसी व्यवस्था कर दी जाय जिसके अनुसार सार्वजनिक जल्सा के सयोजको को किसी आज्ञा के प्राप्त करने की जरूरत न रहे बरन् उन्हे केवल जिम्मेवार अधिकारी को पूर्व मे सूचना देना रह जाय जिसके लिये स्थानीय अधिकारी हर प्रकार की सहूलियतें देंगे। परन्तु साथ ही इस अधिकारी के लिये यह अधिकार सुरक्षित रहना चाहिये कि वह किसी खास मीटिङ्ग को रोक दे, परन्तु ऐसा केवल तब ही हो सकेगा जब कि उस अधिकारी की सम्मति मे उस मीटिङ्ग मे सार्वजनिक शान्ति के भङ्ग होने की आशङ्का हो अथवा राजा के प्रति घृणा तथा जातियो म शत्रुता बढती हो। जो मीटिङ्ग रोकी जायगी उसके सयोजको को अपील का अधिकार होगा।

निज़ाम महोदय ने अपने फर्मान मे, जिसका ऊपर जिक्र किया गया है, कौंसिल की इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया है।

यह वक्तव्य यह विश्वास दिलाने के लिये दिया गया है कि आर्यसमाजी तथा निज़ाम महोदय की अन्य रियाया को सभा करने तथा सोसाइटी बनाने तथा आर्य-समाज बनाने तथा चलाने का अबाधित अधिकार होगा और आर्यसमाज तथा दूसरी सोसाइटियों को सार्वजनिक जल्से करने की पूरी २ आजादी होगी, साथ ही इस सम्बन्ध मे प्रतिबन्ध लगाने वाले सब नियम रद्द कर दिये जायगे। यह होते हुए भी सन्देह प्रगट किये गये हैं कि क्या इस घोषणा के अनुसार वे नियम भी रद्द हो जायँगे जो राज्य मे धार्मिक अनुष्ठानो पर पाबन्दियां लगाते हैं। चूँकि धार्मिक अनुष्ठानो से सम्बन्धित वर्तमान नियमो से, जिनका साफ तौर पर जिक्र नहीं किया गया है, इन सन्देहों की कुछ पुष्टि होती है, इसलिये इस सभा की सम्मति मे स्थिति का स्पष्टीकरण जरूरी है।

ऐडवाइजरी कमेटी के सम्बन्ध में सभा की यह दृढ सम्मति है कि जिस प्रकार के धार्मिक और सांस्कृतिक मौलिक अधिकारों के लिए आर्यसमाज लड़ रहा है, वे तहकीकात के विषय नहीं बनाए जाने चाहिए। ऐसी ऐडवाइजरी कमेटी के द्वारा तो उनकी जाँच होनी ही नहीं चाहिए जो रियासत के एक महकमे के साथ जुड़ी हो (प्रत्यक्षत अमूर मजहबी) और जिस महकमे को केवल गुप्त रिपोर्ट देने का अधिकार हो। अत यह सभा अपने माननीय प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त से प्रार्थना करती है, जिन्हें पहले से ही पूर्ण अधिकार दिए हुए हैं कि वे स्थिति के स्पष्टीकरण के लिये तात्कालिक कार्यवाही करें और समय २ पर स्थिति जैसा तकाजा करे वैसा ही कार्य करें। यह सभा सत्याग्रह कमेटी को आदेश देती है कि वर्तमान में जत्थे इस समय जहाँ पड़े हुए हैं वहाँ ही ठहरे रहें और आज्ञाओं की प्रतीक्षा करें।

(२)

हैदराबाद सत्याग्रह के लिए आर्यों और हिन्दुओं ने धनजन की सभा को अपील का बड़ा उत्साहवर्धक उत्तर दिया है इस पर यह सभा अत्यन्त सन्तोष प्रगट करती है और सेवा और त्याग भाव के लिए उन्हें हार्दिक बधाई देती है। समाचार पत्रों तथा आर्य जनता के प्रति उस सहानुभूति और नैतिक सहायता के लिए जो उन्होंने इस धार्मिक युद्ध में सभा के प्रति उदारता पूर्वक प्रदर्शित की है, यह सभा हार्दिक कृतज्ञता प्रगट करती है और आशा करती है कि इस युद्ध में आगे भी यह सहायता और सहानुभूति मिलती रहेगी।

सभा ने अपनी नागपुर की ऐतिहासिक मीटिंग में ८-८-३९ के निजाम सरकार के वक्तव्य पर विचार किया और निम्न निश्चय के द्वारा सत्याग्रह युद्ध के बन्द होने की घोषणा की—

आर्य सार्वदेशिक सभा की नागपुर की अन्तरंग द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव

१—निजाम सरकार द्वारा प्रकाशित आज की विज्ञप्ति को देखते हुए, जिसमें कि सार्वदेशिक सभा द्वारा उठाए गए मुद्दों का खुलासा किया गया है और खासकर उस खुलासे में निहित समझौते की भावना को देखकर और उच्च स्थिति के सम्मानित मित्रों और शुभेच्छुकों की राय का सम्मान करते हुए जिनकी राय और जिनके सहयोग को सभा बहुत मूल्यवान समझती है, सभा सत्याग्रह को जारी रखना उचित नहीं समझती है और इसके द्वारा उसको बन्द करने की घोषणा करती है। सभा सत्याग्रह कमेटी को आदेश देती है कि वह विभिन्न स्थानों पर मौजूद जत्थों को भंग कर दे।

सभा की राय में उपर्युक्त वर्णित खुलासे मे निज़ाम द्वारा माँगों को, जिनकी पूर्ति के लिए सत्याग्रह छेड़ा गया था, पूरा करने का ईमानदारी से प्रयत्न किया गया है। सभा ने निज़ाम सरकार के इरादे पर पूर्णरूप से विश्वास करते हुए और उन घोषणाओं की उदार व्याख्या के आधार पर सत्याग्रह को जारी न रखने का आदेश देने की अपने ऊपर जिम्मेदारी ली है।

निज़ाम गवर्मेण्ट को चुनौती देने के विचार से या उसका विरोध करने के उद्देश्य से या प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से साम्प्रदायिक वैमनस्य फैलाने के इरादे से आर्य सत्याग्रह शुरू नहीं किया गया था। आन्दोलन का एक मात्र उद्देश्य धार्मिक और सांस्कृतिक स्वतन्त्रता को प्राप्त करना था।

२—मूल्यवान त्याग का सर्वोत्तम परिणाम हो इसलिये सभा की राय मे आर्यों और इतर हिन्दुओं के लिये विशेषकर जो लोग निज़ाम के राज्य में रहते हैं, अब और अधिक आवश्यक है कि वे आत्म संयम से काम ले और सच्ची धार्मिक भावना से सत्य और अहिंसा का अधिक कठोरता से पालन करें।

३—सत्याग्रह युद्ध के समय भारत के समाचार पत्रों द्वारा स्वेच्छापूर्वक जो सहायता दी गई है, उसको सभा कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार करती है। सभा को पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में धार्मिक स्वतन्त्रता के पक्ष को उनका मूल्यवान समर्थन सदा प्राप्त होगा।

सभा उन लोगों के प्रति भी अपना आभार प्रदर्शित करती है, जिन्होंने आन्दोलन की धन व अन्य प्रकार से सहायता की है। सभा भारत व विदेशों के सब आर्यों की ओर से उन शहीदों के प्रति अपनी सम्मान पूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करती है जिन्होंने वैदिक धर्म के लिये अपने प्राण उत्सर्ग किये है।

सभी डिक्टेटरों और अन्य सत्याग्रहियों को, जिन्होंने कि वैदिक धर्म के खातिर सब प्रकार के कष्ट सहे और हैदराबाद की जेलों में कठोर जेल जीवन बिताया, बधाई देती है।

धर्म युद्ध को सफल बनाने के लिये आर्य समाजियों, हिन्दुओं सिक्खों व अन्यों ने जो सहायता दी है, उस पर सभा अपना संतोष प्रकट करती है।

प्रतिनिधिगण लो० अणे के प्रति आन्दोलन को मूल्यवान नेतृत्व और पथ प्रदर्शन प्रदान करने के लिये हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करते है।

यहाँ जमा हुए आर्य प्रतिनिधि गण सत्याग्रह आन्दोलन को सफलता पूर्वक

समाप्ति तक पहुँचाने के लिये श्री घनश्यामसिंह गुप्त और श्री देशबन्धु गुप्त द्वारा की गई मूल्यवान सेवाओं की सराहना करते हुए कृतज्ञता का प्रकाश करते हैं।

निज़ाम सरकार ने १७ अगस्त को निज़ाम महोदय के वर्ष दिन के उपलक्ष में समस्त सत्याग्रहियों को मुक्त किया और उनका मार्ग व्यय भी दिया। सभा ने भी आवश्यकतानुसार इस सम्बन्ध में काफी व्यय किया।

प्रान्तवार सत्याग्रहियों की संख्या

सत्याग्रहियों की सूची के अनुसार जो युद्ध-केन्द्रों में तय्यार की गई थी। १०५७६ सत्याग्रही जेल गए थे। उनकी सूची प्रान्त वार इस प्रकार है —

नाम प्रान्त	सत्याग्रहियों की संख्या
(१) पञ्जाब सीमाप्रान्त, काश्मीर तथा देहली	३१५७
(२) संयुक्तप्रान्त	२,०८५
(३) राजस्थान, मालवा तथा मध्यभारत	४४७
(४) बिहार	३३१
(५) बङ्गाल	२०२
(६) मध्यप्रान्त तथा बरार	५७५
(७) बम्बई प्रान्त	२४१
(८) सिन्ध	१६४
(९) मद्रास प्रान्त	६६
(१०) ब्रह्मा	२५
(११) आसाम	७
(१२) निज़ाम राज्य	३,२४६
	१०,५७६

इसके अतिरिक्त २००० सत्याग्रही वे थे जो ८-८-३९ से पूर्व केन्द्रों में पहुँच गये थे और सार्वदेशिक सभा की आज्ञाओं की प्रतीक्षा में थे।

आर्थिक

इस युद्ध में आर्य्य-जनता का अनुमानतः १० लाख रुपया व्यय हुआ है। ठीक २ अङ्क एकत्र किए जारहे हैं। सार्वदेशिक-सभा तथा सत्याग्रह-समिति शोलापुर के द्वारा जो आय व्यय हुआ उसका निरीक्षित तथा प्रमाणित विवरण अन्यत्र दिया गया है।

हुतात्मा

इस धर्म युद्ध मे २५ धर्मवीरों ने अपने प्राणो की आहुति दी जिनकी नामावलि इस प्रकार है—

सख्या	नाम हुतात्मा	पिता का नाम	जिस स्थान के रहने वाले	जिस जेल मे मृत्यु हुई	जिस तारीख मे मृत्यु हुइ
१.	श्री प० श्यामलाल जी	श्री प० भोलानाथ जी	उदगीर (निजाम राज्य)	बीदर	१६-१२-३६
२	श्री स्वामी सत्यानन्द जी	×	बगलौर (मैसूर)	हैदराबाद	८७-४-३६
३.	श्री परमानन्द जी	श्री गोकल प्रसाद जी	हरिद्वार यू० पी०	,,	२-४-३६
४	श्री विष्णु भगवन्त ताड्कर जी	×	ताण्डूर (निजाम राज्य)	,,	१-५-३६
५	श्री छोटेलाल जी	श्री मुसोखे प्रसाद जी	अलालपुर(मैनपुरी) यू०पी०	गुलबर्गा	३-५-३६
६	श्री नन्हसिंह जी	श्री गणेशसिंह जी	अमरावति (बरार)	हैदराबाद	२६-५-३६
७	श्री माधवराव जी	सन्त शिवरी जी	लातूर (निजाम राज्य)	गुलबर्गा	८६-५-३६
८.	श्री पाण्डूरङ्ग जी	×	उस्मानाबाद (निजाम राज्य)	,,	२७-५-३६
९	श्री मुनहरा सिंह जी	चौ० जगराम जी	बूटाना (रोहतक) पजाब	औरङ्गाबाद	८-६-३६
१०.	श्री फकीर चन्द जी	,, बालाराम जी	मगधा (करनाल)	,,	१-७-३६
११	श्री मलखान सिंह जी	दलमीर सिंह जी	रुडकी यू० पी०	हैदराबाद	१-७-३६
१२.	श्री स्वामी कल्याणानन्द जी	गुरु स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी	मुजफ्फर नगर यू० पी०	गुलबर्गा	८-७-३६
१३	श्री शान्तिप्रकाश जी	श्री रामरतन जी शर्मा	कलानौर अकबरी	उस्मानाबाद	२७-७-३६

सख्या	नाम हुतात्मा	पिता का नाम	जिस स्थान के रहने वाले	जिस जेल में मृत्यु हुई	जिस तारीख में मृत्यु हुई
१४.	श्री बदन सिंह जी	डा० टीका सिंह जी	मुजफ्फराबाद (सहारनपुर)	वारगल	२४-८-३९
१५	श्री सदा शिव जी पाठक	श्री विश्वनाथ जी	नडवल (शोलापुर)	हैदराबाद	१३-८-३९
१६.	श्री लक्ष्मणराव जी	×	×	,,	२-८-३९
१७	श्री गोविन्दराव जी	श्री लक्ष्मणराव जी	नलगीर (बीदर) निजाम राज्य	,	×
१८.	श्री ताराचन्द जी	चौ० केहर सिंह जी	लुम्ब (मेरठ) यू० पी०	नागपुर में जेल से बीमारी की अवस्था मे आते हुए मार्ग मे	७-६-३९
१९	श्री वैंकटराव जी	×	× (निजाम राज्य)	निजामाबाद	८-४-३९
२०	श्री रतिराम जी	श्री मुसद्दीलाल जी	मापला (रोहतक) पजाब	बीमारी की अवस्था मे जेल से छूट कर आने पर	२५-८-३९
२१	श्री अशरफीलाल जी	श्री फिरगी सिंह जी	नरकाटियागज(चम्पारन बिहार)	बीमारी की अवस्था मे घर लौटने पर	२९ ८-३९
२२	श्री रामनाथ जी	श्री मोतीभाई रणछोड़जी	अहमदाबाद (गुजरात)	,,	८-६-३९
२३	श्री पुरुषोत्तम जी ज्ञानी	श्री जगन्नाथ जी	बुरहानपुर (C P)	,,	२६-८-३९
२४	श्रीभक्त अरूढ़ामल जी	×	मरगोभा (पजाब)	लाहौर से जेल से बीमारी की अवस्था म लौटने पर	२६-८-३९
२५	श्री मातूराम जी	चौ० गुगनराम जी	मिलकपुर हिसार (पंजाब)	बीमारी की अवस्था मे जेल से छूट कर मनमाड में	२९-५-३९

हमे यह अङ्कित करते हुये बड़ी प्रसन्नता होती है कि आर्य्य-जनता का अपूर्व त्याग और बलिदान ऊँची और सम्माननीय हस्तियों का सफल नेतृत्व और बलिदान वही फल लाया जिसको कि आशा थी। इसके लिये हम उन सबको हृदय से बधाई देते है। सचमुच साधारण हिन्दू-जनता का सहयोग अनुकरणीय और मूल्यवान रहा। इस सहयोग के बिना हमारा कार्य बहुत कठिन हो जाता। यह हम प्रसन्नता से स्वीकार करते है। हम उन ज्ञात और अज्ञात हुतात्माओ के प्रति अपनी विनीत श्रद्धाञ्जलि प्रस्तुत करते है जिन्होंने अपनी पवित्र आहुति से अपने धर्म-भाव का अनुपम और विशिष्ट परिचय दिया है।

सत्याग्रह के अधिनायक

(सर्वाधिकारी) इस धर्म-युद्ध मे जिन सर्वाधिकारियो ने नेतृत्व किया, उनके नाम इस प्रकार है —

(१) प्रथम सर्वाधिकारी श्री० पूज्य नारायण स्वामी जी
(२) द्वितीय ,, ,, कुवर चाँदकरण जी शारदा
(३) तृतीय ,, लाला खुशहालचन्द जी
(४) चतुर्थ , राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री जी
(५) पञ्चम ,, , प० वेदव्रत जी
(६) षष्ठ ,, म० कृष्ण जी
(७) सप्तम , ,, प० ज्ञानेन्द्र जी
(८) अष्ठम ,, , ,, विनायकराव जी

सार्वदेशिक सभा का अत्यन्त महत्वपूर्ण निश्चय

भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तो की कतिपय साम्प्रदायिक संस्थाओं और उनके नेताओ के अत्यन्त अनुचित रुख के फल स्वरुप देश की जो साम्प्रदायिक स्थिति इस समय है उस पर आर्य नेताओ ने सार्वदेशिक सभा की २८-१-४० की अन्तरङ्ग सभा में भली-भाँति विचार किया था। साम्प्रदायिक आधार पर भारतवर्ष के विभाजन जैसी चीजो के घटित होने पर आर्यसमाज के लिए तथा उस सबके लिए जिसके लिए आर्यसमाज का अस्तित्व है जो खतरा है उस पर सक्खर तथा अन्य स्थानो के दङ्गो के प्रकाश मे विचार हुआ था। सभा ने सर्व सम्मति से निम्न निश्चय किया —

"राजनैतिक प्रगतियो मे सीधे भाग न लेने की आर्यसमाज की नीति रही है।

यह सभा उस नीति को जारी रखने की इच्छा रखते हुए भी कतिपय साम्प्रदायिक संस्थाओं और उनके उत्तरदायित्व पूर्ण नेताओं की प्रगतियों और घोषणाओं से साधारण हिन्दुओं के मनों पर जो प्रतिक्रिया हो रही है तथा उन (हिन्दुओं) में आत्म-संरक्षण एवं अपने सांस्कृतिक और धार्मिक मुख्य हितों की रक्षा की जो चिंता बढ़ रही है, उसे सार्वदेशिक सभा अनुभव किए बगैर नहीं रह सकती।

सभा स्थिति के अध्ययन और उचित कार्यवाही सुझाने के लिए निम्न सज्जनों की एक उपसमिति नियत करती है।

(१) श्रीयुत रायसाहब मदनमोहन सेठ रिटायर्ड सेशन जज।

(२) „ म० कृष्ण बी०ए०, मालिक 'प्रताप' व 'प्रकाश' लाहौर (संयोजक)

(३) „ ला० देशबन्धु गुप्त 'तेज' देहली।

(४) „ प० वेदव्रत जी वानप्रस्थी बिहार।

(५) „ बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट आगरा।

निश्चय हुआ कि यह समिति ३० मार्च तक अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दे।

यह समिति अपना कार्य कर रही है।

विविध उपसमितियाँ

नियम संशोधन समिति

३०-६-३६ की अन्तरंग सभा ने सभा के नियमों के संशोधन के लिये एक उपसमिति नियत की है। उसके सदस्य इस प्रकार हैं —

(१) श्री० रायसाहब मदनमोहन सेठ (२) श्री० प्रो० सुधाकर एम. ए. (संयोजक)

(३) „ प० गङ्गाप्रसाद चीफ जज (४) „ महात्मा नारायण स्वामी जी

(५) „ ला० देशबन्धु जी

हिन्दुस्तानी विषयक उपसमिति

७-१-४० की अन्तरंग सभा में वर्धा स्कीम के आधीन 'हिन्दुस्तानी' की पुस्तकों के सम्बन्ध में क्रियात्मक आलोचना तय्यार करने के लिये निम्न सज्जनों की उपसमिति नियत कीगई —

(१) श्री० माननीय घनश्यामसिंह जी (२) श्री० लाला देशबन्धु जी

(३) „ प्रो० महेन्द्रप्रताप जी (४) „ प० वेदव्रत जी

(५) „ „ सुधाकर जी (संयोजक)

इसके अतिरिक्त 'गोरक्षा' सम्बन्धी विस्तृत स्कीम बनाने का कार्य श्री० पं० महादेवशरण जी (बिहार) के सुपुर्द किया गया है।

देशी राज्यों में आर्य्य-समाज के अधिकारों की रक्षा

सभा ने देशी राज्यों में आर्य्य-समाज के हितों की रक्षा के सम्बन्ध में कार्य करने के लिये निम्न महानुभावों की एक उपसमिति नियत की है —

(१) श्री० पं० गङ्गाप्रसाद जी चीफ जज (संयोजक)

(२) ,, कुँवर चाँदकरण जी शारदा

(३) ,, रायसाहब मदनमोहन सेठ जी

भरतपुर

इस वर्ष इस समिति के सामने भरतपुर और भूपाल के विषय कार्यवाही के लिये उपस्थित हुए। भरतपुर राज्य ने आर्य्य-समाज को क्रिमिनल ला एमेन्डमेन्ट के आधीन रजिस्टर्ड कराने के लिए आग्रह किया। आर्य्य-समाज एक विशुद्ध धार्मिक संस्था है। उसका इस प्रकार के कानूनों में बाँधा जाना एक दम अनुचित आक्षेप-योग्य और हानिकारक था अतः सभा ने इस कार्य्यवाही का घोर प्रतिवाद किया। अन्त में प्रसन्नता है, लम्बे पत्र-व्यवहार तथा सभा के प्रतिनिधियों के भरतपुर राज्य के कर्मचारियों से मिलने-जुलने के फलस्वरूप, भरतपुर दरबार ने कृपा पूर्वक अपना निश्चय प्रगट किया कि वे उक्त एक्ट के संशोधन में आर्य्य-समाज की माँग पर भी अवश्य ध्यान देंगे।

भूपाल

आर्य्य-मित्र सभा भूपाल ने सार्व० सभा को सूचित किया कि रियासत भूपाल में सार्वजनिक सभाओं पर प्रतिबन्ध लगाए गए है और बाहर के वक्ताओं को सार्वजनिक सभाओं में भाषण देने की आज्ञा नहीं है इसी कारण से आर्य्य-मित्र सभा ने गत २ वर्ष से अपना वार्षिकोत्सव नहीं किया। इस सभा के माननीय प्रधान जी ने इन्सपैक्टर जनरल आव् पुलिस भूपाल से पत्र-व्यवहार किया जिसके उत्तर में इन्सपैक्टर जनरल महोदय ने स्पष्टीकरण किया कि रियासत भूपाल को राजनैतिक वक्ताओं के रियासत में भाषण करने पर आपत्ति है परन्तु धार्मिक सभाओं के सम्बन्ध में इस प्रकार की आपत्ति नहीं है। केवल धर्म शास्त्री या काजी

मे आज्ञा लेकर धार्मिक जल्सो मे बाहर के व्याख्याताओ के भाषण कराए जासकते है। कभी ऐसा नही होता कि यह स्वीकृति न दी जाय।

कपूरथला

इसके अतिरिक्त कपूरथला स्टेट मे Registration of Association Act बनाया गया था। वहाँ भी आर्य समाज ने दरबार से प्रार्थना की कि आर्य समाज एक शांति प्रिय धार्मिक संस्था है इसलिये इस पर उक्त ऐक्ट नहीं लगना चाहिए। इस पर कपूरथला के चीफ मिनिस्टर ने निम्न आज्ञा प्रचारित की —

ORDER No 57

In view of the fact that the accredited representatives of a large majority of religious, political and quasi political Associations in the State assured me on 1st November 1939 of their steadfast loyalty to His Highness the Maharaja Sahib Bahadur of Kapurthala and gave me an undertaking in writing as well as by their word of mouth individually and collectively that they will do nothing to embarrass His Highness Government and that they will exercise their influence on the side of law and order if anything untoward happens, His Highness the Maharaja Sahib of Kapurthala is pleased to suspend the operation of the 'Registration of Associations Act' till further orders.

(Sd.) PINDI DAS SABHERWAL
Dewan Bahadur,
Chief Minister,
to
His Highness the Maharaja of Kapurthala.

Dated 1st November 1939.

जयपुर

जयपुर मे पब्लिक सोसाइटीज़ ऐक्ट बनाया गया था जिसके आधीन आर्य-समाज का Registered कराया जाना आवश्यक ठहराया गया। आर्य समाज ने दरबार से प्रार्थना की कि आर्य समाज का कार्य क्षेत्र धर्म प्रचार है इसलिये इसे

Registration के कानून से मुक्त कर देना चाहिए। इस पर रियासत के होम मिनिस्टर महोदय ने निम्न प्रकार आज्ञा प्रचारित की —

Copy No 1435 H of 39 from the Home Minister Jaipur State Jaipur to the President Arya Samaj Jaipur Date 21-3-39

Memorandum

With reference to his application dated the ... 1939 the President of the Arya Samaj, Jaipur is informed that the Arya Samaj is concerned with the ... religion ... to have it registered under the Public Societies Act

... Hon Minister

खैरपुर (सिन्ध)

आर्य प्रतिनिधि सभा सिन्ध ने रिपोर्ट की कि खैरपुर स्टेट में Act for Registration of Association बनाया गया है जिसके आधीन धार्मिक संस्थाओं का Registered रजिस्टर्ड कराया जाना आवश्यक है इसमें पूर्व कि सभा की ओर से कोई कार्यवाही की जाती रियासत द्वारा इस एक्ट के निम्न प्रकार संशोधित किये जाने की सूचना प्राप्त हो गई —

Amendment in the Khairpur ... Registration ... Association Act, 1939 published in the ... Khairpur dated the 23rd January 1940

An Act for registration of ... Associations in Khairpur State was enacted It has been amended as under

At the beginning of the ... is now written that all ... Societies and Associations ... Educational Social and purely Religious

दक्षिण भारत में रचनात्मक कार्य

हैदराबाद सत्याग्रह की समाप्ति के पश्चात् श्री प्रधान सभा ने दक्षिण भारत तथा हैदराबाद राज्य में रचनात्मक कार्य का भावी तीन वर्षों का प्रोग्राम निम्न प्रकार प्रकाशित किया

(१) हैदराबाद मे जो आर्य्य सत्याग्रही वीर गति को प्राप्त हुए हैं उनका किसी उपयुक्त स्थान पर और किसी न किसी रूप मे आर्य्यसमाजो मे अच्छा स्मारक बनाया जाय। इन धर्मवीरों के परिवारों को यथावश्यकता धन की सहायता दी जाय।

(२) हैदराबाद शहर म एक हाइस्कूल खोला जाय और यथासभव अन्य स्थानो पर भी छोटे बडे स्कूलो की स्थापना की जाय।

(३) हैदराबाद राज्य के अन्तर्गत ग्रामों तथा नगरो मे वैदिक धर्म प्रचार को तजी म बढ़ाने के लिए उच्चकोटि के कुछ उपदेशक चुनकर भेजे जाये, तथा मराठी, कनाडी और तिलग भाषा भाषी हैदराबादी निवासी कुछ प्रचारक शीघ्र तैयार किये जाँय, और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यकता पडे तो शोलापुर मे एक प्रचारक विद्यालय खोला जाय।

(४) हैदराबाद राज्य मे अधिकतर आर्य्यसमाजो क पास अपने निजी मकान नहीं है। बहुधा किराय क मकानो मे कार्य्य हो रहा है। सभा चाहती है कि ग्रामों के विशेष केन्द्रों म सभा की ओर से ५००) तथा कस्बों म १०००) की लागत के आर्य्यसमाज मन्दिर बनाय जाँय। जो सज्जन एक मन्दिर का पूरा व्यय दान देंगे उनके नाम का पत्थर मन्दिरों पर लगाया जायगा।

(५) हैदराबाद की परिस्थिति को ध्यान म रखते हुए—

(१) वहाँ की भाषाओं मे आर्य्य साहित्य तय्यार कराया जायगा।

(२) सभा क प्रकाशन विभाग को सुदृढ़ और उन्नत किया जायगा। सम्प्रति इस विभाग की ओर से,—

(क) आर्य्य सत्याग्रह आन्दोलन का सर्वाङ्गपूर्ण वृहत् इतिहास तैयार किया जायगा।

(ख) आर्य्य सत्याग्रह क शहीदों, सर्वाधिकारियो तथा अन्य मुख्य सत्याग्रहियो की जीवनियाँ पुस्तक रूप मे प्रकाशित की जाँयगी।

(ग) सत्याग्रह सम्बन्धी अन्य रोमाँचकारी घटनाय लेख बद्ध कराके छपवाई जाँयगी। यह कार्य श्री प० गगाप्रसादजी उपाध्याय एम० ए० तथा श्री ला० रामप्रसादजी बी० ए० के सुपुर्द किया गया है।

(६) इन सब कार्य्यों के लिए 'हैदराबाद निधि' स्थापित की गई है और उसमें २॥ लाख रुपया शीघ्र से शीघ्र जमा करा देने का निर्णय किया गया है।

आशा है आर्य्य जनता इस प्रोग्राम को सफल बनाने मे सभा को उसी उत्साह से सहायता देगी, जिस उत्साह से उसने सत्याग्रह आन्दोलन को सफल बनाने मे सहायता दी है। इसके लिए धन-संग्रह का कार्य्य पूर्ववत् जारी रहना चाहिए और मासिक चन्दे की प्रतिज्ञाओ को कम से कम और ६ मास जारी रखना चाहिए। जिन समाजो में सत्याग्रह निधि का धन पड़ा है उन्हे वह शीघ्र इस सभा मे भेज देना चाहिए। हम जानते हैं कि आर्य (हिन्दू) जनता ने इस आन्दोलन मे आशा से अधिक धन का त्याग किया है, फिर भी धर्मप्रचार की जो भूमि धर्म वीरो के रक्त और वीर सत्याग्रहियो के अपूर्व त्याग और कष्ट सहिष्णुता से तय्यार हुई है, उसे धन के अभाव मे निकम्मी छोड़ देना किसी भी आर्य्य को वॉछनीय नही हो सकता। अत धन की सहायता जुटाने तथा हर प्रकार से इस योजना को सफल बनाने मे उत्साह से एक दम जुट जाना चाहिए। यही मेरी आर्य्य भाइयो से विनीत प्रार्थना है।

इस प्रोग्राम को कार्यरूप मे परिणत करने के लिए दक्षिण-भारत-प्रचार समिति का निम्न प्रकार निर्माण किया गया —

(१) श्री महात्मा नारायण स्वामीजी (२) श्री स्वतन्त्रानन्दजी (३) श्री लाला देशबन्धुजी (४) श्री ला० खुशहालचन्दजी (५ श्री ला० देवीचन्दजी (६) श्री ला० नारायणदत्तजी (७) श्री प्रो० सुधाकरजी (८) श्री महाशय कृष्णजी (९) श्री घनश्याम सिंहजी (१०) श्री प० गंगाप्रसादजी उपाध्याय (११) श्री प० विनायकराव (१२)श्री प० बंशीलालजी (१३) श्री प० वेदव्रतजी। श्री० प्रधानजी द्वारा निर्दिष्ट कार्यक्रम के अनुसार जो कार्य गत ६ मास मे हुआ है उसका विवरण निम्न प्रकार है —

प्रचार

इस समय हैदराबाद रियासत मे निम्न—उपदेशक तथा अन्य कार्य कर्त्ता प्रचारादि कार्य कर रहे है।

१ प० भद्रदेव जी
२ वीर भद्र ,,
३ प० कर्म्मवीर ,,

४ पं० गणपतलाल जी

५ ,, प्रल्हाद ,,

६ ,, नारायणराव ,,

७ ,, माथुर शर्मा ,,

८ ,, महेन्द्र शास्त्री ,,

९ ,, वशीलाल ,,

१० ,, गणेशराव वकील ,,

११ श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय

१२ श्री प० धुरेन्द्र जी शास्त्री

१३ प० गोपदेव ,,

इन के अतिरिक्त बम्बई, सी० पी० बरार और मद्रास प्रान्त म निम्न कार्य कर रहे हैं।

C P सभा की निरीक्षण में

१ श्री प० ज्ञानचन्द जी सूफी — सी० पी० और बरार

२ श्री प० वाचस्पति जी

३ श्री स्वामी विद्यानन्द जी — बम्बई

प० मदनमोहन की अध्यक्षता में सहायक रूप में

४ लक्ष्मी नारायण — आन्ध्र

प० केशवदेव ज्ञानी की अध्यक्षता में

५ श्री कन्हैया — मद्रास (तामिल)

प० धर्मदेव जी के सहायक रूप में

६ श्री मजुनाथ — मालाबार

७ श्री सुधाकर

साहित्य प्रचार

विभिन्न मूल और अनूदित आर्य साहित्य की पुस्तकों के अतिरिक्त निम्न पुस्तकों का अनुवाद पूर्व ही हो चुका है।

मराठी—सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका,

कनाड़ी—सत्यार्थ प्रकाश,

नामिल—सत्यार्थ-प्रकाश, संस्कार विधि

मलयालम—सत्यार्थ-प्रकाश

तैलगु—सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका

श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की सहायता से श्री प० गोपदेव जी तैलगू भाषा मे साहित्य तैयार कर रहे हैं।

निम्न पुस्तके छप चुकी है —

१ आर्य समाज क्या है ?	तैलगू
२ „ „	अंग्रेजी मे
३ ईश्वरोपासना	तेलगु
३ गृह लक्ष्मी	„
४ आर्य समाज धर्म	
५ धर्म के नाम पर कल्पित कहानिया	„
६ अवतार मीमासा	
७ ईसाई मत समीक्षा	„
८ वैदिक जीवन	„
९ सध्या हवन	„

कनाडी मे संस्कार विधि तथा आर्य्याभिविनय अनूदित हुए ।।

नई समाजें

हैदराबाद रियासत मे— ३६

(१) आन्ध्र, तनाली, बरहामपुर

(२) तामिलनाड, बगलोर, कल्पाड़ा

(३) करनाटक कोलार गोल्ड फोल्ड

(४) ट्रावनकोर, कोटयम

उपदेशक विद्यालय शोलापुर

श्री प० धुरेन्द्रजी शास्त्री तथा प० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय संयुक्त रूप से आचार्य का कार्य कर रहे है। पन्नीलाल जी अध्यापन तथा प्रबन्धकार्य करते रहे है।

इनके अतिरिक्त निम्न अध्यापक है'—

१ पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री

२ ,, त्रिलोकचन्द ,

विद्यार्थियों की संख्या ३६ है।

हुतात्माओं के परिवारों को सहायता

निम्न प्रकार दी जा रही है —

१	श्री फकीर चन्द जी	१)
२	,, स्व० छोटे लाल जो	)
३	,, मलखान सिंह ,,	५)
४	,, अशरफी लाल ,	९)
५	,, सदाशिव पाठक ,	६)
६	,, वेद प्रकाश	९)
७	,, धर्म प्रकाश	६)
८	,, महादेव	६)
९	,, रामा	५)
१०	,, सत्यनारायण	५)
११	,, महादेव (२)	६)
१२	,, गोविन्दराव	५)
		७७)

इसके अतिरिक्त हैदराबाद आन्दोलन के अन्य पीड़ितो को ९५) मासिक सहायता दी जा रही है इस प्रकार कुल सहायता ७७ + ९५ = १७२) दी जा रही है।

आर्यों पर जो भिन्न २ अभियोग चल रहे है उन मे ८००) सहायता दी जा चुकी है।

हाई स्कूल

इस सभा की ओर से २५०००) की सहायता स्कूल का भवन बनाने के लिए निजाम राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा को दी गई है । भूमि अथवा मकान खरीदने का यत्न हो रहा है । यदि किसी कारण भूमि न मिल सकी तो आगामी शिक्षा सत्र के प्रारम्भ में किराए के मकान में स्कूल शुरू कर दिया जायगा ।

मन्दिर निर्माण

मन्दिर निर्माण के लिए श्री प्रधान जी ने अपील की है जिसके परिणाम स्वरूप निम्न प्रतिज्ञाएँ तथा नकद दान प्राप्त हो चुका है -

न० स०	नाम सज्जन अथवा समाज जिन्होंने दान देने की प्रतिज्ञा की	प्रतिज्ञा की राशि	दान प्राप्त राशि
(१)	आर्य सत्याग्रह समिति अमृतसर	५००)	५००)
(२)	समाज पेशावर कैन्ट	५००)	५००)
(३)	,, झरिया	५००)	५००)
(४)	हरदोई	५००)	१६८॥)
(५)	,, क्वेटा	५००)	२७८=)
(६)	,, उपप्रतिनिधि सभा गढवाल बिजनौर नजीबाबाद	५००)	५००)
(७)	,, समाज मेरठ शहर	१०००)	
(८)	,, नैकौक	५००)	
(९)	श्री ला० गोविन्दराम जी आर्य समाज गुजरावाला	१०००)	
(१०)	आर्य समाज अड्डा होशियार पुर जालन्धर शहर	[illegible]०००)	

(११)	आर्यसमाज माडल टाउन लाहौर	५००)	
(१२)	स्त्री , बच्छोवाली लाहौर	२०००)	
(१३)	आर्य समाज कैथल	५००)	
(१४)	, लुध्याना	५००)	
(१५)	श्री ला॰ नारायण दत्त जी नई देहली	५००)	
(१६)	रल्ला राम नई देहली	५००)	
(१७)	म॰ कृष्ण जी	५००)	
(१८)	आर्य समाज नई मंडी मुजफ्फर नगर	१०००)	
(१९)	, बच्छोवाली लाहौर	१०००)	
(२०)	, पानीपत	७५०)	
(२१)	श्रीमती सुलोचना देवी जी लाहौर	५००)	
(२२)	श्री दीवान राम प्रताप जी लाहौर	५००)	
(२३)	श्री प॰ धुरेन्द्र जी शास्त्री	२०००)	
		(१६२५०)	२४७५॥=)

निम्न समाजो से सहायता के लिए प्रार्थना पत्र आये हैं

	नाम	राशि
(१)	हुमनाबाद	१०००)
(२)	नलगीर	५००)
(३)	उदगीर	१०००)
(४)	करीम नगर	१०००)
(५)	लातूर	१०००)
(६)	चाकूर	५००)
(७)	निलंगा	५००)
(८)	हैदराबाद	१०००)

(९)	चन्द्रिकापुर	१०००)
(१०)	औरंगाबाद	
(११)	शालीबड़ा	
(१२)	मुरुम	१०००)
(१३)	हिंगोली	१०००)
		६५००)

इन समाज मन्दिरों के निर्माणार्थ सहायता सम्बन्धी आवश्यक फार्म भरवाये जा रहे है तथा अन्य प्रबन्ध किये जा रहे हैं।

आर्य वीरदल

हैदराबाद रियासत मे आर्य वीरदल का सगठन हो रहा है। निम्न स्थानो पर आर्य वीरदल बन चुके है —

निम्न राज्य में आर्यवीरदल स्थापना सूची

क्र० स०	नाम ग्राम	विवरण
१	२	३
१	हैदराबाद	
२	गुलबर्गा	
३	चाकूर	
४	कलब	

शीघ्र ही शिविर खोलने का प्रबन्ध किया जायगा।

सत्याग्रह आन्दोलन के पश्चात् निजाम स्टेट में नये आर्यसमाज की स्थापना सूची

क्र० स०	नाम आर्यसमाज	डाकखाना	जिला	विवरण
१	२	३	४	५
१	नारायणपेठ	नारायणपेठ	,,	
२	सुधवी	गुलबर्गा	गुलबर्गा	
३	चाकूर	लातूर	बीदर	
४	करीमनगर	करीमनगर	करीमनगर	

५	कवाडीगुडा	सिकन्दराबाद	सिकन्दराबाद
६	काचीगुडा	हैदराबाद	हैदराबाद
७	सोशपुर		गुलबर्गा
८	तुगाव	हुमनाबाद	बीदर
९	रगपेठ	गुलबर्गा	गुलबर्गा
१०	यादगोरी	यादगीरी	गुलबर्गा
११	मुधल्ली	हुमनाबाद	गुलबर्गा
१२	मेहवर		
१३	अखेली बुजूर्ग	हुमनाबाद	बीदर
१४	माँगकेश्वर	उस्मानाबाद	उस्मानाबाद

इतिहास

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का इतिहास अंग्रेजी तथा आर्य भाषा में लिखा जा चुका है। श्री प्रधानजी की आज्ञानुसार छपाई का प्रबन्ध शीघ्र ही किया जायेगा।

प्रबन्ध तथा कार्यालय

श्री मन्त्री जी के सहायक रूप में श्री प० ज्ञानचन्द जी आर्य सेवक दक्षिण भारत प्रचार के अध्यक्ष रूप में कार्य कर रहे हैं। इसकार्यालय में दो लेखक हैं।

सत्याग्रह के बन्द होने के पश्चात् निज़ाम सरकार के साथ श्री प्रधान जी लगातार पत्र व्यवहार करते रहे हैं और उन्हें फरमान में को गई प्रतिज्ञाओं को कार्य रूप में परिणत करने के लिये प्रेरित करते रहे हैं। इसके अतिरिक्त श्री लाला देशबन्धु जी एक बार हैदराबाद पधारे और उन्होंने श्री प्रधान जी की आज्ञानुसार निज़ाम राज्य के अधिकारियों से बातचीत की। इस सारे प्रयत्न के फलस्वरूप—

(१) सब सत्याग्रही जेल से मुक्त हो गये।

(२) वे आर्य सज्जन जिन्होंने सत्याग्रह तो नहीं किया था परन्तु सत्याग्रह आन्दोलन सम्बन्धी कार्यों के आधार पर जिन्हें बन्दीखाना में डाला गया था उनमें से निम्न सज्जन मुक्त हो गये हैं:—

(१) चन्द्रपाल, (२) श्रीराम शर्मा, (३) बंशीलाल व्यास, (४) प्रेमकुमार।

निम्न के केस पैण्डिङ्ग हैं—

(१) श्री माधवराव, (२) श्री मोहनसिंह, (३) श्री गोपालराव, (४) श्री वीरभद्र।

(३) बाहिर के उपदेशकों के रियासत में दाखिले पर से पाबन्दी हटा दी गई है और बाहिर से निम्न उपदेशक महानुभाव प्रचारार्थ पधार चुके हैं —

(१) श्री स्वामी अभयदेव जी।

(२) श्री स्वामी सत्यदेव जी।

(३) श्री प्रो० बहादुर मल जी।

(४) श्री पं० ज्ञानचन्द्र जी।

(५) श्री माथुर शर्मा जी।

(६) श्री प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय।

(७) श्री मेहता जैमिनि जी।

(८) श्री पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री।

(९) श्री प० प्रियरत्न जी आर्ष।

(१०) श्री प० धुरेन्द्र जी शास्त्री।

(४) श्री पं० बशीलाल जी के रियासत में दाखले पर से पाबन्दी हटा ली गई है।

(५) श्री प० नरेन्द्र जी मुक्त हो चुके हैं।

(६) जलसे और जलूस प्राय: हो रहे हैं। किसी एक दो स्थानों में किसी स्थान पर सरकार की ओर से हस्ताक्षेप की शिकायत आई थी जिसकी ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया गया।

(७) नई समाजें निर्विघ्नता पूर्वक बन रही हैं और समाजों का कार्य प्राय: निर्विघ्नता पूर्वक हो रहा है।

(८) समाज-मन्दिरों के निर्माण, स्कूलों, धार्मिक जलसों और जलूसों तथा Religious Affairs Sub-Committe के सम्बन्ध में कानून बनाये जा रहे हैं जिनके शीघ्र ही पूर्ण होने की आशा है।

नई शिकायतें

आर्य भाइयों पर पोलीस की सख्तियों और हस्ताक्षेप की शिकायतें आती रहती हैं। श्री प्रधान जी उनके सम्बन्ध में उचित कार्यवाही कर रहे हैं।

शिकायत स्थान पर पहुँच कर शिकायतों सम्बन्धी तहकीकात करने तथा ठीक ठीक वृत्तान्त प्राप्त करने के लिये निजाम राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के आधीन

विशेष प्रबन्ध किया गया है। श्री गणेशराव जी वकील इसी कार्य के लिये नियुक्त किये गये हैं।

सार्वदेशिक सभा की २०-३-४० की अन्तरङ्ग सभा का निश्चय

रामगढ़ हाई स्कूल

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद सत्याग्रह के प्रथम डिक्टेटर श्री महात्मा नारायण स्वामी जी के आश्रम स्थान, रामगढ़ (जिला नैनीताल) में डी० ए० वी० हाई स्कूल के स्थापित करने के उद्योग की प्रशसा करती है।

कुमाऊँ का पर्वतीय प्रदेश भारतवर्ष भर मे स्वास्थ्य तथा प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए प्रसिद्ध है। पर वहाँ हिन्दू जनता मे शिक्षा की कमी होने से वहाँ विधर्मियो का प्रभाव बढ़ रहा है। इन सब कारणो से यह सभा अनुभव करती है कि कुमाऊँ में शिक्षा तथा आर्य-सस्कृति के प्रचार का हर उद्योग प्रत्येक आर्य की सहानुभूति का पात्र है।

इस स्कूल के लिए रामगढ़ को जनता ने लगभग १५ हजार रुपया व भूमि अपने यहाँ सग्रह करने का प्रबन्ध कर लिया है। इससे अधिक उनकी सामर्थ्य से बाहर है। किन्तु इस कार्य के लिए अभी और धन की आवश्यकता है क्योंकि यह स्कूल साधारण शिक्षा के साथ साथ पहाड़ के उपयोगी उद्योग-धन्धो (शहद फल, कताई बुनाई आदि) की शिक्षा देने का आदर्श भी रखता है। इसलिए यह सभा सर्वसाधारण से इस कार्य मे पूर्ण सहायता देने की अपील करती है॥।

सार्वदेशिक सभा की साधारण सभा का महत्वपूर्ण निश्चय

खाकसार आन्दोलन और मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन की वर्तमान गति-विधि से देश में जो परिस्थिति उत्पन्न होगई, उस पर सार्वदेशिक सभा की बैठक में पूर्णतया विचार किया गया और दो दिन के विचार के बाद निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया।

'पवित्र भारत भूमि को हिन्दू और मुस्लिम दो प्रदेशों में विभाजित करने का जो कुछ क्षेत्रों से विचार उठा है, उसे यह सभा बड़ी चिन्ता के साथ देखती है।

इस सभा की सम्मति में यह समस्त योजना गलत है और न केवल राजनीतिक उन्नति के लिए घातक है, वरन् 'धार्मिक' सामाजिक और सास्कृतिक क्षेत्रों के लिए भी हानिकारक है। मुस्लिम लीग का यह दावा कि भारत वर्ष के मुसलमान

पृथक राष्ट्र हैं और हिन्दुओं से पृथक हैं नितान्त लचर और ऐतिहासिक दृष्टि से अशुद्ध है। देश के विभाजन के लिए जो यत्न किया जायगा उसका यह सभा विरोध करेगी। सभा को आशा है कि सभी समझदार व्यक्ति और संस्थाएँ भले ही वे राजनैतिक हो वा अन्य कोई हों मुस्लिम लीग की इस योजना का पूर्णतया विरोध करेंगी।

सभा के अन्य आवश्यक निश्चय निम्न प्रकार हैं

सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन बलिदानभवन देहली मे श्री घनश्यामसिंह गुप्त स्पीकर सी० पी० लेजिस्लेटिव असेम्बली की प्रधानता में ३१-३-४० को हुआ। समस्त प्रान्तो के प्रतिनिधि सभा में उपस्थित थे।

महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, प० गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज टिहरी, लाला देशबन्धु, राय साहब मदनमोहन सेठ रिटायर्ड सेशन जज, लाला नारायण दत्त, प्रो० शिवदयालु एम० ए०, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री लाला ज्ञान चन्द्र, प० वेदव्रत वानप्रस्थी, तथा अन्य महानुभाव सभा में उपस्थित थे। सन् १६४० ४१ के लिए पदाधिकारियो का निम्न प्रकार निर्वाचन हुआ और लगभग तीन लाख रुपए का बजट पास हुआ।

प्रधान—श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त स्पीकर लेजिस्लेटिव असेम्बली [सी०पी०]।
उपप्रधान—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी, श्री प० गङ्गाप्रसादजी एम०ए० भूतपूर्व चीफजज, श्री रायसाहब मदनमोहन सेठ और श्री महाशय कृष्णजी बी०ए० लाहौर। मन्त्री—श्री प्रो० सुधाकर एम० ए०। उपमन्त्री—श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय। कोषाध्यक्ष—श्री लाला नारायणदत्त ठेकेदार। पुस्तकाध्यक्ष—श्री लाला ज्ञानचन्द जी।

शिक्षा का माध्यम हिन्दी हो

सार्वदेशिक सभा को इस बात का खेद है कि आर्यसमाज के कई शिक्षणालयों में आर्य भाषा "हिन्दी" और "देवनागरी" लिपि को जो स्थान मिलना चाहिये वह नहीं दिया जाता है। डी० ए० वी० स्कूलों, कालिजों तथा अन्य आर्य स्कूलो के प्रबन्धकर्त्ता हिन्दी को उचित स्थान दें और यथासम्भव उसे शिक्षा का माध्यम बनावें।

आर्यसमाज में न्याय विभाग

भारतवर्ष भर के आर्यसमाज के विस्तृत क्षेत्र को देखते हुए यह सम्भव ही है कि कहीं कहीं संस्थाओं में आपसी झगड़े हों। सार्वदेशिक सभा की राय में अब वह समय आ गया कि इन झगड़ों को निपटाने का कोई ऐसा उपाय कार्य में लाया जावे, जिससे आर्यसमाज के सगठन व सस्थाओं के बल की किसी भी प्रकार कम होने की सम्भावना न रहे। इस लिए सार्वदेशिक सभा की राय में एक पृथक् न्याय-विभाग स्थापित करना उचित दीखता है जिसके सर्वथा निष्पक्ष होने के विरुद्ध कोई शंका का कारण न हो।

इस की पूरी योजना बनाने के लिए (१) श्री० नारायण स्वामी जी महाराज (२) श्री० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी (३) श्री० प० गगाप्रसाद जी चीफ जज की एक कमेटी बना दी गई।

आय व्यय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

१-३-३९ से २९-२-४० तक

आय	व्यय
७३।-) विविध दान	१०२८।-)। मद्रास प्रचार
३०००॥ २ किराया तथा सूद	६६॥)। सार्वदेशिक पत्र
३०८५।≡) पचमांश	६५५-) आय
२१४॥) दशांश	८०५४॥-)। व्यय
१२२८॥।-) प्रीमियम पालिसी	६६॥।। घाटा
७६०२॥-)२	२६०८) कार्यालय
	२१७॥) प्रौवीडेण्ट फण्ड
	२८८=) घिसाई टाइप राइटर
	८६२॥≡)७ बलिदान भवन के म्यूनिस्पिल टैक्स इत्यादि का व्यय
	५०७७≡)१
	२५२५।=)८ बचत
	७६०२॥-)२

वास्ते जगदीश प्रसाद ऐण्ड कम्पनी

(ह०) जगदीश प्रसाद

बी० ए० बी० कौम सी० डी० ए० आर० ए०

रजिस्टर्ड एकाउन्टेण्ट आडीटर्स,

चाँदनी चौक देहली १९-३-४०।

(ह०) रघुनाथ प्रसाद पाठक	(ह०) सुधाकर एम ए	(ह०) घनश्यामसिंह गुप्त
एकाउन्टेन्ट	मन्त्री	प्रधान

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली

२९-२-४० का शेष पत्र

१०३२५१) स्थिर निधियाँ	४८६६५=)६ भूमि और इमारतें
५००००) देशदेशान्तर प्रचार	२२७४४।-)६ सा०दे०भवनगतवर्ष का
२५०००) रक्षानिधि	२७०॥≡) इस वर्ष की वृद्धि
२००००) सार्वदेशिक भवन	२३०१५)६
५०००) चन्द्रभानुवेदमित्र स्मारकनिधि	२४६४०=) बलिदान भवन
२०००) गंगाप्रसाद गढ़वाल प्रचार ट्रस्ट	२३९५०॥=)६ गत वर्ष
६५०) शिवलाल वेद प्रचार निधि	६८९।≡)३ इस वर्ष
५०१) ढोढाराम चूड़ामणि ,,	१०१०) गाजियाबाद
१००) डोमा महतो सुन्दर देवी ,,	६२५) टाइप राइटर
१०७५०) विशेष निधियाँ	२७०) गत शेषपत्र के अनुसार
(गत शेष पत्र के अनुसार)	३८३=) हिन्दी टाइप राइटर
६०००) बिहार रिलीफ़	६५३=)
१५००) काश्मीर रिलीफ़	२८=) घिसाई
३०००) दयानन्द दलितोद्धार	६२५)
२५०) दयानन्द आश्रम	५४०००) ऋण
१३८१)७ दक्षिण भारत तथा भारतीय राज्य प्रचार	२९०००) पाटौदी हाउस ट्रस्ट
	२५०००) हैदराबाद हाई स्कूल
१००) हैदराबाद शहीद फण्ड	३८३९४|||≡)५ इन्वेस्टमेंट
१६९८॥) हैदराबाद आर्य मन्दिर निर्माण फण्ड	२५०००) गवर्नमेंट लोन
	४०८१) तीन साला कैश सर्टीफिकेट सेन्ट्रल बैंक
४०) सत्याग्रह इतिहास फण्ड	१०) आर्य साहित्य मण्डलका हिस्सा
११६५४२॥)७ जनरल प्रचार फण्ड	९३०३|||≡)५ पीपल बैङ्क
५००००) भारतीय राज्य प्रचार फण्ड	१७२६६।=)६ पुस्तकें (विक्री)

११४४॥-)६ स्टाफ़ प्रौवीडेन्ट फ़ण्ड

१६६२३॥=)४ पुस्तक प्रचार फ़ण्ड

१४४६६॥-) विविध फ़ण्ड

४७१८-)२ सार्वदेशिक भवन

२८६१)४ रक्षानिधि चलत

२३६८।)१ अमेरिका प्रचार

१२७२) विदेश निधि

३८४॥=)७ बिरला वेद प्रचार

३५३-) आर्यसमाज टकारा

५४०।=)३ चन्द्र भानु निधि

१२३।=)६ आर्य विवाह

१००) आर्यसमाज सुमाटरा

१७१) बिहार रिलीफ़ फंड

५२।) काश्मीर ,, ,,

१०६॥) आर्य विद्वत् सम्मेलन

१३२॥)७ दयानन्द आश्रम

४६।=) गगाप्रसाद ट्रस्ट

१६६॥)६ विविध

२८३८॥) अमानतें

२६४) आर्य प्रतिनिधि सभा मोरिशस (परोपकारिणी)

४७०=)३ सेठ बैजनाथ भरथिया

६१॥≡) विविध व्ययार्थ

२२१।)३ प्रचारकों व कार्यकर्त्ताओं की

१७६१।=)६ विविध

२५३५।=)१ हानि लाभ फण्ड

४७३३।=)१० गत वर्ष की हानि

२२५२६।= ५ विविध पेशगियां

५१२२।-)३ पाटौदी हाउस ट्रस्ट

४८) देहली इलै० कम्पनी

३०००) दीपचन्द कृष्णलाल पोद्दार

६७३१।=) विविध अगाऊ

३०५१॥-)२ कार्यकर्त्ताओ के नाम

२७५) प्राप्त व्यय किराया मकान ओरियन्टल बीमा कपनी प्रीमीयम

१२७७॥=) प० केशव देव ज्ञानी की पालिसी

१४३५००॥)२ कैश बैंकों में तथा हाथ में

६५०१८॥-)७ पंजाब नैशनल बैंक

३७१३४=)६ सेन्ट्रल बैंक देहली

३३३॥-)१ पोस्ट आफिस सेविंग बैंक

१६२६≡)३ सेन्ट्रल बैंक शोलापुर

३६३८७।≡)६ कैश हाथ में

३२४६८१।≡)६

जमा खर्च

३२६७||-)२ देशदेशान्तर
१६७|||-)६ काश्मीर फंड
६५६=)६ आसाम प्रचार
२०७||=)३ बिरला वेद प्रचार
३७१=)१ सार्वदेशिक भवन

४७३३|=)१०
२५२५|=)१ इस वर्ष की बचत
३२४६८१|=)६ ——— ३२४६८१|=)६

हमारी पृथक् रिपोर्ट साथ है। हमने सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा देहली के हिसाब की जाच पड़ताल की है और प्रमाणित करते है कि शेष पत्र तथा साथ का आय व्यय का विवरण उन हिसाब के कागजातो के अनुसार जो हमे दिखाये गये है, ठीक है।

वास्ते जगदीश प्रसाद एण्ड कम्पनी
(ह०) जगदीश प्रसाद
बी०ए०बी० कौम, जी०डी०ए०आर० ए०
रजिस्टर्ड एकाउन्टेंट ऑडीटर्स
चाँदनी चौक देहली, १६-३-४०

(ह०) रघुनाथ प्रसाद पाठक
एकाउन्टेन्ट

(ह०) नारायणदत्त
कोषाध्यक्ष

(ह०) सुधाकर एम०ए०
मन्त्री

(ह०) घनश्यामसिंह गुप्त
प्रधान

आय व्यय आर्य सत्याग्रह समिति शोलापुर

अक्टूबर ३८ से ३०-९-३९ तक का आय व्यय विवरण

आय

४५६७॥-)३ आर्य सम्मेलन शोलापुर

- ५०५) स्वागत कारिणी समिति
- ७४५८॥-)॥ दर्शक टिकिट
- ४१४) दूकान किराया
- १११४) डेलीगेट फ़ीस
- ७८≡)॥। विविध

३३३५१-॥≡)२ दान सत्याग्रह फंड

- २६८४३३।=)१ शोलापुर समिति
- सार्व० सभा
- ६५०८५।-)१ कार्यालय

३३८०८६॥)५

व्यय

२८६८॥)३ आर्य सम्मेलन

- ७३६२।=) कैम्प
- ४२) बैंड
- ४६४=)। विविध

७५६१३-)१ सत्याग्रह

- ७७०३४।=)। मार्ग व्यय
- २१२३॥-)। बार्शी केन्द्र
- ७५५-)७ गुलबर्गा

४६८७३-)१ मार्ग व्यय विविध

- ४१७७७॥-)॥ समिति द्वारा
- ५१००।≡) सार्वदेशिक सभा द्वारा

३५३७०॥)१ प्रकाशन

- १०२७९=)१ प्रेस टेलीग्राम
- ११०८।=)॥। फोटो
- ४६९१≡)। साधारण तारे
- १८२९०॥।) छपाई
  - ३०७९॥≡)९ सत्याग्रह समिति
  - १३९७७≡)॥। सार्व० सभा
  - १२३३॥)॥ विविध

४७१८॥≡)१ प्रौपैगैंडा (प्रचार)

१७१६)। मार्ग व्यय

२८८२॥≡)॥ आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य

२००१।=)॥ सत्याग्रह समिति

८७३।—) सार्वदेशिक सभा

५३॥।) बेजवाड़ा केन्द्र

६६।) ऋग्वेदानुवाद तिलगु मे

६६५७=)। स्वयंसेवक व्यय

५६५७=)। कपड़े दवाइयाँ

१०००) (मनमाड़)

२०१८२।—)॥। भोजन व्यय

११६०२।)। कार्यालय व्यय

२४३२॥—)॥ वेतन

२७२॥)॥। समिति द्वारा

२१६०)॥। सार्वदेशिक सभा

११६६) किराया

६०६=)। स्टेशनरी

६०७॥≡)। समिति द्वारा

२६८।≡) सार्वदेशिक सभा

६०६=)।

६२८१॥)॥ पोस्टेज

४८४७)। समिति द्वारा

१४३४)। सार्वदेशिक सभा

१०८३) टेलीफोन

४८८॥—) समिति द्वारा

५६४।=) सार्वदेशिक सभा

७२४१।)। विविध

१४६६।)॥। बिजली

१३६६॥।≡)॥ समितिद्वारा

६६।–)। सभा द्वारा

१४६६।)॥।

५०) मुक़दमा व्यय

२८३।=)॥। शोलापुर व्यय

५४३८।।)॥। विविध

३८७१॥।=)। समिति द्वारा

१५६६॥=)॥ सार्वदेशिक सभा

५४३८।।)॥।

७७८–)। बट्टा खाता

१६०५०५)ᵓ

नोट—सार्वदेशिक सभा के अंक हमे मन्त्री सार्वदेशिक सभा द्वारा प्राप्त हुए है।

(ह०) ए. डी. कपूर

देहली २०-२-४० रजिस्टर्ड एकाउन्टेण्ट आडीटर्स

(ह०) युगलकिशोर
एकाउन्टेण्ट

(ह०) स्वतन्त्रानन्द
प्रधान

आर्य सत्याग्रह समिति (शोलापुर)

३०-६-३६ का शेष-पत्र

२३८२।–)७ **अमानतें**

२२८२।–)७ सत्याग्रहियों की

१००) प०मोहनलाल खजाची

२२५) **विविध फ़एड**

५) आर्य भवन शोलापुर

२५०) प्रचार फड

१२८॥–)६ **उचंत**

१७७५८१॥)२ **वचत**

१५०७६२।)८ सत्याग्रह समिति कार्यालय

३६८८६।–)७ सार्वदेशिक सभा कार्यालय

१८०३४७।≡)७

१३७६६०।≡) **बैंकों मे नक़द**

२५६३)६ सेएट्रल बैंक शोलापुर न १

१५०००) ,, ,, २

४७२४।) होम सेविंग

३८४७६)३ सेन्ट्रल बैंक बम्बई

७८७७॥)३ ,, ,,

६८५४६॥–)६ पजाब ने० बैंक बबई

३८३५७।–)४ **सार्वदेशिक सभा**

१८६५।≡)६ समिति द्वारा

३६४६१॥।–)७ सभा कार्यालय

२६७०॥।–)३ **विविध पेशगियां**

५४) आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब

१०००) शोलापुर कोर्ट

३३१।=)७ शोलापुर की चोरी से वापिस मिला जो पुलिस के पास है

३००) शंकरलाल पटेल

१६८५।=)८ विविध

११२८॥।=) **फ़र्नीचर**

७७१॥) सत्याग्रह समिति

३५७।=) सार्वदेशिक सभा

१८०३४७।≡)७

आज की तिथि की हमारी रिपोर्ट पृथक् है। इस रिपोर्ट के साथ हम इस शेष पत्र को ठीक प्रमाणित करते हैं।

ए० एल० कपूर ऐएड कम्पनी
रजिस्टर्ड एकाउटेएट आडीटर्स
देहली २०-२-४०

(ह०) युगलकिशोर
एकाउन्टेएट

(ह०) स्वतन्त्रानन्द
प्रधान

सम्पादकीय

सार्वदेशिक सभा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का ३२ वां वार्षिक विवरण इस अंक में अन्यत्र अंकित किया जा रहा है। अन्य बातों के सम्बन्ध में हमें कुछ नहीं कहना है केवल एक बात जो हम कहना चाहते हैं वह यह है कि यह वर्ष इस सभा तथा आर्य समाज के इतिहास में अमर रहेगा जब कि हैदराबाद की समस्या के सन्तोष-जनक हल के लिए सभा के निरन्तर ६ वर्षों के यत्नों का फल हैदराबाद सत्याग्रह की सफलता के रूप में सामने आया।

हैदराबाद धर्मयुद्ध से पूर्व आर्य समाज की संघ शक्ति की दृढ़ता के सम्बन्ध में जनता को सन्देह होने लग गया था और एक प्रकार से उसका गौरव जन साधारण में कम हो गया था।

इस धर्म्म युद्ध में आर्य समाज की संगठन शक्ति जन साधारण के आदर प्रशंसा और आश्चर्य की वस्तु बन रही थी। इस बात पर आर्य समाज जितना गर्व करे थोड़ा है। सचमुच जिन कारणों से हमें इस युद्ध में सफलता प्राप्त हुई है उनमें मुख्य कारण आर्य जनताकी संगठन शक्ति और सार्वदेशिक सभाके प्रति उसकी अटूट श्रद्धा और भक्ति ही थी। हमें जो यश प्राप्त हुआ है उसकी हमें रक्षा करनी चाहिए और उसे अधिकाधिक बढ़ाना चाहिए, ताकि हैदराबाद के धर्म युद्ध की सफलता से आर्य समाज की जो जिम्मेवारियां बढ़ गई हैं और जनता को उससे जो आशाएँ हो गई हैं उनके पूरा करने में हम समर्थ हो सकें।

रामगढ़ हाई स्कूल

पाठक अन्यत्र सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग सभा के निश्चय पढ़ेंगे। उनमें से एक निश्चय के द्वारा रामगढ (नैनीताल) के प्रस्तावित डी० ए० वी० हाई स्कूल को सहायता

दिलाने का निश्चय किया गया है। प्रस्ताव म स्कूल का उद्देश्य स्पष्ट कर दिया गया है और वह यह है कि इस स्कूल के द्वारा रामगढ़ के आस पास के पहाड़ी प्रदेशो के बच्चो को शिक्षित करके उन्हे इस योग्य बनाना है कि व अपने धर्म्म और भाइया की रक्षा कर सक जो शिक्षा के अभाव म अन्धकार म पड़े हुए हैं और आए दिन भारी सख्या म विधर्मिया की ओर जा रहे हैं। पहाड़ी प्रदेशो म हमारा प्रचार बहुत कम है। वहा प्रचार की बहुत आवश्यकता है। प्रस्तावित स्कूल आर्य्य समाज क प्रचार क लिए बहुत प्रभाव शाला साधन सिद्ध होगा। अत प्रत्येक हिन्दू और आर्य्य का कत्तव्य है कि वह इस प्रकार क श्रेष्ठ यत्न को प्रोत्साहित कर। स्कूल के सयोजको ने स्कूल क लिए १५००० रुपए का व्यवस्था कर ली है। इस म स्पष्ट है कि स्कूल की यह योजना केवल कागजी योजना नहा है। इस सम्बन्ध म स्कूल क सयोजक जो अपाल प्रकाशित कर उनका हम अत्यन्त उत्साह वद्धक उत्तर देकर योजना को सफल बनान म योग देना चाहिए। आर्य नर नारिया क लिए तो रामगढ़ का एक और महत्व ह। इस स्थान पर श्री पूज्य नारायण स्वामी जी का आश्रम है। इस आश्रम क द्वारा उन प्रदेशा म काफी जागृति उत्पन्न हुइ है। इस जागृति को स्थिर रखना और उस बढ़ाना हमारा पुनीत कत्तव्य है। प्रस्तावित स्कूल इस दिशा म प्रारम्भिक यत्न है जिसको हम हर प्रकार स सफल बनाना चाहिए।

नगण्य सान्त्वना

उपयुक्त शाषक म भारत क हिन्दू मस्लिम प्रदेशा क विभाजन के सिलसिले म सहयोगी हिन्दुस्तान टाइम्ज लिखता है —

‘ मस्लिम लीग क लाहोर क प्रस्ताव म हिन्दू प्रधान प्रान्ता के मसलमानों म जो प्रति क्रिया उत्पन्न हुई है उस म श्रीयुत जिन्ना बड़े परेशान हो रहे हैं। परन्तु श्रीयुत जिन्ना उन मसलमाना को जो सन्तोष दिला रहे हैं वह बहुत नगण्य है। वे उन्हे कहते हैं कि यद्यपि यथा सभव अल्प सख्याओं को घटाने के लिए आबादी का परिवर्तन स्वेच्छा पूर्वक होगा तथापि लाहोर का प्रस्ताव इस परिवर्तन को अनिवार्य नहा ठहराता है। उनके मुख्य आक्षेप क सम्बन्ध म श्रीयुत जिन्नाह कहते हैं कि प्रत्येक दशा म वे अल्प सख्या में रहेंगे। अत इन २ करोड मसलमाना का अपने अन्य ६ करोड भाइया क रास्त म रोडा नहा बनना चाहिये। सक्षेप म इस तक का भाव यह है कि मद्रास और बम्बई के मसलमाना को इस योजना का समथन करना चाहिये जिस मे पजाब और बगाल क सहधर्मिया को अपन स्वतन्त्र प्रदेशो म

रहने का सुख प्राप्त हो सके। इस रीति से पंजाबी उत्सव के लिये हिन्दू प्रधान प्रान्तों के मुसलमान हिन्दुओं की दया पर छोड़ दिए जायेंगे। कहा जाता है कि यह योजना हिन्दू मुस्लिम समस्या को हल कर देगी परन्तु जब भारत के एक तिहाई मुसलमानों को इस से कोई लाभ न होगा और शायद लगभग इतने ही गैर मुस्लिम मुसलमान सरकारों की दया पर छोड़ दिए जायेंगे तब स्पष्ट है कि लीग के प्रस्ताव से जितनी समस्याओं के हल होने की आशा हो सकती है उस से कहीं अधिक समस्याएं उस में पैदा हो जायेंगी।

सच्चाई यह है कि इस प्रस्ताव में मुसलमानों की अवस्था में तो सुधार न होगा। वरन् उससे समस्त देश गृह-युद्ध में व्यस्त हो जायेगा। हिन्दू प्रधान प्रान्तों के मुसलमानों की बात छोड़ दीजिए, पंजाब के सिक्खों ने स्पष्ट कर दिया है कि उन्हें यह योजना ग्राह्य नहीं है परन्तु यदि अन्ततोगत्वा देशके विभाजन का यत्न किया ही गया तो वे अपनी सिक्ख सरकार के अधीन रहना पसन्द करेंगे। यदि श्रीयुत जिन्ना के कथनानुसार मुसल्मान किसी दशा में भी हिन्दू प्रधान केन्द्रीय सरकार के आधीन रहने के लिए उद्यत न होंगे तो यदि सिक्ख लोग सदैव के लिए मुस्लिम प्रधान सरकार के आधीन रहने से इन्कार करेंगे तो इसके लिए उन्हें कोई दोष न देगा। श्रीयुत जिन्ना का तर्क यह है कि सम्मिलित भारत की केन्द्रीय सरकार में सिक्खों की आवाज़ नहीं के बराबर होगी वरन उत्तर पश्चिम मुस्लिम प्रदेश म उनको सम्मान पूर्ण स्थान प्राप्त होगा। चूंकि अभी तक जिन्ना साहब सिक्खों की सम्मति का प्रतिनिधित्व करने का दावा नहीं करते हैं, अतः सिक्खों को ही स्वयं यह निश्चय करना है कि उस प्रस्ताव के सम्बन्ध में उनकी क्या स्थिति होगी जो उन्हें सदैव के लिए मुस्लिम प्राधान्य के आधीन रहने के लिए बाधित करता है। सिक्खों की भावनाओं को जानने वाले किसी भी व्यक्ति को भ्रम न होगा कि यदि इस प्रकार की योजना जबरदस्ती उन पर लादी गई तो वे क्या करेंगे।

अन्त में श्रीयुत जिन्ना समझदार हिन्दुओं से अपील करते हैं कि वे इस योजना पर गम्भीर विचार करें उनकी अपील कदाचित श्रीयुत सावरकर तथा हिन्दू-महासभा के प्रति है क्योंकि साम्प्रदायिक समस्या के सन्तोषजनक हल के लिए कांग्रेस ने उनसे तथा लीग से जो प्रस्ताव किये हैं और जिस रीति से वे ठुकराए गये हैं, देखते हुए समझदार हिन्दुओं की ओर संकेत करते हुए कदाचित उनके दिमाग़ में श्रीयुत सावरकर तथा हिन्दू-महासभा ही होंगे। यदि श्रीयुत जिन्ना का विचार अब भी आपसी समझौते के द्वारा इस समस्या के हल का हो तो उन पर यह स्पष्ट होना चाहिए कि समस्या के एक तरफा हल की इसके पक्ष द्वारा स्वीकार

होने की बहुत कम आशा है। कांग्रेस ने अभी तक एक तरफा लाइनों पर समस्या को हल करने का यत्न नहीं किया है। इसने अभी तक समझौते का प्रकार निर्धारित करने पर अपने को सीमित रखा है। जिन लाइनो पर मुस्लिम लीग चल रही है उन पर कोई भी सर्व सम्मत समझौता सम्भव नही। तब तो यह युद्ध ही सम्भव होगा और इसकी समाप्ति पर बलवान् पक्ष जो हल ला देगा वही स्वीकार करना होगा। परन्तु ताक़त की इस प्रकार की परीक्षा के लिए भी अँग्रेजो को लडने वालो के लिये मैदान साफ़ छोडकर अपने को पूर्णतया अलग रखना चाहिए। अभी तक अँग्रेजो ने इस देश को छोडने की कोई इच्छा ज़ाहिर नहीं की है। हम इस बात का निश्चय है कि स्वय श्रीयुत जिन्ना का भी यह विचार नही है कि पत्थरो और लाठी की सहायता से नए मुस्लिम राज की स्थापना हो सकती है। यह स्वप्न तभी सच्चा हो सकता है जब ब्रिटिश सरकार इस योजना (विभाजन) को अपना ले और लीग की इच्छा पूर्ति के लिए हिन्दुओं को कुचलने के लिए तय्यार हो जाय। उस दशा म 'बड़ा बूट' हिन्दू भारत के लिए जितना भारी सिद्ध होगा उतना ही मुस्लिम भारत के लिए भी सिद्ध होगा।

लेख-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १५ | वैशाख १९९७ | अङ्क ३

मई १९४० ई०] [दयानन्दाब्द ११६

* वेद की शिक्षाएँ *

प्रियाः स्वग्नयो वयम् । **साम० ।८।१।१।**

हम खूब तेजस्वी होकर उसके प्यारे हो जाय ।

May we all become enlightened and beloved of the Lord !

* * *

अघमस्त्वघकृते । **अथ० ।१०।१।५।**

पापी को दुःख ही मिलता है ।

The wicked always come to harm.

* * *

प्रभु के दर्शन कैसे हो सकते हैं ?

(श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज)

प्राय यह पूछा जाता है कि प्रभु के दर्शन कैसे हो सकते हैं ? मुक्ति कैसे प्राप्त होती है ? इस जीवन को सफल बनाने का क्या साधन है ? इन सब प्रश्नों का उत्तर एक ही शब्द में दिया जा सकता है—वह शब्द है "भक्ति"। भक्ति अर्थात् प्रभु का चिन्तन मनुष्य को प्रभु के समीप ले जाता है और मोक्ष की प्राप्ति मे प्रबल सहायक है। अत प्रत्येक प्राणी का कर्तव्य है कि भक्ति-मार्ग पर चलकर इस जीवन यात्रा को पूरा करे।

लोग जन्म को दु ख-धाम मानते हैं। परन्तु वेद बतलाते हैं कि हमारा जन्म तीर्थ स्थान है। कमाई का स्थान है इस तीर्थ स्थान में गङ्गा भी बहती है—वह है भक्ति की गङ्गा। इस गङ्गा के बिना ससार दु ख धाम है। और जो पुरुष इस भक्ति की गङ्गा को पहिचान कर उसमे प्रतिदिन स्नान करते हैं, उनका जीवन सुखमय हो जाता है और वे इस ससार के झूठे बन्धनों को त्याग कर प्यारे प्रभु के दर्शन करते हैं।

भक्ति की आवश्यकता:—सत्सङ्ग की महिमा सब शास्त्रों ने गाई है। सत्सङ्ग में जीवात्मा का जो भी क्षण व्यतीत हो वही क्षण शुभ है। हमने इस बात को जानते हुए भी अपने जीवनो को अधिकतर सासारिक कामो मे लगाना ही धर्म समझा हुआ है। परन्तु प्राचीन समय मे प्रत्येक पुरुष ईश्वर की उपासना मे एक दो घन्टे अवश्य व्यतीत करता था।

हम ऐश्वर्य चाहते हैं, सुख चाहते हैं, जिनका केन्द्र वही ईश है। इसी ईश्वर की भक्ति से हम सुख तथा शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। हमें यह सब कुछ उसी परम पिता परमेश्वर से मागना चाहिये क्योंकि उसमें सब कुछ देने की शक्ति है। जिसके पास कुछ नहीं वह मुझे क्या दे सकेगा ? यदि मैं भूखा हूँ तो मुझे रोटी वाला ही रोटी दे सकता है। इसी प्रकार हम किसी और से कुछ नहीं पा सकते परन्तु सुख के केन्द्र से ही पा सकते हैं।

परमेश्वर से प्रेम करना चाहिये तथा उसका भय करना चाहिये।

स्मरण रखो ! वह असख्य आखो वाला हमें देख रहा है उस से डरो और

किसी से मत डरो। परमात्मा का भय लोगों को बुरे कामों से हटा देता है। जब बुरे काम हट जाते हैं तो बुद्धि निर्मल हो जाती है। और शुद्ध अन्त करण होने पर ही प्रभु से मिलाप होता है। मनुष्य जब तक जीवित रहे ओम् का स्मरण करता रहे।

भक्ति--मार्ग की बड़ी महिमा है

भक्ति का सच्चा मार्गः—भारतवष में भक्ति की प्रणाली ही निराली है। भक्ति बहुत अच्छी है। कौन सा सुख है जो भक्ति से मनुष्य को नहीं मिलता ? किन्तु क्या भारत वासी भक्ति करते हैं ? ये तीर्थो पर जाना, गङ्गा मे स्नान करना, बस इसी को भक्ति समझ बैठे हैं। भाइयो ! आये दिन कुम्भ होते हैं, हरिद्वार का तथा मथुरा का कुम्भ आदि। क्या कभी यह सोचा कि इस अवसर पर रेल वालों को तुमने कितना रुपया किराये में दे दिया। अनुमान मे ढाई तीन करोड़ रुपया हर एक कुम्भ मे रेलवे को किराये का दिया जाता है। यह किस लिए ? इस से क्या लाभ हुआ ? गङ्गा में स्नान करना ही आप भक्ति समझ बैठे हैं। यह कहा की बुद्धिमत्ता है ? किन्तु इन्हें तो विपरीत भक्ति ने घेरा हुआ है।

तनिक देखो तो सही ! अमेरिका में एक महोत्सव हुआ था। उस पर दस करोड़ रुपये लागत का अनुमान किया गया था। इसम उन्हे गङ्गा यमुना में स्नान नहीं कराया गया। बल्कि यह बताया गया कि गत शताब्दि मे विज्ञान ने कितनी उन्नति की है ? कहा तक पैर फैलाये हैं ? परन्तु तुमने यह रुपया किस लिये खर्च किया ? गङ्गा स्नान से तुम्हारा मन कुछ पवित्र हुआ ? योरोप अमेरिका और जापान वाले करोड़ क्या दस हजार रुपया भी ऐसी दिल्लगी में खर्च करने वाले नही। उचित तो यह था कि अन्त करण की शान्ति होती। इन्द्रियो को वश में लाया जाता। इनमे से एक बात भी हो जाय तो बस बेड़ा पार है। जिस प्रकार तीव्र बेग से वायु चल के वृक्ष को उखाड़ देती है, इसी प्रकार समाज का भी यदि ज्ञान से सम्बन्ध न हो तो वह ऐसे ही गिर जाता है, जैस वायु से वृक्ष। परन्तु यहां तो अपने गुण गाना ही एक महान कार्य है। किन्तु यह जो कर्म हैं, यह सब जन्म और मरण के देने वाले है।

भाई सच्ची भक्ति करनी हो तो हृदय को शुद्ध करो। हृदय मे ही प्रभु का निवास है। ठीक कहा है किसी ने—'अन्दर देख, उसे पावेगा'। अपने अन्तरा-

त्मा के अन्दर जरा देखो—उस प्रभु की झांकी देखोगे। ढोंगी बन में जाकर समाधि लगाते हैं। वर्षों बनों में जाकर खाक छानते हैं पर फिर भी उसका भेद नहीं पाते। आखिर क्यों ? कारण यह है कि मन में तो भक्ति नहीं होती और ऊपर से ओ३म् ओ३म् की रट लगाते हैं।

भक्ति का साधनः—लोग कहते हैं हमारा मन नहीं लगता। पर मेरे विचार में तो यह बात सर्वथा निराधार है। मन को रोकता कौन है ? मन को तो लगाने की आवश्यक्ता है यह बात तो मानी जा सकती है कि अमुक मनुष्य का मन मेरे वश में न हो।

पर यह कैसे मानी जावे कि मेरा अपना मन ही मेरे वश में नहीं है। यदि ड्राइवर के वश में इञ्जिन का रोकना और चलाना न हो तो बस हर रोज टक्करें लगें और सैकड़ों मौतें हो। मन भी तो इञ्जिन की तरह जड पदार्थ है वह वश में क्यों न हो ? जिसका मन ही अपने वश में न हो वह क्या करेगा ?

मौलाना रूम का कथन है कि यदि तू महस्ता की ओर जाना चाहता है तो जिधर तेरा मन कहता है उसके विपरीत चल। फिर उससे मित्रता हो जावेगी। एक दो दिन मन को रोको। वह स्वयं सीधा हो जावेगा। गीता में कहा भी है— जब तक अविद्या और भ्रम हैं, जब तक मन को रोका न जावेगा, जब तक भद्र पुरुषों का सत्सङ्ग न होगा मन वश में न आवेगा।

एक धनी पुरुष था उसने अपने नौकर से कहा 'मेरा कमरा खाली कर दे।" रात का समय था। नौकर ने दीपक जलाया और कमरे के एक कोने में रख दिया। कमरे की सब वस्तुएँ पुस्तक आदि निकाल कर बाहर रख दीं और कमरा खाली कर दिया। मालिक से कहा "सरकार ! कमरा खाली कर दिया गया है"। मालिक ने कहा "चलो देखें"। जब वह कमरे में आया, तो उसने देखा कि दीपक कमरे में रखा है। उसने कहा "जिस दीपक से तुमने प्रकाश किया था, उसे तो कमरे में रख गये"। बस यही हमारी हालत है। जिस ज्योति से हमें प्रकाश मिलता है उसे ही हम भूल जाते हैं। भाइयो, उस प्रकाश को पहिचानो ! इसी से तुम्हारा कल्याण होगा।

खुल गया राज जिसको पिनहानी।
हेच है उसको ताजे सुलतानी ॥

इसी लिये उपनिषदों ने कहा है कि हृदय की ग्रन्थि जब टूट जाती है तो सब संशय मिट जाते हैं। व्यवहार को ठीक करने से यह सब भ्रम दूर हो जाते हैं। जैसे मृदङ्ग की रस्सिया जब तक न खैंचीं जायें उस में से शब्द नहीं निकलता। इसी प्रकार अपने हृदय की रस्सियों को खींचो ! ग्रन्थी टूट जायगी और सब संशय दूर हो जायंगे।

जिन लोगों ने शुभ कार्य करना अपना धर्म मान लिया है और झूँठे तथा बुरे कामों का त्याग कर दिया है जिन्होंने उन कार्यों को ग्रहण कर लिया है जिनसे ईश्वर प्राप्ति होती है, उनका अन्तः करण पवित्र हो जाता है। मनुष्य प्रकृति की दो अवस्थायें हैं, एक उठने की और दूसरी गिरने की। उठने की अवस्था में वह परमात्मा में सब को देखता है और गिरने की अवस्था में वह परमेश्वर को सब में देखता है।

बस यही दो नियम दुनियाँ मे काम करते हैं। यदि आप की भक्ति में यह रूप आ जाय कि परमात्मा सब में विद्यमान है और हम सब परमेश्वर में हैं तो फिर आप से कोई भी बुरा काम न होगा। परन्तु यहाँ तो बात ही उल्टी है। जो ईश्वर प्राप्ति का समय होता है उसमें हम अनेक प्रकार की बुराइयाँ सोचते रहते हैं। फिर आप कहते हैं सध्या में दिल नही लगता। दिल तो लगता है तुम लगाओ भी ? जिधर भी दिल को लगाओ तुम लगा सकते हो। उसका स्वभाव बड़ा सीधा है। अच्छा यह तो बताओ ! आप सिनेमा जाते हैं, वहाँ भी दिल लगता है या नहीं ? भा जब कोई बुरा काम करते हो तो कितनी जल्दी आप का मन कौन लगाता है ? मन को सीधे मार्ग पर ले जाना आप का काम है। पर यहाँ तो कुमार्ग फैल रहा है। भला कभी कुमार्ग पर जानेवाले ऐसी भी अच्छे हुए हैं ? कृष्ण महाराज से भी यही प्रश्न हुआ था कि मन वायु से भी अधिक चचल है, वायु को रोकना तो सुगम है, किन्तु मन का रोकना कठिन है, उन्होने उत्तर दिया, 'यह बात नहीं ! गुलाब के फूल को मसलना कठिन है, किन्तु मन को सीधे मार्ग पर ले जाना सुगम है। केवल अभ्यास को परिपक्व बनाने को आवश्यकता है।

अत. भक्ति मार्ग पर चल कर अपने जीवन को सफल करें।

ईश्वर विचार

(श्री स्व० स्वामी दर्शनानन्द जी का एक प्रवचन)

जब हम संसार में किसी पदार्थ को देखते हैं तो हमें उसमें दो प्रकार के पदार्थ प्रतीत होते हैं एक परिणामी और दूसरा अपरिणामी, जितने साकार पदार्थ हैं वे सब परिणामी और जितने निराकारी पदार्थ हैं वे अपरिणामी हैं, परन्तु जब हम इन साकार पदार्थों में प्रथम मनुष्य के शरीर को देखते हैं जो माता पिता के संयोग से उत्पन्न होता है, बढ़ता है, घटता है, अन्त को नष्ट होता है, इसमें हमें क्या अनुमान होता है कि जो पैदा हुआ है वह नष्ट होगा। जिसमें परिणाम है वह पैदा हुआ है। जब परिणामी पदार्थों को उत्पत्तिवाला सिद्ध कर लेते हैं तो हम व्यष्टि पदार्थ अर्थात् एक व्यक्ति को छोड़कर समष्टि जगत् को विचारते हैं तब ही परिणाम प्रतीत होता है। क्योंकि जिस अवयव के अवयव परिणाम को प्राप्त होते है वह अवयवी भी परिणामी होता है, क्योंकि सम्पूर्ण अवयवों का नाम अवयवी है। जब हम इस प्रकार सूक्ष्म विचार करते हैं तो हमें जगत् परिणामी प्रतीत होने लगता है। हम जगत् के परिणामी होने से उसकी उत्पत्ति का अनुमान कर लेते हैं। यद्यपि मध्य अवस्था में उसकी उत्पत्ति का बोध अनुमान बिना नहीं होता तथापि शब्द प्रमाण से जगत् उत्पन्न हुआ और जगत्, संसार, सृष्टि इसके पर्यायवाचक जितने शब्द दिये जाते हैं सब के अर्थ उत्पत्ति वाले के हैं।

जब हमने जगत् को उत्पत्तिवाला अनुभव किया तो हमारा विचार यह होता है कि यह उत्पत्ति स्वाभाविक है या नैमित्तिक। दूसरे हम जिस

पदार्थ की उत्पत्ति जिस पदार्थ से देखते हैं उसका प्रलय भी उसी पदार्थ में होता है। इससे कार्यरूप सब पदार्थों में नित्यता का बोध होता है। जब हम पंच भूतों में अर्थात्—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश में सब पदार्थों का लय देखते हैं तो उन्हीं पंच पदार्थों से इस जगत् की उत्पत्ति का विचार होता है। यद्यपि कार्य व्यवस्था इन पदार्थों में अनित्य है, परन्तु कारण व्यवस्था में नित्य होते हैं। जब हम जगत् के उपादान कारण पञ्चभूतों को जान चुके, तो हमको यह विचार होता है कि जगत् भूतों के स्वभाव से उत्पन्न हुआ वा इसमें कोई निमित्त भी है। अर्थात् जगत् पञ्चभूतों से ही उत्पन्न हुआ वा इनमें बिना कोई और भी पदार्थ है? जब हम पृथ्वी को विचारते हैं तो जड़ प्रतीत होती है, जल भी ज्ञान शून्य है, अग्नि भी ज्ञान नहीं रखती, वायु में भी ज्ञान का स्वभाव प्रतीत होता है, आकाश ज्ञान से हीन है। इस प्रकार के विचार से हम सम्पूर्ण भूतों को ज्ञान से रहित पाते हैं, परन्तु हम संसार में जो सोने के बने भूषणों में सोने के गुण और चांदी में चाँदी के गुण पाते हैं, इससे हमको बोध होता है कि कारण के गुण के अनुकूल कार्य में गुण रहते हैं। जब भूतों में ज्ञान गुण नहीं है तो भूतों के कार्य रूप जगत् में ज्ञान नहीं हो सकता और जगत् में मनुष्यों को ज्ञान से युक्त देखते हैं तो शीघ्र विचार उत्पन्न होता है कि यह ज्ञान गुण किस का है? बहुत से लोग यह कहते हैं कि पृथक् भूतों में तो चैतन्यता नहीं; किन्तु संयोग से उत्पन्न होती है। परन्तु जो गुण एक में न रहे वह संयोग से उत्पन्न नहीं होता। जेसे मैदा में मधुरता नहीं, जल में मधुरता नहीं, तो मैदा और जल के संयोग से मधुरता उत्पन्न नहीं होती। चीनी में मधुरता है, जल में मिलाने से उत्पन्न हो जाती है। दूसरे रेल के अंजन में पृथ्वी है, जल है, अग्नि है, वायु है, आकाश है परन्तु ज्ञान शक्ति नहीं है। मृतक शरीर में पांचों भूत हैं।

परन्तु ज्ञान शक्ति नहीं। इससे निश्चय होता है कि ज्ञान शक्ति का आधार कोई दूसरी वस्तु है।

जब हम इस प्रकार सृष्टि में जड चैतन्य को दो स्वरूप करके विचार लेते हैं तो हमको सृष्टि में इनका संयोग और सृष्टि में स्वभाव से संयोग है या निमित्त से ? यह विचार उत्पन्न होता है। जब हम बाजार जाते हैं, हमको कभी कहीं ईटें पड़ी मिलती हैं, तो हम जान लेते हैं कि यह स्वाभाविक गिरी होंगी; परन्तु यदि एक स्थान में दस ईटें गिनकर ऊपर नीचे रखी हों तो विचार होगा कि किसी ने गिनकर रखी हैं। इसी से यह सिद्ध होता है कि जहाँ पर नियम है वह नैमित्तिक और जो वे नियम है वह स्वाभाविक है। जब सृष्टि में नियम को देखते हैं, तो इसके हरएक पदार्थ में नियम प्रतीत होता है। स्त्री-पुरुष के संयोग से लड़का उत्पन्न होता है। घोड़े घोड़ी के संयोग से घोड़ा, घोड़ी और गधे के संयोग से खच्चर। इसी प्रकार सब पदार्थ नियमानुसार प्रतीत होते हैं। गर्मी में १० घण्टे की रात्री होती है सर्दी में १४ घण्टे की, जिधर देखो नियम बध रहा है। फिर इसे किस युक्ति से स्वाभाविक मानें ? दूसरे जो स्वाभाविक गुण हैं, वे सर्वदा एक रस रहते हैं वे बिना किसी निमित्त के बदलते नहीं। जैसे जल का स्वभाव शीतस्पर्श वाला है, बिना अग्नि संयोग से उष्णता न होगी, सो वह उष्णता अग्नि की है न कि जल की। यदि भूतों का स्वभाव उत्पत्ति मान लें तो विनाश किसका गुण होगा ? क्योंकि एक पदार्थ में दो विपरीत गुण तो रह नहीं सकते। यदि भूतों में किसी का गुण उत्पत्ति मानें, किसी का विनाश, तो भी व्यवस्था ठीक न होगी। क्योंकि संयोग के समय वियोग बाधक होगा, वियोग के समय संयोग। जब इस प्रकार से विचार करते हैं तो भूतों के स्वभाव से जगत की उत्पत्ति नहीं हो सकती। इसका निमित्त कारण ज्ञानशक्ति सम्पन्न कोई सर्वशक्तिमान् अवश्य मानना

पड़ेगा। जब इस प्रकार ईश्वर को मानेंगे तो यह शंका उत्पन्न होगी कि:-

"लक्षण प्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिर्नतु प्रतिज्ञा मात्रेण"।

अर्थात् लक्षण और प्रमाणों से वस्तु की सिद्धि होती है। ईश्वर के प्रमाण का अभाव है, क्योंकि प्रत्यक्ष ज्ञान तो होता नहीं, प्रत्यक्ष के अभाव में व्याप्ति न होगी, व्याप्ति के अभाव में अनुमान भी नहीं हो सकता। निराकार और अनुपम होने से उपमान भी न होगा। बाकी रहा शब्द! प्रथम तो आप्तोदेश से शब्द को प्रमाण माना जाता है, आप्त उसको कहते हैं, जो धर्म से धर्मी का लक्ष करके कहे, जिसका प्रत्यक्ष नही, उसमें शब्द भी न होगा।

समाधान—यह है कि यदि प्रमाण के अभाव में ईश्वर की सिद्धि नहीं तो प्रमाण की परीक्षा के समय प्रमाण में भी प्रमाण होना चाहिए? यदि कहो प्रमाण में भी प्रमाण है तो उसका प्रमाण किस प्रमाण से है? इस प्रमाण-अनवस्था-दोष में पड़ जाओगे। यदि कहीं प्रमाण में प्रमाण नहीं तो उसकी असिद्धि है, तो आपका प्रमाण जो स्वयं साध्य कोटि में है, वह दूसरे की सिद्धि में कैसे हेतु होगा? यदि "मूलेमूलाभावादमूलं मूलम्" इस प्रकार प्रमाण को बिना प्रमाण के मान लोगे, तो तुम्हारे सिद्धान्त की हानि होगी। यदि कोई शंका करे कि ईश्वर ने जगत् उत्पन्न किया है, तो ईश्वर को किसने उत्पन्न किया है? तो इसका उत्तर यह है कि परिणामी पदार्थ कार्य होते हैं। उनके कारण की अपेक्षा होती है, जब ईश्वर परिणामी हो तो उसका भी कारण हो; परन्तु ईश्वर नित्य है, अपरिणामी है, उसका कर्त्ता नहीं हो सकता। यदि कोई कहे, ईश्वर कहां है? तो उत्तर यही ठीक है कि "कहां" पर एक देशी के लिये होता है, विभू के लिये नहीं। बहुत लोग उसको देखना चाहते हैं, परन्तु ज्ञान चक्षु के अभाव से देख नहीं सकते। जैसे तिलों में तेल है परन्तु पीड़ने के बिना दृष्टि में

नहीं पड़ता, दधि में घी है, परन्तु मथने के बिना मालूम नहीं होता। इसी प्रकार जगत् में आत्मा व्यापक है; परन्तु योगाभ्यास के बिना नहीं ज्ञान पड़ता। जैसे दीपशलाका में आग है, परन्तु घिसने के बिना नहीं मालूम देती है। जैसे गुड़ में मिठास है, परन्तु खाने के बिना प्रतीत नहीं होता। इसी प्रकार जगत् में परमात्मा है, परन्तु मिथ्या ज्ञान से छिप रहा है, प्रतीत नहीं होता।

प्यारे पाठको! अब विचार करके देखो यदि एक अन्धा रूप को देखना चाहे तो कौन दिखला सकता है। जब तक चक्षु का सुधार न हो; इसी प्रकार जब तक ज्ञान चक्षु न हो, क्यों कर परमात्मा को देख सकते हैं। यदि कोई बहरा राग सुनना चाहे, कौन सुना सकता है। जब तक उसके कान ठीक न करा दिये जायें। यदि कोई गूंगा मिठाई का स्वाद लेना चाहे तो कौन दिला सकता है जब तक उसकी जीभ दुरुस्त न हो। यदि जिसको नासिका में दोष से गन्ध ग्रहण करने की शक्ति न हो तो कौन बिना नासिका बने फूल सुंघा सकता है, इसी कारण हे पाठको! जब तक हमारे पास वह वस्तु नहीं जिससे परमात्मा जाना जाता है तो हमको कोई भी दर्शन नहीं करा सकता। जब हमारे ग्रहण करने की शक्ति ठीक होगी तो हम देख सकेंगे। हे पाठको! जिस धारणावती उग्र बुद्धि से परमात्मा देखा जाता है जब तक वह बुद्धि उत्पन्न न हो तब तक परमात्मा को कोई नहीं जान सकता। वह बुद्धि वेदादि शास्त्रों के पढ़ने से शुद्ध होती है। जैसे अञ्जन से चक्षु ठीक होकर देखने का काम देता है। अब बहुत से महात्मा यह कहेंगे कि तुमने मन से मान लिया कि ईश्वर है क्योंकि दो वस्तुओं के संयोग से जीव उत्पन्न हो जाता है। जैसे गोवर और दही के मिलने से बिच्छू पैदा होते हैं, फिर ईश्वर को मानना व्यर्थ है, परन्तु जो लोग इसको विचारते हैं उन को ज्ञात होगा कि प्रथम दही भी ज्ञानवान् के

निमित्त से उत्पन्न हुआ है। पृथ्वी से दही नहीं उत्पन्न होता दूसरे गौ के गोबर में छोटे जीव रहते हैं वह दही से पल जाते हैं जैसे भूमि में घास की जड़ रहती हैं वह वृष्टि से बढ़ जाती हैं, परन्तु ऊसर में घास नहीं होती इससे सिद्ध है कि जो वस्तु होती है वही उत्पन्न होती है पहिले कारण रूप में रहती है फिर कार्य रूप में बदल जाती है। जैसे घट के आकार का ज्ञान कुम्हार को है, घट बनने की शक्ति मृतिका में है तब घट में उत्पन्न होता है। यदि कुम्हार न हो या मृतिका न हो तो घट नहीं बनता। पाठको! बिना उपादान और निमित्त कारण के कोई वस्तु उत्पन्न नहीं होती, इससे आप जगत् का कर्ता ईश्वर को माने बिना विचार को बढ़ा नहीं सकते। परमात्मा आपको धारणावती बुद्धि दे जिससे आप तत्त्वज्ञान को प्राप्त होकर संसार के दुख जाल से छूट जायें।

सुमन संचय

(१)

तांबे से सोना

एक बार एक राजा घोडे पर चढकर शिकार को जा रहा था। मार्ग मे उसने देखा कि एक साधु वन मे बिल्कुल अकेला बैठा हुआ है, न तो उसके पास खाने का सामान है न पहनने के लिये कोई कपडा है। राजा को उसकी दशा पर दया आई और एक सेवक को पाँच रुपए देकर कहा कि जाओ उस साधु को दे आओ। जिस समय सेवक साधु के पास पहुँचा और उसको रुपये देने लगा तो साधु ने कहा कि किसी कगाल को दे दो। सेवक ने लौट कर साधु का उत्तर राजा को बतला दिया। राजा ने दूसरी बार २५) लेकर भेजा। इस पर भी साधु ने वही उत्तर दिया। राजा ने कई बार अधिक से अधिक रुपया देकर सेवक को भेजा परन्तु साधु ने प्रत्येक बार यह कह कर कि किसी कगाल को दे दो धन लौटा दिया।

अब की बार राजा पाच लाख रुपया लेकर साधु के पास स्वय गये। साधु ने उन्हे भी वही उत्तर दिया। राजा ने कहा, 'महाराज! आप से बढ कर और कगाल कौन हो सकता है? आपके पास रहने को झोपडा नही, खाने को भोजन नहीं, पहनने को वस्त्र नही।' साधु ने उत्तर दिया 'राजन्! हम कगाल नही, हम तो रसायन बनाना जानते है। यदि चाहे तो सोने के पर्वत बना लें। यह उत्तर सुनकर राजा लज्जित होकर चला आया। जब रात को सोने लगा तो ध्यान हुआ कि यदि उस साधु से सोना बनवा लेते तो एक दो देश और विजय कर लेते। यह सोच कर आधी रात को ही राजा साधु के पास पहुँचे।

साधु ने पूछा 'कौन है।' उसने कहा 'मै राजा हूँ।' साधु के पूछने पर अपने आने का प्रयोजन बतला दिया। साधु ने कहा 'यह काम एक दिन में नहीं सिखाया जा सकता। तुम रोज आया करो, 'सीख जाओगे', राजा ने इसे स्वीकार किया और नित्य दो घण्टे के लिये साधु के पास जाना आरम्भ कर दिया। साधु राजा को नित्य धर्मोपदेश करता और ज्ञान की बातें सिखलाता। एक वर्ष म राजा बड़ा

धर्मात्मा और ज्ञानी हो गया। उसमें इतनी निस्पृहता आ गई कि सारे समार का राज्य उसे तुच्छ प्रतीत होने लगा। साधु भी उसके आचार विचार के परिवर्तन से बहुत प्रसन्न हुआ और जब उसे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया कि राजा को अब पूरा २ ज्ञान हो गया है तो एक दिन उसने राजा से हँसी मे कहा कि कल तुम बहुत सा तांबा लाओ, हम सोना बना दे। राजा ने हाथ जोड़ कर उत्तर दिया 'महाराज! जिस ताबे को सोना बनाने की आवश्यकता थी वह तो सोना बन गया। अब मुझे धातु के ताबे को सोना बनाने की आवश्यकता नही रही।'

(२)

गुरु नानक के जीवन की एक घटना

गुरु नानक एक बार हरिद्वार में गगा के मनोरम तटपर खड़े थे। उन्होंने कुछ यात्रियों को स्नान करते और सूर्य को जल देते हुए देखा। जल देने का कारण पूछने पर एक यात्री ने कहा कि हम अपने मरे हुए पुरुषाओं को जल दे रहे हैं। गुरु नानक यह उत्तर सुन कर चुप हो गये और गगा मे घुस कर पश्चिम की दिशा में अपना मुह करके जल उलीचने लगे। यह देख कर यात्रियो को बड़ा कौतूहल और आश्चर्य हुआ और उन्होंने गुरु नानक के निकट जाकर पूछा 'यह तुम क्या कर रहे हो।' गुरु ने उत्तर दिया कि 'मेरे गांव में मेरा एक बाग है। गाव को छोड़े हुए काफी समय हो गया है और मेरी अनुपस्थिति में वह बाग सूख गया होगा, उसे हरा भरा करने के लिये जल दे रहा हूँ।' यात्रियो ने कहा उस बाग तक यह जल क्योकर पहुँच सकता है।' नानक ने कहा 'जिस प्रकार आप लोगों का जल आपके बुजुर्गों तक पहुँचेगा, उसी प्रकार मेरा यह जल मेरे बाग तक पहुँच जायगा।' यह उत्तर सुन कर सब यात्री लज्जित हो गए और उनके मुह से कोई शब्द न निकला।

(३)

निर्धनों की सेवा परमात्मा की सेवा है

एक राजा ने एक बहुत सुन्दर सगमरमर और बिल्लौर का मन्दिर बनवाया। राज्य की सब से भव्य इमारत बनाने के उद्देश्य से उसने उस पर लाखों रुपया खर्च किया परन्तु उसने आज्ञा दी कि उस मन्दिर में कोई निर्धन व्यक्ति प्रवेश न करे। कुछ समय के पश्चात् उस नगर में एक महात्मा आये। और एक वृक्ष के नीचे उन्होंने अपना आसन जमाया। हजारों व्यक्ति दर्शनों और सत्संग के लिये प्रतिदिन

उनके पास जाने लगे। राजा का मन्दिर उजाड़ और सुनसान देख पड़ने लगा। राजा ने घोषणा की कि जो व्यक्ति मन्दिर में आकर पूजा-उपासना करेगा उसे लाखों रुपये भेंट किये जायेंगे। इस घोषणा पर किसी ने तनिक भी ध्यान न दिया। अन्त में निराश होकर राजा ने साधु से भेंट की और कहा 'मैंने एक भव्य मन्दिर बनवाया है। इस पर मेरे लाखों रुपये व्यय हुए हैं। यह बड़ा सुन्दर है। कृपा करके उसमें पधारें और प्रार्थना-उपासना करें। साधु ने उत्तर दिया 'तुम्हारे मन्दिर में लाखों रुपये लगे हैं परन्तु वह सुन्दर नहीं है क्योंकि उसमें भगवान का निवास नहीं है। वह तो निर्धनों के झोंपड़ों में रहता है और उनको तुमने मन्दिर में प्रवेश करने से रोक दिया है। जब तक तुम निर्धनों को उस मन्दिर में प्रविष्ट होने और इस प्रकार उसे पवित्र करने की व्यवस्था नहीं करोगे तब तक मैं तुम्हारे मन्दिर में प्रवेश नहीं कर सकता।

(४)

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन

एक बार अमेरिका राष्ट्र का एक सिपाही पहरा देते हुए सो गया। इस अपराध में उसे फासी की आज्ञा हुई। जब उसकी फाँसी की आज्ञा हस्ताक्षरों के लिये राष्ट्रपति लिंकन के पास पहुँची तब उन्होंने उसके मामले के सारे कागजात मँगाये और स्वयं उनकी जाच की। इस जांच से उन्हें मालूम हुआ कि वह सिपाही पिछली रात को अपनी ड्यूटी पूरी कर चुका था परन्तु दूसरे दिन अपने एक साथी के न आने के कारण उसे काम करना पड़ा और पिछली रात को जागने के कारण उसे नींद आ गई। उसके केस का पूर्णतया अध्ययन करने के पश्चात् राष्ट्रपति महोदय उस सिपाही से मिलने स्वयं जेल में गए और उस नवयुवक सिपाही से भेंट करके जब वे जेल से जाने लगे तो उस सिपाही के कंधे पर हाथ रख कर बोले 'बच्चे' तुम्हें कल मृत्यु दण्ड नहीं दिया जायगा। मैं तुम पर विश्वास करके पुन. फौज में भेजता हूँ परन्तु तुम्हारे कारण मुझे बड़ा कष्ट हुआ है। मैं वाशिंगटन से चल कर यहाँ आया हूँ और मुझे बहुत आवश्यक काम छोड़ना पड़ा है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम मेरे मार्ग व्यय के बिल को किस प्रकार अदा करोगे ? सिपाही को कोई उत्तर न सूझ पड़ा, अन्त में उसने कहा 'अपने मित्रों की सहायता से मैं आपका बिल चुकाने का यत्न करूँगा।'

राष्ट्रपति ने कहा 'नहीं मित्र इस बिल को अदा नही कर सकते। संसार मे केवल एक व्यक्ति है जो इसे अदा कर सकता है, और वह तुम हो।

यदि भविष्य में तुम अपने कर्तव्य को पूरा करोगे तो मेरा बिल अदा हो जायगा।

उस सिपाही को ये शब्द कभी न भूले और बाद मे एक भयङ्कर युद्ध मे घायल हो जाने पर मरने से कुछ क्षण पूर्व उसने अपने साथियो के द्वारा राष्ट्रपति के पास यह सन्देश भिजवाया कि उसने कभी भी राष्ट्रपति के उन शब्दो को नही भुलाया।

(५)

मातृ-शक्ति

एक बार ऋषि दयानन्द कुछ व्यक्तियो के साथ कही जा रहे थे मार्ग मे उन्हे कुछ बालक खेलते हुए मिले। उनमे एक छोटी सी बालिका थी। ऋषि दयानन्द ने उस बालिका को देखते ही अपना मस्तक झुका लिया। यह देखकर उनके साथियो को बड़ा आश्चर्य हुआ और ऋषि से पूछा—महाराज! आपने इस बालिका को देख कर अपना शिर क्यो नत किया। ऋषि दयानन्द ने गम्भीर भाव मे उत्तर दिया 'यह बालिका मातृ-शक्ति है इसी ने हम सबको जन्म दिया है। इस शक्ति का सम्मान करना हमारा कर्तव्य है इसीलिए इस बालिका को देखकर मैंने अपना मस्तक नत किया है।"

हिन्दुस्तानी की ओट में उर्दू का प्रचार

[लेखक—श्री प० वेङ्कटेशनारायण जी तिवारी एम० ए०]

[क्रमागत]

डाक्टर सैय्यद महमूद ने 'होनहार' अखबार का स्वागत करते हुए लिखा है—

"रेसाला होनहार' देखकर मुझे बडी खुशी हुई है । मैंने इसे बडी दिलचस्पी से पढा। मैं समझता हूं कि यह रेसाला बच्चो के लिए फायदामन्द साबित होगा। क्योंकि इस रेसाला की ज़बान ऐसी है जो आम तौर से बोली और समझी जाती है। देश और जाति की तरक्की इसी तरह हो सकती है कि सब लोग एक ही ज़बान बोलें और एक ही ज़बान के ज़रिए तमाम बच्चो की तालीम हो। उम्मीद की जाती है कि रेसाला 'होनहार' इस बात की कोशिश करेगा कि इसकी ज़बान बिलकुल साफ सादा और ऐसी आसान हो जिसे हर बच्चा आसानी के साथ पढ सके।"

"मेरी यह ख्वाहिश बहुत दिनो से थी कि देश में ऐसे अदब का प्रचार हो जोकि दाना ही हरफ़ में हो, मगर ज़बान एक हो हो और आसान हो। श्री रामलोचनशरण और मिस्टर अनीसुर्रहमान ने 'होनहार' निकालकर बडी कमी को पूरा किया हैं। मैं उन लोगो को इस कोशिश पर मुबारकबाद देता हूं।"

ऊपर के दो नमूने तो हैं माननीय डा० सैयद महमूद की हिन्दुस्तानी ज़बान के। अब आचार्य नरेन्द्रदेव की, जो काशी विद्यापीठ के भूतपूर्व प्रधानाचार्य की उपाधि को विभूषित करते हैं और हमारे प्रान्त की शिक्षा, सगठन कमेटी के सभापति थे और जो इस नवीन हिन्दुस्तानी के नए आशिकों में से हैं, हिन्दुस्तानी ज़बान का भी एक उदाहरण पाठको के मनोरंजन के लिए उद्धृत करता हूं। आपने लिखा है—

हिन्दुस्तानी ज़बान के माहवारी अखबार "होनहार" का पहला परचा मेरे सामने है। ज़बान को सहल और आम फहम बनाने की काफी एहतियात रखी गई है। यह कोशिश काबिल तारीफ है और एडीटर को इसमें काफी कामयाबी हासिल हुई । मैं इस अखबार की तरक्की चाहता हूं उम्मीद है कि यह अपने मकसद को हासिल करने में कामयाब साबित होगा।"

आचार्य नरेन्द्रदेव की भाषा को पाठक गौर से पढ़ें। उस पर कुछ टीका-टिप्पणी करना मैं उचित नहीं समझता।

'होनहार' की भी 'नौरतन चटनी' का कुछ मज़ा आप लेना चाहेंगे। लीजिए हाजिर है—

"आ देश से आने वाले बता क्या अब भी मह्कन मन्दिर मे नाकूस (?) की आवाज आती है, क्या अब भी मुकद्दस मस्जिद पर मस्ताना अज़ान थराता है? और शाम के रंगीन सायों पर, एक अज़मत सी छा जाती है।"

जिस सूबे को 'होनहार' हिन्दी का यह होनहार नमूना है उसके सम्पादक हैं श्री रामलोचनशरण और श्री अनीसुर्रहमान। 'होनहार' के चौथे अङ्क में ? मजमून हैं, विषय नहीं। पेज हैं, पन्ने नहीं। इन २१ मजमूनों मजामीन' के लेखकों में से ११ के लेखक हैं हमारे उर्दू दां दोस्त। रह गई श्री रामलोचनशरण जी की बात। आप का कहना ही क्या? आप तो 'सयानों की पोथी' के सयाने लेखक ही हैं। इसीलिए आप ने पोथी में ब्याह को तलाक देकर 'शादी से गठबन्धन करना उचित समझा है। नहीं, नहीं, उचित नहीं, मुनासब समझा है।

नई हिन्दुस्तानी के काफ़ी नमूने दिए जा चुके हैं। कहते हैं कि जिस जबान के ये नमूने हैं वही हिन्दुस्तानी भाषा है। उदाहरण से यह बात साफ़ प्रकट होती है कि हिन्दुस्तानी वास्तव में उर्दू है। आचार्य नरेन्द्रदेव इसी हिन्दुस्तानी के हिमायती हैं। होनहार का सभा साथ देते हैं। जैसी बहै बयार पीठ तब तैसी दीजे। इस लिए संस्कृत पाली और हिन्दी के उद्भट विद्वान् आचार्य का लोग अनुकरण करने लगे तो हिन्दी का दुर्भाग्य है। संस्कृत और हिन्दी के शब्दों का इस निर्दयता के साथ बहिष्कार खटकता है। अजगर के बजाय 'अजदहा' और शख के स्थान में 'नाकूस' हमारे बच्चों को पढ़ाया जाय और यह कहकर पढ़ाया जाय कि 'अजदहा' और 'नाकूस' को ज्यादा लोग बोलते और समझते हैं तो हम अपनी नादानी और नासमझी पर तरस आता है और तरस इस बात पर भी आता है कि सयाने अपने आप को इतना बड़ा सयाना समझते हैं और दूसरों को इतना मूर्ख कि उनकी समझ में उनके काइयांपन को कोई ताड़ न पावेगा। राजनीतिक गद्दारी का रमका दिखाकर जो अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं वे मेरी समझ में क्षणिक लोभ के लिए स्थायी लाभ को ठुकरा बैठेंगे। उन्हें यह न भूलना चाहिए कि इसी हिन्दुस्तान में जहाँ अशोक और अकबर से राजा हुए हैं, वहां पर काफ़ी तादाद में मख़बूतुलहवासों ने भी समय समय पर राज सिंहासनों को अलङ्कृत करने में कोई कोर-कसर नहीं उठा रक्खी यह तो समय का हेर फेर है। काल का चक्र तो घूमेगा ही। लाख कोई कोशिश करे कि उसका घूमना बन्द हो जाय। विद्यापति के प्रान्त में बच्चों को यह गीत पढ़ाया जाय—

"ओ, भारतमाता ओ, भारतमाता खुदा की तुझ पर रहमत हो।"

यह कुछ कम अचरज की बात नहीं। अचरज की बात तो यह है कि सब होते देखकर भी बिहारी चुप हैं। कांग्रेस ने तो राष्ट्र-भाषा को हिन्दुस्तानी-भाषा का नाम दिया है। उसने उर्दू का समर्थन नहीं किया और न हिन्दी के बहिष्कार का आदेश दिया। साम्प्रदायिक कठमुल्ले दिन-दहाड़े हिन्दुस्तानी के नाम पर उर्दू का प्रचार कर रहे हैं। हिन्दी और संस्कृत के शब्दों को चुन चुनकर पाठशालाओं और मदरसों से निकालने की कोशिशों में लगे हुए हैं। मैं उर्दू का विरोधी नहीं। फ़ारसी और अरबी के शब्दों से मुझे कोई बैर नहीं। लेकिन उर्दू जबान के पीछे जो प्रेरणा है, उसका जो दृष्टिकोण है, उसकी विचारशैली उसकी बनावट और सजावट, उसकी रूप-रेखा इन सब बातों में वह अभारतीय है राष्ट्रीय भाव की संहारिणी और हमारे जातीय-उत्थान की जड़ खोदनेवाली है। संकीर्णता में उसका जन्म हुआ, संकीर्णता का वह संदेश सुनाती है। इस्लाम का उससे कोई सम्बन्ध नहीं, इस्लामिक कल्चर की वह साकार-मूर्ति नहीं है। ईरान के पतन काल की विषाक्त-सभ्यता और संस्कृति का घातक सन्देश लेकर वह हमारे पास आई है। ऐसी भाषा और ऐसे साहित्य को प्रोत्साहन जो देना चाहते हो वे दें, लेकिन उनका ऐसा करना राष्ट्रीयता के नाम पर, निहायत बेजा हरकत है। किसी भाषा के शब्दों को अपना बना लेना कोई अनुचित काम नहीं है। प्रत्येक सजीव भाषा हर समय ऐसा ही किया करते हैं। उन्हें अपनाना एक बात है, लेकिन अपने शब्दों को त्यागकर दूसरों का आश्रित होना किसी सजीव भाषा का लक्षण नहीं है। लेकिन जिनकी मनोवृत्तियां संकीर्ण हैं, जो राष्ट्रीयता के नाम की रात-दिन रट लगाया करते है, पर न जिनमें राष्ट्रीयता के भाव का सर्वथा अभाव है वे ही इस तरह की साहित्यिक तानाशाही का समर्थन करेंगे। हमारा और आपका मार्ग तो साफ है। हिन्दी ही हिन्दुस्तानी हो सकती है। वही हिन्दुस्तानी है। उसका शब्द,भण्डार न संकुचित है और न अपूर्ण। वह तो अजगर की तरह सब भाषाओं के शब्दों को पचाने की क्षमता रखती है और जिस उदारनीति से अभी तक उसका भरण-पोषण हुआ है उसी हृदयता से उसके सेवक भविष्य में भी उसको संवारने-सुधारने में डटे रहेंगे तो विजय उनकी है, भविष्य उनका है और उन्हीं को सबसे अधिक यश होगा। भारत की विभिन्न जातियों को भाषा के एक अटूट बन्धन में बांधकर एक राष्ट्रीय जाति में परिणत करने का और उसके विशाल पराक्रम, दुर्जयशक्ति, महत्वाकांक्षाओं, सूक्ष्मतम सुकुमार से सुकुमार भावनाओं और धारणाओं को व्यक्त और मुखरित करने का सेहरा भी उसी के माथे पर बंधेगा और इस पुण्य श्रेय के भागी वे सब असंख्य भारतवासी होंगे जो सुख और दुःख में, संकट-विपत्ति में, धूप और बरसात में अपनी मातृ-भाषा की आराधना में निरत रहे हैं।

(समाप्त)

हिंसा और अहिंसा

अहिंसा शब्द और उसका अर्थ भारतवर्ष के लिए नये नहीं हैं। यमनियमों की परिपाटी इस देश के ऋषि महर्षियों ने स्मरणातीत काल में चलाई थी। अथवा वेद प्रतिपादित होने से इसे हम सृष्टि के आरम्भ में प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान के अन्तर्गत ही मान सकते हैं। हिंसा और अहिंसा का मनुष्य के जीवन में क्या २ स्थान है और कहां तक मनुष्य अहिसा का पालन कर सकता है, इसमें क्या २ कठिनाइयाँ आती हैं इस सम्बन्ध में भी महाभारत आदि पुराण ग्रन्थों में अनेक उदाहरणों और आख्यानों द्वारा विशेष प्रकाश डाला गया है। पश्चिम के दार्शनिकों ने भी इस सम्बन्ध में अपने अपने विचार प्रकट किये हैं। इस विषय का भगवान् तिलक ने अपने गीता रहस्य में विवेचन किया है। परन्तु वे विषय ससार में भिन्न २ परिस्थितियों में भिन्न २ रूपधारण करके मनुष्य के सामने उपस्थित होते रहते हैं इनका विवेचन बार २ परिस्थितियो को देखकर करना पड़ता है। वर्तमान काल में अहिंसा को महात्मा गाधी द्वारा एक ऐसा रूप दिया जा रहा है जो बहुत अ शों में नया है और इसके सम्बन्ध में आज भारी मतभेद भी उत्पन्न हो रहा है। आज राजनैतिक उद्देश्यों को लेकर अहिंसा का प्रयोग किया जा रहा है और यद्यपि अभी तक इस सम्बन्ध में यह निश्चित् नहीं हो सका है कि क्या मनुष्य सामूहिक रूप से सचमुच अहिंसक हो सकते हैं तथापि गांधी जी का यह आग्रह है कि देश को इसका प्रयोग बराबर करते जाना चाहिये। इसके अतिरिक्त साम्प्रदायिक दंगों के सम्बन्ध में तथा चोर, डाकुओं और गुण्डों से रक्षा करने के लिए भी वे सबको प्राय: अहिंसा का ही नुस्खा बताते हैं यद्यपि जहाँ तक हमें ज्ञात है उन्होंने कहीं भी यह स्पष्टीकरण नहीं किया कि चोरों, डाकुओं, गुण्डों और आततायिओं से अहिंसा द्वारा रक्षा कैसे हो सकती है? जब कभी इस विषय को स्पष्ट करने का प्रयत्न भी किया तो अन्त में यही कहा कि जिस प्रकार एक बकरी अहिंसा-वृत्ति धारण करती हुई शेर के मुंह में चली जाती है—नहीं, उससे भी अधिक, स्वेच्छा-पूर्वक दौड़कर तेजी से—उसी प्रकार एक अहिंसक को अपने सर्वनाश के लिए, उद्यत रहना चाहिए। आज सिन्ध के हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार हो रहे हैं। उनका धन लूटा जाता है

उनके प्राण लिए जाते हैं उनकी स्त्रियों की बेइज्जती करके उन्हें मृत्यु के घाट उतारा जाता है, इस सबका इलाज देश के सबसे बड़े नेता के पास यही है कि हिन्दू अहिंसा का पालन करें या फिर देश छोड़कर भाग जाएँ। हमारा आशय यहाँ यह दिखलाना नहीं है कि अहिंसा कोई बुरी वस्तु है या यह जीवन का एक उत्कृष्ट तत्त्व नहीं है। परन्तु सांसारिक प्रबन्ध करते समय प्रत्येक वस्तु का इलाज एक अहिंसा द्वारा करना कितना अव्यवहार्य है यह समझ लेने की आवश्यकता है। फिर पीड़ितों को अहिंसा का उपदेश तो और भी बेतुका जँचता है। यह सम्भव है कि एक सन्यासी जिसने अपने इहलौकिक सम्बन्धों को नष्ट कर दिया है और केवल मृत्यु के दिन की परीक्षा कर रहा है हर समय अहिंसा के साथ प्राण विसर्जन करने पर उद्यत रहे, पर एक गृहस्थ जिसके ऊपर नाना प्रकार के उत्तरदायित्व हैं और ऐसे गृहस्थों का समूह अत्याचारियों के आगे बिना हाथ उठाये मस्तक टेक दे केवल इसलिए कि वह अहिंसा का पालन करना चाहता है कहाँ तक सम्भव है ? हम यह मान सकते हैं कि अहिंसा जीवन का एक उत्कृष्ट तत्व है और सभी उत्कृष्टताओं का सार्वभौम रूप और आदर्श रूप मनुष्य उसी समय प्राप्त कर सकता है जब उद्योग करते करते वह परमात्मा के निकट पहुँच जाता है इससे पूर्व सारे सद्गुण उसमें तारतम्य रूप से ही निवास करते हैं। एक विचारक मनुष्य की उन्नति की प्रत्येक श्रेणी के लिए नियम बनाता है न कि केवल अन्तिम श्रेणी के लिए। आश्रम धर्मों का आधार यही तारतम्य भाव है। हमारे ऋषि मुनियों ने जहाँ एक ओर अहिंसा को परमधर्म कहा है वहाँ दूसरी ओर मानवधर्मशास्त्र में ही स्पष्ट आज्ञा दी है कि—

गुरु वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतं।
आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन् ॥

अर्थात् आततायी के रूप में यदि गुरु, बालक, वृद्ध या शास्त्रज्ञ ब्राह्मण ही क्यों न हों बिना विचारे उनका वध कर देना चाहिये। जो लोग हथियार लेकर मारने को दौड़े आते हैं, माल लूटते हैं, आग लगाते हैं, विष देते हैं, स्त्रियों को ले भागते हैं, फसल को उजाड़ देते हैं ऐसे लोग आततायी कहलाते हैं। इनके प्रति अहिंसा करना हमारे देश की पद्धति नहीं है। क्योंकि बाहुबल और शस्त्रबल से इनकी प्रतिक्रिया न करने पर वे सद्गुणों और सभ्यता का नाश कर डालेंगे। जहाँ एक आदमी समर्थ नहीं होता वहाँ अधिक मिलकर उनका प्रतिकार करते हैं। तात्पर्य यह है कि आक्रमणात्मक हिंसा को तो नहीं पर रक्षणात्मक हिंसा का निषेध

नहीं । सर्व त्यागी संन्यासी की दूसरी बात है। वर्तमान कानून में भी इस बात की गु जाइश रक्खी गई है कि यदि आत्म-रक्षण करते हुए किसी से कोई हत्या हो जाय तो वह दण्डनीय नहीं होता। सिंध के हिन्दुओं को केवल अहिंसक रहने और देश छोड़कर भागने की सलाह कोई भारी उपाय नहीं है। आवश्यकता तो यही है कि सिन्ध के हिन्दू बलवान् बनें सुसंगठित हों, शस्त्र बल संचय करें और राष्ट्रीय कही जाने वाली सरकार उन्हें सब प्रकार की सहायता दे। यदि सिन्ध का प्रान्त स्वयं अपने भीतर शान्ति रखने में असमर्थ है तो पहले की भांति बम्बई के अन्तर्गत रहे। केन्द्रीय सरकार का यह कर्तव्य है कि वह सिन्ध में शांति रखने में सहायता दे।

महात्मा जी ने 'सिन्ध के दुखड़े' शीर्षक से एक लेख अभी लिखा है उसमें उन्होंने ये भाव प्रकट किए हैं कि राष्ट्रीय सरकार गुण्डों, बदमाशों और दंगों को दबाने में निर्बल ही सिद्ध होगी। क्या यह वही बात नहीं है जिसे अंग्रेज लोग अपने पक्ष में तर्क देते हुए दुहराते हैं। यदि राष्ट्रीय सरकार का अर्थ अराजकता है तो स्वराज्य के लिये क्यों प्रयत्न किया जाय ? महात्मा जी ने स्वयं स्वीकार किया है कि बलवान् की अहिंसा शीघ्र उत्पन्न नहीं हो सकती। फिर जबरदस्ती अहिंसा थोपने से क्या लाभ ? और जब तक बलवान् की हिंसा प्राप्त नहीं होती तब तक हिंसा की शरण अवश्य लेनी पड़ेगी। एक अँग्रेजी लेखक ने कहा है कि शक्ति और नियम दो संसार के शासक हैं परन्तु जब तक नियम शासन करने के लिये तैयार नहीं होता शक्ति का शासन अनिवार्य है। जब संसार के सब मनुष्य अपने-अपने कर्तव्यों और अधिकारों को समझ लेंगे और उनका यथोचित पालन करने लगेंगे तब कदाचित् पुलिस और सेना की आवश्यकता न हो। संसार की वर्तमान स्थिति को देखने से तो यह प्रतीत होता है कि वह काल निकट नहीं है।

(आर्य मित्र)

अशोक और अहिंसा

[इतिहास का एक विद्यार्थी]

ससार के इतिहास में अशोक का शासन अपने ढङ्ग का निराला शासन रहा है। कलिंग के युद्ध के अतिरिक्त उसने कोई युद्ध नहीं लड़ा। फिर भी वर्तमान भारत साम्राज्य से कहीं बड़ा और विस्तृत साम्राज्य उसके अधीन था। विजयों के सम्बन्ध में उसकी भावना विचित्र थी और इस भावना से उसके पूर्वज अनभिज्ञ थे। उसका विश्वास था कि प्रेरणा द्वारा मनुष्य के मस्तिष्क पर विजय प्राप्त की जाय। इसीलिए उसने देश-देशान्तरों में बहुत से मिशनरी भेजे थे। रक्तपात के द्वारा विजय प्राप्त करने के परम्परागत विचार को उसने परित्याग कर दिया था और अहिंसा, प्रेरणा और सेवा के द्वारा लोगो को अपने विचार का बनाने का गौरवमय कार्य अपने हाथ में लिया था। वह अहिंसा के द्वारा अपनी प्रजा तथा अपने पड़ोसियों के हृदयों और मस्तिष्कों को प्रेरणा करके अपनी महत्वाकाङ्क्षाओं को पूर्ण करना चाहता था। उसका सदैव यह यत्न रहता था कि अपने उद्देश्यों की पवित्रता सब पर अंकित कर दी जाय। यह सब कुछ होते हुए भी उसके पास एक बहुत बड़ी बलशाली सेना थी और वह इस सेना को समस्त राजनैतिक उपद्रवों के शमन का अचूक इलाज समझता था। इस प्रकार अशोक का अहिंसा का सिद्धान्त हिंसा के आश्रय की शक्ति पर अवलम्बित था, जब कि अहिंसा लोगों को प्रेरणा करने में असमर्थ रहती थी। अशोक की यह गुप्त शक्ति ही थी जिसके कारण उसकी अहिंसा ठीक रीति से कार्य करती थी। उसकी प्रजा तथा पड़ोसी राजा यह जानते थे कि उसकी अहिंसा के पीछे उसकी शक्ति काम करती है और वह शक्ति कभी भी हिंसा का आश्रय ले सकती है। यही कारण था वे उससे भयभीत रहते और हिंसा का आश्रय लेने का उसे अवसर नहीं देते थे। अपने एक स्तूप में उसने लिखाया था कि राज्य की सीमान्त के लोगों का अनुचित व्यवहार तभी तक सहन किया जायगा जब तक धैर्य का बांध न टूटेगा। इन स्तूपों में हिंसा का आभास देख पड़ता है। अपने इस सिद्धान्त के कारण ही वह ४० वर्ष पर्यन्त शान्ति पूर्वक राज्य कर सका। अपने लम्बे शासन में साम्राज्य में शान्ति स्थापना तथा उसके विस्तार के लिए बल-प्रयोग करने का उसे कभी अवसर नहीं मिला। अहिंसा बल-प्रयोग के आश्रय के द्वारा ही सफल हो सकती है। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों द्वारा व्यवहृत होने पर सफल न हो सकी।

भगाए हुए हिन्दुओं की कष्ट कहानी

[लेखक—श्रीयुत धर्मवीर एम० ए०]

"मेरी अवस्था नौ वर्ष की है" ये शब्द राधाकृष्ण ने कहे जबकि लाहौर के राष्ट्रीय स्वय सेवक संघ के दो प्रतिनिधियों ने उस से सरहद्दी पठानों द्वारा भगाए जाने की कहानी वर्णन करने के लिए प्रेरणा की। 'मैं स्थानीय गवर्नमेंट हाई स्कूल की ६वीं कक्षा का विद्यार्थी हूं। २२ सितम्बर १९३९ को मैं बन्नू में था। उस दिन दोपहर के पश्चात् ३ बजे के लगभग डेरा इस्माइल खां को जाने वाली लारी में हम बैठे। उस में लारी के मुसलमान मालिक और मसूद ड्राइवर के अतिरिक्त अफसर थे, तथा एक हिन्दू स्त्री तथा मेरा मित्र रामचन्द्र था। डेरा इस्माइल खां से ४२ मील इधर चित्तर खेल और गज्जन खेल के बीच में ६ मसूदों ने लारी को रोका। तब हमारी समझ में आया कि लारी ड्राइवर ने हम से १ रुपए के स्थान में दस आने टिकट के क्यों लिये थे और हमें अपनी लारी में दिन के उस विशेष समय में डेरा इस्माइल खां ले जाने की प्रेरणा क्यों की थी? मसूदों को देखते ही उस ने लारी रोकी। हिन्दुओं और मुसलमानों में भेद करने के लिए उन्हों ने हम हिन्दुओं को लारी से बाहर आने के लिए कहा। हमारे पास जो कुछ था वह छीन लिया गया। हिन्दू स्त्री के पास जो आभूषण इत्यादि बहुमूल्य वस्तुए थीं वह भी उस से उतरवा ली गईं। सायंकाल के साढ़े तीन बजे से अगले दिन प्रातःकाल ८ बजे तक अर्थात् साढ़े सोलह घण्टे तक हमें पैदल चलाया गया। हमें आराम नहीं करने दिया गया। ६० मील चलने पर हम ने अपने को सीमाप्रान्त की सीमाओं से परे स्वतंत्र इलाके में पाया। मार्ग में हमें कई मुसलमान मिले। मसूदों ने उन्हें कहा कि वे हमारा पता किसी को न दें। जहां हम रखे गए थे वहाँ हमें कुछ हिन्दू पुरुष, ८ वर्ष की एक हिन्दू लड़की तथा ६ नवयुवती हिन्दू स्त्रियां देख पड़ीं। एक ने एक नवयुवक के कानमें से बाली खींची जिसके फलस्वरूप उसके कान में से रक्त बहने लगा था। हमने अपने ऊपर आकाश में उड़ते हुए कई वायुयान देखे। तीसरे दिन वायुयानों से कुछ परचे फेंके गए थे जिस में भगाए गए व्यक्तियों को न छोड़ने की अवस्था में कड़ा दण्ड देने की धमकी दी गई थी। उसके दो दिन पश्चात् कुछ वायुयानों ने पठानों को चेतावनी दी थी और उन्हें एक सप्ताह का लिखित नोटिस दिया गया था। जब पठानों ने नोटिस पर कोई ध्यान न दिया तो अङ्गरेजों के वायुयानों ने बस्ती के बाहर खुले मैदानों में बम्ब बरसाए थे। पठानों

पर इसका तनिक भी प्रभाव न पड़ा। विपरीत इस के पठानों की कठोरता बढ़ने लगी थी। प्रात काल से सायकाल तक हम से पत्थर ढुवाए जाते थे और जमींदोज खाने खुदवाई जाती थी। इतने परिश्रम के पश्चात् हम एक चपाती (रोटी) दी जाती था। रोटियाँ हमारे भाई बनाया करते थे। रात्रि में हम साने नहा दिया जाता था। ठंडी रात म हथकडी पहने हुए हमे तमाम रात खड़ रहना पडता था। वृक्षा से बाँधकर हम पर ठंडा जल डाला जाता था।

एक दिन पठाना ने हम मे से प्रत्येक को कागज का एक एक टुकडा और पैंसिल दी। घरवालो को ५०००) भेजने के लिए हम से पत्र लिखवाए गए। श्रीयुत रामचन्द्र ने अपने मालिक सेठ फतहचन्द को लिखा जिन्हा ने सरक्षण समिति को ४०००) दे दिए। १६००) म सौदा तय हुआ और २२ अक्तूबर सन् १६३६ का पठाना ने उन्हें मुक्त कर दिया। (रक्षा समिति के प्रधान गुलाम हुसैन खा थ। मन्त्री डाक्टर भडाराम थे और एक सदस्य हाफिज हक़नवाज थ। समिति में बिना ३० रुपए जमा कराए कोई अपनी शिकायत समिति के सम्मुख प्रस्तुत नहीं कर सकता था।

ईद आ गई थी। बकरी या गाय के स्थान में मेरी कुर्बानी करने का पठाना ने विचार किया। फूला से सजाकर मुझे जलूस के रूप में ईदगाह पर ले गए। वहा पर बहुत देर तक उत्सव मनाते रहे और उसके पश्चात् उन्हें एक नई तरकीब सुझाई गई।

उन्हाने मुझे छोड दिया और एक नए आगन्तुक के पास गए। इस प्रकार कुछ समय के लिए मेरी रक्षा हो गई। कुछ समय के उपरान्त उन्हो ने मुझे मुसलमान बनाने का विचार किया। सस्कार के लिए उन्हें एक गऊ की आवश्यकता हुई परन्तु यह कहीं न मिल सकी। अन्त में उन्हें एक बछडा मिल गया जिस का मूल्य १०) देने पर वे उद्यत हो गए परन्तु बछड़े के स्वामी को उसके एक मित्र ने प्रेरणा की कि ५०) लो क्योकि १० रुपये की वस्तु के ५०) उठाने का यही उपयुक्त समय है। साभाग्य से दुबारा भी मैं बच गया क्योकि पठान लाग ५०) देने को तैयार न हुए।

कुछ दिन बाद पठानो के कुछ लडके मुझे एक पहाडी पर लेगए। उन में से एक ने पूछा 'तुम कोनसा अग कटवाना चाहते हो ?' दूसरे ने पूछा 'एक कान, होठ, हाथ वा नाक' मैंने उन से बार बार ऐसा न करने की प्रार्थना की परन्तु उन्हा ने मेरी प्रार्थना स्वीकार न की और शाहजहाँ भटाठानी नामक लड़के ने मेरा दाहिना कान काट दिया। घर को जो पत्र मैंने भेजा था उसका कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ था। उन्हो ने मेरा कटा हुआ कान मेरी हथेली पर रखकर कहा कि दूसरा पत्र लिखो। इस पत्र के साथ मेरा वह कान भी मेरे घर भेजा गया। अन्त मे २०००) मे सौदा तय हुआ। आमूखा नामक एक व्यक्ति के द्वारा पत्र व्यवहार हुआ

था। अत उसे वतार कमीशन के ७५ रुपए दिए गए थ। २८ १२ १६३६ को उन्हों ने मुझे मुक्त किया।

जब मैं वहा था त मैंने कई बार अपने ऊपर वायुयान उडते हुए देखे थे। कभी कभी वे परचे बाटा करते थे और कभी कभी खुले मैदाना मे बम्ब छोडा करते थे। इन से किसी भी पठान को कोई हानि नही पहुँचती थी। हिन्दु नव युवतियो के अतिरिक्त उनक यहा श्रीयुत साहबराम, श्यामदास, लक्ष्मणदास और चमनलाल कैद थे। विजया दशमी के दिन साहबराम के पेट मे छुरा मार कर उन्हें मार दिया गया था। दूसरे दिन जब कुछ बम्ब फेंके गए तो उन में से एक बम्ब बिना फटा हुआ रह गया था। उसे पठानो ने लक्ष्मण दास से उठवाया। इसके फल-स्वरूप बम्ब फटा और कई जगह उनका शरीर झुलस गया था। आराम होने के कुछ दिन पश्चात् उन्हें पठान लोग एक पहाडी पर ले गए और उस पर से गिराकर उस पर पत्थर फेंके गए। इस पर भी वे बच गए। रात्रि में हम ने उनके शरीर को सेकना चाहा परन्तु निर्दयी पठानो ने हमें ऐसा न करने दिया।

एक बार श्यामदास ने अपनी थोडी सी कहानी सुनाई थी। जब उन्हें भगाया गया था तब उनके दो साथी और थे। उन में से एक पण्डित विट्ठलदास थे और दूसरा एक मुसलमान था। मुसलमान छोड दिया गया था परन्तु पण्डित जी को कैद कर लिया था। ७५ वर्ष का बूढा होने के कारण, पण्डित पठानो के साथ पैदल नही चल सकता था इस पर उन्हो ने उसे गोली से मार दिया था। ४०००) प्राप्त करने के बाद श्यामदास, लक्ष्मणदास और चमनलाल छोड दिए गए थे।

भगाई गई हिन्दू नवयुवतियो में से एक का विवाह जबरदस्ती एक मसूद के साथ कर दिया गया था। बम्ब विस्फोट के द्वारा उस मसूद के दोनो हाथ नष्ट हो गए थे। बाकी दो नवयुवतियों और आठ वर्ष की एक लडकी जबरदस्ती मुसलमान बना ली गई थी।

ये मसूद लोग स्थिररूप से सीमा प्रान्त मे रहते हैं। हिन्दुओं को भगाकर ये स्वतन्त्र इलाके मे चले जाते हैं। वहाँ से रात के समय ये अपने ग्रामों में आते हैं। तब वे और उनके एजेन्ट अपने मित्रो और सम्बन्धियो से मिलते हैं। लूट का माल भी रात को गावों में लेजाते हैं लगातार कई २ दिन तक अपने गावों में छिपे रहते है। गावों का कोई आदमी उनकी खबर सरकार को नहीं देता है। ऊपर से छूटे हुए बम्बों को कम्बल के द्वारा हाथों में उठाते हैं। इस पर उठाया हुआ बम्ब कम्बल के कारण प्राय नही फटता है।

(माडर्न रिव्यू)

मध्ययुग में ईसाइयों का विद्याद्रोह

[ले०—श्री प० अवधविहारी लाल एम ए बी एल]

—*०*०*—

ईसाइयों का धर्म के नाम पर अत्याचार बहुत ही प्रसिद्ध है। उनका धर्मग्रन्थ बाइबिल चू कि विद्या का ग्रन्थ नहीं है इस कारण उसको मानकर युरोप के ईसाइयों ने आरम्भ से लेकर बहुत साल तक विद्या, विज्ञान शिक्षा सस्कृति आदि का बहुत जबरदस्त विरोध किया है। विद्या और विद्वानो को किस प्रकार ईसाइयों ने समय समय पर कुचला है इस सम्बन्ध म बडी बडी पुस्तके लिखी जा सकती हैं। अर्वाचीन काल म प्राय सौ वर्षों से इस प्रकार क अत्याचार कुछ कम देखने सुनने म आ रहे हैं। इसका कारण यह है कि भारतीय सस्कृति आदि क सम्पर्क मे आ जाने से युरोप के लोगो के मानसिक विचारो म एक क्रांति सी आ गई है और अब इस प्रकार की बर्बरता करने मे वे लज्जा और सकोच अनुभव करने लगे हैं। ईसाई धर्माचार्य पादरी तो अब तक भी वैज्ञानिको से भीतर भीतर जलते ही हैं परन्तु युरोप म जनमत अब उनका साथ नही देते है। रेवेरेण्ड ई कोभम ब्रूअर एल एल डी ने अपने प्रसिद्ध कोष डिक्शनरी आव् फ्रेजेज एण्ड फेबल्स म ऐसा ही विचार प्रकट किया है। यहा पर दो चार ऐसी घटनाओ का उल्लेख करूगा जिनसे इस विषय का कुछ दिग्दर्शन हो जाय कि किस प्रकार युरोप के ईसाई धर्म के नाम पर फैलायें गये अविद्यान्धकार के कारण विद्या मात्र से, थोड़े समय पूर्व तक द्रोह करते रहे हैं।

(१) वरगिलियस (Viregilius) नामक एक व्यक्ति साल्सवर्ग का विषय था। उसने सिर्फ यह मत प्रकट किया था कि पाताल देश (anipodes) भी है। सन्त बोनी फेस नामक धर्माध्यक्ष ने कहा बाइबिल म पाताल का कोई जिक्र नहीं है। वरगिलियस चू कि ऐसा कहता है इसलिए यह नास्तिक और धर्मद्रोही है। बस, उसको पदच्युत और धर्मच्युत कर दिया गया। उसकी मृत्यु ७८४ ई० मे हुई।

(२) बारहवीं शताब्दी म बेकन नामक एक ईसाई विद्वान् (Friar Bacon) ने कीमिया (रसायनशास्त्र) में बडी खोजें की थी। उसकी खोजो का पता जब ईसाई धर्माध्यक्षों को लगा तो उन लोगो ने उसको धर्मच्युत कर दिया और उसे जेलखाने में बन्द करवा दिया।

(३) अरब निवासी एक विद्वान् जिसको युरोपवाले अवरीय कहते थे। बारहवीं शताब्दी में युरोप में रहता था। वह भी ईसाई था। परन्तु अरबी होने के कारण वैद्यक की

अच्छी जानकारी रखता था क्योंकि आर्यावर्त के चरक सुश्रुत आदि वैद्यक ग्रन्थों का अरबी भाषा मे अनुवाद हो चुका था और अरब वाले वैद्यक विद्या से दिलचस्पी रखने लग गये थे। अब इधर युरोप मे तो अविद्या का पूरा साम्राज्य था। वैद्यक विद्या के लोग इतने जबर्दस्त शत्रु थे कि पाठको को उनकी हालत सुन कर हँसी आये बिना न रहेगी। सत्रहवा शताब्दी तक यह हालत युरोप की थी कि यदि किसी को तलवार मे चोट लग जाती थी तो शरीर के आहत स्थान पर मलहम पट्टा नही करके तलवार पर ही मलहम लगाते और पट्टी बाधते थे। अरबी विद्वान् अवरीय ने वैद्यक विद्या की ऊँची बात जब सुनाई तो बडी खलबली मची। ईसाइयो ने कहा यह बाइबिल का विरोधी है धर्म का शत्रु है। उसे निकाल बाहर किया। उसकी बडी दुर्दशा की गई।

नर्बर्ट नाम के एक युरोपीय विद्वान् ने पहले पहल ईसाई देशों मे बीजगणित (अलजबरा) का प्रचार किया। ईसाइया ने उसको शैतान का सगा बतलाया। लोग उसके नज़दीक जाने मे वैसे ही डरते जैसे कि बच्चे अधेरे में अकेले चलने मे डरते है।

(५) डाक्टर फास्ट (Faust) नाम के एक जर्मन विद्वान् ने पहले पहल बाइबिल की पुस्तक को छापाखाने में छापकर प्रकाशित किया। उसके पहले बाइबिल की हस्त लिखित प्रतिया मिला करती थी। एक प्रति का मूल्य पैरिस नगर (फ्रास की राजधानी) में पाच सौ क्राउन होता था। डाक्टर फोस्ट ने बाइबिल को छापना शुरू किया और एक प्रति ६० क्राउन में ही बेचने लगा। लोगो ने देखा एक जैसे अक्षर एक जैसे आकार प्रकारके सभी प्रतियाके है तो उनको बडा आश्चर्य और अत्यधिक भय हुआ। पुलिस मे खबर दी गई। कहा गया हो न हो डाक्टर का शैतान मे सम्बन्ध हे और इसी कारण वह ऐसी किताबे लिख सकता है। पुलिस ने उसके घर पर छापा मारा। घर की तलाशी ली। छापे की लाल रग की स्याही को लोगो ने देखा। कहा यह खून है और इसी से डाक्टर बाइबिल लिखता है। डाक्टर फास्ट तुरन्त गिरफ्तार कर लिया गया और उसको पैरिस नगर के जेलखाने मे डाल दिया गया।

गैलिलियो की कथा बडी प्रसिद्ध हे। उसका समय है १५६४ से १६४२ ई०। पोप की बडी अदालत इन्क्विजिशन नाम की जो प्राय ३०० वर्षों तक स्पेन में बैठी रही थी और लाखो तथा कथित धर्मद्रोहियो को मनमानी यन्त्रणाये देती रही थी उसके सामने गैलिलियो को पकड कर लाया गया। उसके ऊपर जुर्म यही था कि वह कहता था कि पृथ्वी घूमती है। उसको क़ैद की सज़ा हुई। जेलखाने मे बन्द किया गया। शर्त उसके सामने यह रक्खी गई कि यदि गैलिलियो अपने कथन को वापिस ले तो उसे क़ैद से मुक्त कर दिया जायगा। कहते हैं कि क़ैद से छूटने के लिए गैलिलियो ने किया

ऐसा। परन्तु जेलखाने से निकलते हुए उसने धीमी आवाज से फिर कहा "इ पर्सि मूवे" अर्थात् जो कुछ भी हो पृथ्वी अवश्य घूमती है ।

(७) डाक्टर जान डि० नाम का एक बहुत बडा गणितज्ञ था। उसके पास तीस हजार रुपयों की किताबें थीं। अपने जमाने में वह पुस्तकालय बहुत विशाल समझा जाता था। लोग शक करते थे कि हो न हो इसका सम्बन्ध शैतान से है। इस कारण एक बार एक विशाल जन-समूह उसके घर पर टूट पडा। उसके समस्त पुस्तकालय को लूट खसोट कर तहस नहस कर दिया। परिणाम स्वरूप वह बुढापे में दुःख दारिद्र से पीडित होकर १६०८ ई० में मरा।

(८) इगलैण्ड के हेनरी ३य के राजत्वकाल में लिकन का एक बिशप बडा विद्वान था। उसकी विद्वता की बहुत वर्षों तक अग्रेज कवियो द्वारा उपमा दी जाती रही थी। नाम उसका था ग्रोसटेड। उसने दो सौ पुस्तकें लिखी थीं। उसकी अत्यधिक विद्वता के कारण लोगों ने उसे जादूगर और शैतान का सम्बन्धी करार दिया। पोप ने इगलैण्ड के राजा हेनरी के पास पत्र लिख कर यह आज्ञा की कि उसकी लाश कब्र से निकाल कर उसकी हड्डिया जला कर राख कर दी जावें क्योंकि पोप तक सूचना पहुँचने के पहले ग्रोस्टेड की मृत्यु हो चुकी थी और उसका शव दफनाया जा चुका था।

यह थी स्प्रिट ईसाई जनसाधारण ही क्यो बडे बडे धर्माध्यक्षो की विद्या और विद्वाना के प्रति। उस धर्म के लिए जिसका सिद्धात ही यह हो कि ससार के मनुष्यमात्र आदम के प्रारभिक पाप यानी ज्ञानवृक्ष के फल खाने के कारण ही पतित और नरक के अधिकारी हो गए यह कोई आश्चर्य की बात तो नहीं है। आज जो पाश्चात्य जगत् और उसके अन्ध अनुसरण से सारे ससार मे महान् धर्म विप्लव दृष्टिगोचर हो रहा है उसका एक मात्र उत्तरदायी यही ईसाई धर्म है। परमात्मा करे सारे ससार में वैदिक धर्म का फिर से प्रसार होकर विद्या की वृद्धि और अविद्या के नाश द्वारा ससार के दुःख द्वन्द्व दूर हो।

हिन्दू-मुसलमान दो राष्ट्र नहीं है

ईश्वर के बनाये को मनुष्य नहीं तोड़ सकता

[ले०—श्री महात्मा गांधी]

——#——

दो राष्ट्रों वाला सिद्धान्त झूठा है

मै विश्वास नहीं कर सकता कि जब सचमुच फैसला करने की नौबत आयेगी तब मुसलमान देश के कभी टुकड़े करना चाहेगे। उनकी समझदारी उन्हे रोकेगी, उनका स्वार्थ उन्हे उनका हाथ पकड़ेगा, उनका धर्म उन्हे यह स्पष्ट आत्म हत्या करने से मना करेगा। इस अग-भग का और अर्थ हो भी क्या सकता है? "दो राष्ट्रो वाला" सिद्धात झूठा है। हिन्दुस्तानी मुसलमानों मे से ज्यादातर या तो अपना धर्म छोड़कर मुसलमान बने हैं या धर्म छोडने वाले की सन्तान हैं। धर्म छोड़ते ही उनका अलग राष्ट्र नहीं बन गया। एक बगाली मुसलमान बगाली हिन्दू की सी भाषा बोलता है, वैसा ही खाना खाता है और अपने हिन्दू पड़ौसी के जैसे ही मनोरंजन करता है। उनका पहनावा भी मिलता जुलता है मैंने अक्सर देखा है कि किसी बाहरी चिन्ह से बंगाली हिन्दू और मुसलमान को पहचानना कठिन होता है। यही बात थोड़ी या बहुत दक्षिण भारत के भी गरीबो में दिखाई देती है और गरीब ही भारत की आम जनता है। जब मैं स्व० सर अलीइमाम से पहले पहल मिला था तो मुझे पता नहीं था कि वे हिन्दू नहीं हैं। उनकी भाषा, उनकी पोशाक, उनका व्यवहार और उनका खानपान वैसे ही थे जैसे कि उन अधिकाश हिन्दुओ के थे जिनके बीच में मैंने उन्हें देखा था। उनके नाम से ही उनका भेद खुलता था। कायदे आजम जिन्ना के साथ तो वह बात भी नहीं, क्योकि उनका सा नाम तो किसी भी हिन्दू का हो सकता है। जब मैं उनसे पहली बार मिला तो मैं नहीं जानता था कि वे मुसलमान हैं। उनकी जाति तो उनके चेहरे और रगढग से टपकती थी। पाठकों को यह जानकर अचरज होगा कि महीनों नहीं तो कई दिनो तक मैं यही समझता रहा कि स्व० बिट्ठलभाई पटेल मुसलमान हैं, क्योकि वे लम्बी दाढ़ी रखते और तुर्की टोपी लगाते थे। बहुत-सी मुसलमान जातियो पर उत्तराधिकार

सम्बन्धी हिन्दू कानून लागू होता है। सर मुहम्मद इकबाल ब्राह्मण-वंश से होने का जिक्र गर्व के साथ किया करते थे। इकबाल और किचलू नाम हिंदू और मुसलमान दोनों में पाये जाते हैं। भारत के हिन्दू और मुसलमान दो राष्ट्र नहीं हैं। जिन्हें ईश्वर ने एक बनाया है उनके मनुष्य कभी टुकड़े नहीं कर सकेगा।

क्या इस्लाम एकांगी है ?

और क्या जैसा क़ायदे आजम कहते हैं, इस्लाम इतना ही एकांगी धर्म है ? क्या इस्लाम में और हिन्दुत्व या और किसी धर्म में कुछ भी समान बातें नहीं हैं ? या इस्लाम सिर्फ हिन्दुत्व का शत्रु ही है ? जब अली भाइयों और उनके साथियों ने हिन्दुओं को सगे भाई समझकर छाती से लगाया और दोनों में इतनी समान बातें देखी थी तो क्या उन्होंने भूल की थी ? इस समय मैं हिन्दू व्यक्तियों का विचार नहीं कर रहा हूँ। सम्भव है, मुसलमान मित्र उनको जैसा समझते थे वैसे वे न निकले हों। मगर कायदे आजम ने तो एक बुनियादी प्रश्न उठाया है। उनका कहना यह है —

'यह समझ मे आना निहायत मुश्किल है कि हमारे हिन्दू मित्र इस्लाम और हिन्दुत्व के असली स्वरूप को क्यों नहीं पहचान पाते सच्चे अर्थ मे दो अलग २ समाज व्यवस्थाएँ है और यह एक सपना है कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर कभी एक राष्ट्र बन जायेंगे। एक भारतीय राष्ट्र की यह गलत कल्पना मर्यादा से बहुत आगे बढ गई है। यही हमारे अधिकांश झगड़ों का कारण है अगर समय रहते हमने अपने विचार ठीक न कर लिये, तो इससे हिन्दुस्तान का नाश हो जायगा।'

'हिन्दुओं और मुसलमानों के दो अलग-अलग धर्म-विज्ञान, सामाजिक रीतियां और साहित्य हैं। उनका आपस मे न रोटी व्यवहार है न बेटी व्यवहार। असल बात तो यह है कि उनकी दो भिन्न संस्कृतियां हैं, जिनका मुख्य आधार परस्पर विरोधी विचार और कल्पानाएँ है। उनके जीवन के पहलू और दृष्टिकोण जुदा-जुदा हैं। यह भी बिलकुल साफ है कि हिन्दुओं और मुसलमानों को इतिहास के अलग-अलग स्थानों से प्रेरणा मिलती है। उनके वीर-काव्य, उनके सूरमा और उनकी कथाएं अलग अलग हैं। अक्सर एक का योद्धा दूसरे का शत्रु होता है और इसी तरह एक की जीत दूसरे की हार के बराबर है। ऐसे दो राष्ट्रों का जिनमें एक

की संख्या ज्यादा और दूसरे की कम हो जबर्दस्ती गठबन्धन करके उन्हें एक ही राज्य के आधीन रखने का नतीजा यही हो सकता है कि सदा असन्तोष बढ़ता रहे और अन्त में ऐसे शासन के लिए जो भी इमारत खड़ी की जाय वह नष्ट-भ्रष्ट हो जाये।'

मुसलमानों को चेतावनी

जिन्ना साहब का कहना यह नहीं है कि कुछ हिन्दू बुरे हैं, वे तो यह कहते हैं कि हिन्दूमात्र में मुसलमानों से मिलती-जुलती कोई बात नहीं है। मैं साहस के साथ कहता हूँ कि वे और उनके से विचार वाले इस्लाम की सेवा नहीं कर रहे हैं, वे उस सदेश का अनर्थ कर रहे हैं जो 'इस्लाम' शब्द में ही निहित है। मैं यह इसलिए कहता हूँ कि आज जो कुछ मुस्लिम लीग के नाम से हो रहा है उससे मेरे दिल को गहरी चोट पहुँची है। मुसलमानों में आज जिस असत्य का प्रचार किया जा रहा है उससे उन्हें सचेत न करूँ तो मैं अपने धर्म से चूकता हूँ। यह चेतावनी देना मेरा फर्ज इसलिए है कि मैंने सकट के समय उनकी सच्ची सेवा की है और हिन्दू-मुस्लिम-एकता मेरे जीवन का एक विशेष कार्य रहा और है।

विचार की गड़बड़

"आप यह आग्रह करेंगे कि हिन्दुस्तान में शासन तो बहुमत का हो और कम तादाद वालो को सिर्फ 'सरक्षण' मिले तो आप घोर अन्याय करेंगे अल्पसख्यकों का भी देश के वास्तविक शासन में कारगर हिस्सा होना चाहिए।" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए गाधी जी लिखते हैं—"मालूम होता है, आप बहुमत के शासन को हिन्दू-शासन समझ कर गड़बड़ कर रहे हैं और आपका यह अभिप्राय मालूम होता है कि हिन्दू बहुमत को हटाया नहीं जा सकेगा। असल बात यह है कि सभी प्रान्तों में जो बहुमत है वह सयुक्त है। फरीक हिन्दू और मुसलमान नहीं हैं कांग्रेसी, मुस्लिम लीगी, स्वतन्त्र मुसलमान, मजदूरवादी वगैरह वगैरह हैं। कांग्रेसी बहुमत भी संयुक्त बहुमत है। अगर आपस का खिचाव न हो तो इस बहुमत में और भी अच्छा समतौल किया जा सकता है। यह खिचाव थोड़े दिन का रोग है। ऐसा रोग किसी बढ़ते हुए समाज का स्थायी अङ्ग नहीं बन सकता। हिन्दुस्तान भी ऐसा ही एक विकासशील समाज है। मुस्लिमलीग के प्रदर्शन और दावे का कुछ भी परिणाम हो, एक-न-एक दिन तो उठे हुए सवाल हल होंगे ही। मगर यह परिणाम हरगिज न होगा कि एक भी प्रान्त में खालिस मुस्लिम या शुद्ध हिन्दू बहुमत

हो जाये। पक्ष सम्मिलित होंगे और उनका मेल अलग अलग नीतियों के अनुसार होगा। हां, भारत में लोकवाद कुचल दिया जाये और सारे देश में निरंकुश सत्ता का बोलबाला हो जाये या जीवित हिन्दुस्तान के दो या अधिक मुर्दा टुकड़े कर दिये गये तो बात दूसरी है। अगर आप मेरा तर्क समझ गये हैं तो आपको स्पष्ट हो गया होगा कि जहाँ तक कांग्रेस का सम्बन्ध है किसी दल या समूह को सत्ता से कभी वंचित नहीं रखा जायेगा। कम तादाद वालों को अपने हकों की पूरी रक्षा करवाने का अधिकार है, क्योंकि जब तक वे दूसरों के साथ सत्ता में साझीदार रहेंगे तब तक उनके विशेष अधिकारों में बिगाड होने का अंदेशा रहेगा।

—— ——

सार्वदेशिक आर्य्य प्रति निधि सभा देहली

का

१९४०—४१ के लिए महत्व पूर्ण कार्य्य

———

(सब आर्य्य समाजे तथा आर्य्य भाई गम्भीरता पूर्वक इस पर विचार करे और इस सम्बन्ध मे अपने कर्त्तव्य का पालन करे)।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का वार्षिक साधारण अधिवेशन ३१ मार्च १९४० को वलिदान भवन देहली मे हुआ था। इस अधिवेशन मे अधिकारियो के निर्वाचन के अतिरिक्त सभा के आगामी वर्ष के लिए कार्य्य क्रम निर्धारित हुआ तथा बजट स्वीकार हुआ।

हैदराबाद आर्य्य सत्याग्रह की सफलता के कारण सर्वत्र आर्य्य तथा हिन्दू जनता मे सार्वदेशिक सभा के प्रति श्रद्धा तथा प्रतिष्ठा के भाव बहुत बढ़ गए है और वे आर्य्य धर्म्म तथा सस्कृति सम्बन्धी सभी प्रकार की समस्याओ के सम्बन्ध मे इस सभा के नेतृत्व की आशा करने लग गए हैं। फलस्वरूप इस सभा का कर्त्तव्य भी बहुत बढ़ गया है। इसका कार्य्य-क्षेत्र भी दिन दिन विस्तृत होता चला जा रहा है। इतना बड़ा उत्तर दायित्व यह सभा उसी अवस्था मे निभा सकती है जब कि उसे प्रत्येक आर्य्य समाज और प्रत्येक आर्य्य भाई का हार्दिक सहयोग तथा सहायता प्राप्त होते रहे। सभा को यह पूर्ण विश्वास है कि आर्य्य जनता हृदय से सभा के साथ है और अपनी सारी शक्ति लगा कर इस सभा द्वारा प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण करेगी।

इस विश्वास के आधार पर सभा ने आगामि वर्ष का महान कार्य्य क्रम बनाया है। जो सर्व साधारण की सूचना के लिए नीचे दिया जाता है।

हैदराबाद राज्य में रचनात्मक कार्य्य

हैदराबाद आर्य्य सत्याग्रह के पश्चात् इस सभा के माननीय प्रधान जी ने उक्त राज्य मे रचनात्मक कार्य्य का भावी कार्य्य क्रम निम्न प्रकार प्रकाशित किया था:—

(१) हैदराबाद में जो आर्य्य सत्याग्रही वीर गति को प्राप्त हुए हैं उनका किसी उपयुक्त स्थान पर और किसी न किसी रूप में आर्य समाजो में अच्छा स्मारक बनाया जाय। इस धर्म वीरो के परिवारों को यथावश्यकता धन की सहायता दी जाय।

(२) हैदराबाद शहर में एक हाई स्कूल खोला जाय और यथा सभव अन्य स्थानों पर भी छोटे बड़े स्कूलों की स्थापना की जाय।

(३) हैदराबाद राज्य के अन्तर्गत ग्रामो तथा नगरों में वैदिक धर्म प्रचार को तेजी से बढ़ाने के लिए उच्चकोटि के कुछ उपदेशक चुनकर भजे जायें, तथा मराठी, कनाड़ी और तलगू भाषा भाषी हैदराबादी निवासी कुछ प्रचारक शीघ्र तैयार किये जाँय, और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये आवश्यकता पड़े तो शोलापुर में एक प्रचारक विद्यालय खोला जाय।

(४) हैदराबाद राज्य में अधिकतर आर्य्यसमाजो के पास अपने निजी मकान नहीं हैं। बहुधा किराये के मकानों पर कार्य हो रहा है। सभा चाहती है कि ग्रामो के विशेष केन्द्रों में सभा की ओर से ५००) तथा कस्बो में १०००) की लागत के आर्य्यसमाज मन्दिर बनाये जाँय। जो सज्जन एक मन्दिर का पूरा व्यय दान देंगे उनके नाम का पत्थर मन्दिरों पर लगाया जायगा।

(५) हैदराबाद की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए—

(१) वहाँ की भाषाओं में आर्य्य साहित्य तय्यार कराया जायगा।

(२) सभा के प्रकाशन विभाग को सुदृढ़ और उन्नत किया जायगा। सम्प्रति इस विभाग की ओर से —

(क) आर्य्य सत्याग्रह आन्दोलन का सर्वाङ्गपूर्ण वृहत् इतिहास तैयार किया जायगा।

(ख) आर्य सत्याग्रह के शहीदो, सर्वाधिकारियों तथा अन्य मुख्य सत्याग्रहियों की जीवनियाँ पुस्तक रूप में प्रकाशित की जाँयगी।

(ग) सत्याग्रह सम्बन्धी अन्य रोमाँचकारी घटनायें लेख बद्ध कराके छपवाई जाँयगी। यह कार्य श्री पं० गङ्गाप्रसादजी उपाध्याय एम० ए० तथा श्री ला० रामप्रसादजी बी० ए० के सुपुर्द किया गया है।

इस प्रोग्राम को सफल बनाने के लिए यह सभा आगामि वर्ष में प्रयत्नशील रहेगी। इस प्रोग्राम की सख्या ३ को सफल बनाने के लिए सारे दक्षिण भारत में प्रचार की एक विस्तृत योजना तय्यार की जा चुकी है। इस समय २२ उपदेशक इस प्रान्त में प्रचार कार्य्य कर रहे हैं। लगभग ५ उपदेशक शीघ्र बढ़ाए जायगे तथा २५ अक्टूबर मास में बढाए जायंगे। जिन में से ६ उपदेशक उत्तरभारत की ओर से भेजे गए हैं। जिन में यूनिवर्सिटियों के ग्रेजुएट-गुरुकुलो के स्नातक तथा दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के स्नातक हैं, जो बड़ी योग्यता से अपना कार्य्य कर रहें हैं। शेष १३ प्रचारक दक्षिण भारत के निवासी हैं और वहा की भिन्न २ भाषाओं अर्थात् मराठी, कनारी, तामिल, तेलुगू मलयालम आदि में प्रचार करते हैं।

गत थोड़े से मासों में प्रचार कार्य्य में सभा को आशातीत सफलता हुई है। हैदराबाद राज्य म ३६ नई आर्य्यसमाजें स्थापित हुई हैं। आंध्र प्रान्त में १ नई आर्य्य समाज तनाली में स्थापित हो गई है, जो इस समय इस सभा के प्रचार का केन्द्र है। तामिल नाड में २ नई आर्य्य समाजें वैलूर और कल्पाडी में स्थापित हो गई हैं। वैलूर समाज के इस समय १५० सभासद बन चुके हैं, और इस समाज ने आस पास के गावों को अपना प्रचार क्षेत्र बना लिया है। जहा पर आर्य्य समाज का जनता की ओर से बहुत स्वागत हो रहा है। ईसाइयों की शुद्धि का कार्य्य भी जारी हो गया है। कार्य्य की इस प्रगति को देखते हुए इस इलाके के लिए एक विशेष प्रचारक की सभा ने आज्ञा दे दी है। मैसूर राज्य में कोलार गोल्ड फील्ड में नई समाज स्थापित हुई है। ट्रावन्कोर राज्य में कोट्टयम स्थान पर समाज स्थापित हो गया है। इस प्रचार पर सभा ने इस वर्ष २७०००) का व्यय स्वीकार किया है।

साहित्य प्रचार

इस के अतिरिक्त दक्षिण प्रान्त की भाषाओं में साहित्य तय्यार कराया जा रहा है। कनड़ी भाषा में सस्कार विधि तथा आर्य्याभिविनय का अनुवाद हो गया है। तेलुगू मे 'आर्य्य समाज' क्या है ? नामक एक पुस्तक प्रकाशित हो गई है। ८-१० ट्रैक्ट भी प्रकाशित किए जा चुके हैं। अग्रेजी में श्री० पं० गगाप्रसाद

जी उपाध्याय ने The Mission and Scope of Arya Samaj पुस्तक लिखी है वह भी छप चुकी है।

सभा ने इस वर्ष साहित्य प्रचार कार्य पर ५०००) का बजट स्वीकार किया है। कनरी इत्यादि भाषाओं में साहित्य तय्यार किया जा रहा है। सभा का यत्न है कि अधिक से अधिक मात्रा में दक्षिण की आर्य्य जनता के हाथों में अपना उत्तम साहित्य रखा जाय। इस दिशा में पूरी तत्परता से कार्य्य हो रहा हैं।

उपदेशक विद्यालय

शोलापुर में श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय तथा श्री आचार्य धुरेन्द्र शास्त्री जी की देख रेख में विद्यालय चल रहा है। इस समय उसमें ४० के लगभग विद्यार्थी हैं जो हैदराबाद राज्य के निवासी हैं। आगामि दिसम्बर मास में विद्यालय बन्द कर दिया जायगा और उसमें जो प्रचारक तैयार होंगे उन्हें आवश्यकतानुसार हैदराबाद राज्य में प्रचार कार्य मे लगा दिया जायगा। विद्यार्थियों को भोजन, वस्त्र पुस्तकें इत्यादि सभा द्वारा दिये जाते हैं। इस सब व्यय तथा अध्यापकों के वेतन के लिए सभा ने ६०००) का व्यय स्वीकार किया है।

हैदराबाद आर्य हाई स्कूल

हैदराबाद आर्य हाई स्कूल के खोलने की तैयारी हो रही है। आगामी जुलाई से स्कूल खुल जायगा। सभा ने २५०००) सहायता का बजट बनाया है और यह रुपया आ० प्र० सभा निजाम राज्य को दे दिया गया है।

मन्दिर निर्माण

इस वर्ष सभा ने हैदराबाद राज्य में ५० आर्य मन्दिरों के निर्माण का निश्चय किया हुआ है। इन पर ५००००) रु० व्यय किया जायगा। इस राशि में से लगभग २५०००) रु० वायदों और नकद रूप में आ चुका है। हैदराबाद राज्य में कुल १५० आर्य समाजें बनाने का सभा का विचार है।

जन गणना

इस वर्ष सबसे महत्वपूर्ण कार्य १९४१ में होने वाली जन-गणना है। इस सम्बन्ध में सभा का प्रयत्न यह होगा:—

(१) गत १९३१ की जन गणना के अनुसार आर्यों की संख्या १० लाख थी। गत ५० वर्षों में जिस प्रगति से भारतवर्ष में आर्यों की संख्या बढ़ती रही है उसके

अनुसार १६४१ में हमारी संख्या २० लाख हो जानी चाहिये। परन्तु हैदराबाद के सत्याग्रह की सफलता से जो आर्यसमाज का यश व प्रताप बढ़ा है उससे लाभ उठाते हुए यदि हम लोग पूरे ज़ोर से कोशिश करें तो आर्यों की सख्या कम से कम ५० लाख होनी चाहिये। इस सम्बन्धमे सार्वदेशिक-सभा अभीसे इस प्रकार कार्य कर रही है कि वे सब उपाय प्रयोग में लाये जाएँ जिससे हमारे इस उद्देश्य की पूर्ति हो।

(२) सभा ने इस कार्य के लिये एक 'जन गणना विभाग' अक्टूबर ३६ में ही जारी कर दिया था। भारत सरकार से आगामि जन गणना के कार्यक्रम के सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार हो रहा है। सभा इस बात का पूरा ध्यान रखेगी कि सरकार की ओर से कोई ऐसा कानून या आज्ञा प्रचारित न हो जिससे हमारे उद्देश्य को हानि पहुँचे।

(३) आगामि जन गणना में आप लोग किस प्रकार से कोष्ठकों की पूर्ति कराएँ इस सम्बन्ध में सभा ने अपना निश्चय कर दिया है जो कि शीघ्र ही प्रकाशित किया जायगा। यमुना की दोनों ओर पजाब और यू० पी० के जो पाच ७ ज़िले हैं इनमें लगभग ५० लाख हिन्दू बसते हैं जिनमें से अधिकतर आर्य हैं। सभा इस प्रकार का यत्न कर रही है कि इस इलाके में आगामि वर्ष में इतने ज़ोर से प्रचार किया जाय कि सबके सब आर्यों तक कोष्ठको की पूर्ति सम्बन्धी सभा का आदेश पहुच जाय। इस कार्य के सुचारु रूप से करने के लिये एक सगठन भी तैयार किया जा रहा है। सम्प्रति ३ भजन मण्डलियाँ नियत की जा चुकी हैं। शीघ्र ही इनकी सख्या बढ़ाकर ८ या १० कर दी जायगी। इसके अतिरिक्त पजाब और यू० पी० की सभाओ के जो प्रचारक पहले से कार्य कर रहे है वे भी इस काम में जुट जायेंगे।

(४) हैदराबाद राज्य में भी इस कार्य के लिए विशेष प्रबन्ध किया जारहा है।

सभा के इस विभाग का उद्देश्य केवल मात्र आर्यों की सख्या बढ़ाना नहीं है वरन् सभा का यह भी उद्देश्य है कि हिन्दू मात्र को जन गणना के सम्बन्ध में सचेत किया जाय। उनके अन्दर से अज्ञान, आलस्य और उदासीनता को दूर करके उनके भीतर उत्साह पैदा किया जाय ताकि प्रत्येक हिन्दू जन गणना में अपना नाम लिखाना अपना कर्तव्य समझे। इस सम्बन्ध में सभा की योजना निम्न होगी —

(१) विधर्मियों के भ्रम पूर्ण प्रचार से हिन्दुओ को बचाया जायगा।

(२) इस बात का ध्यान रक्खा जायगा कि जन गणना के कोई गणक अपने

साम्प्रदायिक भावों के कारण हिन्दुओं की गणना के सम्बन्ध में कोई गड़बड़ न कर सके। इस बात की देख रेख के लिये उचित साधन वर्ते जायँगे।

(३) हरिजनो में किसी भी प्रकार के भ्रम पूर्ण प्रचार को रोकने का उपाय किया जायगा।

इस सम्बन्ध में आर्य जनता को किस समय किस प्रकार की कार्यवाहि करनी है इसकी सूचना सभा कार्यालय से विज्ञप्तियों द्वारा दी जायगी। इस काम के लिए सभा ने १५०००) का व्यय स्वीकार किया है।

आर्यवीर दल

ससार तथा स्वदेश में जो परिस्थितियाँ दिन पर दिन पैदा हो रही हैं उनके कारण प्रत्येक आर्य के हृदय में स्वरक्षा के सम्बन्ध में चिन्ता पैदा हो रही है इसका एक ही उपाय है कि आर्य (हिन्दू) मात्र के सेवा और सगठन के भाव को दृढ़ किया जाय और प्रत्येक नगर और ग्राम में आर्यवीर दल स्थापित किये जाय। उनका काम सेवा और रक्षा होगा। सभा इस सम्बन्ध में भी बड़े पैमाने पर कार्य करने का उपाय कर रही है। इस कार्य के लिए सभा ने १००००) का बजट स्वीकार किया है।

विदेश प्रचार

प्रान्तिक सभाएँ अपने २ प्रान्त में प्रचार का प्रबन्ध करती हैं। सार्वदेशिक सभा का उद्देश्य भारत के बाहर देशदेशान्तर में वैदिक धम का प्रचार करना भी है। विदेशों के २ भाग किये जा सकते हैं।

(१) ऐसे देश जहा पर भारतीय लोग प्रवासी रूप में जाकर बसे हैं।

(२) ऐसे देश जिनमें केवल विदेशी लोगों में प्रचार करना है,

जहाँ तक सख्या १ का सम्बन्ध है थोड़ा बहुत कार्य कई वर्षों से इस सभा की ओर से प्रवासी भारतीयों में हो रहा है परन्तु उसे किसी प्रकार से भी सन्तोष-जनक नहीं कहा जा सकता।

जावा, सुमात्रा, बाली, हिन्द चीनी, चीन, इराक अरब, अदन पूर्वीय अफ्रीका दक्षिण अमरीका ब्रिटिश गयाना, डच गायना, ट्रीनीडाड, मौरिशस इत्यादि अनेक देशों में प्रवासी भारतीय हजारो और लाखों की सख्या में 'ब्राह्मणादर्शनात्' के

अनुसार अपने धर्म, सस्कृति और भाषा इत्यादि को भूलते जाय और उनमे से कई विधर्मियो का शिकार बने यह कितने शोक की बात है। प्रभु को कृपा से इन प्रवासी भारतीयों में जहाँ २ जाग्रति के चिन्ह दिखाई देते है वे लोग सार्व० सभा से उपदेशक भेजने के लिये माग करते हैं परन्तु इस माग को पूरा करने के सम्बन्ध में सभा को २ कठिनाइयाँ हैं एक उपदेशक को विदेश मे भेजने में हजारो रुपया खर्च आता है। दूसरे योग्य और सच्ची लग्न वाले व्यक्ति नही मिलते जो एक २ प्रदेश में जाकर वहीं के बनकर रहजाँय और अपना सारा जीवन आर्यसस्कृति और धर्म के जगाने मे लगा दें।

सभा सहर्ष ऐसे सज्जनों का स्वागत करेगी औ उन्हें विदेश भेजने के उपाय करेगी जो अपने आपको विदेश जाने के लिए प्रस्तुत करेंगे—

जहाँ तक विशुद्ध विदेशियों में प्रचार का सम्बन्ध है उनमे तो अभी तक किसी भी देश में आर्य समाज का कोई मिशन कायम नही हो सका। इसके मुकाबले में अहमदियों के मिशन प्राय ससार के मुख्य २ देशो के अन्दर स्थापित है। इस सम्बन्ध में आर्य जनता को अपना कर्तव्य पूरा करने के लिये कितना परिश्रम और त्याग करने की जरूरत हैं यह स्पष्ट ही है। विदेश प्रचार के लिये सभा ने १००००) का व्यय स्वीकार किया है। यह सभा ऐसे नवयुवको का आव्हान करती है जो इस मिशन की पूर्ति के लिए अपने आपको अर्पण करने के लिए तैयार हों।

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली।

सम्पादकीय

आर्यसमाज का स्थापना दिवस

गत ता० १२-४-४० को सार्वदेशिक सभा द्वारा नियत प्रोग्राम के अनुसार आर्यसमाजों ने आर्यसमाज का स्थापना दिवस मनाया होगा। इस अवसर पर सभा ने ।) आने फंड की अपील करके समाजों को प्रेरणा की थी कि इस फंड का धन सभा के कोष में भेजा जाय। इन पंक्तियों को लिखते समय तक जो धन राशि सभा से कोष में पहुँची है उसे देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि सभा की अपील का उत्साहवर्द्धक उत्तर मिला है। आर्य जनता को विदित है कि सार्वदेशिक सभा की आय का कोई स्थिर साधन नहीं है जबकि प्रान्तिक सभाओं के कई स्थिर और सुनिश्चित साधन हैं। सभा की आय को स्थिर बनाने के निमित्त ही प्रांतिक सभाओं के परामर्श से सभा ने यह योजना निश्चित की थी। इस स्थिर आय के न होने के कारण स्थिर व्ययों में सभा को प्रतिवर्ष एक बड़ी राशि का घाटा रहता है और अधिकारियों को यह घाटा इस चिन्ता में डाले रहता है कि सभा का स्थिर व्यय किस रीति से पूरा होगा।

सभा के पास विविध फंडों का जो धन है उसको उन्हीं फंडों में व्यय करने की सभा की उत्तरदायिता है और बड़ी सावधानी से वह इस उत्तर-दायिता को पूरा करती है अतः अन्य फंडों की राशियों से जनता को सभा की आर्थिक स्थिति के सम्बन्ध में किसी प्रकार के भ्रम में न रहना चाहिए। इसके अतिरिक्त सभा का जिन प्रदेशों में प्रचार कार्य है वे समाज कार्य की दृष्टि से बिल्कुल ऊसर प्रदेश हैं। वहाँ तो धन व्यय करते ही रहना होता है। आय की कोई आशा ही नहीं की जा सकती। वहाँ आर्यसमाज के स्थिर हो जाने पर ही किसी आय की आशा कर सकते हैं। ऐसी अवस्था में आर्यसमाजों और आर्य जनता का कर्तव्य स्पष्ट है। सार्वदेशिक सभा की जिम्मेवारी अब दिन प्रति दिन बढ़ रही है। व्यय भी पर्याप्त मात्रा में बढ़ रहा है।

ऐसी अवस्था में आर्य जगत को अपने कर्तव्य पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने और सभा की स्थिर आय की सुनिश्चित् व्यवस्था करने की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ जाती है। सभा का अधिकारी वर्ग का धन संग्रह के लिए इधर-उधर समाजों इत्यादि मे फिरना-फिराना सभा के बढ़े और निरन्तर बढते हुए अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य की दृष्टि से लाभ प्रद न होगा। उन्हें धन संग्रह की चिन्ताओं से ऊपर रखना चाहिए जिससे उनकी शक्ति और समय का धन संग्रह से कहीं अधिक महत्वपूर्ण कार्यों मे उपयोग हो। सभा इस बात का यत्न कर रही है कि यह दिवस अधिक से अधिक रोचक ढग मे मनाया जाया करे। सभा का विचार प्रतिवर्ष ऐसे विवरणों को प्रकाशित करने का है जिनमें आर्य समाज की वर्ष भर की प्रगति अंकित हुआ करे। उसके विचार में अन्य भी कई योजनाएँ हैं। इस निधि में समाजों और संस्थाओ मे जो धन संग्रह हुआ है वह तो अविलम्ब सभा के कोष मे पहुँच जाना चाहिए और समाजो पर जो राशि लगाई गई है उसे सभा के स्मरण-पत्रों की प्रतीक्षा किये बिना शीघ्र पूरा करनी चाहिए ताकि हम उद्घोषित करने में समर्थ हो सकें कि सभा की अपील का वैसा हो उत्तर मिला है जैसा मिलना चाहिए था।

दीनबन्धु-एन्डरियूज

दीनबन्धु सी० एफ० एन्डरियूज अब इस संसार में नहीं हैं। उनकी मृत्यु से भारतवर्ष को प्रेम करने वाला एक श्रेष्ठ अंग्रेज तथा मानव-समाज का एक निस्स्वार्थ सेवक उठ गया।

मानव-जाति के प्रति दीन-बन्धु की सेवाए बहुत विस्तृत एव उज्जवल रही हैं। अपनी सेवाओं से उन्हे उन हस्तियों मे स्थान प्राप्त करन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जो संसार के हर्ष-समुदाय में योग देकर संसार से विदा होते हैं। उन्हों ने अपने को उस अवस्था में पहुँचा दिया था जिस में मनुष्य मरने का आनन्द लेते हैं इस दृष्टि से उनका अन्त सुखद और ससार के इतर जनो के लिए स्पर्धा योग्य था।

सी० एफ० ऐन्ड्रूज एक सुयोग्य विद्वान्, प्रौढ़ लेखक और कार्य्य कुशल व्यक्ति थे। यदि उनकी जीवन धारा राजनीति की दिशा में प्रवाहित हुई होती तो निश्चय ही वे अङ्गरेजी शासन की मैशनरी के एक बड़े कर्णधार होते। किसी किसी

का तो यह मत है कि वे इङ्गलैंड के प्रधान-मन्त्री के गौरवमय पद को सुशोभित करते, परन्तु उन्होंने अपना जीवन ध्येय इस से भिन्न निश्चित किया और वह ध्येय महात्मा ईसा के मिशन की एक मात्र सेवा था।

उन्हों ने आजन्म इस मिशन की मनसा वाचा और कर्मणा सेवा की। यों तो ईसाके मिशनके असँख्य सेवक देखे और सुने जाते हैं परन्तु उन जैसा निष्ठावान और सच्चा सेवक विरला ही देखने को मिलता है। उन्हों ने अपने मिशन को बहुत गौरव प्रदान किया है। आजन्म कौमार व्रत धारण करके, सांसारिक प्रलोभनों और शारीरिक सुखों से ऊपर रहकर उन्हों ने मिशनरियों (प्रचारकों) की श्रेष्ठ मर्यादा का पालन और सेवा का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

अगरेजी शासन पद्धति से उत्पीड़ित जन-समाज का उन्हों ने सदैव पक्ष लिया और उसकी सेवा की। हो सकता है इसके कारण अङ्गरेज शासक उनसे अप्रसन्न रहे हों। परन्तु ऐसा करके उन्हों ने अङ्गरेजी राष्ट्र और अङ्गरेज जाति की वह सेवा की जिसका अनुमान लगाना इस समय कठिन ही है। आज भले ही वे अङ्गरेजी राष्ट्र के द्रोही समझें और अङ्कित किये जाय, परन्तु कोई समय आयेगा जब निष्पक्ष इतिहासकार उन्हें इस स्थान से उठाकर बहुत ऊंचे स्थान पर ले जायगा। उनके राष्ट्र के द्वारा उत्पन्न हुए कष्टों और अभिशापों का उनके जीवन से निराकरण ही हुआ है और इस रूप में वे अगरेजी राष्ट्र के एक श्रेष्ठ अंग के रूप में जनता के समक्ष उपस्थित होते है। हम भारत वासी तो उनके साहस की प्रशसा करते और भारत के प्रति उनकी सेवाओं के लिए अमित आभार मानते हैं।

दीन बन्धु आर्य्य समाज के प्रेमी और प्रशसक थे। मानव समाज के उत्थान की आर्य्य समाज से उन्हें बहुत बड़ी आशाए थीं। प्रवासी भारतियों की दशा के सुधार में तो आर्य्य समाज के सहयोग को बड़ा मूल्यवान समझते थे। उन की सेवाओं का एक बहुत बड़ा क्षेत्र प्रवासी भारतीय थे। उनकी सेवाओं में आर्य्य समाज के सहयोग से समय समय पर उन्हों ने पर्य्याप्त लाभ उठाया था। इस बात को प्राय वे स्वीकार करते रहते थे।

अब दीनबन्धु संसार में नहीं हैं परन्तु उनकी पुण्य स्मृति संसार में रहेगी और जब मानव समाज अपने हितैषियों और सेवकों को स्मरण किया करेगा तो दीनबन्धु का नाम सदैव उज्जवल रूप में उसके समक्ष प्रस्तुत हुआ करेगा और वह कृतज्ञता पूर्ण हृदयों से उन्हें स्मरण करेगा। हम इन पंक्तियों के द्वारा उस महान् आत्मा के प्रति अपनी विनीत श्रद्धाजलि अर्पण करते हुए परम पिता से उसकी सद्गति के लिए प्रार्थना करते हैं।

एकीकरण की आवश्यकता

इन दिनों आर्यसमाज की शिक्षा सम्बन्धी प्रगतियोंका एकीकरण बड़ी प्रबलता के साथ अनुभव किया जा रहा है। इस कार्य का हो जाना वस्तुत हमारी एक बहुत बड़ी सफलता सिद्ध होगी। आर्य्य समाज का शिक्षा का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। अनेक अंग्रेजी स्कूल, कालेज, कन्या पाठशालाएँ, गुरुकुल तथा अन्यान्य शिक्षा संस्थाएं आर्य्य समाज द्वारा संचलित हो रही हैं परन्तु सब अपने २ मार्ग पर चल रही हैं। उनकी पाठ विधियाँ भिन्न भिन्न हैं। उनकी परीक्षाएँ, उनकी पदवियाँ सब भिन्न २ हैं। फलत एक सूत्र में सचालित होने के जो लाभ हैं उनसे वह वचित हैं। पिछले दिनों एक 'आर्य्य विश्व विद्यालय' की स्थापना की चर्चा छिड़ी थी। अब समय है कि शीघ्र से शीघ्र उस योजना को मूर्त रूप दे दिया जाय, जिससे हमारी शिक्षा संस्थाएँ एक नियत्रण के अधीन चलें और हमारे पुरुषार्थ और व्यय का अधिक से अधिक समन्वय और उपयोग हो और उत्तम परिणाम सामने आएँ।

गुरुकुलों में तो एकीकरण का होना एकदम वाँछनीय है। ये गुरुकुल प्राय: सार्वजनिक सहायता पर आश्रित हैं। इस समय आर्य्य जगत में दो गुरुकुल प्रसिद्ध और पुराने हैं। एक गुरुकुल वृन्दावन और दूसरा गुरुकुल कांगड़ी। इन गुरुकुलों में एकीकरण के न होने के कारण हमारे धन और शक्ति का वैसा उपयोग नहीं होता जैसा होना चाहिए। यदि इस बात की थोड़ी देर के लिए उपेक्षा कर भी दी जाय तो, हम वैसा शिक्षण नहीं दे पाते जैसा हमें देना चाहिए वा हम एकीकरण के होने पर दे सकते हैं। गुरुकुलों के विद्यालय विभाग स्वतन्त्र रूप से जिस प्रकार अब चल रहे हैं चलते रहे इसमें कोई विशेष आपत्ति नहीं देख पड़ती परन्तु कालेज विभाग एक होना चाहिए और दोनों गुरुकुलों में विशेष २ विषयों की व्यवस्था सम्मिलित रूप से होनी चाहिए। उदाहरण के लिए आयुर्वेद का प्रबन्ध दोनों गुरुकुलों को प्रथक् २ न करके एक को करना चाहिए। इसी प्रकार अन्य विषयों की परस्पर में योजना कर लेनी चाहिए। इससे आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी दोनों ही प्रकार के अमित लाभ होंगे, इस प्रकार की व्यवस्थाओं में प्रेस्टिज (अधिकार) इत्यादि का कोई भाव वा भावना बाधक नहीं बनने देनी चाहिए। इस बात को विशुद्ध सामाजिक लाभ की दृष्टि से ही देखना चाहिए। आशा है आर्य्य समाज के विद्वान नेता, शिक्षा शास्त्री और शिक्षा संस्थाओं के सचालक इन पंक्तियों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे।

अखिल भारतीय ओरियन्टल कान्फ्रेंस

गत २१ मार्च को त्रिपुटी मद्रास की ओरियन्टल इस्टीट्यूट (मस्था) मे अखिल भारतीय ओरियन्टल कान्फ्रेंस का १० वा अधिवेशन हुआ था। पडित मदन मोहन मालवीय ने अपने सभापति के भाषण मे जो उनकी अनुपस्थिति मे पढा गया था निम्न महत्वपूर्ण बात कही:—

"हमें अपनी सफलताओं पर सन्तोष करके नहीं बैठ जाना चाहिए चाहे वे कितनी ही गौरव पूर्ण क्यों न हो। भारतवर्ष को न केवल पौरस्त्य विद्याओं का केन्द्र बनना वा रहना चाहिए वरन् बाहरके विद्वानोका यहाँ वैसा ही ताता लगा रहना चाहिए जैसा नालंदा के दिनो मे था। इस देश में अन्तराष्ट्रीय प्रसिद्ध के अनुसधान के केन्द्रो के निर्माण में कुछ कठिनाईयाँ हैं। हस्त लेखो और ताम्र-पत्रों के रूप में हमारो अनुसधान की बहुत सी सामग्री आक्सफोर्ड और लदन जैसे केन्द्रों में पड़ी हुई है। इन बहुमूल्य ऐतिहासिक वस्तुओं की सुरक्षा के लिए हम अग्रेजों के कृतज्ञ हैं, परन्तु अब वे उस देश में रक्खे जाने चाहिए जिस देश के वे हैं तथा जहाँ उनका अधिक से अधिक उपयोग हो सकता है।

" इस कान्फ्रेंस का उद्देश्य और पौरस्त्य दर्शन तथा सस्कृत का अध्ययन और पुनर्निर्माण मात्र नहीं होना चाहिए वरन् अपने सदेश को भारत मे तथा उससे बाहर प्रचारित करना भी होना चाहिए। आज हम उस समय एकत्रित हो रहे हैं जब कि ससार एक महान् विपत्ति में ग्रस्त है और मुझे भय है कि जब तक मनुष्य समाज हमारे प्राचीन धर्म और दर्शन के मूल तत्वो का आदर नहीं करेगा तब तक यह विपत्ति बार २ आयगी।"

एक दिन में सहस्रों बाल विवाह

ग्वालियर राज्यान्तर्गत उज्जैन और मन्दसोर जिले में कडवा और कुलमी नामक दो जातियां बहु-सख्या में आबाद हैं। इन जातियों में यह एक पुरानी रूढ़ि है कि १० वर्ष में केवल एक ही बार विवाह होते हैं। जिन में छोटे छोटे बच्चे यहाँ तक कि १-२ मास के बच्चों का भी विवाह कर दिया जाता है। इन शादियों का मुहूर्त इस वर्ष १० मइ १९४० को पड़ेगा जिसमें इन जातियों में सहस्रों बाल-विवाह होने वाले हैं। ग्वालियर राज्य में बाल-विवाह प्रतिबधक कानून बना हुआ है। मालवा प्रान्तीय कुलमी सुधारक मडल ने ग्वालियर दरबार की सेवा में एक अपील भेजी है जिस मे उपर्युक्त कानून के द्वारा इन विवाहों को रोकने की प्रार्थना

की गई है। मडल अन्य प्रसिद्ध सुधारक संस्थाओं से भी अपील कर रहा है कि वे भी ग्वालियर दरबार को ऐसी ही प्रेरणा करें और इन विवाहों के रोकने में मडल को अपनी नैतिक तथा प्रचार इत्यादि की सहायता दे। हम इस अपील का हृदय से समर्थन करते हैं और ग्वालियर दरबार से बलपूर्वक प्रार्थना करते हैं कि अपने विधान के द्वारा इन विवाहों के रोकने की व्यवस्था करें। इस प्रकार की कुप्रथा किसी भी समाज पर एक बड़ा अभिशाप है। किसी उन्नत राज्य में विशेषतः इस प्रकाश के युगमें इस प्रकार की कुप्रथाओं की विद्यमानता तो उस राज्य के लिए और भी भयकर अभिशाप है। इस कार्य्य में ग्वालियर के महाराज को स्वय ध्यान देकर अपने एक बड़े कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। ग्वालियर का जो बाल-विवाह निषेधक विधान है उसमे वादी को ५००) की जमानत जमा करनी होती है। मण्डल या अन्य सुधारक व्यक्ति या सोसाइटी के लिए प्रत्येक केस के लिए ५००) जमा कराना बड़ा कठिन कार्य्य है। फिर जहाँ हजारो केस हो वहाँ तो इस शर्त की पूर्ति असभव प्राय है। इसलिए उन्हे कानून-विशेष से लाभ नहीं हो सकता। इस कानून का उपयोग तो तभी सभव हो सकता है जब राज्य के कर्मचारी कानून में दिए हुए अधिकारो को हृदय से और प्रजा हित की दृष्टि से काम में लाए। मण्डल को यह भी विदित हुआ है कि राज्य के कतिपय कर्मचारी और जमींदार लोग इन विवाहों के अनुष्ठान में दिलचस्पी ले रहे हैं। उधर विदित हुआ है लग्न पत्रिका के प्रकाशक जो उज्जैन से प्रकाशित हुई है लोगों को प्रोत्साहन दे रहे हैं और उनपर कोई कानूनी कार्य्यवाही नहीं की जा रही है। ऐसी अवस्था में सुधारकों के लिये कानून किसी मूल्य का नहीं रह जाता है। होल्कर राज्य में भी ये जातिया और उनमें यह कुप्रथा व्याप्त है परन्तु होल्कर दरबार ने इन विवाहों को रोककर इस कुप्रथा का लगभग अन्त कर दिया है। ग्वालियर दरबार को अपने पड़ोसी होल्कर राज्य का इस दिशा में अनुकरण करके प्रजा का हित सपादन करना चाहिए। मण्डल से भी हम निवेदन करेंगे कि उसने इस कार्य्य में बहुत देर में यत्न प्रारभ किया है। ऐसे आवश्यक कार्य्य में उसे महीनो पूर्व उद्योग आरम्भ करना चाहिए था। ऐसा करने से उसके सद् यत्नों को देश की सुधार वादी जनता से बहुत बल और सहयोग मिलता। फिर भी उसे अपनी शक्ति भर पूरा पूरा यत्न करना चाहिए। देश के सुधारक वर्ग से इस थोड़े समय में उसे जो सहयोग मिलना सभव है वह उसे मिलेगा, ऐसी हमें पूर्ण आशा है।

बुद्धिमत्ता का दिवाला

हमारे सामने आर्य्यावर्ती अग्रगणी आर्य्य समाज बम्बई का एक हैंड बिल है। उसमें आर्य्य राज्य के रूप में ब्रिटिश सरकार से पूर्ण स्वराज्य की माँग के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव अङ्कित किया गया है। उसमें एक बड़ी मनोरजक घटना का उल्लेख निम्न प्रकार है:—

" दया और न्याय के हेतु को ध्यान में रखकर गत ३-३-४० को बम्बई

गर्वनर (महोदय के बंगले पर हवन करने जा रहे थे जिससे वातावरण शुद्ध हो और बुद्धि में समानता पैदा हो परन्तु अर्थ उल्टा हुआ और ज्यो ही आर्य्यवर्ती अग्रगणी आर्य्य समाज के ४ प्रथम सूर्य्य पण्डित ब्रह्मानन्द मुख्याधिष्ठाता, राम कृष्ण जी मुरारी मूले प्रधान रणछोर भाई धन जी भाई मन्त्री तथा वृन्दा प्रसाद जी सभासद। इन सबने पहला क़दम आर्य्य राज्य की प्राप्ति के लिए बढ़ाया और बम्बई गवर्नर के बङ्गले को ओर जा रहे थे कि चौपाटी से पचास कदम आगे चलकर पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिए गए और ३ दिन हिरासत मे रख कर गिर गाँव कोर्ट से श्री बावरे कर मजिस्ट्रेट द्वारा ८ दिन की सजा हो गई जिस को सब ता० १३-३-४० को समाप्त करके आ गए।"

आर्य्य स्वराज्य की स्थापना की दिशा मे इस पहले क़दम की बुद्धिमत्ता हमारी समझ मे नहीं आई। इसी प्रकार की कार्य्यवाहियो से हम गम्भीर और समझदार जनता के समक्ष हास्यास्पद होते हैं। आर्य्य समाज के गौरव की रक्षा के लिए यह नितात आवश्यक है कि आर्य्य समाज के नाम पर होने वाली इस प्रकार की बेहूदा कार्य्यवाहियों का कड़ा नोटिस लिया जाय और उन्हे हर प्रकार से रोका जाय। आर्य्य समाज की कार्य्य प्रणाली प्रचार और प्रेरणा द्वारा अपने सिद्धान्तो और शिक्षाओ का प्रचार करना है न कि अनियमित रूप से लोगो के घरो और बङ्गलो मे घुसकर हवन यज्ञ करते फिरना।

इस्लाम की वास्तविक शिक्षा

जम्मू और काशमीर की नैशनल कान्फ्रेन्स के प्रधान श्रीयुत ऐस० ऐम० अब्दुल्ला ने अपने भाषण मे कुरान और मुहम्मद साहब की शिक्षाओ पर निम्न प्रकार प्रकाश डाला —

"जाति और धर्म्म के भेदभाव के बिना सम्पूर्ण मानव जाति को कुरान हमे शिक्षा देता है। कुरान की यह शिक्षा मुझे अपने पडौसी को प्रेम करने के लिए बाधित करती है और प्रत्येक सच्चे मुसलमान को ऐसा करने का आदेश देती है। इस्लाम हमे साम्प्रदायिक वैर विरोध और घृणा की शिक्षा नहीं देता है और यदि कोई मुसलमान अन्य जाति वालो से अणुमात्र भी घृणा करता है तो वह सच्चा मुसलमान होने का दावा नहीं कर सकता। साम्प्रदायिक नेता मेरे सम्बन्ध मे कुछ भी कहे इसकी मुझे चिन्ता नहीं है। मै तो मुसलमानो को ठीक बातों की शिक्षा दूँगा। और हमारे माननीय पैग़म्बर और कुरान ने जिस मार्ग का निर्देश किया है उसीका अनुसरण करूँगा। मुसलमान उसे कहते है जो मनुष्य समाज का सेवक हो। इन्ही कारणो से जम्मू और काशमीर की नैशनल (राष्ट्रीय) काग्रेस की सम्मिलित वेदी से देशवासियों की सेवा के लिए मुझे प्रेरणा मिली है। मैं कोई नई बात नहीं बतला रहा हू। मैं यह चाहता हू कि कुरान मे जो शिक्षाएँ अकित हैं मुसलमान लोग उनका पालन करें। उन्हे साम्प्रदायिक विद्वेष से घृणा और अन्य जातियों के साथ प्रेम करना चाहिए।"

इस कान्फ्रेन्स के अवसर पर कांफ्रेंस के मन्त्री मौलवी मुहम्मद सईद ने भी इसी प्रकार के भाव प्रकट किये थे। पाकिस्तान योजना का निम्न प्रकार खण्डन किया:—

"पैगम्बर साहब ने परमात्मा के सेवको अर्थात् मुसल्मानो की एक सेना बना कर उन दुष्ट शक्तियो का अन्त कर दिया था जिन्होने मनुष्य समाज मे वैर विरोध उत्पन्न किया था। उन्होन पवित्र जीवन बिताने और लोक सेवा करने की मनुष्यो को शिक्षा देने के उद्देश्य से इस सेना का निर्माण किया था। इस दृष्टि से पाकिस्तान की योजना की जाच पडताल करे तो यह योजना तो इस्लाम के विरुद्ध युद्ध है। उदाहरण के लिये मुसल्मानो को पजाब, मद्रास, बम्बई तथा देश के अन्य स्थानो मे तबलीग का अधिकार प्राप्त है। ससार मे इस्लाम का सदेश प्रचारित करना हमारे धर्म की शिक्षा है। यदि मुसल्मान भारत वर्ष का बटवारा स्वीकार कर लेगे तो वे इस अधिकार से वचित हो जायेंगे।"

आर्य्य महिला संस्थाओं का प्रबन्ध

आर्य्य स्त्री समाज प्रयाग ने अपनी एक विशेष सभा मे आर्य्य समाज की महिला शिक्षा सस्थाओ के प्रबन्ध के सम्बन्ध मे कई महत्व पूर्ण निश्चय करके आर्य्य जगत से उनको व्यवहार मे लाने की प्रेरणा की है। उनमे से कुछ निश्चय इस प्रकार है —

१—शिक्षा तथा स्त्रियो से सम्बन्धित अन्य सस्थाओ का कार्य सचालन महिलाओ ही की सरक्षता मे हो अथवा उनके प्रबन्धक (मैनेजर) मुख्य अध्यापिकायें आदि महिलाये ही हो जो अनिवार्य रूप से आर्य तथा वैदिक सिद्धान्तो पर दृढ हो।

२ -आर्य भाषा के साथ साथ सस्कृत भाषा की शिक्षा अनिवार्य होनी चाहिये।

३—धार्मिक शिक्षा की पाठ विधि निश्चित की जावे जो समस्त कन्या पाठशालाओ के लिये एक ही सी हो और जिसका निश्चित समय मे समाप्त करना (पढ़ना पढाना) अनिवार्य हो।

४—आर्य सभ्यता के अनुसार स्वास्थ्य तथा आत्मा के लिये व्यायाम आदि के शिक्षण का समुचित प्रबन्ध होना चाहिये।

५—पाठशालीय वेश भूषा एक सी और सादा होना चाहिये।

यह सभा यह निश्चय करती है कि इस उपरोक्त निश्चय की एक प्रति विद्योपसभा, आर्य प्रतिनिधि सभा युक्त प्रान्त की सेवा मे भेजी जाय, और उनसे प्रार्थना की जाय कि वह उपरोक्त विषयो पर गम्भीर विचार करे, तथा सम्बन्धित समस्त संस्थाओ को उसे क्रियात्मक रूप देने में उत्साहित कर महिला जगत पर उपकार कर यश के भागी बने।

"मनुष्य मात्र से प्रार्थना"

[लेखक—श्री ला० बोलाराम जी रिटायर्ड स्टोरकीपर, N. W R, आनरेरी मन्त्री, पञ्जाब केन्द्रीय अनाथालय, रावीरोड, लाहौर]

"देह धरे का नाम है दे सके तो देह,
फिर पीछे पछताएगा जब देह हो जावेगी खेह।"

आपको मालूम है कि रावीरोड पर एक अनाथालय बनाम पञ्जाब केन्द्रीय अनाथालय लाहौर में खुला हुआ है, जो पञ्जाब भर मे अपनी श्रेणी की एक ही संस्था है जहां सारे देश से बालक-बालिकाएं आकर दाखिल होते हैं। इसमें न सिर्फ उनका पालन-पोषण किया जाता है, बल्कि उनको आश्रय देकर विद्या अध्ययन कराया जाता है और इनको अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए कोई न कोई कार्य सिखाया जाता है। इस अनाथालय के आधीन एक इण्डस्ट्रीयल मिडिल स्कूल है, जिसमें विद्या पढ़ाने के अतिरिक्त कटिंग और दर्जी का कार्य भले प्रकार सिखाया जाता है। यह स्कूल सरकार की ओर से स्वीकृत है, इसमें बाहर के बालक भी लिए जाते हैं।

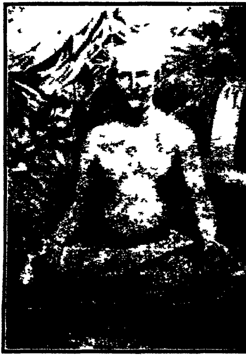
इस अनाथालय में न सिर्फ पब्लिक के बालक आते हैं, बल्कि पुलिस डिपार्टमेण्ट से भी ऐसे बच्चों को जो कभी भगाये जाते रहे हैं, उनको गुण्डों से बरामद करके यहाँ दाख़िल कराया जाता है और जा अनाथ बच्चे उसको शहर, हस्पताल या जेल से मिलते रहते है, उनको भी यहाँ लाकर दाखिल कराया जाता है गर्ज़ कि इस अनाथालय मं हर प्रकार के लड़के और लड़कियाँ जिनकी आयु १६ वर्ष से नीचे हो दाखिल किये जाते हैं। आजकल हालत ऐसी है कि जिन नवजात बच्चों की माताओं का स्वर्गवास होजाता है और जिनके पालने का प्रबन्ध उनके सरपरस्तों से नहीं हो सकता वे उनको यहाँ लाकर दाखिल कर देते है। ऐसे बच्चों की देख भाल के लिए एक दानी रायसाहिब ने जो अपना नाम देना नहीं चाहते, एक ट्रेण्ड नर्स अपने व्यय पर रखी हुई है। आजकल हमारे पास एक सौ के लगभग लड़के और ३० के लगभग लड़कियाँ हैं। उनके व्यय के लिये आप सोच सकते हैं कि कितनी वस्तुओं की आवश्यकता होती होगी। यह सब आप जैसे दानवीरों से इकट्ठा होकर आता है और उससे इनका खर्च चलाया जाता है। अब गर्मी का मौसम है अत इन सबके लिए गर्मी के वस्त्रो की आवश्यकता है। इसलिए आप से प्रार्थना है कि जहाँ आप अपने बच्चों के लिए कपड़े सिलवायें वहाँ इन यतीम बच्चो का भी ध्यान रखे और इनके खाने पीने के लिए आटा, दाल, चावल, घी, सब्जी इत्यादि जो भाई जिस प्रकार हमारी सहायता करना चाहें धन्यवाद सहित स्वीकार की जायगी। आशा है कि आप इस अपील पर ध्यान दें गे और जैसे पहले हमारी सहायता करते रहे है वैसे ही अब हमारी सहायता करके पुण्य के भागी बनेंगे।

पं॰ रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिए लाला सेवाराम चावला द्वारा
"चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली में मुद्रित।

जून १९४०
Reg N o L 2121

ऋग्वेद | यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक— प्रो० सुधाकर, एम० ए०
स० सम्पादक— श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक मू० स्वदेश २), एक प्रति का ।=) विदेश से २ शि० वार्षिक

अथर्ववेद | सामवेद

लेख-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १५ | जेठ १९९७ जून १९४० ई०] [दयानन्दाब्द ११६ | अङ्क ३

* वेद की शिक्षाएं *

विश्वे देवा अभिरक्षन्तु मेह । अथ० ५।३।१४

सब विद्वान् मेरी रक्षा करें ।

May the wise and the learned give me their protection in this world!

* * *

प्रियासः सन्तु सूरयः । यजु० ३३।१४

विद्वान् हमें प्यारे हों ।

May we ever love the learned and the wise.

* * *

ईश्वर विचार

[ले०—स्व० स्वामी दर्शनानन्द जी]

—*:*:*—

(२)

ईश्वर का लक्षण सच्चिदानन्द है और इस शब्द मे तीन पद अर्थात् (१) सत् (२) चित् (३) आनन्द हैं। तीन काल मे रहने वाले को सत् कहते हैं और ज्ञान वाले को चित् और तीनो काल मे दु:ख के अत्यन्ताभाव को आनन्द कहते हैं। अब वह साकार होगा वा निराकार ? तात्पर्य यह है कि सत् मूर्तिमान् है या अमूर्तिमान् ? यदि कहा जाय कि मूर्तिमान् है तो कहा जायगा कि वह मूर्ति सयोग निरवयव से बनी है या तत्व स्वरूप है अर्थात् सावयव है या निरवयव ? यदि कहा जाय सावयव अर्थात् अनेक वस्तुओ से मिलकर बनी है तो यह प्रश्न होगा कि भौतिक है या अभौतिक ? यदि इसका यह उत्तर हो कि भौतिक है तो अवश्यमेव वह सत् भूतों का कार्य होगा। जब कार्य हुआ तो किसी काल मे कारण से उत्पन्न हुआ होगा और अपनी उत्पत्ति से पूर्व काल मे नही होगा। इससे प्रत्यक्ष सिद्ध है कि जो उत्पन्न हुआ वह नष्ट भी अवश्य होगा और नाशान्तर नही रहेगा। तात्पर्य यह कि भौतिक मूर्ति होने से आदि और अन्त न रहा केवल मध्य अवस्था मे हुआ परन्तु सत् तीनो काल मे रहने वाले को कहते हैं। अतएव जो वस्तु एक काल मे रहे वह सत् नही हो सकती। यदि कहा जाय कि अभौतिक मूर्ति है तो नही हो सकती क्योंकि अभौतिक मूर्ति मे दृष्टान्त का अभाव है और प्रत्यक्ष का विरोध होने से इस में अनुमान भी नही हो सकता क्योकि अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वक होता है और शब्द प्रमाण भी नही हो सकता, न है—यदि कहे कि निरवयव मूर्ति है तो सत् परमाणु धर्म वाला होगा और परमाणु एक देशी हैं अतएव सत् भी एक देशी होगा। यह भी असम्भव है, क्योकि कोई सान्त पदार्थ अनन्त नही हो सकता। अतएव सत् से सारे जगत् के नियम नही चल सकते। परन्तु परमात्मा सारे जगत् का नियन्ता है। इसलिये सत् को अमूर्ति मानना पड़ेगा। अब रहा चित्, यह कभी मूर्ति वाला हो ही नही सकता क्योंकि मूर्तिमान पदार्थ भौतिक है और भौतिक जड़ पदार्थ है अर्थात् ज्ञान शून्य, चित् जो ज्ञान का अधिकरण है, वह किस प्रकार जड़ हो सकता है ?

द्वितीय भौतिक पदार्थ अनित्य हैं, यदि चित् अनित्य है तो सत् के साथ तीन काल मे किस प्रकार रह सकता है ? अतएव चित् भी मूर्ति वाला नहीं हो सकता। अब रहा आनन्द वह भी सत् के साथ में तीन काल तक रहता है। अतएव उसको भी मूर्तिवाला नहीं कह सकते।

उपर्युक्त लेख से सिद्ध होगया कि सच्चिदानन्द साकार नहीं प्रत्युत निराकार है और ईश्वर सर्वशक्तिमान है। साकार वस्तु सीमाबद्ध होगी और जो सीमा बद्ध होगी उसके गुण तथा शक्ति भी वैसी होगी और जिसकी शक्ति सीमा बद्ध होगी वह सर्व शक्तिमान नहीं हो सकता। इसका प्रयोजन यह नहीं कि प्रत्येक निराकार सर्व शक्तिमान है किन्तु सर्व शक्तिमान अवश्य निराकार है। बहुत से महाशय कहेंगे कि जिसका रूप नहीं वह वस्तु ही नहीं, परन्तु स्मरण रहे कि वायु रूप रहित है, क्या वह वस्तु नहीं ? मन, बुद्धि, सुख, दुःख गर्मी, सर्दी, काल, दिशा आकाश ये सारी वस्तुएँ आकार से रहित हैं, क्या ये नहीं हैं।

ईश्वर अजन्मा और जगत् का कर्त्ता है। परन्तु साकार पदार्थ स्वयं परमाणु संयोग से बना हुआ है, यह किस प्रकार जगत् का आदि कारण हो सकता है। ईश्वर अमृत है परन्तु साकार पदार्थ सावयव होने से नाश वाला होता है अतएव वह अमृत नहीं हो सकता। ईश्वर सर्व व्यापक है और अनन्त है। अनन्त दो प्रकार का होता है। एक देश योग से, दूसरा काल योग से, परन्तु साकार पदार्थ सावयव और जन्य होने से काल योग से तो सान्त ही है और सीमा वाला होने से देश योग से भी सान्त होगा। इस कारण कोई साकार पदार्थ अनन्त नहीं हो सकता और ईश्वर अनन्त है, इस कारण वह साकार नहीं।

ईश्वर निर्विकार है परन्तु साकार पदार्थ सावयव होने से ६ प्रकार के विकारों अर्थात् जन्म, वृद्धि, स्थिति, परिणाम, घटने और नाश होने से बच नहीं सकता। अतएव ईश्वर निराकार है। ईश्वर सर्वाधार है। साकार पदार्थ एक देशी होने से सर्वाधार नहीं हो सकता और दूसरे उसको स्वयं आधार की आवश्यकता होगी। साकार मानने वालों ने स्वयं स्वीकार किया है। किसी का मन्तव्य है कि ईश्वर सिंहासन पर विराजमान है और उसी सिंहासन का आधार देवता है, किसी का मन्तव्य है कि क्षीर सागर मे परमात्मा शेष की सय्या पर शयन करते है, किसी ने उसका स्थान बैकुंठ माना है, परिणाम यह है कि साकार मानने वाले स्वयं उसको आधार की आवश्यकता मान रहे है।

जब मनुष्यो में यह अज्ञान आगया कि परमेश्वर साकार है तो उसी समय उसको एक देशी समझ कर उसके प्रबन्ध के वास्ते सहायक ढूँढने आरम्भ किये। किसी ने कहा कि फरिश्तो के द्वारा उसके कार्य होते है और दुनिया मे पैगम्बर का होना तस्लीम कर बैठे। इतना विचार न हुआ कि पैगम्बर के अर्थ पैगाम लाने वाले के हैं और पैगाम कुछ दूरी से आया करता है। क्या कोई बतला सकता है कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच मे कितना अन्तर है जिसके कारण पैगम्बरो की आवश्यता हुई ? नहीं ! किन्तु पैगम्बरो पर वही फरिश्तो द्वारा प्रकट होना स्वीकार करना पड़ा अर्थात् परमेश्वर को बिल्कुल असमर्थ सा बना दिया। दूसरी तरफ किसी ने साकार मानकर बेटा बना लिया और उसको खुदा के दक्षिण हाथ की ओर जा बिठलाया और यह न सोचा कि दाया, बाया सीमाबद्ध पदार्थ का होता है। अतएव परमेश्वर भी नाशवान हो जायगा और प्राय लोगो न उसका सिहासन उसके गण, उसकी स्त्री आदि बातें कल्पना कर ली। उन्होने वास्तव मे ईश्वर को गृहस्थी का मनुष्य बना दिया है। और इस प्रकार की चिन्ताओ मे ग्रस्त कर दिया है कि उसको वास्तविक ईश्वर की पदवी से गिरा दिया, जब यह दशा हुई तो सारे ससार मे पाप का विस्तार होगया। मनुष्य लोग ईश्वर के अधिकांश राजा और कुटम्बियो का भय खाने लगे। उन्होंने समझ लिया कि ईश्वर किसी स्थान पर होगा।

इस समय जो पाप ससार मे विस्तृत हुआ दृष्टिगत हो रहा है यह सब ईश्वर के साकार मानने से फैल गया है यदि ईश्वर को निराकार माना जाता तो ससार मे पाप फैल ही नही सकता था। क्योकि यह तो हम दृष्टिगत करते हैं कि जीव फल प्रदाता शक्ति से नित्य भयातुर होता है जैस यदि कही पुलिस विद्यमान हो वहाँ कोई चोर चोरी नही कर सकता। जब पुलिसको स्वप्रम अथवा दर दृष्टिगत करता है तब पाप करता है। कोई मनुष्य अपने माता पिताके सम्मुख व्यभिचार नहीं करता। इससे ज्ञात होता है कि यदि मनुष्य को इस बातका निश्चय हो कि परमात्मा प्रत्येक स्थानमे विद्यमान है और ससार का अधेरे से अंधेरा कोण अथवा पर्वतकी अधेरी से अंधेरी गुफा परमात्मा से शून्य नहीं है तो इस दशा मे वह किसी प्रकार और किसी स्थान मे भी छिपकर पापकर्म नहीं कर सकता। परन्तु साकार मानने स तो ईश्वर एक देशी होगा और उसको सब स्थानमे विद्यमान किसी प्रकार भी नही मान सकते और ससीम वस्तु से बचकर निकलने के लिए मनुष्य की आत्मा कोई न कोई मार्ग निकाल ही लेती है जैसे ससीम राजा की ससीम शक्ति से बचने के लिए देश से भागकर, अन्य देश

में चला जाना प्रथम उपाय है। पुलिस को घूस देकर बच जाने का प्रयत्न करना द्वितीय उपाय है। असत्यवादियों से मिथ्या साक्ष्य दिलाकर और अन्य मनुष्यों के असत्य वचन से लाभ उठाने का यत्न करना तीसरी युक्ति है और वकीलों के द्वारा न्यायकारियों को भ्रम में डालने का यत्न करना चतुर्थ मार्ग है इसी प्रकार अन्य भी अधिक मार्ग है जो ससीम शक्ति के दण्ड, निवृत्यर्थ बर्ते जाते हैं। यह सब साकार दशा में हो सकते है। निराकार और चैतन्य शक्ति को सर्वान्तर्यामी होने की दशा में इस प्रकार का यत्न कोई लाभदायक नहीं हो सकता। उस दशा में मनुष्य पाप करके सुख प्राप्ति की आशा नहीं रख सकता और दुःख की आशा रख कर कोई कार्य किया ही नहीं जाता। इसमें स्पष्ट विदित होता है कि निराकार के मानने से मुक्ति है साकार से नहीं क्योंकि मुक्ति ईश्वर ज्ञान के अतिरिक्त हो ही नहीं सकती। और ईश्वर के साकार मानने से भी मुक्ति नहीं हो सकती। अतएव साकार ईश्वर में मुक्ति दाता होना जो ईश्वर का गुण है, रह नहीं सकता। अतएव ईश्वर निराकार है।

युक्तियों से तो आप समझ गए होंगे कि ईश्वर साकार नहीं, क्योंकि साकार पदार्थ अनित्य और जन्य होता है और सर्वशक्तिमान और सच्चिदानन्द भी नहीं हो सकते। अब शास्त्रीय प्रमाणों से सिद्ध किया जाता है कि ईश्वर निराकार है।

ततः परं ब्रह्म परं बृहन्तं यथानिकायं सर्वभूतेषुगूढम्। विश्वस्यैकं परिवेष्टितारमीशं तं ज्ञात्वाऽमृता भवन्ति। ७। श्वेताश्वतरोप०

ततो यदुत्तरतरं तदरूपमनामयम्। य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्त्यथेतरे दुःखमेवापि यान्ति॥ १०॥ श्वेताश्वतरो०

अपाणिपादो जवनो गृहीता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः। स वेत्ति वेद्यं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महान्तम्॥ १८॥ श्वेताश्वतरोप०

उससे परे बड़ा ब्रह्म है। जो अशरीर होकर सब जीवों में छिपा हुआ है। सारे संसार को आच्छादन करने वाला जो एक परमात्मा ईश्वर है उसके ज्ञान से ही मुक्ति प्राप्त होती है॥ ७॥

अतएव वह सबसे बड़ा है और वह सबसे रहित और अनादि है अर्थात् निराकार है और जो लोग उसको जानते हैं वह लोग अमृत होते हैं और जो इसके ज्ञान से शून्य हैं, वह सब संसार में दुःख ही भोगा करते हैं॥ १०॥

उस ईश्वर के हस्त पाद नहीं, परन्तु वह गमन करता और पदार्थों को धारण करता है और वह चक्षु रहित है, परन्तु वह देखता है और श्रोत्र रहित होकर

सुनता है, वह सर्व संसार का ज्ञाता है और उसका यथावत् जानने वाला कोई नहीं. उसी को अग्रय, पुरुष व्यापक कहते हैं ।

एको वशी सर्व भूतान्तरात्मा एक रूपं बहुधा य करोति । तमात्मस्थं ये ऽनुपश्यन्ति धीरास्तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम् ॥ कठोप०

वह परमात्मा एक है और सारे जगत मे व्यापक और सर्व प्राणियो का अन्तर्यामी है । जिसने प्रकृति से इस नाना प्रकारके जगत को नाना प्रकार के रूपो मे किया और जो आत्मा मे रहने वाला है, जिसको धीर पुरुष प्रकृति के अन्दर व्यापक देखते हैं वही मुक्ति अर्थात निर्विकल्प सुख को प्राप्त करते हैं अन्य नहीं ।

नित्योनित्यानां चेतनश्चेतनानामेको बहूना यो विदधाति कामान् । तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्तिधीरास्तेषां शान्ति. शाश्वती नेतरेषाम् ॥ क० । ५ । १३

वह परमात्मा नित्य पदार्थों मे नित्य है अर्थात् उसमे स्वरूप से अथवा ज्ञान से परिणाम नही है । वह चैतन्य जीवों मे भी चैतन्य है अर्थात् जीव अल्पज्ञ है और वह सर्वज्ञ है । जो एक होकर अनेको के अर्थ पूर्ण करता है अर्थात् संसार में कर्मों का फल प्रदाता है । उस जीवात्मा मे रमण करने वाले को जो धीर पुरुष देखते है, उन्ही को निरन्तर शान्ति प्राप्त होती है, अन्यो को नही ।

स पर्य्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथा तथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य. समाभ्य ॥ यजु०

वह परमात्मा सब मे व्यापक, शीघ्रकारी, शरीर से रहित और नाड़ी आदि के बन्धन से शून्य शुद्ध और पाप म शून्य है । तीन काल का अन्तर्यामी और जगत मे व्यापक उस परमात्मा ने निरन्तर सुखो की प्राप्ति के लिए यथार्थ ज्ञान प्रत्येक वस्तु का वेदो द्वारा प्रदान किया है ।

ईशावास्यमिदꣳसर्वं यत्किञ्च जगत्याञ्जगत् ।
तेनत्यक्तेनभुञ्जीथा मागृध कस्यस्विद्धनम् ॥

यह सारा जगत और जगत के प्रत्येक पदार्थ सब ईश्वर का निवास स्थान है और ईश्वर से सब आच्छादन किया हुआ है । जो इस परमात्मा को छोड़ते हैं, वह जन्म-मरण रूपी महाक्लेश को भोगते हैं । ईश्वर फल प्रदाता सब का अन्तर्यामी प्रत्येक स्थान पर विद्यमान है । इसलिए हे जीव ! तू किसी का धन लेने की इच्छा न कर । यदि तू ईश्वर को त्याग अन्य की वस्तु लेगा तो अवश्य दुःख पावेगा ।

अब प्रमाणों से भी सिद्ध हो गया कि ईश्वर निराकार और जगत में व्यापक

है। इसमें भोले भाले भ्राता यह प्रश्न करते हैं कि यदि ईश्वर निराकार है तो उसका ध्यान किसी प्रकार नहीं हो सकता ? मानो उसके विचारानुसार साकार निराकार का ध्यान नहीं कर सकता और निराकार साकार का तो विचार करना ही चाहिए कि जीवात्मा साकार है अथवा निराकार ? चूँकि जीवात्मा भी निराकार है। अतएव निराकार का ध्यान भी निराकार ही करता है और जो साकार पदार्थ हैं, उनमें निराकार गुण का ही जीवात्मा ग्रहण करता है। जैसे फूल को जब देखते हैं तो प्रथम रंग का ज्ञान होता है। जो निराकार है, द्वितीय गन्ध का ज्ञान होता है वह भी निराकार है तीसरे परिणाम का ज्ञान होता है वह भी निराकार है इस प्रकार जीवात्मा गुणों के अतिरिक्त किसी वस्तु का ज्ञान प्राप्त नहीं करता और जो लोग कृष्णादि महात्माओं की मूर्ति मे ध्यान लगाते हैं, वह भी निराकार गुणों का ही ध्यान होता है, जैसे कि काला रंग आकार और गुण यह सब निराकार पदार्थ हैं इन्हीं का ज्ञान होता है। चूँकि मनुष्य का उद्देश्य ससार मे मुक्ति प्राप्त करना है और मुक्ति दृष्ट पदार्थों से हो नहीं सकती जैसा कि महात्मा कपिलजी अपने सांख्य सूत्र में बतलाते हैं—

न दृष्टात्तत्सिद्धिर्निवृत्तेऽप्यनुवृत्ति दर्शनात्। १ अ० ९

अर्थात् दृश्य पदार्थों से अत्यन्त दुःख निवृत्ति नहीं होती क्योंकि दृश्य पदार्थों के सयोग से जो दुःख दूर होता है वह इस पदार्थ के वियोग से फिर उत्पन्न हो जाता है। यह नित्यप्रति का अनुभव प्रत्यक्ष प्रमाण है। अतएव उपनिषदों में लिखा है कि देवता लोग परोक्ष अर्थात् जो पदार्थ आँखों से दृष्टिगत नहीं होते अर्थात् जिनको ज्ञान इन्द्रियों से न जानने योग्य पदार्थ समझते हैं अर्थात् विद्वान् लोग आत्मा जो इन्द्रियों से नहीं जाना जाता उसका प्यार करते हैं, क्योंकि प्रकृति दुःख स्वरूप है। अतएव इससे मिथ्या ज्ञान और मिथ्या ज्ञान स राग व द्वेष उत्पन्न होते हैं और राग से वस्तु की प्राप्ति का यत्न उत्पन्न होता है और इस यत्न से धर्म, अधर्म दो प्रकार के कर्म उत्पन्न होते हैं और मनुष्य पाप और पुण्य करता है और उस पाप और पुण्य का फल दुःख सुख भोगने के अर्थ जन्म मरण धारण किया जाता है, जो महादुःख रूप है। इससे, आपको विदित हो गया कि निराकार ईश्वर और साकार प्रकृति है और साकार के संयोग से दुःख और निराकार से सुख लाभ होता है। अतएव ईश्वर को निराकार मानकर शान्ति की प्राप्ति करें।

उपनिषद् की शिक्षा

(लेखक—श्री पूज्य नारायण स्वामी जी महाराज)

रहना हो जो चरित्र की हद में।
सीखो जो कुछ है उपनिषद् में ॥१॥
वे वे है ग्रन्थ रत्न जिनका।
उद्देश्य है ब्रह्म को बताना ॥२॥
वह ब्रह्म रचा जगत को जिसने।
मशहूर किया जगत को जिसने ॥३॥
परदे में प्रकृति भी निहां[1] थी।
हर बात छिपी हुई थी उसकी ॥४॥
समता थी सिफत[2] में उसके हरसू[3]।
था आत्मेनारगी[4] बहर सू ॥५॥
परदे में थे सूर्य्य चन्द्र सब ही।
जो चीज अयां[5] है अब, निहां थी ॥६॥
सत और असत भी न निशा थे।
जर्रे जितने हैं सब निहा थे ॥७॥
आकाश न था हवा नहीं थी।
कारण में छिपी हुई थी अग्नि ॥८॥
पृथिवी अप्रकट थी जल छिपा था।
शक्ति अप्रकट थी जल छिपा था ॥९॥
अंधेर था और था वहाँ तम।
कहते हैं इसी को हू[7] का आलम ॥१०॥
चाहा जब ब्रह्म ने जगत को
परदे से अयाँ हो और प्रकट हो ॥११॥
हाँ काम लिया तब ईक्षता से।
हरकत जाहिर हुई मनन से ॥१२॥

कारण ने असर से उस गति के ।
जर्रों को हटा दिया जगह से ॥१३॥
ममता को, गुणो को, तोड़ डाला ।
एक एक को परदे से निकाला ॥१४॥
और कार्य्य के रूप मे वो कारण ।
जाहिर होने लगा उसी क्षण ॥१५॥
जर्रों को हटाया था जहा से ।
आकाश प्रकट हुआ वहाँ से ॥१६॥
अणुओं ने तब उस जगत मे आकर ।
वायु को बना दिया मिला कर ॥१७॥
वायु न गति म वेग दे दी ।
संघर्ष से बन गई तब अग्नि ॥१८॥
वायु अग्नि के खेल मे तब ।
अणुओअणुओ के मेल से तब ॥१९॥
बादल की तरह से आसमाँ मे ।
जल की रचना हुई जहाँ में ॥२०॥
जर्रे मिलकर बनी नमी से ।
पृथिवी प्रकटी इसी नमी से ॥२१॥
रच कर दुनिया को इस तरह से ।
लकड़ी मे हो अग्नि जिस तरह से ॥२२॥
ब्रह्मांड मे वह बसा हुआ है ।
भीतर बाहर रमा हुआ है ॥२३॥
हर चार तरफ झलक है उसकी ।
हर चार तरफ महक है उसकी ॥२४॥
शिक्षा यही उपनिषद ने दी है ।
उस ब्रह्म का ध्यान लाबुदी' है ॥२५॥
क्यो उसकी उपासना करे हम ।
क्यो उसके ख्याल मे रहे हम ? ॥२६॥
क्या उस की उपासना की हाजत ।
पूजा की है क्या उसे जरूरत ॥ २७ ॥

इन सब से परी८ है जान उसकी ।
पूजा की नही गरज जरा भी ॥२८॥
चिंतन करते जो उसका मन से ।
नाम उसका जो लेते हैं वहन से ॥२६॥
छाया उसके गुणो की पड़कर ।
करती है हमारे मन को बहतर ॥३०॥
होती है गुणो की यो वृद्धि ।
पाते है मनुष्य जिससे सिद्धि ॥३१॥
उद्देश्य के वास्ते वे है सत ।
आदर्श की होती है जरूरत ॥३२॥
इनसान कमी का है खजाना ।
अलपज्ञ उसे सभी ने माना ॥३३॥
आदर्श में जब कमी रहेगी ।
बात अच्छी कभी नही बनेगी ॥३४॥
आदर्श अच्छा जभी बनेगा ।
ईश्वर जब लक्ष्य मे रहेगा ॥३५॥
आदर्श मे इस लिये उसी को ।
रखकर सब कुछ उसी से सीखो ॥३६॥
उद्देश्य की पूर्ति भी होगी ।
सुधरेंगे तमाम काम तब ही ॥३७॥
यह है उद्देश्य उपासना का ।
करते हैं इसी से उसकी पूजा ॥३८॥
यह ज्ञान है मर्म उपनिषद का ।
कहते हैं इसी को ब्रह्म विद्या ॥३९॥
सीखो और लाभ उठाओ इससे ।
अपने को भला बनाओ इससे ॥४०॥

नोट—१ अप्रकट, २ गुण, ३ प्रत्येक ओर, ४ अपेरापन, ५ प्रकट, ६ सब कुछ अव्यक्त ७ आवश्यक ।

उपनिषदों में ईश्वर के नाम

(ले०—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज)

उपनिषदों में ईश्वर के लिये अनेक नाम आते हैं, जिससे प्रतीत होता है कि भिन्न भिन्न समय मे कई नाम प्रचलित होते हैं और फिर वह लोगों को भूल जाते हैं उनमें से कई नाम अनेक बार आते हैं उनमें से कुछ एक लिखना ही पर्याप्त होगा, सब स्थलों के लिखने की आवश्यकता नही। आशा है पाठक इन पर विचार करके किसी परिणाम पर पहुँचने का प्रयत्न करेंगे।

१ ओ३म् क्रतो स्मर। ईश० १७

२ सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपांसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि, ओम्, इत्येतत्।
कठ २, १५।

३ ओम्, इत्येतदक्षरमिदं सर्वम्। माण्डूक्य।

४ ओम्। इत्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत्। छांदो० १, १।

५ ईशावास्यमिदं सर्वम्। ईश० १

६ पुसन्ने, कर्षे, यम, सूर्य, प्राजापत्य व्यूह रश्मीन् समूह। ईश १६

७ अग्नेनय सुपथा राये। ईश १८

८ ब्रह्म देवेभ्यो विजग्ये। केन ३, १

९ ब्रह्मैवेदममृतम्। मुण्डक ४, ११

१० सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। तैत्तिरीय० २, १।

११ तद् वन मित्युपासितव्यम्। केन ४, ६।

१२ महांतं विभुमात्मानं मत्वाधीरो न शोचति। कठ० २, २१
नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न बहुना श्रुतेन। मुण्डक ६, ३

१३ आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत्। एतरेय० १, १

१४ एष आत्मा अपहतपाप्मा। छां० ८, १, ५।

१५ आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः। बृ० २,४,५

१६ पुरुषान्नपरं किंचित् स काष्ठा स परागतिः। कठ ३. ११।

१७ इहैवांतः शरीरे सोम्य स पुरुषः । प्रश्न ६, २

१८ परांचि खानि व्यतृणत्स्वयंभुः । कठ० ४, १

१९ तदेवशुक्रं तद्ब्रह्म तदेवामृतमुच्यते । कठ० ५, ८

२० प्रजा कामो वै प्रजापति । प्रश्न १, ४

२१ अराइव रथनाभौ प्राणे सर्वं प्रतिष्ठितम् । प्रश्न २ ६

२२ प्राण इति स ब्रह्मत्यदित्याचक्षते । बृ० ३, ९, ९ ।

२३ अत एव प्राण । वेदांत १, १, २२

२४ येनाक्षर पुरुषं वेद । मुण्डक १, १३

२५ तदेतदक्षर ब्रह्म । मुण्डक ४, २

२६ तदक्षरं गार्गि ब्राह्मणा अभिवदंत्यस्थूलमनणु । बृ० ३, ८, ८

२७ अक्षरमम्बरात धृतेश्च । वेदांत १, ३, १०

२८ शांतं शिवमद्वैत चतुर्थं मन्यते स आत्मा स विज्ञेय । मा० ७

२९ यदेश आकाश आनन्दो न स्यात् । तै० २, ७

३० सर्वाणि ह्वा इमानि भूतान्याकाशादेव समुत्पद्यंत आकाश प्रत्यस्तं यत्या-
काशो ह्येवैभ्यो ज्यायान् । छां० १ ९

३१ आकाशस्तल्लिंगात् । वेदांत १, १, २२

३२ तमिदन्द्र संतमिन्द्रं इत्याचक्षते । एत० ३, १४

३३ असौ वा आदित्यो देव मधु । छां० ३, १

३४ यदत. परोदिवो ज्योतिर्दीप्यते विश्वत पृष्ठेषु सर्वत पृष्ठेषु वनुत्तमेष्व-
त्तमेषु लोकेषु । छां० ३, १३

३५ परं ज्योतिरूप संपद्यस्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यते । छां० ८, ३, ४

३६ ज्योतिश्चरणाभिधानात् । वेदांत० १, १, २४

३७ वायुर्वाव संवर्ग । छां० ४, ३, १

३८ वायुरेव व्यस्टिर्वायु समष्टिः । बृ० ३, ३, २

३९ प्रकाशवानित्युपास्ते प्रकाशवानस्मिंल्लोके भवति । छां० ४, ५, ३

४० अनंतवानित्युपास्ते अनतवानस्मिंल्लोके भवति । छां० ४, ६, ४

४१ ज्योतिस्मानित्युपास्ते ज्योतिस्मानस्मिंल्लोके भवति । छां० ४, ७, ४

४२ आयतनवानित्युपास्ते आयतनवानस्मिंल्लोके भवति । छां० ४, ८, ४

४३ प्राणो ब्रह्म, कं ब्रह्म, खं ब्रह्म । छां० ४, १०, ५

४४ एष संयद्वाम इत्याचक्षते । छां० ४, १५, २

४५ एष उ एव वामनिरेष हि सर्वाणि वामानि नयति । छां० ४, १५, ३

४६ एष उ एव भामनिरेषहि सर्वेषु लोकेषु भाति । छां० ४, १५, ४

४७ आत्मानमेवैस वैश्वानरं सम्प्रत्यध्येसि तदेव नो ब्रूहीति । छा० ५,११,१६

४८ वैश्वानर: साधारण शब्द विशेषात् । वेदांत १, २, २४

४९ यो वै भूमा तदमृतम् । छां० ७, २४, १

५० भूमा सम्प्रसादादध्युपदेशात् । वेदांत १, ३, ८

मैंने इन पाठो के अर्थ नही लिखे है क्योकि प्रथम तो पाठ सरल है और दूसरे वह नाम जो किसी पाठ मे आये है पाठक समझ लेगे। सामान्य रूप मे मे उन नामो की सूची भी दे देता हूँ।

ओ३म् , ईश पूषन, एकर्षि, यम, सूर्य, अग्नि, ब्रह्म, वन आत्मा, पुरुष, स्वयम्भु प्रजापति, प्राण, अक्षर, शिव, आकाश, इन्द्र, आदित्य, ज्योति, वायु, प्रकाशवान, अनन्तवान, ज्योतिष्मान आयतनवान कम्, खम्, संयद्वाम्, वामनि, भामनि, वैश्वानर, भूमा।

महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में ईश्वर का १०० नाम लिखा है। ईश्वर नाम समुद्र सम है। उसमें से यह १०० नाम बिन्दु मात्र हैं। ईश्वर के अनन्त नाम हैं और हो सकते हैं। सम्भव है भविष्य में और नाम जो इस समय प्रचलित नही हैं प्रचलित हो जाय। इस पर आग्रह पूर्वक कहना वा लिखना दु साहस प्रतीत होता है कि इतने ही हैं उपनिषदो में सम्भव है और भी हों क्योंकि इस समय १११ उपनिषदें छपी मिलती हैं, मैंने उनको छोड़ कर केवल १० में से ही दिये हैं, यह भी सम्भव है मै कोई नाम भूल गया हूँ अत पाठक स्वयं भी देखने का कष्ट करके निश्चय कर लें।

मनुष्य बनने के साधन

[ले०— श्री ला० साईदास जी भूतपूर्व प्रिंसिपल डी ए वी कालेज लाहौर]

—*(*):*—

कुछ समय हुआ यूरोप के एक नगर मे एक विज्ञान वेत्ता व्याख्यान दे रहे थे। अपने व्याख्यान मे उन्होने विज्ञान की उन्नति के खूब राग अलापे। जब व्याख्यान समाप्त हो चुका तो एक भारतवासी जो वहाँ बैठा था उठा और उसने पूछा कि विज्ञान ने हमे आकाश में उड़ना तो सिखला दिया परन्तु क्या यह भी बतलाया है कि पृथ्वी पर कैसे रहना चाहिये अर्थात् हम एक दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करे। विज्ञान यह नही बतला सका। उसने कहा कि अभी तक मनुष्य मे पशुता वैसी ही बनी हुई है। इस पशुता को मनुष्यता मे परिवर्तित करने के लिये विज्ञान ने कोई पग नहीं बढ़ाया।

इसी प्रकार एक प्रसिद्ध लेखक ने वर्तमान जगत की अशान्ति के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा कि हम चीलो के सदृश हैं जो उड़ते तो हैं, सातवें आसमान पर परन्तु हमारी दृष्टि सदैव मृत वस्तु की ओर रहती है और हम प्रत्येक क्षण चीलो की नाईं झपटा मारने की ठानते रहते हैं।

वर्तमान शिक्षा भी मानसिक रूप मे हवा मे उड़ाती है जिस पर किसी वस्तु का प्रभाव नही होता। आज मै यह समझाने की चेष्टा करूँगा कि पशु से मनुष्य बनाने वाली वस्तुएँ क्या हैं? पशुता मनुष्यता मे किस प्रकार परिणत हो सकती है।

समस्त संसार इस बात मे एक मत है कि मनुष्य ३ साधनों से पशुता से बच सकता है। ये साधन हमारे ग्रन्थो मे बतलाये गये हैं। इस समय पर्यन्त मनुष्य उनमें वृद्धि न कर सका। हम उन साधनो से लाभ उठाएँ वा न उठाएँ। उन्हें वास्तविक रूप मे प्रयुक्त करें वा न करे परन्तु उनके अतिरिक्त नया साधन आविष्कृत न हो सका। जापान से पूछें, इंगलैंड से पूछें, हर स्थान पर यही फार्मूला बतलाया गया है जो हमारे शास्त्रों मे बतलाया गया है। वह यह है:—

'माता पिता इसी प्रकार आचार्य और अतिथि को देव सम मानो। स्वाध्याय से मनुष्य ऊँचा उठता है।सबसे पहले माता पिता का जिक्र है जो मनुष्य को बनाते

हैं। माता पिता ही यह निश्चय करते हैं कि इस बीज से कौनसा फल बनना है। आम बनना है या कीकर। यह माता पिता पर ही निर्भर है। आचार्य या अन्य व्यक्ति फिर उसकी असलियत और स्वभाव को नहीं बदल सकते। वे कीकर को आम या सेव नहीं बना सकते। हाँ कांटे कम कर सकते हैं। इसी प्रकार माता-पिता के ही हाथ में है कि ससार को रस देने वाली, सुगन्धित सतान दें या काटे बिखेरने वा जहर फैलाने वाली।

व्यक्तियों से ही जातियाँ बनती हैं इसलिए आवश्यक है कि प्रत्येक माता-पिता अपनी सन्तान को अच्छी बनाये परन्तु व्यक्तियाँ तभी ठीक होती है जब प्रारम्भ से ही उन्हें ठीक बनाया जाय। माता पिता को देखना चाहिए कि जो बीज वे बोते हैं वह दुष्टता का बीज तो नहीं है धोखे बाजी, हरामखोरी और शराबखोरी का बीज तो नहीं, यदि वह चीज इन चीजों से बना है तो उसे कौन बदल सकता है। कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि तुम्हें लड़ना पड़ेगा। तुम युद्ध से परे नहीं रह सकते क्योंकि तुम्हारे स्वभाव में यह बात है।

मनुष्य बनाने में सबसे पहला दर्जा माता का है। जितने भी बड़े आदमी बने है उनको बनाने वाली उनकी माताएँ ही थीं। सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि सबसे अधिक प्रेम करने वाली माता ही होती है जिसमें किसी प्रकार का स्वार्थ नहीं होता। किसी प्रकार का बनावटीपन नहीं होता। एक फ़ारसी के कवि ने माता के प्रेम को इस प्रकार चित्रित किया है।

'वह सारा दिन सरहाने बैठ कर तुम्हें सोना सिखाती है। और अपने खुले हुए होठों को बच्चों के होठों पर रखकर उसे मुस्कराना सिखाती है। एक एक शब्द बोल कर बोलना सिखलाती है। और पग पग चलकर चलना सिखाती है। अपनी गोद में रखती है। किसी वस्तु को बच्चे से उत्तम नहीं समझती। "अमीनाबाद के दीवान प्रसिद्ध हैं। उन्होंने काश्मीर राज्य को बसाया। एक दीवान माता की बड़ी सेवा करते थे। उन्होंने सोचा कि माता न अधिक दूध पी सकती है न खा सकती है। सेवा कैसे की जाय ? उन्होंने माता से कहा कि कुछ दान करे। माता ने कहा 'बेटा ' प्रतिदिन आटा सीदा दान कर लेती हूँ। दीवान ने चावलों का एक ढेर जिसके नीचे हजारों रुपया रखा था माता से दान करा दिया। माता ने समझा बेटे को कुछ अभिमान हो गया है। उसने कहा 'बेटा मेरी एक इच्छा है कि जिस प्रकार तू छोटा सा था। मेरे साथ सोता था, अब भी चाहती हूँ तू मेरे

साथ सोए। पुत्र ने आज्ञा मान ली। जब पुत्र को नींद आ गई तो माँ ने सेविका को कहा कि पानी का गिलास ले आ। माता ने थोड़ा सा पानी बिस्तरे पर डाल दिया। जब पुत्र के शरीर को पानी लगा तो वह चिल्ला उठा। माता तुमने यह क्या कर दिया ? निद्रा भङ्ग कर दी। माता ने कहा 'बेटा, तू माता का ऋण नहीं चुका सकता। जब तू बच्चा था पेशाब कर देता था। मैं गीले कपड़े पर सोती थी, परन्तु तुझे सूखे पर सुलाती थी।" इसी लिए कहा गया है कि माता की पूजा करनी चाहिए। हम जो कुछ माता को देते हैं वह पूजा भाव से देते हैं। यदि और किसी ग़रीब को कुछ देते हैं तो वह मदद होती है। माता का क्या अभिप्राय है ? ऋषि कहते हैं माता देवता है। देवता वह है जो प्रकाश देता है। फिर क्या कारण है कि करोड़ों माताओं के होते हुए भी जाति पतन की ओर जा रही है। क्या सचमुच हमारी माताएँ माता हैं और क्या हम उनको देवता मानते है। इस पर विचार करना है। क्या हम माता को माता के अर्थों मे लेते हैं। हमारे माता पिता क्या सचमुच हमारे माता पिता हैं ? हमारे आचार्य गृहस्थ, वानप्रस्थी और सन्यासी क्या सचमुच आचार्य, गृहस्थ, वानप्रस्थी और संन्यासी हैं। आज ऐसे माता पिताओं की आवश्यकता है जो वास्तविक अर्थों मे देवता हों। प्रकाश दें और अंधकार को दूर करें।

हम पश्चिम की प्रशसा करते है। ये वे व्यक्ति है जो विनाश की ओर चल रहे है। और ससार को नष्ट भ्रष्ट करने पर तुले बैठे हैं। जिनकी पश्चिमी स्त्रियों की आज प्रशसा की जाती है किसी अग्रेजी लेखक ने उनका अच्छा चित्र खींचा है। एक पश्चिमी स्त्री किसी दूसरी पश्चिमी स्त्री से पूछती है कि यदि तुम्हारा पुत्र सैर को गया हो तो तुम्हें कैसे पता लगे कि वह तुम्हारा बच्चा है। वह स्त्री उत्तर देती है कि चूँकि मैं अपनी नौकरानी को पहचान सकती हूँ अत: पता लग सकता है कि वह बच्चा मेरा है। जहाँ माताओं की ऐसी दशा हो कि वे अपने बच्चे को भी न पहचान सकें और उन्हें नौकरानियों की दया पर छोड़ दें वहाँ की दशा क्या हो सकती है ? आज हमारी माताएँ भी पश्चिमी स्त्रियों की नाईं बनाव शृङ्गार में लगी रहती हैं और बच्चों को नौकरानियों पर छोड़ देती। वे साड़ियों का रस ले सकती हैं परन्तु बच्चों का बोझ नहीं उठा सकतीं उनसे क्या आशा रखी जायगी। सेविकाएँ क्या जानें ब्रह्मचर्य क्या है ? सचाई क्या है ? बच्चे को क्या बनाना है ? जहाँ के स्त्री पुरुष सन्तान में दिलचस्पी नहीं लेवे

ऐसी जाति का आज दिवाला नहीं तो कल अवश्य निकलेगा। वे देश तो गिरते गिरते भी संभल सकते हैं परन्तु हम जो गिरे हुए हैं यदि उनकी बुरी बातो का अनुकरण करे तो कहाँ ठिकाना होगा।

मै जब कालेज मे प्रिंसिपल था तो कई माता-पिता अपने लड़को को होस्टल मे प्रविष्ट कराने लाते थे। मै उनसे कहता था कि यदि तुम माता-पिता २-३ बच्चो की देख भाल नही कर सकते तो एक सरक्षक जिसके पास ६ सात सौ लड़के होगे भला उनकी क्या देख भाल करेगा। मै लडको को सत्यार्थप्रकाश में से ब्रह्मचर्य्य के सम्बन्ध मे पढ़ाया करता था।

मुझे पता है कि प्राय: बड़े घरो के लड़के जितनी बुराइयाँ सीखते हैं वे सब नौकरो से सीखते हैं। पिता जज है। प्रोफेसर है। उसे बिल्कुल पता नही कि बच्चा क्या कर रहा है? बच्चा तब ही उसके पास जाता है जबकि पिता से कुछ लेना होता है और उस समय पिता घूर कर उत्तर देता है कि हर समय कुछ न कुछ माँगते ही रहते हो। ऐसी दशा मे बच्चा पिता के पास जाए तो कैसे? बच्चे सदैव प्यार से सन्मार्ग पर प्रेरित होते है। जबरदस्ती से नहीं। जबरदस्ती करोगे तो वह उसका उल्टा करेगा। जैसा कि एक घोड़े के उदाहरण से स्पष्ट है।

किसी सेनापति का घोडा बीमार था। उसे डाक्टर के पास भेजा गया। परन्तु वह दवाई न पीता था। बहुत यत्न किया गया। बड़े अफसर का घोड़ा था दवाई पिलाना आवश्यक था। अत डाक्टर को एक उपाय सूझा। उसने कहा घोड़े को बाँध दो, और एक नाली लेकर उसे घोडे के मुँह मे रखा जाय। तब दवाई डाल दी जाय। और फूँक से उसके अन्दर डाली जाय। परन्तु डाक्टर ने जब नली मे दवाई डाली तो घोड़े ने डाक्टर से पहले ही बाहर को श्वास छोड़ा जिससे बजाय घोड़े के दवाई डाक्टर के मुँह मे चली गई। अत जबरदस्ती से हर जगह काम नही लिया जाता।

हिन्दी हिन्दुस्तानी या उर्दू

(लेखक—श्री शान्तिनारायणजी भूतपूर्व सम्पादक "वन्देमातरम्" लाहौर)

'हिन्दी की ओट म उदू का प्रचार' शीर्षक स पाठक महाशयो ने जो लख श्री प० वकटेशनारायण जी तिवारा एम ए की प्रभावशाली लेखनी म निकला हुआ इसी 'सार्वदेशिक' पत्रिका क कई गत अकों म पढा होगा उसस यह साफ झलकता है कि हमारे आचार्य्य नरेन्द्रदेव जी और श्री रामलोचन शरण जैस मशहूर हिन्दी लेखकों ने भी केवल शोर मचाने वाले मुस्लिम लीगी लोगों को खुश करन क लिए किस प्रकार अपनी सर्वप्रिय राष्ट्रभाषा हिन्दी को धीरे धीरे उदू का लिबास पहनाना शुरू कर दिया है और इस बात की ओर कुछ भी ध्यान देना आवश्यक नहीं समझा कि उनकी यह हिन्दुस्तानी नामधारी उर्दू, हिन्दी अक्षरों म लिखी जाकर पजाब, यू० पी० और विहार क करोडों देहाती हिन्दी पाठकों के अतिरिक्त उन करोडों बगालियों, मराठों, गुजरातियों और मदरासियों की भी समझ म भली भांति आ सकगी या नहीं, जिनका राष्ट्रभाषा के नाते हिन्दी के साथ प्रेम दिनों दिन बढता जा रहा है और जिन्हें हिन्दी का अचल प्रेमी और भक्त बनाए रखने, बल्कि हिन्दी से उनक प्रेम को दिनों दिन बढाते रहने क लिए यह परमावश्यक है कि हिन्दी उनकी प्रान्तिक भाषाओं म अधिक से अधिक मिलती जुलती रहे, जिससे उन्हें भी हिन्दी म लिखे हुए भावों को पूरी तरह समझने का सुभीता रहे और हमारी हिन्दी अधिकतर कठमुल्लाओं की उदू न हो जाय जो आप ही कुछ अधिक फारसी अरबी न जानने के कारण मोलवियों की सी "जमीदारी" और 'इन्कलाबी' लाहोर क दो प्रसिद्ध मुसलमान दैनिक उर्दू जो अपनी कठिन उर्दू भाषा के लिए इतने मशहूर ह कि साधारण उर्दू पढे मुसल्मान भी उन्हें पढना पसन्द नहीं करत। उर्दू तो लिख नहीं सकते इसलिए सीधी सादी और आसान उर्दू ही क लिए अपने आपको मजबूर पाते हैं।

सबसे बढ़कर शोक

तो इस बात का है कि पजाब के हिन्दू दैनिक और साप्ताहिक पत्र, जो आज से २० २५ वर्ष पहले उर्दू लिपि म निकलते हुए भी सरल हिन्दी भाषा क प्रचार म बडा सराहनीय भाग लिया करते थ और जिनके इस उद्योग से पजाब निवासी हिन्दुओं के लिए न कवल हिन्दी समझना सुगम होगया था वरन् हिन्दी पढने लिखने की ओर भी उनकी रुचि बहुत

बढ़ गई थी और उससे पंजाब में हिन्दी प्रचार की भी बहुत कुछ उन्नति हुई था उनकी भाषा भी अब दिनों दिन कठिन होती जा रही है, और बहुत से हिन्दू समाचार पत्रों की भाषा में तो मुसलमान पत्रों से केवल १६-२१ का सा ही भेद रह गया है, नहीं तो २०-२५ वर्ष पहले उर्दू के हिन्दू लेखकों और मुसलमान लेखकों की लेखनशैली में इतना भेद पड़ गया था, कि लेखक का नाम पढ़े बिना ही यह साफ़ जाना जा सकता था कि इस लेख का लेखक कोई हिन्दू है या मुसलमान। हिन्दू लेखकों का उर्दू लिखने की इस शैली से चिढ़ कर ही मुसलमान लिक्खाड़ियों ने उनकी उर्दू को "लालाई उर्दू" या "समाजी उर्दू" कह कर उसका उपहास करना शुरू कर दिया था और वह यह शेखी बघारने लगे थे कि हिन्दू उर्दू लिख ही नहीं सकते।

शायद अपनी आत्मिक दुर्बलता के कारण

मुसलमान लेखकों की इसी उपहास से बचने के लिए हिन्दू लेखकों और हिन्दू पत्रों ने अपने लेखों में से हिन्दी शब्दों का बायकाट करके उन्हें मुसलमानी लिबास पहनाना आरम्भ कर दिया और इस पवित्र भाव को वह बिलकुल ही भुला बैठे कि उनकी इस मनोवृत्ति का हिन्दी प्रचार पर क्या प्रभाव पड़ेगा और तो और मैं यह कहे बिना भी नहीं रह सकता कि यदि हमारे आर्यजगत के शिरोमणि नेता सम्पादकों के २०-२५ वर्ष पहले उर्दू के लेखों की उनके आज कल के लेखों से तुलना की जाय, तो उनमें भी धरती पाताल का अन्तर दिखाई देगा, अर्थात् यदि उनके पहले लेखों के कठिन शब्दों में २५-३० प्रतिशत संस्कृत शब्द मिलेंगे, तो आजकल के लेखों में उनकी गिनती १०-१२ प्रतिशत से किसी प्रकार अधिक न होगी, यही कारण है कि उन्हें अपने पत्रों की मुसलमानी भाषा आप ही नहीं अखरती, जो वह अपने सहायक सम्पादकों को अपनी भाषा में अधिक हिन्दी मिलाने की ताकीद कर सकें। इस लिए आज कल उर्दू के हिन्दू लेखकों के लेखों की भाषा भी अधिकतर मुसलमानी उर्दू ही बनती जा रही है और पहले उनके लेखों की भाषा पर उनके हिन्दुत्व की जो छाप हुआ करती थी वह दिनों दिन लोप होती जा रही है और यदि शीघ्र ही इस ओर ध्यान न दिया गया, तो हिन्दू लेखकों की उर्दू इस्लामी रंग में इतनी गहरी रंगी जायगी कि साधारण उर्दू पढ़े लिखे लोगों के लिए उसका समझना भी कठिन हो जायगा।

इसलिये यह परम आवश्यक है

कि हमारी हिन्दी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दुस्तानी को ही कुछ मुसलमान भाइयों की अनुचित मांग पूरा करने के लिये अनावश्यक फ़ारसी अरबी शब्दों की भरमार से, इतना कठिन बना दिया जाय कि वह न केवल भारत की दूसरी प्रान्तीय भाषाओं, बंगला, मराठी,

गुजराती पञ्जाबी आदि से उतनी ही दूर जा पड़े जितना कि उर्दू है वरन् अपनी देव वाणी संस्कृत से भी जो निस्सन्देह उसकी पूज्यास्पद माता है अपना युग युगान्तरों का नाता दिनो दिन तोड़ती जाय और उर्दू के समान ही ऐसी विदेशी न बन जाय कि पहचानी भी न जासके।

साथ ही इसके यह भी आवश्यक है

कि उर्दू अक्षरों में लिखी जाने वाली हिन्दुस्तानी को हिन्दी हिन्दुस्तानी से इतना दूर न जाने दिया जाय कि वह मालवियाजी की उर्दू के समान हमारे भारत की ही कोई राजकन्या दिखाई देने की जगह ईरान या अरबिस्तान की कोई शाहजादी दिखाई देने लगे और अपने देश में ही परदेशी न बन जाय यह शुभ काम करना पड़ेगा उर्दू के हिन्दू लेखकों और उस तमाम विरोध तथा अड़चनों का सामना करते हुए जो कठमुल्ला पार्टी की ओर से उनके मार्ग में डाली जायगी। परन्तु मैं तो बड़े साहस से यह कहूंगा कि हम किसी भी विरोध और रुकावट की ओर कुछ भी ध्यान न देकर अपने ध्येय को पूरा करने के लिये भली भांति कमर कस लेनी चाहिये और हिन्दी हिन्दुस्तानी को उर्दू बनाने के सम्बन्ध में जिस ओर से भी जो प्रयत्न किया या कराया जाय न केवल उसका ही श्रीमान तिवारी जी के समान ज़ोर विरोध करना चाहिए वरन् उर्दू हिन्दुस्तानी को भी अपने लेखों में सरल से सरल बनाकर हिन्दी हिन्दुस्तानी के पास से पास लाने का प्रयत्न करना चाहिये जिससे हिन्दुस्तानी चाहे वह किसी भी लिपि में क्यों न हो, भारत के सभी प्रान्तवासी हिन्दुस्तानी भाइयों के लिए एक ही जैसी सुगम और सहल हो सके और किसी भी बङ्गाली गुजराती मराठा या किसी दूसरे प्रान्त के निवासी भाई या बहिन को या हिन्दुस्तानी भाषाभाषी प्रान्तों के किसी अनपढ़ या कुपढ़ नरनारी को भी उसे सुनकर समझने में किसी प्रकार से कोई कठिनाई न हो

परम पिता परमात्मा की कृपा से

हमारे भारत में उर्दू के हिन्दू समाचार पत्रों (दैनिक साप्ताहिक मासिक आदि) की कमी नहीं और उर्दू के लाखों सिद्धहस्त लेखक भी मौजूद हैं यदि वह सब इस ध्येय की प्राप्ति के लिये अपनी २ कमर कस लें तो एक ही वर्ष में विरोधियों के घोर विरोध का सब प्रकार सामना करते हुए भी सब कुछ करके दिखा सकते हैं। आवश्यकता है केवल साहस और दृढ़ता का आत्मिक बल और स्थिर धारणा की फिर यही हिमालय जैसा कठिन और भारी काम रुई से बढ़कर नरम और तिनके से बढ़कर हलका जान पड़ेगा क्योंकि —

> साहस और उद्यम के आगे, पर्वत भी टल जाता है।
> साहसी उद्यमशील पुरुष, सब कुछ ही कर दिखलाता है॥

यदि सभी उर्दू समाचार पत्रों के अधिष्ठाता और सम्पादक गण आज इस उपरोक्त ध्येय को दृढता के साथ अपनायें और धीरे २ न केवल अपने सम्पादकीय लेखों की भाषा में ही फारसी अरबी शब्दों को कम करते हुए साधारण हिन्दी संस्कृत अथवा अंग्रेजी शब्दों से उनकी कमी को पूरा करने लगें वरन् अपने सहायक सम्पादकों अनुवादकों, लेखकों और सम्वाददाताओं को भी इसकी प्रेरणा करदें तो २-३ महीनों में ही उनके पत्रों की काया पलट कर उर्दू हिन्दुस्तानी पर उनसे हिन्दुत्व की छाप लगकर वह हिन्दी हिन्दुस्तानी की सगी बहिन भी दिखाई देने लग सकती है और फिर इन दोनों बहिनों को हिन्दी, बङ्गाली मराठी गुजराती पंजाबी आदि को रिश्ते नाते की बहिन बनाने में कुछ अधिक कठनाई न रह सकेगी और इस प्रकार सभी भाषायें तथा लिपियां दिनों दिन एक दूसरे में अधिकतर निकट होती हुई राष्ट्र भाषा प्रचार और राष्ट्र उद्धार के महा कठिन दिखाई देने वाले शुभ काम को सहल बनाने में पूरी पूरी सहायता दे सकेंगी। फिर हम **उर्दू लिपि के अनेक दोषों को दूर करने का महान काम** भी सहज में ही अपने हाथों में लेकर उसे सफल बना दिखायेंगे, जो आज हमारी आत्मिक शिथिलता और कठमुल्लाओं के घोर विरोध के कारण असम्भव सा जान पड़ता है। यह चमत्कार कैसे हो सकेगा इस पर मैं अपने अगले लेख में प्रकाश डालने का प्रयत्न करूंगा।

दो राष्ट्रों का सिद्धांत

लेखक—श्री प्रो० अब्दुल्ला सफ़दर

[१]

भारतवर्ष क स्वातन्त्र्य सघष का वतमान काल देश का विभिन्न जातिया म पारस्परिक वैर विरोध की वृद्धि क लिए प्रसिद्ध रहेगा । राष्ट्रीय आन्दोलन का वर्तमान नतृत्व सफल सिद्ध नहीं हुआ है । इस प्रश्न का हल करने म गाधी जी का नतृत्व निश्चित रूप स असफल रहा है । अहिंसा के सिद्धात पर बल देने और राजनाति म धर्म्म का ले आने से, साम्प्रदायिक मुसल्मान नताओं का अपनी साम्प्रदायिक मागा और उद्देश्यों को प्रसिद्धि देने का अवसर प्राप्त हुआ है । फलत हम अपनी आंखो म यह चमत्कार देख रहे हैं कि देश के स्वाधीनता आन्दोलन का अभिवृद्धि म मुस्लिम लीग सब से अधिक रोडा बन रही है । वे मुसल्मान जो यह कहत हैं कि हिन्दुओं के उन्नति के सघष मे उनका कोई सम्मिलित कर्तव्य नहा है व इस्लाम की भावना क विरुद्ध आचरण करते है ।

इस्लाम का एक सबस सुन्दर रूप यह है कि उसम परिस्थितियों क अनुसार अपन को बनान की बहुत बड़ी क्षमता है । इस्लाम को हम कुदरत का धम कह सकत है । इसका मूल भूत सिद्धात प्रकृति क नियमा पर आश्रित है । हदीसोंम कहा गया है कि प्रत्येक व्यक्ति मुसल्मान क रूप म उत्पन्न होता है जिसका अभिप्राय यह है प्रत्यक व्यक्ति कुदरत क नियम क आधीन होता है भले हा अन्य प्रकार म उसका पालन पोषण हो ।

इस्लाम का सबस महत्वपूर्ण सन्देश परमात्मा का एकत्व और मनुष्यों का भ्रातृत्व है । इस्लाम न जातियो को आपस म मिला दिया है और वर्ण और रक्त के भेदभावों को निर्मूल कर दिया है । परन्तु इस्लाम की शिक्षाओं के विरुद्ध भारतवष क मुसल्मान हिन्दुओं से वैरभाव और घृणा करत हैं । इस्लाम की मुख्य शिक्षा सहनशीलता है परन्तु दुर्भाग्य से भारतवष के मुसल्मान मज़हबी दीवानों के नाम म बदनाम हैं । इस्लाम एक महान् क्रियात्मक धर्म समझा जाता है परन्तु भारत क मुसल्मान स्वप्नों की दुनिया मे रहते हैं । इस्लाम अपने अनुयायियों को देश के उन्नत राजनैतिक आन्दोलनो में उत्साहपूर्वक भाग लेने की प्रेरणा करता है परन्तु भारतवष के मुसल्मानों के कोई भी सुनिश्चित राजनैतिक ध्येय नहीं है । परन्तु यदि व श्रीयुत् जिन्नाह जैसे अपने नेताओं का सलाह पर राजनीति म भाग लेते हैं तो केवल देश के स्वातन्त्र्य संग्राम को हानि पहुंचाने क लिए ऐसा करते हैं । इस्लाम उन्नति की शिक्षा देता है परन्तु भारतवष के मुसल्मान बहुत अवनत हैं । संसार के अन्य भागों

में मुसल्मान चोटी के राष्ट्रीय नेता बन रहे हैं और अपने देश के प्रति प्रेम बढ़ा रहे हैं परन्तु भारतवर्ष के मुसल्मान इस्लामिक राष्ट्रीयता की मृगतृष्णा के पीछे भाग रहे हैं।

हमारे हिन्दू और मुस्लिम सम्प्रदायवादियो का हिन्दू और मुस्लिम शब्दों की जब तब चर्चा करना एकपेशा बन गया है। साम्राज्यवादी भी भारत में दो राष्ट्रों के सिद्धान्त का प्रचार करने में व्यस्त हैं। उदाहरण के लिए एक अवसर पर लार्ड मार्ले ने कहा था:—

'हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दुओं और मुसल्मानो में केवल धार्मिक भेद भाव ही नहीं है वरन् उनके जीवनो परम्पराओ, इतिहास तथा सामाजिक वस्तुओं में भी विभिन्नता है।"

यहां पर यह उल्लेख किया जा सकता है कि भारत में मुसल्मानो की जातिगत राष्ट्रीयता का सिद्धान्त प्रारम्भ में सर इकबाल ने प्रतिपादित किया था। जबकि वे इङ्गलेंड में पढ़ते थे। भारत में वापस आने पर उन्होंने इस सिद्धात को मूर्तरूप देना प्रारम्भ किया था। मुस्लिम शिक्षित वर्ग में साम्प्रदायिक भावो की अभिवृद्धि के फलस्वरूप सर इकबाल अपने 'तराने-हिन्द' को सर्वथा भूल गए थे। उनकी कविता के निम्न पद प्रसिद्ध ही हैं —

"चीन और अरब हमारे हैं, भारतवर्ष हमारा है।
हम मुसल्मान हैं और समस्त संसार हमारी जन्म-भूमि है।"

अब सर इकबाल संसारव्यापी मुस्लिम राज्य की सम्भावना विश्वास-पूर्वक सोचने लग गए थे जिसका मुख्य स्थान काबा था और जिसमें समस्त मुसल्मान देश और जाति के भेदभाव से परे एक सूत्र मे बधे हुए सोचे गए थे। यह कवि जिन्हे पहले अपने देश की बड़ी चिन्ता थी, युरोप से लौटने पर मुस्लिम राष्ट्रीयता की योजना का प्रचार करने लग गए थे। उदाहरणार्थ उनकी 'तस्वीरे हिन्द' भारत के बच्चो का राष्ट्रीय गायन अथवा 'हिमालय' कविताओं को देखो। साइमन कमीशन को सम्बोधित करते हुए उन्होंने ब्रिटिश सरकार को प्रेरणा की—

"यदि आप ब्रिटिश साम्राज्य का स्थायी कल्याण चाहते हैं, तो ऐसी परिस्थिति उत्पन्न करो जिससे हिन्दुओं और सरकार के द्वारा मुसल्मानों का शोषण न हो सके। ....हम संरक्षण चाहते हैं।"

साम्राज्यवाद के अत्याचारों और दासता के विरुद्ध मुस्लिम जनता को प्रेरित करने

के स्थान म कवि महोदय ने साम्राज्यवाद से यह सरदार चाहा था कि उनके हिन्दू भाई उन्हे न सताए अपनी 'तस्वीर हिन्द' मे कवि ने कहा था —

भोले आदमी। देश की चिंता कर। एक विपत्ति आने वाली है। तेरे विनाश के लिए आकाश मे मन्त्रणा हो रही है।

एक दूसरी कविता म कवि ने कहा था —

'उस भूमि म जिसमे चिश्ती ने परमात्मा के सदेश का प्रचार किया था।

उस बाग म जिसम नानक ने एकता का गीत गाया था।

जिस तातारियो ने अपना घर बनाया था।

जिसने जहान के लोगो से अरब के रेगिस्तानो को छुड़वाया था

वही मेरा देश है वही मेरा देश है।

१९१४ के महा समर के बाद और पहले असहयोग आन्दोलन के विफल हो जाने पर जब साम्प्रदायकता ने मुसल्मानो के शिक्षित वर्ग पर प्रभाव डालना प्रारम्भ कर दिया था, कवि ने लिखा था —

'हमारे लोगो के गर्व की आधार शिला उनके भूमि की एकता नही है'।

तराने दिल्ली म मुसल्मानो म राष्ट्रीय भावना के विकास की निन्दा करते हुए उन्होंने लिखा था —

यह राष्ट्रीयता परमात्मा के पुत्रो को गिरोहो म विभाजित करती है

यह तो इस्लाम की राष्ट्रीयता की जड़पर भी कुठाराघात करता है

(क्रमश) (माडर्न रिव्यू)

महिला-जगत्

माता की पदवी प्राप्त करने वाली कन्याओं के जानने योग्य बातें

[पाठ ४]

[लेखक—रघुनाथप्रसाद पाठक]

[अप्रैल के अङ्क से आगे]

विवाह

उठो ! उठो ! शील !

सुशीला ने कमला द्वारा, अपने को बड़े जोर से हिलाते-जुलाते हुए पाया। क्या तुम्हे पता नहीं है आज क्या दिन है ?

"नहीं, मुझे मालूम नहीं है।" सुशीला ने क्रोध के आवेश में उत्तर दिया।

"यह शान्ता के विवाह का दिन है। मैंने सुना था तुम लोग आज के लिये बड़ी २ तय्यारियाँ सोच रही थी। तुम लोग फूलों की मालाएँ बनाने वाली थीं।'

'अरे जीजी ! मैं तो बिलकुल भूल गई। तुमने अच्छा किया, याद दिलादी। आप बिन्दु को कह दें कि वह तत्काल फूल ले आये।" सुशीला ने बिस्तर से उठते हुये कहा।

सुशीला और दमयन्ती दोनो ने मिलकर २ बढ़िया पुष्प मालाएँ तय्यार कीं।

इस बीच में कमला तथा उसके माता पिता इत्यादि घर के लोग सस्कार मे जाने के लिये तैयार हो गये। सुशीला और दमयन्ती ने इस अवसर के लिये अपनी अपनी जम्पर स्वयं तैयार की थी। उन्हें पहन कर और फूलों की मालाएँ लेकर वे घर वालों के साथ शान्ता के घर गई। अपनी नई पोशाक में छोटा केशव खुशी से फूला न समाता था।

उस दिन प्रत्येक व्यक्ति प्रसन्नचित्त देख पड़ता था। यह सत्य है विवाह का अवसर आनन्द और उत्साह का अवसर होता है और इस अवसर पर लोग प्राय बड़े प्रसन्न होते हैं। परन्तु शान्ता का विवाह साधारण विवाहों से कुछ भिन्न था,

और इसकी अपनी खास विशेषताएँ थीं। वर और वधू दोनों तरुण और तन्दुरुस्त थे। दोनों परिपक्व आयु के थे। दोनों एक दूसरे को जानते और एक-दूसरे से प्रसन्न थे। दोनों हर प्रकार से एक-दूसरे के उपयुक्त थे। विवाह-संस्कार के समय शान्ता ने पर्दा नहीं किया वरन् विवाह की अपनी प्रतिज्ञाओं और विधियो का सुन्दरता के साथ अनुष्ठान किया। सुशीला की बनाई हुई पुष्प-माला वर महाशय के गले में डालते समय शान्ता ने जिस नारी सुलभ लज्जा और सुकुमारता का परिचय दिया वह देखते ही बनती थी। वर और वधू को उपस्थित सज्जनो द्वारा उपहार तथा पुष्प वर्षा द्वारा आशीर्वाद प्रदान की क्रिया ने इस सस्कार की महत्ता को बढ़ा दिया था। पुष्प-माला पहनाने तथा सप्तपदी की क्रिया के समय अनाथालय के सुमधुर बैंड ने वर और वधू का अभिनन्दन करके एक अजीब समा बाँध दिया था। वर वधू ने अग्नि के सामने अपने को विवाह-सूत्र में बाँधकर ससार-प्रवेश का पावन-व्रत लिया था।

विवाह-संस्कार के बाद जब आमन्त्रित लोग शान्ता के घर पर प्रीति भोजन कर रहे थे, शान्ता चुपचाप कमला के पास गई और अपनी माला उतार कर उसके गले में डालदी। इसपर दमयन्ती को बड़ा आश्चर्य हुआ। शान्ता ने धीरे से कमला से कहा 'बहिन ! इस माला को स्वीकार करो। मेरी इस सब प्रसन्नताका कारण आप हैं।'

जब कमला और सुशीला घर लौट रही थीं सुशीला ने कमला से पूछा "बहिन ! आपके गले में माला डालने का क्या मतलब था ?"

"जब पिछले साल मैं यहाँ थी शान्ता के पिता पास के गाँव के एक आदमी से उसका रिश्ता करने का यत्न कर रहे थे। वह आदमो एक बड़ा जिमींदार था और शान्ता की सब सखियाँ उसे बड़ी भाग्यशाली समझ रही थीं। जिस प्रकार हम आजकल आपस में बातें करती हैं उसी प्रकार विवाह और मातृत्व के सम्बन्ध में शान्ता से मेरी बातचीत हुआ करती थीं। एक दिन शान्ता रोती हुई मेरे पास आई और कहा, "कमला ! जिस आदर्श घर की तुमने चर्चा की है, वैसा घर मुझे प्राप्त नहीं हो सकता। वह व्यक्ति मेरी बातों की कतई पर्वा नहीं करेगा। वह न दयालु है और न शिष्ट वह तो मुझे अपनी दासी और गुलाम बनाना चाहता है। उसका आचरण भी ठीक नहीं है। जब पिता ही खराब हो तो मैं किस प्रकार अपनी सन्तान को पवित्र और श्रेष्ठ बना सकूँगी। इस पर मैंने शान्ता से पूछा, क्या तुमने ये बातें अपने माता-पिता को बतलाई है शान्ता ने उत्तर दिया मैंने अपने पिता को ये बाते

बतलाई थी। उन्होंने केवल दु.ख प्रकट करके मुझे कहा था। वह बड़ा अमीर आदमी है तुम एक बड़ी मालदार स्त्री बन जाओगी।" परन्तु शान्ता बड़ी चतुर लड़की थी। वह जानती थी कि धन दौलत, ठाठ-बाट और ऐश-आराम सच्चा सुख नहीं प्रदान कर सकते। उसने इस काम में मेरी मदद ली। मैंने शान्ता के माता-पिता को समझाया और अन्त में वे इस बात से सहमत हो गये कि योग्य वर के साथ शादी होने पर ही शान्ता सुखी रह सकेगी। अब उन्होंने उपयुक्त वर पा लिया है। क्योंकि सुनीति कुमार शान्ता के लिये हर प्रकार से उपयुक्त है। अब तुम समझी कि शान्ता ने मेरे गले में माला क्यों डाली थी ?

इसी बीच में वे तोनों बहनें एक जलूस देखने के लिये रास्ते में ठहर गईं। स्त्रियों का एक बड़ा समूह वर और वधू को पूजन के निमित्त देव-स्थान को ले जा रहा था। वर ३०-३५ वर्ष का जान पड़ता था और वधू १०-१२ वर्ष की बालिका थी। वर के साथ एक दुपट्टे में बँधी हुई वह बालिका ऐसी मालूम पड़ती थी मानो एक बकरी ऊँट के साथ बलात बाँध दी गई है। उस जलूस में बहुत शोर हो रहा था तथा धूल उड़ रही थी।

इस दृश्य को देख कर सुशीला के सामने वह दृश्य उपस्थित हो गया जब शान्ता और सुनीति कुमार श्रद्धा भाव में पास २ खड़े अग्निदेव को साक्षी करके एक दूसरे को पवित्र प्रतिज्ञाओं में बाँध रहे थे। सुशीला ने दमयन्ती को सम्बोधन करके जोर से कहा। "दमयन्ती, यह देखो गुड़ियों का कैसा अच्छा खेल है ?"

लड़कियाँ शेष रास्ते भर बिल्कुल शान्त और चुपचाप रहीं। घर जाने पर अवसर पाते ही दोनों सखियाँ कमला के पास गईं और पूछा। बहिन, क्या विवाह के सम्बन्ध में हमें और बातें बतलाओगी।

कमला ने प्रसन्न होकर कहा. 'तुम लोगों ने अच्छा प्रश्न किया है!' तुम लोगों को विवाह के सम्बन्ध में बहुत कुछ जानने की जरूरत है।

"बहुत से आदमियों के लिये विवाह का अर्थ यह होता है कि स्त्री उनकी सम्पत्ति और जायदाद बन जाती है। वे जिस प्रकार चाहें उसका उपभोग कर सकते हैं, और अपनी मर्जी के अनुसार उसे चला सकत ह। उनके लिये स्त्री बच्चे पैदा करने वाली, खाना बनाने वाली और उनकी सेवा सुश्रूषा करने वाली मेशीन होती है और वे उसके मालिक और प्र भु होते हैं। विवाह का उद्देश्य इतना ही नहीं वरन् इससे भी ज्यादा उच्चहोता है।

यह ठीक है मनुष्य घर का स्वामी होता है। परन्तु स्त्री पुरुष की मित्र होनी चाहिए न कि उसकी सेविका। उन दोनों को एक दूसरे को इसलिये पसन्द करना चाहिए कि वे एक दूसरे को प्रेम करते और यह अनुभव करते हैं कि वे मिल कर सुखी जीवन व्यतीत करेंगे। इस आधार पर विवाह सूत्र में बँधने पर उन्हें एक दूसरे के प्रति दयालु, सभ्य, सहिष्णु, सच्चा और निस्वार्थी होना चाहिए तथा एक दूसरे पर विश्वास भाव रखना चाहिए।

घर बनाने का कार्य एक बड़ी जिम्मेवारी का कार्य होता है। सुयोग्य सन्तान पैदा करना और उन्हें लोक सेवा के लिये तय्यार करना इससे भी महान् जिम्मेदारी का काम होता है। बच्चे अपने माँ-बाप के आचरण से बहुत कुछ सीखते हैं। यदि वे लोग अपने माता-पिता को आपस में लड़ते-झगड़ते, गाली-गलौज करते, ईर्ष्या-द्वेष करते, खुदगर्ज, स्वार्थी, तथा बुरा जीवन व्यतीत करते हुए देखेंगे तो तुम लोग सहज ही सोच सकती हो कि वह घर कितना खराब होगा और वे बच्चे कितने खराब बनेंगे।

परन्तु जब सुनीतिकुमार और शान्ता जैसे पवित्र दिमाग़ और शरीर वाले व्यक्ति विवाह सूत्र में बँधेंगे तो निश्चय ही उनका घर सुन्दर होगा। स्त्री पुरुष की सज्जनता का आदर करेगी और उसकी आज्ञा का पालन करने में उसे प्रसन्नता होगी। वह खाना बनायेगी और प्रेम और निष्ठा तथा प्रसन्नता के साथ घर-गृहस्थ का काम करेगी जिससे घर में उसे हर प्रकार का सुख और आनन्द हो। घर के अन्य लोगों, बड़ों का सम्मान और सेवा करना तथा छोटों से प्रेम तथा उनके भावों का आदर करना अपना कर्तव्य समझेगी। उसके सद्व्यवहार से घर सुखधाम बन जायगा। पुरुष भी स्त्री के लिये उत्तम वस्त्र और भोजन तथा उसकी अन्य जरूरतो तथा सुख और आराम की व्यवस्था करेगा। उसके आराम और प्रसन्नता का सदैव ध्यान रक्खेगा। घर में स्त्री का वही स्थान है जो समाज में महारानी का होता है। जिस घर के लोग इस बात को समझते हैं वे स्त्री का आदर करते और उसे सुखी और सन्तुष्ट बनाने का यत्न करते हैं। यदि परमात्मा उन्हें बच्चे देता है तो वे प्रेम और ध्यान से उनका लालन-पालन करते हैं और सदैव बुद्धिमानी से उन्हें शिक्षा देते हैं और उनके सामने सदैव श्रेष्ठ जीवन का उदाहरण प्रस्तुत करते रहते हैं। ऐसा घर आदर्श घर कहलाता है।

दमयन्ती ने पूछा, बहिन ! ऐसे घर की संख्या अधिक क्यों नहीं है।

कमला ने उत्तर दिया। "इसलिये कि लड़कियाँ इन बातों को न जानती हैं और न कभी उन्हें सोचती हैं। वे सिर्फ यह चाहती हैं जल्द से जल्द जब समय हो उनका विवाह कर दिया जाय। क्योंकि ऐसा करना एक रिवाज की चीज है। अपने जीवनों को पवित्र बनाना वे जल्दी नहीं सीखती हैं। तुम जानती हो कि जीवन की पवित्रता कितनी जरूरी और महत्वपूर्ण चीज है।

अब मैं एक अत्यन्त पवित्र चीज के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहती हूँ। वह चीज स्त्री और पुरुष के पारस्परिक मिलन के सम्बन्ध में है या यों कहो कि उस रीति के सम्बन्ध में है जो परमात्मा ने सन्तान की उत्पत्ति के लिये निश्चित की है।

सन्तानोत्पत्ति विवाह का एक बड़ा उद्देश्य है। जब स्त्री और पुरुष अग्नि-देव को साक्षी करके स्त्री-पुरुषों के सामने अपने को वि-ाह की डोरी में बाँध लेते हैं तब वे एक प्राण और दो शरीर वाले बन जाते हैं। विवाह होने पर वे सन्तानोत्पत्ति के लिये एक दूसरे से मिल सकते हैं। ऐसा करना परमात्मा की दृष्टि में पवित्र होता है। परन्तु जब अविवाहित स्त्री पुरुष आपस में मिलते हैं तब यह एक पृथक् बात बन जाती है। परन्तु विवाह से पहले और विवाह होने के पश्चात् पति के अतिरिक्त दूसरे पुरुष के साथ मिलना बहुत बड़ा पाप होता है। ऐसा करना व्यभिचार कहलाता है।

व्यभिचार के लिये बहुत कठोर दण्ड की व्यवस्था की गई है। बहुत से देशों में व्यभिचारी पुरुष और व्यभिचारिणी स्त्रियाँ पत्थर मार २ कर मार दिये जाते थे। कई देशों में उनको जीता जला दिया जाता था। क़त्ल करने वाले और व्यभिचारी लोग एक ही कोटि में रक्खे जाते थे। व्यभिचार करना ही पाप और निन्दनीय नहीं बरन व्यभिचार का विचार करना भी परमात्मा की दृष्टि में व्यभिचार का अपराध समझा जाता है। यह बात बड़ी महत्वपूर्ण है ? क्या यह बात नहीं है ? परमात्मा हमारे हृदयों की एक २ बात को जानता और देखता है ?

यदि हम इस बात को अच्छी तरह समझ लें तो हम पाप से बच जायँ। पाप और बुरे कर्म करने के लिये हम ऐसी जगह देखते हैं जहाँ हमें संसार के लोग न देख सकें। इस सम्बन्ध में मैं तुम्हें एक बहुत अच्छी कहानी सुनाती हूँ।

सुशीला ने कहा, 'हाँ जीजी !! जरूर सुनाओ। इससे हमें यह बात अच्छी तरह समझ में आ जायगी।'

कमला ने प्रसन्न होकर कहा, 'अच्छा, सुनो।'

एक गुरु के पास दो शिष्य विद्या पढ़ने के लिये गये। पहले समय में गुरु लोग विद्या पढ़ाने से पहले इस बात की जाँच किया करते थे कि शिष्य विद्या पढ़ने का अधिकारी है या नहीं। जो अधिकारी होता था उसे विद्या प्रदान करते थे। उन गुरु जी ने दोनों शिष्यों को पाच २ रुपये देकर कहा कि इन्हें ऐसे स्थान में जाकर गाढ़ो जहाँ तुम्हें कोई देखता न हो। एक शिष्य ने दूसरे से कहा, "यह कौन सा मुश्किल काम हैं। मैं अभी रुपये गाढ़ कर वापस आता हूँ।"

यह कहकर वह पास की एक झाड़ी मे गया और रुपये गाढ़कर गुरु जी के पास चला आया। दूसरा शिष्य दिन भर इधर उधर फिरता रहा और अन्त में निराश होकर गुरु जी के पास लौट आया। गुरु जी ने पूछा 'क्यों भाई! तुम रुपये वापस क्यों ले आये हो। क्या इन्हे गाढ़ने के लिये कोई स्थान नहीं मिला। शिष्य ने हाथ जोड़कर बड़ी विनय से उत्तर दिया 'महाराज! मैंने दिनभर ऐसे स्थान की खोज की जहाँ मुझे कोई देख न सके। परन्तु मुझे ऐसा कोई स्थान न मिला जहाँ परमात्मा की निगाह से मैं बच सकता। अन्त में निराश होकर लौट आया हूँ।" यह सुनते ही गुरु ने शिष्य को छाती से लगा लिया और कहा 'तुम विद्या पढ़ने के अधिकारी हो।'

व्यभिचार के दुष्परिणामो और कष्टो का तनिक खयाल करो। इससे जो सन्तानें पैदा होती हैं वे बिना नाम और बाप की कहलाती है। इसके दुष्परिणामों के फलस्वरूप घर बर्बाद हो जाते हैं और निर्दोष व्यक्तियो को कष्ट सहन करने पड़ते हैं। कोई किसी के दुःख मे शरीक नही रहता।

'ये अवस्थाएँ ऐसी हैं जिनमें कुकर्म और पाप जाहिर रहता है और उन्हें सब जानते हैं। उन बहुत से स्त्री पुरुषों के सम्बन्ध में क्या कहा जाय जिनके पाप छिपे रहते हैं जो दुनिया के सामने अपने को धर्मावतार प्रकट करते है, जो मन्दिरों, मस्जिदों और गिर्जों में प्रार्थना और उपासना करके साक्षात देवता बने होते हैं जो दुनिया को उपदेश देते परन्तु रात्रि के अन्धकार में वा दुनिया की आँखों से बच कर पाशविक लीलाएँ करते हैं। मत समझो उनके पापों और कुकर्मो का बदला नहीं मिलता या वे छिपे रहते हैं। परमात्मा की अटल व्यवस्था से उन्हें अपने कुकर्मों का दण्ड मिलता है। उस दण्ड को भले ही हम न देख सकें उनके पाप और कुकर्म उनकी बात-चीत और शरीर की चेष्टा से प्रकट हो जाते है।'

'काम-वासना का दमन सहज कार्य नहीं है। कुछ आदमियो के लिए तो यह

कठिन काम होता है परन्तु यदि आदमियों की यह इच्छा पशुओं जैसी न बन गई हो तो इसका दमन करना सबके लिये आसान होता है उनके लिये तो बहुत ही आसान होता है जो बचपन से ही पवित्र वातावरण में रहते हैं।

'अब मैं तुम दोनों से पूछती हूँ कि अब तक के पाठ से तुमने क्या सीखा है ?"

'सबसे आवश्यक बात यह है कि तुम लोग अपने जीवनों को पवित्र बनाये रक्खो और माता बनने की अपनी आश्चर्य पूर्ण शक्ति पर गहरा विचार करो जो परमात्मा की ओर से एक पवित्र देन के रूप में तुम्हें मिली हुई है। इसे मातृ-शक्ति कहते हैं। इसकी पवित्रता की रक्षा के लिए हमारी माताओं और बहनों ने अपन प्राणों तक का बलिदान कर दिया है। ऐसे बलिदानों से हमारा भारतवर्ष का इतिहास चमक रहा है। बहुत दूर न जाकर राजपूताने के इतिहास को पढो तो उसमें बहुत से उज्ज्वल उदाहरण मिलेंगे। इसे केवल उसी के अर्पण करो जिसे तुमने अपना पति स्वीकार किया है।

'तुम अपने पवित्र जीवन से अपनी सखी सहेलियों के जीवनों को भी पवित्र बना सकती हो। पवित्र जीवन का प्रभाव बहुत दूर तक पहुँचता है इतनी दूर तक कि जिसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकती हो।'

'हमारे बोर्डिङ्ग हाऊस में लड़कियाँ चहार दीवारी के भीतर रक्खी जाती हैं। इसका क्या कारण है ? इसमें सन्देह नहीं कुछ लड़कियों के गलत रास्ते पर पड़ जाने का भय होता है। जिन्हें अपनी इस शक्ति को पवित्र रखने का ज्ञान अथवा साहस नहीं होता है। परन्तु यदि लड़कियाँ पवित्र हों और पुरुषों से हेल मेल रखना पसन्द न करती हों तो उनके फिसलने का बहुत कम डर होता है। किसी भी पुरुष या लड़के को अपने साथ आजादी से मिलने जुलने या बात-चीत मत करने दो। न उसे बुरी बातें कहने दो और न अपने शरीर को छूने दो। इस रीति से तुम उनकी इच्छाओं का दमन करने और अच्छे आदमी बनने में मदद कर सकती हो। जब भारतवर्ष की लड़कियाँ अपने स्त्रीत्व का आदर करना सीख जायेंगी और पुरुषों की बुरी भावनाओं को जगाए बिना उनके साथ मिलना-जुलना सीख जायेंगी तब इन चहार दीवारियों की जरूरत नहीं रहेंगी ?"

'स्त्री का जन्म पुरुष को सहायता देने और उसका जीवन पवित्र बनाने के लिए हुआ है। उसका जन्म पुरुष की दासी बनने के लिए नहीं हुआ है। और

न केवल उसकी काम वासना को तृप्त करने के लिए ही हुआ है। इसलिए भी नहीं हुआ है कि वह अपना कोई अस्तित्व या आचार विचार न रखे। प्रसन्नता है आज हमारे देश की स्त्रियाँ इस बात को अनुभव करने लग गई हैं। वे यह सिद्ध कर रही हैं कि उनका भी मन है, दिमाग है और उनमें शिक्षण, जन-सेवा और शासन करने की योग्यता है। वह दिन बड़ा शुभ होगा जब सामूहिक रूप मे उनकी विद्वत्ता और योग्यता जीवन के गुणो और पवित्रता क साथ चमकेगी।'

यह कह कर कमला रुक गई और एक दम शिर झुकाकर बड़े गम्भीर भाव मे बोली,

'लड़कियो! बताओ क्या तुम मतलब समझीं? पवित्र स्त्री बनने का क्या अर्थ है? मै हृदय से चाहती हूँ तुम लोग इस बात को अनुभव करो। मै चाहती हूँ तुम पवित्र और अच्छी स्त्री बनो। जब तुम्ह रा किसी अच्छे पुरुष के साथ विवाह हो जाय और जब तुम अपने मासूम (निर्दोष) बच्चो के चेहरो को देखो तब तुम्हारे पिछले जीवन का कोई धब्बा उन चेहरो में न देख पड़े और वह धब्बा तुम्हे शर्मिन्दा न करे। क्या तुम मेरी इस बात को समझी?'

कमला को इस बात का कोई उत्तर न मिला। अपने सामने दो शिरो को झुका हुआ देखकर उसने समझ लिया कि दोनो लड़किया उसकी बात का मतलब समझ गई हैं।"

अन्त में कमला ने कहा 'आओ, अब प्रार्थना करे —

'परम पिता प्रभो! हमे पवित्रता के दर्शन कराओ। जीवन मे पवित्रता धारण करने की हमे सामर्थ्य प्रदान करो और अपनी इच्छाओ पर विजय पान की शक्ति दो। हमे दूसरो को भी पवित्र बनाने की शक्ति प्रदान करो ताकि हमारा समाज सुख सम्पत्ति का भण्डार बना रहे।"

क्या मुस्लिम राज भारतीय राज है ?

एक अँग्रेज की जिज्ञासा और महात्मा गांधी का समाधान

क्या आप ब्रिटिश शासन की अपेक्षा मुस्लिम शासन को पसन्द करेंगे ?

यह प्रश्न अच्छी तरह नहीं किया गया है। अँग्रेज होनेके कारण यह सोचना आपका स्वभाव नहीं जा सकता कि भारत किसी न किसी के द्वारा शासित होने के योग्य है। मुस्लिम राज भारतीय राज के समान है। अच्छा होता मुझ से आप यह प्रश्न करते कि मैं ब्रिटिश शासन के मुकाबले मे बङ्गाली या मराठा शासन को पसन्द करता हूँ वा नही। मराठा, बङ्गाली, सिक्ख, द्रविड, पारसी, ईसाई (भारतीय) मुसलमान ये सब शासन भारतीय शासन होंगे। कुछ मुसलमान अपने को पृथक राष्ट्र समझते हैं। इससे मेरी धारणा म कोई अन्तर नहीं आता है। मेरे लिये इतना ही पर्याप्त है कि मै उन्हे ऐसा नही समझता हूँ। वे सब मातृ भूमि की सन्तान हैं। मुसल्मानोको यदि पृथक् माना जाय तो उन्हे भारतम बिखरे हुए निहत्थे आठ करोड़ की चिन्ता होगी परन्तु आपको तो समस्त ब्रिटिश राष्ट्र और अपनी गोरी फौज की ही चिन्ता करनी होगी। आप शासक जाति के हैं। पैंतीस करोड़ जनता मे जिनपर आप शासन करते हैं आप एक लाख से भी कम हैं। इसकी आपको तथा हमको दोनो को लज्जा आनी चाहिये। किसे अधिक लज्जा अनुभव करनी चाहिये, इसका निर्णय करने की आवश्यकता नही है। जितनी जल्दी हम इसका प्रतिकार कर सकें उतना ही दोनो के लिये कल्याण प्रद है।

अब आप मेरे उत्तर को भली प्रकार समझ लेगे। मेरा उत्तर यह है कि मैं अँग्रेजी शासन की अपेक्षा मुस्लिम शासन को पसन्द करूँगा। मुझे इसमे तनिक भी सन्देह नही है कि यदि आज अँग्रेजी शासन हट जाय जो ब्रिटेन के निवासियो की सुविधा के अनुसार एक दूसरे का पक्ष लेकर हम मे भेद भाव उत्पन्न करता है तो हिन्दू और मुसलमान अपने भेद भावो को भूल जायेंगे और भाई २ की नाईं जो वास्तव मे भाई है, रहेंगे। परन्तु यदि यह मान लिया जाय कि कुछ बुरा होता है और देश मे गृह-युद्ध होता है तो यह कुछ दिनो और महीनो का ही होगा और हम अपने अपने कार्यों मे लग जायेंगे हम दोनो का पद समान है। आपकी दृष्टि में यह असमान है। आपने हमे निहत्था बना दिया है। हममे से वे लोग जिन्हे आपका शिक्षण मिला है, हमारी अपेक्षा आपके अधिक है। सैनिक शक्ति मे तो हम आपका सामना नहीं कर सकते। आपको ज्ञान नही है कि आपके शासन ने राष्ट्र को किस प्रकार निकम्मा बनाया है। ज्योही ब्रिटिश शासन का वास्तविक रूप मे अन्त होगा त्योंही हम अपनी त्रुटियों के होते हुए भी ऐसे शक्तिशाली बनेगे जैसे पहले कभी न बने होंगे। (हरिजन)

मेरी अरब की यात्रा

(ले० — श्री प० कन्हैया लाल जी मिश्र आर्योपदेशक काशी)

मैं सन् १९३८ अगस्त से जनवरी १९३९ तक सिंगापुर तथा चीन की ओर प्रचार करता रहा। तत्पश्चात् मुझे फरवरी मास सन् १९३९ में कलकत्ते आना पड़ा। क्यों कि मेरे मित्र सेठ मोता लाल जैन कलकत्ता निवासी के सुपुत्र का विवाह संस्कार था। जिसमें सम्मिलित होने के लिए सेठ जी ने मुझे आग्रह पूर्वक बुलाया था। मैं कलकत्ते आया। महाशय तुलसी सेवक आर्य समाज कलकत्ता से मुझे एक पुस्तक प्राप्त हुई जिसका नाम "अरब में सात साल" है और जिसके लेखक प० रुचिराम आर्योपदेशक है। मैंने उसको पढ़ा, पढ़ने पर ज्ञात हुआ कि प० रुचिराम जी अरब और ईराक आदि प्रदेशों में सात साल बिना पास पोर्ट लिये घूमते रहे। इस यात्रा में उनको अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा था जिसका उन्होंने अपनी पुस्तक में वर्णन दिया है। मैं जब सिंगापुर में चला था उस समय मैं प० सकलदेव राय शर्मा उप प्रधान आर्य समाज सिंगापुर, ठाकुर विन्ध्याचल सिंह उप मन्त्री आर्य समाज सिंगापुर तथा और अन्य आर्य सज्जनों से कह आया था कि कलकत्ते से लौटकर पुनः मैं सिंगापुर आऊंगा और सिंगापुर से फिलीपाइन्स द्वीप तथा जापान की ओर जाऊंगा। परन्तु "अरब में सात साल" नामक पुस्तक पढ़कर मैंने पूर्वी द्वीप समूह की ओर जाना स्थगित किया और अपने मित्र सेठ एम० के० रत्नाकर मालिक इन्दौर सोप फैक्टी तार देव बम्बई को पत्र लिखकर परशियन गल्फ के जहाजों का पता लगाया। सेठ जी का पत्र सूचना पूर्ण समय पर आ गया और मैं बम्बई पहुँच एस० एस० बार पेटा नामक जहाज से प्रथम पोर्ट 'पसनी' की ओर चला। बम्बई जट्टी पर सेठ एम० के० रत्नाकर, सेठ सरस्वती प्रसाद सतना, सेठ लाल जी मूल जी रनिया, महाशय लालसिंह आदि कई सज्जन मुझे भेजने आये। मैं पसनी गवादर होता हुआ मसकत पहुँचा। पसनी और गवादर के समाचार मैं फिर किसी लेख में दूंगा। मसकत बन्दर पूर्वी अरब में बड़े सुन्दर स्थान पर समुद्र किनारे बसा है। यहां सुल्तान का राज्य है जिनके महल समुद्र तट पर बने हैं। मैं मसकत पहुँचा और सेठ धन जी मुरार जी के पास ठहरा।

मोहम्मद साहब से १००० वर्ष पूर्व अरब

'तोहफितिल अमान' नामक अरबी इतिहास को 'अब्दुल्ला इब्ने हुसेन अस्सालेमी' ने लिखा है। जो अमान प्रान्त के नजवा नगर का निवासी है और यह इतिहास नजवा के

ईमामों की सरक्षता में लिखा गया है। और यह इतिहास अरब मे प्रामाणिक माना जाता है। उसमें लिखा है कि अरब में इस्लाम प्रारम्भ होने के १००० वर्ष पूर्व यमन देश बहुत सुन्दर और धन धान्य पूर्ण था। उस समय वहाँ पर जो राजा राज करता था। उसको इतिहास लेखक 'ला मजहब' लिखता है। परन्तु बहुत से लक्षणों से जान पड़ता है कि वह चन्द्रवशी क्षत्री राजा था जो मूर्ति पूजक था जिसकी राष्ट्रीय पताका लाल रग की थी और उस पर अर्द्ध-चन्द्र का चिन्ह था। यह चिन्ह बहुत छोटा था। इस पताका को 'महावीरी' पताका कहा जा सकता है। बहुत कुछ खोज करने पर उस राजा के शुद्ध नाम का पता नही चलता। उस समय यमन में सात नदिया थीं। जिनका पानी रोकने के लिये यमन के क्षत्री राजा ने बाँध बनवाया था। जो किसी कारण टूट गया। इसके टूटने म यमन म दुष्काल पड गया। उस दुष्काल के कारण यमन से दो दल क्षत्रिया क निकल पड़े। एक जत्था श्याम की ओर चला गया। उस जत्थे के लोग यवन काल में मुसल्मान नहीं बने। उनके वशज अब तक मिश्र देश मे बसे हैं। दूसरा जत्था चालीस हजार आदमियों को लेकर 'मालिक इब्ने फहम' नामक क्षत्री अदन, मकल्ला होता हुआ अमान के क्लात बन्दर म पहुँचा। क्लात नगर प्राचीन नगर सुरपुर या शूर के निकट था (शूर और क्लात का इतिहास आगे सिलसिले से आयेगा) और इस समय भी क्लात नगर टूटी फूटी अवस्था में बसा है जिसको मैं स्वय देख आया हूं। उस समय सारे अरब में ईरानियों का राज्य था और ईरान सरकार की ओर से प्रत्येक प्रान्त में गवर्नर रहता था, जिसका ईरान शाह से सीधे सम्बन्ध था। उस समय क्लात नगर मे एक बलशाली गवर्नर रहता था। अरब के पूर्वी भाग की सारी प्रजा अग्नि पूजक अर्थात् महात्मा जरदुश्त की उपासना करती थी। परन्तु मालिक इब्ने फहम के सम्बन्ध में इतिहास लेखक ने पक्षपात के कारण धर्म के सम्बन्ध मे अन्धकार ही रक्खा है। क्योंकि लेखक उसको ला मज़हब लिखता है। यद्यपि यह बात अन्य इतिहासो से सिद्ध है कि यमन और अरब के लोग उस समय मूर्ति पूजक हिन्दू थे। परन्तु इतिहास लेखक की दृष्टि में मालिक इब्ने फहम ला मज़हब ही था। अच्छा, जो कुछ भी हो, उस समय क्लात नगर के गवर्नर की शक्ति के कारण मालिक इब्ने फहम अपनी नौकाएँ क्लात बन्दर में न ठहरा सका। गवर्नर की जल सेना ने मालिक इब्ने फहम की जल सेनाओं को क्लात से खदेड दिया। मालिक इब्ने फहम अपना जत्था लिये हुए वर्तमान अमान की खाडी (प्राचीन उर्मा की खात) के नगर नज़वा में आ पहुँचा। यहाँ पर भी ईरानी गवर्नर था। परन्तु वह शक्तिहीन था। इस कारण मालिक इब्ने फहम ने गवर्नर से युद्ध कर उसकी सेना को परास्त कर नज़वा पर अधिकार कर लिया और अपना राज्य स्थापित किया।

उस समय मालिक इब्ने फहम की अवस्था ४८ वर्ष की थी। वर्तमान मसकत नगर के उत्तर की ओर एक नगर संजार था उस पर भी मालिक इब्ने फहम ने अधिकार किया और उसका नाम संजार के स्थान पर सहार रक्खा। इसी सहार नगर को मालिक इब्ने फहम ने अपनी राजधानी बनाई। सहार नगर अब तक विद्यमान है। इस प्रकार धीरे धीरे सारे अमान प्रान्त (उमा प्रान्त) के ईरानी शासकों को परास्त कर मारे उमा प्रान्त में अपना राज स्थापित कर दिया। ईरानियों ने उमा प्रान्त अच्छा उपजाऊ बना रक्खा था। स्थान स्थान पर नहरें खोद रखीं थीं। इन्हीं नहरों के पानी से सींच सींच कर खजूरों की बाटिकायें लगाई थीं। जब मालिक इब्ने फहम ने सारे उमा प्रान्त के गवर्नरों को उमा प्रान्त छोड़ने की आज्ञा निकाली। उस समय गवर्नरों ने शाह ईरान दारा बिन दारा से सैनिक सहायता मांगी। शाह ईरान ने सहायता भेजी। परन्तु मालिक इब्ने फहम की सेनाओं के सामने ईरानी सेनाएँ न टिक सकीं। ईरानी सेनाएँ पराजित हुईं। इस प्रकार ईरानियों को उस समय उमा प्रान्त छोड़ना पड़ा। इस समय भी उमा प्रान्त में जितनी भी खजूर की बाटिकाएँ, खेती और नहरें हैं वे सब ईरानियों के हाथ की बनाई हुई हैं। उनकी मरम्मत कर अरबी लोग इस समय अपना उदर पोषण करते हैं। अरबियों ने इस सम्बन्ध में विशेष उन्नति अब तक कोई नहा की। इस प्रकार मालिक इब्ने फहम सारे उमा प्रान्त का स्वतन्त्र राजा बन बैठा। जब मालिक इब्ने फहम यमन से चला था उस समय वह लाल पताका (महावीरी झण्डा) अपने साथ उमा प्रान्त में लाया था। वही उसकी राष्ट्रीय पताका थी और वह पताका इस समय तक वर्तमान सुल्तान, मसकत, शेख दबई और ईराक की भी राष्ट्रीय पताका है।

मालिक इब्ने फहम के समय तक यमन की ओर से जुहैर नामक क्षत्री बड़ी भारी सेना लेकर उमा प्रान्त में आ पहुँचा। उनके साथ भी बहुत बड़ी सेना थी। जिसका समाचार पाकर मालिक इब्ने फहम भीत हो गया और विचार करने लगा कि ऐसा न हो कि मालिक इब्ने जुहैर युद्ध कर मझ से उमा प्रान्त छीन ले। इस कारण मालिक इब्ने फहम ने मालिक इब्ने जुहैर से सन्धि कर ली और मालिक इब्ने जुहैर की युवती कन्या से मालिक इब्ने फहम ने विवाह कर लिया। इस सम्बन्ध से मालिक इब्ने फहम का राज सुरक्षित हो गया, और वह आनन्द पूर्वक उमा प्रान्त में राज करने लगा। (शेष फिर)

("ईराक की यात्रा" नामक पुस्तक के कुछ अंश)

सुमन संचय

[१]

उपदेश का अधिकार

एक बार एक स्त्री अपने लड़के को लेकर महात्मा नानक के पास गई। उस लड़के के समस्त शरीर पर फोड़े फुन्सियाँ छाई हुई थी और उनके कारण वह बहुत दुखी था। वह गुड़ बहुत खाता था और उसकी इस आदत को छुड़ाने में माता-पिता सफल नहीं हुए थे। उस स्त्री ने महात्मा नानक से कहा 'महाराज ! आप किसी प्रकार इस लड़के की आदत छुड़वा दें।' महात्मा न कुछ क्षण सोच कर कहा, 'देवि ! तुम चार पाँच दिनों के पश्चात् इस लड़के को लेकर आना।" स्त्री ने ऐसा ही किया। महात्मा ने लड़के को चुमकार कर कहा 'बेटा ! इस गुड़ की आदत से ही तुम्हें फोड़े फुन्सियों का कष्ट उठाना पड़ रहा है। तुम इस आदत को छोड़ दो। तुम्हें शान्ति मिल जायगी।" यह सुन कर स्त्री ने महात्मा से कहा, यह बात तो तुम उस दिन भी कह सकते थे। आज कहने से क्या खास बात हो गई है ?' महात्मा न उत्तर दिया 'देवि ! उस दिन मैंने यह उपदेश इसलिए नहीं दिया था कि मैं स्वय गुड़ खाता था। मै समझता था कि जब मैं स्वय गुड़ खाने का अभ्यासी हूँ तो मुझे इस लड़के को उपदेश देने का कोई अधिकार नहीं है और न मेरा उपदेश प्रभावशाली हो सकता है। उसके दूसरे दिन से ही मैंने गुड़ का परित्याग कर दिया है। अपने निश्चय में बल लाने के निमित्त ही मैंने चार पाँच दिन का अवकाश चाहा था।' महात्मा की यह बात सुन कर वह स्त्री बड़ी प्रभावित हुई और महात्मा के उपदेश से उस लड़के ने अपनी आदत छोड़ दी।

[२]

भगवान बुद्ध और दुष्ट व्यक्ति

श्रावस्ती के राजा के पुरोहित का पुत्र बड़ा क्रूर और हिंसक था। वह पुरुषों की तर्जनी उँगली काट काटकर संग्रह किया करता और उन उँगलियों की एक माला बना कर पहने रहता था। इसी कारण लोग उसे अङ्गुलिमाल कहा करते थे।

उसके अत्याचारों से श्रावस्ती की प्रजा बड़ी दुखी थी। एक दिन भगवान बुद्ध श्रावस्ती में पहुँचे। उस समय वहाँ चारो ओर अंगुलिमाल के अत्याचार और राक्षसी व्यवहार की चर्चा फैली हुई थी। श्रावस्ती के राजा प्रसेनजित उसके अत्याचारों से अत्यन्त क्रुद्ध थे और उन्होने उसके पकड़ने की आज्ञा दी थी पर वह पकड़ा नहीं जाता था।

एक दिन भगवान् बुद्ध भिक्षा के लिए श्रावस्ती के निकटवर्ती किसी ग्राम मे जा रहे थे। अंगुलिमाल ने उन्हे तङ्ग करने के संकल्प से पुकार कर कहा 'हे भिक्षु! खड़े रहो।' भगवान बुद्ध न ठहरे। अंगुलिमाल ने तीन चार बार पुकार कर ठहरने के लिए कहा, परन्तु भगवान बुद्ध न कोई पर्वा न की और वे चलते ही रहे। अन्त में अंगुलिमाल ने बड़े रोष मे आकर कहा 'हे भिक्षु! तुम ठहरते क्यो नही हो। तुम तो भागे जा रहे हो।' भगवान बुद्ध न उत्तर दिया 'इस संसार मे उत्पन्न हुई सब वस्तुएं चल रही हैं और सब से अधिक तुम चल रहे हो' महात्मा बुद्ध की यह बात अंगुलिमाल के मर्म पर जाकर लगी और उसके ज्ञान नेत्र खुल गए। वह महात्मा के चरणो में गिर पड़ा। महात्मा ने उसे आशीर्वाद देकर भिक्षु बना दिया। उस दिन सायकाल को जब श्रावस्ती का राजा दर्शन के लिए आया तब उसने बुद्धदेव से अंगुलिमाल के पकड़ने के लिए स्वय प्रस्थान करने की अपनी इच्छा प्रकट करके उनका आशीर्वाद माँगा। राजा की बातें सुनकर भगवान बुद्ध देव ने हसकर अंगुलिमाल की ओर संकेत करके कहा राजन्! अंगुलिमाल तो आपके पास ही बैठा है। आप किसे पकड़ने जाइएगा। महाराज यह वचन सुन और अंगुलिमाल को प्रशाँत भिक्षु रूप मे देख अत्यन्त विस्मित हो वहाँ से अपने प्रासाद को पधारे।

[३]

महात्मा लिंकन

महात्मा लिंकन एक बहुत साधारण स्थिति के व्यक्ति थे। अपने व्यक्तिगत गुणों और परिश्रम के बल पर उन्होंने अमेरिका के प्रधान के अत्यन्त गौरवमय पद को अलंकृत किया था। जब वे प्रधान थे तब एक दिन एक विराट सभा मे भाषण देने के लिए व्याख्यान के कमरे में से गुजर रहे थे। हाल में बड़े बड़े अमीर घरों की देवियाँ बैठी हुई थीं। एक देवी ने दूसरी से जोरों से कहा 'क्या यही लिंकन हैं?'

अरे, यह तो बड़ा मामूली व्यक्ति जान पड़ता है। महात्मा लिंकन ने यह बात सुन ली और कहा 'देवि ! यह सत्य है परन्तु परमात्मा मामूली व्यक्तियों को ही अधिक प्यार करते हैं यदि ऐसा न होता तो संसार में मामूली व्यक्तियों की संख्या अधिक न होती।"

[४]

महात्मा ईसा

महात्मा ईसा भोजन कर रहे थे उनके आस पास दुष्ट प्रकृति के कुछ पापी व्यक्ति आकर बैठ गए। इस सारे दृश्य को फरीशियों ने देखा और उन्होंने ईसा के शिष्यों से कहा कि तुम्हारा आचार्य कैसा है ? वह तो दुष्टों और पापियों के साथ बैठकर खाता-पीता है। यह बात ईसा के कानों तक पहुँची तो ईसा ने उत्तर दिया "भाई ! वैद्य की आवश्यकता तन्दुरुस्त लोगों को नहीं बीमारों को ही होती है, इसी प्रकार सुधारकों की आवश्यकता भी पापियों को ही होती है इसी लिए मैं इन पतित भाइयों के साथ उठता बैठता और खाता पीता हूँ" यह उत्तर सुनकर उनके निन्दक लज्जित हो गए।

साहित्य-समीक्षा तथा प्राप्ति स्वीकार

आर्य्य सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति

लेखक—श्री क्षितीश वेदालङ्कार, प्रकाशक—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल काङ्गडी। मूल्य ।।)

वेदान्त-विज्ञान प्रथम भाग

लेखक—श्रीगोपाल जी बी० ए०, प्रकाशक—प्राच्य साहित्य सेवा मण्डल, ७५ हनुमान रोड नई देहली तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ देहली सजिल्द १।) (मण्डल के सदस्यों के लिये १)

हम आर्य्यसमाजी क्यों बनें ?

लेखक—प० अवधविहारीलाल एम० ए०, बी० यल०, प्रकाशक—आर्य्य-समाज १६ कार्नवालीस स्ट्रीट कलकत्ता। मूल्य ।—)

समीक्षा

आर्य चरित माला

आर्य्य साहित्य भवन नई सडक देहली के अध्यक्ष श्री गोविन्दराम हासानन्द जी ने 'आर्य्य चरित माला' के नाम से आर्य्यसमाज के विद्वानों और नेताओं की संक्षिप्त जीवनियाँ प्रकाशित करने का आयोजन किया है। इस समय ऋषि दयानन्द, गुरु विरजानन्द तथा आचार्य्य रामदेव जी की जीवनियाँ हमारे सामने । पुस्तकों की छपाई मोटे टाइप में की गई है। भाषा सरल तथा आकार-प्रकार आकर्षक है। इस माला की प्रत्येक पुस्तक का मूल्य ।। नियत किया गया है छात्र हितकारी पुस्तकालय दारागञ्ज प्रयाग ने देश विदेशके महापुरुषों की इस प्रकार की बहुत सी जीवनियाँ एक नियत मूल्य पर छापने का आयोजन किया था। इस आयोजन से जनता को बहुत लाभ पहुँचा है। आशा है आर्य्यसमाज के प्रकाशक की इस योजना से भी आर्य्य-जगत् को लाभ पहुँचेगा।

आर्य्य मैरेज ऐक्ट की अंग्रेजी व्याख्या

श्री माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त जिन्होंने आर्य विवाह ऐक्ट असेम्बली से

पास कराया था उक्त ऐक्ट की विस्तृत व्याख्या २ वर्ष हुए अँग्रेजी में लिखी थी। जिससे जनता का ऐक्ट के प्रचलन मे ठीक २ मार्ग प्रदर्शन हो सके। यह व्याख्या शारदा मन्दिर लिमिटेड नई सड़क देहली ने प्रकाशित की थी। आशा यह थी कि आर्य्य जनता इस व्याख्या का पूरा २ प्रचार करेगी परन्तु ऐसा नही हुआ है। स्वय आर्य्यसमाजो ने भी अपने पुस्तकालयो के लिये इसे नहीं मँगाया है। अब समस्त समाजो को कम से कम १-१ कापी अपने यहाँ मँगाकर रखनी चाहिये। आवश्यकता होने पर अँग्रेजी की इस व्याख्या से उन्हे बहुत सहायता मिलेगी। बड़े २ भद्र पुरुषो मे भी प्रचारित की जा सकती है। आशा है आर्य्यजनता इस पुस्तक का यथेष्ठ प्रचार करके प्रकाशको को प्रोत्साहित करेगी जिसके कि वे अधिकारी हैं।

ईराक यात्रा

लेखक—श्री कन्हैयालाल जी मिश्र, आर्योपदेशक आर्य्य विद्या सभा काशी।

प्रकाशिका—श्रीमती सुशीलादेवी मिश्र अर्दली बाजार बादा (यू० पी०)।

मूल्य २।) पृष्ठ लगभग ३००

इस पुस्तक मे लेखक ने अपनी ईराक यात्रा और वहां के अपने प्रचार कार्य्य का वर्णन किया है। ईराक के प्रसिद्ध २ नगर गवादर बन्दर, मसकत, मूसना, सूर, बेहरिन द्वीप, दबई बन्दर, बसरा बगदाद, करकुक मौसल इत्यादि है। पुस्तक मे इन नगरो और स्थानो की सामाजिक, भौगौलिक और ऐतिहासिक स्थिति पर प्रकाश डाला गया है। इनमे से कई नगरो और उनके दर्शनीय स्थानो के चित्र भी दिये गये है। ईराक मुस्लिम प्रदेश है। वहाँ के मुसलमानो की धार्मिक स्थिति क्या है और भारतीय हिन्दुओ के प्रति उनका दृष्टिकोण कैसा उदार है, इस पर भी प्रकाश डाला गया है। अरब और ईराक मे भारतीय सस्कृति के क्या २ चिह्न दृष्टिगोचर होते है तथा वैदिक धर्म और सस्कृति के प्रसार की वहाँ क्या और कितनी गुञ्जाइश है इस पर भी विचार किया गया है। पुस्तक की भूमिका श्री प० इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लिखी है। लेखक ने यह कल्पना प्रस्तुत की है कि योगीराज कृष्ण की जन्मभूमि अरब की मथुरा थी। ऐतिहासिक अन्वेषको के लिये यह कल्पना विचार और अनुसन्धान के योग्य है। पुस्तक को हर प्रकार से रोचक बनाने का यत्न किया गया है।

पुस्तक मिलने का पता —श्रीयुत् महावीरप्रसाद ठेकेदार अर्दली बाजार बाँदा (यू० पी०) है।

सार्वदेशिक सभा की ३ जून १९४० की अन्तरङ्ग सभा
के
आवश्यक निश्चय

The Working Committee of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha (International Aryan League) in its meeting, held on 3rd June under the presidentship of the Hon'ble Shriyut G S Gupta Speaker of G P. Assembly discussed the international situation in its bearing on the international condition of India and passed the following resolutions —

1. "The Sarvadeshik Sabha feels very much concerned at the threatening situation that has developed in Europe on account of German aggression. While wishing success to the Allies and praying that the Indian soil may be spared the agonies of actual war, the Sabha cannot overlook the increasing possibility of undesirable elements in the country taking advantage of the situation for creating disturbances and riots endangering life and property and hence calls upon all the Pratinidhi Sabhas and Aryasamajes in the country to exert their full influence on the side of law and order and join hands with all organisations intrested in their preservation,

Thei Sabha further directs the Pratinidhi Sabhas to organise without any loss of time in their respective provinces civic guards pledged to maintain public peace and tranquility and to defend life and property.

In the opinion of the Sarvadeshik Sabha the functioning of popular and responsible Governments in the Provinces can alone restore the necessary confidence in the Government and allay the growing nervousness and anxiety in the public mind Without taking sides in the controversy between the Government and the Congress on the political issue,

the Sabha would very much wish that it became possible for the Popular Provincial Governments to refunction at this critical juncture in the history of India and Great Britain The Sabha appeals both to the Government and the Congress to so adjust their differences as to be able to take effective measures for the defence of the country which is the supreme need of the hour "

Misuse of Mosques by the Khaksars

II Without expressing at this stage any opinion on the general aspect of the Khaksar movement and the manner in which the Punjab Government has dealt with it, the Sarvadeshik Sabha as representative of a religious church feels that it would be failing in its duty if it did not raise its voice of strong protest against the flagrant misuse of mosques by the Khaksars who have turned them into regular citadels for carrying on their violent and unlawful activities and latitude shown to the Khaksars by the Punjab Government in this respect It is high time that the Government realised the great danger inherent in allowing sacred places of worship being turned into bases of unlawful activities

The Sarvadeshik Sabha visualising the very grave consequences of this abuse of mosques by the Khaksars and the lapse on the part of the Government, asks other religious societies to express themselves on this vital question without reserve and delay

"जर्मन आक्रमण के कारण युरोप में जो भयङ्कर परिस्थिति उत्पन्न हो गई है उसे सार्वदेशिक सभा बड़ी चिन्ताके साथ देखती है। सभा मित्र राष्ट्रोंकी विजय कामना करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि भारत भूमि वास्तविक युद्ध के कष्टों से मुक्त रहे तथापि यह सभा इस बढ़ती हुई आशङ्का की उपेक्षा नहीं कर सकती कि अवांछनीय व्यक्ति उपद्रवों और बल्वों के रूप में स्थिति का लाभ उठायेंगे और जान तथा माल को खतरे में डालेंगे अत यह सभा देश की समस्त प्रान्तिक सभाओं और आर्य समाजों को प्रेरणा करती है कि वे सुव्यवस्था स्थिर रखने में अपना पूर्ण प्रभाव काम में लावें और व्यवस्था स्थिर रखने में दिलचस्पी लेने वाली समस्त सभा सोसाइटियों को अपना योग दें।

यह सभा प्रान्तिक सभाओं को आदेश देती है कि वे अपने अपने प्रान्तों मे अविलम्ब नागरिक रक्षकों का सङ्गठन करें जो सार्वजनिक शान्ति बनाये रखने तथा जान और माल की रक्षा करने का व्रत ले।

इस सभा की सम्मति मे विविध प्रान्तो मे जनता की उत्तरदायी सरकारें ही शासन के प्रति आवश्यक विश्वास उत्पन्न तथा लोगो को बढ़ती हुई चिन्ता और व्याकुलता को दूर कर सकती है। सरकार और कांग्रेस के मध्य राजनैतिक विषय पर जो विवाद चल रहा है उसमे कोई भाग न लेते हुए सभा चाहती है कि भारत और ब्रिटेन के इतिहास मे आए हुए इस विषम अवसर पर जनता की प्रान्तीय सरकारो का पुनः प्रतिष्ठित हो जाना सभव हो जाय। यह सभा सरकार और कॉंग्रेस दोनों को प्रेरणा करती है कि वे दोनो अपने मतभेदो को इस प्रकार सुलझा लें कि दोनों देश की रक्षा के लिये प्रभावशाली उपाय कर सके जो इस समय सब से बड़ी आवश्यकता है।"

(२)

"खाकसार आन्दोलन की साधारण रूप रेखा तथा पंजाब सरकार ने जिस प्रकार इस आन्दोलन के प्रति व्यवहार किया है उस पर इस समय कोई सम्मति प्रगट किये बिना एक धार्मिक सघ की प्रतिनिधि होन के नाते सार्वदेशिक सभा यह अनुभव करती है कि यदि वह खाकसारो द्वारा मस्जिदोके नितान्त दुरुपयोगके विरोध मे जिन्होंने अपनी हिसात्मक और अवैध प्रगतियों के लिये मस्जिदोको नियमित अड्डा बनाया हुआ है तथा पजाब सरकार ने इस सम्बन्ध मे खाकसारो के प्रति जो ढीला-पन दिखलाया है उसके विरोध मे अपनी आवाज नहीं उठाती है तो वह अपने एक बड़े कर्तव्य का पालन नही करती है। अब समय आ गया है कि उपासना गृहो के अवैध प्रगतियो क अड्डे बनन दिए जाने मे जो आन्तरिक खतरा है सरकार उस अनुभव करे।

खाकसारों द्वारा मस्जिदो के इस दुरुपयोग के गम्भीर परिणामो और सरकार की ढिलाई को अनुभव करते हुए यह सभा अन्य धार्मिक सस्थाओं से निवेदन करती है कि व इस प्रश्न पर अविलम्ब बिना सकोच के अपनी स्थिति व्यक्त करें।

सम्पादकीय

खाकसार ख़तरा

ट्रिब्यून मे खाकसार आन्दोलन के सम्बन्ध मे अभी हाल मे एक लेख प्रकाशित हुआ है उसका सार इस प्रकार है —

खाकसारो को प्रोत्साहित करना जर्मनी की युद्ध नीति का एक अग है। इस समस्त आन्दोलन मे जर्मनी का गुप्त हाथ है, यह अनुमान उस जॉच से और भी दृढ़ हो गया है जो खाकसार आन्दोलन के आर्थिक स्रोतो के बारे मे गुप्त रूप से की गई है। साधारण खाकसारो को इसका कुछ भी पता नही है, यह तो सिर्फ नेताओ का काम है। बहुत समय से जर्मन या जर्मन पक्षपाती विचारधारा खाकसार अपनाए हुए है। इस आन्दोलन का नेता अल्लामा मशरिकी बर्लिन भी गया था, वहाँ जर्मन नेताओ ने उसका स्वागत किया। डिक्टेटरशिप नाजी व खाकसार दोनो का आधार भूत सिद्धाँत है।

यह भी कम दिलचस्पी की बात नही है कि नाजी सिपाही भी बेलचा रखते है। अल्लामा मशरिकी ने अपने पत्र मे जर्मन दृष्टिकोण और विचारधारा का ही प्रचार किया है।

अधिकारियो के पास खाकसारो के प्रमुख पत्र 'अलइस्लाह' के एक विशेषॉक की कुछ प्रतियॉ है। उस अङ्क को देखने से तो स्पष्ट हो जाता है। कि इस आन्दोलन के पीछे क्या प्रवृत्ति काम कर रही है।

इसी अङ्क के देखने से यह भी स्पष्ट हो जाता है कि खाकसारो की नकली लड़ाई और छोटी छोटी बन्दूको के प्रदर्शन का क्या अर्थ है। इस अङ्क की विशेषता ये है कि इसमे कुछ चित्र दिये गए है। ये चित्र भारतीय खाकसारो और जर्मन नाजियो के है। एक खास तसवीर मे बेलचा हाथ मे लिए जर्मन नाजी बर्लिन के बाजारो मे मार्च कर रहे है और इस तसवीर के ऊपर हिटलर की तसवीर है, मगर नीचे लिखा है "जीवित जाति के अनुशासन का एक दृश्य।" एक दूसरी तसवीर मे खाकसारों की भॉति एक जर्मन सिपाही बेलचा लिए हुए सलाम

कर रहा है। कुछ दूसरी तसवीरों में खाकसार युद्ध और 'इस' या 'उस' किले पर आक्रमण करते हुए दिखाई दिये गए है। कुछ ऐसे किले भी दिखाये गये हैं, जैसे खाकसार बनाना चाहते ह।

समाज सेवा की संस्था के लिए इन सब चीजों की क्या आवश्यकता है ?

'अलइस्लाह' ने बहुत दफे नाजियों और खाकसारो में समानताओ पर जोर दिया है। इछरा के केम्प मे जो लोहे की टोपिया मिली थीं, वह भी जर्मन नमूने की थी। खाकसारो के खास सिपाही जावाजो के नाम जर्मन नामो की नकल पर हैं। अधिकारियो का यह ख्याल है कि लडाई शुरू होने के बाद खाकसार नेता का जर्मनी से सम्बन्ध बढ़ गया है। बर्लिन के नाजी आँदोलन-कारियों ने पञ्जाब मे खाकसार आन्दोलन मे जो दिलचस्पी ली है, उससे भी उक्त सदेह पुष्ट होता है।

खाकसारो का यू० पी० सरकार तथा अब पञ्जाब सरकार के प्रति जो रवैया रहा है उसके सम्बन्ध मे कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। उनका रवैया हिंसात्मक तथा सार्वजनिक शान्ति के लिये खतरा रहा है, यह कई स्थानो पर उनकी गतिविधि से प्रमाणित हो चुका है। यदि उपर्युक्त लेख मे कोई तथ्य है तब तो उपर्युक्त बात मे कोई सन्देह ही नही रह जाता है। जनता तथा सरकार दोनों का कर्त्तव्य स्पष्ट है। पञ्जाब मे उनका रवैया इस समय कितना अमर्य्यादित और खतरनाक हो गया है वह भी लाहौर के हाल ही के गोलीकाड से स्पष्ट है। यदि पञ्जाब की सरकार प्रारम्भ मे ही इस आन्दोलन को ढील न देती तो शायद इस प्रकार की दुर्घटनाओं के होने की नौबत न आती। आजकल लाहौर इत्यादि मे खाकसारो ने मस्जिदों को अपना आश्रय स्थान बनाया हुआ है। वैध कार्य्यवाहियो के लिये मस्जिद इत्यादि उपासना गृह प्रयुक्त हों तो समझ में आसकता है परन्तु अवैध और हिंसात्मक कार्यवाही करने वालो के लिये इन स्थानो का प्रयुक्त होना सार्वजनिक शान्ति के लिये एक कम अवाञ्छनीय है इसीलिय सभा ने अपने एक निश्चय के द्वारा इसका विरोध करना आवश्यक समझा है।

विज्ञान का वास्तविक कार्य

श्रीयुत सी० वी० रमन ने दक्षिण भारत के एक कालेज मे भाषण देते हुए नवयुवकों की इस बढ़ती हुई मनोवृत्ति पर खेद प्रगट किया कि वे दर्शन और साहित्य का परित्याग करके भौतिक विज्ञान का कोर्स केवल मात्र व्यवहारिक दृष्टि से लेते है। विज्ञान की सच्ची भावना पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि विज्ञानका क्षेत्र बड़ा सूक्ष्म और गम्भीर है तथा सृष्टिके रहस्यों

को शांत करनेमें मानवी आत्मा का सबसे बड़ा यत्न समझा जाता है। विज्ञानका अध्ययन बड़ा मनोरञ्जक है क्योंकि विज्ञान तत्व रूप मे मनुष्य की उत्पादक स्फूर्ति की कहानी है। उस ध्वनि तथा उन असख्य वस्तुओं के हवाले से जिन्हे हमारे कान आँख नही देख और सुन पाते उन्होंने बतलाया कि विज्ञान की वर्तमान खोज इस आध्यात्मिक तथ्य के पर्याप्त प्रमाण है कि मनुष्य को सच्चे ज्ञान की उपलब्धि तभी होती है जब वह ऐन्द्रिक ज्ञान से ऊपर उठ जाता है। विज्ञान वेत्ता सत्य के अन्वेषक होते हैं। परन्तु विज्ञान का क्षेत्र भी सीमित है। अब विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी नहीं समझे जाते हैं। यद्यपि राजनीति के साथ गठ जोड़ा हो जाने से विज्ञान धर्म और धार्मिकता की जड़ों को खोखला करता देख पड़ता है तथापि यह विरोध धर्म और धार्मिकता को दृढ ही करेगा।

आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर धन सग्रह के लिए सभा ने समाजो को जो अपील की थी उसके सम्बन्ध मे पिछले अङ्क मे हम विस्तार पूर्वक लिख चुके हैं। हमने आर्य समाजों को प्रेरणा की थी कि वे इस अवसर पर सग्रह हुए धन को सभा मे शीघ्र भेजदे और कम से कम उतनी राशि तो अवश्य भिजवा दें जितनी सभा ने उनके जिम्मे लगाई है। प्रसन्नता है समाजो ने उन पक्तियो पर कुछ ध्यान दिया है। जिन समाजों के पास धन एकत्र हुआ पड़ा था वे तो धन भेज ही रही हैं परन्तु जिन समाजों ने इस अवसर पर अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया था, वे भी अब अपने कर्तव्य का पालन करने का यत्न करने लग गई हैं। उनमें धन सग्रह का कार्य्य प्रारम्भ हो गया है। हमें आशा है शीघ्र ही एक बड़ी राशि सभा के कोष में पहुँच जायगी।

पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिए लाला सेवाराम चावला द्वारा
"चन्द्र प्रिंटिंग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

ऋग्वेद   यजुर्वेद

सार्वदेशिक

सम्पादक— [illegible]

सह सम्पादक— श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक मू० स्वदेश २), [illegible] विदेश से २ शि० वार्षिक

अथर्ववेद   सा[illegible]

लेख-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

❋ सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र ❋

वर्ष १५ | आषाढ़ १९९७ | जुलाई १९४० ई० | [दयानन्दाब्द ११६ | अङ्क ५

❋ वेद की शिक्षाएँ ❋

संश्रुतेन गमेमहि । अथर्व० १।१।४

उपदेश के अनुकूल हम चलें ।

May we ever follow the dictates of our teachers and scriptures!

❋ ❋ ❋

जानता संगमेमहि । ऋग० ५।५१।१५

हम विद्वानों की संगत में बैठें ।

May we always move in the company of wise and cultured men

ब्रह्म की पुरी और उसमें प्रवेश

[ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी]

—*(*)*—

अष्टा चक्रा नवद्वारा देवाना पूरयोध्या ।
तस्या हिरण्यय कोश स्वर्गो ज्योतिषावृत ।।
तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते ।
तस्मिन यद् यक्षमात्मन्वत् तद्वै ब्रह्म विदो विदु ।।

अथर्व १० । २ । ३१, ३२

इन मन्त्रों में ब्रह्म की अयोध्यापुरी का, जिसमें लड़ाई, झगड़े न होते हों, जिक्र है। जो ८ चक्रों मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणि पूरक (नाभि स्थान मे), अनाहत चक्र (हृदय में), विशुद्ध चक्र (कठ में) ललना चक्र (जिह्वामूल में), आज्ञा चक्र (दोनों भुजाओं के बीच में) सहस्रार चक्र (मस्तिष्क में) और नौ द्वार (२ आंख, २ कान, २ नाक, १ मुख, २ मलमूत्र द्वार) वाली है और जो तेज से परिपूर्ण स्वर्ग है, तीन अरों से युक्त ३ केन्द्रो में स्थिर, उस तेजस्वी कोश मे जो आत्मवान यक्ष है उसे ब्रह्म विद् जानते हैं।

फिर इन्हीं मन्त्रों के आगे लिखा है —

प्रभ्राजमाना हरिणी यशसा सपरीवृताम् ।
पुरं हिरण्ययो ब्रह्माविवेशापराजिताम् ।। अ० १०।२।३३

अर्थात् प्रकाशित, दु ख हरण करने वाली, यशपूर्ण, तम रहित और अपराजिता पुरी में ब्रह्म आविष्ट रहता है।

इस मन्त्र से स्पष्ट हो गया कि यक्ष और ब्रह्म पर्य्यायवाचक हैं। इस पुरी मे दाखिल होने के लिये, आवश्यक है कि उसके द्वारपालों को जाने, नहीं तो वे किसी को कैसे घुसने देंगे ?

छा० उप० ३।१३।१-५ मे बतलाया गया है कि वे द्वारपाल पांच हैं .—

१ प्राङ् सुषि (पूर्व द्वार) प्राण, चक्षु, आदित्य और तेज है। तेजस्वी और अन्नाद होकर कोई इसमें प्रविष्ट हुआ करता है।

२ दक्षिण ,, व्यान, श्रोत्र, चन्द्रमा और श्री-श्रीमान् और यशस्वी इस में प्रविष्ट होता है।

३ प्रत्यङ् सुषि अपान, वायव्य, अग्नि, ब्रह्मवर्चस ब्रह्मवर्चस्वी और अन्नाद होकर जा सकता है।

४ उदङ् ,, समान, मन, दर्जन्य, कीर्ति—कीर्तिमान और बुद्धिमान (विशेष कान्तिमान) होना चाहिये।

५ ऊर्ध्व ,, उदान वायु, आकाश ओज—ओजस्वी और महस्वी (तेजस्वी) होना आवश्यक है।

वेद मन्त्रों और उपनिषद् की शिक्षा पर विचार करने से निम्न बातें स्थिर होती हैं—(१) मनुष्य शरीर ही अयोध्यापुरी है, (२) इसमें ८ चक्र और नव द्वारों का होना स्पष्ट है, (३) ज्ञान, कर्म और उपासना इन तीन अरों और स्थूल, सूक्ष्म और कारण तीन शरीर रूपी केन्द्रों में स्थिर आनन्दमय कोश है, (४) इसी कोश में यक्ष = ब्रह्म प्राप्त किया जा सकता है, (५) इनके प्राप्त करने वाले में इन गुणों का होना आवश्यक है — तेज, श्री, यश, ब्रह्मवर्चस, विशेष कान्ति और ओज। इन गुणों की प्राप्ति के लिए मनुष्य को निम्न उपाय काम मे लाने चाहिये —

(१) तम को दूर, रज को नियमित, और सत की वृद्धि करनी चाहिये— इससे मनुष्य की प्रकृति और प्रवृत्ति दोनो ठीक होती हैं।

(२) मन को एकाग्र करना चाहिए। इससे उसके हाथ आनन्द की राशि आजायगी क्योंकि सुख और कहीं नहीं किन्तु चित्त की एकाग्रता में है। सुखी होने से उसमें अन्य साधनो की पूर्ति के लिए उत्साह की मात्रा बढेगी।

(३) कभी कभी यत्न करके, सुषुप्तिवत्, मन को निर्विषय भी करना चाहिये। इससे बहिर्मुखी वृत्ति दूर होकर अपना स्थान अन्तर्मुखी वृत्ति को देगी। यहाँ तक पहुँच कर ही मनुष्य का यत्न और योग दर्शन भी समाप्त हो जाता है।

"भीतर के पट जब खुलें बाहर के हों बंद।"

काम कठिन अवश्य है परन्तु असम्भव नहीं। अपने आचार, व्यवहार प्रवृत्ति और मन के सकल्पों मे इस प्रकार का परिवर्तन करना चाहिए जिससे उसके भीतर कभी आत्म-ग्लानि न पैदा होवे। मन लचकीला बनावे जो दूसरों के दुःखों से द्रवित हो उठे। यही मार्ग उस कठिन मजिल का है, इस पर चलने से आगे स्वयमेव प्रकाश आने लगता है।

सत्येनपन्थाविततो देवयानः।

यूरोपीय महासमर

[लेखक—श्री पं रघुनाथ प्रसाद जी पाठक]

यूरुप के रङ्ग मंच पर नर-संहार का जो वीभत्स काण्ड हो रहा है उससे संसार का बच्चा बच्चा परिचित है । कुछ सप्ताहों में ही लाखों मनुष्य मर गए है और कहा नहीं जा सकता रक्तपात का निरन्तर भयङ्कर होता हुआ यह काण्ड कब समाप्त होगा । लोग भय और असहायावस्था मे ग्रस्त हैं । उन्हे अपना और अपने साथ मानव समाज का भविष्य अन्धकार मय देख पड़ता है । १६१४ के महासमर के अभिशापो और उपद्रवो से ससार अभी तक मुक्त नहीं हुआ था । वर्तमान समर ने तो उसे एक और महाभयकर और असह्य आघात पहुँचा दिया है । पता नही इस आघात से वह कब मुक्त होगा । हमे बतलाया गया था कि १६१४ का महासमर युद्धो को रोकने के लिए लड़ा गया था । आज इस कथन की निस्सारता प्रत्यक्ष ही है । यो तो बुराई मे से भलाई निकल आती है । हो सकता है यह युद्ध किसी अश मे मानव-समाज के लिए हितकर सिद्ध हो परन्तु वर्तमान में तो इसके परिणाम अन्धकार मय ही देख पड़ते है ।

अत्याचार के उन्मूलन और निर्बलो की रक्षा के लिए युद्ध करना कोई अर्थ रखता है । ऐसे कई युद्धो का वर्णन इतिहास मे मिलता है । इन युद्धो की मर्य्यादाओ का भी उत्तम वर्णन हम पढते है । अपने माल के लिए जबरदस्ती बाजारो की प्राप्ति और रक्षा के लिए रक्त की नदिया बहाना समझ मे नही आता । आज युद्ध की कोई मर्य्यादा ही नही देखने और सुनने को मिलती है । युद्ध के सैनिको की रक्षा की तो कल्पना ही नही की जा सकती । आज नागरिक जनता भी सुरक्षित नही । उस पर भी बम बरसाए जाते है । और तो और घायलो और प्राणो की रक्षा के लिए भागते हुए बेबसो तक को निर्दयता पूर्वक मार दिया जाता है । स्त्रियो और बच्चो की रक्षा की तो बात ही न पूछिए । आज के युद्धो और योद्धाओ की भयङ्करता और बर्बरता को देखकर लोगो के इस कथन की पुष्टि होती है कि आज के युद्ध युद्ध नही वरन् सगठित जाति का संहार है । लोग इन युद्धो को पशुओं के

युद्धों से भी गया गुजरा बताते हैं। पशुओं के युद्धों में भी इतनी बर्बरता का व्यवहार देखने को नहीं मिलता जितना बुद्धि रखने वाले और परमात्मा की सबसे सुन्दर कृति मनुष्यों के युद्धों में देखा जाता है।

यह अमानुषिकता क्यों ? इतनी स्मृद्धि और उन्नति के होते हुए भी ससार का आकाश निराशा और अशान्ति के घटा टोपों से आच्छादित क्यों ? इतनी बढी चढ़ी वैज्ञानिक उन्नति और विशिष्ट चमत्कारो क होते हुए भी ससार आभाहीन क्यों ? इसीलिए कि युद्ध मनुष्य जीवन की गलत फिलासफी का शिकार बनकर अपनी आत्मा को भुलाए हुए हैं। उसकी बुद्धि पर अज्ञान का आवरण छाया हुआ है और उसमें जो दिव्यता है वह उसके ज्ञान-नेत्रों से ओझल है। उसके जीवन की दृष्टि शरीर पर केन्द्रित है आत्मा पर नहीं है। वह भोग वाद को ही जीवन का लक्ष्य समझे बैठा है। इसमें सन्देह नहीं हम भौतिक उन्नति में बहुत बढ़ गए हैं और हमारा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन मूल्यवान बन गया है परन्तु आध्यात्मिक और नैतिक आदर्शों ने हमारे जीवन को प्रभावित और हमारे दृष्टि कोण को उदार नहीं बनाया है। हमारे आविष्कार बहुत बढ़ गए हैं और यन्त्रों में बहुत उन्नति हो गई है परन्तु इस पर भी भयङ्कर विद्युत प्रपातों और प्राकृतिक विप्लवो और विस्फोटों का अभी तक अन्त नहीं हुआ है। राजनीति और विज्ञान में उन्नति हो गई है परन्तु ये मनुष्य स्वभाव को सुधारने में समर्थ नहीं हो सके हैं। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे दृष्टि बिन्दुओ में हितकर परिवर्तन हो जिससे हम शोषण-दोहन, माल के आयात-निर्यात, क्रय-विक्रय और उत्पत्ति के स्थान में मानव-समाज के सुख और आनन्द तथा सृष्टि के सौन्दर्य्य के रूप में सोचें और आचरण करें। हो सकता है कि आज की विकट राजनीति और विज्ञान के दुरुपयोग पूर्वक प्राप्त हुई शक्ति के मद में चूर राजनीतिज्ञ तथा भौतिकवाद के कीड़ों को ये सच्चाइयाँ अपील न करें परन्तु वह समय लगभग आ ही पहुँचा है जब प्रकृति स्वय उन्हें इन सच्चाइयों को अपनाने के लिए विवश कर देगी।

आज मिश्र, बैबोलेनिया और असीरिया कहाँ है ? यूनान और रोम कहां है ? ये ससार के रग-मच पर आए इन्होंने अपना पार्ट खेला और देखते २ ही रगमच से हट गए, आज उनकी स्मृति केवल लेखकों के उपयोग की ही वस्तु रह गई है। ससार के इतर जन उन्हें जानते भी नहीं। वर्तमान युद्ध ससार के मानचित्र को जो रूप दे रहे हैं उससे स्पष्ट है कई राष्ट्र विस्मृति की गोद में विलीन हो जायगे।

यह क्यों ? इसलिये कि इन राष्ट्रों की अपनी कोई आत्मा नहीं थी और न है। जिस प्रकार व्यक्तियों मे आत्मा होती है और जीवन के लिये उसकी रक्षा की आवश्यकता होती है इसी भाँति राष्ट्रों की भी अपनी आत्मा होता है। उसकी रक्षा से राष्ट्र जीवित रहते है उसके हनन से राष्ट्रो का पतन हो जाता है। भारतवर्ष और चीन घोर से घोर तूफानों के बावजूद भी आज जीवित है। इसीलिये कि उनकी आत्मा है और वह आत्मा धार्मिकता और नैतिकता का प्रसार तथा रक्षण है। जिन देशो की आत्मा केवल भोगवाद हो और दूसरो के अनुचित दोहन और शोषण मे विकसित रहता हो। हँसता और खेलता हो, परमात्मा के नियमो और सृष्टि की व्यवस्था मे उसका पतन अवश्यम्भावी है। भारत की राष्ट्रीय आत्मा हिंसा, असत्य और अन्याय स घृणा करती है, लूटखसोट, दोहन शोषण से पृथक् है। समस्त ससार के लोगो को एक ही पिता की सन्तान समझकर उनसे प्रेम और सहानुभूति का व्यवहार सिखाती है। राजनीति और धर्मनीति को साथ २ रखना सिखाती है और सब से बढकर मनुष्य की जिन्दगी को परम पवित्र और परमात्मा का निवास स्थान मानना सिखलाती है।

युद्ध-क्षेत्र मे व्यस्त और नर सहार करने तथा मानव-समाज को उत्पीड़ित करने वाले राष्ट्रो मे क्या ऐसे धर्मात्मा व्यक्तियों और विद्वानो का लोप होगया है जो राजनीति के मद से चूर व्यक्तियों का सही नतृत्व करके परमात्मा की सुन्दर सृष्टि को वीरान होने से बचा सके ? दुर्भाग्य यह है कि ऐसे व्यक्ति भी राजनीतिज्ञो के क्रीत-दास बने हुए है, और दुर्योधन की सभा म भीष्म पितामह तथा द्रोणाचार्य की भाँति उनके मुँह बन्द हो रहे है। निश्चय ही निष्पक्ष इतिहासज्ञ उन्हे इस अकर्मण्यता और अपराध के लिए क्षमा नहीं करेंगे।

साम्राज्य लोलुप देशो मुख्यतया यूरोप के धर्माचार्य नाम से सम्बोधित होने वाले व्यक्ति राष्ट्र रक्षा के नाम पर प्रार्थना और उपासना की अपील करते हैं। परन्तु उनकी अपील मे बल कहा है ? दोहन-शोषण और अत्याचार मे प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष उनका योग रहा है और उनका दामन स्वय कलुषित है। यही कारण उन की कमजोरी का है।

कहा जाता है वर्तमान युद्ध से सस्कृति का पूर्ण विनाश हो जायगा इसलिये युद्धो को रोकने की प्रेरणा की जाती है। जो संस्कृति भोगवाद पर पालित और पोषित तथा पल्लवित हुई हो उसका विनाश अवश्यम्भावी है। उसके विनाश को

कोई शक्ति रोक नहीं सकती ? अत उसके नष्ट होने से क्या दुःख ? इस युद्ध के पश्चात् यदि ऐसे समाज और सस्कृति का विकाश न हुआ जो लोगों की मानसिक शक्ति को स्थिर रग सका तो ऐसे युद्ध होते ही रहेंगे और सस्कृतियाँ नष्ट होती ही रहेंगी। आज राष्ट्र सघ जो युद्धो के अन्त के लिए निर्मित हुआ था अपना बोरियाँ बँधना बाँधे जान की रक्षा के लिये मारा २ फिर रहा है। युद्ध के कोलाहल और गर्मी में उसको कोई स्मरण भी नहीं करता।

सचमुच वर्तमान सन्तति के लिये यह समय बड़ा विकट समय है। भारत-वर्ष की अवस्था बडी विचित्र और सकटापन है। उसकी प्रजा निहत्थी है। वर्तमान युद्ध के अस्त्रों को तो वह पूर्णतया जानती भी नही उनके प्रयोग को बात ही न पूछिए उसके पास आत्म रक्षण के बाहरी साधन नही हुए तो क्या ? उसके पास कई अमोघ शस्त्र है और उनमे सबसे बड़ा शस्त्र आत्मिक बल है। आवश्यकता पड़ने पर उसे इसका परिचय ऐसा देना चाहिए जिसके कायल आक्रमणकारी हो जायँ और अपने भीतर सघर्षो के उपस्थित हो जाने पर तो उस ससार के मनुष्यो के सामने शान्ति-रक्षा का उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। यही हमारी सबसे बडी रक्षा होगी और यही हमारे अस्त्र की महत्ता स्थापित होगी।

महाराज शिवा जी के अन्तिम जीवन की एक झांकी

[लेखक—इतिहास का एक विद्यार्थी]

शिवाजी के जीवन के अन्तिम दिन थे। उनका बड़ा पुत्र संभा जी अयोग्य और लम्पट था। प्रचण्ड परिश्रम से स्थापित किए हुए विशाल हिन्दू साम्राज्य की कौन रक्षा करेगा? यह चिन्ता उन्हे जला रही थी। इसी समय उनका स्वास्थ्य खराब हो गया। दिन पर दिन शिथिलता बढ़ने लगी और उन्हे ज्ञात होने लगा कि अब मृत्यु सन्निकट है। वे बड़ी कातरता के साथ सोचने लगे कि हाय! इस समय क्या गुरुदेव के दर्शन नही होंगे? अकस्मात् गुरुदेव स्वामी रामदास वहाँ आ गए। शिवाजी के पद धूलि ग्रहण करने पर रामदास ने आशीर्वाद दिया। शिवाजी ने हृदय के समस्त आवेग को सयत कर गुरुदेव से पूछा 'गुरुदेव! किस पूर्व कृत अपराध के कारण मेरे औरस से सभा जी जैसा लम्पट और पाखण्डी पुत्र उत्पन्न हुआ? जीजा जैसी पितामही (दादी) और सईबाई जैसी साध्वी धर्म्म परायणा जननी पाकर भी यह कुलाङ्गार कहाँ से उत्पन्न हुआ? इस समय शिवाजी के नेत्रो से अविरल अश्रुधारा बह रही थी। रामदास स्वामी गभीर होकर बोले "वत्स! धर्म्म परायणा गाँधारी के गर्भ से जन्म-ग्रहण करके और सर्व प्रधान पितामह भीष्म से उपदेश ग्रहण करके भी कुलाङ्गार दुर्योधन उत्पन्न हुआ था परन्तु दूसरी ओर राक्षस हिरण्यकशिपु के औरस से ईश्वर भक्त प्रह्लाद ने जन्म लिया था। ससार के ये समस्त व्यापार रहस्य के पर्दे में छिपे हुए हैं। हमारा कर्त्तव्य तो यह है कि जिसको हम हृदय से ठीक समझते हैं उसे प्राणपण से सम्पन्न करें। तुमने संभा जी को सतशिक्षा देने में कोई त्रुटि तो की नहीं इस पर भी यदि वह ऐसा दुर्वृत्त निकला तो तुम्हारा क्या अपराध है? और तुम कहते हो कि मेरा किया हुआ आजन्म परिश्रम व्यर्थ गया। यह धारणा भी ठीक नहीं है। भगवान ने मुसलमानों को भारत में लाकर उसका भार उन पर ही अर्पित किया है। इस्लाम धर्म के महद् भाव से इस अध पतित हिन्दू जाति

की शिक्षा देने के लिए ही भगवान् ने मुसल्मानों को यहाँ प्रतिष्ठित किया है। इस धर्म में जाति-भेद नहीं है। एक महान् ईश्वर-पूजा ही प्रधान धर्म है। इस्लाम के ये समस्त महद् भाव ही हिन्दू-समाज के शोणित-प्रवाह में सँचारित होकर नाना जाति भेदों से प्रपीड़ित और विछिन्न इस प्राचीन हिन्दू जाति को उठने के लिए बाधित करेंगे। उधर ईश्वर-भक्ति से हिन्दुओं के चरित्र में स्निग्धता का संचार होगा। परन्तु मुसल्मान लोग अपने धर्म को भूलकर बल-प्रयोग से हिन्दुओं का परिवर्तन करना चाहते हैं। इससे सम्राट औरंगजेब का पतन भी अनिवार्य्य हो गया है। सम्राट अकबर की उदारनीति ने इस राज्य का भारत में प्रसार किया था। औरङ्गजेब की अनुदारता इसका पतन कर देगी। तुम देखते नहीं हो कि दक्षिण में ही औरङ्गजेब ने राज-विस्तार की कितनी सतत चेष्टा की परन्तु उसका फल कुछ भी नहीं हुआ।

उसके हजारों सैनिक अकाल मृत्यु का ग्रास बने और राजकोष धन से खाली हो गया। उसकी अनीति और अनुदारता ही इसका एकमात्र कारण है। इसका अवश्यम्भावी फल यह होगा कि इस महाप्रतापशाली साम्राज्य की अत्युच्च अट्टालिका बहुत शीघ्र भूमिसात हो जायगी।

थोड़ी देर चुप रहकर स्वामी रामदास ने फिर कहा—हाँ भूमिसात हो जायगी क्यों कहता हूँ ? तुमने ही तो इस साम्राज्य के गौरव को चूर्ण करना आरम्भ किया था। कहाँ वह अतुल ऐश्वर्य्य का अधिपति दिल्लीश्वर सम्राट् औरङ्गजेब और कहां दक्षिण के एक छोटे जागीरदार के पुत्र तुम ? तुम्हारा मुकाबला करने में दिल्लीश्वर का राज कोष खाली हो गया। सायस्ताखा, जयसिंह, यशवन्तसिंह, बहादुरखा, दिलेरखां प्रभृति महावीरों का जगत् विख्यात शौर्य्य-वीर्य्य लांछित होगया। सम्राट औरगजेब की शयन-शय्या आज कंटकाकीर्ण है। इसका क्या कारण है कि तुम उस विश्व विधाता की शक्ति पाकर ऐसे दुर्द्धर्ष होगए। प्राचीन हिन्दू जाति के जीर्ण शरीर में नवशोणित सञ्चार करने के लिए ही भगवान ने तुमको भेजा है। निराशा के गम्भीर अन्धकार में पतित हिन्दू जाति के प्राणों में नव आकांक्षा का आलोक आलोकित करने के लिये ही तुम्हारा यहां आगमन हुआ है। हिन्दू साम्राज्य-स्थापन ही तुम्हारे जन्म का उद्देश्य है। तुमने अपना कार्य सम्पन्न कर दिया। तुम स्वराज्य स्थापन कर स्वय आनन्दोपभोग करोगे अथवा तुम्हारे वंशधर राज्य सुख से गौरवान्वित होंगे, इसके लिये तुम्हारा यह उद्योग नहीं

हुआ है किन्तु तुमने जो उदाहरण उपस्थित किया है उससे युगयुगान्तर तक भारत वासी शिक्षा लेंगे। तुम्हारा कार्य सम्पन्न होगया। इस समय हृदय के अवसाद को दूर कर अवशिष्ट कार्य को समाप्त करो। उसके लिये प्रयत्नशील हो।"

गुरु रामदास की सान्त्वनामयी उपदेश वाणी को सुन कर शिवाजी का हृदय शान्त होगया। उनको मानो दिव्य ज्ञान प्राप्त हुआ। शिवाजी ने गुरुदेव के चरणों में फिर प्रणाम करके कहा "गुरुदेव ! ज्ञात होता है मेरा यह जीवन शेष होगया। इस जन्म में अब और दर्शन नहीं होंगे। परन्तु क्या अगले जन्म में भी यह दास इन चरणों की फिर पूजा करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेगा।" स्वामी रामदास ने कहा "वत्स, आत्मा अविनाशी है। हम लोग ईश्वर की इच्छानुसार ही ससार में रहते हैं। हम लोग मोह में पड़कर अपने को सब कुछ समझने लगते हैं और संसार में आसक्त हो जाते हैं। जब तक साधना और दिव्य ज्ञान द्वारा हमारा बन्धन छिन्न न हो हमें कर्म बन्धनों के अनुसार फल भोगना पड़ता है। जो पुण्यात्मा अपने समस्त कार्यों को निष्काम भावना से सम्बद्ध करके अपने समस्त कार्योंको भगवान के चरणों में समर्पण कर देते हैं वे शीघ्र ही मुक्त हो जाते हैं। इसलिये तुम अपने समस्त कार्यों को परमात्मा के अर्पण करदो। तुम जैसे पर लोक में मुझसे मिलने की इच्छा करते हो वैसे ही क्या मुझे उस मिलन की आकाक्षा नहीं है ? तुम्हारे जैसे शिष्य से मैं अपने को गौरवान्वित समझता हूँ क्या तुम जैसे शिष्य कहीं सरलता से मिल सकते हैं। तुमने मेरी तपस्या को सिद्ध कर दिया। ससार को मैंने अपना परिवार समझा है। वत्स ! तुम्हारे भीतर मुझे अपनी तपस्या मूर्तिमान दृष्टिगोचर होती है। मै देश-यात्रा के लिये प्रस्थान करता हूँ, किन्तु हमारे मिलन में कोई देश-काल व्यवधान नहीं डाल सकता। जब हम इस जड़-देह को परित्याग कर भगवान के चैतन्यमय राज्य में विहार करने में समर्थ होंगे तब हम लोगों का मधुर सम्बन्ध अविछिन्न मिलन में परिणत हो जायगा। वत्स ! तुम धन्य हो और मैं भी धन्य हूँ। तुम्हारा जन्म धन्य है। यह भारत भूमि धन्य है। तुमने लुप्त-गौरव भारत मही को अपनी कठोर तपस्या द्वारा धन्य किया है। अब भी हिन्दू जाति का गौरव लुप्त नहीं हुआ है। हिन्दू जान गए हैं आत्म गौरव क्या है ? हम क्या नहीं कर सकते ? शक्ति और उदारतापूर्ण महा प्राणता का तुमने सचा पाठ पढ़ा दिया है। स्वधर्मानुरागी रहते हुए भी पर-धर्मों से द्वेष की आवश्यकता नहीं। इस भूमि पर रहने वाले सभी भाई हैं। निश्चय ही यह सोई हुई हिन्दू-जाति तुम्हारे नाम स्मरण से उठ खड़ी होगी। अब मैं जाता हूँ। तुम अपने शेष कर्त्तव्य का पालन करो।"

जन गणना १९४१

[ले०—प्रो० सुधाकर जी एम० ए० मंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा]

विज्ञप्ति सं० २

भ्रम-निवारण

सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने निश्चय किया है कि जन गणना १९४१ में भिन्न २ कोष्ठकों की पूर्ति निम्न प्रकार कराई जाये.—

धर्म	फिरका	जात	भाषा
वैदिक धर्म	आर्य	×	हिन्दी

इस सम्बन्ध में यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हरिजनों को छोड़कर शेष सब आर्यों को अपनी जात 'कुछ नहीं' बतानी चाहिये। यदि हरिजन भाई किन्हीं कारणों से अपनी जात लिखाना चाहे तो उन्हें ऐसा करने की स्वतन्त्रता है।

भ्रम

कुछ लोगों में यह भ्रम फैल रहा है कि उपरिलिखित के अनुसार कोष्ठकों की पूर्ति कराने में आर्य लोगों की संख्या हिन्दुओं में नहीं गिनी जायेगी। इस प्रकार हिन्दुओं की सख्या में कमी हो जायगी और इससे हिन्दू हितों को हानि पहुँचेगी।

भ्रम निवारण

इस भ्रम के निवारणार्थ हम जन गणना १९११, २१ और ३१ की रिपोर्टों में से कुछ उद्धरण नीचे देते हैं जिनसे यह स्पष्ट होजायगा कि जन गणना के सम्बन्ध में सरकार की नीति और व्यवहार बिल्कुल स्पष्ट और संदेहरहित हैं और वे इस

प्रकार हैं कि हिंदुओं के अन्दर सुधारवादियों की संख्या और उसकी वृद्धि का ठीक ठीक पता लगता रहे इसलिए आर्यों की संख्या पृथक दिखाई जाती है। परन्तु ऐसा करने का यह मतलब कदापित भी नहीं है कि इससे हिन्दुओं की संख्या घट जाये अतः हिन्दुओं की संख्या के बृहद्योग में आर्यों की संख्या सम्मिलित की जाती है।

(१) भारत की जन गणना, १९११ जिल्द १, भाग २—चित्र (Census of India 1911, Volume 1, Part II—Tables) में चित्र सख्या ६ (Table VI) के शीर्षक के नीचे पृष्ठ ३८ पर निम्न प्रकार लिखा है:—

Vedic Theists(Arya Samaj) and Eclectic Theists (Brahmo Samaj) are included in the general total of Hindus but are also separately shown

आर्य समाजी और ब्रह्म समाजी हिन्दुओं की संख्या के बृहद्योग में भी सम्मिलित किये गये हैं परन्तु उनकी संख्या पृथक् भी दिखाई गई है।

इसी के क्रम में आगे पृष्ठ ३८, ३९ पर दिये गये चित्र में निम्न प्रकार कोष्ठकों की पूर्ति की गई है :—

सारे भारत में

हिन्दुओं की संख्या का योग Total Hindus	(क) हिन्दू ब्राह्मणवादी Hindu Brahmanic	(ख) हिन्दू (आर्य) Hindu (Arya)	(ग) हिन्दू (ब्राह्मो) Hindu (Brahmo)
217586892	217337943	243445	5504
२१७५८६८९२	२१७३३७९४३	२४३४४५	५५०४

(२) भारत की जन गणना, १९२१ जिल्द १, भाग २—चित्र (Census of India, 1921, Volume I, Part II—Tables) में भी उपरलिखित की तरह ही कोष्ठकों की पूर्ति की गई, देखें चित्र ६, पृष्ठ ४०, ४१ (Table VI pp. 40, 41)

सारे भारत में

हिन्दुओ की संख्या का योग Total Hindus	(क) हिन्दू ब्राह्मणवादी Hindu Brahmanic	(ख) हिन्दू (आर्य) Hindu (Arya)	(ग) हिन्दू (ब्रह्मो) Hindu (Brahmo)
216734586	216260620	467578	6388
२१६७३४ ८६	२१६२६०६२०	४६७५७८	६३८८

(३) १९३१ की जनगणना में हिन्दुओं की संख्या का चित्र बनाते हुए इस बात को और भी स्पष्ट किया है कि आर्य हिन्दुओ के बृहद्योग के अन्दर सम्मिलित हैं। यहां चित्र में आर्यों, और ब्रह्मो, के साथ अन्य हिन्दुओं (Others) की संख्या भी पृथक् दी है और उन्हे हिन्दुओं के बृहद्योग में भी सम्मिलित किया गया है। देखें भारत की जनगणना, १९३१, जिल्द १ भाग २—चित्र (Cesus of India 1931, Volume I, Part II Imperial Tables) के चित्र संख्या १६ पृष्ठ ५१४,५१५ (Table XVI p. p 514, 515)

सारे भारत में

ब्राह्मणवादी Brahmanic	आर्य Arya	ब्रह्मो Brahmo	अन्य Others	हिन्दुओं की संख्या का योग Total Hindu
219300645	990233	5378	18898884	239195140
२१९३००६४५	९९०२३३	५३७८	१८८९८८८४	२३९१९५१४०

आशा है कि अब यह भ्रम सर्वथा उड़ जायेगा कि इस सभा की आज्ञानुसार कोष्ठकों की पूर्ति कराने से हिन्दुओं की संख्या में कोई कमी हो सकती है। अतः सब आर्य भाइयों के लिये आवश्यक है कि संगठन की मर्यादाओं को दृष्टि में रखते हुए अपनी शिरोमणि सभा की आज्ञा का पालन करें।

सुमन-संचय

[१]

देश के आभूषण

महात्मा लिंकन एक समय एक कार्यालय में कार्य करते थे। एक दिन सायं-काल को हिसाब मिलाने पर उन्हें विदित हुआ कि किसी के ३ पैंस अधिक आ गए हैं। बहुत कुछ सोचने पर मालूम हुआ कि एक स्त्री भूल से अधिक पैसे दे गई है। रात्रि को कुछ देर से कार्यालय बन्द हुआ। महात्मा लिंकन घर न जाकर सीधे उस स्त्री के मकान को चल दिए। उसका घर ८ मील दूर था। वे रात्रि के लगभग ११ बजे उसके घर पर पहुँचे और उसे जगाकर ३ पेंस उसे दे दिए। वह स्त्री लिंकन के इस व्यवहार पर बड़ी चकित हुई। उसने कहा 'इस छोटी सी राशि के लिए तुमने व्यर्थ में इतना कष्ट क्यों उठाया ?' लिंकन ने कहा 'बहिन ! इन पैसो से मेरी जेब जल रही थी। अपनी रक्षा के लिए ही मैंने इस आधी रात को आपको कष्ट दिया है। इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।' उस स्त्री ने लिंकन के शिर पर हाथ फेर कर कहा 'ऐसे ही सच्चे और कर्त्तव्य परायण बच्चे देश और जाति का भूषण हुआ करते हैं।'

[२]

वेश्या से भिक्षुणी

वैशाली नगर में आम्रपाली नामक एक वेश्या रहती थी। एक बार भगवान बुद्ध अपनी शिष्य मंडली के साथ वैशाली पधारे। आम्रपाली को बुद्धदेव के आग-मन से इतना हर्ष हुआ कि उसने दूसरे दिन भगवान की सेवा में उपस्थित होकर ससंघ अपने यहां भिक्षा करने के लिये निमन्त्रण दिया। बुद्धदेव ने उसका सच्चा भाव देख कर निमन्त्रण स्वीकार कर लिया। जब इसका पता वैशाली के राजा को लगा तब वे बुद्धदेव के पास पहुँचे और आम्रपाली का निमन्त्रण अस्वीकार करने की प्रार्थना की और कहा 'महाराज ! आम्रपाली का निमन्त्रण स्वीकार करने से हमारी और आपकी गौरव-हानि है। आप हमारे यहाँ भिक्षा ग्रहण करने का अनु-ग्रह कीजिये।' भगवान बुद्ध ने कहा 'राजन् ! मैंने आम्रपाली का निमन्त्रण स्वीकार

कर लिया है अतः आप उसे अस्वीकार करने की प्रेरणा न कीजिये।' महात्मा बुद्ध के उत्तर से राजा बहुत दुखी हुआ, उन्हें आम्रपाली का निमन्त्रण स्वीकार करना अच्छा न लगा। उन्हें ज्ञात न था कि विद्वान और महात्मा लोग किसी का तिरस्कार नहीं करते। वे उनके भाव को देखते हैं। उनका लक्ष्य पतितो का उद्धार और लोगों को सन्मार्ग पर लाना होता है।

दूसरे दिन विविध सवारियों और समारोह के साथ आम्रपाली महात्मा को अपने यहाँ लाने के लिये उनकी सेवा में उपस्थित हुई। महात्मा बुद्ध ससघ उनके घर गए। बहुमूल्य वस्त्राभूषणो से अलकृत होकर आम्रपाली ने महात्मा का अभिनन्दन किया। महात्मा बुद्ध और उनकी शिष्य-मण्डली आम्रपाली के वैभव को देखकर चकित हो गए। भगवान बुद्ध और उनके सघ का विविध प्रकार के व्यञ्जनों से आतिथ्य सत्कार करने के पश्चात् आम्रपाली ने उन्हें एक अत्यन्त सुसज्जित कमरे में बिठाया और स्वयं आरती और तिलक की तय्यारी मे लग गई। कुछ क्षण के पश्चात् आम्रपाली भिक्षुणी के वेश में आरती और तिलक का सामान हाथ मे लिये भगवान के समक्ष उपस्थित हुई। आम्रपाली के इस परिवर्तन को देखकर सब अवाक् रह गए। उसने बुद्धदेव के चरणों में बैठकर कहा 'महाराज ! इस पतिता का -उद्धार करें। अब मैं आपकी शरण में हूँ।' भगवान बुद्धदेव ने उसे आशीर्वाद देकर संघ में दीक्षित होने की आज्ञा देदी। आम्रपाली के इस अकस्मात् परिवर्तन की समस्त नगर में चर्चा फैल गई और सबने ही महात्मा बुद्धदेव और उसे बधाई दी

[३]

महान् सिकन्दर अपनी विश्व-विजय की यात्रा पर भारतवर्ष में आया हुआ था और तक्षशिला में ठहरा हुआ था। एक दिन उसने ब्राह्मण समाज के अग्रणी महामहि दण्डी को बुलाने के लिए अपना आदमी भेजा। उसने दण्डी के पास जाकर कहा 'जुपिटर के पुत्र मनुष्य जाति के अधीश्वर सिकन्दर ने तुम्हें शीघ्र ले आने का आदेश दिया है। उनके पास यदि तुम जाओगे तो पुरस्कार मिलेगा अन्यथा अवमानता के लिए प्राणदण्ड दिया जायगा।'

तृणशय्या पर सोए हुए महामहि दण्डी के कान मे जिस समय ये शब्द पड़े उस समय उन्होंने उसी तरह लेटे लेटे हँसकर उत्तर दिया 'जगत् के अधीश्वर परमेश्वर द्वारा जगत् में किसी का अनिष्ट नहीं होता। वे कभी हत्या को प्रश्रय नहीं

देते और न युद्ध ही चलाते हैं। तुम्हारा सिकन्दर परमेश्वर नहीं है। उन्हें भी एक न एक दिन मरना ही पड़ेगा। सिकन्दर ने मुझे जिस पुरस्कार का प्रलोभन दिया है उसका मेरे लिये कुछ भी मूल्य नहीं है। मेरी कुटी और शय्या के लिये पत्ते मौजूद हैं। वृक्ष के फल मूल से मेरी क्षुधा और इस अञ्जलि द्वारा जल पान कर पिपासा निवृत्त हो जाती है। तुम्हारे सिकन्दर मेरा मस्तक काट लेने पर भी मेरी आत्मा को अपने वश में नहीं कर सकते, परन्तु मनुष्य जिस प्रकार जीर्ण वस्त्र परित्याग कर देता है उसी प्रकार मेरी आत्मा इस शरीर को त्यागकर नया शरीर धारण कर लेगी। पृथ्वी पर आकर हम लोग उसके आज्ञानुरूप चलते हैं या नहीं, इसी बात की परीक्षा के लिये उसने हम लोगों को पृथ्वी पर भेजा है। तुम सिकन्दर से जाकर यह भी कहना कि जिन्हें स्वर्ण की आकांक्षा हो, जो सम्पत्ति लाभ के लिए अकार्य को कार्य समझ कर कर डालते हैं और सदा मृत्यु-भय से व्याकुल रहते हैं वे ही तुम्हारे इस भय-प्रदर्शन से डर जायेंगे।'

जीवन-मुक्त दण्डी का यह उत्तर सुनकर सिकन्दर दण्डी का दर्शन करने के लिये व्याकुल होकर जंगल में गया और उनका दर्शन कर कृतार्थ हुआ।

आर्य कुमार जगत्

आर्य्य कुमार सम्मेलन, इन्दौर

२६ वाँ अखिल भारतवर्षीय आर्य्य कुमार सम्मेलन ३१ मई, १ और २ जून को इन्दौर नगर में राजगुरु पंडित धुरेन्द्रजी शास्त्री, न्याय भूषण के सभापतित्व में बड़े समारोह के साथ हुआ। भिन्न भिन्न कुमार सभाओं के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त पण्डित बुद्धदेवजी, प्रोफ़ेसर सुधाकर जी तथा डॉक्टर युद्धवीरसिंह जी भी पधारे थे।

३१ मई को सायकाल इन्दौर स्टेशन पर प० धुरेन्द्र जी शास्त्री का जोरदार स्वागत हुआ और नगर में उनका शानदार जुलूस निकाला गया।

१ जून को मध्याह्न २ बजे विषय निर्वाचनी का अधिवेशन हुआ जिसमें खुले अधिवेशन के लिये १० प्रस्ताव पास हुए। ४ बजे से परिषद् का साधारण अधिवेशन हुआ जिसमें प्रांतिक परिषद् के नियम संशोधित किये गये, आगामी वर्ष का बजट पास हुआ तथा पदाधिकारियों का निम्न प्रकार निर्वाचन हुआ —

प्रधान—राजगुरु पण्डित धुरेन्द्र जी शास्त्री।

उपप्रधान—प्रोफ़ेसर सुधाकर जी एम०ए०, डॉक्कर युद्धवीरसिंह जी, महाराज कुमार सुदर्शनदेव जी, श्रीयुत बाबू राम जी शुक्ल बी० ए०, तथा पण्डित रामदत्त जी ज्ञानी।

मन्त्री—श्रीयुत मनुराम जी, बी०ए०, (ऑनर्स)।

उपमन्त्री—श्रीयुत पौनाकर जी बी०ए०, ताराचन्द जी, विश्वदेव जी तथा बद्रीदत्तजी।

कोषाध्यक्ष—श्रीयुत नन्दकिशोर जी खन्ना।

पुस्तकाध्यक्ष—रामकृष्ण जी।

अंतरंग सदस्य—कृपाराम जी, नवनीत लाल जी, लीलाकृष्ण जी, नाथूराम जी, गुलाब राय जी तथा गोविन्द राय जी।

प्रतिष्ठित सदस्य—मास्टर हरिश्चन्द जी एम०ए०,बी०टी०, पं० ज्ञानचन्द जी, श्रीयुत विश्वभर सहाय जी प्रेमी, श्रीयुत महादेव शरण जी, पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु,

माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त, पं० त्रिलोकीनाथजी भार्गव, तथा श्रीयुत किशोरीलालजी गोयल बी० ए०, एल० एल० बी० ।

रात्रि को सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ। इंदौर राज्य भूषण राय बहादुर सेठ हीरालाल जी ने सम्मेलन का उद्‌घाटन किया। आपने संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित भाषण द्वारा आर्य कुमारों को आदेश दिया कि वे "आर्य" शब्द के विशाल अर्थ को ग्रहण करें और अपने पूर्वजों के चरित्र का अनुसरण करते हुए आर्य आदर्शों तथा संस्कृति की रक्षा एवं वृद्धि करें और दृढ़ता तथा बुद्धिमत्ता के साथ आगे बढ़ें। स्वागताध्यक्ष प० त्रिलोकीनाथ जी भार्गव, ब्रांच मैनेजर जनरल ऐस्युरेन्स सोसाइटी ने प्रधान जी तथा प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए आर्य कुमारों को संगठित होने का आदेश दिया।

पंडित धुरेन्द्र जी शास्त्री ने सभापति का आसन ग्रहण किया। अपने प्रारम्भिक भाषण में आपने इस बात पर जोर दिया कि आर्य कुमार स्वाध्याय, सत्संग, सदाचार, सगठन और सेवा भाव की प्रवृत्ति उत्पन्न करें, रूढ़िवाद को नष्ट करदें, अवकाश के समय ग्राम में पहुँच कर वहाँ की जनता को साक्षर बनाते हुए उसे वैदिक धर्म की ओर प्रेरित करें। आर्य साहित्य का अनुशीलन करें तथा रहन-सहन, खान-पान, पहनाव-उढ़ाव आचारविचार में सयम और सादगी बर्तते हुए शारीरिक संगठन और चरित्र की विशुद्धता पर पूरा ध्यान दें। इसी उद्देश्य से प्रत्येक ग्राम और नगर में आर्य कुमार सभाएँ स्थापित हों जिनका परिषद् से सम्बन्ध हो और जो उसके गौरव को समझते हुए उसके आदेशों को मानें।

स्वागत मंत्री श्रीयुत किशोरीलाल जी गोयल बी०ए० एल०एल०बी०,ने महात्मा नारायण स्वामी, पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय, माननीय बी० जी० खेर आदि के शुभ सदेश सुनाये और श्रीयुत मनुराम जी बी० ए० (ऑनर्स) ने परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट सुनाई।

अधिवेशन में ६ प्रस्ताव पास हुये। प्रथम चार का सारांश निम्न प्रकार था —

१—परिषद् के भूतपूर्व प्रधान महात्मा हंसराज जी तथा आचार्य रामदेवजी की मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया और आर्य जगत् से अपील की गई कि उनके सम्मानार्थ अच्छे स्मारक स्थापित करें।

२—इंदौर नगर के उत्साही आर्य नेता मुन्शी लखपतराम जी की मृत्यु पर शोक प्रगट किया गया।

३—हैदराबाद सत्याग्रह के शहीदों के प्रति सादर श्रद्धांजलि समर्पित करते हुए आर्य कुमारों को उनके पद चिह्नों पर चलने के लिए आदेश दिया।

४—हैदराबाद सत्याग्रह की पूर्ण सफलता पर आर्य जगत् तथा सार्वदेशिक सभा को बधाई दी गई तथा परिषद् और निजाम आर्य प्रतिनिधि सभा से अनुरोध किया गया कि रियासत में इस वर्ष अधिक से अधिक कुमार सभायें स्थापित करें।

५ वाँ प्रस्ताव इस प्रकार थाः—

"यूरोपीय महायुद्ध के कारण देश में जो विकट स्थिति उत्पन्न होगई है उसे दृष्टि में रखते हुए यह सम्मेलन आर्य कुमारों तथा कुमार सभाओं को परामर्श देता है कि वे देश में आतरिक शांति क़ायम रखने के लिये पूर्ण सहयोग दें और आत्म रक्षा के लिये तैयार रहते हुए किसी भी समस्या को साम्प्रदायिक अथवा हिन्दू मुस्लिम समस्या का रूप न ग्रहण करने दें।

यह सम्मेलन ब्रिटिश सरकार से भी अनुरोध करता है कि नाज़ियाद के बढ़ते हुए आतंक को रोकने के लिये भारत की राजनैतिक आकांक्षाओं को शीघ्रातिशीघ्र पूर्ण करके भारत का सच्चा सहयोग प्राप्त करे और भारत के नवयुवकों को सैनिक शिक्षा द्वारा अपने देश की रक्षा के लिये तैयार करे।

डॉक्टर युद्धवीरसिंह जी ने प्रस्ताव को पेश करते हुए जोरदार शब्दों में साम्प्रदायिकता से उत्पन्न बुराईयों को जनता के सामने रखा।

६—यह सम्मेलन मुसलिम लीग की पाकिस्तान योजना को बिल्कुल बेहूदा और लचर समझता है और इस बात पर सतोष प्रगट करता है कि देश के कोने कोने से स्वयं मुसलमानों के बहुपक्ष ने भी इसका घोर विरोध किया है तथा आशा करता है कि यह योजना अपनी मौत आप मर जावेगी।

प० बुद्धदेव जी ने पाकिस्तान योजना के थोथे पन पर प्रकाश डालते हुए इससे देश को और स्वय मुसलमानो को होने वाली हानियों का ध्यान दिलाया। प्रोफ़ैसर सुधाकर जी ने इस योजना के विरुद्ध जोरदार युक्तियाँ देते हुए प्रस्ताव का समर्थन किया।

प्रस्तावों पर पं० रामदत्त जी ज्ञानी तथा आर्य कुमारों के भी भाषण हुए। अधिवेशन में लाउड स्पीकरों का प्रबन्ध था और उपस्थिति लगभग बीस हजार थी।

२ जून को प्रातः ८ बजे से पं० धुरेन्द्र जी के सभापतित्व में राष्ट्र हित के लिये साम्प्रदायिकता अहितकर है, विषय पर कुमारों का वाद-विवाद हुआ जिसमें आर्य

कुमार सभा दीवान भवन दिल्ली के प्रतिनिधि श्रीयुत गुलाब राव जी सर्व प्रथम रहे और उन्हें स्वर्ण पदक दिया गया। आर्य कुमार सभा, दीवान भवन, दिल्ली को राजा ज्वाला प्रसाद रजत कप मिला।

१० बजे से सम्मेलन का खुला अधिवेशन हुआ जिसमें निम्न लिखित चार प्रस्ताव पास हुए :—

१—परिषद् का इस वर्ष का कार्यक्रम निम्न प्रकार निश्चित हुआ :—

आर्य कुमारों को इस वर्ष पढ़ने के लिए पुस्तकों की एक सूचीका प्रकाशन शारीरिक व्यायाम के कार्यक्रम का प्रकाशन, कुमार सभाओं में विशेष व्याख्यानों का प्रबन्ध तथा लेख मालाओं का प्रकाशन और दहेज प्रथा तथा सिगरेट आदि मादक द्रव्यों के विरुद्ध आन्दोलन।

प्रधान जी तथा डॉक्टर युद्धवीर सिंह जी ने आर्य कुमारो तथा कुमार सभाओं से अपील की कि ५) वार्षिक चंदा देने वाले परिषद् के प्रतिष्ठित सभासद बनावें।

२—आर्यकुमारों में स्वाध्याय, सत्संग, सदाचार, सेवाभाव और संगठन की प्रवृत्ति उत्पन्न करने और उनको नियम पूर्वक शिक्षित करने के लिए कुमार सभाओं को शिक्षण शिविरों (Training Camps) के आयोजन करने का आदेश दिया गया।

३—कुमार सभाओं से अनुरोध किया गया कि इस वर्ष दो सप्ताह के लिए साक्षरता का आंदोलन करें और अनपढ़ व्यक्तियों को आर्य भाषा का अधिक से अधिक ज्ञान करावें।

४—सार्वदेशिक सभा से प्रार्थना की गई कि व्यक्तिगत रूप मे संचालित परीक्षाओं को प्रमाणित न मान कर परिषद् की वैदिक धर्म विशारद को प्रमाणित मानें और प्रांतिक सभाओं और आर्य संस्थाओ को भी ऐसा आदेश दे।

मध्याह्न साढ़े चार बजे से प्रधान जी ने पारितोषिक वितरण किए। डिबेट, निबन्ध तथा भिन्न भिन्न खेलों में प्रथम तथा द्वितीय आने वाले कुमारों को इनाम मिले।

अन्त मे परिषद् की ओर से डॉक्टर युद्धवीर सिंह जी ने स्वागत कारिणी को उनके उत्तम प्रबन्ध के लिए धन्यवाद दिया तथा प्रधान जी के भाषण के पश्चात् सम्मेलन की कार्यवाही समाप्त हुई। मनुराम

मंत्री—भा० आ० कुमार परिषद्।

२६ वें अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार सम्मेलन, इन्दौर के

स्वागताध्यक्ष

पं० त्रिलोकीनाथ भार्गव

ब्रान्च मैनेजर, जनरल एश्युरेन्स सोसाइटी लि० व

प्रधान नगर, हिन्दू सभा इन्दौर का भाषण

आदरणीय सभापति महोदय, प्रतिनिधिगण,

उपस्थित सज्जनो व देवियो !

हमारे निमन्त्रण पर आपका ऐसी कड़ी धूप में यहाँ पधारना सिद्ध करता है कि आपके हृदय में हमारे प्रति कितना प्रेम और भ्रातृ भाव विद्यमान है। यही कारण है कि आप कष्टो की तनिक भी चिन्ता न कर अपनी अमूल्य उपस्थिति से हमारे कार्य को सफल बनाने के निमित्त दूर दूर से दौड़ पड़े हैं। आपकी इस सहृदयता और सौजन्यता के लिये हम आपके आभारी हैं।

यद्यपि हमने अपनी सामर्थ्यानुसार आपके स्वागत का प्रबन्ध किया है तथापि मनुष्य स्वभाव दोषी होने से हमारे प्रबन्ध में भी त्रुटियों का होना स्वाभाविक ही है। इसके अतिरिक्त इस सम्मेलन की तिथियां दो बार स्थगित होने से हमारे उत्साह पर भी दो बार पाला पड़ चुका है, अस्तु, आशा है आप अपनी स्वाभाविक उदारता का कुछ भाग हमारी असमर्थता के लिये निश्चित करके हमे असुविधाओं के लिये क्षमा करेंगे।

जिस इन्दौर नगरी मे आप धर्म चर्चा और सगठन पर विचार करने को एकत्रित हुए हैं उसका संक्षिप्त परिचय करा देना आवश्यक है। जिस इन्दौर नगर को आप देख रहे हैं वह कोई प्राचीन नगर नही है। सन् १७८७ के पहले यह एक बहुत छोटा ग्राम था। सन् १७८७ के पश्चात् उस समय की महारानी श्री देवी अहल्याबाई होलकर ने अपने शासन काल में बद्रीनारायण में एक धर्मशाला बनवाई व कुण्ड खुदवाया, रामेश्वर, अमर कण्टक, केदारनाथ में धर्मशालाये बनवाईं द्वारका, जगन्नाथपुरी, ओंकारेश्वर, उज्जैन आदि में अन्नक्षेत्र और सदाव्रत खोले। प्रयाग, गया, अयोध्या, हरिद्वार, हृषिकेश, पंढरपुर, इलोरा,

चाँगदेव, सुलतानपुर, नासिक, पुनतम्बा, जेजुरी, महेश्वर, तथा ग्राम इत्यादि में नदियों और तालाबों पर घाट और मन्दिर बनवाये। सोमनाथ के उस प्रसिद्ध मन्दिर की मरम्मत करवाई जिसको महमूद गजनी ने नष्ट कर दिया था। और काशी का वर्तमान विश्वनाथ मन्दिर भी माता अहिल्या की धर्मनिष्ठा का प्रमाण है, उन्हीं माता अहिल्या ने इस इन्दौर ग्राम को कस्बे का रूप दिया था। उस समय से यह इन्दौर कस्बा निरन्तर उन्नति करता गया। इसको गर्व है अपनी माता अहिल्या पर जिसके नाम से भारत का कोना कोना परिचित है, जिसके उपकारों से भारत का प्रत्येक नर नारी दबा पड़ा है और जिसकी ऊपर गिनाई हुई कृतियाँ आज भी विद्यमान हैं। इस इन्दौर नगर को गर्व है अपने संस्थापक सिपाही महाराजा मल्हाराव होल्कर और जसवन्त राव होल्कर पर जिनकी तलवार के करिश्मों से सारा भारत काँप उठा था। यह उन्हीं का प्रताप था कि इन्दौर नगर पर किसी शत्रु ने दृष्टिपात करने की कभी हिम्मत न की और यह नगर सदा रक्तपात से मुक्त उन्नति की ओर अग्रसर होता रहा।

उसी भूमि में आज आप अपनी उन्नति के उपाय ढूंढ निकालने को एकत्रित हुए हैं, ऐसे महान् कार्यों के लिए पवित्र स्थान और तपस्वी मार्ग प्रदर्शक की आवश्यकता होती है इस वर्ष आपने अपने इन्दौर तो स्थान और तपस्वी धुरेन्द्र शास्त्री जी कोअपने नेता रूप में पाया है। ऐसा संयोग कदाचित ही पहले आपको कभी मिला हो। शास्त्री जी का जैसा नाम है वैसे ही आपके गुण हैं धुरेन्द्र विद्वान तो हैं हीं परन्तु आप ओजस्वी वक्ता और महान् त्यागी भी हैं, आप बाल ब्रह्मचारी हैं आपही हैदराबाद के सफल सत्याग्रह के चौथे सर्वाधिकारी थे। आप ही के चरण कमलों का प्रताप था, जिसके कारण निजाम सरकार को नींद में चौंकना पड़ा था आपके वहाँ पैर रखते ही निजाम सरकार में चिन्ता छा गई थी और वास्तव में आप ही की स्पेशल ट्रेन के सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह को उग्ररूप दिया था। आप अच्छे सिपाही और कड़े सिपहसालार हैं। आपको अपना नेता चुन कर निस्संदेह आपने एक बड़ी बुद्धिमत्ता का कार्य किया है। मैं इस उत्तम चुनाव पर आपको बधाई देता हूँ।

सारे संसार की नौका इस समय मझधार में है। ऐसी दशा में मैं आशा करता हूँ आप धुरेन्द्र जी जैसे दूरदर्शी नेता को पाकर अवश्य देश और समाज की सेवा के उपयुक्त बन सकेंगे।

जब देश की ऐसी अवस्था हो उस समय जो विचार विनिमय होता है वह परिस्थिति को सामने रख कर होना चाहिये। आज के नवयुवकों को अप्रैल सन् १६४० अर्थात् एक मास पूर्वक नवयुवको से बिल्कुल भिन्न होना चाहिए कारण कि अवस्था बदल चुकी है। हमारा धर्म वस्तुस्थिति को देखकर वर्ता जाता है। हम फकीर के फकीर नहीं, जब शांति का समय हो धर्म कर्म की विधि अन्य होती है और जब सकट समय हो उस समय मर्यादा नही वर्ती जाती। शान्ति के समय धर्म-कर्म पूजा पाठ नेम और व्रत गाजे बाजे से भी होते हैं परन्तु जब शान्ति न हो, जब समाज और देश सकट में हों उस समय धर्म का रूप विकराल हो जाता है। तलवार हाथ में हो, नैन रक्त हो, भृकुटी चढ़ी हों, जरा २ सी देर में रोमांच हो आता हो, मारने व मर मिटने की लालसा हो, वही उस समय का धर्म होता है हमने धर्म के ऐसे आचरण एक बार नहीं अनेकों बार किये हैं। सिर कटा पर चोटी नहीं, शरीर टुकड़े २ कटा, तेल में तला, कोल्हू में पिला और दीवारों में चुना गया। काहे को ? केवल धर्माचरण के निमित्त। उस समय प्राण का मोह छोड़ देना ही धर्म होता है। उन्हीं शहीदों ने आपको भारत में आज हिन्दू कौम के नाम से जीवित रखा है। यदि गुरु गोविन्दसिंह, गुरु तेगबहादुर, छत्रपति शिवाजी, हकीकत राय, ऋषि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द न होते तो अवश्य आज इस जलसे को मनाने के लिये हम और आप भी न होते। वही धर्म-सकट आज भी हमारे सामने उपस्थित है। अपने पूर्वजों की भांति यदि धर्माचरण करें तो जिस प्रकार आज तक जिये हैं आगे भी जी सकेंगे। परन्तु बन्धु ! मेरी स्वत. की इच्छा तो इस प्रकार के जीने की नहीं। मेरी इच्छा तो ऐसे जीने में है जो मनुष्य का जीवन हो। पशु पक्षी का जीवन नहीं। मैं तो पूर्वजों के धर्माचरण के साथ २ सगठन को और जोड़ना चाहूँगा। यदि समयानुकूल धर्माचरण करते हुए हम सगठित भी हो जॉय तो हम जीवित कहे जाने के लायक बन सकते हैं। यदि अलग २ धर्माचरण किया, कुर्बानी दी तो जिस अवस्था में हैं फिर भी रह सकेंगे परन्तु यह जीवन आप में से अधिकांश को कदाचित वाञ्छनीय नहीं। ऐसी दशा में विचार विनिमय करते हुए यह ध्यान रखें कि हमें समयानुकूल धर्माचरण करते हुए सगठित होना है। अध्यात्मिकता और धर्म प्रचार का कार्य छोड़ दें आर्य समाज पर, जो इसको सुचारु रूप से करने में समर्थ है।

संगठित जाति मारे से नहीं मरती। उदाहरण आपके सामने है। जर्मनी

मित्र राष्ट्रों के हाथों सन् १६१८ में परास्त हुआ, पदाक्रान्त और निःशस्त्र करके कर्जे के बोझ से इतना लाद दिया गया था कि यदि उसमें संगठन न होता तो वह इन २२ वर्षों में अवश्य दूसरी कौम हिन्दुस्तानी बन जाती, परन्तु मित्रो विचार करने का विषय है कि वही जर्मनी कमजोर होने के बजाय इतना सशक्त है कि अपने जुल्मों से सारे संसार में आतंक जमा रहा है। हमें उसकी इस अच्छाई को जो संगठन करने की उस जाति में है देखना है और नकल करना है।

आप में त्याग करने की शक्ति विद्यमान है, यह हम अभी हैदराबाद के मोर्चे पर देख चुके हैं। यह शक्ति आपको जीवित रख सकती है उसी दशा मे जिस दशा मे इस समय आप हैं, जैसा कि मै पहले कह चुका हूँ। परन्तु स्वतन्त्र होकर हिन्दू राष्ट्र निर्माण करना केवल संगठन पर निर्भर है। संगठन आप अकेले डफली बजा बजा कर नहो कर सकते। आपको अपना नेता नियुक्त करना ही होगा। और उस पर न्यौछावर होने की आदत डालनी पड़ेगी। राजा आपके संरक्षक सदा ही रहे हैं और उनकी सरक्षता को स्थिर रखना हमारा धर्म हैं स्वामी दयानन्द ने हिन्दू राजाओ को देश और जाति का आधार माना है। हिन्दू राष्ट्र निर्माण करने मे हिन्दू नरेशों की आवश्यकता है जो सस्था उनको छोड़कर उनकी जड़ें खोखला करना चाहती हैं वे हिन्दू धर्म और हिन्दू राष्ट्र की सेवा नहीं कर रही हैं, उन्होंने या तो इस ओर ही ध्यान नहीं दिया और या वे अपने उन्माद में इस गौण विषय की उपेक्षा किये हुए हैं, आशा है आप अपने प्रोग्राम पर विचार करते समय इस ओर भी अवश्य ध्यान रखेंगे जिसमें मै जाति और देश का हित देख रहा हूँ। परमात्मा करे आप अपने ध्येय मे सफलता प्राप्त करें।

—— ——

मनुष्य का विकास

[लेखक—श्री पं० केशवदेव जी ज्ञानी]

पशु और मनुष्य में मोटा भेद यह है कि जहां पशु गर्दन झुकाए हुए अपनी जिन्दगी के दिन गुज़ारता है। वहाँ मनुष्य अपना सिर उठाकर कभी कभी आश्चर्य भरी दृष्टि से ऊपर देख कर पूछता है कि यह सब "क्यो और कैसे" हुआ ?

दूर जाने से पहिले अपने से ही पूछना चाहिये कि मैं क्यो और कैसे आया ? मेरा शरीर कैसे पैदा हुआ ? मेरा मन, मेरी आत्मा ?

आज पश्चिमीय विज्ञान ने बड़ी उन्नति की है। जीवन शास्त्र को बड़े विस्तार से समझने का प्रयत्न किया है। जीवन-विज्ञान (Biology) के अनुसार मनुष्य की सृष्टि संक्षेप में यो कही जा सकती है :—

दो प्रकार के जीवांश माने गये है, पुरुष और स्त्री। इन्हे अंग्रेजी मे Male and Female germ cells कहते हैं। वृक्ष, वनस्पति अथवा प्रारम्भिक पशु सृष्टि मे ये दोनों—पुरुष तथा स्त्री जीवांश प्रायः इकट्ठे पाए जाते हैं। हवा, पानी तथा अन्य साधनो द्वारा इनका मिलाप होता है। और फिर विभाजन-क्रिया द्वारा इनकी सृष्टि होती है।

परन्तु आम पशुओ और मनुष्यो की उत्पत्ति का प्रकार स्त्री-पुरुष मैथुन है। यही सृष्टि का नियम है। इसी तरह प्रजोत्पत्ति होती है। और यही लिंग-भेद का कारण है।

× × × ×

पुरुष के जीवांश को हम सामान्यत. वीर्य कहते है। परन्तु वस्तुत उसमे बहुत सा भाग एक तरल पदार्थ का होता है जिसमे जीवांश गति करते हैं। इस जीवांश को अंग्रेजी मे Sperm Cell कहते है, यह एक धागे की किस्म का पतला कीड़ा होता है। यह पुरुष के वीर्य द्वारा स्त्री-योनि मे चलता हुआ गर्भाशय के समीप स्त्री के जीवांश अथवा Egg Cell से मिलता है। मिलकर दोनो एक हो जाते है। इस प्रकार गर्भाशय मे गर्भ का विकास प्रारम्भ होता है। ९ महीनो

तक यह विकास होता रहता है। और तत्पश्चात् Delivery अथवा पुत्रोत्पत्ति की क्रिया होती है।

× × × ×

संसार के आश्चर्यों में यह भी एक महान् आश्चर्य है कि किस प्रकार एक जरा से कतरे जीवांश से जो आँखों से दिखाई भी नहीं देता, इतने बड़े शरीर की उत्पत्ति होती है जिसमें अत्यन्त सूक्ष्म यन्त्रों के समान अनेक कल पुरज़े लगे हैं। एक ओर दिमाग़ का टैलीफोन एक्सचेञ्ज है। दूसरी ओर दिल का पम्पिंग स्टेशन है जो २४ घण्टे बग़ैर रुके काम करता है। तीसरी ओर नानाविधि पाचन क्रियाओं की रसायन शाला है जिसमे भोज्य-द्रव्यों से रस, रक्त, माँस, अस्थि, मज्जा आदि बनाए जाते हैं,

इन सबसे भी बड़ा आश्चर्य यह है कि उस सूक्ष्म से जीवांश पर किस प्रकार माता पिता के समस्त जीवन का इतिहास लिखा रहता है। ठीक वही शक्ल-सूरत, वही कद-बुत, वही रङ्ग, वही ढाँचा। यहाँ तक कि आवाज़, आदत, मिज़ाज पसन्द-नापसन्द वग़ैरह भी तकरीबन मिलते-जुलते हैं। इसलिये यदि माता-पिता के गुण-दोष भी बच्चों में पाए जाँय तो इसमें क्या आश्चर्य है?

× × × ×

पश्चिमीय वैज्ञानिकों ने अनेक परीक्षणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि अमुक अमुक परिमाण में माता-पिता, दादा, नाना आदि के प्रभाव संतानों में पाए जाते हैं। इसे "मैण्डल" का पैतृक नियम कहते हैं।

किसी मनुष्य की सामान्य आयु का अनुमान भी उसके माँ बाप तथा अन्य पूर्वजों की आयु से किया जाता है। आम तौर पर लम्बी आयु वाले माँ-बाप की सन्तान भी दीर्घायु होगी। और अल्प-जीवियों की अल्पायु। Accident अथवा दैवीय दुर्घटना का हिसाब इसमें नहीं है।

× × × ×

क्योंकि मनुष्य की उत्पत्ति स्त्री-पुरुष के जीवाँशों से होती है इसलिये यदि हम मनुष्य का विकास चाहते हैं तो हमें उक्त स्त्री-पुरुषों का विकास करना होगा। यदि स्त्री-पुरुष स्वस्थ हैं, सच्चरित्र हैं, शक्तिशाली और परिश्रमी हैं तो कोई कारण नहीं कि उनकी सन्तान इन सब गुणों से युक्त न हो।

इसके विपरीत यदि स्त्री-पुरुष रोगी, दुश्चरित्र, निर्बल और आलसी हैं तो उनकी सन्तान भी उन्हीं दोषों से युक्त होगी।

यही कारण है कि अब अनेक पश्चिमीय देशों में यह राज नियम बनाए जा रहे हैं कि विवाह से पूर्व स्त्री-पुरुषों की परीक्षा की जाय। आचार्य दयानन्द ने भी सत्यार्थ प्रकाश में इसी प्रकार लिखा है। इस से शनैः २ निर्बलों, रोगियों तथा दुश्चरित्रों की सृष्टि कम हो जाएगी।

× × × ×

मनुष्य विकास की अनेक श्रेणियां हैं। प्रथम गर्भ से पूर्व स्त्री-पुरुषों की दशा। द्वितीय, गर्भाशय में बालक का विकास। तृतीय, उत्पत्ति के पश्चात् बाह्य-अवस्थाएं।

जहाँ स्त्री-पुरुषों को गृहस्थ धर्म से पूर्व अपने विकास का प्रयत्न करना चाहिये, वहाँ गर्भ की अवस्था में माता को विशेष ध्यान देना चाहिये कि कहीं उसके दुर्व्यसनों का परिणाम उसके बच्चों को न उठाना पड़े।

हम अपने को धोखा दे सकते हैं। अपने पड़ोसियों को धोखे में रख सकते हैं। यहाँ तक कि सारे समाज को भी हम धोखा दे डालें। परन्तु प्रकृति के अटल नियमों को हम कभी धोखा नहीं दे सकते।

हमारा प्रत्येक कार्य, प्रत्येक विचार हमारे शरीर की प्रत्येक सैल (Cell) में नोट किया जाता है। भले ही हम उसे खुद भूल जाँय। परन्तु हमारे मन, अन्त-करण और आत्मा पर उसकी अमिट छाप लग जाती है। उसी का परिणाम हमारे जीवाँशो द्वारा हमारी सन्तान में दिखाई देता है।

माता के खून से गर्भ बढ़ता है। माता के दूध से बच्चा पलता है। जहा माता के शारीरिक गुण-दोष बालक में आते हैं, वहाँ मानसिक और बौद्धिक भी। फिर ज्यों २ वह बड़ा होता है त्यों उसकी इन्द्रियां और मन विकसित होते हैं। और उनके विकास के साथ वह बाहरी अवस्थाओं से प्रभावित होने लगता है।

पैतृक प्रभाव और बाह्य अवस्थाए ये दो मुख्य साधन हैं जिनके द्वारा मनुष्य का विकास होता है। इन दोनों में जैसा हम परिवर्तन लाएंगे वसा ही भावी मनुष्य-समाज में परिवर्तन होगा।

इस विषय पर आगामी अङ्क में हम अधिक प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

आर्य समाज के तीन कर्तव्य

[ले०—श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय]

—※—※—※—

ससार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् सामाजिक, आत्मिक और शारीरिक उन्नति करना, वस्तुतः देखा जाय तो प्रत्येक व्यक्ति भी यही चाहता है कि उसकी सब प्रकार की उन्नति हो और प्रत्येक समाज या संस्था भी यही कहती है कि हमको ससार की उन्नति अभीष्ट है। इस प्रकार उद्देश्य की दृष्टि से आर्य समाज और अन्य सस्थाओं में अन्तर नहीं। परन्तु मार्ग और साधन में बहुत अन्तर है। आर्य समाज का कहना है कि वैदिक मार्ग पर चलने से ही उन्नति हो सकती है।

आर्य समाज के सामने इस समय तीन समस्यायें हैं :—

(१) जो आर्य बन चुके हैं और आर्य समाज के साथ सीधा सम्बन्ध रखते हैं उनको वैदिक मार्ग पर किस प्रकार चलाया जाय कि वह अपने हृदय पर हाथ रखकर कह सकें कि कल की अपेक्षा उनका आज का जीवन अधिक वेदानुकूल है।
But to act that each tomorrow finds us further than to-day

(२) जो आर्य समाज में हैं या थे उनके परिवार में आर्य समाज के जीवन को कैसे स्थिर रक्खा जाय।

(३) जो आर्य समाज में नहीं हैं उनको आर्य समाज की ओर कैसे आकर्षित किया जाय। जो उदासीन हैं उनको कैसे मित्र बनाया जाय और जो मित्र हैं उनको कैसे अनन्य आत्मीय बनाया जाय।

तीसरी समस्या अत्यन्त जटिल है जब अन्तर्जातीयता और विश्व-प्रेम का वायु मण्डल हो तो प्रत्येक हितकारी बात का प्रचार सुगम होता है, क्योंकि लोग अनुसन्धान और अन्वेषण की ओर झुके होते हैं और सत्य को प्रिय अथवा अप्रिय रूप में रखने से भी सत्य की जीत हो सकती है। कोई रोगी औषधि को इस लिये नहीं त्याग देता कि वह कड़वी है। ज्वर के रोगी "सप्ततिक्त" को बड़े चाव से पीते हैं परन्तु जहाँ अन्तर्जातीय अविश्वास और जातीयता की सकुचित लहरें तूफान

उत्पन्न कर रही हो वहाँ सत्य का तिरो भाव तो अवश्यम्भावी है। देशाभिमानी और जन्माभिमानी लोग दूसरों को शत्रु समझते हैं और तो उनकी बात कौन सुने। आजकल हिन्दू-मुस्लिम समस्यायें इतनी जटिल हो रही है कि यह समझ मे नही आता कि हम अपने मुसल्मान भाइयों के सामने वैदिक सच्चाइयो को किस प्रकार रख सकें और उन्ही समस्याओ का फल है कि हम हिन्दुओ का भी उनकी बुराइयो से बचाकर वैदिक धर्म के अनुकूल बनाने मे असमथ हैं। एक हमको शत्रु समझता है और हमारी बात सुनने को तैयार नही है। दूसरा हमसे कहता है कि तुम मित्र हो। हमको बाहर के आक्रमणो से बचाओ परन्तु फोड़े मे नस्तर न लगाओ।

मेरी समझ में आर्यसमाज में कुछ व्यक्ति ऐसे होने चाहिये जो साधारण जनता के साधारण तथा चमकीले तल से ऊँचे हों और वर्तमान उलझनो से बचकर यह सोच सके कि ससार की भिन्न २ जातियों मे चाहे भारतीय हो चाहे बाहर की, वैदिक-धर्म का कैसे प्रचार कर सकें। यदि ऐसा न होगा तो अपने को सम्प्रदायो से अलग कहते हुये भी हम सम्प्रदायी हो जायेंगे और आनेवाली सन्तान ऋषि दयानन्द के आदर्शों को सवथा भुला देगी।

दूसरा प्रश्न भी कम कठिन नही है आर्य परिवारो की ओर देखो। जो लोग जोशीले प्रधान और मन्त्री थे उनकी सन्तान से सनातनी रूढियाँ पुकार पुकार कर कह रहीं हैं।

Man may come and man may go,

And I go on for ever

इसमे सन्देह नहीं कि आर्य समाजो की सख्या पहले से कई गुनी है। परन्तु जो परिवार पहले सामाजिक थे वह अब सामाजिक नही है। एक पडित जी मुझसे कहा करते थे कि लोग युवावस्था मे आर्य हो जाते है परन्तु अनुभव होने पर छोड़ देते है। कुछ भी कारण हो परन्तु इसमे सन्देह नही कि विरले ही परिवारो मे आर्य समाज का आधिपत्य दो या तीन पीढ़ियो तक चलता है।

इस दूसरी समस्या का मुख्य कारण पहली समस्या है। आर्य लोगो मे आत्म-सुधार की अपेक्षा देश सुधार की अधिक उत्सुकता होती है। वह कभी अपने से प्रश्न नही करते कि कलकी अपेक्षा मैंने अपने जीवन मे कितना धार्मिक परिवर्तन किया है। सभी को शिकायत है कि हमने पिछले साठ वर्ष के प्रचार मे समाज के आचार-तल को ऊँचा नहीं किया परन्तु कोई नही कहता कि मैंने अपने आचार-तल को जो सर्वथा मेरे

साहित्य समीक्षा

'Religious Renaissance Series' इस नाम की एक पुस्तक माला आर्यसमाज चौक इलाहाबाद की ओर से प्रकाशित होनी आरम्भ हुई है। अभी तक पाँच निम्न पुस्तकें निकल चुकी हैं.—

(1) Reason and Religion

(2) Dayanand's Contribution to Hindu Solidarity.

(3) I and My God.

(4) The Origin , Scope and mission of the Aryasamaj

(5) Worship,

इन पाँचों पुस्तकों के लेखक हैं आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् तथा लेखक श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०। अभी तक उपाध्याय जी ने आस्तिकवाद आदि कई पुस्तकें गम्भीर विषयों पर हिन्दी में लिखी थीं। अब पं० जी ने अँगरेजी के साहित्य की वृद्धि करनी आरम्भ की है। हमको हर्ष होता है कि ऊपर दिये हुये पाँचों रत्न आर्यसमाज के साहित्य में एक बहुमूल्य स्थान रखते हैं। इन सब की छपाई आदि सब अत्युत्तम और अँग्रेजी ढग के हैं। Get-up (रूप रेखा) सब अनूठी है और अँग्रेजी की प्रसिद्ध पुस्तकों का मुकाबिला कर सकती है। विषय अत्यन्त रोचक तथा उपयोगी हैं। यहाँ हम पुस्तकों का पूरा विवरण नहीं दे सकते परन्तु संकेत कर देना हमारा कर्तव्य है। Reason and Religion में वैदिक सिद्धांतों का सक्षेप रूपेण बहुत अच्छा विवरण किया गया है। वैदिक-धर्म के प्राकृतिक

हाथ में था ऊँचा करने का प्रयत्न नहीं किया। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपना आचार-तल ऊँचा कर लेता तो अवश्य ही समाज का आचार-तल ऊँचा हो जाता। हमने ईश्वर पर स्वय श्रद्धा नहीं की परन्तु दूसरों को ईश्वर-श्रद्धा के लिये उपदेश दिया। हम सबसे कहते रहे कि संगठन करो परन्तु उसी समय तक जब तक हमारा स्वार्थ सिद्ध होता है।

यहाँ मैंने तीन बातों की ओर संकेत किया है। इन विषयों पर बहुत कुछ वक्तव्य हो सकता है परन्तु विचारशील पुरुषों के लिये तो अलमिति विस्तरेण।

नियम (Laws of Nature) और मानुषीय नियम (Laws of man) के साथ तुलनात्मक समीक्षा की गई है। Prophet and Priest अर्थात् पुरोहित और पैग़म्बर का अध्याय बहुत ही विचार से लिखा गया है

दूसरी पुस्तक में आर्यसमाज ने हिन्दुओं के उत्थान के लिये क्या किया इसका रोचक और शिक्षाप्रद वर्णन है। जो पढ़ेगा वही आर्यसमाज और दयानन्द का उपकार मानेगा।

तीसरी अर्थात् I and My God में अद्वैतवाद तथा वैदिक त्रैतवाद की बहुत ही उपयोगी समालोचना है और अँग्रेज़ी के आज-पर्यन्त के दर्शन-साहित्य से वैदिक त्रैतवाद का महत्व बताया गया है। श्री सर राधाकृष्ण के उद्धरण मार्के के हैं।

चौथी पुस्तक में आर्यसमाज के विषय में जानने योग्य सभी बातों का समावेश है। आज तक इस विषय पर कोई इतनी पूर्ण-पुस्तक देखने में नहीं आई इसमें नियम, उपनियम, सिद्धान्त, संस्कार, कार्य, सुधार सभी हैं।

पाँचवीं पुस्तक अभी निकली है। मूर्ति-पूजा को आजकल के शिक्षित लोग किस प्रकार सिद्ध करते हैं उसकी विश्लेषणात्मक विवेचना बहुत अच्छी है।

हमारी राय है कि इस साहित्य को शिक्षित युवकों तक अवश्य पहुँचाया जाना चाहिये।

बढ़िया काग़ज़ बढ़िया जिल्द का मूल्य १), साधारण बिना जिल्द के ॥) प्रत्येक पुस्तक में लगभग पौने दो सौ पृष्ठ हैं।

समाजों को चाहिये कि अपने नगर के प्रतिष्ठित पुरुषों तक इस साहित्य को अवश्य पहुंचावें।

॥ ओ३म् ॥

आर्यवीर-दल के नियम

(सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली की अन्तरङ्ग सभा २-६-१९४० द्वारा स्वीकृत)

नाम—इस सङ्घ का नाम आर्यवीर-दल होगा। इसका प्रत्येक सदस्य आर्यवीर तथा प्रत्येक सदस्या आर्य वीरागना कहलायेगी।

उद्देश्य—१—आर्य जाति में क्षात्रधर्म का प्रचार करना एवं आत्म-रक्षा की योग्यता उत्पन्न करना।

२—जनता में सेवा-भाव का प्रचार करना।

३—आर्य-धर्म, सभ्यता तथा संस्कृति की समस्त उचित उपायों द्वारा रक्षा करना।

विभाग—(१) आर्यवीर विभाग—इसमें १८ से ५० वर्ष तक की आयु के वीर प्रविष्ट होंगे।

(२) आर्य-वीरागना विभाग—इसमें १८ से ४० वर्ष तक की आयु की वीरागनायें प्रविष्ट होंगी।

(३) बाल विभाग—इस विभाग में १० से १७ वर्ष तक की आयु के बालक और बालिकायें इस दृष्टि से प्रविष्ट की जायेंगी कि प्रौढ़ होने पर क्रमानुसार सं० १ व २ में भरती हो सकें। बालक और बालिकाओं के दल पृथक् २ होंगे।

नोट—आयु की अवधि का नियम विशेष अवस्था में शिथिल किया जा सकता है।

सदस्य—आर्य संस्कृति में आस्था रखने वाले जिसमें वैदिक धर्मी, सनातनी, सिक्ख, जैनी, बौद्ध, राधा स्वामी, ब्रह्मसमाजी आदि सब समाविष्ट हैं, इनमें से कोई स्त्री-पुरुष निम्न प्रतिज्ञा पत्र भरने पर दल के सदस्य बन सकेंगे।

प्रतिज्ञा—ओं अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यतामिदमहमनृतात्सत्यमुपैमि। मैं 'व्रत पति, परमात्मा को साक्षी करके प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि 'मैं आर्य संस्कृति तथा जनता की रक्षा के कार्यों तथा लोक सेवा के लिये तैयार रहूंगा'/रहूंगी' और आर्य वीर दल के अधिकारियों की आज्ञाओं का तथा आर्य वीर दल के लिये नियत नियन्त्रण का अविचल पालन करूंगा'/करूंगी' तथा आर्यवीर दल के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये सर्वदा उद्यत रहूंगा।'/रहूंगी।'

किसी भी स्थान पर ११ वीर होने पर इसकी शाखा स्थापित की जावेगी।

संगठन—दल का सङ्गठन निम्न प्रकार होगा :—

१ टोली—११ वीर होने पर एक टोली बन सकेगी। जिनमें से १ टोली अध्यक्ष तथा एक सहायक टोली अध्यक्ष होगा।

२ जत्था—४ टोलियें का एक जत्था बन सकेगा। इसके ऊपर एक सङ्घाध्यक्ष तथा एक सहायक जत्था अध्यक्ष होगा। इस प्रकार जत्थे म कुल संख्या ४६ होगी।

३. सङ्घ—चार जत्थों का एक सङ्घ बन सकेगा इसके ऊपर एक सङ्घाध्यक्ष तथा दूसरा सहायक सङ्घ अध्यक्ष होगा। इस प्रकार सङ्घ मे कुल संख्या १८६ होगी।

४ पथक—चार सङ्घों का एक पथक बनेगा। इसके ऊपर एक पथकाध्यक्ष तथा एक सहायक पथकाध्यक्ष होगा। इस प्रकार इसकी कुल संख्या ७८६ होगी।

५. दल—चार पथकों का एक दल होगा। इसके ऊपर एक दलपति तथा दूसरा सहायक सेनापति होगा। इस प्रकार उसकी कुल संख्या २६८६ होगी।

६ सेना—चार दलों की एक सेना कहलायेगी। जिसके ऊपर एक सेनापति तथा दूसरा सहायक सेनापति होगा। इस प्रकार इसकी कुल संख्या ११६८६ होगी।

उपर्युक्त सेना तथा उसके विभागो का अधिनायक एक मुख्य सेनापति होगा।

नोट.—आर्यवीरदल के उपर्युक्त विभागों के साथ आवश्यकतानुसार अन्य कर्मचारी भी होंगे जैसे चिकित्सक अपने स्टाफ सहित, स्टेचर उठाने वाले, बिगुलर, सन्देश वाहक भण्डी वाले वाहन प्रबन्धक आदि।

दीक्षा—(क) दल के प्रत्येक वीर को दल के अधिकारियो द्वारा नियत शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक होगा। जिस समय तक किसी शिक्षण शिविर मे रहकर शिक्षा प्राप्त नहीं की जावेगी कोई भी वीर दीक्षित न माना जावेगा।

ख—शिक्षा पूरी होने पर ध्वज के सन्मुख आर्यवीरो तथा वीरागनाओ के लिये नियत प्रतिज्ञा ग्रहण करनी होगी।

नोट—शिक्षा तथा दीक्षा की पद्धति दल के अधिकारी नियत करेंगे।

वेश—सभी आर्यवीरों तथा आर्यवीरागनाओं को दल के अधिकारियो द्वारा नियत वेश पहिनना होगा। वस्त्र सब स्वदेशी तथा यथासम्भव खादी के होंगे।

प्रबन्ध—(क) दल के कार्य-सञ्चालन के लिए एक "अखिल भारतीय आर्यवीर दल समिति" होगी। समिति के सदस्यो की संख्या ११ होगी।

ख—समिति का निर्माण निम्न प्रकार होगा—प्रधान सार्वदेशिक सभा, कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा द्वारा नियुक्त मुख्य सेनापति तथा आर्यवीर दल समिति का मन्त्री तथा अन्य ६ सदस्य नियुक्त।

ग—सभा की प्रधान ही समिति का प्रधान होगा। उसकी अनुपस्थिति मे उपस्थित सज्जनों में से कोई प्रधान चुना जावेगा।

दल के अधिकारी विभाग—आर्यवीर दल के अधिकारियों के दो विभाग होंगे।

१—साधारण अधिकारी जिन्हें मुख्य सेनापति की सिफारिश पर अखिल भारतीय "आर्यवीर दल समिति" नियुक्त करेगी।

नोट:—आवश्यकतानुसार उपनियमों के निर्माण करने का अधिकार अखिल भारतीय "आर्यवीर दल समिति" को होगा।

सम्पादकीय

महात्मा गांधी की अपील

हाल ही में महात्माजी ने जोरदार शब्दों में एक अपील शाया की है जिस के आधार पर उन्होंने प्रत्येक अँग्रेज से आग्रह किया है कि वे इस महायुद्ध मे हथियार डाल दें और जर्मनी की क्रूरता और बरबरता का मुकाबिला हिंसा से न करके अहिंसा से करें। ऐसा करने पर ही उनको विजय प्राप्त हो सकती है।

इस अपील में महात्माजी ने जो युक्तियां दी है वे अकाट्य है और उनकी शक्ति सारे संसार को माननी पड़ेगी। वह कहते है कि चाहे लड़ाई का कैसे भी फैसला हो प्रजातन्त्रवाद का सर्वथा नाश हो जावेगा। यह युद्ध मनुष्य जाति के लिए एक लानत भी है और एक चेतावनी भी। लानत इसलिये कि इसने मनुष्य को पशु के तुल्य बना दिया है। लड़ने वाले और न लड़ने वालों का भेद मिटा दिया है। इस युद्ध मे सभी की हानि होरही है। झूठा प्रापेगैण्डा एक कला का रूप धारण कर चुका है। ब्रिटेन छोटी छोटी जातियों की रक्षा के लिये खड़ा हुआ था, वे सब एक एक करके दबाई जा चुकी है।

यह युद्ध-चेतावनी इसलिये है कि यदि मनुष्य इससे कोई पाठ न सीखेंगे तो हमेशा के लिये मनुष्य जाति अधोगति को प्राप्त हो जावेगी। महात्माजी कहते है कि इस चेतावनी को खुले तौर पर घोषित करने का साहस और प्रेरणा उन को ईश्वर की ओर से हुई है।

युद्ध को समाप्त कर देने के लिये वह अँग्रेजों को जो परामर्श देते हैं वह इस लिये नहीं कि अँग्रेज दम तोड़ बैठे है और आगे उनमें लड़ने की शक्ति नहीं रही, बल्कि इसलिये कि यह मार्ग ही ठीक नहीं। इस पर चलकर अपने मकसद की पूर्ति ही नहीं हो सकती। तुम नाजी वाद को कुचलना चाहते हो, यह काम नाजी वाद के मार्ग पर चलने से सिद्ध न होगा। तुम्हारे सिपाही वही नाश का काम करेंगे जिनके लिये तुम नाजियों को बुरा भला सुनाते हो। नाजीवाद को जीतना नाजी-

वाद के अनुकरण से न हो सकेगा उसके मुक़ाबिले में उसका विरोधीवाद अर्थात् अहिंसावाद खड़ा करो, तभी तुम्हारी जीत है अन्यथा नहीं।

महात्माजी कहते हैं कि कोई पक्ष न्याय-युक्त नहीं हो सकता जिसके लिये मनुष्य-सकाज को इतना बड़ा बलिदान देना पड़े। मैं ब्रिटेन की हार नहीं चाहता पर पाशविक शक्ति की आज़मायश में उसकी जीत भी नहीं चाहता। ब्रिटेन का बाहुबल विख्यात है। उसको सिद्ध करने के लिये पाशविक शक्ति को काम मे लाने की जरूरत नहीं है।

आगे चलकर महात्मा जी अँग्रेजों को सम्बोधन करके कहते हैं—मैं तुम्हें अधिक उत्तम और बहादुरी का मार्ग बताता हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम नाज़ीवाद का सामना बिना शस्त्रों के करो, यदि तुम शस्त्र शब्द का प्रयोग ही चाहते हो तो अहिंसा रूपी शस्त्र को धारण करो, हिटलर और मुसोलिनी को बुलाकर कहदो कि वह तुम्हारे देश पर कब्ज़ा जमा लें पर तुम्हारी आत्मा पर वह कब्ज़ा न जमा सकेंगे। यदि वह तुम्हारे देश में घुस आवें तो उनको अपनी असहयोग की शक्ति से नाकारा बनादो। यदि तुम असहयोग के शस्त्र को धारण कर लेते तो यूरोप का इतिहास ही बदल जाता और पिछले महिनों में जो लाखों नर-नारियों और बच्चों का सहार हुआ है और खून की नदिया बहाई गई है; यह सब शैतानी काढ न होता।

अन्त में महात्माजी लिखते है कि यह मार्ग जिस पर चलने के लिये मै तुम को परामर्श देरहा हूँ इस पर मैं स्वय ५० वर्ष से चल रहा हूँ। इस मार्ग की सुखद स्मृतिया मेरे मन में विराजमान हैं और मैं उस पथ का अनुभवी पथिक अपने आप को कहता हूँ। अहिसा और सत्य का मैं पुजारी हूँ। इनके सिवाय भी दूसरे किसी मार्ग को नहीं जानता और न ही कोई और बात मुझे जीवन में इनका स्थानापन्न दिखाई देती है।

महात्माजी अपनी अपील को इस प्रकार समाप्त करते हैं। "ईश्वर मेरे शब्दों में बल दे। उसी के नाम पर मैंने यह अपील शुरू की थी और उसी के नाम पर इसे समाप्त करता हूँ। ईश्वर तुम्हारे नीति-विशारदों को बुद्धि दें ताकि वह मेरे मार्ग पर चल सकें। मैंने वाइसराय महोदय को कह दिया है कि यदि वह मेरी अपील को क्रियात्मक ख्याल करें और इसके प्रचार में मेरी सहायता की जरूरत समझें तो मैं अपनी सेवायें देने को तैयार हूँ।"

दो प्रकार की मनोवृत्ति

महात्मा गाधी ने जो अपील अंग्रेजों से की है उसका स्वागत देश विदेश में कैमा होगा इस बात को समाचार पत्रों के पढने से हम जान सकेंगे। भारतीय सस्कृति और पाश्चात्य सस्कृति में नितान्त भेद दीखता है। पाश्चात्य जातिया आज तक हिसा पर ही पली हैं और हिसा ही को वह अपना एक मुख्य साधन बनाये हुये है। एक जाति जब दूसरी जाति पर आधिपत्य जमाना चाहती है तो वह इसी शस्त्र का प्रयोग करती है। योरुप की सभी लड़ाइयों मे हम यह देखते आये है कि वहा हिसा को हिसा की शक्ति से जीतने की कोशिश की जाती रही है। इसमें सन्देह नहीं कि जिस जाति के हाथ मे अधिक पाशविक शक्ति रहती है वह न्यून पाशविक शक्ति को दबा लेती है परन्तु बोलबाला सदा ही पाशविक शक्ति का रहता है। मनुष्य जाति के लिए यह कोई अभिमान की बात नहीं। बड़े से बड़े युद्ध को जीत लेना और लाखों निरपराधी प्राणियों का सहार कर देना किसी पक्ष को न्याय युक्त नहीं बना सकते परन्तु हमें आशा नही कि योरुप की अधिकाश जातिया महात्मा जी की अपील का स्वागत करेंगी क्योंकि जिस मनोवृत्ति पर उनका पालन पोषण हुआ है वह सर्वथा हिसा के सिद्धान्त के अनुकूल हैं। अहिसा का प्रचार यदि किसी देश ने किया है तो वह देश भारतवर्ष ही है। अहिसा शोभा उसी समय देती है जब कि यह शस्त्र शक्तिशाली जाति या व्यक्ति के हाथों मे हो। कमजोर हाथों में इस शस्त्र का प्रयोग हो ही नहीं सकता यदि होता है तो वह उपहास का विषय बन जाता।

आर्य्य कुमार परिषद्

हमारे पाठकों को यह विदित ही होगा कि आर्य कुमार परिषद् स्वर्गीय पडित केशवदेव जी शास्त्री के समय से आर्य कुमारों में आर्य सस्कृति के आदर्शों को पुनर्जीवित करने की उत्कट अभिलाषा रखता तथा प्रयत्न करता चला आ रहा है। आर्यसमाज के क्षेत्र में ऐसे प्रभावशाली व्यक्तियों की भारी कमी है कि जिन्हों ने आर्य कुमारों के अन्दर काम करना तथा उनको आर्यसमाज की सेवा के लिए तैयार करने का बीड़ा अपने ऊपर लिया हो। कुमारों की शक्ति को सगठित करना एक महान् कार्य है और उनकी सगठित शक्ति से जो कार्य सिद्ध होते हैं वे भी महान् कार्य होते है। ईसाई धर्म के क्षेत्र में Y M C A एक ऐसी सस्था है जिसने ईसाई नवयुवकों के सगठन का कार्य अपने हाथमें लिया हुआ है। इस सस्थामें ईसाई

धर्म के प्रमुख कार्यकर्त्ता काम करते है और अपने जीवनों को उपकृत बनाते है।

आर्य कुमार परिषद् भी आर्य समाज में एक ऐसी ही सस्था है। उसके प्रति उदासीनता आर्य समाज की शक्ति को कमजोर करती है। स्व० प० केशवदेव जी शास्त्री के पीछे जिन नवयुवकों ने इस परिषद् को जीवित रक्खा और इसके कार्य को दिनों दिन बढ़ाया उन नवयुवकों का अग्रगामी श्री डा० युद्धवीर सिह जी को ही हम कह सकते है। इन्होंने आदि पर्यन्त इस परिषद की सेवा की है। और आगे भी अपना समय, शक्ति और व्यय इसकी सेवा मे लगाते रहेगे। हमारे लिये यह एक और गौरव की बात होगी यदि कतिपय आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता डा० युद्धवीर सिह जी का हाथ बटावे और परिषद् के कार्य मे सहायता दे।

इस परिषद् का गत वार्षिक अधिवेशन बड़े समारोह से इन्दौर नगर में जून के प्रारम्भ में बडे समारोह से मनाया गया। श्री प० धुरेन्द्र जी शास्त्री इसके सभापति चुने गए थे। कई कुमार सभाओं ने अपने प्रतिनिधियों को दूर दूर से इस अधिवेशन मे भाग लेने के लिये भेजा था। परिषद् के इस अधिवेशन में प्रो० सुधाकर जी, डा० युद्धवीर सिह जी, प० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार प० विद्यासागर जी वेदालङ्कार, म० मनुराम जी, बी० ए०, म० गुलाबराय जी बी० ए०, एल० एल० बी०, आदि महानुभाव भी शामिल हुए थे, व्याख्यान, उपदेश, खेल, वाद विवाद न था अन्य कई मनोरजक कार्य-क्रम भी इस अवसर पर रखे गए थे। इन्दौर की लोकल कुमार सभाओं तथा इन्दौर रियासत के कर्मचारियों ने इस अधिवेशन को सफल बनाने मे कोई कसर उठा न रक्खी थी। स्वागत कारिणी सभा के अध्यक्ष महोदय ने तो अपना दिन रात एक कर दिया था। हमे पूर्ण आशा है कि अन्य कुमार सभाएँ भी आर्य कुमार परिषद् के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ कर इसकी शक्ति को बढ़ाएगी और आर्य समाज के इसकी उपयोगिता को दर्शा देंगी।

ईसाइयत की दुर्दशा

युरोप और अमेरिका के निवासी महात्मा ईसा के अनुयायी हैं और ऐसा ही वे दावा करते है परन्तु महात्मा ईसा के ये अनुयायी जन-सहार और प्राणी जगत में दुख और विप्लव के प्रसार में अन्धे हो रहे है। पाप-पूर्ण कार्यों से मानो उन्हें कोई भय नहीं है। मनुष्यत्व मानों उनमे रह ही नहीं गया है। उनकी इस दशा को देखकर ऐसा लगता है मानो ईसा का जीवन और ईसाइयत उनके लिए कोई प्रेरणा नहीं रखती है।

युरोप और अमेरिका की सरकारें प्राय ईसाई सरकारें कही तथा समझी जाती हैं। ईसाइयत के पोषण और उसके प्रचार मे वे बड़ा उत्साह प्रगट करती है। परन्तु उनके कारनामों को देख और सुनकर ऐसा लगता है मानो त्याग और निस्पृहता, सेवा और मानव-प्रेम दयालुता और परोपकार, सत्य और अहिंसा जो धर्म्म के तत्व होते हैं उनसे वे शून्य है। उनकी आत्मा आसुरी प्रवृत्तिया है। धर्म्म और नैतिकता के उनके इस दिखाविआपन से ईसाइयत को बड़ा धक्का लगा है। ईसाइयत को दोहन-शोषण का हथियार बना डालने से तो उन्होंने ईसाइयत को असीम हानि पहुचाई है।

युरोप और अमेरिका के विचारवान व्यक्ति अपने यहा पापपूर्ण और अशान्त बनाने वाली प्रवृत्तियों के भयङ्कर प्रसार को देखकर ईसाइयत के मूल भूत सिद्धांतों पर विचार करने के लिए वाधित हो गए हैं। और ईसाइयत के वर्तमान स्वरूप के विरुद्ध प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गई है। ईसाई सरकारों के व्यवहारों और मिशन के अधिकारियों के अनैतिक और अमानुषिक कार्य्यों के प्रति उपेक्षा तथा सहायता पूर्ण रवैये ने इस प्रतिक्रिया को और भी उग्र-रूप दे दिया है। यह प्रतिक्रिया 'कृस्तग्राही' आन्दोलन के रूप में सामने आई है।

ईसाइयत की दुर्दशा के इस चित्र के प्रस्तुत करने का उद्देश्य ईसाइयत को बदनाम करना नहीं है वरन् यह बतलाना है कि ईसाइयत उसके अनुयायियों की निम्नगामी प्रवृत्तियों को सयत करने मे असमर्थ रही है और यह अपने अनुयायियों के जीवनों और हृदयों पर अधिकार नहीं कर सकी है। देखना यह है कि इसका आगे क्या रूप होता है और यूरोप तथा अमेरिका की सस्कृति क्या रूप लेती है ?

फ्रांस के पतन से शिक्षा

फ्रास के वर्तमान पतन के कारणों को बतलाते हुए उसके प्रसिद्ध सेनापति पैटा ने प्रगट किया कि वर्तमान युद्ध मे फ्रास की पराजय का एक कारण यह था कि १६१४ के यूरोपीय महासमर के पश्चात् वहा के अधिवासी भोग-विलास में अत्यधिक लिप्त होकर दुर्बल हो गये थे। उनमें त्याग की अपेक्षा अधिकार लिप्सा बढ़ गई थी। उन्होंने विलास की पराकाष्ठा करदी थी।

स्वतन्त्र जातियों के इतिहास की यह अकेली घटना नहीं है। हम इतिहास में ऐसी ही कई जातियों के पतन की कहानी पढ़ते हैं। रोम जैसे विशाल साम्राज्य का क्षय उसके निवासियों तथा शासकों के इसी प्रकारके पतन के कारण हुआ था। जातियों के इस पतन से जो शिक्षा मिलती है वह यह है कि जिन जातियों का केवल-मात्र लक्ष्य शारीरिक सुख और आराम रहता है और जिनमें आत्मा का कोई महत्व और प्रभुत्व नहीं होता है उनका पतन अवश्यम्भावी होता है।

पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिए लाला सेवाराम चावला द्वारा

"चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाज़ार, देहली में मुद्रित।

लेख-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १५ | श्रावण १९९७ | अगस्त १९४० ई०] [दयानन्दाब्द ११६ | अङ्क ६

* वेद की शिक्षाएँ *

शुद्धाः पूता भवत यज्ञियासः। ऋ० ५।५१।१

शुद्ध और पवित्र बनो तथा परोपकारमय जीवन वाले हो।

Be pure in heart and devoted to deeds of Service and loving Devotion

* * *

ऋतस्य पथा प्रेत। यजु० ७।४५

सत्य के मार्ग पर चलो।

Move steadily on the path of Truth.

पाप मोचन

[ले॰ श्री नारायण स्वामी जी महाराज]

यजुर्वेद के बीसवें अध्याय में तीन मन्त्र इस प्रकार से आये हैं:—

यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्।
अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वंहसः ॥
यदि दिवा यदि नक्तमेनाँ्सि चकृमा वयम्।
वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वंहसः ॥
यदि जाग्रद्यदि स्वप्नएनाँ्सि चकृमा वयम्।
सूर्योमा तस्मादेनसो विश्वान्मुञ्चत्वँ्हसः ॥
(यजुर्वेद २०। १४। १६)

इन मन्त्रों में कहा गया है कि यदि मैंने विद्वानों के प्रति या दिन रात में (किसी समय) अथवा सोने जागने में (कभी) पाप किया है तो विद्वान् उन सब पापों से हमको छुड़ा देवें। पाप छुड़ाने वाले विद्वानों को, इन मन्त्रों में अग्नि, वायु और सूर्य कहा गया है। अभिप्राय यह है कि जिन विद्वानों में पुरुषार्थ, वीर्य और तेजस्विता होती है वे इस योग्य हुआ करते हैं कि अपने उपदेश और शिक्षणों से मनुष्यों में ऐसी प्रवृत्ति पैदा कर दिया करते हैं जिससे वे पाप की ओर मुंह नहीं किया करते।

(२) पाप सीमा के उल्लंघन करने को कहते हैं। सीमा के अन्दर रहना पुण्य और उल्लंघन करना पाप है। यह बात बृहदारण्यकोपनिषद् के प्रारम्भ ही में कही गई है। पुरुषार्थ, पुरुष के अर्थ=उद्देश्य की प्राप्ति के लिये यत्न करने का नाम है। इस यत्न के लिये बल और तेजस्विता अपेक्षित हुआ करती है। इसीलिये विद्वानों को मन्त्र में अग्नि, वायु और सूर्य के नाम से पुकारा गया है। जो विद्वान् स्वयं ऐसे गुण वाले हुआ करते हैं उन्हीं का सामर्थ्य होता है कि अपने संपर्क में आने वालों में ये गुण पैदा कर सकें।

(३) प्राचीन शिक्षा पद्धति में यह नियम प्रतिष्ठित स्थान रखता है कि अध्यापक को उन गुणोंसे विभूषित होना चाहिये जो वह अपने शिष्योंमें पैदा करना चाहता है। अनुकरणशीलता बच्चों मे स्वाभाविक होती है। मां बाप के कृत्यों में से अनेक की नकल बच्चे करने लगते हैं। जो बात मौखिक शिक्षा में मिले यदि वही अनुकरण करने की भी चीज हो तो वह शिक्षा शीघ्र ही बच्चों द्वारा ग्रहण कर ली जाया करती है। परन्तु वर्तमान शिक्षा पद्धति का नियम यह है:—Do what I say don't do what I do अर्थात् वह करो जो मै कहता हूं, वह मत करो जो मैं करता हूं। स्पष्ट है कि इस नियम मे शिक्षा और अनुकरणीय पदार्थ दो भिन्न प्रकार के हैं इसीलिये यह शिक्षा फलवती नहीं हो रही है। वर्तमान शिक्षा पद्धति में सबसे बड़ी जरूरत इसी तबादिले की है।

(४) पाप से बचने के लिये जहा शिक्षा द्वारा विद्वानों की सहायता अपेक्षित है वहा स्वय मनुष्यों को भी अपनी ओर से कुछ करने की जरूरत है। उसी का विवरण अब यहा दिया जाता है;—(क) सबसे पहली बात आत्मप्रेरणा (Conscience) को बलवती बनाना है। उसके बलवती बनाने का एकमात्र उपाय उसी के अनुसार आचरण करना है। उसके विपरीत आचरण करने = आत्म हन्ता बनने को अकर्तव्य और सर्वथा हेय समझे। (ख) प्रायश्चित करने की आदत बना लेवें—थोड़ी सी भूल का भी कुछ न कुछ प्रायश्चित कर लेना चाहिये। (ग) समीप वर्ती वायुमण्डल को अपने उद्देश्य के अनुकूल बनाना चाहिये—इसके साधन दो हैं।

(१) नियमित स्वाध्याय करना—स्वाध्याय के ग्रन्थों में उद्देश्य के विपरीत किसी ग्रन्थ को न आने देना।

(२) सत्सङ्ग का उद्देश्य के अनुकूल होना। यदि मनुष्य इन पाच नियमों का अपनी ओर से पालन करे और शिक्षा तथा अनुकरणशील अविरोधी हों तो निश्चित रीति से कहा जा सकता है कि उपर्युक्त वेदमन्त्रों के अनुसार मनुष्य निष्पाप बन सकता है।

सुख-प्राप्ति का रहस्य

[ले०—श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज]

—❀❀❀—

ऋषि, मनुष्य और राक्षस मनुष्यों की ये तीन श्रेणिया होती हैं। केवल गुणों के भेद से ही मनुष्यों के ये तीन भेद कहे गये हैं।

'ऋषि' उसको कहते हैं जो स्वार्थ से रहित होकर केवल सर्वसाधारण के हित के लिये ही काम करे। जिसको अपना प्रयोजन कुछ भी न हो उसका पुरुषार्थ केवल मात्र जन-हित के लिए हो।

'मनुष्य' वह है जिसमें लोगों की भलाई के साथ अपना स्वार्थ भी हो। जिसके हृदय में यह भावना काम करती हो कि मैं मनुष्य-समुदाय में रहता हुआ आप भी सुखी रहूँ और लोगों को भी सुख पहुंचाऊँ। न उनसे मुझको कोई दुख पहुंचे और न मुझसे उनको।

'राक्षस' वह है जो अपना ही भला सोचे। दूसरों के हानि लाभ की परवाह न हो।

अब इन तीनों में से केवल लोगों की भलाई का विचार है वह सर्वोत्कृष्ट आदर्श है। परन्तु ऐसा होना कठिन है। यह आदर्श कि न अपना बिगड़े और न दूसरे का मध्यम आदर्श है। इससे आगे तीसरा विचार है जो स्वार्थ में गिना गया है और आजकल इसी का प्राधान्य है।

बुराई के लिए किसी तैयारी की आवश्यकता नहीं होती, इसीलिए परमात्मा से प्रार्थना की गई है :—

'भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः'

कान सुनने के लिए एक साधन हैं। जो बहरा है वह सुन नहीं सकता। यह एक नियम है कि जैसे को तैसा देख पड़ता है। यह नियम किसी अंश में ठीक है और किसी अंश में ठीक नहीं है दुष्ट व्यक्ति को तो सारे दुष्ट दिखाई पड़ते हैं परन्तु यह ठीक नहीं कि भले सबको भले देख पड़ें। जिस प्रकार जब मैं बहरे से बात करने लगता हूँ तो बहरा जोर से बोलने लगता है इसलिए कि उसको ऊँचा सुन पड़ता है। दूसरों को भी ऊँचा सुन पड़ता होगा। इसलिए बुरे मनुष्यके विचार

में तो आ जाता है कि सब बुरे हैं। भला मनुष्य भले को भला और बुरे को बुरा समझता है। इसलिए वह परमात्मा से प्रार्थना करता है कि 'हे परमेश्वर। हम कानों से सदैव कल्याणों को सुनें। नेत्रों से सदैव कल्याण को देखें। हमारे सब अंग दृढ़ रहें जिससे हम इस जगत् में सुखी रहें और परलोक में भी सुख पावें। जब वेद मन्त्र का ऐसा उपदेश है तो हमें ज्ञान पड़ता है कि इस प्रकार का सदाचारी बनने पर परमात्मा और सुख की प्राप्ति का एक मार्ग तो मिलता है। अब सोचो वह मार्ग कौनसा है ?

मन के साथ समस्त इन्द्रियों का सम्बन्ध है ये सब मन के आधीन हैं। मन की उपस्थिति में ये सब काम करती हैं और अनुपस्थिति में क्रिया शून्य रहती हैं। मन का संयोग न होने पर न कान सुन सकता है और न आंख देख सकती है। मन के बिना कोई इन्द्रिय काम नहीं कर सकती। मन और इन्द्रियों के लिए मनुष्य बुरे से बुरा कर्म कर सकता है इसलिए मन को शुभ कर्मों में डालना तो उद्दिष्ट स्थान की ओर जाना है और उसे कुकर्मों में लगा देना अपने लक्ष्य से विपरीत चल देना है।

इस संसार में कोई दुखी और कोई सुखी देख पड़ता है। तो क्या संसार में अन्याय हो रहा है ? परमात्मा किसी को दुख नहीं देते। वे तो सबको सुख ही देते हैं। सूर्य्य का काम प्रकाश और उष्णता प्रदान करना है। एक पौदे पर तो उसके प्रकाश और उष्णता का यह प्रभाव पड़ता है कि वह सूख जाता है और दूसरा हरा भरा हो जाता है। तो क्या इसमें सूर्य्य का दोष है ? कदापि नहीं। जिस पौदे की जड़ में जल और नमी है वह फूलता है और जिसमें ये नहीं हैं वह प्रकाश और उष्णता को पाकर सूख जाता है। इसी प्रकार मन में भलाई का बीज है और जो सचाई से प्रेम करता है वह संसार में सुख प्राप्त करता है और जिसमें बुराई और कपट भरा है वह उसी व्यवस्था के अनुसार दुख उठाता चला जाता है।

'बुरे कर्मों से हटो' यही सब शास्त्रों की मर्य्यादा है।

आज संसार की दशा क्या है ? दुख से तो बचना चाहते हैं परन्तु दुख के कारण को छोड़ना नहीं चाहते। सुख की प्राप्ति तो चाहते हैं परन्तु सुख के कारण को प्राप्त नहीं करते। कर्म तो करते हैं दुख प्राप्ति के परन्तु चाहते हैं 'सुख'। यह कैसे होगा ? इसलिए जो मनुष्य बुरे कर्मों से हट जाता है वही सुख पा सकता है

और दूसरों के भी कल्याण का हेतु होता है। क्योंकि वह मनुष्य जिस सोसाइटी में रहेगा और जो वस्तु उसके पास होगी वही बांटेगा। यदि बुराई उसके पास होगी तो वह सोसाइटी में बुराई फैलायगा और भलाई होगी तो भलाई फैलायगा।

आपके मन में अथवा मेरे मन में यह विचार आ सकता है कि हम कोई बुराई नहीं करते। यह क्यों ? इसलिए कि मुझे अपना दोष प्रतीत नहीं होता। सच्चे मार्ग पर आने के लिए यह आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी बुराइयों को जाने। अन्यथा छोटी २ बुराइयों का भी लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए मनुष्य को अपने दोषों पर दृष्टि डालनी और निर्बलता को समझने का स्वभाव बनाना चाहिए।

परन्तु दुःख यह है कि हम अपनी दुर्बलता को ही बल समझ बैठे हैं। दुर्बलता ससार के स्वभाव में मिल गई है और यह फ़ैशन बनती चली जा रही है।

जिस समय इस जगत् को परमेश्वर ने रचकर सच्चाई और झूठ में अन्तर डाल दिया तो हमें उचित है कि सत्य से प्रेम और झूठ से घृणा करें। अब जो मनुष्य इसके विरुद्ध करेगा वह अपने मार्ग में स्वयं सकट उत्पन्न करेगा।

सभा लगी हुई है। ऋषि दयानन्द के मुँह से एक अशुद्ध शब्द निकल गया। एक छोटा सा बालक उठ कर कहता है 'महाराज। यह शब्द ऐसा नहीं है' ऋषि तत्काल स्वीकार करलेते हैं कि वास्तव में मेरे मुँह से अशुद्ध शब्द निकल गया। सत्य के प्रेमी ने झूठ पर आग्रह न किया। वे समझते थे कि यदि झूठा हठ आ गया तो मन पर झूठ की छाया पड़ जायगी। इस अपनी जरा सी मानहानि पर सत्य के साथ घृणा क्यों करूँ ? सत्य के साथ प्रेम रखने के कारण वह तो ऋषि बन गए। परन्तु दूसरी ओर अनुभूतिस्वरूप आचार्य वृद्ध थे। बुढ़ापे के कारण उनके मुँह से 'पुंसु' शब्द के स्थान में 'पुंशु' शब्द निकल गया। लोगों ने कहा यह तो अशुद्ध शब्द है। बस इस पर वे मान-प्रतिष्ठा के कारण हठ पर आ गए और पूरे तीन मास घर से न निकले। अन्त में एक ऐसा ग्रन्थ बनाया जिसमें 'पुंशु' शब्द को ठीक सिद्ध किया, परन्तु वह भी अशुद्ध सिद्ध हुआ। परन्तु उसका मन तो अभिमान और हठ के कारण मलीन हुआ। अतः मनुष्य को सदैव अपने मन को शुद्ध रखना और सत्य के साथ प्रेम रखना चाहिए।

बुरे कर्मों से बचने के लिए ३ वस्तुओं की आवश्यकता है—

मन में विमलता, जीवन में सरलता और शरीर में सफलता। यदि आपके शरीर में बल, मन साफ़, जीवन पवित्र, सरल और सादा है तो आप सच्चे हैं। यदि आपका जीवन पवित्र नहीं है, मन भ्रष्ट है और शरीर बलवान नहीं है तो आप बुरे कर्मों से बच नहीं सकते। परन्तु यह तब हो सकता है जब आप अपने शरीर को यज्ञ बना दें अर्थात् पुरुषार्थ से अपने कान, नेत्र इत्यादि इन्द्रियों को कार्यरूप में परिणित करदें। केवल ज्ञान से नहीं वरन आचरण से काम सिद्ध होगा।

स्वामी जी महाराज लिखते हैं, 'संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है' उसके पश्चात् उसकी व्याख्या करते हैं कि शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना। ऋषि ने सबसे पहला नम्बर शारीरिक उन्नति को दिया है। क्योंकि जिसका शरीर दुर्बल है वह ससार का क्या अपना भी उपकार नहीं कर सकता। जिनकी आत्मा बलवान और शरीर पुष्ट हों वे ही कष्ट के समय नेकी और सदाचार का निदर्शन दूसरों के सम्मुख रख सकते हैं और इसके लिये आवश्यक है कि मनुष्य सब प्रकार की विषय वासनाओं से बचे। जो मनुष्य विषयों में रत रहता है वह कभी हृष्ट-पुष्ट और बलवान आत्मा वाला नहीं हो सकता।

मन-मन्दिर

(लेखक—बा० पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट)

(मार्च के अङ्क से आगे)

प्राणायाम

इससे पहले लेखों में इस बात पर विचार किया गया है कि आचमन करते समय जिस बात की प्रतिज्ञा व धारणा हमने की थी उसकी पूर्ति किस प्रकार हमारी इन्द्रिय स्पर्श की क्रिया और मार्जन की क्रिया से कर सकते हैं। हमारे पास जब भोग पदार्थ पर्याप्त हों और हमारे अन्दर उनको उपयोग में लाने की शक्ति हो अर्थात् हमारा शरीर और इन्द्रिया बलयुक्त हों और हमारी भावनायें शुद्ध और पवित्र हों तो हम ईश्वर प्रार्थना और उपासना के योग्य होंगे।

सन्ध्या और योग के साधन

योग के साधन निम्न प्रकार बताये गये हैं—

(१) यम (२) नियम (३) प्राणायाम (४) आसन (५) धारणा (६) ध्यान (७) समाधि। सन्ध्या की विधि में सबसे पहले आसन के सम्बन्ध में विचार हो चुका। यम नियम की पूर्ति का सम्बन्ध इन्द्रिय स्पर्श और मार्जन मन्त्रों से है जो भाव यम और नियमों के अन्तर्गत बतलाये गये हैं उसका ही सम्बन्ध इन मन्त्रों की शिक्षा के साथ है।

प्राणायाम स्वय सन्ध्या के अन्तर्गत एक आवश्यक अङ्ग है। इससे मनको स्थिर और शान्त करने का अभिप्राय है। जब शरीर नीरोग और भावनायें पवित्र और मन शान्त होगा तब हम ध्यान के योग्य बनेंगे। ध्यान का सबसे पहला अङ्ग धारणा है। धारणा का सम्बन्ध अघमर्षण क्रिया से है। ध्यान का मनसा परिक्रमा की विधि से और समाधि का उपस्थान मन्त्रों से। इस प्रकार सन्ध्या की विधि में योग के सब अङ्ग आ जाते हैं। नियम पूर्वक सन्ध्या का करना ही योग की पहली सीढ़ी है। प्राणायाम में ईश्वर के उन गुणों का चिन्तन करना है जिनको लक्ष में रखकर हमने अपनी मानसिक भावनाओं को पवित्र बनाने की भावना की थी।

प्राणायाम के अन्तर्गत जो विधियां हैं उसमें तीन प्रकार से प्राणों को अन्दर लेने, धारण करने और बाहर निकालने की शिक्षायें वह पूरक, कुम्भक और रेचक क्रियायें कहलाती हैं। पूरक का अभिप्राय प्राणों को श्वास द्वारा अन्दर ले जाना है और कुम्भक क्रिया का अभिप्राय उसको अन्दर धारण करना है अर्थात् अन्दर रोके रहना है और रेचक से अभिप्राय यह है कि उन प्राणों को नियम पूर्वक बाहर निकाले। प्राणायाम विधि का सम्बन्ध शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति से है। शारीरिक उन्नति की दृष्टि से बाहर की शुद्ध वायु को अन्दर ले जाना और उसको अन्दर रोके रखना शरीर के अन्दर की सब वायु को शुद्ध और पवित्र करना है और अन्दर की अपवित्र वायु को बाहर निकाल देना है जैसे हम जल से अपने चूने और ईंट से बने मकान को धोकर साफ कर सकते हैं। इसी प्रकार वायु से हम अपने शरीर रूपी मकान को शुद्ध और स्वच्छ कर सकते हैं। दुर्भाग्य से मुझे प्राणायाम का क्रियात्मिक अभ्यास करने का अवसर अभी नहीं मिला जिसके अनेक कारण हैं और जिनका उत्तरदायित्व मेरे ऊपर है। जिन्होंने इसका अनुभव किया है उन्होंने शारीरिक उन्नति सम्बन्धी अनेक लाभ स्वय उठाये हैं और दूसरों को पहुँचाये हैं। बड़े से बड़े भयङ्कर रोगों का इलाज इससे हो जाता है। बल्कि रोगों के आने की नौबत ही नहीं आती। शारीरिक उन्नति के साथ आत्मिक उन्नति तो इससे स्पष्ट रूप से प्राप्त होती है। मन शान्त और स्थिर होता है। आत्मा ईश्वर चिन्तन के योग्य बनता है जो आत्मिक उन्नति का सबसे अधिक आवश्यक साधन है। सामाजिक उन्नति के लिये भी इस विधि से पर्याप्त शिक्षा मिलती है। प्राणायाम की तीन विशेष और प्रसिद्ध क्रियायें हैं अर्थात् पूरक, कुम्भक और रेचक। यह तीनो क्रियाएँ सामाजिक उन्नति के तीन विशेष उपायों की द्योतक हैं। हमारी शारीरिक उन्नति के लिये यह आवश्यक है कि हम खाना इत्यादि प्राप्त करके अपने अन्दर धारण करे और उसको अच्छी प्रकार हज़म करके सारे शरीर के उपकार के लिये शुद्ध रक्त के रूप में उसका सञ्चार करदें। इन ही तीनों क्रियाओं का नाम जीवन है। इनमें से किसी एक क्रिया में बाधा उपस्थित हो जाना रोग है और क्रियाओं का समाप्त हो जाना मृत्यु है। यदि हम खाना खाने की शक्ति न रक्खेंगे या उसको खाकर हज़म न कर सकेंगे या हमारे खून का चक्कर (Circulation) ठीक न रहेगा तो हम रोगी रहेंगे। इसी प्रकार किसी समाज या राष्ट्र की उन्नति के लिये तीन बातों की आवश्यकता है।

(१) सुख के पदार्थ या भोग के पदार्थ को प्राप्त करना (२) उनकी रक्षा करने की शक्ति रखना (३) उनको नियम पूर्वक और न्याय पूर्वक सब मे विभाजित करना। इनको अंग्रेजी मे Acquisition Retention and Distribution कह सकते है अर्थात् प्राप्त, रक्षा और विभाजन। विभाजन को मर्यादित करने के लिये दान की भावना की आवश्यकता है। Distribution को ठीक ठीक रखने के लिये दान या Charity की आवश्यकता है। जिनके पास है उनको कजूसी से बचना चाहिये। जिनके पास नही है उनको दूसरे की वस्तु लेने की बुरी भावना अपने अन्दर नहीं आने देनी चाहिये। अपरिग्रह, अस्तेय, दोनों ही आवश्यक हैं।

पूरक क्रिया से हमे शुद्ध वायु को अपने अन्दर धारण करना है। कुम्भक से अभिप्राय यह है कि हम बाहर से आई हुई शुद्ध वायु को अपनी शक्ति और अभ्यास के अनुसार अपने अन्दर रोके रहे। रेचक क्रिया से उस वायु को धीरे २ बाहर निकाल देने का अभिप्राय है। हमने देखा कि प्राणायाम विधि से सर्वाङ्ग उन्नति की पूर्ण शिक्षा मिलती है। परन्तु इस विधि का विशेष सम्बन्ध मन को चञ्चलता से बचाना और एकाग्र चित्त होकर परमात्मा का चिन्तन करना है। यहा यह भी बता देना आवश्यक है कि मार्जन करते समय जिस परमात्मा के गुणों को लक्ष मे रखकर अपने शरीर, मस्तिष्क और मन को पवित्र बनाने की ईश्वर से प्रार्थना की गई थी उन्हीं गुणों को अपने शरीर की ओर ध्यान न देकर चिन्तन करने की शिक्षा प्राणायाम विधि मे है। प्राणायाम की सातों व्याहृतिया परमात्मा के विशेष गुणों की परिचायक है। 'भू' से परमात्मा का अनादि होना सिद्ध है, 'भुव' से सर्वज्ञाता होना, 'स्व' से महान आनन्द वाला होना, 'मह' से सबसे महान होना, 'जन' से सृष्टि का रचयिता होना, 'तप' से न्यायकारी और कर्मफल प्रदाता होना, 'सत्यम्' से सदा एकरस और एक समान रहना। यदि इन सब गुणों पर हम शान्तचित्त होकर मनन करें और अपने जीवन मे इन को लक्ष मे रखकर कर्म करें तो हमारा जीवन सफल धार्मिक और सुखी हो सकता है और हम मोक्ष प्राप्ति के अधिकारी हो सकते है।

शंकर और श्वपच

[ले० —इतिहास का एक विद्यार्थी]

—*—

एक दिन स्वामी शङ्कराचार्य जी अपने शिष्यों के साथ गंगा स्नान करने जा रहे थे। मार्ग में उनकी एक अछूत से भेंट हो गई। वह अपने साथियों सहित मार्ग को रोके खड़ा था। उसके मार्गावरोध से शङ्कर का जाना रुक गया और उन्होंने उस अछूत से रास्ता छोड़ने का अनुरोध किया। उत्तर में अछूत ने कहा 'आप हमारे साथ यह अन्याय क्यों करते हैं ?' उत्तर में शङ्कर ने कहा 'तुम लोगों के छू जाने से हम अपवित्र हो जायेंगे। मार्ग छोड़ देने में तुमको क्या आपत्ति है ?'

अछूत ने गम्भीर भाव में कहा 'महाराज पवित्रता अपवित्रता तो मन के विकार हैं। आप निश्चय ही कोई महाज्ञानी महापुरुष हैं किन्तु जो साम्यभावापन्न होना महापुरुषों का लक्षण होता है वह आपके आचरण और कर्तों को सुन कर आप में परिलक्षित नहीं होता।'

शङ्कर अछूत की बात को सुनकर मन ही मन में सोचने लगे कि यह क्या अद्‌भुत व्यापार है। इस जीवन में पहले तो कभी ऐसा काण्ड नहीं देखा था। देखता हूँ यह अछूत अति नीचकुल सम्भूत है। इसकी शिक्षा दीक्षा भी इतर जनों की नाई अति निकृष्ट है किन्तु इस समय जो इसके मुख से निकल रहा है वह बड़ा गूढ़ तत्व भाव प्रतीत होता है। इसके मुँह से इतनी बड़ी बात कैसे निकली। निश्चय ही इसमें कोई शक्ति विद्यमान् है। अच्छा इस रहस्य का पता लगाना चाहिए। इस प्रकार सोचकर शंकर बोले 'श्वपच ! देखता हूँ तुम नीच कुल में उत्पन्न हुए हो परन्तु ज़ातिगत पार्थक्य की बात को तुम जरूर मानते होगे। द्विजाति कुल में जन्म लेकर शारीरिक पवित्रता आवश्यक है।

उसी श्रेष्ठता के लिए समाज में वर्णों की श्रेष्ठता निर्धारित हुई है। वर्ण विभेद के कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि जाति-विभाग समाज का स्वाभाविक विधान है। वर्ण की श्रेष्ठता के अनुसार ही तो जाति निर्णय हुआ है। जाति के अनुसार ही मनुष्य उच्च और नीच परिगणित होता है। इसी प्रकार से

शूद्र से वैश्य, वैश्य से क्षत्रिय तथा क्षत्रिय से ब्राह्मण सर्व श्रेष्ठ है क्योंकि ब्राह्मण श्रेष्ठ गुण और कर्म के अनुसार अन्य वर्णों की अपेक्षा सर्व श्रेष्ठ होता है। बाद में स्वपच और म्लेच्छादि गुण कर्मोंके दोषों से पतित और मानव-समाज में सर्वापेक्षा निकृष्ट कह कर परिगणित हुए हैं। ऐसी दशा में तुम्हारे शरीर के सम्पर्क से ब्राह्मण का शरीर कैसे अपवित्र न होगा ? इसके सिवा ब्राह्मण क्षत्रियादि द्विजों के देह में जो शक्ति और मनमें जो गुण होते हैं, वे क्या कभी नीच और स्वपचादि के देह और मनमें हो सकते हैं। उनके देह में उस दिव्य शक्ति का विकास नहीं हो सकता। न मन में वैसे सद्गुणों का परिस्फुरण हो सकता है। तुम्हारे जैसे नीच कुल-सम्भूत स्वपच के छू जाने से निश्चय ही ब्राह्मणादि उच्च वर्णों की अधोगति हो सकती है क्योंकि ब्राह्मण सद्गुणों के आधार हैं और सद्गुण नवनीत की तरह अत्यन्त कोमल पदार्थ है। नवनीत जिस प्रकार से अति उत्कृष्ट और उपादेय सामग्री है उसी प्रकार से निमिष मात्र में इसकी विकृति और अधःपतन भी हो सकता है क्योंकि जो सामग्री जिस परिमाण में जितनी होती है वह उतने ही परिमाण में सामान्य कारण से विकृत और कलुषित हो सकती है। नवनीत जैसे कुपात्र में रखने से शीघ्र गुणहीन हो जाता है उसी प्रकार से तुम्हारे जैसे नीच कुल सम्भूत के साथ छू जाने से ब्राह्मणादि उच्चवर्ण के लोग विकृत-कलुषित और नीच संसर्ग से पतित और आचार भ्रष्ट हो जायेंगे।

स्वपच पहले तो शङ्कर की बात को सुनकर बडे उच्च स्वर से हो-हो करके हँसा, फिर गम्भीर हो गर्ज कर बोला—"ब्राह्मणादि कुलों में जन्म ले लेने मात्र से ही क्या श्रेष्ठता प्राप्त हो जाती है ? नहीं, नहीं, यह कभी सम्भव नहीं। उच्च कुल में जन्म लेकर उत्कृष्ट कर्मों द्वारा जो मानव अपने उत्कर्ष को साधन नहीं करता वह कभी श्रेष्ठता नहीं लाभ कर सकता क्योंकि गुण और अर्थ ही मनुष्य को ऊँचे उठाता है। सद्गुणों द्वारा ही मनुष्य श्रेष्ठता लाभ कर सकता है, यह नितान्त सत्य और निश्चित बात है। सतकर्महीन, सद्गुणविहीन, व्यक्ति उच्च कुल में जन्म लेकर भी कभी उच्च नहीं हो सकता। जो मनुष्य दूसरे को अपनी अपेक्षा नीच समझता है और अपने को उच्च समझकर गर्व करता है, उसका महत्व तो इसी बात में नष्ट हो जाता है। गर्व कभी गुण का परिचायक नहीं होता। जो प्रकृत रूप से गुणहीन हैं, वे ही अपने गुणों का मिथ्या प्रचार करते हैं। जो यथार्थ गुणवान होते हैं, वे स्वभावत विनीत और नम्र होते हैं। वे अपने मधुर

भाषण और विनीताचार से सबको परितुष्ट करते हैं। जैसे फलभारावनत वृक्ष फल फूलों से परिशोभित होकर उन्नत शिर को निम्न कर लेता है, उसी प्रकार से गुणवान व्यक्ति अपने गुण-ग्राम से विभूषित होकर सबके प्रति आदर-भाव दिखाता हुआ फलपूर्ण वृक्ष की तरह से शोभा पाता है। फलवान वृक्ष पर यदि कोई ईंट पत्थर से आघात करता है, तो वह उसे भी सुमिष्ट फल ही प्रदान करता है। इसी प्रकार गुणवान व्यक्ति शत्रु के प्रति भी उदारता दिखाते हैं तथा दयालुता एव सदाशयता का व्यवहार करते हैं। मनुष्य में जितने भी गुण होते हैं, विनय भाव इसकी शोभा का सवर्धन करता है। विनयविहीन महा पण्डित भी दाम्भिक-अहङ्कारी कहकर सर्व साधारण की निन्दा का पात्र बनता है। उसकी विद्या-बुद्धि घृणा के अग्नि में भस्म हो जाती है।"

श्वपच की बातें सुनकर शङ्कर की उत्सुकता और भी बढ़ती जाती थी। शङ्कर तो असाधारण विद्या-बुद्धि सम्पन्न थे। श्वपच के मन में से और भी कुछ बाहर हो सके, इस विचार से उन्होंने तत्त्वविद्या के सम्बन्ध में उनसे पूछा श्वपच ने कहना आरम्भ किया कि—"महात्मन्, केवल शास्त्रों के अध्ययन मात्र से ही प्रकृत ज्ञान उत्पन्न नहीं हो सकता। जब तक प्रकृत ज्ञान उत्पन्न न हो तब तक विद्या-बुद्धि की सार्थकता ही क्या है? अनेक शिष्य गुरु के निकट अनेक शास्त्रों को पढते हैं, और बड़ी बड़ी राजसभाओं में जाकर अपने पाण्डित्य की छटा दिखाते हैं। ऐसे लोग सर्वसाधारण में भी प्रशसा के पात्र होते हैं। किन्तु प्रकृत ज्ञान प्राप्त न होने के कारण वे पाण्डित्याभिमानी व्यक्ति गर्व और अहङ्कार के कारण अधःपतित हो जाते हैं। परन्तु वह प्रकृत पाण्डित्य क्या है? समदर्शिता की प्राप्ति ही प्रकृत पाण्डित्य है। जो यथार्थ विद्वान् और प्रकृत पण्डित होते हैं, वे अवश्य समदर्शी भी होते हैं। उनकी भेद बुद्धि नष्ट हो जाती है। वे गो, हस्ती, चाण्डाल और ब्राह्मण सबको समान दृष्टि से देखते हैं। उनके लिये किसी में कोई पार्थक्य नहीं होता मै-तू-मेरा या तुम्हारा भेदभाव नष्ट हो जाता है। स्वामिन्, देखता हूँ कि आप तो परम पण्डित प्रतीत होते हैं। फिर मेरे प्रति इतनी घृणा कैसी? ज़रा विचार कर देखिये, घृणा और अवहेलना तथा रागद्वेष ये सब तो मोह जनित अज्ञान सम्भूत है। क्योंकि जो प्रकृत विद्वान होते हैं, वे ही आत्मज्ञ होते हैं। जो आत्मा के गूढ़ तत्त्व को जानते हैं वे किसी से घृणा नहीं कर सकते। क्योंकि वह जानते हैं कि आत्मा तो सब

भूतों में विराजमान है। इस परम तत्त्व को जिसने हृदयङ्गम कर लिया है, वही पण्डित है, प्रकृत ज्ञानी है। उसी की विद्या-बुद्धि, उसी का अध्ययनाध्यापन सार्थक होता है। केवल शास्त्रों को पढ़ने और उनका उच्च स्वर से उच्चारण करने से कोई प्रकृत पण्डित व ज्ञानी नहीं हो सकता। जो पाण्डित्य और ज्ञान मनुष्य का अन्धकार से उद्धार नहीं कर सकता, उस पाण्डित्य का न कोई फल है न उस ज्ञान का गौरव। क्योंकि मनुष्य श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करने की बुद्धि रखता है। इसलिये इन प्राणियों से श्रेष्ठ है। नहीं तो पशु पक्षियों में और ज्ञानहीन मनुष्यों में कोई भी भेद नहीं। गूढ़ आत्मतत्त्व की अवगति का नाम ही तत्त्वज्ञान है। जिसको वह तत्त्वज्ञान प्राप्त हो जाता है, वह अपने प्रतिबिम्ब को सब भूतों एव सब जीवों में देखता है। उससे उसकी भेद-बुद्धि तिरोहित हो जाती है। वह सबको अपने में और अपने को सब में देखता है। उस तत्त्वज्ञान से परम शान्ति प्राप्त होती है। उसके लिये कोई घृणा का पात्र नहीं होता। वह महान व्यक्ति निर्वैर होकर परमानन्द में विहार करता है।

शङ्कर ने कहा—"श्वपच, तुमने जिस ज्ञान का उल्लेख किया है, उसको सर्वसाधारण लोग हृदयङ्गम नहीं कर सकते और जब तक वे इस तत्व को न समझे, तब तक उनका अज्ञान भी तिरोहित नहीं हो सकता। सुतरा ऐसे अज्ञानियों के लिये जातिभेद और तर्क विचार अवश्यम्भावी और अपरिहार्य है।"

उत्तर में श्वपच ने कहा—"विद्वान् ब्राह्मण! आप जो मुझे भिन्न आत्मा समझ कर और नीच जाति-सम्भूत कह कर अछूत कहते हैं, यह आपका विषम भ्रम है। आत्मज्ञ व्यक्ति इस प्रकार से न कभी किसी से घृणा करता है, न उसकी अवहेलना। आपके जातीय-द्वेष-जनित घृणाभाव को देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि आपने यथार्थ ज्ञान अभी तक अधिगत नहीं किया है।"

यदि आप यथार्थ आत्म-तत्वज्ञ हों तो मुझे नीच समझ कर कभी मुझ से घृणा नहीं कर सकते। किन्तु देखता हूँ कि आपका भेद-भाव का भय अभी तक तिरोहित नहीं हुआ यदि आपको ज्ञान होता तो कभी भी जाति-भेद उच्च नीच का भाव आपके मन में उदय न होता . ।

सुमन संचय

[१]

शङ्कर और दरिद्र ब्राह्मणी

शङ्कर जिस समय गुरु गोविन्दपाद के आश्रम मे विद्याध्ययन करते थे उस समय की प्रथा के अनुसार ब्रह्मचारी ग्रामों में भिक्षा के लिए जाया करते थे। एक दिन शङ्कर सदा के अनुसार एक ग्राम में पहुचे। ग्राम में अनेक जातियों के आदमी रहते थे। ब्राह्मण-पण्डित, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि सभी का वास था। शङ्कर का यह स्वभाव था कि वे प्राय दरिद्रों के यहा ही भिक्षा मागने जाते थे। उनकी धारणा थी कि विशाल अट्टालिकाओं वाले धनिक, सदाचारी धर्मपरायण नहीं है तथा न्याय और परिश्रम से धन उपार्जन नहीं करते। उनके धनोपार्जन में पाप और अन्याय का अश अधिक है। उन लोगों का अन्न खाने से बुद्धि तामसिक हो जायगी और सात्विकता नष्ट हो जायगी इस धारणा के अनुसार वे सदा गृहस्थों के यहा ही जाकर भिक्षा मागते थे और जो कुछ मिल जाता था उसे बड़े सन्तोप और प्रसन्नता के साथ ग्रहण करते थे। उस दिन भी वे एक दरिद्र ब्राह्मण के घर भिक्षार्थ पहुचे। वह गृहस्थ ब्राह्मण स्वय भी भिक्षावृत्ति कर जीवन निर्वाह करता था। उस समय वह भिक्षा के लिए ही बाहर ग्रामान्तरों में गया हुआ था। घर में केवल उसकी ब्राह्मणी बैठी घर का काम काज कर रही थी। इसी समय शकर ने 'भिक्षा देहि' कह कर घर की मालकिन को पुकारा। गृहिणी ने भी दूर से बालक ब्रह्मचारी शकर को देखा और उसके देवोपम प्रशस्त ललाट एव तेज को देख कर मुग्ध हो गई। भक्ति पूर्वक अभिवादन कर बैठने के लिए आसन देने लगी। परन्तु शंकर ने कहा, "माता, मै तो ब्रह्मचारी विद्यार्थी हूँ। भिक्षा के लिए आया हूँ। बैठने की जरूरत नहीं है। केवल मुट्ठी भर भिक्षा लेकर चला जाऊँगा। दया करके भिक्षा प्रदान कीजिये।" वह बालक शकर की वीणा विनिन्दित वाणी को सुन कर विचलित हो गई। एक तो बालक शंकर के तेज और फिर सुन्दर बदन-विनिस्सृत मधुर वाक्यावलि को सुनकर उसे स्वर्ग सुख सा अनुभव होने

लगा। वह जितना ही अधिक इस ब्रह्मचारी को देखती, उसे उतना ही अद्भुत-अपूर्व एव अनिवर्चनीय आनन्द अनुभव होता परन्तु एक तो नितान्त दरिद्रपति की पत्नि, जिसके घर में भिक्षा के लिए मुट्ठी भर अन्न तक नहीं, दूसरे पति भी घर में उपस्थित नहीं। क्या करना चाहिए, सो वह कुछ भी स्थिर न कर सकी। किंकर्त्तव्य विमूढ़ नीरव होकर वह केवल भूमि की ओर देखने लगी, शकर ने दरिद्र ब्राह्मणी की असमर्थता को देख कर कहा, "नहीं मा, नहीं, चिन्ता मत करो। मैंने समझ लिया है कि आज भिक्षा देने को कुछ नहीं है। कोई चिंता नहीं, फिर कभी सही। दरिद्र होकर भी तुम हृदय रखती हो। यह क्या कुछ कम सम्पद् है। धन न होने पर भी तुम परम धनवती हो।"

शकर की बात सुनकर रमणी बोली, "वत्स, मैं और क्या कहूँ, वास्तव में ही हम लोग नितान्त दरिद्र हैं। मेरे स्वामी भी स्वय भिक्षा करके किसी प्रकार से गृहस्थी चलाते हैं। धर्म-अनुशीलन और धर्म-अर्जन ही उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य है इसलिए वे भिक्षामें मिली साधारण सामग्रीसे ही सतुष्ट रहते हैं। कुछ लोगोंने अपनी वृत्ति भिक्षा ही बना ली है। वे लोग रात-दिन छल, कपट और साधुवेश धारण कर भिक्षा मागते हैं और उससे बडी बड़ी सम्पत्ति खड़ी करते हैं। दिन-भर काक की तरह से भ्रमण करना ही उनका काम है परन्तु मेरे पति देव इस प्रकार के आचरण को हेय समझ कर उससे घृणा करते हैं। भिक्षा से धन सग्रह करना उनका उद्देश्य नहीं है। जो मिल गया उससे परितुष्ट होकर शास्त्र अनुशीलन करना और भगवान् के ध्यान में मस्त रहना ही उनका काम है। ससार के धन दौलत का ज़रा भी लालच नहीं है। वे स्वभावत ही ससार से विरक्त और धर्मपरायण हैं।"

ब्राह्मणी की बात सुनकर शकर बोले, "माता, मैं यही समझ कर तुम्हारे घर भिक्षा मागने आया था। जो लोग परिश्रम करके धन सञ्चय करते और उसका सद्व्यय करते हैं, वही सद्गृहस्थ हैं। जो लोग अपने बड़प्पन और असहायों पर अपना बोझ लादने के लिये अर्थ सञ्चय करते हैं, उनका वह धन और उससे उत्पन्न किया हुआ अन्न अपवित्र है। वैसा धन मनुष्य को पशु बना देता है। शास्त्रों में लिखा है कि गृहस्थाश्रम की रक्षा और बाल-बच्चों के भरण-पोषण के लिये अर्थ की आवश्यकता है। शास्त्रों मे गृहस्थाश्रम को ही सर्वश्रेष्ठ आश्रम बताया है क्योंकि और सभी आश्रमों में रहने वाले केवल गृहस्थाश्रमों के आश्रय और सहाय से ही रक्षित होते हैं इसलिए प्रत्येक गृहस्थ का अर्थ उपार्जन करना

कर्तव्य है परन्तु उस अर्थ का सद्व्यय ही होना चाहिए। उस अर्थ से पितृ जनों की सेवा अतिथियों का सत्कार तथा समाज का कल्याण होना चाहिये। उस अर्थ से लोक-समाज का अमंगल करना, दरिद्रों को सताना कर्तव्य नहीं है। गृहस्थों का कर्तव्य है कि उपयुक्त पात्रों को दान दें। साधु-ब्रह्मचारियों को भिक्षा देकर उनका सत्कार करना चाहिए और समझना चाहिए कि उनकी पदूधूलि से हमारा घर पवित्र हो गया क्योंकि वे ही ससार और देश का उद्धार करते हैं।" इस प्रकार से उपदेश देकर शकर उठ कर चलने लगे। शकर को प्रस्थान करते देख कर गृहिणी बोली "वत्स, तुमको क्या भिक्षा दूँ, कुछ समझ में नहीं आता। तुम ब्रह्मचारी हो भिक्षा के लिए एक गृहस्थ के घर पर आये हो, तुमको खाली हाथ लौटाना भी उचित नहीं है। ब्रह्मचारी-सन्यासी हमारे पुण्य परित्राता हैं किन्तु खेद है कि हम लोग बड़े दरिद्र हैं। मै पहले ही कह चुकी हूँ कि मेरे स्वामी स्वय भिक्षा माग कर गृहस्थी चलाते हैं। इस समय भी वे भिक्षा के लिए ग्रामान्तरों में गये हैं और आते होंगे, तब तक तुम ठहरो जो कुछ भिक्षा में लायेंगे उसमें से थोड़ा बहुत तुमको भी देकर अपना कर्तव्य पालन करूँगी।" गृहिणी की बात सुनकर शकर बोले, "ना माता मुझे और अधिक काल तक ठहरने का समय नहीं है। कूड़ा-कर्कट मिले चावलों की एक मुट्ठी होने से भी तुम्हारा कर्तव्य पालन हो जायगा क्योंकि भिक्षुक का गृहस्थ के लिए खाली हाथ लौटाना भी अकल्याण-कर है। कुछ भी न हो तो मुझे एक पात्र भर कर जल या फल ही दे दो उसी से तुम्हारे गृहस्थाश्रम का कर्तव्य पूरा हो जायगा। तुम मेरी मातृस्थानीया हो जो दोगी मै उससे परम सन्तुष्ट होकर चला जाऊँगा।

शङ्कर की मधुर वाणी सुन कर गृहिणी परम सन्तुष्ट हुई और घर मे जाकर एक हरीतकी ले आई और शङ्कर की झोली मे डाल दी। शङ्कर इसी से सन्तुष्ट हो मगल-कामना करते हुए वहा से चल पड़े।

[२]
आत्महनन पाप है

एक बार फ़रुखाबाद के हिन्दुओं और आर्यों में लड़ाई हुई। अभियोग चल पड़ा। आर्यों ने ऋषि दयानन्द जी को कहा कि आप साक्षी दें। ऋषि दयानन्द ने कहा यदि मुझसे किसी ने पूछा तो जो कुछ मैंने देखा है कह दूँगा। आर्यों ने पूछा

कि आप क्या कहेंगे। उत्तर दिया कि मैं यह कहूँगा कि इस लड़ाई में दोष आर्यों का है। वे लोग कहने लगे कि तब तो हम लोग मारे जायेंगे और समाज को हानि पहुंचेगी। ऋषि दयानन्द ने कहा, "चाहे तुम मारे जाओ, चाहे समाज न रहे, मैं तुम्हारी खातिर अपनी आत्मा का हनन नहीं कर सकता।"

[३]

प्रभु का साक्षात्कार

महात्मा नानक बनारस में गगा के तट पर डेरा डाले हुए थे। एक दिन उन्होंने एक ब्राह्मण को छोटे २ बर्तनों में उबला हुआ दूध और चावल डालते हुए देखा। यद्यपि उस समय दिन था तथापि उसने अपने पास चिराग़ जला रक्खा था। गुरु नानक ने उससे पूछा "भाई। ये तुम क्या कर रहे हो।" ब्राह्मण ने कहा—"मैं ये चीज़ें अपने पूर्वजों के लिए बना रहा हूँ" गुरु नानक ने उससे पूछा भाई। 'यह चिराग़ क्यों जला रक्खा है।' ब्राह्मण ने उत्तर दिया "स्वर्ग को जाने वाले मार्ग में जो अन्धकार है उसमें उन्हें मार्ग दिखाने के लिए चिराग़ जलाया गया है।" गुरु नानक ने कहा मित्र। "क्या जब तुम सोते हो और भिन्न २ स्थानों के स्वप्न देखते हो तो क्या मार्ग देखने के लिए तुम्हें चिराग़ की आवश्यकता होती है।" ब्राह्मण ने कहा "नहीं।" महात्मा नानक ने कहा "निश्चय रक्खो तुम्हारा यह चिराग़ तुम्हारे पूर्वजों के लिए व्यर्थ है।" ब्राह्मण ने पूछा "तो फिर बताओ कि मनुष्य को क्या करना चाहिए।" महात्मा नानक ने कहा "यह शरीर ही चिराग़ है और इन्द्रियों से उत्पन्न दुःख इसमें तेल है। परमात्मा की उपासना से इसे जलाओ और इससे जो ज्वाला उठेगी वह इस तेल को जला देगी और तुम्हें परमात्मा का साक्षात हो जायगा।"

[४]

न्याय

नौशेरवा न्याय के लिये बड़ा प्रसिद्ध था। उसने अपने महल पर एक जजीर बाध रक्खी थी और प्रजा को खुली आज्ञा थी कि उसको हिलाकर न्याय के लिये प्रार्थना की जाय। एक दिन एक वृद्धा स्त्री का पुत्र नौशेरवा के पुत्र की गाड़ी के नीचे आकर मर गया। वृद्धा ने जजीर हिलाकर न्याय की प्रार्थना की। नौशेरवां ने समस्त घटना का वृतात सुनकर अपने पुत्र को प्राण दण्ड दिया। इस आज्ञा से राजपरिवार और नगर में शोक छा गया। नियत दिन पर राज-पुत्र वध स्थल पर

लाया गया । वध स्थल पर नगर के स्त्री-पुरुषों और राज परिवार के लोगों की भीड़ लग गई। स्वय नौशेरवा भी उपस्थित हुए। जल्लादों को राजपुत्र को फासी पर चढ़ाने की आज्ञा हुई । राजकुमार फासी के तख्ते पर ले जाया गया और फंदा डाल दिया गया। इसी क्षण भीड़ को चीरती हुई एक वृद्धा दौड़ी हुई आई और फांसी के तख्ते पर पहुँचकर राजकुमार के गले में से फंदा निकाल कर कहा 'इसे फासी मत दो । समस्त उपस्थित समुदाय आश्चर्य्य चकित रह गया। नौशेरवा ने क्रोध के आवेश में कहा "राजकुमार को तत्काल फासी दी जाय" बुढ़िया ने कहा 'ऐसा हर्गिज नहीं हो सकता।' नौशेरवा ने पूछा 'क्यों ?' बुढ़िया ने कहा इसलिये कि आपने मेरे लड़के के प्राण हनन के बदले में इसे यह दण्ड दिया है परन्तु मैं बदला लेना नहीं चाहती जब मैं बदला ही लेना नहीं चाहती तो आप बदले में इस बच्चे के प्राण कैसे ले सकते हैं ? बुढ़िया के इस उत्तर को सुनकर नौशेरवा अवाक् और किकर्त्तव्य विमूढ़ हो गया और उसके नेत्रों में आसू आ गए । इस स्वर्गीय दृश्य को देखकर समस्त उपस्थित नर,नारी अवाक् रह गए।

[५]

त्यागी ब्राह्मण

सुना जाता है महाराजा रणजीतसिंह जी किसी समय फिलौर पधारे और वहा उन्होंने ब्रह्मभोज किया। समीपवर्ती प्रात के अनेक ब्राह्मण उस यज्ञ में सम्मिलित हुए। जिस समय भोजन का समय हुआ तो महाराजा ब्राह्मणों के पग धोने लगे। अनेक ब्राह्मणों के पग धोये गये। उस समय लुध्याना निवासी एक ब्राह्मण आया जो अधिक विद्वान् न होते हुए भी पढ़ा हुआ था और मन त्याग से भरपूर था। शीत ऋतु के कारण उसके पग फट गये थे फटने के कारण वह ठीक ठीक साफ भी न हो सकते थे। जब महाराजा उसके चरणों को धोने लगे तो उपरिलिखित अवस्था को देखकर महाराजा के मुख से वचन निकला 'क्या यह भी ब्राह्मण के चरण हैं' इस शब्द को सुनकर उस देवता ने अपना चरण पीछे खींच लिया और निम्न शब्द उच्चारण करके अपने गृह को चला आया। 'महाराजा आप वेश्याओं के पग धोने वाले हैं आपको क्या पता है ब्राह्मणों के पग कैसे होते हैं। महाराज ने बहुतेरा ही बल लगाया कि भोजन करले परन्तु उस त्यागी ब्राह्मण ने स्वीकार न किया।

[६]

धर्म की धन पर विजय

जिला मुजफ्फरगढ़ में कोटछुरा नामक ग्राम है। वहा मनु नामक ब्राह्मण रहता था। किसी समय वह अपनी पुस्तकें सदूक में डालकर यात्रा के लिये निकले। मार्ग में एक स्थान ऐसा था जहा अनेक यात्रियों का सामान एक स्थान पर ही एकत्र करना पड़ता था। उनके साथ भी ऐसा ही हुआ। जब वहा से अपना २ सामान लेकर चलने लगे तो उनका सदूक किसी अन्य से बदल गया। वह जब मुलतान पहुचे और अपना संदूक खोला तो उसमें अनेक भूषण और बहुमूल्य वस्त्र मिले। उनके साथी ने सम्मति दी अच्छा हुआ दैव ने यह पदार्थ दिया है रख लेना चाहिये। परन्तु त्यागी ब्राह्मण ने कहा नहीं भाई यह तो पाप है। उसी समय उस सदूक को लेकर लौटे। उधर जो उनका सदूक ले गया था वह सपरिवार विवाह में सम्मिलित होने जा रहे थे, जब वह गतव्य स्थान पर पहुचे और सदूक खोला तो उसमें पुस्तक और साधारण वस्त्र पडे थे उन्हें देखकर उसे दुःख हुआ। वह भी पीछे को भागा। जहा से यह यात्री पृथक् हुए थे वहा दोनों पहुँचे और परस्पर ढूँढने लगे जब दोनों मिल गये तब दोनों ने अपना २ सामान ले लिया।

यदि मनु महाराज वह भूषण चुपचाप रख लेते तो उनको पूछने वाला न था परन्तु उनके धार्मिक भाव ने उनके मन में लोभ रूपी विकार उत्पन्न न होने दिया। वह सहस्रों का धन चुपचाप उसके स्वामी को दे आये।

महिला-जगत्

माता की पदवी प्राप्त करने वाली कन्याओं के जानने योग्य बातें।

पाठ ५

(लेखक—रघुनाथप्रसाद पाठक)

[जून के अङ्क से आगे]

सन्तति और संस्कार

'शील। नई साडी पहन लो। आज तुम्हें अपनी एक सहेली के घरले जाऊँगी।' कमला ने बाल सवारते हुए कहा।

'मैं अभी तय्यार हो जाती हूँ। दमयन्ती को भी बुला लें न। न जाने आज उसका मन क्यों उदास है।'

'बुलालो। लेकिन जल्दी करने की जरूरत है। दिन गर्म हुआ जाता है। मौसम खराब है। धूप के तेज होने से पहले ही लौट आना है।'

दोनों बहनें यह बातें कर ही रही थीं कि इतने में दमयन्ती आती हुई दिखाई पड़ी। सुशीला ने ताली बजाते हुए कहा—'लो। दमयन्ती स्वय ही आ गई। इसकी उम्र बडी है। यह तो कहीं जाने के लिये तय्यार होकर आई है।'

दमयन्ती ने कहा—'शील। मैं अपने मामा के घर जा रही हूँ। लो चाबी रखलो। भाई आएँ तो उन्हें दे देना। तीसरे पहर तक लौट आऊँगी।'

'तुम्हें मेरे साथ चलना होगा। जीजी अपनी एक सखी के घर जा रही हैं। मामी के घर फिर कभी हो आना।'

'तुम्हारी यही मर्जी है तो लो मैं मामी के घर नहीं जाती हूँ। जीजी के साथ जाने में कोई लाभ ही होगा।'

'हा, हा। तब ही तो मैं तुम्हें मामी के घर जाने से रोक रही हूँ।

तीनों बहनें तय्यार होकर मनोरमा के घर गईं। उस समय मनोरमा अपने छोटे बच्चे को गोद में लिये बैठी थी। लडका बड़ा तन्दुरुस्त था परन्तु बिल्कुल

बनमानुष जैसा था। सुशीला और दमयन्ती उस बच्चे को देखकर सहम गईं। मनोरमा की गोद में से कमला बच्चे को लेने लगी। मनोरमा ने झिझकते हुए दुख मिश्रित लज्जा से कहा—'कमल। मेरा भाग्य बड़ा खोटा है। पहले तो परमात्मा ने दिया नहीं, जब दिया तो ऐसा दिया जिससे अपने भी नफ़रत करते हैं। तुम इसे लेकर क्या करोगी।' 'नोरा। तू बड़ी ना समझ है, क्या अपने जिगर के टुकड़ों को फेंक देते हैं।' कमला ने यह कहकर बच्चे को अपनी गोद में ले लिया और जो उपहार उसके लिये लाई थी वह देकर बच्चे को खिलाने लगी।

१—२ घण्टे ठहर कर तीनों बहनें मनोरमा के घर से विदा हुईं। सुशीला और दमयन्ती रास्ते भर चुप रहीं। घर पहुँचकर कमला ने कहा, 'आज का पाठ बन्द रहेगा। दो पहर बाद मुझे अपने एक रोगी को देखने जाना है।' सुशीला और दमयन्ती कुछ न बोलीं। कमला उनके मन के भाव को ताड़ गई और कहा 'तुम लोग मनोरमा के बच्चे से बहुत डर गई मालूम होती हो। क्या तुम बतला सकती हो उस बच्चे की डरावनी सूरत होने का क्या कारण है?'

सुशीला ने कहा—'परमात्मा की निर्दयता और मनोरमा के दुर्भाग्य के सिवा इसका और क्या कारण हो सकता है? देखो बच्चा कैसा तन्दुरुस्त और मोटा ताज़ा है और फिर कैसे अमीर घर में पैदा हुआ है।' सुशीला का उत्तर सुनकर कमला एकदम गम्भीर हो गई। हाथ के इशारे से उसे रोकते हुए बोली 'शील। तुम अपनी वाणी को गन्दा कर रही हो। क्या मुझे पिछली बातें दुहराने की ज़रूरत होगी। पवित्र स्वरूप परमात्मा के लिये तुम अपवित्र बातें कहकर अपनी अज्ञानता जाहिर कर रही हो।'

सुशीला ने कहा—'तो फिर उस बच्चे के कुरूप होने का क्या कारण है?'

कमला ने मुस्कराकर कहा—'सुनो। इसका कारण, दुर्भाग्य या परमात्मा की निर्दयता नहीं है। क्या तुमने मनोरमा के कमरे को अच्छी तरह से देखा था?' दमयन्ती ने कहा—'जीजी॥ वह कमरा तो रानी के कमरे जैसा था। उसके विलास और वैभव में कोई कमी न थी। पर जीजी॥ मुझे तो वह पसन्द नहीं आया। उसमें बहुत सी डरावनी और गन्दी तस्वीरें थीं।'

कमला ने मन्द मन्द हँसते हुए कहा—'ठीक! मनोरमा के बच्चे की सूरत बिगड़ने का कारण वे तस्वीरें ही हैं। शायद तुमने देखा होगा उनमें कई बनमानुषों की तस्वीरें भी थीं।'

सुशीला और दमयन्ती ने आश्चर्य्य चकित होकर पूछा—

'यह क्योंकर ?'

कमला ने कहा—'जब मनोरमा के पेट में यह बच्चा आया था तब वह उन चित्रों को देखती थी। इस अवस्था में पेट के बच्चे पर माता के विचारों, रहन-सहन और बाहरी प्रभावों का बहुत ज्यादा असर होता है। मनोरमा पर बनमानुषों की तस्वीरों का असर पड़ा और वह उन जैसी सूरत का हो गया।'

सुशीला ने बड़े अचरज से कहा—'जीजी। यह तो बड़ी विचित्र बात है।'

कमला ने कहा—'अवश्य।' शायद तुमने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु की वीरता का हाल सुना होगा। महाभारत में उसकी वीरता और बलिदान का बड़ा अनूठा वर्णन है। वह चक्रव्यूह में फँसकर बलि हुआ था। उस व्यूह में घुसने का ढङ्ग उसने तभी सीख लिया था जब वह माता के पेट में था। महावीर अर्जुन उसकी माता को अच्छी शिक्षा और वीरता की कहानिया सुनाया करते थे। जब वह चक्र व्यूह मे घुसने का ढङ्ग बतला चुके थे तब ही उसकी माता को नींद आ गई थी और वह निकलने का ढङ्ग नहीं सुन सकी थी। इसी वजह से अभिमन्यु उस ढङ्ग को नहीं सीख पाया था।

'और सुनो। तुमने भारत की प्रसिद्ध विदुषी महारानी मन्दालसा का नाम सुना होगा। वह रानी होकर भी बड़ा सादा जीवन व्यतीत करती थीं। राजमहल के भोग और विलास से वह अलग रहती थी। उनके पति अपनी पत्नी की इस सादगी को बहुत ना पसन्द करते थे। रानी ने लगातार तीन लड़कों को बहुत सादे घरों में जन्म दिया और ऋषियों के बच्चों की तरह उनका लालन-पालन किया। वे तीनों राज्यैश्वर्य्य और राजमहल के भोग और विलाससे बिल्कुल उपराम होगये। इससे राजा को बहुत दुःख हुआ। राजा ने रानी से प्रार्थना की कि वे ऐसे बच्चे को जन्म दें जो उनके बाद राज्य को सम्भाल ले। रानी ने राजा की प्रार्थना स्वीकार करके चौथे लड़के को राजमहल में एक बढ़िया सजे हुए कमरे में जन्म दिया और राजकुमारों की तरह उसका पालन-पोषण किया। एक बार जब वह अपने तीनों भाइयों से गुरुकुल में मिला और उनसे राजधानी में चलने के लिये आग्रह किया तो उन्होंने जाना स्वीकार न किया। इसी प्रकार उस भाई ने गुरुकुल में रहना पसन्द न किया। इस विचित्रता का कारण वे बाहरी प्रभाव

और विचार हैं जिनका असर माता पर गर्भावस्था मे पड़ता है। मै पूछती हूँ क्या तुम मेरा मतलब समझ गई हो ?

'दमयन्ती और सुशीला कुछ न बोलीं और उन्होंने अपने सिर झुका लिये।'

कमला ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—'माता बनना कितना ऊचा और जिम्मेवारी का काम है, यह बात अब तुम भली भाति समझ गई होगी। बच्चे के पेट मे आने के समय से जन्म के समय तक माता को खाने पीने, रहने सहने मे अत्यधिक सावधानता और पवित्रता से काम लेना होता है। यदि मनोरमा सावधानता रखती तो उसे पछतना न पडता।

"गर्भ की अवस्था मे हमे अच्छा खाना पीना चाहिये। सुहावने चित्र और दृश्य देखने चाहिएँ। रमणीक स्थानों मे घूमना चाहिये और हमारे आस पास की चीजें और वातावरण पवित्र होनी चाहिए। अब वक्त बहुत ज्यादा हो गया है। केशव अम्मा को तङ्ग कर रहा होगा। मै उसकी खबर लेती हूँ। तुम लोग भी खा पी कर आराम करो। इस विषय पर फिर कभी विस्तार से चर्चा करूगी। आज इतनी ही चर्चा काफी है।" यह कह कर कमला चली गई।

आराधना !

(रचयिता—श्री प० सिद्धगोपाल जी सिद्धान्तरत्न, दिल्ली)

◎

धन पास हमारे है इक मन।
ले रहे उसे भी जीवन-धन।

(१)

लेते तो हो, पर है नटखट,
यह रखता है सबसे खटपट,
नहि साथ रहे भागे चटपट,
अटपट इसका है अवलोकन।

(२)

है कभी उच्च आदर्शों में,
अपकर्ष कभी उत्कर्षों में,
जीवन के हर्ष-विमर्षों में,
चिर-अचिर करे नित आलिङ्गन।

(३)

है मुदित कभी करता विषाद,
कर्मण्य कभी करता प्रमाद,
है शान्त कभी करता विवाद,
तव पास रहे कैसे भगवन्।

(४)

मेरे तो सन्तत रहा सग,
परखा है इसका अङ्ग-अङ्ग,
है अङ्ग-अङ्ग नित नव उमङ्ग,
व्यापक तरङ्ग इसके कण-कण।

(५)

फिर भी मेरा अनुपम धन है,
जीवन-धन यह शुचि-साधन है,
पर, साध्य तुही जीवन-धन है,
फिर क्यों हो ये साधक उन्मन ?

(६)

हो सत्य सनातन धर्म तुम्हीं,
सत्कर्मों में सत्कर्म तुम्हीं,
सब मर्मों में हो मर्म तुम्हीं,
जीवन के भी हो तो तुम जीवन।

(७)

यह प्रेय रहा तुम श्रेय रहे,
यह ज्ञान रहा तुम ज्ञेय रहे,
यह ध्यान रहा तुम ध्येय रहे,
मैं स्वय करूँ इसको अर्पण।

(८)

लेलो मम 'जीवन-धन' धनको,
मन से देता हूँ मैं मन को,
पर, मन से रखना मम मनको,
मन भूल न जाना मनमोहन।

(९)

निज मन्दिर में तव उद्दीपन,
उसका निशिवासर हो पूजन,
निर्णीत पुजारी हो मम मन,
नित मग्न रहे मन मन-रञ्जन।

(१०)

यह भूल न मेरी याद करे,
घर तेरा ही आबाद करे;
"गोपाल" यही फ़रयाद करे,
स्वीकार करो भव-भय-भजन।

* * *

सार्वदेशिक सभा का प्रचार कार्य

सन्थालों में प्रचार

(१)

सार्वदेशिक सभा ने सन्थाल परगना में आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के सहयोग पूर्वक प्रचार व्यवस्था की है। ५ प्रचारक वहाँ लगा दिए गए हैं। श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज मनोयोग पूर्वक इस कार्य को करा रहे हैं। गत २१-५-४० को सन्थाल परगना जिला के जोंकीवाध नामक स्थान पर श्री कृष्णसिंह जी के सभापतित्व में एक महासम्मेलन समारोह पूर्वक मनाया गया। हज़ारों की सख्या में सन्थाल लोगों ने सम्मेलन में भाग लिया। देवघर, डूमका, राजमहल, पाकोड़, गोड्डा, नामतारा, मुगेर, भागलपुर और पूर्निया इत्यादि स्थानों के गण्य-मान्य तथा प्रमुख व्यक्तियों ने सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन ने सबसे महत्व पूर्ण निश्चय यह किया कि आने वाली जन-गणना में सन्थाल लोग अपने को आर्य लिखाएँ। उसी दिन सन्थाल लोगों ने भगवान बुद्ध की जयन्ती भी मनाई।

(२)

मुङ्गेर जिला अन्तर्गत मुङ्गेर और जमुई सबडिविजन के मुङ्गेर, सूर्यगढा, हवेली खड़गपुर, जमुई, झाझा और चकाई इन छः थानों में सन्थाल आदिक लोग निवास करते हैं। मन्दिर हवेली खड़गपुर मुङ्गेर के रहने वाले श्री पाण्डु माझी के सभापतित्व में मुगेर सूर्यगढा थाना सन्थाल महासभा ता० १५ अप्रैल १६४० ई० को रतौन के जङ्गल में हवेली खड़गपुर और जमुई थाना सन्थाल महासभा ता० ३० अप्रैल को भीम बाध पानी कोल में और झाझा और चकाई थाना सन्थाल महासभा के अधिवेशन १५ मई को सकमा के जगल में बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुए। हजारों की संख्या में तीन सभाओं में वन पर्वतवासी सन्थाल, कोल, कोड़ा, नैया, पूजाहार, वीरहोड और कर्मार लोग आए थे। स्वागताध्यक्ष श्री रामचन्द्रसिंह बेशरा और सभापति श्री पाण्डु माझी जी के भाषण के अतिरिक्त नयका माझी, चिनकुमुर्मु आदि अनेक सज्जनों के आति सुधार सम्बन्धी भाषण हुए। सभा में लड़का लड़कियों के पढाने, चर्खाचलाने, मर्दुमशुमारी में धर्म के खाने में आर्य हिन्दू लिखाने, ईसाईयों की ओर से सन्थाल आदिकों में रोमन लिपि प्रचार

का विरोध, औरतों को डायन कहना अपराध करार दिया गया इत्यादि प्रस्ताव पास हुए। जहाँ पर इनमें अनेक गुण हैं वहा पर दो अवगुण बहुत बड़े हैं। एक अधिक मद्य सेवन करना और स्त्रियों को डायन कहकर निकाल देना, आर्थिक दड देना अथवा अवसर प्राप्त होने पर मार देना साधारण सी बात है। प्राय ऐसी घटना इनमे घटती रहती हैं। जहा कोई बीमार हुआ कि भूत प्रेत और डायन की करतूत समझ लिया जाता है। ओझा जिस स्त्री को बतावे बस उस पर यह आफत ढाई जाती है। आर्यसमाज द्वारा तथा पढे लिखे जाति के लोग भी इस बुराई को दूर करने मे लग गए हैं। इन कुसस्कारों के विरुद्ध जहाद छेड़ दी गई है।

वारसली गज निवासी श्रीमती अमोला देवी ने मरते समय आर्यसमाज मन्दिर के निर्माण के लिए ५००) का दान दिया है। इस स्थान पर समाज मन्दिर न होने के कारण प्रचार में असुविधा रहती थी तथा कार्य अव्यवस्थित रहता था। हमे बडी प्रसन्नता है कि उक्त समाज के उत्साही कार्यकर्त्ताओं के उद्योग और दानियों की सहायता से यह कमी शीघ्र दूर हो जायगी और समाज मन्दिर बन जायगा।

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र प्रात बडा उन्नतशील प्रात समझा जाता है। वहाँ के निवासियो का आर्य सस्कृति के प्रति प्रेम इतिहास तथा देश प्रसिद्ध है परन्तु आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से वह प्रान्त बहुत प्रगतिशील प्रान्त नहीं समझा जाता है। शोलापुर की आर्य काग्रेस तथा हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह से आर्य समाज के प्रति इस प्रान्त का बहुत ध्यान आकर्षित हुआ है और इस प्रात मे आर्य समाज लोक प्रिय हुआ है। सार्वदेशिक सभा ने दक्षिण प्रचार की जो तीन वर्षीय योजना बनाई हुई है उस योजना मे महाराष्ट प्रात भी सम्मिलित हैं। सम्प्रति सभा ने श्री लक्ष्मणराव जी ओगले तथा श्री स्वामी नित्यानद जी की सेवाएँ इस कार्य के लिए प्राप्त की हैं। उक्त दोनों महानुभाव महाराष्ट्र हैं। श्री ओगले जी बम्बई प्रात के पुराने और प्रसिद्ध प्रचारक हैं। सत्याग्रह के दिनों मे महाराष्ट्र और बम्बई मे कार्य करने में सार्वदेशिक सभा को आपने अमूल्य योग दिया था।

आन्ध्र

इस प्रान्त में पहले सभा की ओर से एक प्रचारक श्री प० मदनमोहन जी विद्याधर थे। अब सभा ने एक प्रचारक श्री प० लक्ष्मी नारायण जी उनके सहायक के रूप मे लगाये हैं। इनका मुख्य केन्द्र तनाली है। मार्च ४० से जून ४० तक के उनके प्रचार कार्य का विवरण इस प्रकार है :—

इस समय ओलेरू, रेय्यले, टूनेपूडी, येतानगर, पालमू, कारीमूड़ी, कृष्णायपालम्, पालीकोण्डा तथा तालीकोण्डा, तनकु इन स्थानों पर प्रचार कार्य किया गया। इन सभी स्थानों पर जनता ने आर्य समाज के प्रचार की आवश्यकता को अनुभव किया। फर्वरी में बेमुरू मे प्रचार में जनता ने बड़ी तादाद में भाग लिया। एक मुख्य शास्त्रार्थ श्री कल्याणानन्द भारती बी० ए० से हुआ। इन्होंने एक व्यक्ति पर अदालत में मुकद्दमा चलाकर 'जगद् गुरु' की उपाधि ली है। इन्होंने ऋषि दयानन्द तथा आर्यो के प्रति जनता मे बड़ा अश्लील प्रचार किया था। इस प्रचार से जनता में बड़ी उत्तेजना फैल गई थी यहाँ तक कि मुसलमान जनता भी उसके विरुद्ध हो गई थी। जनता ने सभा प्रचारक प० मदनमोहन विद्याधर जी तथा आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्य कर्त्ता प० गोपदेव जी को शास्त्रार्थ के लिए बुलाया। श्री पंडित जी वहा स्टेज पर पहुँचे तो कोई भी शास्त्रार्थ करने नही आया। वे कहते थे 'हम जगद् गुरु हैं, हमें सिंहासन दो तथा पंडित जी हम से नीचे बैठें।' जनता इन बातों से बड़ी क्षुब्ध हो गई। पंडित जी उनके पास गए और कहा कि चलिए अब शास्त्रार्थ कर लीजिये। वे किसी तरह भी नहीं माने। आखिर जनता मे एक व्याख्यान देकर दोनों प्रचारक वापिस आ गये। और जगद् गुरु जी गाव छोड़ गए। वे महानुभाव गण्टूर के बड़े भारी 'सन्त' समझे जाते हैं। बड़े बड़े लोग इनके 'भक्त' हैं। इनके इस प्रकार चले जाने से जनता में आर्य समाज की धाक बैठ गई।

१ से १२ मार्च। बेमूरू में एक ऐसे व्यक्ति ने श्राद्ध छोड़ा जो कि बहुत कट्टर था। उसका जवान २५ वर्ष का पुत्र मर गया। ब्राह्मण कहते थे, यह सब अपने प्रचलित धर्म का विरोध करने का फल है। उसने कहा जो कहना हो कहो। हम तो श्राद्ध नहीं करेंगे। आखिर उनके घर में हवन हुआ और ५०० गज भूमि अपने पुत्र के नाम से एक 'व्यायामशाला' बनाने के लिये ग्राम वासियों को दान दे दी।

उन्हो ने श्री स्वामी योगानन्द जी, श्री त्रिपुरनयनी राम स्वामी (एक प्रसिद्ध नौन ब्राह्मण नेता) श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी, श्री सत्यमित्र आर्य ने 'सत्रयाग' नामक यज्ञ को विध्वन्स करने के लिये दूनिपूड़ि में प्रचार किया। दूनिपूड़ी में मलयालम स्वामी नामक एक अत्यन्त प्रसिद्ध सन्यासी की पूजा के निमित्त उसके कुछ चेलों ने 'इस-सत्रयाग' की योजना की थी। इसमें हजारों स्त्रियाँ हजारों पुरुष उनके दर्शन कर उनकी भेंट चढाने आते थे। ये सन्यासी अपने पैरों का पानी ५) का एक गिलास के हिसाब से

बेचते हैं। यह २० दिन तक चला। सभा के कार्य कर्त्ता और सबने २० दिन तक इस पाखण्ड के विरोध में कार्य किया पहले तो जनता ने बहुत साथ नहीं दिया। पीछे से तो स्त्रियों ने भी समाज की सभाओं में भाग लिया। आर्य समाज का जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा।

मई मास। इसमें वैदिक पद्धति से बहुत विवाह सस्कार हुए। ७, ८ मई को श्री प० गङ्गा प्रसाद जी तनाली में आये, फिर मद्रास जाकर ११ को पुन तनाली में आये। उन्होंने कई ग्रामों में जाकर व्याख्यान दिये। इस वृद्धा अवस्था में भी इस उत्साह के साथ ग्राम ग्राम में जाकर प्रचार करना सचमुच प्रशसनीय है।

तालीकोण्डा नामक एक ग्राम मे (गुण्टूर के समीप) ब्राह्मसमाजी डाक्टर के प्रयत्न से एक 'विविधमतसमावेश' हुआ जिसमे ब्राह्मसमाजी, सनातनी, ईसाई, मुसलमान तथा आर्य समाजी सबने भाग लिया। आर्य समाज की तरफ श्री प० गोपदेव जी तथा श्री पण्डित मदनमोहन विद्याधर ने भाग लिया। दोनों का बड़ा मान हुआ। ३ घण्टे तक प० मदन मोहन विद्याधर ने "धर्म के मूल तत्व क्या हैं? वैदिक धर्म की क्या क्या खूबियाँ हैं?" पर व्याख्यान दिया। पण्डित गोपदेव जी ने उसका तिलगु भाषा में बहुत सुन्दर अनुवाद किया। जनता पर आर्य समाज का बहुत प्रभाव पड़ा। श्री सभापति जी ने उस व्याख्यान को बहुत अधिक पसन्द किया। वहाँ पर ईसाई तथा मुस्लिम प्रचारकों से भी वार्तालाप किया गया। दोनो पण्डितों के किये गए प्रश्नों का उत्तर सिवाय इसके कि 'हमारी पुस्तक' मे ऐसा लिखा है, कुछ न था।

इस समय १० विवाह सस्कार, १० उपनयन, ५ गृह प्रवेश (तनकू में) १ शुद्धि सस्कार हुआ। कूचिपूडी तथा अमृतलूस में नई समाजों की स्थापना हुई।

जनता मे वैदिक पद्धति से विवाह कराने की अभिरुचि बढ रही है। समाज के प्रति जो नाना भ्रम थे वे दूर होते जा रहे हैं और जनता समाज को श्रद्धा एव आदर के साथ देखने लग गई है।

जून मास में निम्न स्थानों पर प्रचार कार्य किया गया :—

मुनिपल्ले मे प्रचार किया गया तथा आस-पास के ग्रामों के हिन्दी विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र भी बाटे गए। जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा।

वलिवेरू के ब्राह्मण नवयुवक बहुत दिनों से आर्य समाज का प्रचार अपने ग्राम में कराना चाहते थे। वहा पर चार व्याख्यान हुए। वहा के कुछ भाई ईसाई धर्म की तरफ झुक

रहे थे। एक ईसाई महिला मोले ग्रामवासियों को बहका रही थी। वहा पर एक शास्त्रार्थ भी किया गया। परिणाम यह हुआ कि ग्रामवासियों पर आर्य धर्म का सिक्का जम गया। ग्रामवासियों ने 'क्रैस्चन धर्म मीमांसा' नामक तेलगू पुस्तक की १०० प्रतिया खरीद कर अपने ग्राम तथा चारों ओर बाटने का निश्चय किया।

राजानगरम् में एक मास के लिए हिन्दी प्रचार शिक्षण शिविर चल रहा था जिसमें आन्ध्र देश के सब हिन्दी प्रचारक इकट्ठे हुए थे। वहा पर प० मदनमोहन विद्याधर जी ने एक व्याख्यान 'व्याख्यानकला' पर दिया जिसे वहा के अध्यक्ष श्री प० सुब्बाराव जी ने सर्वोत्तम व्याख्यान कहा। वहा पर दो दिन तक हिन्दी प्रचारकों में प० जी आर्य समाज का प्रचार कार्य करते रहे।

राजमहेन्द्री आन्ध्र देश का बड़ा नगर है। यहा पर श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के नाम से गोदावरी नदी के तट पर एक 'श्रद्धानन्द घाट' है। यहा पर कांग्रेस भवन 'हिन्दी की आवश्यकता तथा आर्यसमाज और हिन्दी' इस विषय पर व्याख्यान दिए गए। कुछ लोगों से मिलकर समाज की स्थापना का विचार किया गया। आर० बी० वापन्ना तथा श्री सुब्बारान नामक दो महानुभाव पक्के आर्यसमाजी हैं।

कैकलूरू में भी समयाभाव से व्याख्यान न हो सका। वहा के कुछ नवयुवकों से धर्म के विषय में वार्तालाप किया गया।

अभलूर में वैदिक साम्यवाद पर व्याख्यान दिया। जनता पर बहुत प्रभाव पडा। सारा समम प० जी वहा के कुछ नौजवानों से घिरे रहे और खूब वाद विवाद होता रहा।

• **गुडयड़ो** बेजवाडा के पास श्री शरणराम स्वामी अभूत लूस के निवासी एक प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता हैं जो हरिजनोद्धार का कार्य करते हैं। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मेम्बर भी रह चुके हैं। इनके एक सम्बन्धी का विवाह था। श्री प० गोपदेव जी तथा पण्डित जी के कहने से उन्होंने इसे वैदिक ढङ्ग से कराया।

भीमवरम में भी एक विवाह वैदिक ढग से कराया गया। एक व्याख्यान दिया गया। यहा के लोग समाज स्थापन के लिए बहुत उत्सुक हैं। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के कई मेम्बर व्याख्यान में उपस्थित थे।

मन्थाल वहा पर वैश्यों की एक सभा थी। श्री कोलाकासी विश्वनाथ गुप्ता जो कि मद्रास प्रान्तीय आर्य वैश्य युवकजन सघ के अध्यक्ष हैं, ने प० जी के व्याख्यान का वहा प्रबन्ध कराया। दो व्याख्यान वैश्य सघ में दिए जिसका बहुत ही अच्छा प्रभाव वैश्यों मे पड़ा तीसरा व्याख्यान 'वर्णव्यवस्था' पर था जोकि बहुत ही अधिक मनोरजक था। जिसमें

शहर के गण्यमान्य पुरुष उपस्थित थे।

माकीपुर। वहां भी वैश्यों में ही मीटिंग का प्रबन्ध था। एक दूसरी मीटिंग थी जिस में वर्णव्यवस्था पर व्याख्यान था। जिनका जनता पर बहुत प्रभाव पड़ा। फिर नन्याल में वापिस आगए। वहां फिर दो व्याख्यान दिए गए। एक का विषय था 'हिन्दू धर्म'। श्री रेड्डी जी एम० एल० ए० प्रधान थे। व्याख्यान का अद्भुत प्रभाव था। २८ जून को सभा प्रचारक ने कर्नूल जिला हिन्दी प्रेमी मण्डली के प्रथम वार्षिकोत्सव का उद्घाटन किया।

इस मास में २ वैदिक विवाह हुए जिन्हें श्री प० गोपदेव जी ने कराया। प० जी के प्रभाव से एक महिला ने 'श्राद्ध' कराना छोड़ दिया।

दो नये ट्रैक्ट इस बार छपे। 'मूर्ति पूजा' तथा 'युवकों का कर्तव्य' 'सन्ध्या' पुस्तक प्रेस में है।

वेलूर (उत्तरी अर्काट)

यहाँ सभाके प्रचारक श्री कन्हैयाजी बड़े उत्साहसे प्रचार करते हैं। उनके परिश्रम और २-३ मास के कार्य के फल स्वरूप ही आर्य्यसमाज की स्थापना हो गई है। जून मास के कार्य का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

गत २३-६ ४० में एक मुस्लिम गुण्डा एक हिन्दू युवती को लेकर भाग रहा था उसे बचा कर उसके मा बाप को समाज ने सौंप दिया। २७-६-४० को एक ब्राह्मणी को एक मुसलमान से छुड़ाया, उसकी रक्षा कर उसको माँ बाप के घर भेज दिया। समाज ने दो अनाथ बच्चों की रक्षा कर वहाँ के विवेकानन्द अनाथालय में सौंप दिया। एक मुस्लिम हैड कान्स्टेबिल एक हिन्दू औरत को ले भागा, रात के बारह बजे उसे भी बचाकर उसके बाप को सौंप दिया। अब तक पाँच विवाह, तीन कर्ण भूषण, एक चूड़ा कर्म, पाँच यज्ञोपवीत और एक मुस्लिम और एक क्रिश्चियन के शुद्धि सस्कार इस समय हो चुके हैं। २२५ मेंबर हैं इनमें बहुत कुछ शहर के बड़े महाशय भी हैं।

विश्वास है कि और भी बहुत कुछ शुद्धियाँ होंगी।

मलावार

इस प्रान्त में सम्प्रति श्री साधु शिव प्रसाद जी जो मलावार के ही निवासी हैं सभा की ओर से प्रचार कार्य करते हैं। पिछले दिनों क्विलन, कोचीन, त्रिवेन्द्रम (ट्रावनकोर) मे प्रचार किया गया। १०० व्यक्तियो की शुद्धि की गई। कोचीन मे इस समय चेचक का बड़ा प्रकोप हो रहा है। इसके शमन के लिये वृहद रूप में यज्ञ-हवनों की आयोजना की जा रही है।

हर्ष समाचार

आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने अपने कुछ सहयोगी सन्यासियों के सहयोग से वैदिक धर्म प्रचार के विस्तार की भावना से "सार्वदेशिक दयानन्द भिक्षु मण्डल" स्थापित किया है। इसके उद्देश्य आदि इस भाँति निश्चित हुए हैं। मण्डल का मुख्योद्देश्य महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा दृष्ट एवं प्रदिष्ट वैदिक धर्म का प्रचार है।

उसके लिए निम्न लिखित साधन वर्ते जा सकते हैं।

(१) चिकित्सालय, विद्यालय तथा पुस्तकालय स्थापित करना।

(२) वैदिक धर्म प्रचार सम्बन्धी ग्रन्थ तथा पुस्तकाएँ प्रकाशित करना।

(३) वैदिक धर्म के सहायक तथा साधक अन्य सभी उपायो को व्यवहार मे लाना।

(४) भारत के सब प्रान्तों में इस प्रकार के मठ स्थापित करना और मण्डल से सम्बद्ध करना।

(५) मण्डल के आधीन वैदिक धर्म प्रचार में लगे हुए सन्यासियों तथा वानप्रस्थिय के भोजन, वस्त्र, निवास तथा रोग दशा में चिकित्सादि का प्रबन्ध करना।

(६) उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति के लिए दाताओं से दान धर्मदाय (Trust) आदि लेना तथा उनका प्रबन्ध करना।

मण्डल की स्थापना के थोड़े दिनों बाद ही हैदराबाद सत्याग्रह छिड़ गया था। मण्डल के प्रमुख कार्यकर्त्ता उसके सफल बनाने में लग गये। इस कारण मण्डल का कार्य बन्द रहा। अब इसका निर्वाचन पुन इस प्रकार हुआ है —

अध्यक्ष—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज।

मन्त्री—स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ।

कोषाध्यक्ष—श्री ला० नारायण दत्त जी ठेकेदार नई देहली।

पुस्तकाध्यक्ष—श्री प० गगाप्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज।

मण्डल ने अपने १५-५-४० ई० के अधिवेशन में ज्वालापुर में चिकित्सालय खोलने का प्रस्ताव स्वीकार किया हुआ है। उसकी स्कीम आदि बनाने के लिए एक उपसमिति बना दी गई है।

मण्डल का मुख्य कार्यालय वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में है।

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस

का

वार्षिक परीक्षा परिणाम इस वर्ष ६५ प्रतिशत सफल रहा

इस वर्ष स्नातिका श्रेणी में चार छात्रायें उत्तीर्ण हो गई हैं, जिनका दिसम्बर में वार्षिकोत्सव पर समावर्तन सस्कार होकर प्रमाण पत्र (उपाधि डिग्री) दी जायगी। गुरुकुल छात्रालय में इस समय १२५ के लगभग छात्राएँ हैं। ग्रीष्मावकाश ३० जून को समाप्त होकर १ जुलाई से गुरुकुल विद्यालय खुल गया है।

यहा से कुछ देविया प्राइवेट रूप से हिन्दी सस्कृत तथा इङ्गलिश में बाहरी परीक्षाओ के लिए भी शिक्षा प्राप्त करती रही हैं। जिनके रहन-सहन भोजनादि तथा पढने का उचित प्रबन्ध किया जाता है। इस वर्ष में १० विद्याविनोदिनि, ५ विदुषी, २ सस्कृत प्रथमा, एक सस्कृत मध्यमा, ३ काव्यतीर्थ तथा १ मैट्रिक में उत्तीर्ण हुई हैं। रत्न, भूषण, प्रभाकर में भी कई देविया बैठी थी इस वर्ष जो देविया प्राइवेट रूप से हिन्दी सस्कृत और इङ्गलिश की परीक्षा देना चाहें वे शीघ्र अपना प्रार्थना पत्र भेजें जिससे उनके रहने का उचित प्रबन्ध किया जाय।

आचार्या—

कन्या गुरुकुल हाथरस पो० सासनी (अलीगढ)

शुद्धि समाचार

(१) ता० ११ से १३ जून सन् १६४० ई० तक प० बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ के तीन व्याख्यान आर्य समाज मन्दिर में रात्री के ६ बजे से १०॥ बजे तक बड़े प्रभावशाली हुए जनता पर अच्छा प्रभाव पडा।

(२) ता० १६-६-४० को आर्य समाज रुडकी ने एक मुस्लिम परिवार की शुद्धि की और शुद्ध किये हुओ को वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया शुद्धि बड़े समारोह पूर्वक की गई। परिवार में निम्न लिखित व्यक्ति हैं —

१ अस्लम खा (पिता)	हिन्दू नाम	म० धर्मसिंह
२ अस्लम खॉ की स्त्री	,, ,,	धर्मवती
३ बडा लडका अब्दुल क्यूम	,, ,,	भोपालसिंह
४ बडी लडकी पुखेराज	,, ,,	कमला देवी
५ छोटी लडकी फहमीदा	,, ,,	सुशीला देवी
६ छोटा लडका खुरशीद	,, ,,	रामपाल सिंह
७ छोटी लड़की नज़ाकत	,, ,,	सरला देवी

ये सज्जन पठान खानदान से हैं और सरहद के रहने वाले जमींदार तबके के हैं। शुद्धि के बाद उपस्थित जनता को मिठाई बॉटी गई और म० धर्मसिंह जी का बडा प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

—रामचन्द्र मन्त्री

आर्य समाज रुड़की

आर्य कुमार जगत्

विद्या धर्मेण शोभते

वैदिक साहित्य के प्रचार का नया आयोजन

आर्य-युवक, उनके शिक्षक व संरक्षक ध्यान दें

आजकल भारत मे प्रचलित शिक्षा पद्धति के विषय में यह शिकायत तो भारतीय मात्र को है ही कि उसमे धर्म और सदाचार की शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया जाता यह भी देखा गया है कि आर्य और हिन्दू शिक्षण सस्थाओं में से पढकर निकले हुए युवकों में से भी अधिकतर को अपने भारतीय साहित्य और धार्मिक ग्रन्थों से नाम मात्र का ही परिचय होता है। इस त्रुटि को आर्य और हिन्दू नेता तथा शिक्षा शास्त्री हृदय से अनुभव करते हुए भी इसको दूर करने का अभी तक कोई अभीष्ट प्रबन्ध नहीं कर सके। भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् ने इस त्रुटि की पूर्ति के लिये एक कदम उठाया है।

अखिल भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की ओर से प्रतिवर्ष देश के अनेक केन्द्रों मे दो परीक्षाओं का सगठन किया जाता है। इन परीक्षाओं का मुख्योद्देश्य यही है कि हिन्दू बालक और विशेषत आर्यकुमार और आर्य कुमारिया अपना २ साधारण शिक्षण प्राप्त करते हुए वैदिक साहित्य और आर्ष ग्रन्थों से भी परिचय प्राप्त कर सकें।

ये परीक्षाएँ से लगभग २५ वर्ष से प्रचलित हैं और इनसे सहस्रों आर्य कुमारों और आर्य कुमारियों ने लाभ भी उठाया है। इन परीक्षाओं के केन्द्र भी देश के बहुत से प्रमुख स्थानों पर स्थापित हो चुके हैं । परन्तु अभी तक आर्य शिक्षण सस्थाओं के सञ्चालकों का ध्यान इस ओर जितना जाना चाहिये था उतना नहीं गया। यदि शिक्षण सस्थाओं के सञ्चालक, आर्यसमाजें, कुमार सभाएँ और अन्य हिन्दू सस्थाएँ इधर ध्यान दें और इन परीक्षाओं को लोकप्रिय बनाने की कृपा करें तो वे बिना किसी नये स्वतन्त्र प्रबन्ध और अतिरिक्त व्यय के अपने बालकों को वैदिक सस्कृति और साहित्य का परिचय कराने के उद्देश्य को पूर्ण कर सकते हैं।

परिषद् की ओर से "वैदिक धर्म विशारद" और सिद्धान्त शास्त्री की दो परीक्षाएँ ली जाती हैं। इनका आरम्भ सन् १६१४ में किया गया था और अब इनको आर्य जनता कितना अपना चुकी है यह इससे ही प्रकट है कि विगत वर्ष इन परीक्षाओं के ६७ केन्द्र थे। जिनमें १५०० परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए थे।

वैदिक धर्म विशारद परीक्षा तीन खण्डों मे होती हैं जिसमें से प्रथम और द्वितीय खण्ड विशेष कर छोटे बालकों के लिये अभिप्रेत हैं। इनमे आर्य उद्देश्य रत्नमाला, व्यवहारभानु, सत्यार्थ प्रकाश के कुछ समुल्लास और वैदिक-धर्म के सिद्धान्तों के ज्ञान की परख की जाती है। विशारद परीक्षा का तृतीय खण्ड और सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षाएँ विद्वानों के लिये हैं। जिनमे कुछ उपनिषद् दर्शन और ऋषिकृत सत्यार्थ-प्रकाश ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा कुछ धर्म सम्बन्धी अन्य उच्च ग्रन्थों के अध्ययन के साथ २ विविध धर्मों के ज्ञान की भी परीक्षाएँ ली जाती हैं। इन परीक्षाओं को उत्तीर्ण करने वाले व्यक्तियों को इतनी योग्यता अवश्य हो जाती है कि वे अपना जीवन धार्मिक व्यतीत करने के साथ २ धर्म उपदेशादि का कार्य भी सुगमता से कर सकें। परीक्षाओं मे उत्तीर्ण सभी व्यक्तियों को परिषद् की ओर से प्रमाण-पत्र (उपाधि-पत्र) और प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाले छात्रों को पदक तथा पुरस्कार आदि पारितोषिक भी दिये जाते हैं।

कुछ आर्य स्कूल और कन्या पाठशालाएँ इन परीक्षाओं को अपनी २ धार्मिक पाठविधि का अङ्ग बना चुके हैं। मध्य प्रान्तीय आर्य-प्रतिनिधि सभा ने अपने सारे प्रान्त के लिये हमारी इन परीक्षाओं को स्वीकार कर लिया है। सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों ने भी इन परीक्षाओं को स्वीकार करने और प्रचलित करने का आश्वासन दिया है। यदि अन्य सभाएँ, समाजें, कुमार सभाएँ और शिक्षण संस्थाएँ भी अपने यहा इन परीक्षाओं के लिये कुमार और कुमारियों को उत्साहित करें तो वे वैदिक धर्म साहित्य के अध्ययन और प्रचार में बहुत बड़ी सहायता करेंगे।

निवेदक—

देवव्रत धर्मेन्दु, परीक्षा मन्त्री
भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्, चादनी चौक, दिल्ली।

परीक्षा समिति का चुनाव

अखिल भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की अन्तरङ्ग सभा का १ला अधिवेशन ता० ७ जुलाई को दिन के ११ बजे से दीवान हाल दिल्ली में राजगुरु प० धुरेन्द्र शास्त्री न्याय भूषण के प्रधानत्व में हुआ।

जिसमें निम्न सज्जन परिषद् की परीक्षा समिति के सदस्य चुने गये:—

१—राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री न्यायभूषण

२—श्री डा० युद्धवीरसिंह जी

३—श्री मनुराम जी बी० ए०, आनर्ज़

४—श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु, परीक्षा मन्त्री

५—श्री प० सूर्यदेव जी

६—श्री किशोरीलाल जी B. A L T हैड मास्टर D A. V. High School मुजफ्फरनगर

७—श्री प्रो० मुन्शीराम जी

८—श्री प० ज्ञानचन्द जी

९—श्री प० हरिश्चन्द्र जी M A B. T दिल्ली

सर्व सम्मति से प० देवव्रत जी धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री चुने गये। आर्यकुमार सभाओं, आर्यसमाजों, तथा वैदिक धर्म विशारद के केन्द्राध्यक्षों से प्रार्थना है कि भविष्य में परीक्षा सम्बन्धी तमाम पत्र-व्यौहार प० देवव्रत जी धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री आर्यकुमार परिषद् चादनी चौक दिल्ली के पते पर करें।

बद्रीदत्त उपमन्त्री।

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद्

की

परीक्षाओं की पाठ-विधि

(स० १६६५ वि० से पुन परिवर्तन तक)

वैदिक धर्म विशारद परीक्षा

प्रथम खण्ड

प्रथम प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—आर्योद्देश्य रत्नमाला (अङ्क २०))।

२—वैदिक धर्म प्रवेशिका (अङ्क ४०) बा० रामचन्द्र एम० ए० कृत ।=)

३—धार्मिक शिक्षा भाग ५, ६ (अङ्क ४०), आर्य साहित्य मण्डल ≶) प्रति भाग

द्वितीय प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—व्यवहार भानु (अङ्क ३०) -)॥

२—सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास २ और १० (अङ्क ३०) ।)॥

३—उपदेशामृत भाग १–२ (अङ्क ४०) ।≶)

द्वितीय खण्ड

प्रथम प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ३, ४, ५, ७, ८ (अङ्क ६०))।

२—धार्मिक शिक्षा भाग ७, ८ (अङ्क ४०) ।-) प्रति भाग

द्वितीय प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—कर्तव्य दर्पण (अङ्क ४०) =)॥

२—आर्य समाज के जगमगाते हीरे (अङ्क ४०) ।)

३—उपदेशामृत भाग ३ (अङ्क २०) प्रो० सुधाकर एम० ए० कृत ।)।

४—उन्नति की ओर (अङ्क २०) प्रकाशक भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् ।=)

तृतीय खण्ड

प्रथम प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—उपदेशामृत भाग ५ (अङ्क २०) ।=)।

२—बाल वेदामृत (अङ्क ४०) (प्रो० किशोरलाल गुप्त एम० ए०) ।=)

३—ईश और केन उपनिषद् (अङ्क ४०) =)॥

द्वितीय प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ६ और ११ (अङ्क ४०)

२—दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह पूर्वार्ध (अङ्क ६०) १॥)

तृतीय प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—आर्य धर्म (अङ्क २०) ।)

२—धार्मिक शिक्षा भाग ६ १० (अङ्क ४०) ।=) प्रति भाग

३—अमर जीवन (अङ्क ४०) डा० केशवदेव शास्त्री कृत १)

चतुर्थ प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

निबन्ध किसी धार्मिक विषय पर।

सिद्धान्त शास्त्री

प्रथम प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका ॥)

२—वैदिक सम्पत्ति ६)

द्वितीय प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—वैदिक काल का इतिहास (प० आर्य मुनि) १॥)

२—न्याय दर्शन ॥)

३—कठ, प्रश्न और श्वेताश्वेतर उपनिषद् =)॥ प्रत्येक

तृतीय प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—आस्तिकवाद (प० गङ्गाप्रसाद उपाध्याय एम० ए०) १)

२—सृष्टि विज्ञान (मा० आत्माराम अमृतसरी) १॥)

३—विश्व की पहेली (बा० पूर्णचन्द्र एडवोकेट) ॥)

चतुर्थ प्रश्न-पत्र पूर्णाङ्क १०० समय ३ घण्टे

१—सत्यार्थ प्रकाश उत्तरार्द्ध।

२—धर्म का आदि स्रोत (प० गङ्गाप्रसाद चीफजज टिहरी) १)

३—धर्मपद, बाइबिल, कुरान और पुराणों का साधारण ज्ञान।

परीक्षाओं के नियम

१—प्रथम तथा द्वितीय खण्ड में संस्कृत के श्लोक, मन्त्र तथा अन्य वाक्यों का अर्थ नहीं पूछा जावेगा।

२—उत्तर देवनागरी अक्षरों में ही लिखने होंगे।

३—परीक्षायें प्रतिवर्ष जनवरी मास के प्रथम सप्ताह में हुआ करेगी।

४—परीक्षा में वही छात्र सम्मिलित हो सकेंगे जिनके आवेदन-पत्र तथा परीक्षा शुल्क ३० नवम्बर तक कार्यालय मे आजाया करेगी। छपे हुए आवेदन-पत्र मन्त्री कार्यालय से प्राप्त हो सकते हैं।

५—परीक्षा शुल्क इस प्रकार है—प्रथम खण्ड।=), द्वितीय खण्ड ।।), तृतीय खण्ड १) और सिद्धात शास्त्री २)।

६—प्रथम तथा द्वितीय दोनों खण्डों की परीक्षा एक साथ भी दी जा सकती है।

७—द्वितीय खण्ड उत्तीर्ण करने पर ही परीक्षार्थी तृतीय खण्ड मे बैठ सकेंगे, परन्तु परीक्षा समिति विशेष अवस्थाओं मे किसी परीक्षार्थी को इस नियम से मुक्त भी कर सकती है।

८—तृतीय खण्ड मे उत्तीर्ण छात्र को "वैदिक धर्म विशारद" और अन्तिम परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र को "सिद्धात शास्त्री" की उपाधि प्रदान की जाती है।

९—सिद्धात शास्त्री परीक्षा मे वही छात्र बैठ सकेगा जो नीचे लिखी परीक्षाओं मे से किसी एक परीक्षा मे उत्तीर्ण हो—

(१) वैदिक धर्म विशारद।

(२) सिद्धात भूषण तथा सिद्धात रत्न (पजाब)।

(३) किसी विश्वविद्यालय तथा गुरुकुल के स्नातक (ग्रेजुएट)।

१०—परीक्षा केन्द्र किसी ऐसे स्थान पर जहा न्यून से न्यून ५ परीक्षार्थी हों, बनाया जा सकता है, जबकि स्थानीय आर्य समाज के प्रधान वा मन्त्री वा कोई अन्य प्रतिष्ठित सज्जन केन्द्र व्यवस्थापक बनना स्वीकार कर लें।

११—केन्द्र में परीक्षा के प्रबन्ध तथा सञ्चालन का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व व्यवस्थापक महोदय पर ही होगा। उनके पास सर्व सूचनाये कार्यालय से समय २ पर पहुँचती रहेंगी। उन्हें अपना पूरा पता और पास का रेलवे स्टेशन व डाक घर

का नाम कार्यालय में पहिले ही भेज देना चाहिये।

१२—वैदिक धर्म विशारद के तीनों खण्डों में ६० वा अधिक अङ्क प्रतिशत पाने वाले प्रथम श्रेणी में, ४५ वा अधिक प्रतिशत पाने वाले द्वितीय श्रेणी में और ३३ अङ्क वा अधिक प्रतिशत पाने वाले तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण होंगे।

१३—सिद्धान्त शास्त्री परीक्षा में ४० से ४९ तक तृतीय श्रेणी में, ५० से ६४ तक द्वितीय श्रेणी तथा ६५ वा अधिक प्रतिशत अङ्कों पर प्रथम श्रेणी मानी जायगी।

१४—प्रत्येक परीक्षा में सर्व प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय आने वाले छात्रों को परिषद् की ओर से पदक, पुरस्कार तथा सब उत्तीर्ण छात्रों को प्रमाण-पत्र अथवा उपाधि-पत्र प्रदान किये जाते हैं।

१५—पाठ विधि की समस्त पुस्तकें 'आर्य साहित्य मण्डल अजमेर' से प्राप्त हो सकती हैं।

१६—परीक्षा सम्बन्धी समस्त पत्र-व्यवहार निम्न पते पर करें—

देवव्रत धर्मेन्दु, परीक्षा मन्त्री,
अ० भा० आर्य कुमार परिषद्
चांदनी चौक, देहली।

अन्तरंग सभा का पहला अधिवेशन

अखिल भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की अन्तरग सभा का पहिला अधिवेशन रविवार ता० ७ जौलाई सन् १९४० को दिन के ११ बजे से दीवान हाल दिल्ली में राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय-भूषण के प्रधानत्व मे हुआ।

उपस्थिति निम्न प्रकार थी :—

(१) राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण। (२) श्री प्रो० सुधाकर जी, (३) श्री डा० युद्धवीर सिंह जी, (४) श्री मनुराम जी, (५) श्री बद्रीदत्त जी, (६) श्री पोनीकर जी, (७) श्री नन्दकिशोर जी खन्ना, (८) श्री गुलाबराय जी, (९) श्री गोविन्दराय जी (१०) श्री विश्वम्भर सहाय जी प्रेमी, (११) श्री प० ज्ञानचन्द जी, (१२) प० देवव्रत धर्मेन्दु।

कार्यवाही :—

(१) गत् अधिवेशन की रिपोर्ट पढी जाकर स्वीकार हुई।

(२) निम्न लिखित आर्य कुमार सभाओ के आवेदन पत्र स्वीकार किए गए तथा वे भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद् से सम्बन्धित कर ली गई

आर्य कुमार सभा जोधपुर, आर्य कुमार सभा नवाबगज गोडा, आर्य कुमार सभा देवास सीनियर।

(३) आर्य कुमार सभा रेल बाज़ार कानपुर का आवेदन पत्र पेश हुआ और निश्चय हुआ कि चन्दा आने पर आगामी अन्तरग सभा में पेश हो।

(४) निम्न सज्जन परिषद् की कार्य कारिणी सभा के सदस्य चुने गए·

१ राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण (पद के कारण)

२ श्री प्रो० सुधाकर जी।

३ ,, डा० युद्धवीर सिंह जी।

४ ,, नन्दकिशोर जी खन्ना।

५. ,, मनुराम जी।

६ ,, बद्रीदत्त जी।

७ ,, पौनीकर जी।

(५) निम्न लिखित सज्जन परीक्षा समिति के सदस्य चुने गए --

१. राजगुरू प० धुरेन्द्र जी शास्त्री न्याय भूषण।

साहित्य-समीक्षा

(१) The origin, Scope and Mission of the Arya Samaj by Pt Ganga Prasad ji Upadhyaya M A.

(२) 'Worship' by Pt. Ganga Prasad ji Upadhyaya M A Published by the Arya Samaj Chowk, Allahabad Price As 8/

आर्य-समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री प० गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० का नाम आस्तिकवाद, अद्वैतवाद, जीवात्मा, मनुस्मृति टीका आदि हिन्दी के अत्युत्तम ग्रन्थों और Reason and Religion, Swami Dayanand's contribution to Hindu Solidarity, I and My God इत्यादि अंग्रेज़ी के ग्रन्थ रत्नो के लेखक के रूप मे इतना प्रख्यात हो चुका है कि उनका परिचय कराना सूर्य के आगे दीपक दिखाने

---

२ श्री डा० युद्धवीर सिंह जी।

३ ,, मनुराम जी बी० ए०

४ ,, देवव्रत जी धर्मेन्दु, परीक्षा मन्त्री।

५ , प० सूर्यदेव जी अजमेर।

६ ,, किशोरीलाल जी बी० ए० एल० टी० हैड मास्टर डी० ए० वी० हाई स्कूल मुजफ्फरनगर।

७ श्री प्रो० मुन्शीराम जी।

८. ,, प० ज्ञानचन्द्र जी।

९ ,, ,, हरिश्चन्द्र जी।

सर्व सम्मति से प० देवव्रत जी धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री चुने गए।

आर्य कुमार सभाओं, आर्य समाजों तथा वैदिक धर्म विशारद के केन्द्राध्यक्षों से प्रार्थना है कि भविष्य में परीक्षा सम्बन्धी तमाम पत्र-व्यवहार प० देवव्रत जी धर्मेन्दु परीक्षा मन्त्री भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् चादनी चौक दिल्ली के पते से करें।

तथा अन्य कई प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

बद्रीदत्त

उप-मन्त्री भारतीय आर्य कुमार परिषद्, दिल्ली।

के समान है। "आर्य-समाज का मूल, क्षेत्र और उद्देश्य' तथा 'पूजा' विषयक उपर्युक्त दो ग्रन्थ (अँग्रेज़ी में) उन्होंने हाल में लिखे हैं जो Religious Renaissance Series में आर्य-समाज चौक इलाहाबाद की ओर से प्रकाशित हुए हैं। आर्य-समाज विषयक ग्रन्थ में आर्य-समाज के विषय में जानने योग्य सभी मुख्य बातों का सुयोग्य लेखक ने १६ अध्यायों में सक्षेप से निरूपण किया है। Conception of God (ईश्वर स्वरूप) Sin and Pain (पाप और दु ख) on Worship (पूजा के विषय में) Ritual (यज्ञ सस्कारादि क्रिया कलाप) इत्यादि शीर्षक देकर आर्यसमाज के दार्शनिक मन्तव्यों तथा कर्मकाण्ड पर बडा अच्छा प्रकाश डाला है। आर्य-समाज के सामाजिक कार्य का बड़ी सुन्दरता से पुस्तक में निरूपण किया गया है जिसको पढकर कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति आर्य-समाज के लोकोपकार और सेवा कार्य से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। आर्य-समाज के शिक्षा सम्बन्धी कार्य (Educational work) राजनैतिक कार्य (Political work) तथा अन्य मतानुयायियों के प्रति दृष्टि कोण (Our Foreign Relations) आदि आवश्यक विषयों पर पृथक् २ अध्यायों में प्रभावजनक रूप से विचार किया गया है।

पृ० ७७ पर 'An outline of religious tenets' विषयक शीर्षकके अध्याय में लिखा है "Widows and widowers if quite young are allowed to marry, but not beyond a particular age" अर्थात् विधवाओं और विधुरों को यदि वे काफी यौवनावस्था में हों विवाह करने की आर्य-समाज आज्ञा देता है किन्तु एक विशेष आयु के बाद नहीं। उस आयु का निर्देश कर देना जनता की सूचनार्थ आवश्यक था। धर्मार्य सभा मथुरा और लाहौर के आर्य सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्तावों के अनुसार यह आयु अधिक से अधिक विधवाओं और विधुरों के लिए क्रमश· ३० और ४० नियत की गई थी।

उसी प्रसङ्ग में Divorce वा तलाक के प्रश्न पर सन्देहात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है यथा "Divorce is not allowed" Some people and women divorce under exceptional circumstances on the authority of certain scriptures But it is a disputed question and the issue has not yet been clarified आर्य समाज ने एक धार्मिक सस्था के रूप में तलाक प्रथा का कभी समर्थन नहीं किया किन्तु नि सन्देह कुछ आर्य विद्वान् विशेष अवस्थाओं में तलाक़ का अनुमोदन करते हैं। अच्छा हो यदि श्री सार्वदेशिक सभा की धर्मार्य सभा इस आवश्यक किन्तु विवादास्पद विषय पर अपना निर्णय देकर आर्य

समाज की स्थिति को सर्वथा स्पष्ट करा दे। पृ० ११८ पर इस वाक्य को पढकर मुझे आश्चर्य हुआ कि In South Canara which is the centre, about 18 people have been brought back from the Xianfold through the efforts of local Pracharak. यदि पिछले वर्ष के विषय में यह बात लिखी गई हो तो ठीक हो सकती है किन्तु कुल मिलाकर सैकड़ों की सख्या मे दक्षिण कर्णाटक में ईसाईयों को शुद्ध किया जा चुका है।

पुस्तक की छपाई, आकार प्रकार सब आकषक और अत्युत्तम है इस पर भी लगभग १७५ पृष्ठों की इस पुस्तक का दाम सजिल्द का १) और बिना जिल्द का ८ आना बहुत कम है। इस पुस्तक का शिक्षित जनता में खूब प्रचार होना चाहिए।

Worship या 'पूजा' विषयक श्रीमान्य उपाध्याय जी की पुस्तक अत्यन्त उत्तम और विशेष मनन करने योग्य है। ऐसे समय में जब कि अनेक अंग्रेज़ी शिक्षित सज्जन तथा श्री रामकृष्ण मिशन थियासोफिकल सोसाइटी जैसी सस्थाएँ मू तपूजा का कई रूपों में समर्थन कर रही हैं इस पुस्तक की अति विशेष आवश्यकता थी। पुस्तक म ईश्वर पूजा, उसके स्वरूप और उपयागिता पर युक्तियुक्त विचार करते हुए मूर्ति पूजा की निस्सारता को युक्तियों और वेद, उपनिषद्, महाभारत, श्री शङ्कराचार्य, श्री मध्वाचार्य, श्री बसवेश्वर, गुरु नानक, सन्त कबीर आदि के वचनों द्वारा इतनी उत्तमता से सिद्ध किया गया है कि कोई भी निष्पक्ष पाठक उससे प्रभावित हुए बिना न रह सकेगा। पुस्तक के पिछले तीन अध्यायों पर योग, What about the masses सर्वसाधारण के लिए क्या किया जाए अर्थात् किस प्रकार उनकी आध्यात्मिक वृत्तियों को विकसित किया जाए, कुछ चुनी हुई प्रार्थनाएँ (Some selected prayers) इत्यादि आवश्यक विषयों पर बड़ा उत्तम प्रकाश डालते हुए उपयोगी क्रियात्मक निर्देश दिये गये हैं। पुस्तक की भाषा ज़ोरदार और प्रभावजनक होते हुए भी उसमें किसी प्रकार की कठोरता नहीं आने पाई जैसा कि प्राय खण्डनात्मक ग्रन्थों मे हो जाता है "Some arguments examined" विषयक अध्याय विशेष माननीय है। मेरी विशेष प्रार्थना पर ही श्री मान्य उपाध्याय जी ने यह ग्रन्थ लिखना प्रारम्भ किया था और मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि उन्होंने जिस ढङ्ग से उसे लिखा है वह पाठकों पर विशेष प्रभाव उत्पन्न किए बिना न रहेगा। जहा तक प्रमाण सग्रह का प्रश्न है एक त्रुटि कहीं कहीं दिखाई देती है। कई स्थानों पर पुस्तक (महाभारतादि) का निर्देश कर दिया गया है उसके अध्याय श्लोक सख्यादि को नहीं लिखा गया। आशा है अगले सस्करण में इस त्रुटि को दूर कर दिया जायगा। लगभग १७५ पृष्ठों की पुस्तक का मूल्य बिना जिल्द का ॥) और सजिल्द का १) केवल प्रचार दृष्टि से ही रक्खा गया है और आर्य जनता का कर्तव्य है कि वह इस पुस्तक का शिक्षित पौराणिक भाइयों के अन्दर विशेष रूप से प्रचार करके उन्हें सच्चे वैदिक धर्म की ओर आकर्षित करे।

भ्रमण-पत्रिका

सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस

श्री मन्त्री जी आर्यसमाज

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने यह निश्चय किया है कि घोषणा की जाये कि हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की अपूर्व सफलता तथा इस सफलता की प्राप्ति के लिये अपने प्राणो की आहुति देने वाले आर्य वीरो की पुण्य-स्मृति और वीर गति को आर्य जाति के हृदय मे जीवित, जाग्रत रखने तथा उनके प्रति श्रद्धाजलि भेंट करने के लिये श्रावण शुक्ला १५ तदनुसार १७ अगस्त १९४० को प्रतिवर्ष आर्य जगत् मे 'सत्याग्रह बलिदान स्मारक दिवस' मनाया जाय। इस वार यह दिन दैवयोग से श्रावणी उपाकर्म के पर्व के साथ मिल गया है। अत इसका कार्यक्रम श्रावणी उपाकर्म के साथ मिला कर निम्न प्रकार किया जाय —

[१]

प्रात काल ७ बजे आर्यसमाज मन्दिरो में सभाये की जायें जिनमें उपाकर्म कार्यवाही के पश्चात् सब उपस्थित भद्र पुरुष तथा देवियाँ मिलकर निम्न प्रकार पाठ करें:—

(१) ओ३म् ऋतावान ऋतजाता ऋतावृधो घोरासो अनृतद्विषः।
तेषां वः सुम्ने सुच्छर्दिष्टमे वयं स्याम ये च सूरयः॥ ऋग्वेद

(२) ओ३म् अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि॥ यजुर्वेद

(३) ओ३म् इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।
अपघ्नन्तो अराव्णः॥ सामवेद

(४) ओ३म् उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा अस्मभ्यंसन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम॥ अथर्ववेद

आर्य समाजों के पुरोहित अथवा अन्य कोई वेदज्ञ विद्वान् इन मन्त्रों का तात्पर्य निम्न शब्दों में पढ़कर प्रार्थनादि कराएँ।

(१) जो विद्वान् सदा सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य की निरन्तर वृद्धि और असत्य के विरोध में तत्पर रहते हैं उनके सुखदायक उत्तम आश्रय में हम सब सदा रहें तथा हम भी उनकी तरह मन, वचन और कर्म से पूर्ण सत्यनिष्ठ बनें।

(२) हे ज्ञान स्वरूप, सब उत्तम सङ्कल्पों और कर्मों के स्वामी परमेश्वर! हम आज से एक उत्तम व्रत ग्रहण करते हैं जिसके पूर्ण करने की शक्ति आप हमें प्रदान करें ताकि उस व्रत के ग्रहण से हमारी सब तरह से उन्नति हो। वह व्रत यह है कि असत्य का सर्वथा परित्याग करके हम सत्य की ही शरण में आते हैं। आप हमें शक्ति दें कि हम अपने जीवनों को पूर्ण सत्यमय बना सकें।

(३) हे मनुष्यो! तुम सब आत्मिक शक्ति को तथा उत्तम ऐश्वर्य को बढ़ाते हुए कर्मशील बनकर उन्नति में बाधक आलस्य प्रमादादि दुर्गुणों का परित्याग करते हुए सारे संसार को आर्य अर्थात् श्रेष्ठसदाचारी धर्मात्मा बनाओ।

(४) हे प्रिय मातृ-भूमे! हम सब तेरे पुत्र और पुत्रियाँ तेरी सेवा में उपस्थित होते हैं। सर्वथा नीरोग स्वस्थ तथा ज्ञान सम्पन्न होते हुए हम दीर्घ आयु को प्राप्त हों और तेरी तथा धर्म की रक्षा के लिये आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों की बलि देने को भी तय्यार रहें।

इसके पश्चात् मिल कर निम्न कविता का गान किया जावे :—

धर्मवीरों के प्रति श्रद्धाञ्जलि

श्रद्धाञ्जलि अर्पण करते हम, कर के उन वीरों का मान।
धार्मिक स्वतन्त्रता पाने को, किया जिन्हों ने निज बलिदान॥
परिवारों के सुख को त्यागा, युवक अनेकों वीरों ने।
कष्ट अनेकों सहन किए पर, धर्म न छोड़ा धीरों ने॥
ऐसे सभी धर्मवीरों के, आगे सीस झुकाते हैं।
उनके उत्तम गुण गण को हम, निज जीवन में लाते हैं॥
अमर रहेगा नाम जगत में, इन वीरों का निश्चय से॥
उनका स्मरण बनाएगा फिर, वीर जाति को निश्चय से॥
करें कृपा प्रभु आर्य जाति में, कोटि कोटि हों ऐसे वीर।
धर्म देश हित जोकि खुशी से, प्राणों की आहुति दें धीर॥

तत्पश्चात् आर्य वीरों के व्यायाम के करतब दिखाये जायें और यथा सम्भव सर्वोत्तम करतब दिखाने वाले आर्य वीरों को पारितोषिक दिया जाय।

जगदीश्वर को साक्षि जानकर, यही प्रतिज्ञा करते हैं।
इन वीरों के चरण चिन्ह पर, चलने का व्रत धरते हैं॥
सर्व शक्तिमय दें बल ऐसा, धीर वीर सब आर्य बनें।
पर उपकार परायण निशि दिन, शुभ गुण धारी आर्य बनें॥

धर्मवीर नामावली

श्याम लाल जी महादेव जी, रामा जी श्री परमानन्द।
माधव राव विष्णु भगवन्ता, श्री स्वामी कल्याणानन्द॥
स्वामी सत्यानन्द महाशय मलखाना श्री वेद प्रकाश।
धर्म प्रकाश राम नाथ जी, पाण्डुरङ्ग श्री शान्ति प्रकाश।
पुरुषोत्तम जी ज्ञानी लक्ष्मण-राव सुनहरा वेंकट राव।
भक्त अरूड़ा मातु राम जी, नन्हूसिंह श्री गोविन्द राव।
बदन सिंह जी रतीराम जी, मान्य सदा शिव ताराचन्द।
श्रीयुत छोटे लाल अशर्फी लाल तथा श्री फ़क़ीरे चन्द॥
माणिकराव भीमराव जी, महादेव जी अर्जुनसिंह।
सत्य निष्ठ सत्यनारायण, इत्यादिक उत्तम नरसिंह॥
धर्म युद्ध में बलि देकर के, अमर हुए इन वीरों का।
स्मरण करें विजयोत्सव के दिन, सब ही वीरों धीरों का॥

[२]

एक व्याख्यान कराया जावे जिस में इन वीरों ने जिस प्यारे वैदिक धर्म के लिए अपने प्राणों की आहुति दी है उसका दक्षिण भारत के कोने २ में प्रचार करने के लिए सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान जी के कार्य क्रम के आधार पर (जो पूर्व भेजा जा चुका है) अपील की जाय और धन संग्रह करके सार्वदेशिक सभा को भेजा जावे।

प्रत्येक आर्य का कर्तव्य है कि इस दिन थोड़ा बहुत धन चाहे वह आना दो आना ही क्यों न हो, अपनी सामर्थ्यानुसार श्रद्धा पूर्वक स्वयं समाज में भेंट करें।

[३]

सायं काल ६ से ७ तक आर्य वीर दल का सामूहिक प्रदर्शन (Rally) हो जिसमें ओ३म् की ध्वजारोहण के पश्चात् उपरोक्त कविता का गान किया जाए।

नोट—जिन स्थान पर आर्य वीर दल नहीं हैं वहाँ इस दिन आर्यवीर दलों की स्थापना की जाय और सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित नियमों के अनुसार उनका सङ्गठन किया जाए।

[४]

इस अवसर के लिये सार्वदेशिक सभा की ओर से हैदराबाद के धर्मयुद्ध में प्राणों की आहुति देने वाले धर्मवीरों की जीवनियों का संग्रह "बलिदान" नामक पुस्तक के रूप में छापा जा रहा है। इस में जेलों मे प्राण देने वाले उन वीर हुतात्माओं की जीवनियों के अतिरिक्त उन हुतात्माओं की भी जीवनियाँ होंगी जिन्होंने सत्याग्रह से पूर्व के आन्दोलन में वीर गति को प्राप्त किया था। ये जीवनियाँ हृदयग्राही तथा स्फूर्तिदायक कहानियों के रूप में लिखी गई हैं। इसमें बहुत से वीरों के चित्र भी दिए जा रहे है। पुस्तक का आकार लगभग २०० पृष्ठ का होगा परन्तु मूल्य केवल लागत मात्र प्रचारार्थ ||) आना मात्र होगा। डाक व्यय पृथक् होगा।

सुधाकर

मन्त्री— सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

धर्म युद्ध के हुतात्माओं के प्रति श्रद्धाञ्जलि

पुण्य स्मृति के धर्म वीरो। आप लोगों का जितना सम्मान और गुणगान किया जाय उतना ही कम है। आप लोगों ने धर्म की पवित्र वेदी पर अपने प्राणों का उत्सर्ग किया है। हैदराबाद में आपकी धार्मिक स्वतन्त्रता का निर्दयता पूर्वक अपहरण किया जा रहा था। आप धर्म युद्ध के सैनिक बनकर उस स्वतन्त्रता की प्राप्ति के लिये गये थे। सत्य और अहिंसा आपका अस्त्र था। आप पर घोर अमानुषिक अत्याचार हुए इसलिए कि आप अपने व्रत से च्युत हो जाय। आपने अपने व्रत तथा सत्य और अहिंसा की रक्षा के लिए उन अत्याचारों को धैर्य्य पूर्वक सहन करके हँसते हँसते मृत्यु का आलिङ्गन किया। आप उन पुण्यात्मा वीरों के मार्ग के पथिक हुए हैं जो ऊँचे उद्देश्यों के लिए अपने प्राणों की बलि देते हैं। आपने अपने उत्सर्ग से आर्य जाति और धर्म युद्ध को अमित गौरव प्रदान किया और इतिहास में अपना नाम अमर किया है। आने वाली सन्तान जब इस धर्म युद्ध के इतिहास को पढ़ेगी तो निश्चय ही आपके त्याग और बलिदान पर जो आपने इस युद्ध में दर्शाया है आनन्द विभोर होगी और गद् गद् हृदय से आप लोगों के चरणों में श्रद्धा और प्रेम से उसका मस्तक नत हो जायगा।

सासारिक दुर्बल आत्माओं ने आपके बलिदान पर दुख अनुभव किया परन्तु दिव्यात्माओं ने उन पर हर्ष प्रगट किया। हम आपको मरा हुआ समझते हैं परन्तु वे आपको मरा हुआ नहीं वरन् जीवित समझते हैं। वस्तुतः यह बात ठीक है। आप अपना नाम अमर और दूसरों के लिये उत्तम उदाहरण प्रस्तुत कर गये हैं।

वे माता-पिता धन्य हैं जिन्हें आप जैसी सन्तानों का माता-पिता बनने का सौभाग्य मिला है। वह देश और समाज धन्य है जिसमें आप जैसे वीर जन्म लेते हैं।

आप अन्धे जोश में शहीद नहीं हुए हैं वरन् सत्य और न्याय के लिये शहीद हुए हैं। यही आपके बलिदान का गौरव है।

—रघुनाथ प्रसाद पाठक

सम्पादकीय

अहिंसा और सेना

महात्मा गांधी तथा कांग्रेस की कार्य कारिणी समिति के सदस्यों में अहिंसा के विषय पर जो मतभेद हुआ है उसकी चर्चा पाठक समाचार पत्रों में पढ़ते होंगे। इस मतभेद के कारण महात्मा जी कांग्रेस से पृथक हो गए हैं अथवा यों कहिए महात्मा जी का उसकी नीति के निर्धारण में जो हाथ रहता था अब वह न रहेगा।

महात्मा जी का पक्ष यह था कि देश की राष्ट्रीय सरकार में सेना और पुलिस का कोई स्थान न होगा। अहिंसा का अस्त्र इनकी पूर्ति कर देगा। महात्मा जी से मतभेद रखने वालों का पक्ष यह था कि यह सिद्धान्त यद्यपि बहुत ऊंचा है तथापि वे इस सिद्धान्त में सच्चे हृदय से महात्मा जी के साथ जाने में असमर्थ हैं। उनका यह भी मत था कि कांग्रेस एक राजनैतिक संस्था है। उसका ध्येय देश की स्वतन्त्रता की प्राप्ति है। संसार को शान्ति का पाठ पढ़ाना उसका उद्देश्य नहीं है। कांग्रेस की नीति अहिंसा रही है और है परन्तु अहिंसा की नीति में इस सीमा तक जाना जिस तक महात्मा जी चाहते हैं उन के लिए असंभव था और उनकी दृष्टि में अपने मतदाताओं का ठीक ठीक प्रतिनिधित्व न करना था। महात्मा जी का यह मतभेद श्री राजा जी और सरदार पटेल जैसे उनके अन्तरङ्ग मित्रों और पुराने सहकर्मियों के साथ था जो २०—२५ वर्ष से उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करते रहे हैं। परन्तु यह मतभेद सच्चा और हृदय जनित है यह इसकी एक बड़ी विशेषता है।

महात्मा जी की अहिंसा की भावना बहुत ऊंची है। यह शुद्ध धर्म्म की द्योतक है जिस में सब मनुष्य अत्यन्त पवित्र निष्पाप और देव तुल्य होते हैं

अर्थात् सभी ब्राह्मण वृत्ति के होते हैं। निस्सन्देह समाज की इस अवस्था में राजनीति सेना और पुलिस की आवश्यकता नहीं हो सकती। सर्वत्र सुख और शान्ति का साम्राज्य व्याप्त रहता है। इस समय समाज की जो निकृष्ट व्यवस्था है उसे सब देखते और जानते हैं। इस समय तो इस धर्म्म की हम केवल कल्पना ही कर सकते हैं।

राजनीति का कार्य समाज में अर्थ और काम का उचित विभाजन करना, और समाज के बाहरी तथा भीतरी दुष्टों से उसकी रक्षा करना इत्यादि होता है। राजनीति का काम मनुष्यों के मनों को वश में करना नहीं होता। यह काम तो धर्म का है। राजनीति का काम समाज में सुव्यवस्था स्थिर रखना और धर्म के आचरण को प्रबल प्रेरणा दिलाना होता है, जिससे उसके वास्तविक उद्देश्य की पूर्ति हो। इस के लिए दण्ड, सेना और पुलिस की आवश्यकता होती ही है। महाराज अशोक बौद्ध धर्म्म को अङ्गीकार करने के पश्चात् अहिंसा के परमव्रती बन गए थे परन्तु समाज में धर्म्म की रक्षा तथा बाहरी आक्रमणों से देश की रक्षा के लिए वे बड़ी प्रबल सेना रखते थे। तभी वे समाज में शान्ति और व्यवस्था स्थिर रख पाए थे। समाज की वर्तमान स्थिति में फौज और पुलिस की आवश्यकता से इनकार करना सचमुच बहुत ऊंचे आदर्श की ऊंची उड़ान है। यह आदर्श कभी व्यावहारिक रहा है, यह हमें ज्ञात नहीं है। यह तभी व्यावहारिक हो सकता है जब समाज के सब प्राणी निर्वैर हो जायें, उनके मन स्फटिक की नाईं निर्मल हो जायें और सर्वत्र विशुद्ध धर्म्म का प्रचार हो जाय। समाज मे जब तक राजनीति की आवश्यकता है तब तक दण्ड, सेना और पुलिस की आवश्यकता रहेगी। इस दृष्टि से महात्मा जी की अपेक्षा श्री राजा जी इत्यादि के दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक देख पड़ते हैं।

हमारा यह अभिप्राय नहीं है कि महात्मा जी स्वप्न लेने वाले नेता हैं। वे क्रियात्मक नेता हैं और उनके जीवन का लेविल जन-साधारण के लेविल से बहुत ऊंचा है। जो बातें हमें अक्रियात्मक देख पड़ती हैं वे उनके लिये क्रियात्मक हैं या होंगी परन्तु जन-साधारण तथा उनसे बनी संस्थाओं को अपने ऊंचे आदर्शों तक पहुंचा हुआ समझ लेना व्यावहारिक नीति नहीं देख पड़ती।

आर्य्य समाज स्थापना दिवस

सार्वदेशिक सभा की 'आर्य्य समाज स्थापना' दिवस सम्बन्धी अपील की पूर्ति की ओर हम आर्य्य समाजों का ध्यान पूर्व भी इन स्तम्भों में आकर्षित कर चुके हैं। हमें यह लिखते हुए हर्ष होता है कि आर्य्य समाजों ने सभा की अपील का आदर किया है। आर्य्य

समाजें जो धन उनकी ओर लगाया गया था उसकी पूर्ति कर रही हैं। परन्तु अभी बहुत सी आर्य्य समाजें ऐसी शेष हैं जो मौन हैं। उन्हें सभा कार्य्यालय से स्मरण कराया जा रहा है। गौरव इसी में है कि सभा द्वारा प्रेरणा वा स्मरण किए बिना ही वे अधिक नहीं तो कम से कम अपने धन की पूर्ति करदें। सभा के स्थिर व्यय की पूर्ति के लिए जैसा कि इन स्तम्भों में इस से पूर्व हम लिख चुके हैं स्थिर आय का कोई साधन नहीं है। इस दिवस की आय को ही सभा ने स्थिर आय का साधन नियत किया है। अत. आर्य्य पुरुषों तथा आर्य्य समाजों को इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त जन गणना इत्यादि तात्कालिक कार्यों के सफल सपादन के लिए और भी अधिक ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इस समय तक इस निधि में जो राशि प्राप्त हुई है वह सैंकड़ों में है। यह राशि यद्यपि गत वर्षों की राशि की अपेक्षा उत्साहवर्द्धक है तथापि ऐसी नहीं है जिस पर गर्व किया जा सके। सभा ने १५०००) की राशि की पूर्ति की अपील की है। इस समस्त राशि की पूर्ति मे ही हमारा गौरव है। कम से कम १००००) की पूर्ति हो जाने पर भी हमारी उल्लेख योग्य सफलता समझी जायगी। ऐसे समाचार भी मिल रहे हैं कि स्थापना दिवस के आज ३, ४ मास व्यतीत हो जाने पर आर्य्य समाजें इस अपील की पूर्ति की ओर अग्रसर हुई हैं। अच्छा यही था वे समय पर इस काम को करतीं परन्तु अब भी अधिक नहीं तो कम से कम उन्हें अपने हिस्से की पूर्ति कर ही देनी चाहिए।

हिन्दुत्वदीपक श्री पं० कन्हैयालाल जी मिश्र आर्योपदेशक काशी कृत पुस्तकें

१—ईराक की यात्रा— लेखक ने ईराक और अरब के अनुभव बतलाते हुए अरब और ईराक का प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास और आर्य (हिन्दू) सभ्यता के चिह्न जो अबतक मिलते हैं पर पूर्णरूप से प्रकाश डाला है। लेखक ने इस पुस्तक मे सप्रमाण सिद्ध किया है कि योगीराज कृष्ण का जन्म अरब की मथुरा में हुआ था और कंस का वध भी अरब में ही हुआ क्योंकि अरब में ही कंस का राज था। इस पुस्तक में २७२ पृष्ठ हैं और ३१ भिन्न भिन्न चित्र सुन्दर तथा मनमोहक हैं। विद्यार्थियों, उपदेशकों तथा हिन्दू मात्र के पढ़ने योग्य पुस्तक है। ईराक के मुसल्मान बादशाह ने मस्जिद और कब्रें तोड़कर किस प्रकार मार्ग बनाये और बाजारें बनाई इसका भी पूर्ण वर्णन है। मूल्य केवल ?।)

२—मेरी अबीसीनिया यात्रा— लेखक ने अपनी यात्रा का अनुभव बतलाते हुए प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास और आर्य (हिन्दू) सभ्यता के चिह्न जो अबतक मिलते हैं पर पूर्णरूप से प्रकाश डाला है। इटली ने किसकूट नीति से अबीसीनिया की सीमा पर झगड़ा कर अबीसीनिया को हड़प लिया आँख देखा दृश्य इस पुस्तक मे वर्णित है मूल्य केवल ।।)

३ हमारी जापान यात्रा — इसमें लेखक ने अपनी यात्रा के अनुभव के अतिरिक्त जापान, जावा, सुमात्रा, बाली आदि कई टापुओं के प्राचीन तथा अर्वाचीन इतिहास तथा आर्य (हिन्दू) सभ्यता के चिह्न जो अब तक मिलते हैं पर पूर्णरूप से प्रकाश डाला है। जापान सन् १८५० से पूर्व की अवनति के गढे में पड़ा था और अब किस प्रकार उन्नतिशील बना। जापान का संगठन कैसा दृढ है, जापान और भारतवर्ष में वर्तमान समय में क्या अन्तर है? इस पर भी लेखक ने पूर्ण प्रकाश डाला है। यह पुस्तक प्रत्येक देशभक्त के पढ़ने योग्य तथा हिन्दू मात्र के पढ़ने योग्य है। इसमें १६६ पृष्ठ और ३२ चित्र सुन्दर तथा मनमोहक हैं। मूल्य केवल १।।)

पुस्तक मिलने का पता —

बाबूलाल आर्य मार्फत श्री महावीरप्रसाद ठेकेदार अर्दली बाजार
बाँदा (यू० पी०) जी० आई० पी० रेलवे।

श्री रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिए लाला सेवाराम मालका द्वारा
"चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

ऋग्वेद

सितम्बर १९४०

Reg No L 2121

यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रो० सुधाकर, एम० ए०

स० सम्पादक—श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक मू० स्वदेश ३), एक प्रति का ≈) विदेश से ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद

सामवेद

लेख-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १५	भाद्रपद १९९७ सितम्बर १९४० ई०]	[दयानन्दाब्द ११६	अङ्क ७

* वेद की शिक्षाएँ *

ऋतस्य पथि वेधा अपायि । ऋग्० ६।४४।८

सत्य के मार्ग में ईश्वर रक्षक हैं।

God shall be with thee on the Path that leads to TRUTH

* * *

सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन् । ऋग्० ९।७३।१

धर्मात्मा को सत्य की नाव पार लगाती है।

The virtuous find their salvation in Truth.

भक्ति

[ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज]

प्रारम्भ

पौराणिक काल में इस 'भक्ति' शब्द का यथा सम्भव अधिक से अधिक अनादर और दुरुपयोग हुआ और अब भी उसका एक दर्जे तक दुरुपयोग हो रहा है। निकृष्ट से निकृष्ट घृणित से घृणित अनेक कार्य इसी भक्ति के पर्दे में हुए और हो रहे हैं। एक व्यक्ति शिव के मन्दिर में जाकर मुंह बनाकर शिवको लक्ष्य करके बकरे की बोली में बोलता है और इस कृत्य से अपने को शिव का भक्त समझता है। दूसरा व्यक्ति अच्छी तरह पावों में घुंघुरू बाधकर, नियमानुकूल नाचता है और वह बहुत पहुँचा हुआ भक्त समझा जाता है। तीसरा आदमी पुरुष हो या स्त्री अपना सर्वस्व गुरु के अर्पण करता है और वह उच्चतम भक्त समझा जाता है। मैं एक बार अयोध्या गया हुआ था, मुझे वहां कई लोगों ने बतलाया कि यहां सरकारी शिक्षा विभाग के एक पेंशनर रहते हैं वे बड़े योगी और भक्त हैं। उन्हें योगी सुनकर मेरी भी इच्छा हुई कि उनके दर्शन करू। कुछेक अपरिचित पुरुषो के साथ, जो उन्ही महापुरुष के दर्शनार्थ जा रहे थे मै भी वहाँ गया और आध घन्टे से अधिक प्रतीक्षा करने के बाद एक साधारण सा व्यक्ति जिसके पैरों में घुँघुरू बँधे थे आया और बिना कुछ कहे सुने आकर नाचने लगा। कुछ देर जब उसे नाचते हुए हो गया तब मैंने व्यर्थ समय नष्ट होते देखकर लोगों से पूछा कि आखिर वह योगीराज कब आवेंगे ? तो उत्तर मिला कि यही तो वे भक्त राज हैं तब मैंने अपने भाग्य को सराहा और उठकर चल दिया। जिस व्यक्ति के चेहरे पर भक्ति का कोई प्रभाव नहीं जिसके नाच में भी भक्ति और प्रेम का आवेश न था और सबका सब बनावट और ढोंग दिखलाई पड़ता था ऐसे लोग भी भक्त कहे जाते हैं। कलकत्ता के गोविन्द भवन की भक्ति का भाँडा तो अभी कुछ वर्ष हुए फूट ही चुका है। अस्तु उपर्युक्त पंक्तियों का निष्कर्ष यह है कि भक्ति की आज कल भी

कम मिट्टी पलीत नहीं की जा रही है। आखिर भक्ति चीज क्या है ? इस प्रश्न का उत्तर देना इन पंक्तियों का उद्देश्य है।

भक्ति शब्द के अर्थ

भक्ति शब्द के अर्थ हैं भिन्नता, विभाग, अनुराग, श्रद्धा, मान प्रदर्शन, सेवा, बनावट, सजावट इत्यादि इस प्रकार अनेक अर्थ होते हुए भी प्रश्न यह है कि भक्ति का भाव प्रगट हो इनमें से वह अर्थ कौन सा है ?

भक्ति का भाव

इन अनेक अर्थों में से तीन अर्थ में जिनसे भक्ति का भाव व्यक्त होता या जिनसे भक्ति के अर्थ की पूर्ति होती या हो सकती हैं ये हैं (१) भिन्नता (२) विभाग और (३) श्रद्धा। इनसे किस प्रकार भक्ति की सिद्धि हो सकती है। इसी पर विचार करना है।

(१) भिन्नता—

भक्त के लिये प्रारम्भिक बात यह है कि वह अपने को उपासक प्रेमी और भक्त समझे और अपने उद्देश्य को उपास्य, प्रेष्ठ और प्रियतम समझे। भक्ति के इस अँश "भिन्नता" का उद्देश्य यह है कि प्रेमी अपने प्रियतम प्रभु की अधिक से अधिक समीपता प्राप्त करे और वह समीपता इतनी अधिक बढ़ाए कि प्रेमी को अपने प्रेष्ठ और प्रियतम के प्रेम में इतना लवलीन कर देवे कि जिससे प्रेमी अपनी सुध बुध बिसार दे और उसे अपने भीतर और बाहर हर तरफ अपना प्रियतम ही दिखाई देने लगे और यह चरितार्थ होने लगे कि "जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।" अथवा अमीर खुसरो के शब्दों में "मन तो शुदम, तो मन शुदी, मन तन शुदम, तो जा शुदी। ताकस न गोयद् बाद् अजा मन दीगरम तो दीगरी।।"

अर्थात् मैं तू हो जाऊ और तू मै होजा, मैं शरीर बनू और तू उसका प्राण होजा, जिससे फिर न कोई न कह सके कि मैं दूसरा हूँ और तू दूसरा।

श्वेताश्वेतरोपनिषद् में इसलिए कहा गया है कि मनुष्य जब तक इस द्वैत (भिन्नता) का अनुभव नहीं करता तब तक ईश्वर को प्राप्त ही नहीं कर सकता।

(२) विभागः—

भक्ति का दूसरा अंश विभाग है। उपासक को अपने अन्तःकरण और उस विभाग को समझकर उन से इस प्रकार काम लेना चाहिये कि जिस से वे उपासक

के हृदय मे उत्कृष्ट प्रेम पैदा करने का साधन बन सके। अन्त करण के वे विभाग क्या हैं, उनका अत्यन्त सक्षेप से यहाँ उल्लेख किया जाता है।

इच्छा शक्ति

इच्छा शक्ति (will power) असल मे इच्छा नही है बल्कि शक्ति है और यह मनुष्य के मस्तिष्क मे, सब से ऊपर उस स्थान में, जिसे योगी सहस्र दल कहते हैं, रहती है। इस शक्ति के जागृत होने से मनुष्य उपासना के उच्च क्षेत्र में पग धरता है और इसी शक्ति के जागृत करने के लिए अन्त करणो में से प्रत्येक करण का सदुपयोग करने की जरूरत है।

मेधावी बुद्धि

मस्तिष्क के ऊपरी भाग ही मे शक्ति भण्डार से ठीक नीचे उत्कृष्ट अथवा प्रेरिता या मेधावी बुद्धि का स्थान है जिस से काम लेने से उपासक मे श्रद्धा और विश्वास उत्पन्न होते हैं।

तार्किक बुद्धि

मेधावी बुद्धि से नीचे मस्तिष्क के प्राय मध्य में साधारण या तार्किक बुद्धि का स्थान है। जिस से काम लेकर उपासक सत्यासत्य का विवेक करके सत्य का ज्ञान प्राप्त करके उसे ग्रहणीय और असत्य को त्याज्य समझता है।

सन्देश तन्तु

शिर का निचला भाग मन से सम्बन्धित सन्देश तन्तुओ का स्थान है जिस से काम लेकर मनुष्य ज्ञान (understanding) प्राप्त किया करता है। ये तन्तु स्वभावत अनिच्छित रीति (Passive Activities of Mind) से शरीर मे आत्मा की सत्ता मात्र से काम किया करते हैं। परन्तु इन पर अधिकार प्राप्त करने से अनेक विशेषताये उपासक मे पैदा होती हैं।

मन

वक्ष मे हृदय से ठीक ऊपर इन्द्रियों के नियन्ता मन का स्थान है।

चित्त

जो स्मृति, वासना और संस्कार का भण्डार और जिन से भावो Emotions का भी सम्बन्ध है, हृदय और नाभि के मध्य मे रहता है।

सूक्ष्म प्राण

चित्त के नीचे सूक्ष्म (Psychic) प्राण रहते हैं। यह है अन्त करणो का विवरण इन्हे यन्त्रवत् समझे। आत्मा इन यन्त्रो से काम करने वाला यन्त्री है और

काम लेने का साधन विद्युत् या गतिदायिनी शक्ति (Electricity or Motor Power) वही शक्ति है।

इच्छा शक्ति इन यन्त्रों के द्वारा काम करती है। बुद्धि के द्वारा विचार और ज्ञान, मन के द्वारा इन्द्रिय व्यापार, चित्त के द्वारा भावुकता और प्राण के द्वारा भोग के लिए काम होता है। जब प्रत्येक अन्तःकरण अपने विभाग की सीमा में रहते हुए काम करता है, तब इच्छा शक्ति के काम में बाधा न पड़ने से उस का विकास और वृद्धि होती है।

शक्ति के काम में विघ्न

(१) जब प्राण, इन्द्रिय, व्यापार, भाव और विचार में दखल देता है, तब मनुष्य में विषयों के भोगने की प्रवृत्ति बढ़कर मनुष्य को अपना गुलाम बना लेती है

(२) जब चित्त, मन (इन्द्रिय व्यापार) और बुद्धि (विचार) के काम में दखल देता है, तब मनुष्य में भावुकता बढ़कर मन और बुद्धि दोनों को निकम्मा कर देती है।

(३) जब तार्किक बुद्धि मेधावी बुद्धि के काम में दखल देती है, तब मनुष्य श्रद्धाहीन कुतर्की बनता है।

(४) जब विश्वास वर्धनी बुद्धि तार्किक बुद्धि के काम में दखल देती है, तब मनुष्य अन्ध विश्वासी बन जाता है।

इस लिए आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य अपने भीतर होने वाले आन्तरिक कार्यों को समझ और उन में से प्रत्येक को सीमा में रखते हुए उनसे काम लें जिस से मनुष्य के भीतर शक्ति (आत्म-बल) बढ़े और उत्कृष्ट प्रेम की वृद्धि का कारण बनें।

(३) श्रद्धा—

भक्ति का तीसरा अंग "श्रद्धा" है। अर्थात् सत्य का ग्रहण करना। भक्ति के दूसरे अंग से सत्य का ज्ञान प्राप्त करके श्रद्धा के द्वारा उसे ग्रहण कर लेना चाहिए। ग्रहण करने का भाव यह है कि वह उसके हृदय में अंकित हो जावे और मनुष्य उसके विपरीत कुछ करने के अयोग्य हो जावे।

इस प्रकार इन तीनों साधनों से काम लेकर मनुष्य भक्ति की प्राप्ति का अधिकारी, आत्म बलवान और द्वैत से अद्वैत की ओर चलने वाला होता है। और इस अधिकार और बल को जप और ध्यान में लगाकर उत्कृष्ट भक्ति या सर्व श्रेष्ठ प्रेम को अपने मन में उत्पन्न करके प्रभु का भक्त और वैसा ही प्रेमी बन जाया करता है जिसका ऊपर जिक्र किया गया है।

स्वार्थ-त्याग

[लेखक—श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज]

वेद कहता है कि परमेश्वर महान है। सब पदार्थ उसके गर्भ मे हैं। मनुष्य मात्र के लिये उसी की पूजा उपासना करनी चाहिये। उसका विज्ञान तारा मण्डल के देखने से पूर्ण प्रतीत होता है। जैसे प्रत्येक वृक्ष का आधार उसका मूल है उसी प्रकार समस्त ससार का आधार परमेश्वर है। ससार के सारे पदार्थ परिवर्तनशील है परन्तु परमात्मा एक रस है। जिसको यह आवश्यकता हो कि वह एक जैसा रहे उसको उचित है कि परमात्मा की उपासना करे। जीवात्मा के लिये उसकी उपासना के अतिरिक्त और कोई उपाय नही।

जब तक मनुष्य से स्वार्थ का परित्याग न हो जाय उसकी मुक्ति नही हो सकती। एक परिवार वा देश क्यो बिगड जाता है। इसलिए कि उसमे स्वार्थ की मात्रा बढ जाती है। जितनी खुदगरजी की मात्रा किसी में बढ जायगी उतनी जल्दी ही वह नष्ट होजायगा। स्वार्थ का त्याग ही मनुष्य के सुधार का सच्चा उपाय है।

मैं एक बार छपरा गया तो देखा कि एक मन्दिर का पुजारी बडे प्रेम से हवन कर रहा है। मैने उस से पूछा 'महाराज यह क्या ? मूर्ति पूजा और हवन'। उसने बतलाया कि हवन से प्रेम मुझे स्वामी दयानन्द की कृपा से हुआ है। मन्दिर की पूजा तो पेट के कारण है, मेरा सच्चा विश्वास इस पर नहीं है। जब स्वामी दयानन्द शास्त्रार्थ करने जाते थे तो मै उनकी पुस्तके उठा कर लेजाता था। इस पुजारी ने मुझे स्वामी जी के जीवन की एक घटना इस प्रकार सुनाई —

"छपरा के पास एक छोटी सी रियासत । वहा के रईस ने अपने पण्डितो से कहा वे स्वामी दयानन्द से शास्त्रार्थ करें। १६ पण्डित मिलकर शास्त्रार्थ के लिये उद्यत हुये। रईस ने सोलह चौकियाँ एक ओर बिछादी और उनके सम्मुख दूसरी ओर एक चौकी बिछादी। जब वे १६ पण्डित आकर चौकियों पर बैठ गये तो रईस महाशय ने अपना सेवक स्वामी जी की ओर भेजा ६ फुट ४ इच का जवान जिस समय कमरे के अन्दर प्रविष्ट हुआ तो पण्डित लोग भौचक्के रह गये साहस न पडा कि स्वामी जी से बात कर सकें। पण्डितो को

कुछ तो कहना ही था। रईस महाशय की ओर मुह करके बोले 'आपने हमारे लिये लकड़ी की चौकियाँ मगाई हैं और स्वामी जी के लिये श्वेत पत्थर की। आपने हमारा अपमान किया है हम शास्त्रार्थ नही करते। जब उठ कर चलने लगे तो स्वामी जी ने कहा मैं भी सगमरमर की चौकी को छोड़ता हूँ। आओ शास्त्रार्थ भूमि पर बैठ कर करें। यह था स्वार्थ त्याग।"

परन्तु यहाँ दशा क्या है ? इतने आर्य पुरुष बैठे हैं। सन्ध्या उपासना यह तो करते होगे परन्तु प्रेमसे स्वार्थरहित होकर नहीं। कुर्सीपर बैठे है तो करली हाथ मुह धोया है या नहीं इसकी कुछ परवाह नहीं। सन्ध्या भी करेगे तो स्वार्थ के साथ जिससे ५-७ मिनट की हानि न हो वैसे गप्पें हाँकनेमें चाहे सारा दिन व्यतीत होजाय।

एक पुरुष चारपाई पर माला फेर रहा था। एक मनुष्य उसकी छत पर चढ कर नाचने लगा। उसने पुकारा ऊपर कौन है ? उत्तर मिला कि ऊट नाच रहा है। वह चकित होगया। पूछा चार मँजिल ऊपर ऊँट कैसे चढ़ सकता है। ऊपर वाले ने उत्तर दिया जैसे चारपाई पर चढ़ कर ईश्वर की उपासना हो सकती है। उपनिषदो मे एक कथा आई है। एक बार इन्द्रियो का परस्पर विवाद हो पड़ा और प्रत्येक इन्द्रिय अपने को बड़ी समझने लगी। सब बारी २ शरीर मे से निकल गई परन्तु शरीर जीवित रहा परन्तु जब प्राण निकले तो शरीर मर गया क्योकि प्राणो मे स्वार्थ नही। जो कुछ लेते हैं इन्द्रियो को बाट देते हैं अपने पास कुछ नहीं रखते। जो लोग प्राणो के समान स्वार्थ का त्याग करके ससार में रहेगे उन्हीं व्यक्तियो और जातियो का कल्याण होगा। ससार मे ऐसे भी लोग हैं जो अपना स्वार्थ पूरा करके भी काम बिगाड़ देते हैं ऐसे मनुष्य बहुत अधोगति को प्राप्त होवे हैं। स्वार्थ के साथ विरोध लगा हुआ होता है।

विरोध के रहते हुये विवेक और सुधार कैसे रह सकते हैं। ससार मे पिता, पुत्र, माता-पिता और भाई बहिन का अति निकट सम्बन्ध है परन्तु अवस्था यह यह है कि न भाई भाई के कहने मे है, न पुत्र पिता की आज्ञा मे है फिर उन्नति हो तो कैसे हो ? पश्चिम वालों का सिद्धान्त है कि निर्बल ससार मे नही रह सकते यह सिद्धान्त पशुओ और जानवरो की अवस्था मे ठीक है परन्तु मनुष्यो की अवस्था में ठीक नही है। यदि मनुष्यो की अवस्था में भी यही सिद्धान्त काम करे तो फिर मनुष्यो और पशुओ में क्या भेद रह गया। न्याय यह चाहता है कि बलवान निर्बलो की रक्षा करे।

बड़ी हुई शक्तियाँ केवल स्वार्थ वश होकर गिरती हैं। अभिमान गिरावट की पहली सीढ़ी है। जातियों के इतिहास को पढ़ें किस प्रकार उन्होंने स्वार्थ रहित होकर भावी सन्तानों के लिए मैदान साफ किया। अपने इतिहास में रामचन्द्र जी का समय देखें। कैकेई ने स्वार्थ वश होकर रामचन्द्रजी को सिंहासन से वञ्चित किया परन्तु भरत ने इतना स्वार्थ त्याग किया कि आज जगत् में उनका नाम अमर है। इधर तो भरत का यह त्याग उधर दुर्योधन का वह स्वार्थ जिस ने देश को इस अधोगति तक पहुँचाया।

अमेरिका इत्यादि देशों के गीत गाने से भारत नहीं उठ सकता। यहाँ तो रोटी की चिन्ता है। हमें उनके ५७ मंजिल के मकानों से क्या लाभ? यहा के एक वर्ष के दान को रोक लो यहा भी ६० मंजिल के मकान बन सकते है। यदि किसी रोगी की दशा बिगड़नी हो तो बार २ उसके सामने स्वादिष्ट पदार्थों की बातें करो। भारत चाहे निकम्मा हो गया परन्तु अब भी जैसी पैदावार और जैसा अन्न इस देश का है ऐसा अन्य किसी देश का नहीं है। स्वय भूखा रहकर संसार को तृप्त करना भारत का ही काम है। इसलिये जहां स्वयं स्वार्थ का त्याग करो, आने वाली सन्तान को भी यही पाठ पढ़ाओ।

स्वार्थ त्याग के चार अर्थ हैं (१) आत्मा (२) धर्म्म (३) जिन बातों से आत्मा परमात्मा को प्राप्त हो (४) जिन बातों से निर्भयता प्राप्त हो। स्वार्थ त्याग करने वालों में यह चार गुण आ जाते हैं।

एक मूर्ख मिट्टी के ढेलों से पक्षियों को उड़ा रहा था। खेत मे से उसे पत्थर के चमकदार टुकड़े मिले। वह उन्ही से पक्षियों को उड़ाने लगा।

केवल एक पत्थर हाथ में रह गया। वह उसे घर ले आया। रास्ते में जौहरी ने उसे देख लिया। उसने कहा कि इसका मोल ले लो। पूछा क्या दोगे जौहरी ने ५ हजार रुपये बतलाया। मूर्ख ने कहा मैं ले तो यही लूगा परन्तु यह बताओ इसका वास्तविक मूल्य क्या है? उसने कहा पाँच लाख में भी यह सौदा सस्ता है। उस समय मूर्ख की आँखे खुल गईं वह हाथ मल मल कर पछताने लगा और कहने लगा कि मैंने अज्ञान वश इस प्रकार के सैकड़ों पत्थर फेंक दिये।

यही दशा इस समय हम लोगों की हो रही है। हमारे मस्तिष्कों पर आवरण आया हुआ है। पुण्य कर्मों से यह मनुष्य जन्म मिला है। हम उस मूर्ख की नाईं उसे व्यर्थ फेंक रहे है। समय आयगा जब आँखें खुलेंगी परन्तु उस समय कुछ न बन पड़ेगा क्योंकि यह अल्पायु समाप्त हो चुकी होगी।

इसलिये उचित है स्वार्थ का त्याग करके मनुष्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य को पूरा करें। आपका जन्म सुधरेगा और आने वाली सन्तान आपका यश गान करेगी।

शरीर की अवस्थाएं

[ले०—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज]

सत्यार्थ प्रकाश में युवावस्था के चार भेद लिखे हैं। वृद्धि, यौवन, पूर्णता, किंचित्परिहाणि। यह व्यवस्था सुश्रुत के आधार पर है। सुश्रुत में निम्न पाठ है 'वयस्तु त्रिविध बाल्य, मध्य, वृद्धमिति, तत्र ऊनषोडश वर्ष बाल। तेपि त्रिविधा क्षीरपक्षीरान्नादा अन्नादा इति। तेपि संवत्सरपरा क्षीरपा द्विसंवत्सरा परा क्षीरान्नादा, परतो अन्नादा इति। षोडशसप्ततयोरंतरे मध्यमवया, तस्य विकल्पो वृद्धि यौवनं सपूर्णता, हानिरिति। तत्र आविंशते वृद्धि, आत्रिंशतो यौवनम्, आचत्वारिंशत् सर्वधात्विन्द्रय बल वीर्य सम्पूर्णता, अत ऊर्ध्वमीषत् परिहाणि, यावत्सप्ततिरिति, सप्ततेरुर्ध्वं क्षीयमाणधात्विन्द्रिय बलवीर्योत्साह महन्यहनि बलि पलित खालित्य जुष्ट कास, श्वासप्रभृतिभिरभिभूयमान सर्व क्रिया स्वसमर्थ जीर्णागामिव अभिवृष्टमवसीदन्तंवृद्धमाचक्षते"। सुश्रुत सूत्रस्थान अध्याय ३५, २५

भावार्थ—वय तीन प्रकार की है, बाल्य, युवा, वृद्ध। १६ वर्ष तक बाल्यावस्था है इसके भी तीन भेद हैं क्षीरप, क्षीरान्नाद, अन्नाद। एक वर्ष की आयु तक क्षीरप अर्थात् बालक दूध ही पीता है। २ वर्ष की आयु तक क्षीरान्नाद, अर्थात् दुग्ध और अन्न खाता है। २ वर्ष के पश्चात् १६ वर्ष पर्यन्त अन्नाद है। अर्थात् अन्न खाता है। आगे युवावस्था के चार भेद हैं वृद्धि यौवन, पूर्णता, किंचित्हानि है, २० वर्ष की आयु तक वृद्धि फिर यौवन है और ४० वर्ष की आयु मे पूर्णता होकर आगे ७० वर्ष की आयु तक किंचित्हानि होती जाती है। ७० वर्ष के पश्चात् वृद्धावस्था है।

हारीत संहिता में यह भाव इस प्रकार प्रगट किया गया है—

आषोडशाद्भवेद्बाल' पंचविंशां युवा नर ।
मध्यमा सप्तति यावत् परतो वृद्ध उच्यते ॥ (हारीत संहिता अध्याय ५)

भावार्थ—१६ वर्ष की आयु तक बाल्यावस्था होती है २५ वर्ष की आयु में युवा होता है और ७० वर्ष तक मध्यम वय है। इसके आगे वृद्धावस्था होती है।

सुश्रुत मे विस्तार से लिखा था इसमे संक्षेप से ही लिखा गया है। वैद्यक के यह प्रमाण पर्याप्त हैं तिब्ब मे इस विषय को इस प्रकार प्रतिपादन किया है। कुल्यात नफीसी म इस भाव का उल्लेख किया गया है मै यहाँ उसका भाव लिखता हू।

उत्पत्ति के समय स अन्त आयु तक इन्सानी जीवन के चार भाग हैं जिन का असनाने अर्बा कहत है अर्थात् चार उमर है।

(१) यदि प्राकृतिक उष्णता (हरारत गरीजी) की रक्षा के लिये तरी (रतूबत) मत हो अर्थात् जितनी उष्णता से व्यय होती है उतनी ही उत्पन्न हो तो उस युवावस्था (सिन शबाब, सिने वकूफ) कहते है यह लगभग ३० या ३५ वर्ष की आयु तक होती है।

(२) यदि शरीर की तरी वास्तविक उष्णता से अधिक हो तो उसको बाल्यवस्था या बढने की अवस्था (सिने हदासत वा सिने नुमू) कहते है। पुन इसके पाच भाग है।

(क) बाल्यावस्था (सिने तफूलत) जब बालक गोद मे होता है।

(ख) बाल्यावस्था (सिने सबा) जब बालक खडा होने लगता है। परन्तु अभी अगा मे कठोरता नहा आई।

(ग) बाल्यावस्था (सिने तजाजु) जब बालक के दूध के दात गिरकर नए दात निकल आत है।

(घ) वृद्धि (सिने रिहाक) जब गोदान सस्कार का समय होता है जब दाढी मोछ निकलन लगते हैं।

(ङ) पूर्णता (सिने फित्ता) जिसमे शरीर पूर्ण हो जाता है उसके पश्चात् उसमे वृद्धि नही होती है।

(३) जिस समय शरीर की तरी उष्णता के लिये पर्याप्त न हो तो उस समय वृद्धावस्था होती है जिस (सिन शेखूखत कहते हैं यह ६० वर्ष की आयु से ऊपर की आयु होती है।

(४) किंचिन्हानि (सिन कहूलत) कहत है यह ३५ वर्ष से ६० वर्ष की आयु तक की आयु है।

इस प्रकार यह चार प्रकार क भद असनाने अरबा के नाम से कहे जाते हैं।

सुश्रुत, हारीत, कुल्यात नफीसी का मत लिखकर अब सत्यार्थ प्रकाश का पाठ लिखते हैं।

एक (वृद्धि) जो १६ वे वर्ष से लेकर २५ वे वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की बढ़ती होती है। दूसरी (यौवन) जो २५ वर्ष के अन्त और २६ वे वर्ष के आदि में युवावस्था का आरम्भ होता है। तीसरी (सम्पूर्णता) जो पच्चीसवें वर्ष से लेकर चालीसवें वर्ष पर्यन्त सब धातुओं की पुष्टि होती है। चौथी (किंचित्परिहाणि) तब सब सांगोपांग शरीरस्थ सकल धातु पुष्ट हो के पूर्णता को प्राप्त होते हैं। सत्यार्थ समुल्लास ३।

इसमें वृद्धि यौवन, पूर्णता, किंचित्परिहाणि, मध्य (युवावस्था) के चार भेद हैं बाल्यावस्था का उसमे उल्लेख नही है, इसी प्रकार न वृद्धावस्थाका वर्णन है। उपरिलिखित प्रमाणो मे उनका भी वर्णन है।

वृहत्तर जगत् का निर्माण

[लेखक—श्री० शिवरामजी एम. ए. एल टी.]

वृहत्तर जगत् के भवन निर्माण की आधार शिला बच्चे की शिक्षा होती है। विकृत शिक्षा प्रणाली पर निर्मित भवन समुद्र की रेतो में बने हुये भवन के सदृश होता है। बच्चे की समस्या जब तक हल नही होती तब तक वयस्क की समस्या बनी ही रहती है।

शिक्षा किसे कहते हैं? पूर्ण जीवन की तैयारी शिक्षा की सर्वोत्तम परिभाषा हो सकती है। यद्यपि यह परिभाषा बहुत छोटी है तथापि इस पर जितना ही अधिक गम्भीर विचार किया जाय उतना ही गहरा इसका अभिप्राय है।

पूर्ण जीवन से क्या अभिप्राय है? मनुष्य की छिपी हुई शक्तियो के विकसित करने उनसे सुख लाभ करने तथा ईश्वर प्रदत्त प्रतिभा के बढ़ाने को पूर्ण जीवन कह सकते हैं।

पूर्ण जीवन व्यतीत करने के लिये वे कौन से विविध पहलू हैं जिनमे मनुष्य को अपना विकास करना और उनका ससार को परिचय देना होता है? वे शारीरिक, मानसिक, भाविक और अध्यात्मिक पहलू हैं। यदि अन्यो की अवहेलना करके इनमें से किसी एक का विकास किया जाय तो मनुष्य राक्षस बन जाता है। पश्चिम ने शारीरिक और मानसिक पहलुओ का सीमातीत रूप में विकास किया है और भावनाओ तथा अध्यात्मिक पहलुओ को ठीक २ रीति से विकसित नहीं किया है। इसका फल यह है कि उनके सामाजिक जोवन मे पतनकारी विप्लव मचा हुआ है, आर्थिक जीवन मे भयकर प्रतियोगिता व्याप्त है तथा राजनैतिक जीवन में सकुचित अहम्मन्यता छाई हुई है। इसके विपरीति पूर्व ने अन्य पहलुओ को अवहेलना पूर्वक आध्यात्मिकता का बहुत विकास किया है। इसका फल यह हुआ कि उसका भौतिक, मानसिक और नैतिक जीवन महान् दुखी है। पूर्व और पश्चिम में कोई समता नहीं है। क्योंकि प्रत्येक पूर्ण जीवन की तैयारी न करने के पाप का अपराधी है। जिस दिन शारीरिक और मानसिक शक्तियो के साथ २ भावनाओं और आध्यात्मिकता का नियन्त्रण हो जायगा उस दिन यह जगत् सुखधाम बन जायगा।

बच्चे के शारीरिक और मानसिक शिक्षण पर हमें पर्याप्त साहित्य उपलब्ध होता है। शारीरिक पहलू का विकास इस प्रकार किया जाना चाहिये जिससे बच्चा सुंदर और बलवान बने। शरीर के बलवान हुये बिना अन्य तीनों विकास कुंठित हो जाते हैं।

आज कल अशुद्ध रीति से मस्तिष्क के विकास का यत्न किया जाता है। यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि केवल घटनाओं का ज्ञान हो जाना ही बच्चों के लिये आवश्यक नहीं है वरन सब अवसरो पर अपने आप सोचने की प्रवृत्ति एव मौलिकता को प्रोत्साहित करके उसकी बौद्धिक शक्तियों का विकास कराना भी परमावश्यक है। मानसिक शिक्षण की परीक्षा इस बात से की जाती है कि वह बच्चे की शक्तियों का पूर्ण विकास करने के योग्य है या नहीं।

इसके पश्चात् भावनाओं का शिक्षण आता है। यह अग शिक्षा का सर्वोत्तम अंग है इस बात को बहुत कम अनुभव किया जाता है। मनुष्य के भाव और भावनायें इस बात के निर्णायक होते हैं कि वह उन्हें किस प्रकार क्रिया में परिणत करेगा और वह किस प्रकार अपनी शारीरिक और बौद्धिक शक्तियों को प्रयुक्त करेगा।—मनुष्य की भावनायें यह निर्णय करती हैं कि वह अपने तथा दूसरों के लिये सुख का जीवन व्यतीत करेगा वा दुख का।

तब शिक्षा का मूल मत्र भावनाओं का शुद्ध शिक्षण होना चाहिये। शुद्ध भावनायें किसे कहते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में सब विद्वान एक मत हैं। शुद्ध भावनायें वे होती हैं जो आत्मिक सुख देने वाली होती हैं और यह सुख स्थायी होता है। वह सुख शरीर के सुख से नितान्त भिन्न होता है जो अस्थायी होता है। शुद्ध भावनाये वे होती हैं जो मनुष्य को, अपने पडोसियों, अपनी जाति और समस्त प्राणीमात्र के साथ प्रेम पूर्वक रहना सिखाती हैं और जो न केवल मनुष्य के अपने सुख को वरन् दूसरो के सुख को बढ़ाने वाली होती हैं।

शुद्ध भावनाओं की कुंजी सुन्दरता और अच्छाई से प्रेम करना होता है। केवल आँख और कान को प्रसन्न करने वाली वस्तुयें सुन्दर नहीं होती हैं वरन् जो वस्तुयें इन्द्रियों के प्रसन्न करने से कहीं दूर आदर्श के द्वारा मस्तिष्क को प्रसन्न करती हैं वे ही वास्तव में सुन्दर होती हैं। शरीर को तपस्या में लगाकर एकान्त में बैठ जाना और रुढ़ियो का दास बन जाना अच्छाई से प्रेम करना नहीं समझा जाता। वरन् अपनी शक्तियों को दूसरों के हित में लगाते हुये स्वय सुखी रहना

और अपने साथ संसार को सुखी बनाना अच्छाई से प्रेम करना समझा जाता है।

भावनाओं का शिक्षण जो आदर्श के द्वारा मस्तिष्क को प्रसन्न करे अन्त में आध्यात्मिक शिक्षण में परिणत हो जाता है। आध्यात्मिक जीवन तो उसी सुख को कहते हैं जो क्षणिक नहीं होता है और जिसका सम्बन्ध मनुष्य के शरीर के साथ नहीं वरन् आत्मा के साथ होता है और जो बाहरी जगत् में सुख का प्रकाश करने के लिये आत्मा को प्रेरणा करता रहता है।

इस प्रकार बृहत्तर जगत् के निर्माण के लिये शरीर का पूरा २ विकास होना चाहिये, मस्तिष्क का ऐसा शिक्षण होना चाहिये कि वह मौलिक और स्पष्ट रूप में सोच सके, भावनायें उस सौन्दर्य की ओर प्रेरित होनी चाहिये जो किसी आदर्श के द्वारा मन को प्रसन्न करें। वे उस अच्छाई की ओर भी प्रेरित होनी चाहिए जो स्व और पर के बीच में एकता को मूल्यवान बनायें और आत्मा, विचार, शब्द और कार्य के सामंजस्य पूर्वक ससार में चमके। तब यह जगत् सुखधाम बन जायगा जहा स्त्री और पुरुष इच्छाओ की सकुचित सतुष्टि के लिये सघर्ष नही करेंगे जिसका लक्ष्य बाह्य सवर्धन होता है। तब मनुष्य कलहो और उत्पातो से व्याकुल न होगे और स्पष्ट विचार, आदर्श कला और शुभ सकल्पो के द्वारा मनुष्य निरन्तर सुख और शान्ति का उपभोग करेंगे।

सुमन संचय

[१]

कर्त्तव्य पालन का विशिष्ट उदाहरण

महाराज शिवाजी के पिता साहा जी ने दादा कोडदेव नामक एक सज्जन को शिवाजी के बाल्यकाल में उनका सरक्षक नियत किया था। वे बहुदर्शी विचक्षण सयमी, न्याय परायण और राजनीति विशारद थे। उनका ग्राम पहले उन्ही की जमीदारी मे था परन्तु काल चक्र से साहाजी के अधिकार मे आ गया था। उनके कार्य से सन्तुष्ट होकर साहाजी ने उस ग्राम का प्रबन्ध भार दादा जी को सौप दिया था। दादा कोडदेव ने बहुत पहिले उस ग्राम मे एक बाग लगाया था। यथा समय जब उस बाग के आम्र वृक्षो से फल उतरने लगे तो उन्होने एक फल खा लिया। परन्तु तुरन्त ही उन्हें आत्म ग्लानि हुई। दादा जी बहुत दुखी हुए। प्रायश्चित स्वरूप उन्होने अपना दाहिना हाथ काट देना चाहा जिससे वह फल तोड़ा था। लोगों ने इसका कारण पूछा। दादा जी ने कहा "इन फलो पर स्वामी साहाजी का आधिपत्य है। मेरा कोई अधिकार नही है। मैंने बिना आज्ञा के फल तोड़ कर बड़ा अनर्थ किया है।" इस पर लोगो ने उन्हे बहुत समझा बुझा कर हाथ काटने से रोका। तब दादा जी ने हाथ तो नही काटा परन्तु उस से आजन्म कोई काम नही लिया।

[२]

अद्भुत परिवर्तन

वैशाली के कुछ भद्रवर्गीय कुमार एक वेश्या को साथ लेकर बन मे विहार के लिये गए। उन्हो ने कई दिन पर्य्यन्त विहार किया। एक दिन रात को अत्यधिक मद्य से उन्मत्त होकर पड रहे। किसी को अपने शरीर की सुध न रही। वेश्या अवसर पाकर उनके रत्न-भूषण और धन लेकर चली गई। प्रात काल होश आने पर उन्हे उस घटना का बोध हुआ और वे सब दुखी और क्लान्त होकर पागलो की नाई उस वेश्या को इधर उधर ढूढने लग गए। ढूढते २ मार्ग मे उनकी महात्मा बुद्ध से भेट हुई। वे महात्मा बुद्ध को जानते न थे। उन्होने सब

घटना का वृतान्त बतला कर उनसे पूछा कि उन्होंने उस स्त्री को जाते हुए देखा है या नहीं। महात्मा बुद्ध उनकी मूर्खता पर हँसे और कहा 'कुमारों! तुम उस स्त्री के लिए व्यर्थ प्रयास करते हुये क्यों फिरते हो"। इस पर कुमारों को बड़ा रोष आया और वे बोले 'बाबा! तुम भी बड़े विचित्र जान पड़ते हो। हमारे घर में आग लगी है आपको उस पर आनन्द आता है। हमारा माल चोरी गया और उलटा चोर के तलाश करने को व्यर्थ का प्रयास बतलाते हो।' महात्मा ने गम्भीर होकर कहा 'कुमारो! मैं ठीक कहता हूँ। तुम लोगों को उस वेश्या को ढूढने के स्थान में अपनी आत्मा को ढूंढना चाहिए जो तुम खो चुके हो'। इस उत्तर को सुन कर वे लोग बड़े आश्चर्य चकित हुए और चुपके से वहां से चले गए। मार्ग में कोई किसी से न बोला। महात्मा के शब्द उनके हृदयों में उद्वेलित होने लगे। और वे सब एक एक करके महात्मा के पास लौट आये। सब ने मिल कर पूछा 'महात्मन् आप कौन हैं? आपकी मधुर भर्त्सना ने हमारे ज्ञान-नेत्र खोल दिए हैं'। इसी बीच में महात्मा का एक शिष्य उनके निकट आगया था। वह इस व्यापार को देखकर मन्त्रमुग्ध उनके निकट खड़ा था। उसने कहा 'कुमारो तुम जानते नहीं हो ये महात्मा बुद्ध हैं'। महात्मा बुद्ध का नाम सुनते ही वे सब उनके चरणों में गिर गए और आत्मग्लानि से भरे हुए स्वर में उन्होंने कहा 'महाराज! आप हमें अपनी शरण में लेने की दया कीजिये। सचमुच हम लोग अपनी आत्मा को खो चुके थे। आप के उपदेश ने हमें इस बात का बोध करा दिया है'। उसी क्षण दैवयोग से वह वेश्या भी उधर आ निकली। वह वृक्षों की ओट मे से यह सब घटना देख रही थी। उसने महात्मा बुद्ध के चरणों में वह सब सामान रखकर प्रार्थना की 'महाराज! इस पतिता का भी उद्धार करें। महात्मा ने मुस्करा कर कहा 'कुमारो! अपना समान ले लो। तुम्हारा चोर स्वय उपस्थित हो गया है'। कुमार कुछ न बोले। भावावेश से उनके हृदय आर्द्र होगए। उन्होंने हाथ जोड़ कर कहा 'महाराज! हमें अधिक लज्जित न करें। यही आपसे प्रार्थना है'। महात्मा बुद्ध ने वेश्या को सम्बोधन करके कहा 'तुम यह माल लेजा सकती हो'। वेश्या ने हाथ जोड़ कर कहा 'महाराज! मैं अपने को आपकी शरण में अर्पण कर चुकी हूँ। आपकी दिव्य ज्योति ने मेरे भी ज्ञान चक्षु खोल दिए हैं। आप मुझ पर दया का हाथ रखिये। मै भी अपनी आत्मा को जान गई हूँ।' उनकी प्रार्थना पर महात्मा ने उन कुमारों तथा वेश्या को संघ में सम्मिलित कर लिया और उन सब ने अपना शेष जीवन बौद्ध धर्म के प्रचार में व्यतीत किया।

[३]

अनुपम त्याग

अंग्रेजी इतिहास में क्रामवेल का नाम बड़ा प्रसिद्ध है। यह वह समय था जब क्रामवेल विद्रोहियों का बड़ी दृढ़ता से विध्वन्स कर रहे थे। एक दिन में हजारों व्यक्ति मृत्यु के घाट उतार दिये जाते थे। लोगों में त्रास छाया हुआ था। इङ्गलैण्ड का आकाश लोगों के चीत्कारों से गुञ्जायमान था। पृथ्वी नर-रक्त से लाल हो रही थी लोगों के बध की सूचना एक घण्टा बजा कर दी जाया करती थी। एक दिन एक नव युवक का वध किया जाने वाला था। एक कुमारी से उसका प्रणय-सम्बन्ध हो गया था और कुछ सप्ताहों के पश्चात् दोनों विवाह-सूत्र में आबद्ध होने वाले थे। उस कुमारी ने अपने भावी पतिदेव की मुक्ति के लिए बहुतेरा यत्न किया पर वह सफल न हुई। अन्त में उसके बध का दिन उपस्थित हुआ। वह पागल होकर अधिकारियो के पास गई। उन से बहुत अनुनय विनय की, परन्तु उसकी अनुनय विनय पर किसी ने ध्यान न दिया। युवक वध-स्थल पर ले जाया गया। घण्टा बजाने की आज्ञा हुई। घण्टा बजाने के लिए रस्सी खींची जाने लगी परन्तु घण्टे में से आवाज न हुई। २-३ व्यक्ति बल लगा कर रस्सी खीचने लग गए। रस्सा खिंचता था परन्तु बीच में कोई चीज आकर अटक जाती थी और घटा बजता न था। उच्चाधिकारी वहां आकर जमा होने लगे। लोगों की अपार भीड़ लग गई। कोई कहता था उस कुमारी के प्रताप से घटा कुंठित हो गया है। कोई कहता था जिसकी ईश्वर रक्षा करते हैं उसे कोई नहीं मार सकता। उस समय 'जितने मुह उतनी बात' वाली बात चरितार्थ हो रही थी। एक उच्च अधिकारी ने आज्ञा दी कि ऊपर जाकर देखो। घटे मे क्या गड़ बड़ है। दो छोटे अधिकारी ऊपर चढ़े। वहां जाकर क्या देखते हैं कि वह कुमारी घंटे की चर्खी से चिपटी हुई अचेत पड़ी है। शरीर लोहू लुहान हो रहा है। इस दृश्य को देख कर वे अवाक् रह गये उन्होने तत्काल रस्सा न खीचने की आज्ञा दी और उस कुमारी को चर्खी पर से उठाकर नीचे लाये। उसकी दशा को देख कर सब लोगों की आंखों में आंसू आ गए। क्रामवेल को तत्काल इस घटना की सूचना दी गई। वे स्वय वहां पहुँचे। इस बीच में कुमारी सचेत हो गयी थी उसकी दशा को देख कर वे भी अपने को वश में न रख सके। उन्होने चुप चाप क़लम लेकर उसके भावी पति का मुक्ति पत्र

लिख दिया। जिस समय वह पत्र कुमारी को देने लगे उनकी आंखो से दो बड़े-बड़े आंसू उस पत्र पर गिर गये।

[४]

ब्रह्मचारी की विजय

शास्त्रार्थ का साहस न पाकर मथुरा के पडो ने विचार किया कि कोई ऐसी युक्ति करें कि स्वामी दयानन्द सर्वसाधारण की दृष्टि से गिर जायें। विचार के पश्चात् एक स्त्री को इसका साधन बनाया गया जो भ्रष्टाचार के लिये प्रसिद्ध थी। उसको कहा गया कि 'यदि तू किसी रीति से दयानन्द को कलंकित कर सके तो जो तू मांगेगी देंगे।' उसने ५००) मांगा जो स्वीकृत हुआ। परन्तु उसने कहा कि भूषणो के रूप में पेशगी लूगी ऐसा ही किया गया।

वह बनाव शृंगार और उन भूषणो को धारण करके प्रात काल ही स्वामी दयानन्द के डेरे पर आई। पंडे लोग बाहर ठहरे कि अभी कोलाहल करने का अवसर मिलेगा परन्तु स्वामी जी समाधि मे थे। उस स्त्री ने उनके ब्रह्मचर्य की चर्चा सुनी हुई थी। उसका चिंतन करके वापिस आई और कहने लगी 'मै कुछ नही कर सकती मुझे तो भय लगता है।' उन्होने उपहास की बाते करके पुन साहस दिया तब वह भीतर गई। परन्तु समाधि न खुली थी। उसके मन मे न जाने क्या सकल्प विकल्प उत्पन्न हो रहे थे। कुछ देर के पश्चात् वह भूषण उतारने लगी। स्वामी जी ने आखें खोली तो स्त्री को देख कर अचम्भित हो बोले 'तू यहा कैसे आ गई।' वह हाथ जोड़ भूमि पर सिर नवा रो कर कहने लगी 'महाराज क्षमा करो! मै पापिन धनादि के लिये अपना धर्म गॅवाती रही। अब भी भूषणो के बदले मे हत्यारी स्वार्थियो के बहकाये म आ गई। परन्तु यहा मेरी मति बदल गई है। ये सब भूषण आपके अर्पण हैं। मेरे पाप को क्षमा करे।' स्वामी जी न कहा 'हमे इन भूषणो की इच्छा नही है तू इन्हे लेजा और अपने काम मे लगा। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि इस समय तुझे जो सुमति आई है वही तेरी आयु पर्यन्त स्थिर रहे।''

[५]

चौधरी मुगला

जिला करनाल में सीक नामक ग्राम मे चौधरी मुगला निवास करते थे। यह चोरी करनेमें सिद्ध हस्त थे। उस समय के चोरो मे चौधरी जी लब्धख्याति थे। जिस

दिन यह करनाल, पानीपत सोनीपत आदि स्थानों के बाजारों से गुजरते थे तो लोग सचेत हो जाते थे और समझते थे आज चोरी अवश्य होगी। इनकी चोरी की कथायें यत्र तत्र प्रसिद्ध थीं और जनता पर इनका आतंक था। एक समय पं० गणपति शर्मा जी पानीपत के बाजार में उपदेश कर रहे थे। पंडित जी कर्म पर भाषण दे रहे थे और कह रहे थे कि जो कर्म किया जाता है वह आत्मा में धर्माधर्म उत्पन्न करता है और जब तक उस कर्म का फल सुख वा दु.ख न मिले उस समय तक धर्माधर्म का आत्मा से निकास नहीं होता। जो व्यक्ति यह समझता है कि किया कर्म फल नहीं देता अथवा फल दिये बिना नाश हो जाता है वह भ्रम में है। हम जो कुछ बुरा भला करते हैं उसका फल अवश्य भोगना होता है। हमें ऐसा समझ कर ही कर्म करना चाहिये। परमेश्वर न्यायकारी है अत कर्मानुसार ही सुख व दुख देता है।

चौधरी मुगलाने यह भाषण सुना। उसे अपनी अवस्था पर विचार करने की रुचि हुई और रात को चौधरी जी ने पंडित गणपति की सेवा में उपस्थित होकर अपना सशय निवृत्त करने के लिये प्रश्न किया। पंडित जी ने उसको ठीक-ठीक समझा दिया। अंत में चौधरी जी ने कहा कि क्या पंडित जी आपका विश्वास भी ऐसा ही है तब पंडित जी ने उत्तर हां में दिया।

चौधरी जी ने कहा पंडित जी आज तक साधु ब्राह्मण यही कहते रहे हैं, गगा यमुना स्नान, गोदान से सब पाप धुल जाते हैं मैं तो इसी विश्वास पर चोरी आदि करता था, परन्तु आप कहते है फल अवश्य मिलेगा इससे तो मेरा सारा खेल बिगड़ता है। अत यदि मैं आर्य हो जाऊ तो क्या होगी, पंडित जी ने कहा आगे को भला होने से पुण्य होगा और पिछला फल लेना होगा। उसने कहा अच्छा मैं ग्राम को जाता हूँ यदि मैं सवारी भेजूँ तो क्या आप मेरे ग्राममें आकर यज्ञोपवीत दे देंगे, पंडित जी ने कहा अच्छा।

तीसरे दिन रथ आगया। पंडित गणपति जी, पंडित बालमुकन्द जी के साथ सीक को चले। मार्ग मे लोगों ने पूछा कहा जारहे हैं। जब चौधरी मुगला और सीक का नाम लिया तो लोग कहते थे पंडित जी उसे जनेऊ मत दो वह तो चोर है। सब को यही उत्तर दिया जब वह जनेऊ मांगता है तो अवश्य दिया जायगा।

चौधरी जी ने अपने साथियों सहित उपवीत पहना। उसके पश्चात् आर्य समाज के प्रचार में सहायता करने लगा और उपवीत पहनते ही उनका जीवन

बदल गया। उस प्रान्त के आर्य समाज के उपदेशको को साथ लेकर उसने अनेक गावों में प्रचार किया उसके कारण अनेकों के जीवन सुधर गये और वह आर्य समाज द्वारा पवित्र जीवन व्यतीत करने लगा।

[६]

सरदार सेवासिंह

एक आर्य समाजी सन्यासी एक ग्राममें ग्राम से बाहर ठहरे हुये थे। एक रात को सेवासिंह मद्य पोकर अपने साथियो के साथ उधर आ गया और आकर साधु से पूछा कि क्या कोई पात्र है। साधु ने पूछा कैसा पात्र ? उसने मद्य पीने के लिये बताया। साधु ने उसे कटोरा दे दिया। कुछ समय पीछे वह साधु के पास जाकर उसे भी मद्य पिलाने की प्रेरणा करने लगे। साधु ने निषेध किया तो वह बिगड़ गये और साधु को अपशब्द कहने लगे और धमकाने लगे परन्तु साधु अपने स्थान पर अटल रहा।

उसी दिन जब सेवासिह का नशा उतर गया तो उसे रात की बात स्मरण हो आई वह अपने साथियों को साथ लेकर नही वरन् अकेला ही साधु की शरणमें गया और कहा महाराज मुझको कोई प्रायश्चित बतलायें क्योकि मैंने आपको अपशब्द (गालिया) कहे थे साधु ने कहा यदि आप प्रायश्चित चाहते हैं तो आज से मद्य छोड़ दें। उसने कहा महाराज जी मैंने इससे पूर्व अनेक साधुओ को मद्य पिलाई है और गालिया भी दी है परन्तु जिस प्रकार आपने शाति से गालिया सुनी और अब धैर्य से उपदेश दे रहे है इससे मै आपके सामने केवल मद्य ही नही वरन् आज से चोरी, जुआ, व्यभिचार को भी छोडता हूँ। साधु ने उसे आशीर्वाद दिया।

उसके पश्चात सरदार सेवासिंह जी धर्मात्मा व्यक्ति हो गये और लोगों को आश्चर्य था। पुराने साथियो ने कई वार उसे व्यसनो मे लगाने की चेष्टा की परन्तु वह अपने प्रण पर अटल रहा।

महिला-जगत्

माता को पदवी प्राप्त करने वाली कन्याओं के जानने योग्य बातें।

पाठ ७

(लेखक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)

माता और बच्चों का स्वास्थ्य

जब से सुशीला और दमयन्ती ने यह सुना कि सरकारी हस्पताल में बच्चों की प्रदर्शिनी होगी और केशव भी उसमें जायगा तब से दोनों खुशी से फूली न समाती थीं। उनका तमाम दिन उसकी तय्यारियों में व्यतीत होता था। केशव जरा भी उदास अथवा अस्वस्थ हो जाता तो उनका मन मर जाता था। केशव के लिये उन्होंने स्वय बड़े चाव से एक निकर सिया था। इसमें उनका काफी समय और परिश्रम व्यय हुआ था। जब वे केशव को निकर पहनाने लगीं तो वह मचल गया। दोनों ने बड़े यत्न से उसे शान्त किया। शान्त हो जाने पर सुशीला ने उसके गाल पर हल्की चपत लगाते हुए कहा 'मुन्ना तुझे पता नहीं है, परसों तेरी परीक्षा होगी। देखना कहीं फ़ेल मत हो जाना नहीं तो जीजी घर से निकाल देंगी।" इतने में ही कमला वहा आ गई। उसने कहा "शील! परसों केशव की परीक्षा नहीं वरन् मेरी परीक्षा होगी। उस दिन स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट बच्चों को इनाम मिलेगा। यह देखा जायगा कि माताओं ने कैसे बच्चों को जन्म दिया और उनका कैसे पालन पोषण किया है।" सुशीला ने प्रसन्नता के भाव में कहा "तब तो जीजी!! केशव को इनाम अवश्य मिलेगा। क्या हमारे केशव से अधिक कोई बच्चा मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त हो सकता है?" दमयन्ती ने कहा "मुझे तो सदेह है कि कोई बच्चा इससे बाजी ले जायगा।" कमला ने कहा "तब केशव नहीं वरन् मैं परीक्षा में उत्तीर्ण समझी जाऊँगी।" यह सुनकर सुशीला और दमयन्ती के चेहरों पर एक पवित्र मुस्कराहट छा गई। कुछ क्षण मौन रहने के पश्चात् सुशीला ने पूछा 'जीजी!" क्या कोई ऐसी चीज है, जिसके खाने से केशव दुगुना मोटा हो जाय। कमला हँसी और बनावटी रोष

से पूछा—"क्यों री क्या मोटा होना स्वास्थ्य की निशानी होती है। तू मोटी है तो क्या स्वस्थ है ?"

इस पर सुशीला और दमयन्ती दोनों हंस पड़ीं।

सुशीला ने पूछा—'जीजी !! इस प्रकार की प्रदर्शिनी क्यों की जाती है।"

दमयन्ती ने कहा—"तुम्हारी समझ में अभी तक इसका मतलब नहीं आया ? जीजी !! बतला ही चुकी हैं कि इन प्रदर्शनियों से माताओं की परीक्षा होती है और तन्दुरुस्त बच्चों के पैदा करने का उत्साह मिलता है।"

कमला ने कहा—"दमयन्ती तुम इस प्रदर्शिनी का मतलब ठीक ठीक समझ गई हो। पहले हमारे देश में निर्बल सन्तान पैदा करना बड़ा अपराध समझा जाता था। माताएँ जब कसमें खाती थीं तो कहा करती थी कि जो पाप निर्बल सन्तान पैदा करने वाले को लगता है वही हमें लगे। इस प्रकार की कसमों से सन्तान के सम्बन्ध में समाज की भावना का अच्छी तरह पता लग जाता है।"

सुशीला ने आश्चर्य्य चकित होकर पूछा—

"जीजी !! क्या पहले इस प्रकार की कसमें खाया करते थे।"

कमला ने कहा—"हां। इस सम्बन्ध में हम फिर कभी चर्चा करेंगे।"

कमला ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा "तुम यूनान की स्पार्टा जाति के इतिहास को पढ़ो। भारतवर्ष के क्षत्रियों की वीर गाथाओं को पढ़ो। उस समय की माताएँ कमजोर बच्चों को माता बनने में बड़ी शर्म अनुभव करती थीं। स्पार्टा में बालकों की रक्षा के लिये बड़े उन्नत और कड़े नियम थे। वहां बालक के जन्म ग्रहण करते ही वह पचायत सभा में पहुचाया जाता था। यदि परीक्षा में वह रोगी, वा हीनांग मालूम होता तो पहाड़ पर रख दिया जाता था और वहीं वह मर जाता था। बच्चों की हिम्मत की परीक्षा के लिये उन्हें देवी की वेदी पर बिठाकर कोड़ों से खूब पीटा जाता था, यहां तक कि उनके शरीर से जगह जगह से खून बहने लगता था। उन्हें कई दिन तक भूखा प्यासा रहना भी सिखाया जाता था।"

सुशीला ने कहा—"जीजी !! यह तो बच्चों के साथ बड़ी निर्दयता की जाती थी ?"

कमला ने कहा—"यह निर्दयता नहीं समझी जाती थी। यह तो वहां का

राज नियम था। इसी सख्ती के कारण स्पार्टा जाति बड़ी वीर जाति बन गई थी। और उसकी वीरता आज इतिहास की अनूठी घटना बनी हुई है।"

दमयन्ती ने कहा—"जीजी ॥ वहा की माताएँ भी अवश्य बलवान होंगी, तभी तो उनकी सन्तान ऐसी वीर होती थी।"

कमला ने कहा—"यही बात थी। वहा की स्त्रिया भी बड़ी बलवती होती थीं। वे भी बल और साहस में पुरुषों के समान प्रसिद्ध थीं। स्पार्टा के शब्दकोष में 'कापुरुष की माता' से बढ़कर स्पार्टा की स्त्रियों के लिए दूसरी गाली न थी। एक बार स्पार्टा का एक पुरुष कायरों की भाति युद्ध-भूमि से भाग आया। इस अपराध पर उसकी माता ने उसे मार डाला और कहा 'स्पार्टा का जल गधों के पीने के लिए नहीं है।"

सुशीला ने बीच में बात काटकर कहा—"जीजी ॥ राजपूतों के इतिहास में भी ऐसी बहुत सी कहानिया हैं। सरदार यशवन्तसिंह को युद्ध से भाग आने पर उनकी स्त्री ने किले में घुसने नहीं दिया था।"

कमला ने कहा—"अब तुम मेरे कहने का मतलब ठीक-ठीक समझ गई मालूम होती हो। अब तुम मुझे यह बताओ कि बलवान बच्चे कैसे पैदा होते हैं ?"

दोनों बहनें कुछ न बोलीं और उन्होंने अपनी गर्दन नीची करलीं।

कमला ने कहा—"बलवान सन्तान उत्पन्न करने का मूलमन्त्र माता-पिताओं का बल वीर्य्य से पूर्ण होना ही है। छोटी उम्र के विवाहों से सन्तान दुर्बल होती है। स्पार्टा में रिवाज था कि २० वर्ष की उम्र में ३० वर्ष की आयु के पुरुष के साथ लड़की की शादी होती थी। इसका अभिप्राय साफ है। ब्रह्मचर्य व्रत के ठीक ठीक रीति से पालन करने से सन्तान हृष्ट-पुष्ट और बलवान होती है। परन्तु इसके लिए बच्चों के त्याग और सहिष्णुता का जीवन बनाने तथा उच्चकोटि का शिक्षण देने की भी आवश्यकता होती है। केवल शरीर के बलवान होने से काम नहीं चलता। आत्मा का बल और शिक्षण भी बहुत जरूरी होता है। भीम अर्जुन इत्यादि हमारे देश में अनेकों महावीर हुए हैं। हमारा देश सब देशों का शिक्षक रहा है यह तुम जानती ही हो। ये सब आदर्श यूनान इत्यादि देशों ने हमारे इस देश से ही ग्रहण किये हैं। महाभारत में आता है कि योगिराज श्रीकृष्ण ने तथा उनकी स्त्री ने १२ वर्ष पर्यन्त तैयारी के पश्चात् अपने पुत्र प्रद्युम्न को जन्म दिया था।"

दमयन्ती ने पूछा—"जीजी !! वह जमाना अब कहाँ ? क्या वह युग फिर कभी आयेगा ?"

कमला ने कहा—"वह युग आये वा न आये। यह हमारे वश की बात नहीं है फिर भी उन युगों की अच्छी बातों को अपने जीवनों में लाने का यत्न करना हमारा कर्त्तव्य है। परमात्मा की सृष्टि को अच्छे और बलवान सन्तानों से सजाना हम माताओं का ही काम है।"

यह चर्चा काफी लम्बी हो गई है। "शील ! तुम्हें कविता बनानी है, जाओ दोनों मिलकर कविता बनालो, फिर उसे देवी सुभाषिणी को दिखा लेंगे। उस अवसर पर सर्वोत्तम कविता बनाने वाले को भी इनाम मिलेगा।"

यह सुनकर दोनों बहनें कविता बनाने बैठ गईं और कमला केशव की खबर लेने चली गई।

आर्थिक समानता का मतलब

धनिकों के ट्रस्टीपन का स्पष्टीकरण

अहिंसा के द्वारा उसे क़ायम करने का प्रतिपादन

आर्थिक समानता क्या है और किस प्रकार प्राप्त करनी चाहिये ? इस बारे में, इस सप्ताह के 'हरिजन बन्धु' में महात्मा गाधी ने अपने विचार व्यक्त किये हैं, जो 'हरिजन-सेवक' के अनुसार निम्न प्रकार है—

पिछले हफ्ते रचनात्मक कार्य के लेख म बताई गई तरह चीजा मे मैंने आर्थिक समानता को भी गिना था। आज इस बारे मे यहाँ विचार करे।

आर्थिक समानता

आर्थिक समानता अर्थात् जगत के सब मनुष्यो के पास एक समान सम्पत्ति का होना, यानी सबके पास इतनी सम्पत्ति का होना कि जिससे वे अपनी कुदरती आवश्यकताएँ पूरी कर सके। कुदरत ने ही एक आदमी का हाज़मा अगर नाजुक बनाया हो, और वह केवल पाच ही तोला अन्न खा सके, और दूसरे को बीस तोला अन्न खाने की आवश्यकता हो, तो दोनो को अपनी अपनी पाचन शक्ति के अनुसार अन्न मिलना चाहिए। सारे समाज की रचना इस आदर्श के आधार पर होना चाहिये। अहिंसक समाज को दूसरा आदर्श नहीं रखना चाहिए। पूर्ण आदर्श तक हम कभी नहीं पहुँच सकते, मगर उसे नज़र मे रखकर हम विधान बनायें, और व्यवस्था करे। जिस हद तक हम इस आदर्श को पहुँच सकेंगे, उसी हद तक सुख और सन्तोष प्राप्त करेंगे और उसी हद तक सामाजिक अहिंसा सिद्ध हुई कही जा सकेगी।

अकेले भी सम्भव है

इस आर्थिक समानता के धर्म का पालन एक अकेला मनुष्य भी कर सकता है। दूसरो के साथ की उसे आवश्यकता नहीं रहती। अगर एक आदमी इस धर्म का पालन कर सकता है तो ज़ाहिर है कि एक मण्डल भी कर सकता है। यह कहने की जरूरत इसलियें है कि किसी भी धर्म के पालन मे जहाँ तक दूसरे उसके पालन करते जाये, वहाँ तक हमें रुके रहने की आवश्यकता नहीं। और फिर आखिरी हद तक न पहुँच सके, वहाँ तक कुछ भी त्याग न करने की वृत्ति बहुधा देखने में आती है। यह भी हमारी गति को रोकती है।

अहिंसा के द्वारा आर्थिक समानता

अहिंसा के द्वारा आर्थिक समानता कैसे लाई जा सकती है, इसका विचार करें। पहला क़दम यह है । जिसने इस आदर्श को अपनाया हो, वह अपने जीवन में आवश्यक परिवर्तन करे। हिन्दुस्तान की गरीब प्रजा के साथ अपनी तुलना करके अपनी आवश्यकतायें कम करे। अपनी धन कमाने की शक्ति को नियम में रक्खे। जो धन कमायें उसे ईमानदारी से कमाने का निश्चय करे। सट्टे की वृत्ति हो तो उसका त्याग करे। घर भी अपनी सामान्य आवश्यकता पूरी करने लायक ही रखे, और जीवन को हर तरह से संयमी बनायें। अपने जीवन में सम्भव सुधार कर लेने के बाद अपने मिलने जुलने वालों और अपने पड़ोसियों में समानता के आदर्श का प्रचार करे।

संरक्षकता का सिद्धान्त

आर्थिक समानता की जड़ में धनिक का ट्रस्टीपन निहित है। इस आदर्श के अनुसार धनिक को अपने पड़ोसी से एक कौड़ी भी ज्यादा रखने का अधिकार नहीं। तब उसके पास जो ज्यादा है, क्या वह उससे छीन लिया जाये? ऐसा करने के लिए हिंसा का आश्रय लेना पड़ेगा और हिंसा के द्वारा ऐसा करना सम्भव हो, तो भी समाज को उससे कुछ फायदा होने वाला नहीं है। क्योंकि द्रव्य इकट्ठा करने की शक्ति रखने वाले एक आदमी की शक्ति को समाज खो बैठेगा। इसलिए अहिंसक मार्ग यह हुआ कि जितनी मान्य हो सके, उतनी अपनी आवश्यकताए पूरी करने के बाद जो पैसा बाक़ी बचे उसका वह प्रजा की ओर से ट्रस्टी बन जाये। अगर वह प्रमाणिकता से सरक्षक बनेगा तो जो पैसा पैदा करेगा, उसका सद्व्यय भी करेगा। जब मनुष्य अपने आपको समाज का सेवक मानेगा, समाज की खातिर धन कमायेगा, समाज के कल्याण के लिये उसे खर्च करेगा, तब उसकी कमाई में शुद्धता आयेगी। उसके साहस में भी अहिंसा होगी। इस प्रकार की कार्य प्रणाली का आयोजन किया जाये, तो समाज में बगैर संघर्ष के मूक क्रान्ति पैदा हो सकती है।

अहिंसा सामाजिक धर्म है

इस प्रकार मनुष्य स्वभाव में परिवर्तन होने का उल्लेख इतिहास में कहीं देखा गया है? व्यक्तियों में तो ऐसा हुआ ही है। बड़े पैमाने पर समाज में परिवर्तन हुआ है, वह शायद सिद्ध न किया जा सके इसका अर्थ इतना ही है कि व्यापक अहिंसा का प्रयोग आज तक नहीं किया गया। हम लोगों के हृदय में इस झूठी मान्यता ने घर कर लिया है कि अहिंसा व्यक्तिगत रूप से ही विकसित की जा सकती है और यह व्यक्ति तक ही मर्यादित है। दर असल

बात ऐसी है नहीं। अहिंसा सामाजिक धर्म है, सामाजिक धर्म क तौर पर उसे विकसित किया जा सकता है, यह मनवाने का मरा प्रयत्न और प्रयोग है। यह नई चीज है, इसलिये इसे झूठ समझ कर फेक देने की बात इस युग मे तो कोई नहा करेगा। यह कठिन है इसलिये अशक्य है, यह भी इस युग मे कोई नहा कहेगा। क्यो कि बहुत सी चीजें अपनी आत्मा क सामने नई पुरानी होती हमने देखी हैं, जो अशक्य लगता था उसे शक्य बनते हमने देखा है। मेरी यह मान्यता है कि अहिंसा क क्षेत्र म इससे बहुत ज्यादा शक्य है और विविध धर्मो क इतिहास इस बात क प्रमाणा से भरे पडे हैं। समाज में से धर्म को निकाल फेंक देने का प्रय न बाझ के घर पुत्र पैदा करना जितना ही निष्फल है, और अगर कही सफल हो जाये तो समाज का उसम नाश है। धर्म के रूपान्तर हो सकते हैं। उसम निहित प्रत्यक्ष वहम, सडन, और अपूर्णतायें दूर हो सकती हैं, हुई हैं और होती रहेगी। मगर धर्म तो जहा तक जगत है, वहा तक चलता ही रहेगा, क्यों कि जगत का एक धर्म ही आधार है। धर्म की अन्तिम व्याख्या है ईश्वर का कानून। ईश्वर और उसका कानून अलग अलग चीजे नहीं हैं। ईश्वर अय त अचलित, जीता जागता कानून। उसका पार कोई नहा पा सका। मगर अवतारों ने और पैगम्बरा ने तपस्या करके उसकी झाकी जगत को कराई है।

कष्ट-मोचन का अहिंसक उपाय

किन्तु महा प्रयत्न करने पर भी धनिक सरक्षक न बनें, और भूखे मरते हुए करोडा को अहिंसा के नाम से और अधिक कुचलते जाये, तब क्या करे? इस प्रश्न का उत्तर ढूढने म ही अहिंसक कानून भग प्राप्त हुआ। कोई धनवान गरीबो के सहयोग के बिना धन नहा कमा सकता। मनुष्य क अपनी हिंसक शक्ति का भान है, क्योंकि वह तो उसे लाखो वर्षो से विरासत मे मिली हुई है। जब उसे चार पैर की जगह दो पैर और दो हाथ वाले प्राणी का आकार मिला तब उसमें अहिंसक शक्ति भी आइ। अहिसा शक्ति का तो उसे मूल से ही भान था, मगर अहिंसा शक्तिका भान भी धीरे धीरे, किन्तु अचूक रीति से रोज २ बढने लगा। यह भान गरीबों में प्रसार पा जाये, तो वे बलवान बन और आर्थिक असमानता को, जिसके कि व शिकार बने हुये हैं, अहिंसक तरीक से दूर करना सीखले। असहयोग और कानून भग के बारे मे मुझे कुछ लिखने का आवश्यकता है क्या? इन्हे 'हरिजन बन्धु' का कौन पाठक नहीं जानता।

A lecture delivered by Sir S. Radha Krishnan at the Hindu University Benares on the occasion of "Janamastmi."

I wish to make a few remarks on the first two phrases of the Bhagwat Gita You find that the Gita opens with the two words dharma kshetra Kurukshetra India is an ancient landhoary with age aud tradi tions We had great emperors, great statesmen, and great benefactors But the names which have come down to us are the names of great saints—the spritual heroes who solved the inner problems of life and who laid down tracks for others to follow Their ideals have been cherished as the highest ideals These have been handed down to us as spiritual legacy for our use and guidance These saints enriched the spiritual life of this country

Drawing to Close

We believe in the eternity of *Dharma* and we adhere to its principles We have seen how civilisations came into existence and perished Our historians count such civilizations as 23 The present civilization is draw ing to its close (hear hear) and if you ask what made it possible for this country to see the downfall of so many civilizations, while maintaining its own the answer comes in its adherence to those fundamental principles which are incorporated in *Dharma* This *Dharma* has become a part of our being and has entered the eternal substance of our Society It is men tioned as *Dharmakshetra* in the Gita So long as we will adhere to this, God will help us to re establish this *Dharma* by removing obstacles in our way As Pandit Pramathanathji reminded you this is called Dharma kshetra.

Seat of Action as Seat of 'Dharma'

Now, you will ask how a scene of battle becomes a scene of *Dharma* Can it be regarded as *Dharmakshetra* ? Are we to regard a battle field as a scene of *Dharmakshetra* I think the author of the Gita was quite correct when he described the seat of action as the seat of Dharma We have learnt how to fight nature, how to face successfully the disasters created by the elements of nature We have been able to master them But history shows that man has not yet learnt to live with his fellowmen in unity, and in harmony It has not been possible to shape that kind of relationship And the result is war. You may ask how wars are created My answer is wars are the reflections of inner mental crises We cannot

say that the present civilization which has created this great war which we are witnessing is equitable in the true sense of the term Men women and children are taught to sing national anthem They are taught lessons of bitterness and hatred against another nation under the guise of the so called patriotism This nationalism is a harmful sentiment from which the humanity suffers It creates discord and disunity which in turn bring about troubles and sufferings to the whole of mankind Now the question is how to avoid this catastrophy which is the result of perverted human mind The answer is given in the Gita So long as egoism self aggrandisement love of power and selfishness are rampant in human mind real peace is impossible The dark image in the heart of man will have to be developed by the divine image so that we may lead people ahead on the right path of progress and make the Kurushetra is *Dharmakshetra* When the Bhagwat Gita makes a reference in this matter it really means that the true battles are fought in the hearts of men and therefore the soul of man is the true battlefield and should be reformed into *Dharmakshetra*

Way To Peace

Proceeding further the learned speaker laid emphasis that the whole of life of men should be devoted to the adoption of *Dharma* so as to take the soul to the highest pinacles of evolution But the phalanx of critics said he had denounced that religious people fell prey to metaphysical pessimism regarded life as an evil in itself and the extinction of being a desirable consummation Others questioned the individual purification of the soul Such and similar criticism were levelled more or less against all religions But so far as Hinduism was concerned such criticism could not stand a real test The existence of the Gita made the criticism of such critics spurious When Arjun felt paralyzed on the battle field the advice from Krishna was a sufficient reply to such critics The Gita emphasized that every man must do his duty irrespective of its good or bad results Again the Bhagwat Gita was the adjustment of the two attitudes i e contemplation and action They were sent as protectors of *Dharma* and it was their duty to act like that If they acted on the teachings of the Gita they would not only be able to find solace for their souls but would be able to bring about advancement in their country and establish eternal peace among mankind (Loud cheers)

Shri Krishna's Message to the Warring World

BY DR M HAFIZ SYED, M A, Ph D, D Litt

[A war more devastating than the contest between the Pandavas and the Kauravas is taking place in the battle-fields of Europe Its consequences are in the womb of the future The message that was delivered in the field of Kurukshetra stands for all time We commend this thoughtful article of Dr Syed to our readers —Ed]

War is the talk of the day Every one whether literate or illiterate, man or woman, eastern or western, is full of fear and forebodings

No one feels secure when the world war is going on Since the cessation of the last titanic war which terminated in 1918, there have been not less than eighteen big or small wars in different parts of the world

After the devasting war of 1914 1918 it was presumed that the civilized nation of Europe who were mainly responsible for that world conflagration would not so soon girdle up their lines to wage another war which according to the meanest calculation, may prove disastrous and ruinous than the last war

Our knowledge of the world we live in has increased with bewildering speed during the last century The total output of Science has increased so tremendously that we now produce every year more than the total accumulated store of knowledge of the time of Aristotle At the same time the rate of production has increased year by year The scientific mode of thought has spread from a small band of scientists to embrace larger and larger groups, and at the same time has extended to new departments The scope of freedom of thought has widened It is being recognised more and more that human conduct is subject to law It is said that indiviuals as well as nations learn from experience. The sum total of human experiences in the form of historic, scientific and philosophic knowledge leads people to act wisely and tactfully and to foresee clearly future consequences of their present day actions If it were really so, they would not have so readily plunged into another ruinous war and cast to winds all their experiences born of such tragic, and heart rending consequences as they gained only a quarter of a century ago Alas ! the civilized nations of Europe who are supposed to guide the destinies of their less fortunate nations, seem to have so quickly forgotten the lessons learnt from the last war

Many large countries seek to imbue even their children with admiration for war. They do all they can to represent war as the most glorious expression of national greatness.*

According to this doctrine the highest function of man is to bear the burdens of absolute war. His mission is thus to be born and to give birth, in order to kill and be killed.*

While this is going on in certain countries, in others every possible effort is made to avoid war, even though owing to the military preparations of the war minded countries, the others are compelled unwillingly to pile up enormous armaments.*

How is all this to be explained? Has humanity been seized by a homicidal mania, a destructive frenzy in which certain nations seem even prepared, if necessary, to go under themselves, provided they are able at the same time to destroy the rest?

Professor Olof Kinberg of the Stockholm University has propounded a theory of his own and says "that mental disease is mainly responsible in causing war." He lays great stress on the diseased condition of the mass mind. He says "that the likeness between these qualities of the national mass and the paranoid type is striking. The paranoid personality is distinguished by its suspiciousness, touchiness, egoism, quarrelsomeness, inability to judge its own affairs impartially, and conceit and arrogance which sometimes take the form of positive megalomania."

"The paranoid has a lens in his eyes that distorts his conception of reality. Thus he does not see reality as it is, but the distorted image created by his distorted mind. Another factor, according to him, is the servile attitude of the mass towards its leaders. It is a quality also of this mentality to adopt towards its leader an attitude of servile and slavish submission, of admiration and worship, which in certain circumstances approaches the deification of olden times.

* * * *

"This fact explains the peculiar shade of cultural degeneracy which has fallen over the modern world."

Now we have to see what light Shri Krishna, the Supreme Teacher of ancient India, has to throw on this tangled problem and what message has he to give to the bewildering and warring world of to day.

It is common knowledge how before the battle day dawned, Shri Krishna went to the Court of the King Dhritrashtra, and how with His

* *Hibbert Journal*, July, 1939—Professor Olof Kinberg p 516

matchless eloquence, He pleaded there for peace ? We remember how He called Duryodhana and pleaded against his obstinacy All His efforts failed Thus he new that war was inevitable None the less He knew that duty must be performed and it was His duty as patriot and as statesman to strive for peace with every effort and with every Human and Divine power He possessed

If the duty of the moment demanded that one should wage war one should not hesitate to discharge one's *swadharma*, but fight without passion or anger with the sole object of the good of the society and the world one was born in

Shri Krishna encouraged only righteous war as against war for self aggrandisement, plunder and possessions This is the first lesson we learn from His life and His attitude towards war

Can war be ever avoided and belligerent tendency in man or a nation put an end to ?

In answer to this question Shri Rrishna lays down certain fundamental principles which guide human destiny He says that the cycle of human progression is composed of two arcs, the descending and the ascending, the well-known *Pravritti* and *Nivritti margas*, the path of forthgoing and the path of return These two primary paths are necessarily trodden by all mankind in the long course of human evolution Every human being is travelling along one or other of these two paths, of which may be used the phrase of Shri Krishna "These are thought to be the world s everlasting paths, by the one he goeth who returneth again" (8 26)

On the *Pravritti marga* consciousness is dominated, blinded, by matter, and constantly endeavours to appropriate matter and to hold it for using All this is necessary for its sovereignty over matter and thus it treads the path of forthgoing At last satiety begins to replace craving, slowly, with many relapses into forthgoing, consciousness begins to turn inward and a decreasing interest in the Not-Self permits the growth of an increasing interest in the Self

These two arcs of the circle of evolution give us the first main division of mankind into two great classes, those who are going forth and and those who are returning, those who are differentiating themselves and those who are unifying themselves The first includes the vast, the overwhelming majority, the second at this stage of evolution, consists of the few.

In the sixth verse, sixteenth Discourse, Shri Krishna says, "Twofold is the living creation in this world, the divine and the demoniacal the divine hath been described at length, hear from me, O Partha, the demoniacal" He further goes on saying, "Demoniacal men know neither right activity nor right abstinence, nor purity, nor even propriety, nor truth is in them" (16 7)

"The Universe is without truth, without (moral) basis, they say, without a God, brought about by mutual union, and caused by lust and nothing else (16-8) Holding this view, these ruined selves of small understanding, of fierce deeds, come forth as enemies for the destruction of the world ' (16 9)

"Surrendering themselves to insatiable desires, possessed with sanctimonious hypocricy, conceit and arrogance, holding evil ideas through delusion, they engage in action with impure resolves' (16 10)

"Giving themselves over to unmeasusred cares which end only with death, regarding the gratification of desires as the highest, feeling sure that this is all (16 11)

"Held in bondage by a hundred ties of expectation, given over to lust and anger, they strive to obtain by unlawful means hoards of wealth for sensual enjoyments" (16 12)

'This todav by me hath been won, that purpose I shall gain, this wealth is mine already and also this shall be mine in future" (16 13)

"I have slain this enemy, and others also I shall slay I am ruler, I am enjoyer, I am perfect, powerful, happy ' (16 14)

"I am wealthy, well borne, who else is there that is like unto me? I will sacrifice, I will give (alms), I will rejoice —Thus deluded by unwisdom" (16 15)

"Bewildered by numerous thoughts, enmeshed in the web of delusion addicted to the gratification of desire, they fall downwards into foul hell' (16 16)

Every word of these verses just quoted hold good up to the present day These words portray literally the present mentality of Hitler and men of his way of thinking His uncurbed desire for expanding his kingdom his ambition to acquire more and more territories by fair or foul means are so aptly described in these words The nature of these unrighteous conquerors is truly demoniacal They do not know right from wrong Their vision is clouded Their moral sense is deadened This devilish nature of man is and has been the true cause of war which no generation can possibly avoid

Having proved the inevitability of war Shri Krishna advises Arjuna who represents the whole of the human race as his name *Nara* typifies, to throw off pusillanimity and fight The reasons given to Arjuna for this course of manly action may be summed up as follows —

The real man is deathless no weapon can cleave him, no fire can burn him, "Uncleavable he incombustible he, and indeed neither to be wetted nor dried away perpetual, all pervasive stable, immovable, ancient' (2-24) Unmanifest, unthinkable immutable, he is called, therefore knowing him as such, thou shouldst not grieve' (2 25)

'Or if thou thinkest of him as being constantly born and constantly dying even then O Mighty armed thou shouldst not grieve (2-26) For certain is death for the born and certain is birth for the dead, therefore over the inevitable thou shouldst not grieve (2 27)

To sum up, however much we might desire or deplore, we cannot possibly dissuade demoniacal minded people from shedding human blood Their very nature would constrain them to resort to unrighteous war Our duty, then, is to stand by what we consider to be right and just in the way of either defending ourselves from their attack or eradicating the evil-doors to make the world safe for democracy and for the peace and the well being of the human race We must always throw our moral and material weight on the side of right causes without desire for the fruit of our action, acting in conscious co operation with divine will, which is another name for right course of action

---

The Message of the Veda

By Prof M Sudhakar M A

At the moment when the world is dominated by extreme selfishness in the form of Nationalism, mutual suspicion, prejudice and unreason, it is, perhaps, out of tune, to talk of Religion—the Religion of the Veda and its message to Humanity The philosophers, scientists and seers of modern age have all been hushed up and the only voice heard today is the voice that stirs up the War fury The War has not only enveloped Europe but has seized the entire world The cult of the Bomb has become the order of the day Humanity that built its structure of Civilization during the course of aeons is now engaged in pulling down that structure by its own hands What a great tragedy ! Look at the spectacle of daily slaughter of men women and children in London Berlin and other places The horrors of the World War are better imagined than described

Why has the world come to this critical situation ? Has it lost its track ? Yes it has lost its track since centuries There was a time when the oldest teachings—the teachings of the Veda were actually lived in this world and the Brother hood of Humanity was not a mere name or idea, but an actual reality Veda which literally means knowledge and reason, govern ed guided, and controlled the ideals of Humanity Then there was peace plenty and prosperity every where People were not jealous, nations were not selfish and indviduals were not mean They believed in the principles embodied in the following Vedic hymns —

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्य्यं करवावहै ।
तेजस्विनावधीतमस्तु माविद्विषा वहै ॥

Let us talk together a language understandable by all Let us enjoy together the material gains of this world let us help one another to increase vigour and virility Let us all become a source of splendour and let none of us show meanness and malice in his conduct

This is the message of the Veda The Arya Samaj was established by Rishi Dayananda to preach this message to Humanity The Veda is full of eternal verities 'Universal Truths not confined to any particular space and time The idea of caste creed and nationality is foreign to the teachings of the Veda The hymns of the Veda call upon the entire Humanity to conduct itself in the spirit of fraternity and brother hood But since Humanity has been split up into various nationalities, barriers of colour and creed have cropped up and the idea of universal brother hood has been relegated to the domain of forgetfulness

The systems of education, now prevalent in the various countries all emphasize intense nationalism and metil into the minds of children rancour against the components of other nationalities When the original sources of Life tackled by education are in this way poisoned and polluted, what else could we expect, other than what we are now witnessing in the form of universal devastation carried on by the European War ?

If Education had been free from this poison, Humanity should not have come to this sorry state of affairs The Veda propounds a system of Education in which children are considered as the children of Humanity and education aims at preparing them for the service of Humanity When children are nurtured and nursed on such broad based ideas of humanity, they grow up with cosmopolitan out look on life and in their future careers do not fall into sectarian snares and national groves when international disputes are considered Education —true education—such as the Veda propounds, aims at producing gainless lovers of Humanity as contrasted with godless lovers of gain Meterial values have now taken the place of spiritual and moral values Science has accelerated the accumulation of material gains Wealth is now more valued than character Poor men with howsoever exalted character are looked down upon in society The lust of pelf and power has consequently taken the place of the quest for knowledge and wisdom

All this means that the world has drifted away from the old moorings, Dayananda's call was back to the Veda, just as Reasu's call was back to Nature, perhaps he also meant to the original sources of life as conceived in the Veda However, whatever the fate of the modern world may be its saviours are not Hitlers, Mossolinis and Churchills intoxicated with the spirit of intense nationalism but the real saviours are Dayananda, Gandhi, Tagor in India and Eucken, Romain Roland and Ruskin in Europe whom nothing else appeals but Humanity and who recognize no barriers between man and man and between nation and another nation If the world again has to be saved for culture and civilization the Vedic teachings about the brotherhood of Humanity should once more be inculcated through the edu cation of children and through the administrative acts of governments, so thatt he *nations be reborn* and acquire international out look in their mutual dealings with one another

पतझड़ का पत्ता !

[रचयिता—श्री पं० सिद्धगोपाल जी "सिद्धान्तरत्न", देहली]

❀

मैं उन्मादित हो पथ पर, स्वच्छन्द चला जाता था।
आ आकर पास समीरण, द्रुतगति से इठलाता था।
निज चपलता से निष्ठुर इक पात उड़ा कर लाया।
दृग्पात किया जब मैंने, निज उर से चिपटा पाया।
पूछा मैंने बतलाओ, निस्पन्द हुए क्यों चिपटे ?
मुझ मतवाले मानव क, क्यों अन्तस्तल से लिपटे ?
वह मूक लगा यों कहने, अपनी कुल करुण कहानी।
मैं हूँ पत्ता पतझड़ का, जग की हू सजग निशानी।
मैं भी तो मतवाला था, जैसे तुम हो मतवाले।
बन गया आज दरदर का, पड़ गया पवन के पाले।
मैं हरित वस्त्र तन ओढे, करता था तरु पर नर्तन।
कर डाला परिवर्तन ने, मेरा द्रुत पट परिवर्तन।
होगया हमारे तन से बिछुड़न, नस नस से रस का।
कस हीन किया कपटी ने, मेरा उसको 'कस' कसका।
जब था नन्हा सा तरु पर, कहते थे बूढे सङ्गी।
मैं तो गिरने वाला हूँ, गिरना तुमको भी रङ्गी।
देखा गिरते सन्मुख ही, पर, क्या चिन्ता थी पर की ?
इक बार करुण ध्वनि होती अनुभूति हुई मर मर की।
फिर बढ़ी भयङ्कर आकर, सन्नाटा छा जाता था।
पर, मैं उन्मादी पन के अविरल गायन गाता था।
दे देकर मृदुल थपकिया, उस मृदु समीर ने मुझको।
था कभी सुलाया सुख से, अब देखा दारुण उसको।
है आज कहा कल कूजन, कोकिल की कौन सुनावे ?
साथी सब ही सुख के थे, अब कोई काम न आवे।
अतएव तुझे बतलाने, आया हू मैं मतवाले।
तुझ को जग का परिवर्तन, कर देगा काल हवाले।
प्रिय पथिक, प्रेम के पथ पर, प्रतिपल परम-पद पाले।
'गोपाल" गुण गुण तज के, निर्गुण के गायन गाले।

सम्पादकीय

यूरोपीय महासमर का १ वर्ष

यूरोपीय महासमर को होते हुए १ वर्ष व्यतीत हो गया है। इस एक वर्ष के काल में यूरोप का मान-चित्र बदल गया है।

पोलैंड का अस्तित्व मिट गया है। इस नाम का कोई स्वतन्त्र देश अब युरोप में नहीं रहा। वह आधा रूस के और आधा जर्मनी के पेट में समा गया। फिन्लैंड का अस्तित्व अभी भी शेष है परन्तु वह एक प्रकार से रूस का अङ्ग बन गया है। बाल्टिक सागर के लिथुनिया, लटैविया और इस्टोनिया नाम के देश भी रूस के विशालकायक अङ्ग बन चुके हैं।

पश्चिमी युरोप मे डेनमार्क, नारवे, हालैंड, बेलजियम और फ्रास का नाम नक्शे में लिखा होने पर भी वे जर्मनी के पैरों तले हैं। उनका अब कोई स्वतन्त्र राज या अर्थ नीति नहीं है।

दक्षिण युरोप मे इटली स्वतन्त्र देश बच गया है परन्तु वह जर्मनी का मित्र होते हुए भी उसका पुछल्लामात्र है। दक्षिण युरोप के शेष प्राय सभी देशों को बिना युद्ध के ही जर्मनी अथवा रूस के सामने घुटने टेक देने पड़े हैं। टर्की भी युद्ध के झमेले में पडना नहीं चाहता और रूस तथा जर्मनी के भय से तटस्थ बना हुआ है।

रूमानिया को युद्ध के आरम्भ मे ब्रिटेन ने आत्म-रक्षा की गारन्टी दी थी परन्तु फ्रास के पतन के पश्चात् उसने स्वत ही इस गारन्टी को छोड दिया और वह जर्मनी की शरण में चला गया। उसका छुटकारा वहा जाकर भी न हुआ और अपने शरणदाता की ही प्रेरणा से उसे बेस्सारेबिया तथा बुकेबिना प्रान्त रूस को डौब्रूजा प्रान्त का दक्षिणी भाग बलगेरिया को और ट्रांसिलवानिया प्रान्त

का बड़ा भाग हंगरी को देना पड़ा। अब उसकी स्थिति जर्मनी के एक निर्बल आश्रित से बढकर नहीं रही। बलगेरिया रूस का आश्रित है और हगरी जर्मनी का। युगोस्लाविया और यूनान कहने को स्वतन्त्र हैं परन्तु उनकी स्थिति बत्तीस दांतों में जीभ से अच्छी नहीं है।

युरोप के दक्षिणी पश्चिमी कोने पर स्पेन और पुर्तगाल भी स्वतन्त्र बचे हुए हैं। परन्तु इनमें स्पेन की सहानुभूति जर्मनी से है। युरोप में अकेला रूस ऐसा है जिसे वस्तुत' स्वतन्त्र कहा जा सकता है अन्यथा लगभग सारा युरोपीय महाद्वीप जर्मनी के प्रभाव में आ चुका है।

केवल एक वर्ष में यह सब कुछ हो गया। इतिहास की दृष्टि से यह अभूतपूर्व घटना है। सिकन्दर, नैपोलियन आदि अनेक व्यक्तियों ने इतिहास में विजेताओं की पदवी प्राप्त की है परन्तु हिटलर ने सब को मात कर दिया है।

अब प्रश्न यह यह है कि क्या वह इस अभूतपूर्व विजय को हजम कर सकेगा? इस समय ब्रिटेन और जर्मनी का तुमुल सग्राम हो रहा है। उपर्युक्त प्रश्न का उत्तर इस सग्राम के अन्तिम परिणाम पर निर्भर है। नैपोलियन ने भी ब्रिटेन को छोडकर हिटलर के समान लगभग समस्त युरोप को अपने प्रभाव में ले लिया था परन्तु ब्रिटेन के साथ वाटरलू के युद्ध में उसके भाग्य ने पलटा खाया और वह बुरी तरह पराजित हुआ था। ससार बडी उत्सुकता के साथ देख रहा है कि इतिहास का विचित्र चक्र उसी दिशा में घूमता है या किसी नई दिशा में।

यह सब कुछ इस समर का बाह्य परिणाम है जो राष्ट्रों की सीमाओं के परिवर्तन तक सीमित है। इसका आभ्यन्तरिक वा दूरवर्ती परिणाम क्या होगा, यह एक विचारणीय प्रश्न है? यदि इस समर से समाज एक नया रूप धारण करता है जिसमें धर्म और नैतिकता का प्राधान्य होगा जिसमें मनुष्यों में स्वयं जीने तथा दूसरों के जीने देने की प्रबल भावना होगी और जो जगलियों के नियमों से नहीं वरन मानवी नियमों से शासित होगा तब तो इस समर का कोई अर्थ होगा अन्यथा सृष्टि के सौन्दर्य के विनाश, लाखों करोड़ों व्यक्तियोंके वध और वेदनाओं तथा अशान्ति के अतिरिक्त इस समर का और कोई अर्थ न होगा।

खाकसार

पजाब और देहली की सरकारो ने खाकसारो पर से प्रतिबन्ध उठा लिया है। अब यह

संस्था गैर कानूनी नहीं रही। स्पष्ट है यह आशा खाकसारों को उस प्रतिज्ञा का परिणाम है जो उन्होंने पंजाब सरकार से अस्थायी रूप में की थी कि हम कोई अवैध कार्यवाहि नहीं करेंगे। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या उनके नेताओं की मनोवृत्ति बदल गई है? और क्या उनके नेता जिनके सम्बन्ध मे सर सिकन्दर हयातखां ने यह कहा था कि वे जर्मनी से सम्बन्ध रखते हैं, उन सम्बन्धों को छोड चुके हैं। हमारे विचार में तो इनमे से एक बात भी नहीं हुई है फिर सरकार ने प्रतिबन्ध क्यो उठाया? क्या इसलिए कि वे एक ऊँचे सरकारी कर्मचारी के शब्दों मे उनसे अपने लिए प्रत्येक अवसरों पर काम लेना चाहती है। यदि यही विचार है तो कहना पड़ता है सरकार ने इस सम्बन्ध म दूरदर्शिता से काम नहीं लिया है। खाकसारों का पिछला रिकार्ड जो यू० पी० सरकार के प्रति उनके रवैए से स्पष्ट है, विश्वासनीय नहीं है। हमे भय है कि सरकार को यह रियायत मॅहगी न पडे।

'तेज'



कार्य कारिणी सभा का निश्चय

(१) ३ अगस्त सन् ४० ई० को अ० भारतवर्षीय आ० कु० परिषद् की कार्य कारणी की बैठक हुई।

इन्दौर सम्मेलन में पास हुये कार्य क्रम पर विचार हुआ और उसी कार्य-क्रम को अमली जामा पहनाने का कार्य शुरू कर दिया।

(क) आर्य कुमारों के स्वाध्याय योग्य पुस्तकों की सूची मँगाने के लिये प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पत्र लिखे जा चुके हैं और सूची तैयार करने का काम शुरू कर दिया है।

(ख) भिन्न भिन्न कु० सभाओं में परिषद् की तरफ से प्रतिष्ठित महानुभावों के व्याख्यानों का आयोजन —

इस सम्बन्ध में प्रतिष्ठित महानुभावों प्रोफेसरों उपदेशकों तथा प्रचारकों को निवेदन किया जा चुका है कि वे जब कहीं जहां कहीं किसी कार्यवश बाहर जाय तो परिषद् कार्यालय को सूचित करदें ताकि परिषद की तरफ से वहां उनके व्याख्यानों का आयोजन किया जा सके, इस सम्बन्ध में कई महानुभावों से स्वीकृति आ चुकी है और आ रही हैं। स्वामी केवलानन्द जी सरस्वती इस मास में शिमला तथा बिजनौर के आसपास के स्थानों में दौरा कर रहे हैं। उनसे पत्र व्यवहार हो चुका है। उक्त स्थानों पर उनके व्याख्यानों का आयोजन करके कु० सभायें स्थापन का कार्य करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

तम्बाकू सिगरेट विरोधी आन्दोलन

तम्बाकू सिगरेट विरोधी आन्दोलन ता० २४ नवम्बर से १ दिसम्बर सन् १९४० तक किया जावेगा। इस आन्दोलन के लिये काफी जोरों से तैयारी हो रही है। ट्रैक्ट कार्टून पेम्फलेट्स आदि तैयार किये जा रहे हैं। यह सप्ताह बड़े धूम धाम से मनाया जावे ऐसा निश्चय हुआ है प्रोग्राम तैयार हो रहा है।

Trianing Camp तथा व्यायाम सम्बन्धी कार्य

यह आयोजना तैयार करने का कार्य योग्य व्यक्तियों के सुपुर्द किया गया है। योजना तैयार होने पर सबके पास भेजी जावेगी और इसको अमली जामा पहिनाया जावेगा।

दहेज दिवस

यह दिवस जनवरी मे मनाया जावे ऐसा निश्चय हुआ है। इस दिवस के लिये भी काफी तैयारी हो रही है।

निवेदन

आर्य कुमार जगत् तथा आर्य युवक सभाओं के मन्त्री महोदय तथा अन्य आर्य महानुभावों की सेवा मे'—

श्रीमान् जी,

नमस्ते !

आपकी सेवा में इन्दोर सम्मेलन की रिपोर्ट तथा परिषद् की वार्षिक रिपोर्ट भेजी जा चुकी है और अवश्य आपने उसे देखा होगा। अब आपसे प्रार्थना है कि आप मे से जिनका वार्षिक चन्दा न आया हो वे कृपा कर अपना चन्दा परिषद् कार्यालय को शीघ्र भेजने की कृपा करे। उसी प्रकार जिन कुमार सभाओ का परिषद् से सम्बन्ध नही है उनसे भी सानुरोध प्रार्थना है कि वे शीघ्रताशीघ्र परिषद् से अपनी सभा को सम्बन्धित करलें।

कृपया इस सम्बन्ध मे शीघ्रता करें और आवेदन पत्र भर कर परिषद् कार्यालय को भेजने की कृपा करें। साथ ही उसके २) चन्दे के भी भेज दे ताकि आपके आवेदन पत्र इसी अतरग में रखे जावें और शीघ्र ही स्वीकृत कर लिया जावे।

निवेदक—

ह० ग० पोनीकर उपमत्री आ० कु० परिषद्

समाचार संग्रह

आर्य कुमार रा० 'रक्षात्मक दल' की स्थापना करने का प्रयत्न बड़े उत्साह से कर रही है।

आर्य कु० सभा बीकानेर का वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ समाप्त हुआ। व्यायाम के खेलों का प्रदर्शन हुआ तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों के व्याख्यान हुए।

आर्य कुमार सभा कमतौल—उत्साह जनक कार्य कर रही है परिषद् के प्रधान पूज्य पंडित धुरेन्द्र शास्त्री यहां दौरा कर चुके हैं। कमतौल कु० सभा अब परिषद् से सम्बन्धित हो जावेगी।

आर्य कुमार सभा की स्थापना

आर्य कु० सभा भागलपुर—में आर्य वीर दल की स्थापना हो चुकी है, कुमार सभा बहुत ही उत्साह से काम कर रही है।

परीक्षा सम्बन्धी कार्य

भूत पूर्व परीक्षा मंत्री प० सूर्यदेव जी शर्मा एम. ए एल टी. ने गत वर्ष तक परीक्षाओं का कार्य बहुत ही सुचारु रूप से चलाया। आपके ही प्रयत्न का फल है कि यू. पी., सी. पी. तथा अन्य कुछ प्रान्तों मे इसका काफी प्रचार हो चुका है। आपके इस कार्य के लिये जितनी प्रशंसा की जावे थोड़ी है। आपने इस वर्ष यह कार्य करने की असमर्थता प्रकट की अत: आपकी जगह पंडित देवव्रत जी धर्मेन्दु परीक्षा मंत्री चुने गये हैं। आप भी बड़े उत्साही हैं और परीक्षा का कार्य बड़े उत्साह और लगन के साथ कर रहे हैं।

आर्य समाजों से निवेदन

मंत्री महोदय !

सेवा मे निवेदन है आपके यहा अगर कुमार सभाये न हो तो कृपा कर अपने स्थान पर कुमार सभाये स्थापित कराये और उनको अखिल भारतवर्षीय कु० परिषद् से सम्बन्धित होने के लिये आदेश दे और परीक्षाओ मे अधिक से अधिक विद्यार्थियो को सम्मिलित होने के लिये उत्साहित करे। साथ ही जब कभी आपके स्थान पर कोई प्रतिष्ठित महानुभाव उपदेश व्याख्यान तथा प्रचार के लिये पधारे तो विशेषत कुमारों के लिये भी उनके व्याख्यान का आयोजन करने की कृपा करना चाहिये।

विनीत—

इ० ग० पौनीकर

मध्य प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का कुमार सभाओं के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण प्रस्ताव

मध्य प्रातीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने गत् वार्षिक अधिवेशन में प्रात म आर्य कुमार सभाओं एव धार्मिक परीक्षाओ के सचालन के कार्य को प्रोत्साहन देने के लिये निम्न प्रस्ताव पास किया है —

यह सभा प्रात में आर्य सिद्धान्तो के प्रचार का ठोस कार्य करने एव आर्य सदस्यों मे सिद्धान्त पालन की त्रुटियो को दूर करने के हेतु आर्य कुमार सभाओं की स्थापना एव धार्मिक परीक्षाओ के सचालन के कार्य को अत्यधिक आवश्यक समझती है। अत: वह निश्चय करती है कि तीन व्यक्तियो की एक उपसमिति बनाई जाये जो उक्त उद्देश्य का

पूर्त्यर्थ पूर्ण प्रयत्न करे और वार्षिक अधिवेशन पर अपना विवरण पेश करे। उपसमिति के निम्न सदस्य चुने गये हैं।

(१) श्री रामदत्त जी ज्ञानी (बुरहानपुर) उपप्रधान।

(२) श्रीमती यशोदा देवी जी शास्त्री (प्रधाना, स्त्री समाज अकोला)

(३) श्री विनयकुमार जी (प्रधान आर्य कुमार सभा अकोला)

मध्य प्रातीय आर्य कुमार उपसमिति ने अपनी ता० ८ ६ ४० की बैठक में धार्मिक परीक्षाओं के सम्बन्ध मे निम्न प्रस्ताव पास किया है :—

प्रात के आर्य सदस्यों एवं अन्य जनता में वैदिक सिद्धात सम्बन्धी ज्ञान की अभिवृद्धि एवं उनमें स्वाध्याय की मनोवृत्ति पैदा करने के लिए यह अत्यावश्यक है कि प्रात का प्रत्येक समाज और आर्य कुमार सभा अपने स्थाना पर अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् द्वारा संचालित वैदिक धर्म विशारद और सिद्धात शास्त्री परीक्षाओं के केन्द्र यथा शीघ्र खोलें।

आर्य कुमारों, परिषद् के प्रतिष्ठित सभासदों तथा अन्य दानी आर्य महानुभावों से अपील

सज्जन वृन्द !

इन्दौर सम्मेलन में पास किए हुए प्रस्ताव, आपने बुलेटिन तथा समाचार पत्रों में देख ही लिए होंगे, साथ ही इस सब कार्य क्रम को अमली जामा पहनाने के किए धन की आवश्यकता है, इस आशय का प्रस्ताव भा पाच रुपये वाले प्रतिष्ठित सभासद् बनाने के विषय में) देखा होगा अत आप कुमारों से निवेदन है कि यह पाच रुपए वाले प्रतिष्ठित सभासद् बनाने का कार्य आप हाथ म लें लीजिए और इस प्रकार धन एकत्रित करके परिषद् कार्यालय को भेजे ताकि परिषद् पूरे प्रोग्राम को अमली जामा पहनाने का पूरी पूरी तरह से प्रयत्न कर सके।

साथ ही प्रतिष्ठित सभासदो तथा दानी आय महानुभावों से भी निवेदन है कि वे स्वय प्रतिष्ठित सभासद् बने और अन्य मित्रों को सभासद् बनाकर आर्य कुमार परिषद् की सहायता करने की कृपा करें।

विनीत—पोनीकर उपमन्त्री

धन्यवाद

कई महानुभावो ने कुमारो के स्वाध्याय योग्य पुस्तको की सूचि भेजकर हमें अनुग्रहीत किया है अत यहा हम उन सब का धन्यवाद करते हैं। साथ ही बहुत सारे उपदेशको, प्रचारकों तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने अपने दौरे म, आय कुमार सभाओं की स्थापना करने का आश्वासन दिया है तथा कुमार सभाओं को अपने व्याख्यानों द्वारा लाभ पहुँचाने की भी सहमति दे दी है अत इन सब को हार्दिक धन्यवाद देता हू।

—उपमन्त्री

सार्वदेशिक सभा का प्रचार कार्य

आंध्र (जुलाई मास का विवरण)

इस बार निम्न नये स्थानों में हम तीनों द्वारा प्रचार किया गया । पालपर्स, पैपर्स, तिरुमिला, काम्मावारिपालम्, विद्यावन (मन्तनिवारिपालम्), कावूर आश्रम, बोडपाडू । सब जगह अच्छा प्रभाव रहा ।

सभा द्वारा ईसाइयों में प्रचारार्थ नियुक्त श्री हरिराम प्रसाद राव जी ने निम्न स्थानों पर घूम घूम कर ईसाइयों में कार्य किया । जूटमिल, जार्जपेट, अग्रहारम् (गुण्टूर में), दुनेकोण्डा, आरेंडपाडू, वेलपूरू, सुदनकुण्टला अक्कचरुवु, पुदिली, चिन्तगुण्टला, अम्बा-पुरम्, रेगडिपल्ले ।

इस समय प्रचार कार्य अच्छा चल रहा है । तनाली आने पर प्राय मनुष्य स्वय ही आर्य समाज के विषय में जानने की इच्छा से रखते हैं ।

पैपर्स में नया समाज खुल गया है । कूचिपूडि समाज की तरफ से श्री प० गोपदेव जी ने महाभारत की कथा प्रारम्भ कर दी है ।

एक कम्मा भाई ने मरते समय ४० हजार रु० की जायदाद एक सस्था जिसमें वेदों का पठन पाठन हो—चलाने के लिये तीन ट्रस्टियों के सुपुर्द की । अब वे लोग इसको आर्य सामाजिक सस्था बनानेके इच्छुक है । एक गुरुकुल स्थापना करना चाहते हैं । प० मदनमोहन जी, विद्याधर जी तथा प० गोपदेव जी उस स्थान को देख आये हैं । यदि इसकी अनुकूल व्यवस्था हो गई तो आर्य समाज को इस सस्था द्वारा प्रचार की बडी भारी सुविधा हो जावेगी ।

कर्नाटक प्रांत के दक्षिण कनारा में आर्यसमाज प्रचार

सन् १९४० जून और जुलाई महीनों में दक्षिण कनारा जिले के आर्योपदेशक श्री प० मंजुनाथ जी ने मंगलूर, कार्कला, हिरियडका, उडुपी, मूडबिद्री, नीलेश्वर, कासरगोड, होसदुर्ग, बटवाल, पाणेमगलोर, पुत्तूर, इन स्थानों मे भ्रमण करके, आर्य समाज के सिद्धांत, समाज स्थापना की आवश्यकता, वैदिक धर्म के महत्व, वादविवाद शकासमाधान, समाज सिद्धांत की पुस्तिकायें, इत्यादि के द्वारा समाज का प्रचार कार्य किया । जिले भर में अब तक ४ समाजें हैं । पुत्तूर, बँटवाल, नीलेश्वर, होसदुर्ग, कासरगोड, आदि स्थानों में समाज

स्थापना के लिए प्रयत्न किया। नीलेश्वर तथा पुत्तूर मे निकट भविष्य में समाज स्थापना होने वाली है। समाज स्थापना के लिए प्रयत्नशील हैं।

केशव रामचन्द्र शेणै
मन्त्री आर्य समाज कार्कल द० क०

• भाग्य नगर हैदराबाद निज़ामराज्य का भ्रमण विवरण

मैं ता० २६ ६ ४० अजयमरु (अजमेर) से प्रस्थान करके ता० २९ ६ ४० को शोलापुर जो आ० प्र० सभा निजाम राज्य का केन्द्र स्थान है वहाँ पहुँचा, वहाँ आर्य समाज सोलापुर में प्रचार हुआ। यह हर्ष का विषय है कि श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सार्वदेशिक सभा की उदारता से यहा दयानन्द उपदेशक विद्यालय स्थापित होकर पचास के लगभग उपदेशक श्रेणी के छात्र शिक्षा पा रहे हैं।

सोलापुर आर्य-पुरुषो तथा डी० ए० वी० कालेज कमटी के उत्साह से डी० ए० वी० कालेज की स्थापना होकर एक किराये के मकान में १७० छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जिसके मुख्य सचालक श्री० जी० एल० दत्ता जी बड़े ही लगन तथा उत्साह से कार्य का सचालन कर रहे हैं। और कालेज के नये भवन आर्य्य कॉग्रेस शोलापुर की ऐतिहासिक भूमि में जो शोलापुर निवासी एक महोदय ने पचास हजार मद्रा प्रदान किया हैं उसमं मुख्य द्वार तथा हाल बन रहा है। इन सब इमारतों का निरीक्षण मैंने किया ज्ञात हुआ कि जनवरी तक भवन तैयार होकर कालेज का पटन पाठन उन नये भवनों मे प्रारम्भ होगा।

यहा से श्री प० बन्सीलाल जी वकील त्याग मूर्ति, निजाम राज्य आर्य्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री द्वारा पुरोगम बनवाकर प्रस्थान किया।

शोलापुर से वार्सी होकर ता० ४ ७ ४० को तडवल (कलम) रोड पहुँचा वहा पर मन्त्री आय समाज क पुरुषार्थ से सदाशिव चौक नाम के बाजारम वैदिक धम सदेश को जनता ने श्रवण गोचर किया। सदाशिव माता, पिता के एक ही दाक्षिणात्य ब्राह्मण का पुत्र था, जो सत्याग्रह म अपने जीवन की आहुति देने म समर्थ हुआ, उसी के नाम पर उस चौक बाजार का नाम सदाशिव चोक पडा है। उनक वृद्ध माता पिता के गृह पर जाकर उनको सान्त्वना दी कि 'आप धन्य हैं जिनकी सन्तान ने देश के दु ख निवारणार्थ अपने जीवन की आहुति प्रदान की "आपक दूध का ऋण चुकाया है" जिससे उनमें धैर्य धारण की शक्ति प्राप्त हुई। उसी नगर म प० बशीलाल जी की धर्म पत्नी तथा पॉच छ बालक बालिकाओं का उपनयन सस्कार कराया।

वहा से स्थान कलम को प्रस्थान किया वहा समाज मे दो दिन तक प्रचार होता रहा, वहा पर एक वीर व्यक्ति कथले जी महोदय हैं जिन्होंने अपना निजी कारोबार छोड़कर वैदिक-धर्म के प्रति सर्व शक्ति (तन मन) से आहुति रूप प्रदान की है, जिनके प्रताप से तथा पुरुषार्थ से चार, छ ग्राम जो कि अशिक्षित नायक (बजारे कहलाने वाले) राजपूत वीर वैदिक धर्म की दीक्षा में होकर जीवन का लाभ उठा रहे हैं ।

वहा से मोमिनाबाद नामक स्थानको पहुँचा, इधर निजामराज्य की ओर से सरकारी सवारी बस सरबीस चलती है। किराये के उपरान्त वर्तमान लड़ाई के नाम से कुछ अधिक लिया जाता है। मोमिनाबाद निजाम राज्य का जिले का स्थान है वहा फौज की छावनी है। छावनी की हद्द मे आर्यसमाज का मन्दिर है। वहा श्री मनोहरसिंह जी आर्यसमाज के प्रधान हैं। उन सबके प्रयत्न से समाज में प्रचार हुआ। दूसरे दिन शहर के अन्दर निजी मदरसा (विद्यालय) है और एक मराठा बोर्डिङ्ग तथा एक मराठा ब्राह्मण बोर्डिङ्ग छात्रालय पृथक् २ हैं वहाँ के कार्यकर्ताओं के आग्रह से प्रचार हुआ और उन्होने छात्रालयों मे प्रचार की व्यवस्था का आग्रह किया। वहा पर छात्रो मे प्रचार होकर २५ छात्रो का उपनयन सस्कार कराया तथा गुरुकुल प्रणाली के अनुसार शिक्षा का आदेश किया।

वहा से शुभस्थान पर्ली को प्रस्थान किया, पर्ली के आर्यवीर हीरालाल नामक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व पर आर्यसस्कृति की रक्षा का भार लेकर कार्यको चलाने में समर्थ हुए हैं। उक्त स्थान मे अधिक प्राचीन काल से यज्ञ यागादि के प्रख्यात बड़े २ मन्दिर हैं । वहा यजुर्वेदी ब्राह्मण निवास करते हैं और वर्तमान प्रणाली के अनुसार रुद्र यागादि करते हैं। वहा जनता ने बड़ी ही श्रद्धा के साथ प्रचार कराकर प्रचार मे गम्भीरता पूर्वक भाग लिया। वहा से निजाम राज्य की रेल प्रारम्भ होती है। दूसरे दिन आर्यपुरुषों के सहयोग से स्टेशन पहुँचा। वर्षा का वेग अधिक, पैरो में पीडा, अस्तु स्टेशन पर पहुँचे तो आषाढी एकादशी पठरपुर यात्रा के कारण स्टेशन पर अधिक से अधिक यात्रिक जनसख्या बाल-वृद्ध एकत्रित हो रहे थे । टिकट मिलना असभव। प्रभु कृपा से टिकट लेकर गाडीमें प्रवेश किया। यात्रियों के कारण गाड़ी मे बिलकुल स्थान नही, जनता के लिए बड़ी ही कठिनता का समय था, जैसे-तैसे भगवान की कृपा से शुभ बड़वल नागनाथ पहुँचा। यह स्थान भी प्राचीन ऐतिहासिक दुर्ग आदि खण्डहरों के रूप मे जीर्ण होकर अपनी अनुपम छटा प्राचीनता का गौरव दर्शा रहे हैं, यहा प्रचार हुआ। एक अध्यापक महोदय जो सत्याग्रह मे भाग लेने के कारण अध्यापकी के कार्य से पृथक् कर दिये हैं अपनी कृषि कार्य में सलग्न होकर सन्तोष धारण कर वैदिक धर्म के प्रति सलग्नता पूर्वक कार्य कर रहे हैं। वहा समाज नही हैं।

वहां से उदगीर के जो जिले का केन्द्र स्थान है, आर्यसमाज में पहुँचा। समाज-मन्दिर निज का है। समाज में व्यायाम शाला है, सुचारु रूप से चलता है। छात्रों से ड्रिल आदि अनेकों प्रकार के शारीरिक उन्नति के साधन सिखाये जाते हैं। यहा एक लिंगायतों की ओर से एक लिंगायत समाज अपनी अलग बिगुल बजाने मे निमग्न हैं, परन्तु उनकी यह मामूली समझ है जिस गृह मे, जिस पडोस में जिस ग्राम में अपनी व्यक्तिगत उन्नति में गया समूह भिन्न दिशा में निमग्न हो वह सङ्गठन के क्षेत्र से वञ्चित रहकर पतनावस्था को प्राप्त होने के स्वप्न मे निमग्न होकर अपने सङ्गठन के वृक्ष की जड़े खोखली कर रही है, ससार मे देखा जाता है कि ईश्वरी वस्तुएँ समानता से सबको सहयोग दे रही हैं। इसी दृष्टान्त को लेकर मनुष्य समाज एक दूसरे का मित्र होकर व्यवहार करने मे दत्तचित्त होके अपना लाभ अनुभव करेगी तभी कल्याण है। यही आर्यसमाज के वैदिक ईश्वर रचित आदि सृष्टि के सिद्धान्त समष्टि रूप से समस्त मानव जाति को शिक्षा देने मे समर्थ है। जनता ग्रहण करे अन्यथा वैदिक सिद्धात आज नहीं कल मजबूरन मानव समाज को ग्रहण करना ही होगा। तभी हम उस प्रभु के अमृत-पुत्र कहलाकर अपने व्यक्तित्व को तथा मनुष्य समाज को सुखी बनाने मे सफलीभूत होगे। अस्तु यहा आर्यसमाज मे दो दिन तक जनता स्त्री-पुरुष बड़ी सख्या मे उपस्थित होकर वैदिक धर्म का सन्देश बड़े ही चाव से सुनती रही जिसके लिये यहा के कार्यकर्ताओ तथा जन समूह को धन्यवाद है। एक स्त्री-समाज का अधिवेशन हुआ। वृहत् सख्या मे देवियाँ उपस्थित हुई और कुछ देवियों का उपनयन संस्कार हुआ। इसका श्रेय वहाँ के स्त्री-समाज को है। यहाँ नगर के कुछ अन्तर पर प्राचीन बड़े २ मठ हैं। यात्रा हरसाल हुआ करती है, प्राचीन दुर्ग भारत की कला-प्रदर्शन की छटा दर्शाते हैं। यहा पर पाण्डवो का भ्रमण तथा निवास भी बतलाते हैं। पेशवा कालीन मराठो के युद्ध की कुछ निशानियाँ बतलाते हैं। वहा महाराष्ट्र वीरों के समय का एक दुर्ग भी है।

फिर उदगीर से मालकी नामक स्थान को प्रस्थान किया, वहा कोई पेशवा काल मे रामचन्द्र नामक राजा राज्य करता था। उसको पेशवाओं के कार्यकर्ता ने अग्नि के भेट किया था जिसका परिणाम पूना नगरी मे पेशवा समूह को प्रत्यक्ष है। स्वार्थता, पदलोलुपता अधिक काल तक चिरस्थायी रूप मे नहीं रह सकती। यह एक ईश्वरीय नियम है पक्षपात रहित सत्य न्याय का आचरण राज्य शक्ति का प्रजा की रक्षा करना परम कर्तव्य है। किले में तहसील का कार्यालय है यहा पर आर्य पुरुषों पर उदण्ड विधर्मियो ने अनेक प्रकार की उदण्डता की है परन्तु जो सच्चा सोना होगा अग्नि में तपकर अधिक मात्रा में चमकदार होकर लाभकारी होता है।

उसी प्रकार यहा के श्री तुलसीराम जी के साथ जो कि आर्यसमाज के मन्त्री हैं उनके साथ अनुचित व्यवहार किया परन्तु ईश्वर की कृपा से समाज का कल्पवृक्ष हरा भरा है और भावी काल में भी सबको सुख प्राप्त होगा। यहा भी वर्षा वेग अधिक रहा। इस भालकी नगर मे आर्यसमाज की ओर से एक व्यायामशाला चल रही है। कुमार बडी ही उदारता से दक्षता पूर्वक अपना कार्य कर गण समूह की सेवा में तत्पर रहते हैं। यही आर्यकुमार वीरा का परम कर्तव्य है। दूसरी इस नगर मे हनुमान व्यायामशाला पृथक् चल रही है । वे वैदिक प्रचार मे सम्मिलित होते रहते थे। एक दिन हनुमान व्यायामशाला के कुछ कार्यकर्ताओ ने आकर आग्रह किया कि "आप हमारी व्यायामशाला का दिग्दर्शन करने की कृपा करें" परन्तु मेरे पैर में चोट थी फिर भी सायङ्काल को आर्यसमाज के मन्त्री श्री तुलसीराम जी तथा अन्य सज्जनों के साथ वहा गया। उन्होने बड़े ही सजावट के साथ तैयारी की थी । हर प्रकार के शस्त्रादि साधारण व्यायाम सम्बन्धी खेल, गदा, पटा लेजम आदियों का दिग्दर्शन हुआ। कुमारो ने कई प्रकार के शारीरिक व्यायाम हस्तक्रिया दिखलाई। ईश्वर की कृपा से यहा के कार्यकर्ता, विशेषकर मन्त्री जी का त्याग अपूर्व है। उनके उत्साहित कार्य की वृद्धि हो।

यहाँ से मैं रेल द्वारा बीदर को जो निजाम राज्य का प्रधान जिला है तथा व्यापारिक दृष्टि से भी मुख्य समझा जाता है पहुँचा, वहा श्री ठाकुर भवानीसिंह जी वर्मा एक पुराने राज्य के मान्य-गणों मे से हैं। वहा विदर्भ राज्य के जमाने का दुर्ग भी मौजूद है ऐसा बताया परन्तु ससार की गति परिवर्तन शील है, उस दुर्ग के चारों ओर नहर रूपी खँदक बडी गहरी है कई योजन की परीधि मे घिरा हुआ है, अब वीरान रूप में पड़ा है। वहाँ से बीदर के बाजारमे गये देखा कि जो बाजार का मुख्य-भाग चौक कहलाता है वह जलकर खाक होकर राख की ढेरियाँ, दीवारें जलकर खडहर के रूप मे खडी हैं, लोहे के बड़े बड़े बीम (गर्डर) धनुष के आकार कमान के रूप में झुके टेढे बाँके हो गये हैं।

वहाँ से मैंने (हैदराबाद) भाग्यनगर को प्रस्थान किया। वहा एक मुकाम करके सिकन्दराबाद आर्य समाज मै गया परन्तु पैर में अधिक पीड़ा होने के कारण शहर मे भ्रमण न कर सका। समाज मन्दिर में ही वैदिक धर्म का सदेश सुनाता रहा और उन दिनों प्रचलित साम्प्रदायिक प्रथा के अनुसार आषाढ के देवी के मेले में जन समूह एकत्रित होता रहा जिसमें अनेक पशुओ की वलियाँ होती हैं। परन्तु मैं आर्य वीरों को उनके रोकने के प्रति उत्साहित करता रहा, जिससे मूक पशुओं की बलियाँ बन्द हो गई और पैर के दुःख के कारण निजामाबाद आदि दो एक स्थान छूट गये। —केवलानन्द सन्यासी

आर्य वीर दल शिविर (गुरुकुल डौरली) मेरठ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सरक्षता मे दयानन्द महाविद्यालय गुरुकुल डौरली मेरठ के मैदान में ता० १७ जूलाई १६४० ई० को आर्य वीरदल शिक्षण शिविर आरम्भ किया गया। इस शिविर मे मेरठ, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, देहरादून, बुलन्दशहर देहली, रोहतक, गुड़गावा, करनाल, हिसार तथा जींद के इलाको से क्रमश १५, ८, ४, २, ४, ४, ७, ४ १, ५, ८ अर्थात् ५८ सैनिकों ने रहकर शिक्षा ग्रहण की। श्री सूर्यभानु, शाहदरा तथा शिवनारायण खेसडा बीच म बीमार होने तथा अन्य अनिवार्य कारणो से चले गये।

शिविर मे दल परावन्दी (Drill) तथा शारीरिक व्यायाम (P T) की शिक्षा श्री सूबेदार टेकचन्द जी तथा उनके साथ आये हुये कुछ (Instructors) महोदय देते रहे। लाठी की शिक्षा श्री महेशचन्द जी व्यायाम शिक्षक गुरुकुल डौरली विशेष रूप से देते थे। प्रारम्भिक चिकित्सा विषय पर डाक्टर कुजबिहारीलाल जी मेरठ से पधार कर व्याख्यान देते रहे। बौद्धिक शिक्षणके निमित्त श्री शिविराध्यक्ष के अतिरिक्त समय २ पर श्री प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम ए श्री प्रो० महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम ए श्री स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजकाचार्य श्री प० ज्ञानचन्द्र जी बी ए श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी झज्जर, श्री प० बुद्धदेव जी वेदालकार, चा० चरणसिंहजी एम ए, प्रो० रामसिंहजी एम ए देहली, श्री शिवचन्द्रजी, श्री प० गगाप्रसाद जी एम ए (Retired Chief Judge Tehri) श्री सद्दीकी साहब स्काउट मास्टर, श्री शेरसिंह जी एम ए, श्री एस पी महरा एम ए (Inspector R D. A) ने पधारकर भाषण दिये। भाषणा के विषय शिक्षा क्रमके अनुसार ही रक्खे गये थे। व्यवहारिक विषयों पर श्री भैरोदत्त जी नत्याल देहरादून ने व्याख्यान दिये तथा क्रियात्मक शिक्षण भी दिया। शिविराध्यक्ष तथा श्री शिक्षाध्यक्ष के भी व्याख्यान इस सम्बन्ध म हुए बौद्धिक शिक्षण के सम्बन्ध मे लगभग ३५ व्याख्यान हुये। सैनिका को पृथक् विषय पर पर्याप्त नोट्स भी लिखाए गये।

ता० २ तथा १४ अगस्त को रात्रि के समय शिविर मे आनन्द गोष्ठी (Campfire) हुई जिनम सैनिको ने विशेष उत्साह से भाग लिया।

सप्ताह म एक बार सैनिको का Outing होता था और इस दिन समस्त सैनिक प्रात ५ बजे लगभग १० मील की यात्रा पर March करते हुये जाते थे। मार्ग मे कई प्रकार के अन्य शिक्षण भी दिये जाते थे।

शिविर मे साय समय सम्मिलित सन्ध्या तथा यज्ञ का भी क्रम रहता रहा। श्री भवानी शकर जी इसके अध्यक्ष रहे। साधारण पहरे के अतिरिक्त २ दिन विशेष प्रतिबन्ध के साथ

प्रहरी कार्य (Sentinal Duties) की शिक्षा भी सैनिकों को दी गई। श्री भैरवदत्त इस कार्य के इन्चार्ज थे। परीक्षा १ अगस्त को सैनिकों की लीगई। परीक्षा में ५१ सैनिक सम्मिलित हुये।

वर्षा ऋतु होने के कारण शिविर में Malaria का भी असर हुआ। ४ वा ५ सैनिक निरन्तर Malaria का शिकार होते रहे। श्री सत्य बन्धु जी M A अपने प्रभात आश्रम के तथा जत्थे के अन्य सज्जनों के साथ चिकित्सा व रोगी सुश्रूषा के कार्य में विशेष भाग लेते थे।

१५ अगस्त को सैनिका की प्रतिज्ञा धारण उत्सव मनाया गया। प्रात.काल विशेष यज्ञ किया गया तथा गुरुकुल की ओर से सैनिको का अभिनन्दन किया गया। मध्यान्होपरान्त श्री ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार देहली के सभापतित्व मे विशेष उत्सव मनाया गया। उत्सव मे बाहिर से बहुत से सज्जन भी पधारे। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अतिरिक्त सैनिका के लाठी व परावन्दी के प्रदर्शन हुए। शिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये तथा आर्य ध्वज के नीचे विशेष विधान के अनुसार शिविराध्यक्ष ने सैनिकों से व्रत ग्रहण कराया तथा दीक्षित किया।

१६ अगस्त को प्रात ध्वजावतरण होकर शिविर समाप्त किया गया।

शिवदयालु
अध्यक्ष आर्य वीर दल शिविर, गुरुकुल डौरली मेरठ,

विज्ञप्ति

सब आर्य समाजों तथा आर्य वीर दलों के नाम

भारत सरकार ने ५ अगस्त के नोटीफिकेशन के द्वारा गैर सरकारी सङ्गठनों के लिये सशस्त्र अथवा निःशस्त्र ड्रिल आदि करना और मिलिटरी अथवा अन्य सरकारी वर्दियों से मिलती जुलती हुई वर्दी पहनना मना कर दिया है।

प्रश्न यह है कि इस नोटीफिकेशन को दृष्टि में रखते हुए आर्य वीर दलों का क्या व्यवहार होना चाहिये ? सरकारी नोटीफिकेशन इतना स्पष्ट नहीं है कि उससे यह समझ में आ जाये कि यह आर्य वीर दल के कार्य-क्रम के किस किस भाग पर किस किस प्रकार लागू होगा। आशा की जाती है कि सरकार इस विषय को शीघ्र ही स्पष्ट करेगी।

सम्प्रति मै आप से इतना ही निवेदन करना चाहता हूँ कि सार्वदेशिक सभा की नीति यह है कि देश में अभ्यान्तरिक शान्ति को स्थिर रखने में सरकार की सहायता की जावे।

आर्य वीर दल का कार्य-क्रम जैसे ओ३म् पताका का अभिवादन, व्यायाम, प्रथम सहायता (First Aid), रोगी की देख (Nursing), आग बुझाना, धार्मिक मेलों तथा उत्सवों का प्रबन्ध करना, पीड़ितों की सहायता करना, धार्मिक अथवा सामाजिक कुरीतिएँ मिटाना, इत्यादि सामाजिक सेवा के कामों का दैनिक अभ्यास जारी रखना चाहिये। इन कार्यों के लिये आवश्यक नैतिक बौद्धिक शिक्षण भी जारी रहना चाहिये।

आर्य वीर इस बात में स्वतन्त्र हैं कि यदि वे चाहें तो सरकार द्वारा स्थापित नागरिक दलों (Civic Guards) में भरती होकर देश सेवा करें।

सुधाकर

१४।८।४०

मन्त्री—सार्वदेशिक सभा

जन गणना १९४१

क्या हम आर्यसमाज की दूसरी बड़ी भारी विजय के लिये श्रेय प्राप्त करेंगे ?

आगामी जनगणना १९४१ में होगी। १ मार्च इसकी अन्तिम तिथि है। हमारा यह लक्ष्य होना चाहिये कि इस जन-गणना में आर्यों की संख्या ५० लाख हो जाय। यह कोई बड़ी बात नहीं है। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह की सफलता ने आर्य-समाज को सर्वसाधारण में इतना सर्वप्रिय बना दिया है कि यदि हम सर्वसाधारण तक पहुँच कर उन्हें अपने आपको आर्य लिखाने की प्रेरणा कर सके तो हमारा यह लक्ष्य पूर्ण हो सकता है।

वास्तव में आगामी जन गणना में आर्यों की संख्या ५० लाख कर देना हैदराबाद सत्याग्रह की सफलता से गौरव में किसी प्रकार कम न होगा। यह आर्य-समाज के लिये दूसरी बड़ी भारी विजय होगी। जब हैदराबाद सत्याग्रह की सफलता के लिये २५ आर्यवीरों ने अपने प्राणों की आहुति दी, हजारों सत्याग्रहियों ने जेल की मुसीबतें सही और आर्यजनता ने अपना लाखों रुपया न्यौछावर किया तो क्या हम आर्यसमाज की इस दूसरी विजय के लिये जानें और धन देकर नहीं, जेल की मुसीबतें सहकर नहीं प्रत्युत् केवलमात्र आगामी ६ मास में कुछ असाधारण पुरुषार्थ करके अपना कर्त्तव्य पालन नहीं करेंगे ?

इस कर्तव्य की पूर्ति तभी हो सकती है यदि सब आर्य संस्थायें तथा प्रत्येक आर्य, आगामी ६ मास के लिये जन गणना सम्बन्धी उपरिलिखित उद्देश्य की पूर्ति अपना मुख्य कार्य बनाले और जहां तक हो सके अपने शेष कार्यों को कुछ समय के लिये पीछे डाल कर अपने समय का अधिकतर भाग इस कार्य में लगावे।

इस कार्य के लिये जहां असाधारण पुरुषार्थ की आवश्यकता है वहां नियमबद्ध रूप में कार्य करने की भी आवश्यकता है, इसलिये संक्षेप से इस कार्य को करने का क्रम नीचे लिखा जाता है —

१. प्रत्येक आर्य-प्रतिनिधि सभा को चाहिये कि वह आगामी ६ मास के लिये अपने सब उपदेशकों तथा कार्यकर्ताओं को मुख्यरूप से इस कार्य पर नियुक्त कर देवे और प्रत्येक उपदेशक तथा कार्य-कर्ताओं के लिये मण्डल नियत करके उन्हें निर्देश करें कि वे तूफानी दौरा करके सार्वदेशिक सभा का जन गणना सम्बन्धी आदेश अपने मण्डल के कोने २ में और एक २ व्यक्ति तक पहुँचाने की कृपा करें।

२. (क) प्रत्येक जिले में शीघ्र ही एक अथवा अधिक जनगणना कान्फ्रेंस करने का यत्न करना चाहिये और इनके द्वारा जनता में उत्साह पैदा करना चाहिये

कि वे अविलम्ब रूप से जनगणना सम्बन्धी अपना २ कार्य अपने २ हल्के मे शुरू करदे।

(ख) इसी कान्फ्रेंस के साथ जिला के मुख्य आर्य कार्यकर्त्ताओ, ग्रामो के मुखियाओ तथा बिरादरी के चौधरियो को एकत्र करके उन्हे भी तत्काल इस कार्य को अपनाने के लिये प्रेरणा करनी चाहिये। ध्यान रहे कि प्राय ग्रामो और बिरादरियों मे जो कुछ मुखिया और चौधरी लोग कहते है वही होता है।

(ग) इस कान्फ्रेंस मे सारे जिले के समाजो को संख्यानुसार खड बनाने चाहिये और प्रत्येक समाज को अपने २ खड के प्रत्येक ग्राम मे जनगणना का कार्य करने के लिये उत्तरदायी बनाना चाहिये।

(घ) बडे शहरो मे आर्य सभासदो की टोलिया बनाकर एक एक मुहल्ले के लिये एक एक टोली नियत करनी चाहिये।

नोट —आर्य समाज इन सब कामों को तभी पूर्ण कर सकती है जबकि सभी आर्य सभासद् आगामी छ मास के लिये अपने को आर्यसमाज का प्रचारक समझलें और अपनी सेवा स्वय अपने २ समाज को पेश करे। आर्य वीर दलो के स्वय सेवको, आर्य अध्यापको, हैदराबाद के आर्य सत्याग्रहियो इत्यादि सर्व प्रकार के आर्य कार्य कर्ताओ की सेवाये इस कार्य के लिये प्राप्त करनी चाहिये।

३. आर्य हरिजनो मे जनगणना सम्बन्धी सन्देश पहुँचाने का विशेष प्रयत्न करना चाहिये। आवश्यकतानुसार उनकी एक २ बिरादरी की कान्फ्रेंस करनी चाहिये और उनके चौधरियो को प्रेरणा करनी चाहिये कि वे जनगणना सम्बन्धी आर्य समाज के उद्देश्य की पूर्ति मे सहायक हो। हरिजनो की कोई बस्ती ऐसी नही रहनी चाहिये और उसमे कोई व्यक्ति ऐसा न रहना चाहिये जिसके पास जनगणना सम्बन्धी हमारा सन्देश न पहुँचे। याद रहे कि आर्यो की सख्या वृद्धि के लिये यह हमारे लिये सब से अधिक उपजाऊ क्षेत्र है।

नोट —हरिजनो मे मुसलमानो तथा ईसाइयो के आर्य (हिन्दू) विरोधी प्रोपेगेंडा (प्रचार) तथा अन्य प्रकार की बहकाने वाली कार्यवाहियो के प्रति विशेष ध्यान देना चाहिये।

४ पहाड़ी इलाको मे अशिक्षित लोगो में जनगणना सम्बन्धी सन्देश पहुँचाने के लिये विशेष प्रबन्ध करना चाहिये।

५. जिन प्रदेशो के आर्यों की सख्या बहुत है जैसे पजाब के हरियाना प्रान्त

तथा जम्मू प्रान्त यू० पी० मे मेरठ कमिश्नरी तथा कमायूँ कमिश्नरी, हैदराबाद रियासत मे मरहठावाड़ी इत्यादि में प्रचार का विशेष प्रबन्ध होना चाहिये और इस कार्य के लिये आवश्यकतानुसार विशेष उपदेशक नियत करने चाहिये।

६ जनगणना के कानून के अनुसार प्रत्येक लिखा पढा व्यक्ति सरकार को अपनी सेवाये बतौर गणक अथवा प्रबन्धक के पेश कर सकता है इसलिये प्रत्येक नगर और ग्राम मे सरकार के साथ जनगणना के कार्य मे सहयोग देना चाहिये और अपनी सेवा उस कार्य के लिये पेश करनी चाहिये।

७ जनगणना दो प्रकार की होगी।

१ प्रारम्भिक (Preliminary) —जो कि शीघ्र ही शुरू हो जायेगी। उसमे सरकार द्वारा नियुक्त व्यक्ति प्रत्येक घर मे पहुँच कर जनगणना के नक्शे तैयार करेंगे। यह कार्य उसी तरह प्रत्यक घर मे पहुँच कर होगा जैसे कि म्यूनिसिपैलिटियो तथा एसेम्बलियो के वोटरों की सूची तैयार की जाती है।

२ अन्तिम (Final) —यह प्राय जनगणना के लिये नियुक्त अन्तिम तिथि अर्थात् १ मार्च को होगी। परन्तु इस बार यह जनगणना सम्भवत २७-२८ फरवरी और १ मार्च इन तीन तारीखो की रात्रियों मे होगी। इन रात्रियों को केवल गिन्ती होगी। प्रारम्भिक जनगणना के शुरू होते ही हमारे कार्यकर्ता सरकार द्वारा नियुक्त व्यक्तियो के साथ रह कर अपने २ मुहल्ले अथवा खड मे जनगणना का कार्य करावे और देखे कि आर्यो की सख्या ठीक प्रकार लिखी जाती है।

८. जहा कहीं जन-गणना सम्बन्धी अनुचित कार्यवाही होती हो उसकी रिपोर्ट अपने-अपने प्रान्त के Census Superintendent तथा जिले की समाज, प्रान्तीय आर्य-प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक सभा को देनी और उसके दूर कराने के लिये अन्य उचित उपाय करने चाहिये।

द्रष्टव्य —जन गणना सम्बन्धी प्रत्येक कार्यकर्ता का यह कर्तव्य होगा कि वह अपने कार्य की रिपोर्ट अपने पास की समाज मे प्रति सप्ताह दे दे और प्रत्येक प्रान्तीय आर्य-प्रतिनिधि सभा तथा समाजों से प्रार्थना की जाती है कि वे अपने कार्यकी मासिक रिपोर्ट सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा, देहली को भेजने की कृपा करे।

सुधाकर

मन्त्री—

सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा, देहली।

विज्ञप्ति

समाचार पत्रों में यह समाचार छप चुका है कि हैदराबाद राज्य में गुलबर्गा के कस्टम आफिस ने एक पार्सल में प्राप्त हुये सत्यार्थ प्रकाश यह कहकर समाज को देने से इनकार कर दिया कि यह पुस्तक राज्य में जब्त है। इस समाचार के छपने से आर्य जनता में स्वभावतया असन्तोष की लहर दौड गई। सार्वदेशिक सभा ने तत्काल इस सम्बन्ध में कार्यवाही शुरू करदी। आर्य जगत को यह सूचना दी जाती है कि इस कार्यवाही के परिणाम स्वरूप गुलबर्गा के महकमा करोडगिरी ने स्वय पत्र लिख दिया है कि वे सत्यार्थ प्रकाश ले जायें।

इस सम्बन्ध में सभा की ओर से जो कार्यवाही की गई उसका सार जनता की सूचना के लिये नीचे दिया जाता है —

२० अगस्त सन् ४० को आर्य समाज गुलबर्गा की ओर से निम्न तार सभा को मिला।

Custom office Gulbarga detained five days Rigved-Shatak etc Upnishad, Manusmriti and finally confiscated Satyarthprakash 4 copies Aryasamaj Gulbarga

इस पर सार्वदेशिक सभा के माननीय प्रधान श्री घनश्यामसिंह जी ने निम्न तार राइट आनरेबुल सर अकबर हैदरी के नाम ता० २२ अगस्त सन् ४० को भेजा।

Right Hon'ble Sir Akbar Haideri,

Hydrabad

Telegram from Aryasamaj Gulbarga to Delhi Quote Custom office Gulbarga detained five days Rigved-Shatak etc. Upnishad, Manusmriti and finally confiscated Satyarthprakash four copies Unquote These are well known Sacred religious books Stop I hope misunderstanding some where Stop shall be grateful for correct information

Ghanshyam Singh Gupta

इस के साथ ही आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य के अधिकारियों ने इस सभा की आज्ञानुसार आर्य समाजिक जनता के भाव राज्याधिकारियों तक पहुँचाने के लिये उचित कार्यवाही की। परिणाम स्वरूप गुलबर्गा के कस्टम 'करोडगिरी' आफिस ने निम्न लिखित पत्र आर्य समाज गुलबर्गा के मन्त्री के नाम लिखा जिसकी प्रतिलिपि आज ही सभा कार्यालय मे प्राप्त हुई है।

नोटिस

मरासला महकमा महसूल खाना,—पेठ गुलबर्गा शरीफ, करोडगिरी,
मुवालिक महकमा सरकार आली,
वाकया ७३-११-१६३६ फसली निशान

जरिया रजिस्ट्री रसीद तलब। मिन जानिब मौलवी मुहम्मद कुतबुद्दीन खा मौतमिम महसूलखाना अमीन पेट करोडगिरी।

बखिदमत तुकाराम साहब
मन्त्री आर्य समाज आढत बाज़ार गुलबर्गा शरीफ।

मुकद्दमा सत्यार्थप्रकाश बरामद करना।

बमुकद्दमा सदर तरकीहम है कि तुम्हारी ज़ब्त शुदा किताबें सत्यार्थप्रकाश महकमा कोतवाली से वापिस हो चुकी है। लिहाज़ा दफतर हाज़ा मे हाज़िर होकर किताबें हासिल करलें। फक़त हस्व तजवीज़

सरिश्तादार

मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।
४-६-४०

लेख-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १५ | आश्विन १९९७ | अक्तूबर १९४० ई०] | [दयानन्दाब्द ११६ | अङ्क ८

* वेद की शिक्षाएँ *

ईजानाः स्वर्गं यन्ति लोकम् । अथर्व० १८।४।२

यज्ञ करने वाले उत्तम गति को प्राप्त करते हैं ।

Those who perform Hawan and are devoted to self-less Service of Humanity attain to Peace and Bliss.

* * *

अयज्ञियो हतवर्चा भवति । अथर्व० १२।२।३७

यज्ञहीन का तेज नष्ट हो जाता है ।

Those who are devoted to selfish pursuits of life lose their Vigour and Virility

उद्बोधन !

[ले०—श्री प० सिद्धगोपाल जी, "सिद्धान्त रत्न" दिल्ली]

मन मधुकर हृदय कमल का,
मकरन्द अलौकिक चखले ।
नव-रस षट-रस रस का रस,
है उर-सरोज मे लखले ।

चखकर इसको रस-प्रेमी !
सब पड़े सरस-रस फीके ।
अस्तित्व सभी खो बैठे,
वे रसना के रस नीके ।

नीरस की नीरसता का,
आभास मिलेगा पहले,
पर, घबराना मत चञ्चल,
दृढ़ हो नीरसता सहले ।

ये नीरसता ही तुमको,
कर देगी 'रभिक' रमीले ।
है श्रेय प्रेय सयोजित,
नीरसता छैल-छबीले ।

तू सुमन, सुमन पर डोले,
मन-मधुकर क्या मन ठानी ?
वह सुमन न इन सुमनों मे,
चाहे जिसको अज्ञानी !

करता पर का क्यों चिन्तन,
मन सुमन स्वय तू होले ।
सुमनों का एक सुमन बन,
क्यों नाहक बन २ डोले ।

कर से करनी कर नीकी,
करनी ही जग करनी है ।
नीकी करनी करनी ही,
तरने को भव तरनी है ।

आ गये आज सन्मुख ही,
वे दिन तव चिर-अभिलाषित,
जाना "गोपाल" वहीं अब,
चिन्तन था जिसका नित-नित ।

तृत्व वा त्रिमूर्ति (Trinity)

[ले०—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज]

वेद में ईश्वर जीव और प्रकृति के नित्यत्व का विधान है। जीव ईश्वराधीन है और प्रकृति ईश्वर और जीव दोनों के आधीन है। यह तृत्ववाद यद्यपि हिन्दुओं में बराबर माना जाता रहा है। रामानुज और मधु आदि आचार्य बराबर इसकी पुष्टि करते रहे हैं परन्तु पौराणिक काल में जो त्रिमूर्ति प्रत्येक की जुबान पर रही चली आई थी वह ब्रह्मा, विष्णु और महेश के रूप मे थी। ईश्वर के यद्यपि यह तीन रूप थे परन्तु पुराणों में इन्हे सर्वथा एक दूसरे से पृथक् माना गया है कही २ इनके पारस्परिक युद्ध का भी वर्णन मिलता है।

(२) मिश्र में इस तृत्व के तीन अग थे। वे मानते थे कि पूर्णता के लिये तीन अगों का होना आवश्यक है (१) बल (The animal) (२) मानसिक बल (The intellectual) (३) आत्मिक बल (The spiritual) वे ईश्वर को होरस कहते थे और उसकी त्रिमूर्ति की कल्पना (क) Horns the King (ख) Horns the Ra (ग) Horns the Leura baens के रूप में करते थे। ७०० बी० सी० में यह विचार मिश्र मे आम तौर से प्रचलित थे—

(३) असीरिया में ७२० बी० सी० में एक देवता की कल्पना की जाया करती थी कि उसका शिर तो मनुष्य का था (Typifying wisdom) धड बैल का था (बल प्रदर्शक) और उसके पर राज हस के थे (Representing omnipresence)

(४) प्रारम्भ में ईसाई लोग इस त्रिमूर्ति के सिद्धान्त को नहीं मानते थे। यहा तक कि यह (Trinity) शब्द न बाइबिल में कही मिलता है न अन्य प्रारम्भिक ईसाई साहित्य मे इस भाव को प्रकट करने वाला कोई अन्य शब्द भी मिलता है। यह शब्द ग्रीक दर्शन का है और प्लैटोनिस्ट के फलसफे में प्रयुक्त हुआ मौजूद है। वे ईश्वर को इस त्रिमूर्ति का सघात मानते थे। (१) (The Supreme God (२) The mind or intellect (३) The Soul उनका विचार था कि

स० २ की उत्पत्ति सं० १ से हुई और स० ३ दोनों सं० १ और २ पर निर्भर थी। इथेन्स के बिशप ऐरियन्स (Arians) को कहा था कि वे जाकर प्लैटोनिस्ट की इस त्रिमूर्ति को सीखें। सेन्ट आगस्टिन ने इस बात को खुले तौर से स्वीकार किया था कि उसे प्लैटोनिस्ट का साहित्य पढ़ने से पहले किसी त्रिमूर्ति का ज्ञान नहीं था। नीस (Nice) कौन्सिल ने ३०५ ई० में ईसा को देवता ठहराया था और निसीन (Nicene) की कौन्सिल ने ३२५ ई० में ईसा को (God of God, very God of very God) ठहराया था और कौन्स्टैंटीनोपिल की कौन्सिल ने ३८१ ई० में "Three persons in one God" के सिद्धान्त को मानना प्रत्येक ईसाई के लिये आवश्यक ठहराया था। सन् ३८३ ई० में राजा थियोडोसियस (Theodosius) ने इस सिद्धान्त के न मानने पर दण्ड देने की धमकी दी थी। देखो (Origin of the Doctrine of the trinity by Hugls 1805) इस (तृत्व) वाद को इतिहास बतलाता है कि वेदों में इस बात का जो वैज्ञानिक रूप था वह समय के हेर फेर से उलटता पुलटता ईसाइयों के त्रिमूर्ति के सिद्धान्त के रूप में आ गया और दोनों में इतना अन्तर हो गया कि अब एक दूसरे को मिलाना प्रायः असम्भव हो गया।

संसार के तीन प्रकार के शत्रु हैं

[ले०—श्री पडित बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार]

हमारे एक प्रकार के शत्रु आधिदैविक विपत्तिया हैं, जैसे अतिवृष्टि, अनावृष्टि, और भूकम्प आदि । इन से हम दो प्रकार से युद्ध कर सकते हैं—

(१) उत्तम आचरणों द्वारा ।

(२) ईश्वराराधन द्वारा ।

यहा उत्तम आचरणों से अभिप्राय इन विपत्तियों का यथा शक्ति प्रतिकार करने से है। जैसे बाधों द्वारा अतिवृष्टि का नहरों द्वारा अनावृष्टि का। विशेष प्रकार के घर बनाकर भूकम्प का प्रतिकार करना। ये सब उत्तम आचरण हैं।

आधिदैविक विपत्तियों के हमारे सब प्रतीकार पहले उपाय के बिना अधूरे हैं, यह हमें कभी नहीं भुलाना चाहिये।

मानव जातिके दूसरे शत्रु आधिभौतिक हैं। सर्प, बिच्छू, मच्छर, टिड्डी आदि प्राणियों तथा डाका युद्ध आदि परस्पर के कलह से जो कष्ट हमें पहुँचते हैं वे हमारे आधिभौतिक शत्रु हैं। इनका भी उपाय मानव जाति की सम्मिलित शक्ति से इनका प्रतिकार करना ही है । वह प्रतिकार दो प्रकार का है—

(१) इन विध्वसक शक्तियों को यथासभव उपकारी बनाना और

(२) यदि ऐसा न हो सके तो इनका विध्वस कर डालना।

हमारे तीसरे शत्रु आध्यात्मिक हैं। आधिदैविक तथा आधिभौतिक दोनों प्रकार के दुख अन्ततोगत्वा हमारे आध्यात्मिक शत्रुओं के ही खेल हैं। इससे पहले कि हम इन शत्रुओं से लड़ने के लिए मानव राष्ट्र को सगठित करने का विचार करें। यह आवश्यक है कि हम यह जानें कि यह आध्यात्मिक शत्रु कौन से हैं और किस प्रकार आक्रमण करते हैं।

ससार के पाच आध्यात्मिक शत्रु हैं—

(क) अज्ञान। (ख) स्वार्थ। (ग) विक्रोश। (घ) आलस्य। (ङ) अभाव ।

अज्ञान

भगवान वेद व्यास ने गीता में कहा है "न हि ज्ञानेन सदृशम् पवित्रमिह विद्यते।" अर्थात् ज्ञान के सदृश पवित्र वस्तु ससार में दूसरी नहीं है। इससे स्पष्ट है कि अज्ञान के समान अपवित्र वस्तु भी दूसरी नहीं है। मैं अज्ञान को सबसे बडा शत्रु इसलिए कहता हूँ कि यह ससार के हितैषियों के हाथ से भी संसार का अहित करवा डालता है। जो लोग स्वभाव से दुष्ट हैं। जिन्हें पर पीड़ा में निष्कारण आनन्द आता है, अथवा जो स्वार्थ वश दूसरों के हित का नाश करते हैं उनके हाथों समार का अनिष्ट होना तो बिलकुल स्वाभाविक ही है। किन्तु अज्ञान से तो हित चाहने वाले भी, अपनी समझ में हित करते हैं ऐसा समझते हुए भी अहित कर बैठते हैं। अथवा समस्या उपस्थित होने पर किं कर्त्तव्य विमूढ़ होकर विवश हो बैठे रहते हैं। जिन मनुष्यों ने सत्य का प्रकाश करने वाले विज्ञान वेत्ताओं को धमकाया, सताया और जीते जी जला तक दिया वे अपनी समझ में ससार और स्वय विज्ञान वेत्ताओं दोनों का हित ही साध रहे थे। जब तक रेलगाड़ी और व्योमयान का आविष्कार न हुआ था मनुष्य दूर देशस्थ मनुष्यों का हित चाहते हुए भी विवश थे। इन सारे दुखों का कारण था अज्ञान।

मनुष्य को केवल विचारों के प्रकाश मात्र के लिए दण्ड नहीं देना चाहिए। क्योंकि न जाने जिन विचारों को हम आज सर्वथा सत्य समझते हैं कल उनमें कुछ परिवर्तन हो जाय यह विचार स्वातन्त्र्य की भावना कोई गहरा मय नहीं है किन्तु इतने से सत्य के यथार्थ ज्ञान के न होने से कितने पूजा के योग्य महा-पुरुषों को बलिदान किया गया। जब इस पर विचार करते हैं तो आश्चर्य होता है। डेगची से ढक्कन उछलते किसने नहीं देखा ? किन्तु इतनी सी बात के पूर्ण परिणाम क्या हैं। इसी बात के ज्ञान ने मानव-जाति के इतिहास मे कैसा विशाल परिवर्तन कर डाला। जब यह विचारते हैं तो कहना पडता है कि तिनके की ओट पहाड़ छिपा पडा था। इसीलिए चरक महाराज के स्वर में स्वर मिलाकर कहना पड़ता है कि 'प्रज्ञापराधो मूल सर्वरोगाणाम्' अर्थात् समझ का दोष सब रोगों की जड़ है।"

इस समय मानव-जाति के सगठन के सम्बन्ध में जो अज्ञान फैला हुआ है। आज एक साधारण सी सामाजिक उन्नति की बातों को लोक-व्यवहार तक

पहुंचाने में जितना श्रम का व्यय हुआ है और जितना अभी शेष है उसे देखकर तो और भी आश्चर्य होता है। जो साधारण सी भूलें हम एक छोटे से परिवार के सम्बन्ध में होना सहन नहीं कर सकते वे ही सारे मानव समाज को दुख दे रही हैं। यह देखकर किसे आश्चर्य न होगा।

स्वार्थ

ससार का दूसरा शत्रु स्वार्थ अथवा तृष्णा है। यों तो महात्माओं को छोड़ कर साधारण मनुष्य-मात्र स्वार्थ और प्रेम के मेल का परिणाम है। किन्तु कई मनुष्यों में यह स्वार्थ असाधारण मात्रा में पाया जाता है। भर्तृहरि जी ने मानव समाज के बड़े सुन्दर विभाग किए हैं। वे लिखते हैं—

एके ते पुरुषा परार्थ घटका' स्वार्थं विनिघ्नन्ति ये,
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभृत स्वार्था विरोधेन ये।
ते ऽपि मानुषराक्षसा' परहित स्वार्थाय निघ्नन्ति ये,
ये निघ्नन्ति निरर्थकम् परहित ते के न जानीमहे ॥

अर्थात् इस ससार में ४ प्रकार के मनुष्य हैं—

(१) वे महात्मा लोग जो अपने स्वार्थ का त्याग करके दूसरों का हित करते हैं।

(२) वे लोग जो यदि उनके स्वार्थ को हानि न पहुँचती हो तो यथाशक्ति परोपकार भी करते हैं। ससार मे सब से अधिक सख्या इन्ही लोगों क है।

(३) वे लोग जो स्वार्थ के लिये दूसरों के स्वार्थ का नाश करते हैं।

(४) वे लोग जो ठीक उसी प्रकार निष्काम भाव से दूसरों की हानि करते हैं जिस प्रकार निष्काम भाव से महात्मा लोग दूसरों का हित करते हैं। भर्तृहरि जी कहते हैं कि इनका नाम क्या धरूं यह समझ में नहीं आता।

स्वार्थ मनुष्य को राक्षस बना देता है। यह काम, लोभ मोह और अभिमान के रूप में प्रगट होता है। इनमें काम और लोभ मुख्य हैं।

विक्रोश

मनुष्य-जाति का तीसरा शत्रु विक्रोश है। यह वह दुर्गुण है जिसके कारण वे मनुष्य उत्पन्न होते हैं जिन्हें भर्तृहरि जी ने चौथी श्रेणी में रखा है। कई मनुष्यों में दूसरों के दुख में आनन्द लेने की स्वाभाविक दुष्प्रवृत्ति होती है। वह

काम, क्रोध, लोभ आदि किसी भी कारण से नहीं, किन्तु निष्कारण दूसरों को पीड़ा देते हैं। उनके हृदय में जो स्वाभाविक विध्वस कारिणी प्रवृत्ति होती है उसे हमने अनुक्रोश के उल्टे विक्रोश का नाम दिया है।

वस्तुत' देखा जाय तो स्वार्थ और विक्रोश का मूल भो अज्ञान है। यदि इन मनुष्यों को अपने कर्म्मों के फल का पूर्ण रूपेण ज्ञान हो जाय तो ये ऐसा कभी न करें। पूर्ण ज्ञान से हमारा तात्पर्य्य है कि उन्हें साक्षात्कार हो जाय क्योंकि उपदेश मात्र से ज्ञान तो सब को मिल ही जाता है।

आलस्य

मानव-समाज का चौथा शत्रु आलस्य है। इसे हमने स्वार्थ तथा विक्रोश से पृथक् इसलिये रखा है क्योंकि यह बहुधा धर्मात्मा मनुष्यों में भी पाया जाता है। यह वही वस्तु है जिसे गीता में—

तमस्त्वज्ञानज विद्धि मोहन सर्व देहिनाम्।
प्रमादालस्य निद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत॥ गीता १४। ६॥

के नाम से याद किया है। बहुत से मनुष्य ऐसे पाये जाते हैं जो सचित धन में से सहस्रों दान करते हैं परन्तु स्वय कुछ कार्य्य नहीं करते। उनमें पराये दुख में सम वेदना पाई जाती है। वे दान भी करते हैं इसलिये उन्हें स्वार्थी कैसे कहें। वे किसो को जहा तक बन पडता है दुख भी नहीं देते। परन्तु स्वय कुछ नहीं करते। इनका दोष आलस्य है। ससार में किसो को 'दु ख न देना' इतने मात्र से मानव-जाति का कल्याण नहीं हो सकता। प्रत्येक मनुष्य को कुछ न कुछ 'देना' भो चाहिए। किन्तु भारतवर्ष में तो बहुत से धार्मिक सम्प्रदाय तक ऐसे हैं जो दुख न दे॥ मात्र में धर्म्म की इति श्री समझते हैं। उनका कहना है—

अजगर करे न चाकरी, पछी करे न काम।
दास मलूका कह गये, सब के दाता राम॥

ऐसे मनुष्य सचमुच अजगर की तरह चुपचाप पड़े रहते हैं। अजगर तो किसी को दुख भी देता है परन्तु वे किसी को दुख नहीं देते। किन्तु ऐसे मनुष्यों से भी मानव-समाज का हित नहीं हो सकता। इसलिये हमने आलस्य को मानव-समाज का चौथा शत्रु माना है।

वेद में इस पुरुषार्थ की क्रिया को सवन (Sctıaefım) के नाम से

पुकारा गया है। अर्थात् हर एक मनुष्य का धर्म है कि वह किसी न किसी पदार्थ में से सार को खींच ले। किसान बीज को साधन बना कर धरती में से अन्न सवन करता है। बढ़ई अपने यन्त्रों से लकड़ी में से उपकरणों का सवन करता है। रसायन शास्त्र का विद्वान् पदार्थों मे से उनके परस्पर सम्बन्ध की विद्या के तत्वों का सवन करता है। और फिर वे सब इन सवनों के परिणाम सोमों को भगवान् की भेंट करते हैं। जो सवन नही करते वे प्रभु के प्यारे नहीं है। वेद में कहा है 'य सुन्वत' सखा तस्या इन्द्राय गायत' (ऋ० १।४।१०) अर्थात् जो 'सवन करने वालों का सखा है उस इन्द्र के (परमात्मा वा राजा के) गीत गाओ।

अत आलस्य सवन का उलटा है। यह भी मानव जाति का महा शत्रु है।

अभाव

मानव-जाति का पाचवा शत्रु अभाव है। वस्तुत सोचें तो इसका भी मूल अज्ञान है। किन्तु यह उन मनुष्यों से भी पाप करवाता है जो स्वभाव से दुष्ट अथवा आलसी नहीं हैं। उदाहरण के लिये किसी देश मे दुर्भिक्ष आपडे तो वहा अच्छे पुरुषों को भी अपना आप सम्भालना कठिन हो जाता है। किसी ने क्या अच्छा कहा है —

'बुभुक्षित किम्न करोति पापम्।
क्षीणा नरा निष्करुणा भवन्ति।।'

अर्थात् भूखा आदमी कौन सा पाप नहीं कर डालता। भूखे लोग निर्दयी हुआ करते हैं।

यह अभाव दो कारणों से उत्पन्न होता है

(१) उपभोग्य वस्तुओं के ह्रास से।

(२) उपभोक्ताओं की अतिवृद्धि से।

ज्ञानी मनुष्य इन दोनों विपत्तियों का उपाय पहले से सोचकर इनका प्रतीकार करते हैं। इसी लिये हम कहते हैं कि मानव जाति का सबसे बडा शत्रु 'अज्ञान' है।

मन मन्दिर

[लेखक—बाबू पूर्णचन्द्र एडवोकट]

(५)

अघमर्षण मन्त्राः

ओ३म् ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोध्याजायत । ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णव ओ३म् समुद्रादर्णवा दधि संवत्सरो अजायत अहो रात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ॥ ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्ष मथो स्व ॥

यह तीनों मन्त्र सृष्टि उत्पत्ति के सम्बन्ध के हैं। परन्तु इन मन्त्रों को अघमर्षण मन्त्र कहा गया है। अघमर्षण से अभिप्राय पापों का नष्ट होना या उनका प्रायश्चित होना है। प्रश्न यह है कि सृष्टि रचना और पापों के प्रायश्चित से क्या सम्बन्ध। इस सम्बन्ध को समझने के लिये जरा गहराई में जाना पड़ेगा। सबसे पहला प्रश्न यह है कि हम पाप क्यों करते हैं। संसार में (Sin and secrecy) अर्थात् पाप और उनको छिपाने की भावना का घनिष्ट सम्बन्ध है। यदि पाप करने वाला यह जान ले कि उसका पाप छिपा नहीं रहेगा और उसको उसका दंड अवश्य मिलेगा तो वह पाप नहीं करेगा या पाप करने में संकोच करेगा। इन मन्त्रों में परमात्मा को सृष्टि की रचना का निमित्त कारण होना सर्वज्ञाता होना और कर्म फल प्रदाता होना दर्शाया गया है। यदि जीव के अन्दर यह धारणा उत्पन्न हो जावे कि परमात्मा सर्व व्यापक और सर्वज्ञाता और अटल न्यायकारी है तो वह कभी ईश्वर को नहीं भूलेगा।

हम ईश्वर को क्यों भूलते हैं ?

जीव और परमात्मा में दूरी न देश की है और न काल की है। दूरी केवल ध्यान की है। जीवात्मा प्रकृति के बन्धनों में फँस कर ईश्वर से विमुख हो जाता है या भूल जाता है और इस ही से पापों के झंझट में फँस जाता है। इस लिये इन मन्त्रों में उस समय का वर्णन है कि जब प्रकृति कारण रूप में थी और सृष्टि रचना आरम्भ हुई थी। प्रकृति की रचना अथवा रूप धारण करने के

पश्चात प्रकृति अपने रूप, रस, गंध तेज आदि गुणों के कारण जीवात्मा को अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। यदि जीवात्मा की मानसिक धारणा सदैव यह बनी रहे कि ईश्वर सब जगत रचयिता और कर्म फल प्रदाता है तो वह पाप कर्मों से बचा रहेगा।

बाग और माली

सृष्टि उत्पत्ति मन्त्र अघमर्षण मन्त्र क्यों कहे गये, यह बात एक उदाहरण से स्पष्ट हो जावेगी। जब बाग के आरम्भ में हम छोटे २ पौदे और उनकी रक्षा के प्रबन्ध को देखते हैं तो हमारा ध्यान माली की चतुराई की ओर जाता है। जब बाग बड़ा हो जाता है तो उसके बड़े २ फूल और उसकी सुन्दर लतायें हमको अपनी ओर आकर्षित करती हैं, परन्तु हमें माली का ध्यान नहीं आता। इसलिये उत्पत्ति के समय को लक्ष्य मे रखकर हम ईश्वर की महिमा अनुभव कर सकते हैं। इसही प्रकार एक घड़ी के कारखाने में हम घड़ी को बनता हुआ देखकर घड़ी बनाने वाले की प्रशंसा कर सकते हैं कि किस प्रकार उसमें लोहे के टुकड़ों को मिलाकर गति और विधि उत्पन्न कर देता है। बनी हुई घड़ी को देखकर हम घड़ी की प्रशंसा या अप्रशंसा भले ही करें, परन्तु घड़ी बनाने वाले की याद नहीं आती। इन तीनों मन्त्रों में अनेक प्रश्न जो अति आवश्यक हैं समाधान किये गये हैं।

सृष्टि कैसे बनी ?

सृष्टि बनाने के लिये तीन चीजों की आवश्यकता बताई गई है। अनादि प्रकृति परमात्मा के नियम, परमात्मा का तप और जीवों के शेष कर्म। इसक विपरीत जिनकी यह धारणा है कि सृष्टि कभी रची नहीं गई या अपने आप बन गई बड़े भ्रम में है।

सृष्टि क्यों बनी ?

यह भी एक बड़ा आवश्यक प्रश्न है। इसका उत्तर भी बहुत कम मतों में सन्तोषजनक मिलता है। वैदिक धर्म की शिक्षा यह है कि जीवात्माओं को अपने बुरे और भले कर्मों का फल भोगने के लिये अवसर और क्षेत्र प्रदान करने के लिये दुनिया रची गई है। इसीलिये सृष्टि रचना सम्बन्धी मन्त्रों को पाप नाशक मन्त्र कहा गया है।

सृष्टि का आधार

यह बहुतों की धारणा है कि सृष्टि एक सर्प पर ठहरी हुई है या शेषनाग के फन पर। शेष सर्प को भी कहते हैं और बाकी बचे हुये को भी। जीवात्माओं के शेष कर्म ही सृष्टि रचना के कारण हैं और इसीलिये शेष पर ठहरी हुई सृष्टि कही जाती है।

सृष्टि रचना का क्रम

दूसरे मन्त्र में तीन आवश्यक प्रश्नों का समाधान किया है। सृष्टि का क्रम बतलाया गया है। प्रलय की समाप्ति पर किस प्रकार प्रकृति का समुद्र अशान्त हो गया और उससे काल की उत्पत्ति हुई और रात और दिन का और महीनों और सालों का क्रम चल पड़ा।

सृष्टि कितने दिन में बनी

इस सृष्टि के महत्व को देख कर बहुतों का ख्याल है कि परमात्मा को सृष्टि की रचना में बहुत दिन लगे होंगे। कम से कम एक सप्ताह तो लगा होगा जिससे परमात्मा को थक कर रविवार को आराम करना पड़ा। वेद मन्त्र बतलाता है कि परमात्मा के ईक्षण मात्र से जितनी देर में हम पलक झपकाते हैं यह सृष्टि बन जाती है।

सृष्टि और परमात्मा

इस सृष्टि में मार धाड़ दुख और क्लेशों को देखकर बहुत से विचारक यह कहने लगे हैं कि परमात्मा सृष्टि को रचकर कहीं दूर जा बैठा है। इस सृष्टि रूपी अखाड़े में जीवों को लड़ने के लिये छोड़ दिया है। कयामत के दिन हार जीत और सजा और जजा का फैसला कर देगा। इस सिद्धान्त को अंग्रेजी तत्व ज्ञान में Deism कहते हैं। यह वेद मन्त्र बताता है कि परमात्मा न केवल रचयिता है परन्तु वह इस सृष्टि को अपने वश में रखने वाला है। अर्थात् वह 'वशी' है। वह सारे विश्व को अपनी व्यवस्था के आधीन रखता है। प्रकृति के परमाणुओं के रूप धारण करने की व्यवस्था और जीवों के कर्म फल की व्यवस्था सदैव उसके आधीन रहती है। उसको भूलना नहीं चाहिये। वह विश्व का Controller है। सृष्टि क्या अबके ही बनी ? यह वेद मन्त्र बताता है कि जिस प्रकार पूर्व कल्प में सृष्टि बनी थी इस ही प्रकार इस कल्प में बनी है। इससे विदित होता है कि परमात्मा की

न्याय की व्यवस्था अटल और अचल है। लोग कहते हैं 'आप मरे जग परलों' अर्थात् मरने के पश्चात हमारे कर्म फल का झंझट समाप्त हो जायगा। परन्तु यह वेद मन्त्र बताता है कि सारे जग में प्रलय हो जाने पर भी किये हुए कर्मों का फल भोगे बिना पीछा नहीं छोड़ेगा। यदि यह कड़ी न्याय की व्यवस्था हमारे ध्यान मे रहे तो हमें पाप कर्म करने में ग्लानि और सकोच अवश्य रहेगा। इस मन्त्र से यह भी शिक्षा मिलती है कि सृष्टि सदैव इस दशा में नहीं रही है परन्तु इसमें प्रलय और उत्पत्ति का चक्र है। परमात्मा ने इस सृष्टि के हर अग का रचा है अर्थात् दिव्य लोक को भी अन्तरिक्ष को भी और पृथिवी को भी और हमारी भलाई और सुख के लिये भी रचा है।

योग के अग और संध्या

हम इससे पूर्व लिख चुके है कि योग क आठों अग सन्ध्या के अन्तर्गत आ जाते है। इन मन्त्रों मे धारणा से सम्बन्ध जीवात्मा परमात्मा को सृष्टि का रचयिता और कर्म फल प्रदाता होने की धारणा करके अपने आप को ध्यान के अभ्यास का अधिकारी बनाना है। ध्यान की विवेचना मनसा परिक्रमा के मन्त्रों में की जावेगी।

भारत विभाजन (पाकिस्तान) की योजना क्या है?

[ले०—श्रीयुत बी० बी० कुल करणी]

—※—

ऐसे समय जबकि युरोप एक भयानक समर के चगुल में फंसा हुआ है. और जबकि यह समर शेष ससार को अपने चगुल में फसाने की धमकी दे रहा है, भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों में विभाजन की चर्चा असामयिक प्रतीत होती है। परन्तु मुस्लिम लोग के कुछ नेता, ससार की स्थिति की विषमता से अनभिज्ञ बने हुए दो राष्ट्रों के सिद्धान्त पर अड़े हुए हैं, यह आवश्यक है इस योजना पर ध्यान पूर्वक विचार किया जाय।

'पाकिस्तान शब्द जिसने देश में उत्तेजना फैलाई हुई है सर मुहम्मद इकबाल की कवि-कल्पना से उद्भूत हुआ समझा जाता है। इस शब्द का मूल भले ही कोई क्यों न हों यह निश्चय है कि यह विचार २० वर्ष पुराना है क्योंकि प्रो० कीथ ने १६१६ में देश की राजनैतिक स्थिति की ओर सकेत करते हुए कहा था'—

"मुसलमानों में भी मुस्लिम राज के निर्माण के लिए एक ऊलजलूल परन्तु कुछ तथ्य रखने वाली योजना का आदोलन हुआ था जिसकी धुरी अफगानिस्तान नियत की गई थी और जिसमें समस्त उत्तरी पश्चिमी प्रदेश आते थे जहा इस्लाम का प्राधान्य है।"

परन्तु देश के समझदार व्यक्ति इस देश द्रोही प्रस्ताव के विरुद्ध थे और यह आशा की गई थी कि वह आन्दोलन पुन सिर उठाकर देश की राष्ट्रीय एकता को भङ्ग न करेगा। परन्तु दुर्भाग्य से मुस्लिम लीग के लाहौर के प्रस्ताव ने इस प्रश्न को उग्र रूप में पुनर्जीवित कर दिया है।

पाकिस्तान शब्द जिसका अर्थ है 'पवित्र और स्वच्छ व्यक्तियों की भूमि' पहले पहल उत्तरी पश्चिमी भारत के पाच प्रदेशों पर लागू किया गया था अर्थात पजाब, सीमाप्रात, काश्मीर, सिंध और बलूचिस्तान यद्यपि 'मुस्लिम राज्य' का मुख्य भाव वही है, तथापि तब से कई वैकल्पिक योजनाएं प्रस्तुत की गई हैं जो सब इस सिद्धात से घनिष्ठ संबन्ध रखती है।

"सिर मैं जीतता हूँ पृष्ठ तुम खोते हो।"

इस बात से निषेध नहीं किया जा सकता कि देश के बहुत से मुसलमान इस योजना के अत्यन्त विरोधी हैं। परन्तु थोड़े से मुसलमान अपने सहधर्मियों के अन्ध विद्वेष और विचित्र भावों को भड़काने वाली इस योजना के द्वारा जान बूझ कर यत्न करते हैं अत: यों ही इस प्रश्न की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

देश में वैधानिक उन्नति से जो असन्तोष उत्पन्न हुआ है मुस्लिम लीग की उग्रता इस असन्तोष की प्रतिक्रिया है। १८५८ में जब ब्रिटेन के शासकों ने भारतवर्ष का शासन स्वयं अपने हाथों में लिया था उसके पश्चात् से ब्रिटिश सरकार इस देश के अन्तिम राजनैतिक उद्देश्य से स्वयं अनभिज्ञ थी। उसकी नीति स्वायत्त शासन मिश्रित किश्तों में स्वराज्य देने की द्योतक समझी जाती रही है। डोमीनियन स्टेटस (स्वायत्त शासन) ब्रिटिश शासन का अन्तिम ध्येय है १६१७ के अगस्त मास में यह घोषणा की गई थी। परन्तु तब से अब तक इस प्रतिज्ञा की पूर्ति का ब्रिटिश सरकार ने कोई सच्चा प्रयत्न नहीं किया है।

राजनैतिक सुधारों के क्षेत्र में धीमी चाल के फलस्वरूप जनता के हृदय में बेचैनी का जो भाव उत्पन्न हुआ था उस भाव को १६१६ के विधान के साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व ने जिसका सूत्रपात पहली बार हुआ था और भी बढ़ा दिया था। अल्प मतों के लिये स्थायी सरक्षण बुरी वस्तु नहीं है परन्तु साम्प्रदायिक मुसलमान जैसे अल्प सख्यक रोड़ा बन जाते हैं और जब राजनैतिक सुधार जनता की माग का साथ नहीं देते हैं तब तो उनकी मागों की कोई सीमा नहीं रहती है।

जो लोग वर्तमान स्थिति से लाभ उठाने को उतारू हों उनके लिए देश भक्ति के नाम पर की गई कोई भी अपील प्रभाव नहीं रखती। वे तो एक ढेले से दो पक्षियों को मारना चाहते हैं। राजनैतिक स्वाधीनता के बिना साम्प्रदायिकता से मुक्ति नहीं मिल सकती।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि मुस्लिम लीग वर्तमान स्थिति से उत्पन्न होने वाले लाभों से पूर्ण परिचित हैं। यह स्वीकार कर लेने से कि साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व अस्थायी है मुस्लिम लीग के उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती। मुस्लिम हितों की रक्षा और वृद्धि के लिए प्रतिज्ञा बद्ध होने के कारण मुस्लिम लीग अपनी महत्त्वाकाक्षाओंको सीमित करने के लिए तैयार नहीं है। मौर्ले मिन्टो सुधारों के प्रारम्भ

काल से ही मुसल्मानों को अधिकाधिक स्थायी सरक्षण प्राप्त हुए हैं । इस पर भी मुसल्मानों की साम्प्रदायिकता की सन्तुष्टि का कोई संकेत नहीं मिलता ।

मुस्लिम लीग की वास्तविक मागों को समझना कठिन है। अपने पत्त मेज पर रखने से यह सदैव बचती रही है । धारा सभाओं और नौकरियों में मुसल्मानों का प्रतिनिधित्व बहुत बढ गया है, इससे भी मुसलमान सतुष्ट नहीं हैं। मुस्लिम लीग का यत्न यह है कि मुस्लिम अल्पसख्यकों को प्रत्येक विषय में हिन्दुओं के समान माना जाय। समानता की माग का यह दावा एक भारतीय तथा दूसरे भारतीय के बीच के रूप में नही किया जाता वरन् हिन्दुओं और मुसल्मानों के मध्य किया जाता है साथ ही पृथक् प्रतिनिधित्व । अधिक परिमाण इत्यादि साम्प्रदायिकता की मागों को भी सुरक्षित रखने की माग की जाती है। प्रत्यक्षत लीग का रोना हिन्दुओं की बहुसख्या के कारण है जिसमे हिन्दुओं का कोई अपराध नहीं है।

हिन्दुओं को वैधानिक रूप से मुसल्मानों के समान कर देने के यत्न की निस्सारता को अनुभव करके अब लीग ने भारत के विभाजन की आश्चर्य जनक योजना पर कमर बाधी है। अत पाकिस्तान की योजना मुस्लिम साम्प्रदायिकता की अतृप्त महत्वा कान्ताओं की परिचायक है।

आओ अब हम योजना पर विचार करें। श्री युत जिन्ना ने जो विचित्र घटना चक्र से दो राष्ट्रों के सिद्धान्त के सबसे प्रबल समर्थक बने हुए हैं, मुस्लिम लीग के लाहौर के अधिवेशन में अपने भाषण में २३ मार्च सन् १९४० को कहा,

"राष्ट्र की किसी भी परिभाषा के अनुसार मुसलमान एक राष्ट्र है। और उनका भी अपना घर, देश और राज्य होना चाहिए।"

जब उन्होंने यह कहा था कि मुसल्मान एक पृथक् राष्ट्र है, तब मुस्लिम लीग के प्रधान की दृष्टि मे राष्ट्र की क्या परिभाषा थी, यह जानना कठिन है। इस्लाम न तो एक राष्ट्र है और न एक नस्ल है। बरन एक धर्म है । और एक भारतीय मातृ भूमि का भक्त रहते हुए भारतीय ही होता है भले ही वह इस धर्म से सम्बन्धित हो या उस धर्म से। निश्चय ही प्रो० कीथ के अनुसार भारतवर्ष के मुसल्मानों का ⅘ भाग मुस्लिम धर्म में दीक्षित हुए हिन्दुओं की सन्तान हैं।

श्रीयुत जिन्ना की विचित्र थ्योरी (सिद्धान्त) की आलोचना करते हुए एक ऐंग्लो इण्डियन अखबार लिखता है:—

भारतवर्ष में हिन्दुओं और मुसलमानों को दो पृथक् राष्ट्र समझने का कोई औचित्य नहीं है। धर्म वा संख्या का प्राधान्य स्वतः राष्ट्र का निर्माण नहीं करते। कोंकण और पंजाब के मुसलमान में कौन सी जातीय समानता है? भारतवर्ष में बहुत से जातीय विभाग हैं परन्तु वे धार्मिक सीमाओं के अन्तर्गत नहीं हैं। भारतवर्ष मे हिन्दू राष्ट्रीयता है परन्तु मुस्लिम एक नहीं है।"

हिन्दुओं और मुसलमानों को पृथक् २ दो राष्ट्र मानते हुए मुस्लिम लीग यह कहती है कि अलग मत वालों को समस्या का एक मात्र हल यह है कि देश को उपविभागों में विभाजित कर दिया जाय। परन्तु लीग यह भूल जाती है कि नये मुस्लिम राज को अत्यन्त प्रभावशाली अल्प संख्यकों को अपनी छाती से लगाना होगा। मुस्लिम प्रधान प्रान्तों में हिन्दुओं और मुसलमानों की संख्या और क्षेत्र-फल क्या हैं? यह निम्न तालिका से स्पष्ट होगा—

प्रान्त	वर्गमीलों में क्षेत्रफल	जनसंख्या	हिन्दू	मुसलमान
बंगाल	८२६५५	५१०८७३३८	११५७०४०७	२७४६७६२४
पंजाब	१०५०२०	२४०१८६३६	६३२८५८८	१३३३२४६०
सीमाप्रान्त	३६३५६	४६८४३६४	१४२६७७	२२२७३०३
सिंध	४६३७८	३८८७०७०	१०१५२२५	२८३०८००
योग	२७०७०६	८३६७७४११	२६०५७१६७	४५८८८१८७

सिक्खों और पिछड़ी हुई अल्प संख्यक जातियों को मिलाकर उपर्युक्त चारों प्रांतों मे हिन्दुओं की संख्या ३०६१४६६७ हो जाती है। इसके विपरीत हिन्दू प्रधान ७ प्रान्तों मे मुस्लिम जन संख्या १६७८२४८३ है। यह संख्या मुस्लिम प्रधान प्रान्तों की अहिन्दू अल्प संख्यकों की संख्या से बहुत कम है। पंजाब जैसे प्रान्त में जो उसके प्रधान मन्त्री के शब्दों मे भारत की 'सैनिक भुजा' है। अल्प संख्यकों की स्थिति दुर्भेद्य है। पंजाब मे सिक्खों की संख्या ३०६४१४४ है और जाट, राजपूत और डोगरा ये जातियां भारतीय सेना मे बहुत ऊँचा स्थान रखती हैं। सिख लोगों को जो जातीय दृष्टि से जाट हैं, सेना मे बहुत भर्ती होती है। सरकार उनकी सैनिक विशेषताओं का इतना मान करती है कि उसने न केवल उनके प्रान्त में वरन् समस्त भारत में उनको एक विशिष्ट स्थान दिया हुआ है। और इसमें उनकी वास्तविक संख्या का कोई गणना नहीं की जाती। पंजाब के हिन्दू और सिक्ख नेताओं ने पहले से ही भारत विभाजन की इस योजना के प्रति

अपनी घृणा और विरोध प्रगट कर दिया है। इन सचाइयों को छुपाना दुरुह है। यदि लीग देश के शासन मे हिन्दुओं के साथ सहयोग करना नहीं चाहती है तो वह जो नया मुस्लिम राज स्थापित करना चाहती है उसमें किस न्याय पर अहिंदू अल्प सख्यकों का सहयोग प्राप्त करना चाहती है? सचाई यह है कि 'विभाजन' की यह योजना अल्प सख्यकों की समस्या को हल करने के स्थान में इसे और भी पेचीदा बना देगी।

हिन्दू मुस्लिम समस्या को बढा चढ़ा कर प्रगट करना ग़लत है। लगभग १० शताब्दियों से हिन्दू और मुसलमान साथ २ रहते हैं और इतिहास में इस बात का कोई उल्लेख नहीं है कि उन्होंने एक दूसरे से पृथक् होना चाहा था यहा तक मुस्लिम शासन के दिनों में भी उन्होंने ऐसा नही चाहा था। किसी समय भी यह आवश्यकता अनुभव नहीं की गई। मुसलमानों की राजनैतिक, धार्मिक और सास्कृतिक उन्नति मे कभी बाधा नहीं डाली गई।

इसके अतिरिक्त हिन्दू और मुसलमानों की साधारण जनता में अपने पड़ोसियों के साथ शान्ति पूर्वक रहने की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। धार्मिक विभिन्नता को छोड कर, उनके जीवन अविच्छिन्न रूप से आपस में जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिये बगाल की १६३१ की जन गणना की रिपोर्ट देखिये, उसमें अकित है कि ग्रामीण बगाल में हिन्दुओं और मुसलमानों में बडा सद्भाव पाया जाता है। उसमे यह भी लिखा है कि देहातों के मुसलमान पर्याप्त रूप में सहिष्णु हैं और अनुत्तर दायित्व पूर्ण मौलवियों और मुल्लाओं के उपदेशों से भडक कर ही वे असहिष्णु बन जाते हैं। प्रान्त के बहुत से भागों मे मुसलमान किसान हिन्दू तीज त्यौहारों के प्रति बड़े सहनशील रहते हैं और कुछ सीमा तक उनमें भाग भी लेते हैं। देश के अन्य समस्त भागों में भी ये सुन्दर अवस्थाएँ पाई जाती हैं। महात्मा गान्धी ने एक स्थान पर कहा है—

"हिन्दुओं और मुसलमानों की साधारण जनता में अनैक्य नहीं है। अनैक्य धरातल पर है और इसका इतना प्रभाव है कि वे व्यक्ति इस धरातल पर हैं जो भारत वर्ष के राजनैतिक मस्तिष्क का प्रतिनिधित्व करते हैं।"

दुर्भाग्य से मुस्लिम लीग ने जो मुसलमानों की एक मात्र प्रतिनिधि होने का दावा करती है, दो बड़ी जातियों में वर्तमान सद्भाव के सूत्रों को दृढ करने का उपाय नहीं किया है। विपरीत इसके लीग के विभाजन सम्बन्धी असयत आन्दो-

लन से बिना लिखे पढ़े मुसलमानों में खिलाफत आन्दोलन के दिनों का हिजरत का भयङ्कर परिणामों के सहित आवेश भर सकता है। मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि पाकिस्तान की योजना इस प्रकार के निर्यात की प्रेरणा करती है, परन्तु इस प्रकार की अशुद्ध भावना का भय योजना में स्वत: निहित है।

किसी भी जाति का किसी प्रान्त में केवल इस आधार पर विशेषाधिकार मांगना कि उस प्रान्त में उसकी संख्या अधिक है ठीक नहीं है। प्रत्येक जाति अपने प्रान्त की विविध प्रकार की उन्नति में अपना एक विशेष योग प्रदान करती है। यदि विभिन्न जातियों में पारस्परिक सद्भावना न हो तो जीवन असह्य बन जायगा। उदाहरण के लिये बंगाल प्रान्त ने शिक्षा के क्षेत्र में जो प्रसिद्धि प्राप्त की है उसका बहुत बड़ा श्रेय बंगाल के हिन्दुओं की बुद्धि और धन का है। आर्थिक दशा में बंगाल ने जो कुछ उन्नति की है उसका भी श्रेय उन्हीं को है। इसी प्रकार पंजाब के हिन्दू व्यापारिक और औद्योगिक सफलता के लिये प्रसिद्ध हैं। हिसाब लगाया गया है कि इस प्रान्त में लगभग ५० लाख मुस्लिम कारीगर अपनी आजीविका के लिए गैर-मुस्लिमों पर आश्रित है। इस प्रकार जातिगत निर्भरता पूर्ण है। अतएव विभाजन की यह योजना वर्तमान वस्तु स्थिति के लिये एक चैलेंज है और निश्चय ही अल्प संख्यकों के मस्तिष्कों में बडी अशान्ति उत्पन्न करने वाली है जिनकी सहायता का हाथ खींच लेने का अर्थ यह होगा कि इन प्रान्तों का आर्थिक संगठन छिन्न भिन्न और बेकार हो जायगा।

इस योजना के सम्बन्ध में एक दूसरी संदिग्ध बात धन सम्बन्धी दृढ़ता के सम्बन्ध में है।

नया राज्य अपने बजट का संतुलन कर सकेगा, इस में पूरा पूरा सन्देह है क्योंकि यह प्रसिद्ध है कि सीमाप्रान्त और सिन्ध को केन्द्रीय सरकार के धन में से बहुत अधिक सहायता दी जाती है। पाकिस्तान की इस योजना की आर्थिक उलझनों के सम्बन्ध में जानकार क्षेत्रों को बडा सन्देह है। एक अर्द्ध गोरा पत्र इस प्रकार प्रकाश डालता है —

"योजना के समर्थकों ने अनुमान लगाया है कि उत्तरी पश्चिमी मुस्लिम राज्य को टैक्सों की वर्त्तमान दर से २२ से २६ करोड की आय होगी। व्यय का तुलनात्मक अन्दाजा तय्यार नहीं किया गया है।"

रक्षा की समस्या का जिक्र करते हुए यह पत्र लिखता है —

"भारत वर्ष की सम्पूर्ण अभेद्य सीमाएं न केवल मुस्लिम राज्य के हिस्से में आयेंगी वरन् विस्तृत नई सीमा इस के हिस्से में आयेगी। सामाजिक पृथकत्व और सांस्कृतिक सर्वाधिकार के रूप में विभाजन की योजना से कितने ही बड़े लाभ मिलते क्यों न देख पड़ें परन्तु राजनैतिक और आर्थिक रूप से इस से आत्म निर्भरता प्राप्त नहीं हो सकती।

किसी भी दृष्टि से विचार क्यों न किया जाय, इस योजना में कोई भी तथ्य नहीं है। मुस्लिम लीग ही एक मात्र संस्था है जो विभाजन का दावा करती है। इसके समस्त सदस्य इस योजना को पसन्द नहीं करते हैं। पंजाब और बंगाल के प्रधान मन्त्रियों की स्थिति प्रसिद्ध ही है। अन्य सब मुस्लिम दल देश के विभाजन के विरुद्ध हैं। इस विषय की ओर संकेत करते हुए मौलाना आज़ाद कहते हैं —

"इस प्रकार का कदम उठाने का अधिकार केवल मुसल्मानों द्वारा निर्वाचित मुसलमानों को ही हो सकता है। मुस्लिम लीग इस प्रकार की कोई भी योजना प्रस्तुत कर सकती है। परन्तु यह दावा नहीं कर सकती कि समस्त मुसलमान अथवा उनका बहुमत इसे स्वीकार करता है।"

महात्मा गांधी जी के भी इसी प्रकार के विचार हैं। मौलाना आज़ाद और महात्मा गांधी की तर्क-धारा का हम पूर्णतया आदर करते हैं। परन्तु यह प्रश्न ऐसा नहीं है कि एक मात्र मुसलमान इसका फैसला करदें। यह अखिल भारतीय समस्या है जिसका निर्णय साधारणतया समस्त भारतवासी और मुख्यतया प्रस्तावित राज्य की गैर मुस्लिम अल्प संख्यक ही कर सकते हैं। इस योजना के बलात् थोप देने से देश में अशान्ति फैल जायगी।

योजना की अस्वाभाविकता के अतिरिक्त, भारतवर्ष में दो राज्यों के निर्माण से देश की स्वाभाविक शक्ति क्षीण हो जायगी, इन दिनों छोटे छोटे राज्यों में विभाजित होना परले दरजे की मूर्खता है।

अन्त मे हम कहेंगे कि शब्द के विस्तृत-तम अर्थ में मुसलमान लोग जो संख्या मे ७॥ करोड़ हैं अल्प संख्यक नहीं हैं। पहिले भी वे पूर्ण रूप से सुरक्षित रहे हैं जबकि उनकी संख्या बहुत कम थी। स्वतन्त्र और प्रजातन्त्र भारत में वे अपने अधिकारों और हितों को सुरक्षित नहीं रख सकेंगे, इस भय का उनके पास कौन सा उचित आधार है।

यह दुर्भाग्य की बात है कि अकेले श्रीयुत जिन्ना ने इस प्रश्न को हाथ में लेना पसन्द किया है। श्रीयुत उस्मान अहमद लिखते हैं कि एक अवसर पर आत्म प्रवचना के असयत भाव में श्रीयुत जिन्ना ने कहा था, "मुसलमानों का गोखले बनने की मेरी महत्वा काचा है" यह आनन्द की बात है कि स्वर्गीय गोखले ने श्री जिन्ना के सम्बन्ध में यह कहा था, उन में वास्तविक मसाला है और वे समस्त साम्प्रदायिक विद्वेष से मुक्त हैं और यह बात उन्हें हिन्दू मुस्लिम एकता का सर्वोत्तम सन्देश हर बनायेगी।"

जिन स्थितियों में श्रीयुत जिन्ना मुस्लिम लीग के सदस्य बने थे उनके साथ भी एक विशेष महत्वपूर्ण सम्बद्ध है। १६१३ मे इङ्गलैन्ड में जब उन से मुस्लिम लीग का सदस्य बनने की प्रेरणा की गई तो उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया बतलाते थे कि मुस्लिम लीग और मुस्लिम हितों के प्रति उनकी निष्ठा का अणुमात्र भी विस्तृत राष्ट्रीय हितो के प्रति विद्रोह अर्थ न होगा जिस के लिए उनका समस्त जीवन अर्पित है। राजनैतिक खेल का यह विचित्र चक्र है कि आज मुस्लिम लीग के कर्णधार के रूप में देश के खण्ड २ करने का श्रीयुत जिन्ना समर्थन कर रहे है।

स्वर्गीय श्री माटेगु ने श्रीयुत जिन्ना के सम्बन्ध में लिखा है "श्रीयुत जिन्ना बडे चतुर व्यक्ति हैं और निश्चय ही यह बडे दुख की बात है कि इस प्रकार के व्यक्ति को अपने देश का शासन करने का अवसर न मिले," श्री माटेगु की डायरी में यह भी लिखा है, "जिन्ना साहब के कार्य्य कलाप के मूल में उनकी यह महत्वाकाचा है। ऐसा तो नहीं है कि श्रीयुत जिन्ना विभाजन की इस योजना द्वारा अपने अतृप्त आशाओं को पूर्ण करना चाहते हों।"

('माडर्न रिव्यू')

भवाल संन्यासी केस

[ले०—श्री अमलानन्द]

— —

कानून के इतिहास में शायद ही कोई मुकदमा, भवाल सन्यासी केस के समान विशाल, रोचक और सनसनीदार हुआ है। यह मुकदमा पहले पहल ढाका की छोटी अदालत में २४ अप्रैल १९३३ को दायर हुआ था। उसकी सुनवाई २७ नवम्बर १९३३ को शुरू हुई थी और १९३६ तक मुकदमा चलता रहा था। फैसला २४ अगस्त १९३६ को सुनाया गया था। इस फैसले में वादी की जीत हुई थी और तब प्रतिवादी ने १४ नवम्बर १९३८ में हाईकोर्ट में अपील की थो। अपील की सुनवाई १४ नवम्बर १९३९ को शुरू हुई और १४ अगस्त १९४० को खतम हुई थी। हाईकोर्ट के तीन न्यायाधीशों के फैसले २० अगस्त १९४० से लेकर २९ अगस्त १९४० तक सुनाये गये। अन्तिम निर्णय पूजा की छुट्टियों के बाद सुनाया जायगा। हाईकोर्ट के तीन न्यायाधीशों में से जस्टिस लाज ने अपना फैसला प्रतिवादी के पक्ष में दिया है और जस्टिस विश्वास तथा केम्टेलो ने वादी के पक्ष मे फैसला दिया है। इस मुकदमे में दोनों पक्षों की ओर से कम से कम २० लाख रुपया खर्च हुआ है और केवल कागजात में ही ८८ हजार रुपये गये।

इस मुकदमे में वादी है एक सन्यासी जिसने अपने आपको बगाल की प्रसिद्ध रियासत भवाल-राज्य का स्वर्गीय कुमार रामेन्द्र नारायण राय घोषित किया है। प्रतिवादिनी हैं श्रीमती विभूति देवी राय धर्मपत्नी स्व० रामेन्द्र नारायण राय।

यह मुकदमा सन्यासी ने दायर किया और अपने आपको भवाल-राज्य का द्वितीय कुमार घोषित किया। द्वितीय कुमार रामेन्द्र राय के सम्बन्ध मे कहा जाता है कि उनकी मृत्यु ८ मई १९०९ को हो चुकी थी। किन्तु कुछ ही सालों के बाद पड़ौस के जिलों में यह अफवाह फैलने लगीं थी कि कुमार जीवित हैं और वे सन्यासियों के किसी सघ के साथ घूम रहे हैं। १९२१ को बसन्त ऋतु में ढाका नगर के बकलेण्डबन्द स्थान पर एक सन्यासी दिखाई दिया और कुछ लोगों को मालूम हुआ कि वही है भवाल राज्य

का राजकुमार। लोग उसे भवाल ले गये और उसे पहिचाना गया। इस पर दो पक्ष हो गए। एक पक्ष कहता था कि वह भवाल कुमार है, दूसरा कहता था कि वह फर्जी बदमाश है।

इसके बाद ही ४ मई १६२१ से सन्यासी ने अपने आपको कुमार घोषित कर दिया और रियासत से कर वसूल करना शुरू कर दिया। कुमार की पत्नी और कुछ लोगों ने उसे कुमार मानने से इन्कार कर दिया। इस पर झगड़े हुए और अन्त में मुकदमा दायर हो गया। जिलाधीश ने सन्यासी से मुलाकात की और कहा कि वह कुमार नहीं है। अन्त में २४ अप्रैल १६३० को सन्यासी ने मुकदमा दायर कर दिया। छोटी अदालत मे मुकदमा २७ नवम्बर १६३३ को शुरू हुआ और वादी के गवाहों की गवाही ६ फरवरी १६३५ को खतम हुई। प्रतिवादी के गवाह ६ फरवरी १६३५ से आने शुरू हुए और १९ फरवरी १६३६ तक चलते रहे। इसके बाद वादी के विशेष गवाह पेश किये गये। वादी के कुल मिला कर १०६६ गवाह पेश किये गये, जिनमें से २० के लिये कमीशन बैठाना पड़ा। प्रतिवादी ने ४७६ गवाह पेश किये, जिनमें ४४ कमीशन द्वारा जाचे गये। सबूत के लिये जो चीजें लाई गई उनकी सख्या २००० थी। इनमें करीब १०० फोटो ग्राफ्स थे।

प्रतिवादी के वकील ने अपनी बहस १३ फरवरी १६३६ से लेकर ३१ मार्च १६३६ तक की। वादी के वकील ने अपनी बहस उसी दिन आरम्भ की और २० मई १६३६ को खतम की। इसके बाद छोटी अदालत के जज श्री पन्नालाल बोस ने अपना फैसला सुनाया। इसी मुकद्दमे के वक्त मि० बोस अतिरिक्त दौरा जज बना दिये गये थे। वह फैसला वादी के पक्ष मे हुआ।

इस मुकदमे में जो गवाह आये उनमे सब तरह और सभी उमरों के लोग थे। कोई था २१ साल का युवक तो कोई था १०० वर्ष का बुड्ढा। उनमें सभी जातियों और धर्मों के लोग थे—हिन्दू, मुसलमान, पारसी, सिख, ईसाई, नागा, सन्यासी, बगाली, हिन्दुस्तानी, मारवाड़ी, पजाबी, भुटानी, अंग्रेज और दूसरे भी पहाड़ी लोग उन गवाहों में से थे। उनमें सईस, मछवों और वेश्याओं से लेकर पण्डित, बैरिस्टर, जमींदार अर्थात् नीची से नीची और ऊँची से ऊँची श्रेणी तक के लोग थे। इस मुकदमे और गवाहों के कारण पूरे का पूरा भवाल राज्य और उसका पड़ौसी विभाग दो पक्षों में बट गया था। एक ही घर मे यदि बाप वादी

का पक्ष करता था तो बेटा प्रतिवादी का। उदाहरणार्थ ताल्लुकेदार शिवचन्द्र मिश्र ने प्रतिवादी की तरफ से गवाही दी और उनके पुत्र प्रफुल्लकुमार मिश्र ने वादी के लिए गवाही दी। अजीमबख्श और उसके पुत्र का भी यही हाल हुआ। प्रतिवादिनी की एक बहिन ने उसका पक्ष लिया और दूसरी ने सन्यासी की तरफ से गवाही दी।

जिस वक्त मुकद्दमा होता था, अदालत भीड़ से भर जाती थी और बीच बीच में परस्पर विरोध में चीत्कारें होती थीं। सारा ढाका नगर दो दलों में बट गया था और घर-घर विवाद होते थे। मुकद्दमे के समय चार छोटे-छोटे दैनिक अखबार बंगाली भाषा में निकलने लगे थे। ये अखबार 'भवाल दैनिक' कहलाते थे। कलकत्ते के पत्रों में 'आनन्द बाजार पत्रिका' (बंगाला) में जिस दिन छोटी अदालत का फैसला छपा था उस दिन उनके विशेष अङ्क की १०७,००० प्रतियां बिकीं और दूसरे दिन इसी के कारण साधारण अङ्क की ११८०० प्रतियां बिकीं। यह भारतीय पत्रकार जगत में एक ऐतिहासिक रिकार्ड है।

वादी का दावा

वादी ने जो कि एक सन्यासी है, घोषित किया है कि वह भवाल-राज्य का द्वितीय कुमार रामेन्द्रनारायण राय है।

वादी का कहना है कि वह दार्जिलिङ्ग में बीमार तो पड़ा लेकिन मरा नहीं। बीमारी के वक्त उसे जहर खिला दिया गया और वह उसके आवेग से बेहोश हो गया। इस पर उसे मुर्दा मान लिया गया और शमशान-भूमि को पहुँचा दिया गया। यह घटना ८ मई १६०६ को हुई। शमशान में अचानक तूफान और मेघ आए और अर्थी के साथ आए हुए लोगों में भगदड़ मच गई। वे लोग अर्थी को छोड़कर भाग गये। जब वे लौटे तब उन्हें अर्थी में कोई मृतक शरीर नहीं मिला। जब वादी को चेतना हुई, तब उसने अपने आपको नागा सन्यासियों के झुण्ड में पाया। इन सन्यासियों ने उसकी सेवा सुश्रूषा की और उसे फिरसे स्वस्थ बनाया। इसके बाद वह एक स्थान से दूसरे स्थान तक, जगह-जगह सन्यासियों के साथ घूमता फिरा। अन्त में नैपाल के ब्रह्म-छात्र स्थानों में उसने सन्यासियों का साथ छोड़ दिया और भिन्न-भिन्न स्थानों में घूमता हुआ १२ वर्ष बाद ढाका पहुचा।

कथित मृत्यु के समय कुमार रियासत के तृतीय अंश का हिस्सेदार था।

('समाज-सेवक' से)

श्री राजगोपालाचार्य का निमन्त्रण

[ले०—श्री रामानन्द चटर्जी सम्पादक 'माडर्न रिव्यू' कलकत्ता]

—ஃ—

'मद्रास के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्रीयुत राजगोपालाचार्य ने लण्डन के डेली हेरल्ड' नामक पत्र को निम्न वक्तव्य दिया—

"अल्प सख्यका के सम्बन्ध मे श्री युत एमरी (भारत मन्त्री) की कठिनाई के उत्तर म मैं एक निमन्त्रण प्रस्तुत करता हूँ कि यदि सम्राट् की सरकार तत्काल राष्ट्रीय सरकार का बनाना स्वीकार कर लेगी तो मैं कांग्रेस के अपने सहकर्मियो को इस बात के लिए राजी कर लूंगा कि मुस्लिम लीग को अपना प्रधान मन्त्री मनोनीत और अपनी इच्छानुसार मन्त्री मण्डल निर्वाचित करने के लिए कहा जाय।

यदि सम्राट् की सरकार की कठिनाई मे सत्यता है तो वह कठिनाई मेरे निमन्त्रण मे हल हो जायगी।"

सम्राट् की सरकार की कठिनाई जैसा कि उसके प्रतिनिधियों ने प्रगट की है, यह है कि भारत के भिन्न भिन्न राजनैतिक दल आपस में समझौता नहीं कर सकते हैं और यत कई अल्प संख्यकों को कांग्रेस के शासन पर आपत्ति है अत भारतीयों को राजनैतिक अधिकार हस्तान्तरित नहीं किए जा सकते यहा तक कि उनकी अत्यन्त प्रभाव शाली सस्था को भी यह अधिकार नहीं दिया जा सकता। कांग्रेस ही वह प्रभाव शाली सस्था है। और मुस्लिम लीग ही कांग्रेस के अधिकार पर आपत्ति करती रही है। अब यदि कांग्रेस मुस्लिम लीग का नेतृत्व स्वीकार कर लेती है तो ब्रिटिश सरकार की कठिनाई दूर हो जानी चाहिए।

श्री राजा जी का निमन्त्रण इस बात की परीक्षा के लिए भी किया गया होगा कि क्या वास्तव में श्रीयुत जिन्ना यह सोचते हैं कि भारतवर्ष मे दो राष्ट्र हैं या पाकिस्तान का प्रस्ताव कहीं पर अधिकार अधिकृत करने के लिए प्रस्तुत किया गया है—समस्त भारत के ऊपर अथवा कम से कम इसके किसी भाग पर वा कांग्रेस जैसी राष्ट्रीय सस्था का कम से कम भारत के किसी भाग पर से प्रभुत्व दूर करने की चाल चली गई है। श्री राजा जी क्रियात्मक तौर पर श्री जिन्ना से कहते हैं, कांग्रेस अधिकार नहीं चाहती। आपके ऊपर आधिपत्य

भी नहीं चाहती । शासन की बागडोर अपने हाथ में संभालो और स्वय अपना मन्त्री मण्डल बनाओ ।" श्रीयुत जिन्ना को इससे बढिया और न्याय युक्त प्रस्ताव वा निमन्त्रण की आशा नहीं करनी चाहिये ।

इस प्रकार का निमन्त्रण देने के लिये श्री राजा जी के पास भले ही कितने कारण क्यों न हों, जातिगत सन्तुष्टि के लिए हम इस प्रकार के निमन्त्रणों के विरुद्ध हैं । एक बार महात्मा गाधी ने मुसलमानों को कोरा चिक दिया था । परन्तु यह स्वीकृत नहीं हुआ था । जब कभी महात्मा जी ने ऐसा प्रस्ताव किया है हिन्दुओं को बहु सख्या ने उस पर रोष प्रगट किया है और श्री राजा जी के प्रस्ताव से रोष उत्पन्न हुए बिना न रहेगा । कोई भी यह अस्वीकार नहीं कर सकता कि काग्रेस अब भी देश की प्रमुख राष्ट्रीय संस्था है। परन्तु काग्रेस के नेताओं को यह जानना चाहिए कि काग्रेस के सदस्यों को छोड़कर काग्रेस से सहानुभूति रखने वाले हिन्दुओं मे कमी हो रही है और हिन्दू महासभा के प्रति सहानुभूति बढ़ रही है। और इसके कई विशेष कारण हैं । काग्रेस के दायरे में जितने हिन्दू रहे हैं उससे अधिक सदैव बाहर रहे हैं । अत सिद्धान्त और नीति दोनों दृष्टियों से हिन्दुओं की बहु सख्या को अपने विरुद्ध करना काग्रेस के लिये अच्छा नहीं है ।

यह भी ध्यान में रखने योग्य है कि जो मुसलमान मुस्लिम लीग के सदस्य नहीं हैं वे भी निरन्तर सगठित हो रहे हैं । यदि तमाम मुसलमानों को सतुष्ट करना हो तो अकेली मुस्लिम लीग को प्रधान मन्त्रीत्व का निमन्त्रण देने से काम नहीं बनेगा काम तो मुस्लिम लीग से बाहर के मुसलमानों को प्रेरणा करने से बनेगा ।

वस्तुत हमारे राजनैतिक नेताओं के दृष्टि कोण में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है और उनका आधार विशुद्ध प्रजातन्त्रीय और राष्ट्रीय होना चाहिए ।

भारत के वर्तमान शासन विधान का आधार जातिगत है । इसको कभी भी सहन नहीं करना चाहिये था । शुरू से ही इसका विरोध करना चाहिए था। अनियमित रूप में भी इसकी साम्प्रदायिकता मे वृद्धि करना ठीक नहीं है। कोई भी मुसल्मान केवल इस आधार पर कि वह मुसल्मान है राष्ट्रीय सरकार का प्रधान मन्त्री नहीं बनाया जाना चाहिये । यदि देश के योग्यतम राष्ट्रवादी नेताओं

में से कोई मुसल्मान नेता हो तो अवश्य ही उन्हें प्रधान मन्त्री बनाना चाहिए अन्यथा नही। यदि मुसल्मानों मे उसे प्रजातन्त्र, राष्ट्रवादी और सुयोग्य सह कर्मी मिलें तो उनका मन्त्री मण्डल बनना चाहिये अन्यथा नहीं।

यदि किसी निश्चित अल्प काल के लिए शासन विधान का साम्प्रदायिक रूप बनाए रखना ही हो तो राष्ट्रीय सरकार में उनकी सख्या के अनुपात में, मुख्य २ जातियों के प्रतिनिधि होने चाहिएँ। सबसे ज्यादा सख्या हिन्दुओं की होनी चाहिये क्योंकि वही सबसे बडी जाति है। मुसल्मानों, सिक्खों ईसाइयों और पारसियों तथा अन्य जातियों को उनकी सख्या के अनुपात मे प्रतिनिधित्व मिलना चाहिये। परन्तु ऐसा तब तक ही होना चाहिये जब तक विधान साम्प्रदायिक आधार पर आश्रित है, और यह आधार जितना कम से कम सभव हो उतने समय के लिए ही होना चाहिए।

श्री राजगोपालाचार्य जी तथा मुसल्मानों को प्रसन्न करने वाले अन्य सज्जनों को सदैव स्मरण रखना चाहिए कि मुस्लिम लीग किसी भी रिश्वत से चाहे वह प्रत्यक्ष दी जाय अथवा अप्रत्यक्ष सतुष्ट नहीं हो सकती क्योंकि उसका पक्ष पोषक ब्रिटेन सदैव उसको अपना भक्त बनाए रखने के लिए ऊंची से ऊँची बोली लगा सकता है।

सुमन संचय

(१)

उपदेश का फल

कौशाम्बी के अधिपति महाराज उदयन की तीन रानिया थीं। वासवदत्ता, श्यामावती और मागधी। श्यामावती की एक दासी खुज्जुहारा नाम की थी। एक दिन महात्मा बुद्ध एक माली के घर जिसके यहा से राजप्रासाद मे फूल जाया करते थे भिक्षा के लिये गए। माली ने भगवान बुद्ध को ससघ बडे प्रेम से भिक्षा दी और उनके सदुपदेशों को श्रवण किया। दैवयोग से भगवान के उपदेश के समय श्यामावती की दासी खुज्जुहारा भी वहा उपस्थित थी। भगवान के उपदेश का प्रभाव उस दासी पर भी पडा। उस दिन वह फूल लेकर देर से राजमहल में गई। श्यामावती ने उससे देर से आने का कारण पूछा तो उसने साफ २ कह दिया मैं जब माली के घर फूल लेने गई तब महात्मा बुद्ध वहा भिक्षा के लिये पधारे थे। मैं उनका उपदेश सुनने लगी इसीलिये आज मुझे देर हो गई" जब रानी ने फूल देखे तो नित्य से उसे दुगने दिखाई पडे। महारानी ने पूछा 'आज तू अधिक फूल क्यों लाई है ?" दासी ने हाथ जोड कर कहा 'महारानी की जय हो' नित्य मैं मूल्य का आधा स्वय ले लेती थी। पर आज मैं कुल मूल्य का फूल लाई हूँ। मैंने आज से भगवान बुद्धदेव का उपदेश सुनकर यह प्रतिज्ञा की है अब चोरी, असत्य भाषण, हिंसा आदि न करूगी। उन्हीं के उपदेश रत्नों का यह फल है।" दासी का यह उत्तर सुनकर श्यामावती बड़ी प्रसन्न हुई और एक बहुमूल्य आभूषण दासी को उसके अद्भुत परिवर्तन पर उपहार स्वरूप भेंट किया।

(२)

नास्तिक से आस्तिक

एक लडका प्रह्लाद की नाईं आस्तिक था और उसका पिता हिरण्यकश्यप की नाईं नास्तिक था। जब कभी पिता पुत्र में ईश्वर विषय पर बातचीत होती तो

पिता यही उत्तर देता कि 'तू हमसे पैदा हुआ है या हम तुझसे पैदा हुये हैं। तू हमें क्या सिखलायेगा।" मूर्ख लोगों के पास बस यही बडी दलील होती है। एक दिन लड़के ने साहस किया कि चाहे कुछ हो पिता को आस्तिक बना कर ही छोडू गा। यह दृढ़ निश्चय करके पुत्र ने यह काम किया कि जहा पिता बैठा करता था उसके पैड पर 'नालायक, मूर्ख, उल्लू का इत्यादि अपशब्द लिख दिये। ज्यों ज्यों पिता का मेजपर जाने का समय निकट आता था पुत्र के हृदय की गति बढ़ती थी। पिता जब मेज पर गये तो बस देखते ही क्रोध में आ गए और कहने लगे 'यह उसी का काम है' पुत्र भी आ गया। थोड़ा सा आगे बढ़ा। पिता ने कहा 'मूर्ख' यह तूने क्या किया है तेरे सिवाय और कोई नही होसकता। पुत्रने कहा 'पिताजी। आप किस बात से नाराज हैं' पिता ने कहा तुमने ऐसो बुरी बातें क्यों लिखीं' पुत्र ने पूछा किसने लिखी हैं ? कागज और पेंसिल ने ही तो लिखी हैं। आप कैसे कहते हैं तेरे सिवाय और कोई नहीं लिख सकता।" बस इसी पर दोनों में झगड़ा होगया पिता ने कहा 'क्या ये स्वयं लिख सकती हैं' पुत्र ने कहा 'यदि कलम जरा सी खड़ी हो जाय और हिल जाय तो बस लिख गई।' पिता ने कहा 'भला कभी ऐसा भी हो सकता है ? पुत्र ने कहा बस फैसला हो गया। यदि यही बात है तो फिर ये सूरज और चाद क्या खुद ही चल रहे हैं या इन्हें कोई चला रहा है।"

पिता अवाक् हो गया और पुत्र को छाती से लगा लिया।

(३)

उपकार का बदला

आर्मस्ट्राग नामक एक युवक पर खून करने का दोष लगाया गया था और उसकी जाच हो रही थी। इस अपराधी के पिता की मृत्यु हो चुकी थी केवल मा जीवित थी। उन दिनों राष्ट्रपति लिंकन वकालत का व्यवसाय करते थे। उन्होंने सब बातों का विचार करके युवक की मा को इस आशय का एक पत्र लिख भेजा,'इस मुकदमे में मै आपकी ओर से वकील हूँगा और इस बात का यत्न करूँगा कि युवक पर अन्याय न होने पाये। आप कुछ चिन्ता न करें।"

जाच प्रारम्भ हुई। मुख्य साक्षी ने खूब विश्वास पूर्वक यह बात कही कि ११ बजे के लगभग आर्मस्ट्राग ने उस मनुष्य पर जो प्रहार किया उसी से इस मनुष्य की मृत्यु हुई है। यह बात मैंने स्वय देखी है और अपने कथन की सत्यता की पुष्टिके लिए उसने यह भी कहा कि उस समय चन्द्रमा चमक रहा था और उसके

प्रकाश में ही यह कार्य मैं देख सका। लोगों को यह प्रतीत होने लगा था कि आर्मस्ट्राग अवश्य फासी के तख्ते पर लटकाया जायगा। उसके मित्र हताश हो गए और उसकी माता का धैर्य जाता रहा। ऐसी दशा में अब्राहम लिंकन ने धैर्य पूर्वक पुनः एक बार इस बात की जाच की। तब उसे इस बात का पूर्णतया निश्चय हो गया कि दुष्ट लोगों के एक मत होने के कारण से ही उस मुकदमे को यह रुप प्राप्त हुआ है। उसे विश्वास हो गया कि बेचारे निरपराधी आर्मस्ट्राग की बिना कारण जान जाती है। परन्तु उसे मुक्त करने का कोई मार्ग सूझ नहीं पड़ता था। अन्त में लिंकन को पञ्चाग देखने की हार्दिक प्रेरणा हुई और उस पर से उसे एक ऐसी बात सूझ पड़ी जिससे पहले के सब प्रमाण रद्द हो गये। उस रात्रि को जिस दिन खून हुआ था चन्द्रोदय ११ बजने के बाद हुआ था। उन प्रमाणों को जब अब्राहम ने न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित किया तब आर्मस्ट्राग को अपराधी सिद्ध करने वाले सब के सब एक दम श्रोहत हो गये और आर्मस्ट्राग के निरपराधी होने के विषय में न्यायाधीश को पूर्ण विश्वास हो गया और उसने उसे एक दम दोष मुक्त कर दिया। माता को जो आनन्द हुआ उसका वर्णन करना कठिन है। भावावेश में वह लिंकन के चरणों में लेट गई। लिंकन की आखों में आसू आ गये। उसने बरा र अपने को समाल कर कहा "माता। आपने मुझे नहीं पहचाना है। मै आपके घ में कई वर्ष नौकर रह चुका हूँ। उस समय मैंने इस बच्चे को गोद खिलाया था। आपने मेरी पूर्व कष्टमय स्थिति में मुझ पर जो अनन्त उपकार किये थे उनसे किंचित उऋण होने के लिए ही मैंने इस मुकदमे को हाथ मे लिया था।"

लिकन की यह बात सुनकर माता आश्चर्य चकित रह गई और उसके मुँहसे कोई शब्द न निकला। वह टकटकी लगाये हुए लिकन की ओर देखने लग गई। लिंकन ने युवक के पास जाकर जो उनके निकट खड़ा था, उसके मुख का चुम्बन किया। इस स्वर्गीय दृश्य को देख कर अदालत में सन्नाटा छा गया और न्यायाधीश तथा अन्य व्यक्ति मन ही मन महात्मा लिकन की कृतज्ञता की भावना की भूरि २ प्रशसा करने लग गये।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

आर्य्य समाज की चिनगारिया

—०—

(१)

मेहता अमीचन्द जी

मेहता जी जेहलम के निवासी थे। आप प्रथम मद्यप,मासभक्षी, वेश्यागामी थे। अनेक गाने की मजलिसों मे आप सम्मिलित होते थे। उसमे रग-रेलिया भी मनाते थे। सौभाग्यवश महर्षि दयानन्द जी जब जेहलम गए तो मेहता जी ने उनके दर्शन किए और उनके भाषण भी सुने। उसके पश्चात उनके जीवन ने पलटा खाया। जीवन की अपवित्रता मिट गई और शुद्ध आर्य्य जीवन हो गया। तब आर्य्य समाज के भजन हिन्दी और पजाबी मे बनाया तथा गाया करते थे और आर्य्य समाज के उत्सवों मे सम्मिलित होते थे।

एक बार आप आर्य समाज बन्नू के उत्सव पर गए। जिस समय वहा की वेश्याओं और गायकों को पता लगा कि मेहता जी आए है तो उन्हों ने एक मजलिस करने का विचार करके उसका पूरा पूरा आयोजन कर डाला। सब साधन जुट जाने पर मेहता जी की सेवा मे एक ने आकर निमन्त्रण दिया। आप ने उसे टाल दिया। तब कई व्यक्ति पचायत (डपूटेशन) रूप मे आए। मेहता जी ने कहा "यह पहिला मेहता नही है जो मजलिसों मे भाग लिया करता था। ऋषि दर्शन से जीवन ने पलटा खाया है। अब तो जिसने गाना सुनना है आर्य समाज मे आजाय और सुन ले और जिस ने दर्शन करना है, आर्य समाज मन्दिर मे आकर करले।"

(२)

श्री शादीराम जी पानीपती

आर्य समाज पानीपत मे श्री शादीराम जी उत्तम कार्य-कर्ता व्यक्ति थे। वह नगर मे अरजी नवीसी का काम करते थे। उनकी लेखन-शैली की वहा धाक थी। लिखवाने वाले उनकी प्रतीक्षा मे घटों व्यतीत करते थे। आप आर्य पत्रों मे आर्य सिद्धान्तों पर लेख लिखते थे। उस समय के पत्र उठाकर देखें तो उनके अनेक लेख

आपको मिलेंगे। आप आर्य समाज के सिद्धान्तों पर शास्त्रार्थ भी किया करते थे। कभी कभी गल्प भी लिखा करते थे।

आर्य समाज के प्रचार मे उनकी विशेष रुचि थी। मै उनके जीवन-काल मे कई बार वहा गया। वह जब मिलते थे तो किसी न किसी सिद्धान्त पर अवश्य कुछ न कुछ पूछा वा कहा करते थे।

आपका प्रेम आर्य समाज से अगाध वा अटूट था कि जिस का पता निम्न घटना से मिलता है।

आप उस समय आर्य-समाज के अधिकारी थे और श्रद्धा प्रेम से कार्य करते थे। उस समय उन्हो ने किसी विशेष अवस्था वश अपनी सन्तान में से किसी का विवाह उस आयु से न्यून आयु में किया जो आर्य समाज मानता है। इस पर उनका केस आर्य समाज को अन्तरङ्ग सभा मे विचारार्थ उपस्थित किया गया। विचारान्तर अन्तरङ्ग सभा ने निश्चय किया कि इनको आर्य समाज के अधिकारी पद से पृथक् कर दिया जाय और यह आगे को आर्यसमाज के साधारण सदस्य रह सकते है।

यह निर्णय उनको भी सुनाया गया। उन्हों ने इसे शिरोधार्य किया और जब अगला रविवार आया तब आप ने समाज में जाकर झाडू लगाया और हवन कुण्ड आदि साफ किया। सामग्री घृतादि वहा रखीं उस समय किसी व्यक्ति ने आकर उन से कहा "मैंने सुना है आपको आर्य समाज ने पृथक् कर दिया है" आप ने कहा "हा, कर दिया है" तब उस ने कहा "आप फिर आर्यसमाज में यह काम क्यों कर रहे हैं" आप ने उत्तर दिया "आर्यसमाज ने पृथक् अवश्य किया है परन्तु मुझे सेवा करने से नही रोका है इस लिए मै सेवा कर रहा हूं।"

इस से पता लगता है, आपका आर्य समाज से अगाध प्रेम था।

—स्वतन्त्रानन्द

Duties of Kshatriyas and Non-violence

By J M KAYANDE,

Principal, Bhonsla Military School Nasik

The Hindu sociology is based upon Chaturvarna from time immemorial It was specially emphasised in Bhagavad Gita by Lord Shree Krishna, the greatest Kshatriya imaginable, well versed in arts and science relating to human happiness Lord Shree Krishna was specially the master-mind whom no human being has as yet surpassed in harmonising the science of war and peace He declared in most eloquent terms the duties of the four Varnas and any seeker after truth could find through the pages of Bhagavad Gita one thing in particular, that the duty of the Kshatriya was to be armed, to be prepared to use arms, not for his own selfish gains and aims but always for the good of the society in twofold manners , firstly, by protecting the good and secondly, by destroying the evil ones The action of the Kshtriya could not possibly be selfish as he was not free to use his arms whenever he liked and as he liked It was always guided by the wise, the brains of the society, the Brahmins, who controlled his sword. The Brahmins were wedded to the creed of the so called non-violence which is rightly speaking 'harmlessness Non-violence is a negative term and therefore, an inadequete rendering of the word 'Ahimsa' used in the Bhagavad Gita It really means 'harmlessness ' These harmless, wise Brahmins ensured the peace and happiness of the entire society by handing over the whole department of the defence of the country to the Kshtriyas who were its sworn standing army subservient to the will of the Brahmins, but always respected by them as kings of the country The Brahmins respected the kings and the kings respected the will of the Brahmins

Wisdom and intelligence always controlled the sword and the sword always protected the wealth, the culture and the people of the country The Kshatriyas, therefore, had no selfish ends to gain by the use of their arms Hence their duty was always to fight for righteousness It was always for the truth. Truth was the highest deity to be worshipped

either through violence or through non-violenc, as the emergency demanded There was no other duty for a Kshatriya but to be prepared for the righteous war and to die in the battlefied

The duty of a Kshatriya, therefore, was never in any way inconsistent with non-violence Since I am not an authority on non-violence I may not be understood rightly, the words of Mahatma Gandhi who is universally recognised as authority on non violence of the present age, may therfore be read with profit

On the 7th of August, 1920, I read in the *Bombay Chronicle* an extract from *young India* which contains the following striking passage.

> "The duty of non co operation with unjust men and kings is as strictly enjoined by all religions as is the duty of co operation with just men and kings Indeed most of the scriptures of the worlds seem even to go beyond and *prefer to effiminate submission to a wrong I would risk violence to violence a thousand times than risk emasculation of the whole race* "

Truly Mahatma Gandhi could not have written these lines unless he thought that *such violence is really non violence*— no violence but a righteous duty Later on (I hav'nt got the exact date with me) he again advocated as follows

> "I do believe that where there is a choice between cowardice and violence I would advise violence—also do I advocate training in arms for those who believe in the method of violence I would rather have India resort to arms in order to defend her honour than that she should become or remain in cowardly manner a helpless witness to her own dishonour '

It is clear that no right thinking man in the world will ever denounce the use of arms in a righteous cause

The Irish martyr Terrance MacSwiney preaches as follows

> "War has to be faced not gleefully but as a terrible necessity to save the degeneration of the soul more than that of the body "

The whole of Bhagavad Gita preaches nothing but Satyagraha, that is, the necessity of being truthfull in all our action whether violent or non-violent. The end is Satya and not Himsa or Ahimsa Both are merely the means to lead us to the shining regions of Truth.

Rationally interpreted Bhagavad Gita subscribes to this view only. Great thinkers like Lokamanya Tilak, Babu Bhagwandas and Maharshi Sri Aurobindo Ghosh

also support it *Bhagavad Gita has been preached by the greatest of Kshatriyas on the field of battle It has been preached to another equally great Kshatriya who had begun to doubt his duty* His duty was made manifest to him that he was to fight, because the cause for which he had to fight was a righteous one, fleeing away from the duty was a sin For Arjuna, violence was the only way to Dharma It was, therefore, non-violence for him

I will, therefore, close this by again quoting a recent utterance of Mahatma Gandhi which comes to me at least like a flash of light dispelling the last doubts in my mind about his rational stand on his principles of non-violence as I have always understood it Commenting upon a letter of a Polish sister in the *Harijan* of the 23rd September, 1939 he writes as follows

> "When the war actually broke out she calmed down so far as her mother was concerned (perhaps she could have been charged with a tinge of selfishness even in running down to save or help her mother) but her highly strung nature would not let her rest while her nearest and dearest were in peril of their lives for no offence of theirs She is herself a believer through and through in non-violence, but her very non-violence made her restless Her whole soul has rebelled against the wrong If Poland has that measure of uttermost bravery and an equal measure of selflessness, history will forget that she defended herself with violence *Her violence will be counted as almost as non-violence* "

This is clear as day-light Even in the words of Mahatma Gandhi that whenever violence treads on the righteous path of unselfishness it does the work of non-violence, and presses forward to embrace Truth. Only one qualification is necessary to turn the use of violence into non-violence It is an unselfish personage like Mahatma Gandhi who will bless all the righteous movements of training in arms, when he is convinced that there is non-violence in the heart of those who resort to arms for the emancipation of their motherland

All who fight for the righteous cause are Kshatriyas and their actions though outwardly violent will always be regarded as non-violent

India's Role in the New World Order

By SANTOSH DUTTA,
Assistant Secretary, All-Bengal Teachers' Association

Those who are in the habit of studying the trend of events with a spiritual out-look must have noticed that a resurrection of a spiritual ideal unifying the human race is almost imminent The world is in the throes of a rebirth There is a message somewhere, for the fallen children of humanity groping in the dark and engaged in suicidal strife for narrow selfish ends There is a message somewhere in India not only for Indians, but also for the world for a spiritual empire broad-based on spiritual republicanism There is very little doubt that modern civilisation is heading towards a crash, and behind the smoke and thunder of the guns, behind the agonised cry of the brutalised children of humanity there is a message of the Ruler of the Universe heralding the dawn of a new era in human history

It requires no prophet to predict that India will have to take up the role of a high priest in the order of things that will inevitably evolve out of the ruins of the devastated world

Whatever may be said to the contrary the true self of India is that of a naked fakir, an eternal pilgrim with the staff of a Shramana travelling across the sands of Time The smouldering fire of renunciation that burns eternally on her soil will light up the gloom that has enveloped the world and make humanity realise the mission that she has in store for them

In India every stone has a chronicle Her dust is sacred Her mountains, rivers and caves have an air of

mysticism At every step of your journey whether through cities or jungles, *temples near their heads*

Humanity will have to look to India in its hour of tribulation, Indians themselves will have to rediscover their soul, and dig out the message of Peace and Liberation buried in the sands of Time Indians themselves will have to fall back on their own culture, the priceless heritage of their fore-fathers, when all other western isms have failed, as ready-made political weapons The yogis and sadhus in Indian jungles and caves keep the light of the torch burning They have kept the sacrificial fire burning and are waiting silently for the day when the rightful owners of their lost heritage shall come and possess them They are anxiously waiting to deliver their goods

World-War and Religion

By—Prof Sudhakar, M A.

Religion and Civilization have fallen on evil days. World-War has overshadowed them, nay, have driven them out of existence The great human tragedy being enacted, now, in Europe, and soon enveloping the whole world is not the result of weeks and months, but it is the result of years and generations in which ideas of *exclusiveness* based on selfish nationalism were inculcated in various countries by the organized efforts of patriots

Religious values are no values in these days Appeals in the name of Civilization are hollow The master-minds of modern times are all hushed up The voice of Mahatma Gandhi—the great apostle of Non-Violence—the arch anti War soldier, is also not heard or heeded by nations engaged in the disastrous and destructive campaigns of daily slaughter of civilian populations The only slogan that stirs the heart in these days is, "My country and my nation" Patriotism and nationalism carried to this exclusive pitch have become the bane and curse that have wiped out all humanitarian feelings and sense of brotherhood that Religion once inspired into the minds of men

Europe has now become an epitome of Hell Perhaps this description falls short of the actual condition of Europe The appropriate description will be, that Hell is an epitome of Europe of to-day Hypocrisy, self-seeking, self-delusion, self aggrandisement, sordid ambition and other evils like these are openly preached by the politicians of every country and the result of all this is what we find in the words of Sir S Radhakrishnan, "The whole world will soon be on fire threaten

ing the extinction of the human species" In his address delivered under the auspices of the Ahmadabad Education Society, he upheld the religious ideal when he exhorted his audience in the following words —"Uphold the dignity of the human soul Do not be traitor to humanity by exalting any race or tribe "

Sir Radha Krishanan's cry is a cry in the wilderness The world is terribly changed, so far as religious ideals are concerned We do not find gainless lovers of God, who transcend barriers of race or nation and love humanity with the same enthusiasm as patriots love their countries In their place, the world is now fraught with godless lovers of gain, whom nothing appeals but the slogan of "My Country and my Nation " The hopeless situation in which the world, now, finds itself brings uppermost to our mind the question—where is Religion ?

The genesis of the World's wrongs to day can be traced to exclusive patriotism or nationalism from which all idea of humanitarianism is driven out The responsibility for this state of affairs must go primarily to educationists and thinkers of different countries and secondarily to all their followers—infact, to each educated person who has imbibed their ideas and conducted himself in society according to these ideas The poison was spread through educational institutions such as schools and seminaries A nation's children are really the children of Humanity They should be prepared for the service of Humanity. It is a great slur on our name that our children should serve their national ends whether right or wrong The right attitude is that they should set every end right if it is wrong and should make it still better if it is right

We shall have to begin at the source, if we are anxious to change radically our outlook on life And the source lies in the schools of a nation. It is there that we can mend

matters If a nation really wants to rise to an exalted attitude, above the barriers of race or nation, it should begin with its schools and inculcate humanitarian feelings and tendencies into the minds of its children When they grow up, they will acquire cosmopolitan mentality and the present troubles will all vanish

One thing is quite sure, that in whatever countries Dictatorship or Totalitarian system of rule has come in vogue, regard for religious sentiments or humanitarian feelings has diminished to a very great extent The reason for this seems to be, that in these systems *individuals* have no place Individuals are not allowed to hold, express or put in operation their free opinion Religious life hardly grows where individuals are denied freedom Religion and Civilization thrive in an atmosphere of Freedom and Liberty Democracy alone provides congenial atmosphere for their growth

Europe has placed before the world a picture of the old Armageddon The War is going to be a war to the finish But this much is quite certain that when this war is over, there is bound to be a tremendous reaction against the modern material civilization Religious sentiments, moral values and spiritual fervour will again be revived Apostles like Mahatma Gandhi will come into prominence to hold aloft the banner of Idealism which unfortunately the din and bustle of the present war has removed from the vision of the people India's Message will then be heard Let Indian Messengers be ready for the occasion

सम्पादकीय

आर्य्य कुमार परिषद् की परीक्षाएँ

भारत वर्षीय आर्य्य कुमार परिषद् ने आर्य्य कुमारों के लिये 'वैदिक धर्म विशारद' और 'सिद्धान्त शास्त्री' की दो परीक्षायें नियत की हुई हैं। इन परीक्षाओं की पाठ विधि अगस्त मास के सार्वदेशिक में प्रकाशित की जा चुकी है।

इन परीक्षाओं का उद्देश्य आर्य्य कुमारों को आर्य्य समाज के मुख्य मुख्य सिद्धान्तों का व्यवस्थित रूप में परिज्ञान कराना है, जिससे आगे चल कर वे आर्य्य समाज के उपयोगी और सुयोग्य सदस्य सिद्ध हो सकें। इनके द्वारा हिन्दी भाषा का जो प्रचार होता है और नवयुवकों और नवयुवतियों में स्वाध्याय की जो प्रवृत्ति जाग्रत होती है वे इन परीक्षाओं के अतिरिक्त लाभ समझे जाते हैं।

इस समय तक आर्य्य सामाजिक जगत् में इन परीक्षाओं ने पर्य्याप्त लोकप्रियता प्राप्त की है। सहस्रों नवयुवक और नवयुवतिया इन परीक्षाओं में बैठे और उत्तीर्ण हुए हैं। इन परीक्षाओं की बदौलत आर्य्य जगत् को दर्जनों सुयोग्य कार्य्य कर्त्ता और सदस्य मिले हैं। परन्तु इन परीक्षाओं से लाभ उठाने में भारत वर्ष के ३-४ प्रान्त ही आगे रहे हैं। मुख्यतया युक्त प्रान्त, बिहार और मध्यप्रदेश के विद्यार्थी ही इन परीक्षाओं में बैठते रहे हैं। यह दुख की बात है कि पंजाब प्रान्त में इन परीक्षाओं को नहीं के बराबर अपनाया गया है। इस समय पजाब प्रान्त में हिन्दी भाषा का बहुत अच्छा प्रचार हो रहा है। हिन्दी भाषा की इस जागृति के युग में भी यदि पजाब प्रान्त इन परीक्षाओं को अपनाने में पीछे रहता है तो यह और भी दुख और दुर्भाग्य की बात है। हम चाहते हैं कि अखिल भारतीय रूप से इन परीक्षाओं की योजना को लिया तथा उसे सफल बनाया जाय।

इस सम्बन्ध में प्रसन्नता है, आर्य्य कुमार परिषद् ने विशेष उत्साह और मनोयोग से कार्य्य करना आरम्भ किया है। अब इन परीक्षाओं का कार्य्यालय

अजमेर से उठाकर परिषद् के मुख्य केन्द्र देहली में ले आया गया है। परीक्षा मन्त्री श्री पं० देवव्रत जी धर्मेन्दु इस कार्य्य के प्रति विशेष उत्साह 'गट कर रहे हैं। परिषद् के अन्य अधिकारी और कार्यकर्त्ता भी इस दिशा में विशेष रूप से चिन्तित और यत्नवान हैं। हमें आशा है कि परिषद् के इस ठोस कार्य में उन्हें पूरी पूरी सफलता मिलेगी। परिषद् कार्यालय से इन परीक्षाओं की पाठ-विधि इत्यादि प्राय प्रत्येक समाज में भेज दी गई है। समाचार-पत्रों के द्वारा भी आर्य्य समाजों और जनता को प्रेरणा की जा रही है। जिन सज्जनों को इस सम्बन्ध में कोई सूचना प्राप्त करनी हो वे परीक्षा मन्त्री से आर्य समाज दीवानहाल देहली के पते से प्राप्त कर सकते हैं।

आर्य्य समाजों और आर्य्य अभिभावकों को इन परीक्षाओं को अपनाने में आगे आना चाहिए। अभिभावकों को अपने पुत्रों और पुत्रियों को इन परीक्षाओं में बिठाना चाहिए। आर्य्य समाजों को विविध प्रकार से नवयुवकों और नवयुवतियों को इन परीक्षाओं के लिये प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें चाहिए कि वे अपने यहा परीक्षाओं की तय्यारी के लिए विद्यार्थियों के लिए अध्यापकों की व्यवस्था करें। नियमित रूप से परीक्षा क्लासें खोलें। सुयोग्य और निर्धन परीक्षार्थियों के लिए पुस्तकों इत्यादि की व्यवस्था करें। परीक्षाओं में विशेष योग्यता से उत्तीर्ण होने वालों को पारितोषिक के द्वारा प्रोत्साहित और सम्मानित करें। अभिभावकों को भी विविध प्रोत्साहनों के द्वारा अपने पुत्रों और पुत्रियों में इन परीक्षाओं के प्रति रुचि उत्पन्न करनी चाहिए।

इसमें सन्देह नहीं कि नाविलों, उपन्यासों और सिनेमाओं के इस पतनकारी काल में देखने में नीरस परन्तु परिणाम में सरस धार्मिक सिद्धान्तों की चर्चा और धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय नवयुवकों को बेतुकी बात लगती है। इस प्रकार की योजनाओं के प्रति उनका प्रेम जाग्रत करना सहल कार्य नहीं है। परन्तु हमें इतने भर से ही उनके प्रति अपने कर्त्तव्य से उपराम नहीं हो जाना चाहिये। इस कार्य्य को किस प्रकार सफल बनाया जाय यह विषय अधिकारियों के लिए विशेप ध्यान दिए जाने योग्य है। सब से महत्व पूर्ण बात पुस्तकों के चुनाव की है। पुस्तकों का चुनाव इस ढंग से होना चाहिए जिससे परीक्षाओं के उद्देश्य की पूर्ति के साथ २ उपर्युक्त समस्या का मुकाबला भी होता रहे। उदाहरण के लिये सत्यार्थ प्रकाश जैसे ग्रन्थ रत्न के स्वाध्याय को ले लीजिये। यह ग्रन्थ एक प्रकार

से आर्य्य समाज के लिए मान्य स्मृति ग्रन्थ है। करोड़ों नर नारियों ने इससे लाभ उठाया है और उठाते हैं परन्तु इस ग्रन्थरत्न का कहीं ज्यादा प्रचार और स्वाध्याय होता, यदि उसके विविध सिद्धान्तों और अध्यायों को सरल और वर्तमान शैली पर प्रचुर मात्रा में पृथक् व्यवस्थायें होतीं। हमारा अभिप्राय इस कथन से सत्यार्थ-प्रकाश की महिमा और उपादेयता को कम बताना नहीं है वरन् यह है कि इन दोनों को और भी बढ़ाने के लिए यत्न होना चाहिए।इस दिशा में यत्न हुआ भी है। श्री स्व० जहा तक हमें पता है स्वामी दर्शनानन्द जी ने किया है श्री उपाध्याय जी अपने ट्रैक्टों द्वारा कर रहे हैं और श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी 'सत्यार्थ प्रकाश' लेख माला द्वारा जो इन स्तम्भों मे छपती हैं कर रहे हैं। भाव यह है कि अपने ग्रन्थों केसिद्धान्तों की नए ढग से ऐसी व्याख्याऐं होनी चाहिएँ जो तुलनात्मक हों और विशेषत पश्चिमी जगत के नैतिक और सामाजिक विचारों और भावनाओं के विवेचन पूर्वक अपना प्रभाव और उनकी निस्सारता अङ्कित करें। पुस्तकों के चुनाव में परिषद् को यह बात अपील करगी, ऐसी हमे आशा है।

सर आलीवर लाज

प्रसिद्ध विज्ञान वेत्ता सर ओलिवर लाज का गत २२ अगस्त को शरीरपात हो गया। मृत्यु क समय उनकी अवस्था ८६ वर्ष की थी।

वे १८८१ से १६०० तक लिवरपूल विश्व विद्यालय म शरीर शास्त्र के उपाध्याय थे। रायल सोसाइटी का उन्हे स्वर्ण पदक भी प्राप्त हुआ था। १८६८ मे वे लन्दन की शरीर शास्त्र सोसाइटी के प्रधान थे। १६०१ १६०४ तक तथा १६३२ मे ब्रिटिश एसोसियेशन के अध्यक्ष थे। १६१३-१४ मे रायल सोसाइटी आफ आर्ट का बेतार को तारवर्को मे उन्हे स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ था। १६०० १६०१ मे बर्मिङ्घम के विश्व विद्यालय के प्रिंसिपल रहे थे। १६३२ म उन्होंने कुहरे को दूर करने के यन्त्र का आविष्कार किया था। धर्म और विज्ञान को एकता म उनकी अगाध निष्ठा थी।

उनके प्रसिद्ध ग्रन्थ ये हैं —

(१) मनुष्य और विश्व	(१६०८)
(२) आकाश	(१६०६)
(३) जीवन और मृत्यु	(१६१६)
(४) शरीर विज्ञान से परे	(१६३०)
(५) प्रगतिशील विज्ञान	(१६३१)
(६) भूतकाल	
(७) आत्म चरित्र	(१६३१)
(८) मेरी फिलासफ़ी	(१६३८)

पंजाब के आदि धर्मी

पजाब की हिन्दू आबादी के ह्रास का एक कारण जैसा कि १६३१ की जन गणना रिपोर्ट मे अकित है यह था कि यहाँ के 'आदि धर्मियों' को गैर हिन्दू अकित किया गया था। 'पजाब प्रान्तीय दलित जाति सघ' के प्रमुख ने २१ अगस्त ४० को एक वक्तव्य प्रकाशित किया था उसमें उन्होंने समस्त आवश्यक बातों पर प्रकाश डाला है। निम्न उद्धरण उस वक्तव्य से लिया जा रहा है —

"पंजाब के आदि धर्म्म मडल ने १६३० में जन गणना कार्य्य प्रारम्भ होने से पूर्व पंजाब सरकार को प्रार्थना की थी कि जनगणना के समय दलित जातियों को अपना धर्म 'आदि धर्म' लिखवाने की आज्ञा दी जाय, क्योंकि वे भारत की मूल जातियों में से हैं और यत हिन्दू लोग उनसे परहेज रखते हैं अत हिन्दू धर्म में उनका विश्वास नहीं है।"

(भारत की जन गणना १६३१ वाल्यूम १७ पजाब, भाग १ पृष्ठ २८६)

'आदि धर्म मंडल' की यह माग स्वीकार करली गई थी और इसके फल-स्वरूप हिन्दू दलित जातियों को मिलाकर हिन्दुओं की संख्या घट गई थी। इस बात को भी सरकार ने कबूल कर लिया था।

'हिन्दू आबादी घट गई है। कमी का प्रत्यक्ष कारण यह है कि पिछड़ी हुई जातियों के लगभग ४ लाख व्यक्तियों ने अपने को 'आदि धर्मी' लिखाया था।

(१६३१ को जन सख्या वाल्यूम १७ पजाब भाग १ पृष्ठ २६५)

वक्तव्य के लेखक ने पजाब की जन गणना के सुपरिन्टेन्डेन्ट खान बहादुर शेख फजल इलाही से पूछा था कि क्या अगली जन गणना म आदिधर्मी गैर हिन्दू गिने जायेंगे उन्हें निम्न उत्तर मिला है:—

पत्र-तिथि १३-८-४०

"आदि धर्मी गैर हिन्दू समझे जायेंगे और १६३१ की नाईं आगामी जन-गणना में उनकी सख्या हिन्दुओं की सख्या में सम्मिलित नहीं की जायगी।"

इस सब पर आलोचना करता हुआ सहयोगी 'माडर्न रिव्यू' आर्य समाज और हिन्दू महासभा को प्रेरणा करता है कि वे आदि धर्मियों की सामाजिक शिकायतों को दूर करने का पूरा २ यत्न करें और अगली जन गणना मे अपने को हिन्दू लिखाने की उन्हें प्रेरणा करें। आर्य समाज इस दिशा मे सजग और पूर्ण यत्न कर रहा है।

आर्य नगर ज्वालापुर (हरिद्वार) की नई योजना

ज्वालापुर (हरिद्वार की प्रसिद्ध सस्था आर्य वानप्रस्थ आश्रम की प्रबन्धकर्त्री सभा ने लगभग दो वर्ष पूर्व, आश्रम के समीप ही एक आर्य नगर बसाने का निश्चय किया था।

इस नगर के लिये एक भूमि लेकर उसे २६० खण्डों में विभक्त किया गया था और ये खंड योग्य आर्य पुरुषों को बेचने की योजना बनाई गई थी।

नगर की भूमि आदि का प्रबन्ध तो श्री महात्मा नारायण स्वामी जी, रा० ब० प० गगा-प्रसाद जी श्री स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी, और श्री लाला नारायणदत्त जी आदि प्रमुख आर्य सज्जनों की एक कमेटी के सुपुर्द है परन्तु इस योजना को सफल बनाने का मुख्य भार भक्त सुन्दरदास जी आर्य वानप्रस्थ पर ही रहा और है।

भक्त सुन्दरदास जी ने सितम्बर १९३८ में यह कार्य अपने ऊपर लेकर सकल्प कर लिया कि बिना सब २६० भूमि खण्डों को बेचे, मैं वापिस ज्वालापुर नहीं लौटू गा। ईश्वर की दया और उनके पुरुषार्थ से ये सब भूमि खड बिक जाने के अतिरिक्त भी, प्रचुर नकद धन-राशि प्रबन्ध कर्त्री सभा के कोश मे एकत्र हो गई है।

अब सभा ने अपना कार्य क्षेत्र बढाकर निश्चय किया है कि आर्य नगर के समीप ही एक महिलाश्रम बनाया जाय, जिसमे १० × ८ फुट की बरामडे सहित ६० कुटिया हो, और जो आर्य देविया एकान्त मे रहकर स्वाध्याय ईश्वरोपासना आदि करना चाहे उन्हे उनमें निवास करने की आज्ञा दी जाये। इस आश्रम के समीप ही एक यज्ञशाला और कूप भी रहेंगे एक कुटी बनाने का व्यय २५०) यज्ञशाला का १०००) और कूप का व्यय १५००) होगा। दानी पुरुषों को चाहिये कि वे इस कार्य की पूर्ति में भी भक्त सुन्दरदास जी की सहायता करें।

महिला आश्रम के अतिरिक्त आर्य नगर म एक धर्मार्थ औषधालय भी चल रहा है, जिस में कुछ विद्यार्थियों के अध्ययन का भी प्रबन्ध है। वानप्रस्थ आश्रम के सामने ही नहर गग के तट पर एक घाट भी बनाने का यत्न किया जा रहा है।

आशा है कि समर्थ आर्य इस काम म आर्य वानप्रस्थ आश्रम के अधिकारियों की तन-मन-धन से सहायता करेंगे।

भक्त जी का अनशन

हरियाना प्रान्त के प्रसिद्ध कार्यकर्ता भक्त फूलसिंह जी को आमरण अनशन के व्रत की सफलता पर हार्दिक बधाई। ग्राम नारनौंद मे चमारा के कुऐ क अधिकार की रक्षा के लिये यह व्रत किया गया था। वहा के चमारों ने अपने लिये एक कुआं खोदा था इसपर गाव के जाटों और रगडो (मुसलमानो) ने आपत्ति की और कुआ खोदने से उन्हे बलात रोक दिया। भक्त फूलसिंह जी ने इस अत्याचार को दूर करने का पूरा २ यत्न किया और अन्त म निराश होकर उन्हे अपने प्राणों की बाजी भी लगा देनी पडी। आर्य समाज के कार्य कर्ताओं को समाज सुधार के लिये अनशन के उपाय का आश्रय लेना चाहिये या नही, यह विषय विवादास्पद है। फिर भी भक्त जी का उद्योग प्रशसनीय हैं। पजाब सरकार के अधिकारी भी धन्यवाद के पात्र हैं। उन्होंने सामयिक हस्ताक्षेप करके एक भयानक काड को सौन्दर्य मे परि-वर्तित करने की दूरदर्शिता दिखलाई हैं। भक्त जी के उद्योग के फल स्वरूप उस प्रान्त मे हरिजनोद्धार के लिये जो जागृति उत्पन्न हुई है उसकी हम उपेक्षा नहीं करनी चाहिये।

केशव मेमोरियल स्कूल हैदराबाद का आधार-शिला-समारम्भ

माननीय घनश्यामसिंह जी का स्वागत तथा महत्वपूर्ण भाषण

हैदराबाद—

ता० २० सितम्बर १९४० को प्रातःकाल की ग्राट-ट्रन्क से श्री माननीय घनश्यामसिह जी गुप्ता प्रधान सार्वदेशिक सभा, हैदराबाद पहुँचे। जनता पूर्व से ही स्टेशन पर उपस्थित थी। जयघोषों की गगनभेदी ध्वनि मे श्री प्रधान जी का स्वागत किया गया। नगर के प्रतिष्ठित वकील और व्यापारी आदि ने पुष्पहार पेश किये। स्टेशन के बाहर केशव मेमोरियल स्कूल के विद्यार्थियों ने और आर्य-वीर सेवा-दल के स्वय-सेवकों ने प्रधान जी का स्वागत किया और गार्ड आफ आनर्स दिया। वहा से प्रधान जी श्री प० ज्ञानचन्द जी बी० ए० उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा के साथ अपने स्थान पर पहुँचे। आठ बजे श्री देशबन्धु जी गुप्ता बम्बई से पधारे।

साय ५ाच बजे केशव मेमोरियल स्कूल की बिल्डिंग के आधार शिला समारभ के लिये स्कूल के भव्य सुसज्जित मैदान में जनता एकत्रित हो गई जिन में नगर के बड़े २ अधिकारी, वकील, साहूकार और प्रतिष्ठित सज्जन थे। समय पर कार्यक्रम आरम्भ हुआ।

सर्व प्रथम हवन किया गया। उस के बाद श्री लाला देशबन्धु जी गुप्ता डायरेक्टर 'तेज देहली' की अध्यक्षता मे समारम्भ कार्य आरम्भ हुआ। श्री प० नरेन्द्र जी ने थोड़े से किन्तु उचित शब्दों में स्कूल का परिचय दिलाया। उसके बाद श्री घनश्यामसिह जी गुप्ता ने अपने शुभ कर-कमलों द्वारा स्कूल के भवन की आधार-शिला रक्खी। उसके पश्चात् पूज्य प्रधान जी का गम्भीर तथा भाव-पूर्ण भाषण हुआ। अन्त में श्री लाला देशबन्धु जी गुप्ता ने अपना अध्यक्षीय भाषण दिया। श्री प० विनायकराव जी बार-ॲट-लॉ के धन्यवाद देने के पश्चात् सभा का कार्यक्रम समाप्त हुआ।

माननीय श्री घनश्यामसिंह जी गुप्त करतल ध्वनि में भाषण देने खड़े हुए। आपने कहा कि—

"मैं जिस महान् व्यक्ति के स्मृति-भवन की आधार-शिला रख रहा हूं उस व्यक्ति से आप सब लोग भली प्रकार परिचित हैं। किन्तु मैं उनकी एक विशेष बात यह बतलाना चाहता हूं कि स्व० प० केशवराव जी जहां एक कट्टर आर्यसमाजी थे वहां हाईकोर्ट के जज भी थे। उन्होंने दोनों कार्यों को बड़ी ही उत्तमतासे चलाया। आज उन्हीं की स्मृति में यह आधार-शिला रक्खी जा रही है। मैं यहा पर एक भ्रम-निवारण करना चाहता हू कि यह स्कूल पिछले सत्याग्रह की स्मृति में नहीं है। किन्तु वह प० केशवराव जी की स्मृति में है। यह स्कूल केशवराव जी की असली स्मृति उसी समय होगा जब कि यह जहा लोकप्रिय होगा ही वहा सरकारप्रिय भी होगा। इस प्रकार स्कूल के सञ्चालकों पर बड़ी भारी जिम्मेदारी आती है। मैंने जैसे पूर्व में ही कहा कि यह स्कूल केवल प० केशवराव जी की स्मृति है, किन्तु उस महान् व्यक्ति की असली स्मृति उसी समय होगी जब कि यहा से निकलने वाले विद्यार्थी कट्टर आर्यसमाजी होंगे और साथ ही सरकारप्रिय भी।

मै आप लोगों से कुछ कहना नहीं चाहता क्योंकि आप अपनी जिम्मेदारी भली प्रकार से जानते हैं। मै यहा सरकार से कुछ कहना चाहता हू कि यदि इस स्कूल के सञ्चालकों से कुछ त्रुटि हो जाय तो उसे चाहिए कि प० केशवराव जी को याद करके उन त्रुटियों को टाल दे। मै आशा करता हूँ कि सरकार का आशीर्वाद और सहायता स्कूल के साथ होगी किन्तु साथ ही सञ्चालकों को भी जानना चाहिए कि उन पर भी बड़ा भारी उत्तरदायित्व है।

हमारे शास्त्रों में कहा है कि जिस विद्या से मनुष्य में विनय आती है वही सच्ची विद्या है। विनय कायरता नहीं अपितु नम्रता है। उद्दण्डता लाने वाली विद्या मनुष्य को रसातल तक पहुंचाती है। इस स्कूल की शिक्षा ऐसी हो जिससे विनय पैदा हो। विनय के आने से मनुष्य में पात्रता आती है। परमात्मा करे कि इस स्कूल से निकलने वाले विद्यार्थी देश और धर्म की सेवा के पात्र बनें। धर्म व देश की सेवा का आडम्बर तो हर कोई कर सकता है परन्तु सच्चे पात्र और देश धर्म सेवक बहुत कम होते हैं।

मै आशा करता हूं कि यहा के विद्यार्थी वैदिक-धर्म के सच्चे अनुयायी बनें। यहा से निकलने वाले विद्यार्थी केवल डिग्री प्राप्त करने वाले न हों अपितु उस वैदिक संस्कृति के रक्षक बनें, जो संसार में सबसे पुरानी होकर भी कायम है। वैदिक-संस्कृति इसलिए कायम है कि उसमें चरित्र-बल है, असलियत है। उसने बड़े २

चरित्रवान पैदा किये। हमारी संस्कृति की विशेष चीज सदाचार है, जिसको आप जानते ही हैं। केवल सदाचार को जानना काफी नहीं। जानना आसान है परन्तु उसका पालन करना कठिन है। यदि आचरण हृदय से करने लगे तो वह संस्कृति ससार से नहीं मिट सकती। इसलिए परमात्मा! इस स्कूल के शिक्षक और शिष्य सदाचारी और चरित्रवान बनें। जिनके आचरण की धाक केवल निजाम राज्य में नहीं अपितु समस्त भारत में फैले। यदि यह बात न हो तो स्कूल का अन्तिम ध्येय मिट जायगा। यहा के विद्यार्थी ऐसी छाप लेकर निकलें जिसका रङ्ग धुल न सके। इनका सदाचार इतना दृढ़ हो कि यह केवल विद्यार्थी जीवन तक ही न रहे अपितु जीवन पर्यन्त इनका सदाचार बना रहे।

श्री देशबन्धु जी गुप्ता ने अपने भाषण को आरम्भ करते हुए कहा 'सज्जनो। पूज्य प्रधान जी ने जो आशाए और जो सही चित्र इस सस्था का आपके सन्मुख रक्खा है वह आपको भली प्रकार ज्ञात हो गया होगा। मुझे पूर्ण आशा है कि आप लोगों की सहायता से यह सस्था बड़ी ही भव्य होगी और भविष्य में यहां की मार्ग दर्शक बनेगी।

हैदराबाद के सत्याग्रह का सबसे मीठा फल यही मालूम होता है कि उत्तर व दक्षिण निकट आगये। आज का दृश्य उसी फल का परिणाम है। आप इसको भली प्रकार जान लें कि हम आपसे जुदा नहीं। यदि आप प्रसन्न हैं तो हम भी प्रसन्न हैं, यदि आप दुःखी हैं तो हम भी दुःखी।

हैदराबाद का मेरा पिछला थोड़ा सा अनुभव यह बतला रहा है कि अब भी आर्यसमाज के प्रति भिन्न २ सर्कलसमें अनेक विचार हैं, और वह आर्यसमाज को उसी रङ्ग में देखते हैं। समय २ की उलझनें इसी अनभिज्ञता और भ्रम का कारण हैं। सच्चे आर्य का यही कर्तव्य है कि दूसरों को सुख दे। दुर्भाग्य से कुछ लोग यह समझते हैं कि आर्यसमाज का काम कोई रचनात्मक नहीं अपितु केवल दूसरों का विरोध करना ही है। यही कारण है कि यहा पर कहीं २ आर्यसमाज का जो चित्र खिच गया है वह अति भयानक है। मै चाहता हूं कि आप आर्यसमाज के उस चित्र को देखें जिसमें वह संसार की निष्काम भाव से सेवा करना चाहता है। यदि आप सत्याग्रह को देखें तो पता चलेगा कि उन सहस्रों व्यक्तियों में से, जो १॥ हजार मील दूर से आये थे, अधिक संख्या उनकी थी जो स्वयं आर्यसमाजी नहीं किन्तु आर्यसमाज के कार्यों से प्रभावित हुए थे।

आप उत्तर भारत में जायें तो शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज सब से आगे दिखाई देगा। पंजाब के डी० ए० वी० कालेजों ने इतने ग्रेजुएट निकाले जो पंजाब के अन्य तमाम कालेजों ने मिलकर भी नहीं निकाले। इसीलिए एक अंग्रेज ने कहा था कि वहां पर जितने हिन्दू शिक्षक दिखाई देते हैं वह आर्यसमाज के कारण हैं। शिक्षा से बढ़कर मूल्यवान और कोई वस्तु नहीं। सरकार को भी इससे खुश होना चाहिए कि यह संस्था उसके एक विशेष कार्य को करके उसकी जिम्मेवारी में हाथ बंटा रही है।

यहां बड़ी यूनिवर्सिटी है किन्तु यहां शिक्षा का अवसर बहुत कम है। हैदराबाद वालों को बड़ी लम्बी यात्रा तै करनी है, इसलिए आपको इस संस्था को सहायता तो देनी ही होगी, किन्तु साथ ही सरकार को भी चाहिए कि इसकी मदद करे।

इस संस्था से आर्यसमाज का पता चलेगा। आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है जिसने जाति या सम्प्रदाय की बुनियाद पर कोई लड़ाई नहीं लड़ी। भारत के लोग अपनी संख्याके अनुसार नौकरियों आदि के लिए लड़ते हैं, किन्तु आर्यसमाज इससे सदा दूर रहा। हमें इस प्रकार लड़ना नहीं है, हमे तो स्वामी दयानन्द के सन्देश को कि संसार मे सुख शान्ति स्थापित करो, फैलाना है। केशवराव जी आर्यसमाज के नमूना हैं। उनसे आर्यसमाज का अन्दाजा लगाया जा सकता है।

आर्यसमाज मे एक बड़ा दोष है जिसको मै गुण कहूँगा। वह बाखबर है, वह अन्याय को सहन नहीं करता और न स्वयं अन्याय करता है। जहां आर्यसमाज का यह सबसे बड़ा दोष है वहां यह सबसे बड़ा गुण भी है। दूसरों की बुराई को दूर करने वाला ही सच्चा आर्य है। यह समझना कि आर्यसमाज समुदाय विशेष के दुखों को दूर करता है, गलत है। इसके पास यह संकुचित दृष्टि नहीं। बिना भेद भाव के यह हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई आदि की सेवा करता है यदि इस की सेवा से भी लाभ न उठाए तो दुर्भाग्य ही है। इसकी सेवा किसी बुरे और गुप्त विचारों से नहीं अपितु खुले तौर पर होती है। हमारा काम ऋषि दयानन्द के सन्देश को सब तक पहुँचाना है। हम अपने कार्य को बढाना चाहते है, किसी से द्वेष करना नहीं चाहते।

मुझे आशा है कि आर्यसमाज का सच्चा स्वरूप आपके सामने आ गया है। इस संस्था के सञ्चालक भी यही ध्येय अपने सामने रखेंगे। अंत मे मैं यह आशा करता हूँ कि आप लोग इस संस्था के साथ अपनी गहरी सहानुभूति दर्शायेंगे और इसकी हर प्रकार की सहायता करेंगे।"

उपदेशक विद्यालय सोलापुर का दीक्षान्त उत्सव

माननीय घनश्याम सिंह जी गुप्त का महत्वपूर्ण दीक्षान्त भाषण

२२—६—४० को प्रातः साढ़े छः बजे की ट्रेन से माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्त प्रधान सार्वदेशिक सभा हैदराबाद से उपदेशक विद्यालय के दीक्षांत संस्कार के लिए सोलापुर पधारे। प्रधान जी के साथ श्री लाला देशबन्धु जी गुप्ता एम० एल० ए० (पञ्जाब असेम्बली) श्री प० ज्ञानचन्द्र जी बी० ए०, श्री पण्डित विनायकराव जी विद्यालंकार, श्री प० नरेन्द्र जी आर्य मिशनरी, श्री प० दत्तात्रय प्रसाद जी वकील हाईकोर्ट भी थे। प्रधान जी के स्वागत के लिए एक बड़ा जन-समुदाय स्टेशन पर पहुँचा हुआ था, जिन में राजगुरु धुरेन्द्रजी शास्त्री, श्री प० बशीलाल जी वकील के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। उपदेशक विद्यालय में प्रातः काल की कार्यवाही हवन सन्ध्या से शुरू हुई। एक विद्यार्थी तथा श्री पण्डित कर्मवीर जी आर्योपदेशक के भजन के बाद श्री पण्डित केशवार्य तथा श्री पण्डित जयदेव जी विद्यालङ्कार स्नातक गुरुकुल कागडी के भाषण हुए। श्री प० गङ्गा-प्रसाद जी उपाध्याय ने समस्त विद्यार्थियों का परीक्षा फल पढ़कर सुनाया। श्री प० वीरेन्द्र जी सब विद्यार्थियों में प्रथम आए हैं। श्री रुद्रदेव जी द्वितीय रहे हैं। प्रातःकाल की कार्यवाही परीक्षा परिणाम घोषित करने के बाद समाप्त हुई। इस उत्सव, उपदेशक मण्डल की बैठक और आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य की अन्तरग सभा की बैठक में सम्मिलित होने के लिए स्टेट के हर भाग से प्रतिनिधि और उपदेशक पधारे थे। विद्यालय में २२ तारीख को मेला सा लगा रहा। दोपहर को सब अभ्यागत महोदयों का भोजन विद्यालय में हुआ। मध्याह्न में भोजन आदि के पश्चात् दो बजे उपदेशक मण्डल की बैठक उपदेशक विद्यालय के भवन में श्री घनश्यामसिंह जी गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। प्रधान जी ने स्टेट के प्रचार कार्य में आनेवाली अड़चनों या असुविधाओं को स्टेट वालों के मुख से ही सुना और स्टेट में प्रचार कार्य करने के ढङ्ग पर एक अत्युत्तम वक्तृता दी।

दोपहर के बाद—

साढ़े पांच बजे दीक्षांत संस्कार की मुख्य कार्यवाही एक सजे हुए मण्डप में माननीय घनश्यामसिंह जी गुप्ता की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। उत्सव के

लिए सोलापुर शहर की निमन्त्रित प्रतिष्ठित जनमण्डली काफी संख्या में पधारी हुई थी जिनमें श्री मुले आनरेरी मजिस्ट्रेट सोलापुर श्री काडादी, श्री साठे, श्री डा० जी, एल० दत्ता० प्रिंसिपल डी० ए० वी० कालेज आदि के नाम विशेषतया उल्लेखनीय हैं। विद्यार्थियों के भाषण तेलगु, कानडी मराठी और हिन्दी भाषा में हुए जिन्हें जनता ने पसन्द किया।

लाला दे॰ाबन्धु जो

श्रीयुत लाला देशबन्धुजी गुप्ता एम० एल० ए० ने विद्यार्थियों को उपदेश करते हुए एक छोटा सा भाषण दिया। आपने बताया कि पश्चिम को आज सभ्य कहा जाता है परन्तु पश्चिम की सभ्यता संसार को तबाह कर रही है। आपने कहा कि यह सभ्यता ससार को सुख नहीं दे सकती। कच्ची नींव पर इस सभ्यता के मन्दिर का निर्माण हुआ है । हमारी सभ्यता संसार के दिलों पर राज्य करती है हमारी सभ्यता पर—धन को मिट्टी के समान समझने का आदेश देती है। हमारी सभ्यता ही इस ससार में शान्ति फैला सकती है और सारे संसार को हमारी सभ्यता को अपना गुरु बनाना पड़ेगा। विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए आपने कहा कि विमार्गों को बिना शस्त्र के प्रेम की रस्सी से बाधा जा सकता है। ऋषि दयानन्द का मिशन ऊँचा था। ऋषि दयानन्द के मिशन को लेकर कार्य के लिए निकलो। निष्काम भाव और त्याग से सेवा करो।

उपाध्याय जी

विद्यालय के आचार्य राजगुरु जी के अस्वस्थ होने के कारण उनका कार्य श्री प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय करते हुए सार्वदेशिक सभा, तथा उपदेशक विद्यालय के उद्देश्य आदि से जनता को परिचय दिलाया और विद्यार्थियों को कहा कि आपको विजेता के रूप में प्रचार के लिए नहीं निकलना है अपितु डाक्टर के रूप में सेवा के लिए कार्य करना है जिस प्रकार डाक्टर कार्य करने से पूर्व रोगी से प्रेम करता है उसी प्रकार तुम्हें भी कुरीतियों के रोगों के दूर करने से पूर्व रोगियों से प्रेम जमाना होगा।

दीक्षान्त भाषण

माननीय घनश्यामसिंह जी ने अपने करकमलों से विद्यार्थियों को "सिद्धान्त-रत्न" की उपाधियां दीं। योग्य स्नातकों को पुस्तकें तथा पदक भेंट किए गए। तदुपरान्त प्रधान जी ने तालियों की गूंज में दीक्षान्त भाषण आरम्भ किया।

आपनें उपदेशक विद्यालय के खोलने का उद्देश्य आदि बताते हुए कहा कि आर्य समाज जनता की सेवा के लिये कार्य कर रहा है। जन-गणना के आकड़ों पर आपने प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रतिवर्ष दो प्रतिशत हिन्दुओं की संख्या घट जाती है, हैदराबाद में तो प्रति दश वर्ष में दस प्रतिशत घटती है। हिन्दुओं की संख्या वहा १६३१ में ६६ लाख थी, १६२१ में १ करोड ६ लाख थी और १६११ में एक करोड १६ लाख थी। प्रधान जी ने बताया कि मुझे सख्या के कम हो जाने की उतनी चिन्ता नहीं और न उसे महत्व देता हूँ परन्तु शोक उस कमी के कारणों पर है। हिन्दू जाति की कुरीतियों ने ही जाति को इतना घटाया है और घटा रही है। प्रधान जी ने बताया कि ऋषि दयानन्द ने उन्हीं कुरीतियों के नाश के लिए लङ्गोट कसा और आयु भर इस कठिन कार्य को बड़े त्याग और लग्न से करते रहे। उन्होंने अपना यह कार्य आर्य समाज को सौंप दिया और आर्य समाज अपने जीवन काल से ही यह कार्य बड़ी तन्मयता के साथ करता चला आ रहा है। आर्य समाज ने ऋषि के मिशन को पूरा करने के लिए कोई कसर न छोड़ी। बलिदान दिए। इस नगरी से भी गत वर्ष आर्य समाज ने सामूहिक रूप से बलिदानों का तान्ता शुरू किया, आर्य समाज की कीर्ति के लिए नहीं, निजाम सरकार से लड़ाई के लिए नहीं अपितु वैदिक संस्कृति के प्रचार की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए। आर्य समाज ने नाम चढ़ाने के लिए यह कार्य नहीं किया, हा इस रूप मे नाम चढाने के लिए यह कार्य किया कि हिन्दू जाति अपने सेवक (आर्य समाज) को पहचान ले। उससे सेवा का कार्य ले सके। मैं तो इसी में अपनी सफलता समझूँगा यदि आर्य समाज को हिन्दू जाति अपना सेवक समझ ले। हम हिन्दू जाति की सड़क तैयार करने के लिये सर कटाने को तैयार हैं। यह मार्ग यदि हमारी हड्डियों से कूट कूट कर बनाया जाय और जाति उस पर चले तो इसी में समाज का सौभाग्य है। हम सेवा के लिये काटों को शरीर में चुभोकर यह मार्ग निकालेंगे। सफल विद्यार्थियों को आपने बधाई देते हुए राजगुरु जी, तथा उपाध्याय जी को बधाई दी और कहा कि वहां भिन्न शरीर में मैं ही कार्य कर रहा था। विद्यार्थियों को आपने उपदेश देते हुए कहा कि आप में बोलने की शक्ति तो है ही पर केवल यह शक्ति भी काम नहीं देती, आपको सेवक के रूप में ही कार्य करना होगा' तुलसीदास जी ने कहा है कि महावीर जैसा सेवक बनना बड़ा कठिन कार्य है। आपने जो व्रत लिया है वह सेवा का व्रत है

उपदेशक का कार्य कठिन है और विशेषतया वहां जहां आपको प्रचार करना है। आप हर एक को प्रसन्न नहीं कर सकते। आपको यह विचारना होगा कि किस प्रकार से हम धर्म की सेवा कर सकते हैं, कुरीतियों को दूर कर सकते हैं। आप में सबसे बड़ा गुण चरित्र, वीरता अर्थात् मिश्नरी स्प्रिट होनी चाहिए। यदि आप में यह है तो आप अकेले समाज के सिर को ऊँचा कर सकते हैं। आपको राजगुरुजी उपाध्याय जी के उपदेशों तथा पुस्तकों से शिक्षा ग्रहण नहीं करनी होगी बल्कि उनके क्रियात्मक जीवन को अपने अन्दर ढालना होगा। असली कसौटी बस चरित्र है।

इसके पश्चात् श्री पण्डित बंशीलाल जी वकील ने सार्वदेशिक सभा, श्री घनश्यामसिंह जी गुप्ता, श्री राजगुरु जी, श्री उपाध्याय जी तथा अन्य निमन्त्रित महोदयों को धन्यवाद दिया और कहा कि सार्वदेशिक के हम पर बहुत उपकार हैं। हम उन्हें चुका नहीं सकते हां इतना अवश्य है कि सार्वदेशिक को आवश्यकता पड़े तो निजाम राज्य के समस्त आर्यों को उसके चरणों में चढ़ा देंगे।

रात्रि में

रात्रि को तिलक चौक में आर्य समाज सोलापुर की ओर से श्री बैरिस्टर विनायक राव जी की अध्यक्षता में श्री माननीय घनश्यामसिंह जी की सेवा में अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। श्री पण्डित नरेन्द्र जी आर्य मिश्नरी का ओजस्वी भाषण हुआ। प्रधान जी ने अभिनन्दन पत्र का उत्तर देते हुए कहा कि आर्य समाज पूर्ण धार्मिक सस्था है परन्तु यदि किसी आन्दोलन से धार्मिकता में किसी प्रकार की बाधा आने का भय हो तो इसे दूर करने वाले किसी दूसरे आन्दोलन में भी आर्य जनों को भाग लेना चाहिये। जैसे कांग्रेस ने राजनैतिक संस्था होते हुए भी अछूतोद्धार जैसे धामिक कार्य को भी अपनाया हुआ है।



हे विश्वम्भर घर घर यहां श्रुतियों के उच्चार हों।
उद्धार धर्म का हम करें सच्चे आर्य कुमार हों॥

मैं चाहता हूं

(राजगुरु पण्डित धुरेन्द्र जी शास्त्री, प्रधान, भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की लेखनी से)

***

जब से भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद का कार्यभार इन्दौर सम्मेलन में मेरे कमजोर कन्धों पर धरा गया है तब से ही मैं परिषद् के कार्य को प्रबल वेग से आगे बढाने की ओर लगा हुआ हू। इन्दौर सम्मेलन पर मैंने कुमारों को सम्मति दी थी कि अत्यन्त उपादेय सीधे सादे थोड़े से प्रस्ताव पास करें उन्हा ने वैसा ही किया।

अब अन्तरग सभा का सगठन कर दिल्ली में परिषद् के कार्यालय को ठीक ठाक करके अन्तरग तथा कार्यकारिणी ने सालभर का कार्यक्रम तैयार कर लिया है और मन्त्रीमण्डल उसकी पूर्ति मे लग गया है।

धार्मिक परीक्षाओ के कार्य मे उत्साही परीक्षा मन्त्री श्री प० देवव्रत जी धर्मेन्दु जुट गए हैं। परिषद् मन्त्री श्री मनुराम जी बी० ए० आनर्स तथा उनके सहकारी मन्त्री एव कार्य कारिणी के अन्य सदस्यों पर भी कार्य बाँट दिया गया है। हर्ष का अवसर है कि सब अपने अपने कार्य में प्रवृत्त हो गए हैं।

परिषद् के कार्यक्रम मे इस वर्ष ५-६ मुख्य बातें हैं जो विज्ञप्ति सख्या १ में कृपाकर आर्यकुमार सभाओं में भेजी जा चुकी हैं। जिन के पास वह विज्ञप्ति न पहुची हो, वे परिषद् मन्त्री चाँदनी चौक दिल्ली से मंगालें।

वे मुख्य बातें ये हैं .—

१ तम्बाकू और सिगरेट के विरुद्ध जोरदार आदोलन।

२ स्वाध्याय, सत्सग, सदाचार, सेवाभाव और सगठन की प्रवृत्ति को जाग्रत करने के लिए शिक्षा शिविरों (Training Camps) का आयोजन।

३ स्वाध्याय तथा ज्ञान वृद्धि के निमित्त शिक्षा प्रद धार्मिक परीक्षाओं का विस्तार।

४ व्याख्यान मालाओं का प्रबन्ध और लेख मालाओं का प्रकाशन।

५ शारीरिक व्यायामादि का कार्यक्रम तैयार करना।

६ कुमार सभाओं का निरीक्षण सगठन और उनकी कार्य प्रणाली की विधिवत् तैयारी करना।

यद्यपि ये सब कार्य आरम्भ तो कर दिए गए हैं। परन्तु इन सब के लिए धन की आवश्यकता है। धन एकत्रित करने के लिए भी कार्यकारिणी ने मेरी सम्मति से यह निश्चय किया है कि इस वर्ष भारत भर में स्थान स्थान पर परिषद् के प्रतिष्ठित सभासद् सहायक रूप म बनाए जावें। जो साल भर कुमारो के कार्य के लिए कुछ न कुछ दान अवश्य देवें। इस दान की रकम कम से कम पाच रुपया हो। धनी जनो से अधिक भी लिया जाव किन्तु पाच स कम किसी म भी न लिया जाए। मेरी अभिलाषा है कि ऐस एक हजार प्रतिष्ठित आर्य पुरुष भारत भर में से मिल जावेंगे जो कम से कम पाच रुपए अपने बच्चो के लिए देद।

दशहरा और दीवाली के त्यौहार आ रहे हैं। यह बहुत बड़े त्योहार हैं। इन अवसरों पर गृहस्थ अपने बच्चो के खिलाने पिलाने पर खूब रुपया खर्च करते ह। मैं समस्त आर्य पुरुषों से निवेदन करता हू कि वे जहा खेल खिलौने और मिठाई आदि क लिए देंगे व इस वर्ष अपने बच्चो और कुमारों को धार्मिक शिक्षा तथा सदाचार निर्माण के लिए भी पाँच रुपये दें। साल भर में पाच रुपए की रकम भारत भर क आर्य कुमार आप से दान मागते हैं। मुझे विश्वास है कि आय पुरुष कुमारों की इस अल्प याचना को अवश्य पूरी करगे। जिन के पास मरी यह अपील पहुँचे उनका कर्तव्य है कि वे इस क उत्तर म पाच रुपया शीघ्र भेजने का अनुग्रह करें।

कुमार सभाओं और कुमारों को चाहिए कि मरी इस विनय को नगर के एक एक प्रतिष्ठित आर्य पुरुष तक पहुँचा देवें और सब रुपया एकत्र करके देहली भेज दें। दशहरा और दिवाली की छुट्टियों का समय मैं धन एकत्रित करने क लिए निश्चित करता हू। रविवार ६ अक्तूबर १६४० से यह कार्य आरम्भ होकर रविवार ३ नवम्बर १६४० तक समाप्त होना चाहिए जिस से अधिकारी वर्ग बारह मास पैसा एकत्रित करने की झझट स मुक्त हो ठोस कार्य कर सकें।

आर्यसमाज के अधिकारियों से मेरा विशेष अनुरोध है कि वे इस आयोजन में पूरा पूरा भाग लें।

मैंने प्रान्तवार निर्दिष्ट व्यक्तियों की सख्या इस प्रकार विभक्त की है —

संयुक्त प्रान्त १००, राजपूताना तथा मध्य भारत १००, पञ्जाब १००, बिहार १००, दिल्ली ७५, हैदराबाद (दक्षिण) ७५, मध्य प्रान्त १००, अन्य सब प्रान्त १०० ।

मुझे विश्वास है कि प्रत्येक प्रान्त की प्रतिनिधि सभाएं, कुमार सभाएं, आर्य समाजें और प्रतिष्ठित आर्य पुरुष इस मास में मेरी अपील को पूरा कर देंगे जिस से मैं साल भर तक निश्चित होकर स्वय काम कर सकू और अपने साथियों को उपयोगी कार्य में लगा सकू । यही मैं चाहता हूं ।

राजगुरु श्री पं० धुरेन्द्र शास्त्री जी प्रधान भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् का

धार्मिक परीक्षाओं सम्बन्धी वक्तव्य

कुमारों और युवकों की धार्मिक शिक्षा

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् के कुमारों की धार्मिक शिक्षा के लिये एक सुन्दर एव सफल आयोजन किया हुआ है वह आयोजन यह है कि प्रतिवर्ष परिषद् की ओर से धार्मिक परीक्षायें होती हैं । बालकों से लेकर प्रौढ़ आयु वाले जन भी इन परीक्षाओं में भाग लेते हैं ।

मुझे प्राय भारत भर में भ्रमण करने का अवसर मिलता है इसलिये अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय न होने के बराबर होता जा रहा है परन्तु जब से परिषद् ने परीक्षा क्रम प्रस्तुत किया है तब से परीक्षा के निमित्त धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय बढ़ रहा है । परीक्षा की पाठ विधि उत्तरोत्तर उपयोगी शिक्षाप्रद और आचार निर्माण करने वाली बनाई जा रही है ।

मैं समस्त आर्य कुमारों और कुमारियों को आदेश देता हू कि इस वर्ष वे अपनी योग्यता के अनुसार किसी न किसी परीक्षा में बैठने का पूर्ण प्रयास करें । कुमार सभाओं के अधिकारियों, आर्य तथा अन्य स्कूल, आर्य कन्या पाठशाला, अनाथालय आदि के सचालकों से अनुरोध करता हू कि अपनी संस्थाओं में इन परीक्षाओं को प्रचलित करने का प्रचुर प्रयत्न करें । कुमार सभा न हो वहा भी अपने कुमार और कुमारियों को इन परीक्षाओं में बैठावें । मेरी सम्मति में आर्यसमाज का परम कर्तव्य है कि वह अपने बालकों को धार्मिक शिक्षण से सुसम्पन्न करे ।

इन परीक्षाओं में बैठने से विद्यार्थियों का स्वत स्वाध्याय हो जाता है, ज्ञान की वृद्धि होती है और सदाचार सम्पन्न क्रियात्मक जीवन निर्माण धार्मिक तथा कर्म काड की शिक्षा भी प्राप्त हो जाती है।

आशा ही नहा अपितु मुझे पूर्ण विश्वास है कि कुमार हितैषी समस्त सज्जन परीक्षा प्रणाली का ध्यान म धर परिषद् के कार्य म सवत सहयोग प्रदान करगे। परीक्षा सम्बन्धी पाठ्य विधि व नियमावली आदि प० देवव्रत धर्मेन्दु दीवानहाल चादनीचोक देहली म प्राप्त हो सकती है।

आर्य कुमार सभा अजमेर के नये अधिकारी वर्ग

जो कि ता० ७-६-४० को चुने गये थे

प्रधान— श्रीयुत बाबूलाल जी सक्सेना
उपप्रधान—,, प० सूर्यदेव जी शर्मा एम० ए०
,, , मुरलीमनोहर जी शर्मा बी० ए०
,, ,, कृष्णराव जी वाब्ले बी० ए०
, ,, रामचन्द्र जी आर्य मुसाफिर
मन्त्री— , जगतप्रसाद जी शर्मा वैदिक धर्म विशारद
उपमन्त्री— रामकिशोर जी शर्मा
,, ध्यानगोपालसिंह जी
सदस्य— ,, प० नवीनचन्द्र जी बी० एस० सी०
,, , सोमदत्त जी चौबे एम० ए०
,, ,, कर्मवीर प० जियालाल जी
,, ,, चेतराम जी शर्मा
,, ,, यज्ञदत्त जी शास्त्री
,, ,, मुन्नीलाल जी
,, ,, छोटेलाल जी
,, पुरुषोत्तमलाल जी
,, पूरनचन्द्र जी
,, कृष्णावतार जी

—मन्त्री आर्य कुमार सभा, अजमेर

आर्यकुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षा सम्बन्धी सूचनायें

(१)

भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् की ओर से होने वाली धार्मिक परीक्षाओं के समस्त केन्द्रों के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि अपने २ केन्द्र में परीक्षा देने वाले समस्त परीक्षार्थियो की सख्या आदि शीघ्र से शीघ्र कार्यालय मे भेजें और यह भी लिखे कि किस २ परीक्षा म कितने २ परीक्षार्थी सम्मिलित होंगे ताकि उन्हें आवेदन पत्र भेज दिये जायें। भरे हुये आवेदन पत्र शुल्क सहित ३० नवम्बर तक कार्यालय मे हर एक केन्द्र से आ जाने चाहियें। चूंकि समय अब बहुत कम रह गया है अत व्यवस्थापक महोदयो से प्रार्थना है कि अपने केन्द्रो के भरे हुए आवेदन पत्र शीघ्र से शीघ्र शुल्क सहित कार्यालय मे भिजवाने का कष्ट करें।

(२)

भारत वर्षीय आर्य कुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं को उत्तीर्ण कर चुकने वाले प्राय: बहुत ही बहिन भाई अपने प्रमाण पत्र को गुम हो जाने या खराब हो जाने की अवस्था में दुबारा प्रमाण पत्र बनाने के लिये लिखते रहते हैं। ऐसे समस्त भाइयो व बहिनों से प्रार्थना है कि भविष्य में उन्हीं भाइयो व बहिनों को प्रमाण पत्र दुबारा बनाकर भेजे जा सकते हैं जो अपने प्रार्थना पत्र के साथ आठ आने फीस भेजेंगे, अन्यथा नहीं। कृपया नोट करलें।

(३)

प्राय कुछ परीक्षार्थी परीक्षा के नियम स० ७ और ६ से मुक्त होकर हमारी धार्मिक परीक्षा देने के लिए विशेष आज्ञा के लिए लिखते रहते हैं। उन में से प्रत्येक परीक्षार्थी का अपनी योग्यतादि लिख कर अपना अलग अलग प्रार्थना-पत्र भेजना चाहिए, न कि एक ही सज्जन बहुत से भाइयो के लिए आज्ञा पाने के लिए लिखें, ताकि उन परीक्षार्थियों के प्रार्थना-पत्र परीक्षा समिति की बैठक मे विचारार्थ रखे जाकर निर्णय करने में सुविधा हो।

(४)

कार्यालय से प्राय. सभी आर्य समाजों, स्त्री समाजो, कुमार सभाओ, आर्य स्कूलो, कन्या पाठशालाओं तथा अन्य शिक्षण सस्थाओ को परीक्षा सम्बन्धी पाठ विधि और परिचय पत्र आदि भेजा जा चुका है।

यदि कहीं न पहुँचा हो और वहा वाले परीक्षाओ से परिचित होने के लिए पाठ विधि आदि मगाना चाहे तो वे निम्न लिखित पते पर पत्र लिखकर मगालें —

देवव्रत धर्मेन्दु,
परीक्षा मन्त्री,
भारत वर्षीय आर्यकुमार परिषद् चादनी चौक दिल्ली।

आर्य नगर (हरिद्वार) ज्वालापुर सम्बन्धी

हर्ष समाचार और विशेष नम्र निवेदन

श्रीमान् जी,

सादर नमस्ते। सचमुच वह घड़ी कैसी सुख दायिनी और शुभ थी जब कि आर्य वानप्रस्थ आश्रम की प्रबन्ध कर्तृ सभा ज्वालापुर ने आश्रम के निकट आर्य नगर स्थापन करने का प्रस्ताव पास किया था और गत हरिद्वार कुम्भ के शुभ अवसर पर आर्य वानप्रस्थ आश्रम में सम्पूर्ण चारों वेदों द्वारा किये गये यज्ञ की पूर्णाहुति होने के पश्चात् आर्य नगर की भूमि में श्रीमती शिवदेवी जी धर्मपत्नी स्वर्गीय श्रीमान् महाशय गुरदासराम जी वैरिस्टर भेरा निवासी तथा माता श्रीमती डा० शकुन्तला देवी जी M B.B S के श्रद्धामय दान से कूप निर्माण का प्रारम्भिक संस्कार पूज्यपाद श्रीयुत महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज प्रधान आश्रम के कर कमलों से २७ चैत्र १९९५ वि० शनिवार रामनवमी के पवित्र अवसर पर बड़े समारोह के साथ कराया गया था। और साथ ही ओ३म् की पताका भी लहराई गई थी।

आज मुझे आर्य जनता को वह शुभ समाचार देते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने हैदराबाद के धर्म युद्ध के समय और वहां जेल मन्दिर से आशीर्वाद देते हुए अपने कृपापत्र में इस पवित्र आयोजना की सफलता के लिए जो शुभ कामना प्रगट की थी वह आज पूर्ण हो गई है। अर्थात् आर्य जनता ने इस आयोजना का जिस श्रद्धा से हार्दिक स्वागत किया वह प्रशंसनीय है। आर्य जनता की नित्य प्रतिदिन की अधिक मांगपर २१० प्लॉट (भूमि खण्ड) बनाये गये थे वह सब के सब आर्य जनता ने रिजर्व करा लिये हैं और मकानात बनने आरम्भ हो गये हैं। परन्तु नित्य प्रतिदिन आर्य सज्जनों की तरफ से प्लॉटों की खरीद की अधिक मांग के लिये मेरे पास पत्र पर पत्र आ रहे हैं परन्तु शोक है कि अब मेरे पास इस समय उन्हें एक भी

प्लॉट देने को नहीं रहा है। इस विषय पर उनकी इच्छा को पूर्ण करने के लिए आगामी सभा के अधिवेशन में विचार किया जायगा।

इस समय में इस पत्र द्वारा हर्ष समाचार और आर्य नगर सम्बन्धी सूचना सहित स्त्री जाति के शुभ चिन्तकों की सेवा में उपस्थित होता हुआ एक विशेष नम्र निवेदन करता हूँ। और मुझे पूर्ण आशा है कि सात्विक दान शील धर्म प्रेमी सज्जन अबला अधिकारिणी देवियों के हित और आत्मिक शान्ति के लिये इस पवित्र आयोजना की पूर्ति में ध्यान देते हुए दान देकर सौभाग्य प्राप्त करेंगे।

आवश्यक सूचना

(१) आर्य नगर के आगामी प्रबन्ध और जिस उद्देश की पूर्ति के लिये यह योजना की गई थी उसकी पूर्ति के लिये विरक्त आर्य आश्रम की प्रबन्ध कर्तृ सभा ने सब अधिकार श्री सार्वदेशिक दयानन्द भिक्षु मण्डल (हरिद्वार) ज्वालापुर के समर्पण कर दिया है। मुख्य कार्यालय आर्य वानप्रस्थ आश्रम (हरिद्वार) ज्वाला पुर में है इसके अधिकारी और सभासद् निम्नलिखित महानुभाव हैं।

प्रधान—श्री महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज। मन्त्री—श्री स्वामी वेदानन्द जी महाराज तीर्थ। पुस्तकाध्यक्ष—श्री रायबहादुर प० गगा प्रसाद जी एम० ए०, रिटायर्ड चीफ जज और जुडिश्यल मन्त्री रियासत टिहरी। सभासद्—श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी शुक्लानन्द जी तथा अन्य प्रसिद्ध सन्यासी महात्मा और भगत सुन्दर दास आर्य वानप्रस्थ, श्री मास्टर गुरुदत्तामल जी रिटायर्ड एडवोकेट वानप्रस्थ मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, श्री महाशय कृष्ण जी बी० ए० मालिक दैनिक पत्र प्रताप लाहौर, श्री लाला नारायणदत्त जी रईस और प्रसिद्ध आर्य नेता नई देहली।

इस मण्डल की पवित्र अध्यक्षता में आर्य नगर की आयोजना से निम्नलिखित कार्य किये जाने की दृढ़ धारणा है।

(१) वेद प्रचार मण्डल की स्थापना—जिस से विद्यालय के द्वारा संन्यासी और वानप्रस्थी प्रचारार्थ तैयार किये जावेंगे और प्रचार किया जायगा। और जिनके लिये ऋषि लगार भी खोलने का विचार है।

(२) धर्मार्थ औषधालय—एक आयुर्वेदिक औषधालय आर्य वानप्रस्थ आश्रम मे एक सुयोग्य अनुभवी वैद्य महाशय प्रेमानन्द जी वानप्रस्थ की अध्यक्षता में

१ जून सन् १६४० से खोला गया है। मण्डल की ओर से सुयोग्य ब्रह्मचारियों को जो आयुर्वैदिक कालिज में अध्ययन कर रहे हैं छात्र वृत्ति दी जा रही है जो प्रयोग शाला में भी कार्य करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त आश्रम की ओर से एक ऐलोपैथिक हस्पताल भी श्री डा० लालचन्द जी की अध्यक्षता मे बरसों से जारी है।

(३) मासिक पत्रिका जारी करना।

(४ महिला आश्रम की स्थापना जिसके लिये दस बीघा भूमि निश्चित कर दी गई है। पूर्वोक्त मण्डल की ओर से आर्य नगर सम्बन्धी प्रबन्ध कार्य को चलाने के लिये एक और उपसमिति नियत की गई है जिसके प्रधान महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज हैं सयोजक (मन्त्री) श्री भक्त सुन्दरदास जी आर्य वानप्रस्थी और कोषाध्यक्ष श्री स्वामी विज्ञानानन्द जी महाराज, सभासद् श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी स्वामो वेदानन्द जी तीर्थ रायबहादुर प० गगाप्रसाद जी एम०ए०, ला० नारायण दत्त जी रईस सेठ बनवारीलाल जी रईस नई देहली, श्री डाक्टर लालचन्द जी वानप्रस्थ हैं।

(५) आर्य नगर के पास बहती हुई नहर पर एक विशाल स्नान घाट निर्माण करने के लिये नकशा महकमा नहर को भेज दिया गया है। स्वीकृति की प्रतीक्षा नित्य प्रति दिन की जा रही है। इस स्नान घाट के निर्माण के लिये कर्मयोगी श्री लाला नारायणदत्तजी रईस न्यू देहली किसी दानी से दान दिलाने का प्रयत्न कर रहे हैं। पूर्ण आशा है कि उनके हार्दिक पुरुषार्थ से शीघ्र ही सफलता प्राप्त होगी।

विशेष नम्र निवेदन

महिला आश्रम

इस आश्रम मे एक यज्ञशाला एक कूप और ६० कुटिया १० × ८ फुट बराडा सहित दान से बनाई जावेंगी प्रत्येक कुटिया २५०) यज्ञशाला १०००) और कूप १५००) के धन से तैयार किये जाने का इष्टिमेट है। नकशे की मजूरी म्युनिसिपल कमेटी हरद्वार से हो चुकी है, यह आश्रम सुयोग्य देवियों की अध्यक्षता में स्वतन्त्र रहेगा। वहा देविया स्वाध्याय भजन और एकात सेवन करते हुए की जाति में प्रचार कार्य के लिए तैयार की जावेंगी। चूंकि बहुत सी अबला जिज्ञासु देविया आर्य समाज की अध्यक्षता में रहने से अपने आपको सुरक्षित समझती हैं

परन्तु यह अपनी कुटी बनाने में असमर्थ होती हैं मगर निर्वाह के लिये तो उनके पास प्रायः साधन होते हैं इसलिये मण्डल ने ऐसी देवियों के निवासार्थ इस महिला आश्रम की आयोजना की है इस महिला आश्रम में बहुत सी सुयोग्य देवियों ने कार्य करने के लिये वचन दिये हुए हैं, आशा है कि दानी सज्जन यथा शक्ति इस पवित्र आयोजना में दान देकर सौभाग्य प्राप्त करेंगे। दानी सज्जनों के पवित्र नाम का स्मारक पत्थर प्रत्येक कुटिया, यज्ञशाला और कूप पर अन्य दानियों के उत्साह के लिये लगाया जायगा। बारह कुटी के दान धन प्राप्ति पर महिला आश्रम की स्थापना के लिये प्रारम्भिक संस्कार आधार शिला श्री पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के कर कमलों से समारोह के साथ किया जायगा। परमात्मा ऐसे सात्विक दानियों के हृदय में इस शुभ कार्य के लिये प्रेरणा करें जिससे उनका और स्त्री जाति का कल्याण हो। यही दान शील महानुभावों की सेवा में मेरा श्रद्धा पूर्वक नम्र निवेदन है। दान का धन चिक द्वारा मेरे नाम आना चाहिए।

भवदीय—

सुन्दरदास आर्य वानप्रस्थ,

मन्त्री आर्य नगर और उपसमिति सार्वदेशिक दयानन्द भिक्षुक मण्डल (हरिद्वार)

आर्य वानप्रस्थ आश्रम पो० ज्वालापुर जि० सहारनपुर।

हैदराबाद धर्म समर के अमर सेनानायक द्वितीयाश्रम में

ता० ८—६—४० को हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के समय सर्वाधिकारी श्री पण्डित ज्ञानेन्द्र जी "सिद्धान्त भूषण" ने द्वितीयाश्रम में प्रवेश किया। उनका वैदिक विवाह सस्कार मरोली (जिला सूरत) में हुआ। कन्या का नाम श्री मती अनिला बहिन हैं। वे श्री भीमशङ्कर जी आय की सुयोग्य पुत्री हैं। उन्होंने बडौदा आर्य कन्या विद्यालय में स्नातिका तक का अभ्यास किया है। गुजरात मे हेदराबाद आर्य सत्याग्रह के समय तीन चार बहिनों ने विशेष सहयोग दिया था। उनमे से आप भी एक हैं। वर वधू ने माता पिता की अनुमति के साथ स्वेच्छा से परस्पर पसन्दगी की है। दोनों सुशिक्षित एव योग्य उमर के हैं। विवाह सस्कार की विधि गुरुकुल महा विद्यालय आणन्द के आचार्य श्री पण्डित गयाशङ्कर जी ने करवाई थी। विवाह मे Simple living and high thinking अर्थात् ब्राह्मणत्व को प्रधानता दी गई थी। इस विवाह मे प्राचीन आर्य भावना प्रत्यक्ष प्रतीत होती थीं। श्री पूज्य पण्डित जी ने मित्रो के द्वारा दी गई भेंट प्रतिनिधि सभा को वेद प्रचारार्थ दे दी। विधि की समाप्ति पर दम्पति ने मित्र मण्डल का आभार प्रदर्शित किया और प्रभु से प्रार्थना की कि "हमे गृहस्थाश्रम के वैदिक आदर्श को सक्रिय रूप देने का बल प्रदान करें।" तत् पश्चात् मित्र मण्डल ने सहभोज किया और बिदा ली।

इस सस्कार मे श्री मुबई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा आणन्द के मन्त्री श्रीमान् बापुभाई जी, श्री डा० खण्डुभाई जी, नवसारी, गुजरात गुरुकुल सभा के प्रधान वीणाभाई जी एव श्री भीखाभाई देवाभाई जी वीजलपुर, श्री ५ चुनाभाई जी आर्य सणसोला, श्री प० श्रुतबन्धु जी शास्त्री वेदतीर्थ बडादा, श्रीमान् पण्डित माधवेन्द्र जी शास्त्री बडौदा, श्रीमान् वेणा भाई जी वाघोडिया, श्रीमान् मल्लम भाई जी हायुका, श्री बल्लमभाई, ढाह्याभाई आमलसार, श्री मगनलाल (खभात सोमील) नवसारी, श्री जगजीवन जी मुबई, श्री छोटालाल जी तत्रा प्रधान आर्य समाज सूरत, श्री नर्मदा शकर जी 'जिज्ञासु' सूरत, श्री गिरधर भाई जी पारखी इत्यादि अन्य महानुभावों ने नव दम्पति को साधुवाद दिये। तत्पश्चात् अनुपस्थित आर्य-जगत् के नेता श्री महाशय कृष्ण जी, श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री शोलापुर, श्री प० ठाकुर दत्त जी शर्मा वैद्य अमृतधारा, श्री प० नदलाल जी लाहौर, श्री

मुं० प्रा० आ० प्र०, सभा के मन्त्री श्री स्नातक सत्यव्रत जी मुंबई, श्री प० पद्मदत्त जी मुंबई, श्री पं० नरदेव जी शास्त्री वेदतीर्थ, आचार्य गुरुकुल ज्वालापुर, श्री पं० मुक्तिराम जी उपाध्याय आचार्य गुरुकुल पोठोहार राजस्थान मालवा आ० प्र० सभा के प्रधान श्री चादकरण जी शारदा, एव मन्त्री श्री पण्डित भगवान स्वरूप जी 'न्याय भूषण' अजमेर, श्री पण्डित चन्द्र भानु जी देहली, श्री पण्डित शान्ता राम जी स्नातक पूना, श्री प० फणीन्द्र जी मन माड एव रावलपिंडी बलसाड, ४० गाव, जलगाव, भूसावल, इन्दौर महू, बड़वानी, अम्बाला, सीनोर, पारडी, नासिक, लुधियाना, आबूरोड, टकारा, मदवाड़ा, राऊ बसी धुलिया, सूपा आदि अनेक स्थानो के आर्य सज्जनों ने युगल को आशीर्वाद गद्य पद्य मे भेजे। इसके अतिरिक्त त्यागमूर्ति श्री पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज ने आशीर्वाद दिया 'सार्वदेशिक' के सम्पादक श्री रघुनाथप्रसाद जी पाठक, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री प्रोफेसर सुधाकर जी एम० ए० देहली, श्री डा० लालचन्द जी अम्बाला, श्री लाला ज्ञानचन्द जी, श्री लाला नारायणदत्त जी ठेकेदार देहली, श्री पू० स्वामी वेदानन्द जीमहाराज, श्री स्वामी नारायणानन्द जी महाराज, श्री पृज्य प० ईश्वरचन्द जी लाहोर, श्री प० शिवदत्त जी आदि अनेक महानुभावों ने नूतन दम्पति को आशीर्वचन कहे। गुजरात म इस शुभ प्रसग से श्री पू० पडित जी ने वेद प्रचार आर आर्य जगत मे समाज का जो सुन्दर कार्य किया है यह प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर होता है। आज तक श्री पडित जी पुरुष वर्ग म विशेषत काय करते थे परन्तु अब श्रीमती अनिला बहिन के सहयोग से स्त्री वर्ग मे भी अच्छा कार्य होगा। गुजरात म चिरकाल से स्त्री व्याख्याता की भी न्यूनता उनसे दूर होगी ऐसी सहज आशा रखी जासकती है।

निवेदक—

लक्ष्मीप्रसाद त्रिवेदी

लेख-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य-प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र ।

वर्ष १५ | कार्तिक १९९७ | अङ्क ९

नवम्बर १९४० ई०] [दयानन्दाब्द ११६

* वेद की शिक्षाएँ *

मा जीवेभ्यः प्रमदः । अथर्व० ८।१।७

प्राणियों की ओर से बेपरवाह मत हो ।

Do not be indifferent to the welfare of your fellow-creatures.

* * *

मा प्रगाम पथो वयम् । अथर्व० १३।१।५९

सन्मार्ग से हम विचलित न हों ।

May we not budge from the path of Rectitude !

धर्म के लक्षण

[ले०—श्री स्वामी सर्वदानन्द जी]

धर्मोपि पुरुषगुणः प्रियसुख मोक्ष हेतु ।

अपि शब्द निश्चयार्थ है । धर्म पुरुष का गुण है, जो इसके प्रिय सुख और मोक्ष का हेतु है। इस वचन में पुरुष शब्द से आत्मा का ग्रहण करना चाहिये । आत्मा को जो प्यारा हो, वह धर्म नहीं, प्रत्युत आत्मा के निमित्त जिस नियम से प्रियकारक तत्व हो वह धर्म है, यह विषय कुछ विचारास्पद है।

मेरे मित्र ! आप विचार करें कि मनुष्यों को जो प्रेम धन में है, वह धन के लिये है, अथवा अपने लिए ? धन के लिए यदि यह धन में प्रेम होता तो फिर उसका त्याग न किया जाता। निदर्शन तो यह है कि कोई धनके सग्रहमें प्रेम जानता और दूसरा उसके त्यागने में आनन्द मानता है, अतएव धन प्रेम की वस्तु नहीं। किसी अंश में प्रेम का साधन कहना ठीक होगा। इसी प्रकार इस नियम को आप सर्वत्र घटा सकते हैं। पिता को जो पुत्र में प्रेम है, वह उसके निमित्त से नहीं किन्तु आत्मा के लिए है। स्त्री को जो पति में और पति को जो पत्नी में प्रेम है वह तत् निमित्त से नहीं, किन्तु अपने लिए है। अब आप किंचित् और समीप होकर देखें कि मनुष्य को जो शरीर से प्रेम है वह क्या इसके लिए है ? अपितु आत्मा के लिए है। इससे तो यह सिद्ध होता है कि धन, स्त्री, पुरुष, पुत्र से पृथक् आत्मा ही प्रेमास्पद है, अन्यत्र इसके प्रेम का अध्यासमात्र है। उनके स्वरूप में प्रेम की कोई मात्रा नहीं है। यह गोरख धन्धा किसी की समझ में आ सकता है ? जब तक अध्यास न टूटे साधारण जन तो इस प्रकार की बातें सुनाने वालों को पागल कहते हैं कोई कुछ कहे यह बात मिथ्या नहीं हो सकती। दो और दो चार हैं। बस यह नियम जो आत्मा साक्षात्कार का परम्परा सम्बन्ध से हेतु हो जाता है। उसका ही नाम धर्म है और सासारिक सुख अर्थात् अनुकूल वेद नियता का उत्पादक और इच्छा पूर्ति का साधन है। आत्म साक्षात्कार से यदि पुरुष वीतराग हो जावे तो वह धन्य है। यदि वह गति न हो तो भी राग-द्वेष से नियुक्त नेत्रादि इन्द्रियों से जो रूपादि विषयों का उपयोग करता है उसकी आत्म-

वशी संज्ञा है और सच्ची प्रसन्नता का वही पात्र है, यह गति का अनुशासन है। साधारण पुरुषों के जाने का यह मार्ग नहीं कोई स्थिर प्रज्ञ विरला पुरुष इस पथ पर गति करता है। अन्याय से दूर रहना आत्मवशी पुरुष का स्वभाव होता है इतने पर भी धर्म की व्याख्या समाप्त नहीं होती। जो नियम प्रियता और लौकिक सुख साधन सहित देहावसान के साथ मोक्ष प्राप्ति का साधन हो, वह सर्वाङ्ग पूर्ण धर्म है। इस को ही कणाद महात्मा ने अभ्युदय और निःश्रेयस सिद्धि का हेतु बताया है, जो ठीक ही है। यदि लौकिक सुख साधन सहित पुरुष को मोक्ष का ध्यान न हो तो वह सम्पत्ति चिरस्थाई नहीं होती है। यदि कुछ काल स्थिर भी रहे तो उससे सुख की प्राप्ति नहीं होती। उस सम्पत्ति के साथ आलस्य, प्रमाद, अभिमान का सहचार और जघन्य जनो का सहवास होने से लोकापवाद और भय से अन्तःकरण में चिन्ता ही चक्र लगाती रहती है। अनिष्ट कर्मफल भोगार्थ संसार का प्रवाह बड़े वेग से बहता है, अतएव जिसके मन में मोक्ष की जिज्ञासा होती है तन, मन, धन से परहित चिन्ता करना उसका स्वभाव बन जाता है। अनिष्ट चिन्ता और मोक्ष की जिज्ञासा इन दोनों का सहवास कभी नहीं हो सकता। अतएव कर्म वही हो सकता है, जो लौकिक सुख के साथ मोक्ष का साधन हो, वह यह है—१—ईश्वर चिन्तन २—श्रद्धा, ३—दया यथा शक्ति पर दुःख निवारण, सुखोत्पादन में उत्साह करना ४—इन्द्रिय दमन, कामादि अन्तर्विकारों को दबाकर सन्मार्ग मे चलाने के लिए सदैव प्रयत्न करना, ५—कर्तव्य पालन में रुचि, ६—जीवन मृत्यु की यथार्थ पहचान, ७—निर्भयता, ८—सत्यता, ९—सहिष्णुता, १०—उदारता विश्वप्रेम, ११—जीवन को नियमित बनाना, १२—पवित्रता से प्रेम १३—कार्यारम्भ में प्रेम परिणाम दर्शन स्वभाव। इस सामान्य धर्म का पालन करना मनुष्य मात्र का कर्त्तव्य है। यही विशिष्ट नियमों को विधिवत् पालन करने की आधार भूमि है। जितने अंश में इनकी सत्ता का सद्भाव होगा उतनी ही सुन्दरता से मनुष्य अपने कर्तव्य का निर्वाह करेगा। प्रथम माता पिता बालकों को इन सामान्य नियमों को सुनाने और पश्चात् उनके महत्व को समझाने का शनैः शनैः ध्यान देते रहें। इसके पश्चात् आचार्य इन नियमों के अनुष्ठान कराने में सुयत्न करे। मनुष्य को मनुष्य बनने के लिए इनकी बड़ी आवश्यकता है। इनमें जितनी त्रुटि रहती है मनुष्यपन में उतनी ही न्यूनता हो जाती है। सम्प्रति जो वर्णव्यवस्था अव्यवस्थित हो रही है, उसका मुख्य

कारण इन सामान्य नियमों का जो सर्वप्रकार के कार्यों को सफल बनाने में सहायक हैं बिगड़ जाना ही सिद्ध हो रहा है। नियम के उल्लंघन से अनर्थ की उत्पत्ति का होना सम्भव ही है। जब यह सामान्य नियम साधारण आयु में जीवन के साथ मिल जाते हैं, तब विशेष नियमों का अनुष्ठान विशेष अवस्था में बड़ा ही सुगम हो जाता है। यह प्रत्यक्ष बात निर्विवाद है। क्रम प्राप्त अधर्म शब्द की व्याख्या भी धर्म के विपरीत समझ लेनी चाहिए। इससे मनुष्य बंधन में आता है। इससे सुख की मात्रा घट कर दुःख बढ़ जाता है। जन्म मरण के प्रवाह से निकलने में नहीं पाता ईश्वर से विमुख कर देना इसका स्वभाव है। इसके प्रकोप से ही मनुष्य समाज अनेक भागों में विभक्त होकर अपनी शक्ति को अपने हाथों से खो देता है। अधर्म से आधीन हो कर मनुष्य जाति द्वेष से दूषित तथा पक्षपात से दहित हो जाती है। यह विपरीत मार्ग प्राप्त व्यवस्थान से जब मेल नहीं करता तब उसको पुनः भटकना ही पड़ता है। यह बात विचारणीय है कि कोई विरला ही मनुष्य जो प्रभु-कृपा का पात्र हो यथातथ्य धर्म पालन में शक्त होता है। वह महात्मा उदारात्मा है, अन्यथा जितनी मात्रा में धर्म का सेवन करेगा उतना ही सुख और जितने अंश में अधर्म साथ देगा, दु ख प्राप्त होगा। धर्म सुख का कारण और अधर्म दु ख का निदान है, यह जानना चाहिए।

क्षात्र धर्म्म और अहिंसा

(ले०—जे० एम० कायडे प्रिंसिपल भोंसला सैनिक स्कूल नासिक)

प्राचीन काल से ही हिन्दू समाज का निर्माण चतुर्वर्णों पर निर्मित हुआ है। महाराज कृष्ण ने भगवद्गीता में इस बात पर विशेष बल दिया है। युद्ध और शान्ति का जैसा उत्तम सामंजस्य श्री कृष्ण ने किया है, वैसा किसी अन्य ने आज तक नही किया है। उन्हों ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों मे चारों वर्णो का कर्त्तव्य कलाप वर्णन किया है और यह वर्णन सत्य के जिज्ञासुओ को भगवद्गीता के पृष्ठों में मिल सकता है। उन्हो ने क्षत्रियों के कर्त्तव्यों का विश्लेषण करते हुए बतलाया कि क्षत्रिय का कर्त्तव्य यह है कि वह अपने स्वार्थ और लाभ के लिए शस्त्र धारण तथा उनका प्रयोग न करे वरन् सदैव समाज के कल्याण के लिए ऐसा करे। क्षत्रिय दो प्रकार से ऐसा कर सकता है। एक तो समाज के सत्पुरुषों की रक्षा करके और दूसरे समाज के दुष्टों का विध्वस करके। क्षत्रिय का कर्म स्वार्थपूर्ण नहीं हो सकता क्योंकि अपनी इच्छानुसार जब चाहे तब शस्त्रों के प्रयोग की उसे स्वतन्त्रता नहीं होती। उसके शस्त्रों पर सदैव समाज के मस्तिष्क अर्थात् ब्राह्मणों का नियन्त्रण रहता है। प्राचीन काल में ब्राह्मण लोग अहिंसा व्रत से दीक्षित रहते थे। जिसका ठीक ठीक अर्थ 'निर्दोषिता' है। अहिंसा नकारात्मक शब्द है अतः भगवद्गीता में प्रयुक्त 'अहिंसा' का सही पर्य्याय वाची नहीं है। इसका वास्तविक अर्थ 'निर्दोषिता' ही है। ये बुद्धिमान् ब्राह्मण रक्षा के समस्त विभाग को क्षत्रियो के अर्पण करके समाज को सुखी और शान्त बनाए रखते थे और यही क्षत्री लोग समाज की स्थिर सेना थे जो सदैव ब्राह्मणों की इच्छा के वशीभूत रहते थे। ब्राह्मण लोग देश के राजाओं के रूप में उन क्षत्रियों का सम्मान करते थे। ब्राह्मण राजाओं का सम्मान करते और राजा लोग ब्राह्मणों की इच्छा का आदर करते थे।

तलवार पर सदैव दाक्षिण्य और विवेक का नियन्त्रण रहता था और तलवार सदैव देश के लोगों की सम्पत्ति, संस्कृति तथा जीवन की रक्षा किया करती थी। अतः क्षत्रिय लोग शस्त्रों के प्रयोग से अपने स्वार्थ की सिद्धि नहीं करते थे।

धार्मिकता के लिए युद्ध करना उनका कर्त्तव्य था। परिस्थिति के अनुसार हिंसा (बल प्रयोग) अथवा अहिंसा के द्वारा, सत्य को प्रतिष्ठित करना उनका उच्चतम कर्त्तव्य समझा जाता था। धर्म युद्ध के लिये उद्यत रहना और युद्ध भूमि में अपने प्राण देने के अतिरिक्त उनका और कोई कर्त्तव्य न था।

इस प्रकार उनका कर्त्तव्य कलाप अहिंसा विरोधी न था। कदाचित मेरा भाव ठीक ठीक न समझा जाय। अतः वर्तमान युग मे अहिंसा के विश्व विख्यात व्याख्याकार महात्मा गाँधी के शब्द उद्धृत करता हूँ।

"अन्यायो व्यक्तियो और राजाओ के साथ असहयोग का सब धर्म्मों मे कड़ा विधान किया गया है। इसी प्रकार न्याय प्रिय व्यक्तियों और राजाओं के साथ सहयोग की आज्ञा दी गई है। ससार के बहुत से धर्म ग्रन्थ तो इस से भी आगे जाते प्रतीत होते हैं और कायरता पूर्वक अन्याय को सहन करने की अपेक्षा बल प्रयोग को पसन्द करते हैं। समस्त जाति के नपुंसक बनने की अपेक्षा हजार बार बल प्रयोग को पसन्द करूगा।"

यग इन्डिया ७-८-२०

वस्तुत. इस प्रकार की हिंसा को वास्तविक अहिंसा अर्थात् पवित्र कर्त्तव्य न मानते तो महात्मा गाँधी उपर्युक्त पक्तियाँ न लिखते। इस के पश्चात् उन्हों ने इस प्रकार लिखा। ठीक ठीक तिथिया मेरे पास नहीं है —

"मेरा तो यह विश्वास है कि कायरता और बल प्रयोग में यदि पसन्दगी की बात उठे तो मैं बल प्रयोग की सलाह दूँगा। जिन व्यक्तियों की बल प्रयोग की रीति नीति में आस्था हो उनको शस्त्र शिक्षण की भी सलाह दूगा।

मैं यह पसन्द करूँगा कि भारत वर्ष अपने सम्मान की रक्षा के लिये शस्त्रों का आश्रय ले, इसकी अपेक्षा कि वह कायरता पूर्वक अपने अपमान को देखता रहे।"

स्पष्ट है कि कोई भी विवेक शील व्यक्ति पवित्र उद्देश्य के लिये शस्त्रों के प्रयोग का कभी भी खण्डन न करेगा।

महात्मा गांधी के अभी कुछ दिनों के एक लेख को पुनः उद्धृत करके मैं इस लेख को समाप्त करूंगा। महात्मा जी का यह स्पष्टीकरण मेरे लिये विद्युत प्रकाश के सदृश है जिस ने मेरे मस्तिष्क में से अहिंसा के उनके बुद्धि संगत सिद्धान्त के सम्बन्ध में सन्देह को बिल्कुल दूर कर दिया है। २३ सितम्बर १९३९ के 'हरिजन' में पोलैंड की एक बहिन के पत्र पर आलोचना करते हुए वे लिखते हैं:—

"जब ठीक तौर पर युद्ध छिड़ गया तब जहाँ तक उसकी मा का सम्बन्ध था वह चुप हो गई। परन्तु जब उस ने अपने निर्दोष हित बान्धवों और प्यारों की जान खतरे में देखी तो उसका मन व्याकुल हो गया। वह स्वय पक्की अहिंसा वादिनी है। परन्तु उसकी अहिंसा ने उसे बेचैन कर दिया। अन्याय के विरुद्ध उसकी आत्मा काप गई। यदि पोलैंड मे बडी से बडी वीरता हो और साथ ही उतना मात्रा मे निस्स्वार्थभाव हो तो इतिहास इस बात को भूल जायगा कि उसने बल प्रयोग के द्वारा अपनी रक्षा की थी। उसकी हिंसा लगभग अहिंसा समझी जायगी।

यह दिन की तरह से स्पष्ट है। स्वयं महात्मा गाँधी के शब्दों मे जब कभी हिंसा निस्पृहता के पुण्य मार्ग पर आरूढ़ होती है, तब यह अहिंसा का कार्य्य करती है और सत्य के आलिंगन के लिये आगे बढ़ती है।

(अंग्रेज़ी से अनूदित)

सुमन संचय

(१)

त्याग

शिवाजी अपने गुरु समर्थ रामदास के बड़े भक्त थे। उन्होंने सन् १६७३ ई० में सतारा का दुर्ग जीत कर उससे ४-५ मील दूर पारली दुर्ग पर अधिकार कर लिया। इसी पारली दुर्ग को सज्जनगढ़ (साधुओं का गढ़) नया नाम देकर शिवाजी ने वहीं अपने गुरु के लिए एक आश्रम बना दिया और स्वामी रामदास को वहीं लाकर रखा। सन्यासियों और भक्तों के भरण पोषण के लिए निकट के गाव में देवोत्तर भूमि दी।

रामदास स्वामी अन्य सन्यासियों की भांति प्रतिदिन भिक्षा को निकलते थे। शिवाजी इससे हैरान थे। उन्होंने सोचा–'गुरुजी को हमने इतना धन और ऐश्वर्य्य दान दिया, तब भी वे भिक्षाटन क्यों करते हैं ? क्या करने से उनके मन की तृष्णा मिटेगी ? इसी विचार से उन्होंने दूसरे दिन एक कागज पर महाराष्ट्र का अपना सारा राज्य और समस्त राजकोष का दान-पत्र रामदास स्वामी के नाम लिखकर उस पर अपनी मुहर लगा दी और भिक्षा के रास्ते पर गुरु को पकड़कर उस दान-पत्र को उनके चरणों में अर्पित कर दिया।

रामदास उसे पढ़ कर मन्द मुसकान के साथ बोले, 'अच्छी बात है। यह सब हमने ले लिया। आज से तुम हमारे गुमाशता मात्र रहे। अब यह राज्य तुम्हारे लिए अपने भोग-विलास और मनमानी करने की वस्तु न रहा। तुम्हारे ऊपर एक बड़ा मालिक है। उसी का यह राज्य है जिसे तुम उसके विश्वासी नौकर के रूप में चला रहे हो। इसी दायित्व के विचार से आगे राजकाज चलाना।"

गुरु के ये वाक्य सुन कर महाराज शिवाजी के शरीर में रोमांच हो गया। हृदय गद गद हो गया। उनके मुख से एक भी शब्द न निकला और प्रेम में विह्वल हो गुरु चरणों में लोट गए। कुछ क्षण उपरान्त बोले–"महाराज। मुझे

आपकी आज्ञा शिरोधार्य्य है। आज मैं अपने एक बड़े दायित्व की मुक्ति में सुख अनुभव करता हूं। आज से यह राज्य आपका हुआ और आज ही इस राज्य की पताका 'गेरुआ' रग की नियत की जाती है।"

(२)

हिंसा पर अहिंसा की विजय

कौशाम्बी के महाराज उदयन की तीन रानिया थीं उनमें से एक श्यामावती महाराज बुद्ध के उपदेशों को सुन कर उनकी अनन्य भक्त बन गई थी। सब से छोटी मागंधी नाम की रानी श्यामावती से बडा द्वेष रखती थी। उसने महाराज को उसके प्रति मन फेरने के लिए अनेक यत्न किए परन्तु वह सफल न हुई। नित्य महात्मा बुद्ध और श्यामावती को अनेक प्रकार से लाछित और अपमानित करने की चेष्टाएँ की जाती थीं परन्तु उसका मनोरथ पूर्ण न हो पाता था अन्त में जब महात्मा बुद्ध और उनका सघ कौशाम्बी से न टला और उधर श्यामावती का कोई अनिष्ट सिद्ध न हुआ तो मागधी ने एक दिन बन के मुरगे मगवा कर महाराज से कहा' 'महाराज। श्यामावती मुरगों का मास बहुत अच्छा पकाती है।' महाराज ने उसकी बात सुन मुरगों को श्यामावती के यहां भेज दिया और कहला भेजा "आज मैं वहीं भोजन करूगा। ये मुरगे श्यामावती मेरे लिए पकाए।" श्यामावती ने उस दिन अनेक प्रकार के व्यंजन महाराज के लिए बनाए और जब महाराज उदयन उसके घर में भोजन के लिए गए तो उसने सब कुछ परोसकर उनके आगे धरा। महाराज मुरगों का मांस न देखकर आग बबूला हो गए। मारे क्रोध के उनका शरीर कापने लग गया। उनके नौकर चाकर और प्रहरी भी भय के मारे कापने लग गए। उन्हे ऐसा प्रतीत हुआ मानो एक महान् भय कर अनिष्ट होने वाला है। महाराज उदयन ने कड़क कर श्यामवती से पूछा "मुरगों का मास कहां है?" श्यामावती ने विनीत भाव से महाराज के चरण छुए और स्नेह स्निग्ध कोमल वाणी से बोली 'महाराज! क्षमा करें। आपके सब मुरगों को मैंने छोड़ दिया है। मैं जीव हिंसा न करूगी। जैसा मुझे दुःख होता है वैसा अन्य प्राणियों को भी होता है। फिर इस अधम पेट के लिए कौन बुद्धिमान् पुरुष प्राणी हिंसा करना उचित समझेगा।" ये वाक्य महाराज उदयन के मर्म पर जाकर लगे। जो कुछ व्यंजन उनके सामने रखा था उसी को खाकर वे अत्यन्त संतुष्ट हुए। उस दिन से उन्होंने राज महलों में मास भक्षण का बद करा दिया।

(३)

गुण ग्राहकता

नेपोलियन बोना पार्ट ने साधारण स्थिति से उठ कर फ्रांस का राज-सिंहासन प्राप्त किया था। फ्रांस में वह एक निर्धन नागरिक और विद्यार्थी के रूप में आया था। वह एक क्लब में जाकर पैसा दो पैसा देकर समाचार-पत्र पढ़ा करता था। क्लब की बुढ़िया उसे विद्यानुरागी देखकर प्रसन्न होती और कभी २ उसे एक प्याला चाय पिला दिया करती थी। नेपोलियन इस बात को भूला न था। फ्रांस के राज सिंहासन पर बैठने पर उसके पति को उसने अच्छे काम पर रखा दिया था। एक बार उस क्लब पर राजनैतिक षड्यन्त्र की बात उठी। मन्त्रियोंने प्रस्ताव किया कि इस क्लब को उठा देना चाहिए। नैपोलियन ने कहा "अमात्यो। यह कभी नहीं हो सकता। मैं जानता हूँ कि इसके द्वारा निर्धन पाठकों को कितना कुछ लाभ पहुंचता है। आप लोगों को विदित नहीं है।" इस क्लब ने कितने ही व्यक्तियों को सुमार्ग पर प्रेरित किया है।

(४)

सार्वजनिक जीवन की शुद्धता

रूसके वर्तमान इतिहास में महात्मा लेनिन का नाम बड़ा प्रसिद्ध है। वे रूस की राज्य क्रान्ति के अग्रगण्यों में से थे। जिस समय रूस के शासन की बागडोर उनके हाथ में थी, उस समय की उनके जीवन की एक बड़ी सुन्दर घटना मिलती है। एक दिन उन्होंने कई राज कर्मचारियों तथा नगर के भद्र पुरुषों को चाय के लिए अपने यहा आमन्त्रित किया। उन्होंने अपनी धर्म पत्नी को चाय बना कर लाने की आज्ञा दी। चाय तय्यार की गई। उनकी धर्म्म पत्नी तीन बार चाय उस कमरे में ले गई जहा मेहमान बैठे हुए थे और तीनों बार ही संकोच वश पीछे लौट गई, आज्ञा होने पर चौथी बार जब वे चाय लेकर कमरे में गई तो मारे शर्म और संकोच के चाय परोसने की उनकी हिम्मत न हुई। महात्मा लेनिन अपनी पत्नी के संकोच को ताड़ गए। जब उनकी पत्नी चौथी बार भी चाय लेकर वापस जाने लगी तो लेनिन ने अपनी स्त्री को संबोधन करके कहा "यदि चाय में चीनी नहीं है तो कोई सकोच की बात नहीं है, फीकी चाय ही सही। वही मेहमानों को दी जाय।" आज्ञा का पालन किया गया। दूसरे दिन एक धनी व्यक्ति ने यह ख्याल करके कि लेनिन के घर में चीनी का अभाव है एक

बोरी चीनी लेनिन के घर भेज दी। लेनिन की स्त्री बड़ी प्रसन्न हुई और लेनिन से कहा देखो परमात्मा ने बिना मागे स्वयं चीनी भेज दी है।" धर्मपत्नी की इस बात पर लेनिन मुस्कराए और आज्ञा दी कि इस चीनी के बोरे को सरकारी भंडार में जमा करा दो। इस पर हमारा कोई अधिकार नहीं है। यह राज्य की सम्पत्ति है। यह सुनकर लेनिन की धर्म पत्नी आश्चर्य चकित रह गई और लेनिन के इस धर्म भावकी सर्वत्र नगर गाव में चर्चा फैल गई।

—रघुनाथप्रसाद पाठक

महिला-जगत्

(सितम्बर के अङ्क से आगे)

मातृत्व की ओर

माता की पदवी प्राप्त करने वाली कन्याओं के जानने योग्य बातें ।

(ले०—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)

पाठ ८

कमला एक रोगी को देखने गई थी। इस बीच में कमला के पति का पत्र आया जिस में लिखा था कि २००) मासिक पर वह सरकारी हस्पताल मे नियुक्त हो गई है। इस समाचार से दमयन्ती और सुशीला खुशी से फूली न समाती थीं। दोनों में से प्रत्येक इस बात के लिये उत्सुक थी कि कौन पहिले जीजी को यह सुखद समाचार सुनाए। इतने में कमला आ गई। ज्यों ही उसने ड्योढ़ी में पैर रक्खा त्यों ही हाथ में पत्र लिये हुये दमयन्ती दौड़ी हुई उसके पास गई और कमला बहिन को पत्र देते हुए कहा 'लो जीजी! मिठाई खिलाओ, मेरा हिस्सा सब से ज्यादा होगा क्योंकि यह खुशखबरी मैंने ही पहिले आपको सुनाई है।' कमला ने दमयन्ती के हाथ में से पत्र लेकर पढा और पत्र को हाथ मे लिए हुए चुपचाप अपने कमरे में चली गई। कमला के इस व्यवहार से सुशीला और दमयन्ती दोनों को बड़ा आश्चर्य हुआ।

सुशीला और दमयन्ती चटाई पर बैठकर बातें करने लगीं। २००) की नौकरी से कमला जीजी को प्रसन्नता क्यों नहीं हुई, यही उनकी चर्चा का मुख्य विषय था। इस विषय पर दोनों में काफी बहस हुई परन्तु इसका कारण किसी की समझ में न आया और अन्त में वे अपना कसीदा लेकर बैठ गई। भोजन इत्यादि से निवृत्त होकर कमला भी आई और उन दोनों के पास चटाई पर बैठ गई। दोनों बहनों को मौन देखकर उसे बहुत आश्चर्य हुआ। उस ने दोनों को

संबोधन करके पूछा, 'तुम दोनों चुप क्यों हो। क्या कोई पहेली सोच रही हो।' सुशीला चुप रही। दमयन्ती ने उत्तर दिया, 'जीजी। हमारी समझ में यह नहीं आया कि आप उस पत्र को पढ़कर प्रसन्न क्यों नहीं हुई। हमारी अध्यापिकाए दो दो चार चार रुपए की वृद्धि से बड़ी प्रसन्न होती हैं। पार्टियां दी जाती हैं, दावतें की जाती हैं और वे अनेक प्रकार से खुशिया मनाती हैं। परन्तु आपको तो इस वृद्धि से कोई प्रसन्नता नहीं हुई प्रतीत होती। हम दोनों इस विषय पर काफी बहस कर चुकी हैं। यही हमारी पहेली है।

यह सुनकर कमला मुस्कराई और केशव की तरफ जो पास में खेल रहा था, टकटकी लगाकर देखने लगी। उसकी मुख-मुद्रा से ऐसा प्रतीत होता था मानो वह स्वयं कोई पहेली सोच रही है। कुछ क्षण के उपरान्त उस ने कहा "दमयन्ती। इस पत्र के समाचार से मुझे प्रसन्नता नहीं हुई, यह बात नहीं है। इस छोटे से व्यवसाय से मुझे इतना अवकाश नहीं मिलता कि मै केशव की भले प्रकार देख भाल कर सकू। फिर सरकारी हस्पताल की सर्विस से तो मुझे बिल्कुल अवकाश न मिलेगा और मै केशव के प्रति अपनी महान् जिम्मेवारी को पूरा न कर सकू गी। इसका परिणाम यह होगा कि मै माता के ऊचे आसन से गिर जाऊ गी जो मुझे एक क्षण के लिए भी सहन न होगा। यही मेरी गम्भीरता का कारण है।"

इस पर सुशीला ने कहा "जीजी। केशव की देख-रेख के लिए आप नौकर रख सकती हैं।"

कमला ने कहा " यह ठीक है नौकर केशव को रख सकेगा। उसे खिला पिला देगा। उसे इधर-उधर लिए फिरता रहेगा। परन्तु क्या वह उसे बना और मेरा स्थान ले सकेगा ? कदापि नहीं। मेरे कर्त्तव्य को तो केशव के पिता भी पूरा नहीं कर सकते।"

"बड़े घरों की माताएं अपने बच्चों को नौकरों पर छोड़ देती हैं। वे बनें या बिगड़ें, इस बात का ध्यान नहीं रखतीं। परिणाम यह होता है कि उन में नौकरों के संसर्ग से बुरी आदतें घर कर जाती हैं। तुम ने उस दिन देवी सुभाषिणी के घर में देखा था कि उनका एक लड़का नौकर के पास बैठा हुआ बीड़ी पी रहा था।"

दमयन्ती ने कहा जीजी। हा हा देखा था। देवी सुभाषिणी जैसी सुयोग्य माता के बच्चे की इस कुटेव को देखकर मुझे बड़ा दुख और और आश्चर्य हुआ था। मैं तो यह सोचती थी कि देवी सुभाषिणी जैसी देश सेविका को बच्चे पैदा करने की भूल न करनी चाहिए थी। यदि परमात्मा ने उन्हें बच्चे दिए हैं तो उनका सर्व प्रथम कर्त्तव्य यह है कि वे अपने बच्चों की स्वयं देखभाल करें। यों ही नौकरों पर न छोड़ दें। मैं तो यह समझती हूँ कि बच्चों से उपराम हो जाने से वे समाज की सेवा के बदले असेवा कर रही हैं। यदि वे मुझे मिलीं तो यह बात मैं उन्हें कहूँगी।

दमयन्ती की यह बात सुनकर कमला के मुख पर प्रसन्नता की रेखा खिंच गई। उस ने प्रसन्न भाव में कहा —

'दमयन्ती। तुम मेरे कहने का अभिप्राय ठीक प्रकार समझ गई हो। नौकरों के कुससर्ग से बच्चों में और भी बहुतसी बुरी बातें पैदा होजाती हैं। देवी सुभाषिणी अपने बच्चों से सर्वथा उपराम न होंगी। वे पढ़ी लिखी और सुयोग्य स्त्री हैं। जितना उनका वश चलता होगा उतना वे अपने बच्चों की देख रेख करती होंगी। हा उनकी देख-रेख को हम पूरी देख रेख नहीं कह सकते। परन्तु उन माताओं की दशा पर बड़ा दुख और रोष होता है जिन्हें जन-सेवा का कोई काम नहीं होता। जिनके २४ घंटे घर के भीतर व्यतीत होते हैं और जो बड़ी सुविधा और खूबसूरती से सन्तान के बनाने का काम कर सकती हैं। परन्तु वे माताए पश्चिम की स्त्रियों की तरह बनाव शृङ्गार और भोग विलास में लगी रहती हैं और अपने बच्चों को नौकरों पर छोड़ देती हैं। यही दशा उनके पिताओं की है। पिता जज है, प्रोफेसर है, उसे बिल्कुल पता नही कि बच्चा क्या कर रहा है? क्या माता-पिताओं की इस प्रकार की उदासीनता से जाति उन्नत हो सकती है?

"इस सम्बन्ध में दो पश्चिमी बहनों की बातचीत बड़ी मनोरञ्जक है। उनमें से एक दूसरी से पूछती है कि यदि तुम्हारा पुत्र सैर को गया हो तो तुम्हें कैसे पता लगे कि वह तुम्हारा बच्चा है। वह स्त्री उत्तर देती है कि यतः मैं अपनी नौकरानी को पहचानती हूँ अत' पता लग सकता है कि वह बच्चा मेरा है। बच्चों की उपरामता की पराकाष्ठा का यह एक उदाहरण है। जिन माताओं ने संसार को महान् पुत्र अर्पण किए हैं उन्होंने अपना सर्वस्व उन पर कुरबान करके

उनको पाला पोसा, पढ़ाया और योग्य बनाया था। तुमने विश्व विजयी महावीर नैपोलियन का नाम सुना होगा। उसकी माता ने वैधव्य और असहायावस्था में रहकर उसको योग्य बनाया था। वह अपनी माता का बहुत गुण गान किया करता था। एक बार नैपोलियन राजमुकुट से विभूषित मन्त्रियों के साथ गिरजा में जा रहा था। अकस्मात् रास्ते में माता से भेंट हो गई। नैपोलियन ने माता के चुम्बन करने के लिए आगे बढ़कर प्रसन्न बदन हो माथा झुकाया। माता ने उत्तर में कहा "वत्स! ऐसा नहीं। देखो जिसके गर्भ से जन्म लेकर तुमने ससार देखा है उसके हाथ का चुम्बन करके कर्त्तव्य पालन द्वारा उसका सम्मान करो।" माता ने हाथ फैलाया और नैपोलियन ने श्रद्धा भक्ति पूर्वक उसका चुम्बन करके प्रणाम किया। इतने से ही नैपोलियन की माता के हृदय का भाव प्रकट होता है।

'नैपोलियन का जो प्रेम माता के प्रति था उसका परिचय भी थोड़े शब्दों में दिए देती हूँ। जिस समय नैपोलियन सेंट हेलेना में अंग्रेजों का बदी था कई बार ठडी सास भरकर वह कह उठता

"हा माता! आप मुझे न जाने कितना प्यार करती थीं। मेरे निमित्त आपने अपना सर्वस्व यहा तक कि अपने वस्त्र भी बेच डाले थे। सब प्रकार से साहाय्य हीन होने पर भी हम लोगों के पालन पोषण का बड़ा भार आपने सरल मन से अपने ऊपर उठा रखा था। आपकी सी हिम्मत, आपकी सी बुद्धि, आपकी सी चरित्र गठन शक्ति बिरली ही स्त्रियों में होती होगी। मैने तो देखी नहीं। इस ससार में जो कुछ महान, उन्नत तथा उदार वस्तु है उस सबको आपने हम बालकों के हृदय में बिठाने के लिये प्राण पण से चेष्टा की थी। झूठ से आपको हार्दिक घृणा थी। उच्छृङ्खलता देखने की आपमें सामर्थ्य न थी चाहे कितने कष्ट आप पर पड़ते पर आप विचलित मन होना तो जानती ही न थीं। पुरुषों का सा साहस वीरों की सी शक्ति और स्त्रियों की सी कोमलता, दया और सुकुमारता आप में ही एकत्र देखी जाती हैं।"

"क्या उन माताओं ने नौकरों के द्वारा पालित पोषित करके ऐसी सुयोग्य सतान संसार को दी थीं?" यह सुनकर सुशीला और दमयन्ती चुप हो गईं। उनके मुख से शब्द न निकला। ऐसा प्रतीत होता था कि कमला की गम्भीरता का रहस्य उनकी समझ में भले प्रकार आ गया है। कमला ने पूछा "शील! बताओ! मुझे और कुछ कहने की आवश्यकता शेष रह गई है?" सुशीला

ने कमला के चरण छू कर कहा "जीजी ॥ आपकी कठिनाई को मैं समझ गई हूँ। आपने कहा है कि मेरा काम केशव के पिता भी नहीं कर सकते, यह बात मेरी समझ में नहीं आई। इसे और समझा दें।"

कमला ने कहा कि यह बात जरा कठिन है। छोटे बालक पर जितना माता की शिक्षा का प्रभाव पड़ता है उतना पिता की शिक्षा का नहीं पड़ता। माता की शिक्षाओं का प्रभाव बालक के चित्त पर पड़ता है और चित्त पर पड़ा हुआ यह प्रभाव मृत्यु पर्यन्त बना रहता है। पिता की शिक्षाओं का प्रभाव बच्चे के मन पर पड़ा करता है और यह स्थायी नहीं होता। वह नष्ट भी हो जाया करता है। गुरु की शिक्षा का समय वह होता है जब बालक का मन अच्छी प्रकार से काम करता और चित्त का काम बहुत थोड़ा रह जाया करता है। इसीलिए तीन गुरुओं (अर्थात् माता पिता तथा शिक्षक) में माता का दरजा सबसे ऊँचा होता है। इसीलिये मैंने कहा था कि मेरा स्थान केशव के पिता भी नहीं ले सकते। सुशीला ने प्रसन्न होकर कहा 'जीजी ॥ अब यह बात मेरी समझ में अच्छी तरह से आ गई है।"

कमला ने कोई बात स्मरण करके कहा अब तुम अपना काम करो। मुझे एक रोगी को देखने जाना है। यह कह कर कमला अपना दवाइयों का बेग लेकर बाहर चली गई।

— — —

सिंध में आर्थिक विनाश

(लेखक—श्री रामानद चटर्जी सम्पादक माडर्न रिव्यू कलकत्ता)

'सिंध में आर्थिक विध्वस' शीर्षक से महात्मा गाधी ने 'हरिजन' में अपना एक लेख प्रकाशित किया है यह इस प्रकार प्रारम्भ होता है:—

निम्नाकित मुद्रित पत्र श्री ताराचन्द डी गाजरा और श्री सी टी वलेचा द्वारा प्रचारित हुआ है।

"हमारा विश्वास है 'सिंध में वर्तमान अराजकता' शीर्षक हमारा पहला पत्र मिला होगा। इसके साथ दूसरा पत्र भेजते है जिसका शीर्षक है 'सिंध में अराजकता के कारण आर्थिक विनाश'। यह उन लोगों की मूक वेदना की दुखद कथा है जो जनता तथा अधिकारियों की आर्थिक साहाय्य के बिना गाव छोड़ रहे हैं। अन्यत्र इस प्रकार की अवस्था अन्तर्राष्ट्रीय सहायता और सहानुभूति उत्पन्न करती। हमें आशा है हमारे प्रान्त के प्रति आपकी दिलचस्पी जाग्रत होगी।"

इस पर गाधी जी लिखते है'—

पत्र में उल्लिखित वक्तव्य से निम्न भाग अकित करता हूँ —

सिंध की वर्तमान अराजकता ने प्रान्त के आर्थिक जीवन में बड़ा संकट उत्पन्न कर दिया है। ग्राम्य जीवन का लगभग सर्वनाश हो गया है। किसान लोग जिनकी एक मात्र सम्पत्ति और आजीविका के साधन बैल और दूध देने वाले पशु हैं अपने को चोरी के कारण इन दोनों से वचित पाते हैं क्योंकि पशुओं की चोरी बेहद बढ गई है। किसान का जीवन इस अवस्था को पहुँच गया है कि दिन भर परिश्रम करने के उपरान्त रात में उसे चौकसी के लिए जागना पड़ता है।

गावों के हिन्दू चोरों और डाकुओ का सामना करने में अपने को पर्याप्त रूप में समर्थ नहीं पाते है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि छोटे गावों के हिन्दू बड़े गावों में और बड़े गावों के शहरों में बस रहे हैं।

निर्यातन का कुछ आभास सिध की ६१ तहसीलों में से १ तहसील अर्थात हैदराबाद तालुका के आकड़ों से मिल जायगा। प्रो० घनश्याम एम० एल० ए० द्वारा ये आकड़े सकलित किये गये हैं। कई ग्रामों के लगभग समस्त हिन्दू परिवार

चले गये हैं और शेष ग्रामों के लगभग ५० प्रति शतक हिन्दू परिवार ग्रामों को छोड गये हैं।

आगे उस लेख में लिखा है —

इसके पश्चात् हैदराबाद की अकेली तहसील के ४२ ग्रामों के निर्यातन के आकड़े दिये हुए हैं। इनमें १७ ग्रामों के हिन्दू परिवार गाव छोड़कर अन्यत्र बस गये है किसी २ गाव में केवल एक हिन्दू परिवार रह गया हैं। अन्य गांवों के लगभग ५० प्रति शतक से अधिक परिवार गावों को छोड़ गये है।

इसके पश्चात् गाधी जी कहते हैं कि वक्तव्य के बनाने वाले आकड़ों पर इस प्रकार आलोचना करते हैं—

"उपर्युक्त आकड़ों के महत्व को पूर्णतया समझने के लिये यह ध्यानमें रखना चाहिये कि हैदराबाद की तहसील प्रान्त के सबसे बढ़िया भाग में स्थित है। यह जिले के मुख्य स्थान के इर्द गिर्द है और हैदराबाद का जिला स्वय प्रान्त का केन्द्रीय जिला है। सक्खर का जिला जिसने अभी कुछ समय हुआ भयकर अत्याचारों का रोमाचकारी प्रदर्शन देखा है हैदराबाद से बहुत दूर है। यदि प्रान्त के सबसे अधिक सुरक्षित भाग में ऐसी दुरवस्था है तो अन्य जिलों यथा दादू, जकोबाबाद लडकाना और सक्खर की तहसीलों मे निर्यातन की सीमा का सहज ही अनुमान किया जा सकता है'

महात्मा गाधी के अपने विचार इस प्रकार हैं—

'वक्तव्य के अन्य अशों को उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं है। तमाम वक्तव्य हिन्दुओं पर आई हुई आपत्ति की निष्पक्ष और सच्ची कहानी है। इस कहानी से पता लगता है कि इस आपत्ति ने मुसलमानों पर भी असर डालना शुरू कर दिया है।

सिंध के हिन्दू उद्यमी हैं। वे मुस्लमान किसानों की आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं। दोनों आपस में बहुत घुले मिले हैं। अन्धी साम्प्रदायिकता एक नई वस्तु है। अराजकता बहुमुखी राक्षस है। यह सब पर ही आघात पहुँचाती है। स्वय उनको भी नहीं छोड़ती जो प्रारम्भ में उसके लिये जिम्मेवार होते हैं।"

"सलग्न पत्र के लेखकों का यह कहना ठीक है कि सिंध की आपत्ति अखिल भारतीय समस्या है काग्रेस, मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा तीनों का कर्तव्य है

कि सद्भाव में स्थिति का सामना करें। सिंध की सरकार की परीक्षा उस ढग से होगी जिस ढग से वे स्थिति का हल करते हैं। भारत सरकार भी उपेक्षा वृत्ति धारण नहीं कर सकती जब कि भारत का एक प्रान्त जो महान सिंध के जल से प्लावित हो रहा है और जिसमें हमारे गौरव पूर्ण प्राचीन भूतकाल के भग्नावशेष प्राप्त होते हैं उस अराजकता से नष्ट भ्रष्ट हो रहा हो जिसको यदि समय रहते काबू मे न किया गया तो वह सिंध की कल्पनातीत सीमा से बाहर चली जायगी। भारत के किसी भी भाग में जो कुछ बुरा वा भला होता है वह अन्त में समस्त भारन पर प्रभाव डालता है।"

वक्तव्य के निर्माताओं का यह कथन नितान्त सत्य है कि अन्यत्र इस प्रकार की वस्तु अन्तर्राष्ट्रीय सहायता और सहानुभूति जाग्रत करती। सिंध जैसे क़त्ल लूट मार और अराजकता के अन्य दुष्कृत्य जिसके फलस्वरूप लोग गाव छोड़ २ कर भाग रहे है और जिन्होंने सिंध के नाम को कलुषित कर दिया है ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर किसी देश मे हुए होते तो ब्रिटिश समाचार पत्र शोर मचा देते और अन्य सभ्य कहे जाने वाले देश उनके स्वर में स्वर मिला देते। परन्तु चूकि विदेश में प्रकाशन के जो साधन भारतवर्ष में प्राप्त है वे सब ब्रिटिश नियन्त्रण के अधीन हैं और इसके फल स्वरूप वर्तमान सिंध की सच्ची घटनायें भारत के अंग्रेजों के समाचार पत्रों मे प्रकाशित नहीं होती है।

और न उन्हे विदेश में प्रचारित करने की आज्ञा है विशेषत युद्ध के इन दिनों मे। अत सिंध के लिए बाहर विदेश मे सहानुभूति का जाग्रत होना किस प्रकार सम्भव है? यदि ये चीजे भारतीय लोगों के अपने पत्रों में प्रकाशित भी हो जायें और वे विदेश के किसी भाग मे पहुच भी जाय तो उन पर विश्वास किए जाने अथवा ब्रिटेन विरोधी पत्रों के अतिरिक्त अन्य पत्रों में प्रकाशित होने की बहुत कम सभावना रहती है। हम ने कई अवसरों पर यह कहा है कि विदेश के वे पत्र भी जो भारतवर्ष के पक्षपाती होने के लिए प्रसिद्ध हैं भारतीय पत्रों में प्रकाशित घटनाओं के विवरणो के मुकाबले मे अर्द्ध गोरे पत्रों के विवरणों का प्रयोग करना अधिक पसन्द करते हैं।

एक शताब्दी से अधिक से, ब्रिटिश इतिहासकारों, यात्रियों, पत्रकारों और दूसरे ब्रिटिश लेखकों की बातों को संसार की जनता बड़े ध्यान से सुनती है।

भारत के बाहर की जनता के दिमागों में यह विश्वास उत्पन्न करने में कि भारत वर्ष का शासन अगरेज़ों द्वारा इतनी उत्तमता, निष्पक्षता और परोपकार भावना से किया जाता है कि वहा कुशासन और अराजकता से उद्भूत दुख असम्भव हैं, उपर्युक्त बात से पर्य्याप्त लाभ उठाया जाता है।

महात्मा जी का कहना है कि हिन्दुओं पर आई हुई विपत्ति मुसलमानों पर भी प्रभाव डालने लग गई है। यदि यही बात है तो क्या हम आशा करें कि काग्रेस स्थिति के सुधार के लिये जो कुछ वह कर सकती है करेगी ? और कदाचित मुस्लिम लीग को यह सन्तोष हो जाय कि जो बात हिन्दुओं को हानि पहुँचा रही है वही मुस्लिम हितों पर भी प्रभाव डालने लगी है तो उसे भी सिंध में व्याप्त घोर साम्प्रदायिकता के विनाश के लिये यत्न करना चाहिए।

महात्मा जी का यह कथन ठीक है कि काग्रेस, मुस्लिम लीग और हिन्दू महासभा तीनों को सद्भाव में स्थिति का हल करना चाहिये। काग्रेस और मुस्लिम लीग को क्या करना चाहिए, इसका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है।

जहा तक हिन्दू महासभा का सम्बन्ध है, यह आशा की जाती है कि स्थिति के सुधार के लिए वह जो प्रयत्न करेगी काग्रेसी लोग उन्हें साम्प्रदायिकता के रंग में रगा हुआ नहीं बतलायेंगे। भले ही मुस्लिम लीग कुछ ही क्यों न कहे।

इसमें सन्देह नहीं कि सिध की विपत्ति अखिल भारतीय समस्या है। परन्तु 'प्रान्तीय स्वराज्य' के आशीर्वाद से जो ब्रिटिश सरकार ने भारतवर्ष को प्रदान किया है, प्रान्तीयता का ऐसा उद्भव हुआ है कि इस ने दूसरे प्रान्तों की सहानुभूति के लिये द्वार बन्द कर दिये हैं ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार साम्प्रदायिक निर्णय ने सहानुभूति को किसी एक जाति के भीतर ही सीमित कर दिया है।

महात्मा जी से हम पूर्णतया सहमत हैं कि सिंध की सरकार की परीक्षा उस रीति से होगी जिस से वह स्थिति का हल करेगी। भारत सरकार के कर्त्तव्य के प्रति उन्हों ने जो संकेत किया है, वह भी ठीक है।

विश्वव्यापी युद्ध और धर्म

(लेखक—प्रो॰ सुधाकर एम॰ ए॰)

धर्म और संस्कृति के बुरे दिन आ गये हैं। विश्वव्यापी युद्ध ने उन पर पर्दा डाल दिया है। इतना ही नहीं उनका अस्तित्व नष्ट कर दिया है। आज योरोप में जन संहार का जो ताण्डव नृत्य हो रहा है और जो द्रुत गति से समस्त संसार में व्याप्त हो रहा है वह महीनों और सप्ताहों का फल नहीं है वरन वर्षों और शताब्दियों का फल है जिनमे विविध देशों के देश भक्तों के व्यवस्थित प्रयत्नों के द्वारा स्वार्थपूर्ण जातीयता पर आश्रित पृथकत्व के विचार अंकित किये जाते रहे हैं।

इन दिनों धार्मिक विशेषताओं का कोई मूल्य नहीं है। सभ्यता के नाम पर होने वाली अभ्यर्थनाएँ थोथी हैं। वर्तमान काल के महान व्यक्ति मौन हैं। नागरिक जनता के प्रतिदिन के विध्वंस के प्रलयकर आंदोलन में व्यस्त हुए राष्ट्रों के द्वारा अहिंसा के देव दूत महात्मा गांधी की आवाज न सुनी जाती है और न उसकी पर्वा ही की जाती है। इन दिनों मेरा देश और मेरी जाति' का एक मात्र नारा ही लोगों के हृदयों में उत्तेजना उत्पन्न करता है। देश-प्रेम और जातीयता पृथकत्व की पराकाष्ठा पर पहुँच जाने से अभिशाप बन गये हैं। इन्होंने भ्रातृत्व और समस्त सद्भावनाओं को विनष्ट कर दिया है जो एक बार मानवी मस्तिष्क में धर्म द्वारा प्रतिष्ठित हुई थी।

आज यूरोप नर्वस्थली बना हुआ है। प्रत्येक देश के राजनीतिज्ञ, दम्भ, स्वार्थ, आत्म-प्रवचना आत्म-संवर्धन, तथा अन्य निम्न गामिनी प्रवृत्तियों का प्रकाश्य रूप में प्रचार कर रहे है और इस सब का फल वही है जो हमे श्रीयुत राधाकृष्णनम् के शब्दोंसे प्राप्त होता है अर्थात् 'समस्त संसार शीघ्र ही अग्नि में भस्म होगा और मानव-जाति का अस्तित्व खतरे में पड़ जायगा।'

अहमदाबाद शिक्षा समिति के तत्वावधान में दिये हुए अपने भाषण में उन्होंने निम्न शब्दों मे 'धार्मिक आदर्श' का पक्ष पोषण किया—

"मानवी आत्मा के गौरव की रक्षा करो। किसी एक जाति के जय २ कार करने से मानव जाति के शत्रु मत बनो।"

श्रीयुत राधाकृष्णनम् का रोना अरण्यरोदन के सदृश है। जहा तक धार्मिक आदर्शों का सम्बन्ध है ससार में भयङ्कर परिवर्तन उपस्थित हो गया है। आज हमें परमात्मा के निर्लेप प्रेमी नहीं मिलते, जो जाति अथवा देश की सीमाओं से ऊपर उठकर मनुष्य समाज को वैसा प्रेम करते हों जैसा अपने देशों को करते हैं। उनके स्थान में अब ससार अर्थलोलुप अनीश्वरवादियों से परिपूर्ण है जिन्हें 'मेरा देश और मेरी जाति' के अतिरिक्त और कोई वस्तु अपील नहीं करती। ससार की इस दयनीय स्थिति को देखकर सहसा ही मन में प्रश्न उठता है कि धर्म कहा है ?

इस स्थिति के लिये सबसे पहले विभिन्न देशों के विचारक और शिक्षा शास्त्री और उसके पश्चात् उनके अनुयायी उत्तरदाता हैं। इतना ही नहीं प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति उत्तरदायी है जो उनके विचारों को हृदयङ्गम करके उन के अनुसार समाज में आचरण करता है। स्कूलों इत्यादि के द्वारा इस विष का प्रसार हुआ था। वस्तुत' किसी भी देश के बच्चे मानव-समाज के बच्चे होते हैं। उन्हें तो मनुष्य समाज की सेवा के लिये तैयार करना चाहिये। हमारे नाम पर यह धब्बा है कि हमारे बच्चे उचित और अनुचित के विवेक से शून्य होकर जातीय उद्देश्यों को पूरा करें। ठीक स्थिति यह है कि उन्हें प्रत्येक उद्देश्य को यदि वह ठीक न हो ठीक रूप देना चाहिये और ठीक उद्देश्य को और भी अच्छा बनाना चाहिये।

यदि हम जीवन के दृष्टिकोण में आमूल चूल मौलिक परिवर्तन करने के लिये उत्सुक हों तो हमें स्रोत को ही ठीक करना चाहिये और यह स्रोत राष्ट्र के स्कूलों में स्थित है। वहीं से ही हम स्थिति मे सुधार ला सकते है। यदि कोई देश सद्भाव में जाति व राष्ट्र की सीमाओं से ऊपर उठकर उस स्थिति तक उठना चाहता हो तो उसे अपने स्कूलों से प्रारम्भ करके अपने बच्चों के मस्तिष्कों में लोकहित की भावनाओं को अङ्कित करना चाहिये। जब वे बड़े होंगे तो उनकी प्रवृत्ति सब लोगों को प्रेम करने की बनेगी और वर्तमान काल के समस्त उपद्रव तिरोहित हो जायँगे।

एक बात निश्चित है और वह यह है कि जिन देशों में तानाशाही शासन-प्रणाली प्रचलित हुई है उनमें धर्म भावना प्राय लुप्त हो गई है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि उनशासन प्रणालियों में व्यक्ति का कोई स्थान नही है। व्यक्ति को अपनी स्वतन्त्र सम्मति रखने प्रकट करने अथवा क्रियान्वित करने की आज्ञा

नहीं है। जहां व्यक्तियों की स्वतन्त्रता का अपहरण हो जाता है वहां धर्म कठिनाई से फलता-फूलता है। धर्म और संस्कृति तो स्वाधीन वातावरण में वृद्धिगत होते हैं। प्रजातन्त्र प्रणाली ही उनकी अभिवृद्धि के लिये अनुकूल वातावरण प्रस्तुत करती है।

यूरोप ने संसार के सम्मुख प्राचीन शस्त्रागार का चित्र प्रस्तुत किया हुआ है। युद्ध का अन्त करने के लिए युद्ध लड़ा जा रहा है। इतना तो सुनिश्चित ही है कि इस युद्ध के पश्चात् वर्तमान आर्थिक (भौतिक) सभ्यता के विरुद्ध महा भयङ्कर प्रतिक्रिया होगी। धार्मिक भावनाएं, नैतिक गुण और आध्यात्मिक प्रेम पुनर्जीवित होंगे। आदर्शवाद के झंडे को ऊंचा करने के लिये जो दुर्भाग्य से वर्तमान युद्ध के कोलाहल और अन्धकार में लोगों की दृष्टि से ओझल हो गया है महात्मा गांधी जैसे देवदूत पुनः प्रकाश में आयेंगे। तब भारत का सन्देश सुना जायगा। भारतीय सन्देशहरों को उस अवसर के लिये अपने को तय्यार करना चाहिये।

(अङ्गरेज़ी से अनूदित)

The Vedic Doctrine of Cosmogony and Ancient Philosophers !

By—Rai Bahadur Pandit Ganga Prasad M A,

Chief Judge (Retired)

"WHENCE and how this Universe was produced, is a question which in some form or other rises in the mind of every person whether he be literate or illiterate Every religion and every system of Philosophy has therefore to offer a solution of it

The answer given to this and cognate questions by the Semetic Religions i e Judaism, Christianity and Mohamadanism is radically different from the Vedic Doctrine The Semetic Religions teach that this World was created out of Nothing by the fiat of God, and is the first and last of its kind There was no such Universe before it nor will there be any after its destruction On the contrary the Vedic Religion teaches that this world was evolved by God out of pre-existing matter which is eternal, that previous to it matter had existed in a chaotic state, that before that Chaos (प्रलय) there had been another Cosmos (सृष्टि), and so on, without beginning Similarly after the dissolution of this Cosmos there will be a period of Chaos, then another Cosmos, and so on without end A Cosmos is called a *Divine day* (ब्राह्म दिन) and a Choas is called a *Divine Night* (ब्राह्म रात्रि), and they succeed each other as day and night in endless succession

The Semetic theory about the Soul is also quite different from that of the Vedic Teaching being a counter part of the theory of Cosmogony mentioned above The Semetic Religions believe that the Soul is created or born

with the body and no previous existence though they have to admit that it will not die with the body but will continue to exist forever either in Heaven or in Hell according to the divine judgement On the other hand the Vedic Doctrine is that the Soul is also eternal, its present life being one in a series of countless incarnations, and that at each birth it is endowed with physical and mental capacities and environments according to its merits earned in its previous life This satisfactorily explains the unequal distribution of happiness and misery, wealth and poverty, and mental and moral equipments, which is so patent in the world and which cannot be explained according to the doctrine of the Semetic Religions

Science has established beyond reasonable doubt that matter may change forms but can not be annihilated, nor can it be produced out of nothing It is notworthy that the Vedic Teaching about Cosmogony referred to above is not only in confirmity with reason and modern science, but is also supported by the greatest Philosophers of ancient Greece and Egypt Below are given a few extracts from Wards "A view of the History literature and Mythology of the Hindus" Vol IV—

"Like Socrates Plato believed in the unity of the supreme being, without beginning or end, but asserts at the same time the eternity of matter He taught that the elements being mixed together in chaos, were by the will of God separated, reduced into order, and that thus the world was formed"

(Introduction Page IX)

Speaking of the State of Chaos another celebrated Greek Philosopher Zeno says —

"At this period all material forms are lost in one chaotic mass, all animated nature exists in its original form as one whole, consisting of God and matter

Gods and men, and all forms of regulated nature are renewed to be dissolved and renewed in endless succession (Ibid Page XXXVI)

An other Greek Philosopher Epicurus says —

' The Universe always existed and will always remain —of course in the form of matter

'The Egyptians also held the same doctrine Mr Ward says — 'The Egpytians concieved that the Universe under goes a periodical conflagration after which all things are restored to their original form to pass again through a similar succession of changes (Ibid Page XXXVIII)

The Unity of Humanity

This grim tragedy, unprecedented in the history of the world, demonstrates to us the fact that the human race forms a single organism and that the malady that touches a part affects the health of the whole The days of isolation in which one part of the world was indifferent to the sufferings of the other have gone for good. What is taking place in Europe affects us deeply here, in India We share the trails and tribulations through which our brothers and sisters are passing We see the little children taking leave of their mothers, prior to the voyage accross the seas in search of a place of safety We see the refugees from the conquered countries, trudging along with their meagre belongings, seeking for shelter and food Starvation has begun to do its work among the victims of aggression. Pestilence is sure to follow in its footsteps With a world-economy thoroughly disorganised, the years ahead of us are sure to bring distress to peoples all over the world.

Statesmen on whose heads lies the grave responsibility of directing the affairs of nations, appear to be like men in a sinking barge, all rushing to one side, impelled by an instinct of selfpreservation and by that very act bringing about the destruction of all Fear and hatred started the war, fear and hatred keep it going and even when the combatants are thoroughly exhausted and fallen, there appears to be no chance of fear and hatred ceasing to be.

If the human race is to survive, immediate steps should be taken to replace the fear and the hatred that shapes the policy of nations by love and mutual trust.

This will become possible only if justice is meted out to all If peace and goodwill are to prevail in the world, man should meet man as a brother and an equal The difference of aliens and national should cease to exist The conception of ruling races and subject races should be cast aside as the relic of a barbaric past. Man can deceive himself and may succeed in throwing dust into his brother's eyes, but can he deceive God? He thinks, he can. Politicians, who prepare carefully worded statements, which, while yielding nothing, exhibit an exterior of generosity, deny the very existence of the God of Truth These men, if they pray at all, will probably submit carefully worded petitions to the Almighty Father asking Him to guarantee all good things to themselves and utter confusion to all who lie outside their charmed circle One wonders, why these men drag in the name of the Crucified One, knowing fully well that their lives and actions are far removed from the great ideals preached by Him

THE ETHICS OF CONQUEST

Mother Nature, for her own reasons, has implanted in the mind of humanity a sense of admiration for physical prowess The most popular of the songs of nations exalt the warrior, praising his victories in the battle-field This was all right in an age when mere physical strength and agility decided the issue. But conditions have entirely changed Nevertheless the old racial memories lying deep down in the unconscious mind impel humanity to worship the conqueror who, by fair means or foul, succeeds in annexing other people's territory, and reaping harvests which others have sown Nothing succeeds like success and it appears to be the privilege of the successful man, in any sphere of life, not only to insult the less fortunate but also to doubt the latter's moral worth The strength that leads to success, be it the strength of armaments or the

capacity for low cunning and vile treachery displayed by "civilized" man against his weak neighbour, is considered to be the source of all virtues The old word "virtue," derived from the Latin word 'vir" meaning man, is definitely associated with rudeness, brutal strength and ruthless violence which vassals, subject races oppressed females recognise as the manly virtues of their lords and masters The conquering Goths and Vandals became the possessors of all virtues, whereas the defeated Romans were branded as imbeciles

Women and the oppressed people of the world will be saved a great deal of unnecessary disappointment, if they would know that the "justice" that is meted out to them is justice dictated by the conquereing men be it within the confines of house hold, or in the wider sphere of international adjustments. The conqueror is always applauded by his comrades As for the people, they not only applaud him but bow down and take the dust of his feet, notwithstanding the fact that thousands of their sons were sacrificed to the appeasement of the ambition of their demigod The vanquished, of course, call him names, but very soon the wounds get healed and they living under the *pax* established by the conqueror forget the old wrongs and, as slaves always do kiss the hard that struck them down Bards sing the praises of the conqueror, calling him a mighty deliverer Jenghiz Khan and Tamerlane were mighty deliverers in their days So was Alexander, the Macedonian, euphemistically called "the Great," and so was the little Corsican, who a century ago enslaved almost all the nations of the West Now that the French people have fallen on evil days the mighty Bonoparte to whose ambition the flower of French youth was sacrificed may perhaps, be considered a mere adventurer Herr Hitler is a demigod to eighty million people of the Germanic race Recently in one of

his utterences the Fuehrer boasted that two hundred million people were behind him. If the gods whom he worships were to bless his arms and lead him to world domination, his gods will become the true gods History is quite definite on this point The "realistic" people all over the world will join in calling Herr Hitler a "good boy" Bard will sing poems in praise of the mighty deliverer Of course, the rebels of the world, ordinarily, known as "advanced thinkers" being too poor in worldly goods to sustain any appreciable loss by standing against established authority may refrain from joining the universal chorus.

Humanity in its madness may sing pæans in praise of its conquerors, but the painful side of the picture is that humanity, at the same time, spurns and spits on the face of the poor unfortunate victim lying crushed under the heels of the conqueror, "*Vae Victis*," woe to the vanquished, appears to be one of the established doctrine guiding humanity in its footsteps The fallen victim is forcibly deprived of his arms, his hands get withered and he is kicked again for his weakness and inability to bear weapons The conqueror to ease his conscience, if he happens to have any, insults the poor victim by attributing to him cowardice, moral turpitude and a host of other sins The conqueror's cunning, treachery and cold-blooded ruthlessness assume the shape of superior wisdom, diplomacy and success in arms The recorded history of the human race extends to about sixty centuries, that is about two hundred generations This period is, of course, a nothing in comparison to the time taken by the race to evolve from its animal ancestors Perhaps the race has to go through some more tribulations in order to understand that empires rise and fall and Truth alone persists"

(Prabuddh Bharat)

The passing of the Seer

By

K. R, Pathik, Manager Arya Orphanage, Pataudi House, Delhi.

When poison played havoc with Rishi—the Great,
When death was smiling nigh,
When pain of boils could make the bravest-insane,
Mark ! his patience, he made no cry,
But prayed, "Father ! Thy will be done",
Dayanand—mightiest son of the Almighty,
Passed away calmly, to be one with the 'One'.

The Miracle of Diwali

Guru Dutta—who was sitting and watching by,
Struck with wonder and pondered awhile,
His 'Glacier of Atheism' melted like summer-snow,
Behold ! Rishi's death played a 'Miracle',
Guru Dutta—an Atheist,
All the time before,
Turned a Theist,
On return to Lahore.

सम्पादकीय

ऋषि निर्वाण उत्सव

गत सप्ताह दीपावली के पुण्य अवसर पर सदैव की नाईं देश और विदेश के आर्य्य स्त्री पुरुषो न ऋषि निर्वाण उत्सव मनाकर ऋषि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाजलि प्रस्तुत की हैं। हम भी बडे विनीत भाव में उस महर्षि के चरणों में अपनी विनीत श्रद्धाजलि प्रस्तुत करत हैं। इस श्रद्धाजलि को प्रस्तुत करते हुए हमारा ध्यान सहसा ही ऋषि जीवन की अन्तिम झाँकी की ओर आकर्षित हो जाता है जब वे दीपावली की सन्ध्या को महाप्रयाण से कुछ क्षण पूर्व अजमेर मे शय्या पर पड़े हुए थे। मृत्यु का समय आने पर ऋषि दयानन्द ने निम्न चार बातो का उच्चारण किया था –

(१) कुछ प्रकाश कुछ अंधेरा।

(२) सब मेरे पीछे खड़े हो जाओ।

(३) सब दरवाजे खोल दो।

(४) ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो।

ये चारों बाते विशेष महत्व रखती हैं क्योंकि ये उनके प्राण त्यागते समय की कामना की द्योतक हैं जिस का विशेष भाव होता है। इस अन्तिम वसीयत पर आर्य्य मात्र को गंभीर मनन करना और चारो बातों को समझने और दूसरो को समझाने का सम्यक् यत्न होना चाहिये।

स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज ने अपने एक प्रवचन में निम्न प्रकार प्रकाश डाला है —

"कुछ प्रकाश और कुछ अंधेरा" इसका अर्थ जहा तक मैं समझा हूँ यह था कि दीपमाला की रात अंधेरी होती है और इस रात को लोग प्रकाश करते हैं। इस से कुछ रात अंधेरा रहता है और कुछ प्रकाश। अथवा इस का अर्थ यह समझ लो कि ऋषि के उपदेशों से कुछ लोगों को प्रकाश हो गया है और कुछ अंधेरे में हैं। पता नहीं लोग अँधेरे की ओर पग बढ़ावेंगे या प्रकाश की ओर।

"सब मेरे पीछे खड़े हो जाओ" इस का अभिप्राय यह था कि स्वामी जी का लक्ष्य उस समय केवल एक परमात्मा था। वे अपने सम्मुख किसी दूसरी वस्तु को नहीं चाहते थे। इसका अर्थ यह है कि स्वामी जी ने उस समय कहा कि अब तो मैं नहीं रहूँगा तुम मेरे मार्ग का अनुसरण करना।

"सब दरवाजे खोल दो" पूछा गया ऊपर का भी ? उत्तर मिला ऊपर का भी खोल दो। चारों ओर के दरवाजे तो सांसारिक सुख के लिये है और ऊपर का दरवाजा परमात्मा की ओर ले जाने वाला है। इसका तात्पर्य यह भी हो सकता है कि हिन्दुओं ने सब के लिए दरवाजे बन्द कर दिये थे। स्वामी जी ने अन्तिम आदेश यह दिया कि सब के लिए दरवाजे खोल दो। वैदिक धर्म्म मुसलमान ईसाई सब के लिए खुला रहना चाहिये।

"ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो" कठोर से कठोर यातना हर्ष के सामने तुच्छ हो जाया करती है। इसी प्रकार ऋषि के सम्मुख मृत्यु के मुकाबले मे जब आनन्द स्वरूप परमात्मा होते हैं तो वे प्रसन्नता पूर्वक शरीर को छोड़ देते हैं और कहते हैं "ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो।"

ऋषि के जीवन की इस अन्तिम झाँकी से जो सब से बड़ा भाव हमारे मन पर अंकित होता है, वह यह है कि वे हसते हसते इस ससार से विदा हुए थे। प्रत्येक मनुष्य रोते हुए ही इस जगत् में आता है परन्तु इस जगत् से उसे हसते हुए ही जाना चाहिये। हसते हुए वे ही मनुष्य जाते है जो जीवन का अपना लक्ष्य पूरा कर लेते है और उनका वह लक्ष्य ऊचा होता है। कहा भी गया है कि प्रत्येक मनुष्य को संसार के हर्ष समुदाय मे योग देकर यहा से विदा होना चाहिये। ऋषि दयानन्द ने संसार के हर्ष समुदाय में क्या और कितना योग दिया है, इस को बतलाने की आवश्यकता नही है। वह सब पर विदित है। हम सब का ध्येय जीवन की उपर्युक्त प्रकार की गति को प्राप्त करने का होना चाहिये अर्थात् ससार में अपने आचरण और व्यवहार से प्रसन्नता मे वृद्धि ही करनी चाहिये और अपने जीवन का उच्चतम लक्ष्य स्थिर करके उसकी पूर्ति में लगकर अन्त मे रोते हुए नही वरन् हंसते हुए यहां से विदा होना चाहिये।

सार्वदेशिक सभा और आर्य्य मार्तण्ड

गत कुछ सप्ताहों से आर्य्य प्रतिनिधि सभा राज स्थान के मुख पत्र 'आर्य्य मार्त्तण्ड' में

सार्वदेशिक सभा विरोधी लेख प्रकाशित हो रहे हैं। आश्चर्य है प्रशसित सभा के अधिकारी इस ओर से अनभिज्ञ बने हुए हैं।

सभा ने दक्षिण प्रचार विशेषत. हैदराबाद में रचनात्मक कार्य्य के लिए सम्प्रति अपनी एक विशेष नीति स्थिर की हुई है। उस पर जोशीले आर्य्य भाइयों को जिनकी आस्था रचनात्मक कार्य्यों में कम और प्रोपैगैण्डा कार्य्य में अधिक होती है असन्तोष होना स्वाभाविक है परन्तु वास्तविक स्थिति के सम्बन्ध में सभा से पूछे वा अनुसधान किये बिना उनका समाचार पत्रों में आना आश्चर्य्य जनक है। आर्य जनता का एक बड़ा भाग सभा की नीति और कठिनाइयों को भली भाँति अनुभव करता है अत: उस पर सभा विरोधी प्रचार का विपरीत प्रभाव पड़ना कठिन है। हैदराबाद के धर्म्म युद्ध के पूर्व भी सभा इसी प्रकार की आलोचनाओं का लक्ष्य बनाई गई थी परन्तु युद्ध के सफल सञ्चालन से आलोचकों को अपनी भूल प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप मे माननी पड़ गई थी। हितकर आलोचना का अधिकार आर्य मात्र को है परन्तु वह आलोचना किस स्थिति में हितकर हो सकती है और किस स्थिति में अहितकर इस निर्णय के कठिन कार्य को प्रत्येक आर्य्य को अपने ऊपर न लेकर जिम्मेवार सभा सस्थाओं पर ही छोड़ना ज्यादा अच्छा होता है।

विधवा विवाह का प्रचार

श्रीयुत मन मोहनदास एम. एल ए. ने विधवा विवाह के प्रचार के लिए बगाल की धारा-सभा में एक बिल प्रस्तुत किया है। यह देखते हुए कि बंगाल में विवाह योग्य अथवा, बच्चे उत्पन्न करने में समर्थ हिन्दू विधवाओं की सख्या अधिक है और यह भी देखते हुए कि विवाह न होने के कारण बहुत सी हिन्दू जातियाँ सख्या मे घट रही हैं विधवा विवाह के प्रसार और प्रचार के लिए उचित उपाय होने ही चाहिएँ।

इस बिल में विधुर का अविवाहित से विवाह होना दण्डनीय ठहराया गया है। यदि वह विवाह करना चाहे तो उसे विधवा से ही विवाह करना चाहिए।

हम इस उपाय का हृदय से स्वागत करते हैं और हमारे वे भाई भी जो वैवाहिक विषयों में किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप के विरोधी हैं जाति के कल्याण को दृष्टि में रख कर इस बिल की उपादेयता और आवश्यकता से इन्कार नहीं करेंगे।

दहेज के विरुद्ध कानून

श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ विश्वास ने बंगाल की धारा सभा में दहेज विरोधी एक बिल प्रस्तुत किया है जिसके अनुसार विवाह में ५१) से अधिक दहेज देना और लेना दण्ड योग्य ठहराया गया है।

अमर्य्यादित दहेज की कुप्रथा से बंगाल प्रान्त में क्या २ उपद्रव हुए हैं उन पर प्रकाश डालने की आवश्यकता नहीं है। बंगाल की स्नेहलता सरीखी बहनों की आत्म हत्याओं की दुखद स्मृतियाँ अब भी भारत के बच्चे २ के मस्तिष्क में ताज़ी हैं। अकेला बंगाल प्रान्त इस कुप्रथा से पीड़ित नहीं है वरन् भारत के अन्य प्रान्त भी दुखी हैं। इस कुप्रथा के उन्मूलन के लिए अन्य प्रान्तों में भी क्रियात्मक उपाय होने चाहिएँ। उच्च शिक्षा के प्रसार के साथ २ यह कुप्रथा और भी भयङ्कर रूप लेने लग गई है और लड़के बिकने लग गये हैं। विशेषतः नवयुवकों और नवयुवतियों तथा उनकी संस्थाओं को उपर्युक्त प्रकार के उपायों की सफलता में पूरा २ योग देना चाहिए।

दीवान तुल्जाराम जी

दीवान तुल्जाराम जी हैदराबाद (सिंध) निवासी की मृत्यु में सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा अपने एक अत्यन्त सदस्य से वंचित हो गई है। दीवान साहब आर्य्य समाज के परम श्रद्धालु भक्त थे और वानप्रस्थ आश्रम में निवास करते थे। इस महान् दुख में हम उनके परिवार के प्रति हार्दिक समवेदना प्रगट करते हैं।

प्रिंसिपल बालकृष्ण जी

राजाराम कालेज के प्रिंसिपल श्रीयुत प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए० पी० एच० डी० की असामयिक मृत्यु का समाचार देते हुए हमें बड़ा दुख होता है। उनकी मृत्यु से आर्य्य समाज में एक सुयोग्य शिक्षा शास्त्री का स्थान रिक्त हो गया है। प्रो० महोदय कई वर्ष पर्यन्त गुरुकुल काँगड़ी में इतिहास और अर्थशास्त्र के उपाध्याय रहे। लण्डन से पी० एच० डी० करके वापस आने पर कोल्हापुर के राजाराम कालेज में प्रिंसिपल नियुक्त हुए और इस पद पर जीवन के अवसान तक योग्यता पूर्वक कार्य्य करते रहे। महाराष्ट्र प्रांतमें आर्य्य समाज के प्रचार के लिए आप बहुत चिंतित और यत्नवान रहते थे और अपने से जो कुछ बन पड़ता था प्रचार कार्य्य करते रहते थे। लण्डन के सर्व धर्म सम्मेलन के लिए सार्वदेशिक सभा ने आपको भी आर्य समाज का एक प्रतिनिधि

मनोनीत किया था। मराठी में सत्यार्थ प्रकाश इत्यादि ग्रन्थों के अनुवाद तथा प्रचार का बहुत बडा श्रेय आपको था। आपने हिन्दी तथा अंग्रेजी में भारत का इतिहास अर्थ शास्त्र और आर्य्य सामाजिक कई ग्रन्थों का निर्माण भी किया था। परमात्मा उनके शोक संतप्त परिवार को धैर्य्य प्रदान करें।

स्त्रियों के प्रति अपराध

बगाल के इसपेक्टर जनरल पुलीस की पुलीस शासन संबन्धी १६३६ की रिपोर्ट में स्त्रियों के प्रति अपराधों के कतिपय आँकड़े इस प्रकार अकित हैं'—

'वर्ष भर में स्त्रियों के प्रति अपराधों के ११४१ केस पुलीस में अकित कराए गए थे। इनमें से ३६८ केस भगाए जाने के ४८५ सतीत्व नष्ट किए जाने के २४६ बलात्कार के और ६ छोटी छोटी लड़कियों को वेश्या वृत्ति के लिए क्रय-विक्रय के थे। इन ११४१ केसों में १८८८ सही थे, ३२१ झूठे अथवा कानून की सीमा से परे थे। ३४ के सबन्ध में तहकीकात जारी थी। ५६८ केस अदालत में प्रस्तुत किए गए थे, इनमे से २८६ केसों मे अपराधियों को सजा हुई २१७ मुक्त हुए और वर्ष के अन्त मे ६५ अपराध विचारा-धीन थे।

६२७ केसों मे मुसल्मान पीडित थे और ५११ केसों में हिन्दू थे। ७३६ केसों में अपराधी मुसल्मान थे और ३६४ में हिन्दू अपराधी थे। ४ केसों मे अपराधी हिन्दू और मुसल्मान दोनों थे २ केसो मे एंग्लो इण्डियन तथा भारतीय ईसाई थे। ५ केसों के अपराधी अज्ञात थे। अधिकाश केसों में अपराधी और पीड़ित एक ही जाति के थे।

ये तो पुलीस द्वारा प्रकाशित आँकड़े हैं। बहुत से मामले तो पुलीस में पहुचते भी नहीं अथवा पुलीस द्वारा अकित भी नहीं किए जाते। और बहुत से मामले जिनकी रिपोर्ट हो जाती है अथवा जो पुलीस में अकित हो जाते हैं पीड़ितों की निर्धनता अथवा अपराधियों द्वारा साक्षियों के भयभीत कर दिए जाने से विफल हो जाते हैं। साथ ही बहुत से मामले पुलीस द्वारा दर्ज भी नहीं किए जाते हैं अथवा यों ही टाल दिये जाते हैं।

बगाल स्त्रियों के प्रति अपराधों के लिए अच्छा रिकार्ड नहीं रखता। गत कई वर्षों से इन अपराधों मे वृद्धि हो रही है। इस वर्ष भी उनमे कोई कमी नहीं देख पड़ती है। इस लज्जा जनक स्थिति के लिए बगाल की सरकार, वहाँ के हिन्दू और मुसल्मान तीनों ही जिम्मेवार हैं।



भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

चांदनी चौक, दिल्ली

१ नवम्बर १९५०

प्रोफेसर सुधाकर जी एम० ए०

मन्त्री सार्वदेशिक आ० प्र० सभा दिल्ली की

अपील

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के लिये उसके माननीय प्रधान राजगुरु प० धुरेन्द्र जी शास्त्री ने जो अपील प्रकाशित की है। (जो सार्वदेशिक के पिछले अंक में छप चुकी है) मैं उसका हार्दिक समर्थन करता हूँ। परिषद् के भूतपूर्व प्रधान तथा उसके संस्थापकों में से एक होने के नाते मैं विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि परिषद् ने अनेक प्रांतों के नवयुवकों में जो काम किया है उसे तमाम देश भक्त और [धर्म] प्रेमियो की ओर से पूरा प्रोत्साहन मिलना चाहिये। परिषद् का मुख्य काम सामाजिक कुरीतियों का निवारण और अन्य रचनात्मक कार्य जैसे कुमारों का सदाचार निर्माण आदि रहा है। गत वर्ष परिषद् ने बाल विवाह तथा दहेज की खूनी प्रथा के विरुद्ध जो तीव्र आन्दोलन किया था और उसी तरह इस वर्ष भी धूम्रपान, तम्बाकू आदि कुरीतियों के विरुद्ध जो आंदोलन हो रहा है उससे कई प्रांतों के समाचार पत्रों का ध्यान इस कार्य के महत्व की ओर गया है। यह स्वयं सिद्ध सचाई है कि कोई भी देश सामाजिक कुरीतियों के रहते राजनैतिक महत्ता प्राप्त नही कर सकता। इसलिये ऐसी तमाम संस्थायें जो चुपचाप देश की सामाजिक अवस्था को उठाने का कार्य करती रहती हैं अवश्य प्रशंसा की पात्र हैं।

इसलिये मैं उन सब सज्जनों से जो देश की उन्नति की ठोस और मजबूत

नींव का निर्माण करना चाहते हैं निवेदन करूंगा कि भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् उनसे आर्थिक अवस्था की हकदार है।

परिषद् का वर्ष

क्योंकि परिषद् के वार्षिक सम्मेलन भिन्न २ स्थानों की सुविधाओं की दृष्टि से प्रतिवर्ष निश्चित समय पर नहीं होने पाते हैं इसलिये कार्यकारिणी सभा ने परिषद् का वर्ष १ अक्तूबर से ३० सितम्बर तक निश्चित कर दिया है।

आर्य कुमार सभाओं से निवेदन है कि अपना सन् १६४०-४१ का चन्दा शीघ्र भेजने की कृपा करें। जिन सभाओं ने सन् १६३६-४० का चन्दा अभी तक नहीं भेजा है वे शीघ्र भेजें।

वैदिक धर्म परीक्षाओं की अप्राप्य पुस्तकें

परिषद् की परीक्षा समिति ने उन पुस्तकों के स्थान पर जो अप्राप्य हैं निम्नलिखित विकल्प (Alternative) पुस्तकें केवल सन् १६४१ में होने वाली परीक्षाओं के लिये निश्चित की हैं। प्रश्न पत्रों के नम्बर दोनों पुस्तकों में से बराबर होंगे तथा परीक्षार्थियों को स्वतन्त्रता होगी कि वे दोनों में से किसी एक पुस्तक के प्रश्नों के उत्तर दें।

वैदिक धर्म विशारद परीक्षा

प्रथम खंड प्रथम प्रश्न पत्र

वैदिक धर्म प्रवेशिका [बाबू रामचन्द्र एम० ए० कृत] वा,

वैदिक धर्म आर्य समाज [प्रश्नोत्तरी] [शारदा मंदिर, दिल्ली]

द्वितीय खंड द्वितीय प्रश्न पत्र

आर्य समाज के जगमगाते हीरे वा,

महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, धर्मवीर लेखराम, प गुरुदत्त विद्यार्थी तथा महात्मा हंसराज के संक्षिप्त जीवन।

तृतीय खंड प्रथम प्रश्न पत्र

उपदेशामृत भाग ५ या उपदेशामृत भाग ४

सिद्धान्त शास्त्री परीक्षा

द्वितीय प्रश्न पत्र—वैदिक काल का इतिहास [पं० आर्य मुनि कृत] वा,

भारतवर्ष का इतिहास प्रथम भाग [वैदिक तथा आर्ष पर्व]
(प्रो० रामदेव जी कृत)

तृतीय प्रश्न पत्र—सृष्टि विज्ञान या संस्कार विधि

परीक्षाओं के प्रवेश पत्रों की अन्तिम तिथि ३० नवम्बर ४०

परिषद् की आगामी वर्ष की परीक्षाओं के प्रवेश पत्र परिषद् कार्यालय में शुल्क सहित शनिवार ३० नवम्बर १९४० तक अवश्य आजाने चाहियें जिससे तिथि निकल जाने पर परीक्षार्थियों को पीछे न पछताना पड़े।

यह तिथि किसी भी अवस्था में न बढ़ाई जावेगी।

पुस्तक लेखकों व प्रकाशकों से निवेदन

परीक्षा मंत्री जी ने सूचित किया है कि वैदिक धर्म विशारद तथा सिद्धान्त शास्त्री की परीक्षाओं की पाठविधि में परिवर्तन करने का विचार है। अतः धार्मिक पुस्तकों के लेखकों तथा वैदिक साहित्य के प्रकाशकों से निवेदन है कि वे जो पुस्तकें पाठविधि मे रखवाना चाहे उनकी दो दो प्रतियां परीक्षा मंत्री, भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् चांदनी चौक दिल्ली को भेजने की कृपा करे।

परीक्षा केन्द्र

परीक्षा मन्त्री जी सूचित करते हैं:—

परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं के केन्द्र प्रायः प्रत्येक बड़े नगर और ग्राम आदि में बन रहे हैं तथा केन्द्रों के प्रबन्ध और संचालन आदि के लिये केन्द्र व्यवस्थापकों की नियुक्ति आदि का कार्य भी हो रहा है। यदि किसी नगर में अब तक केन्द्र स्थापित न हुआ हो और वहाँ पांच या अधिक परीक्षार्थी तैयार हों तो उन्हें वहां के आर्य समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य स्कूल, पाठशाला आदि में शीघ्र परीक्षा केन्द्र खुलवाने के लिये परिषद् कार्यालय से पत्र व्यवहार करना चाहिये। साथ ही उन्हें वहां के आर्य समाज या आर्य कुमार सभा के प्रधान या मंत्री अथवा अन्य किसी प्रतिष्ठित आर्य पुरुष को केन्द्रव्यवस्थापक का कार्य करने के लिये तैयार कर उनकी स्वीकृति कार्यालय को भेजनी चाहिये। जिससे वहां केन्द्र की स्वीकृति के तथा केन्द्र व्यवस्थापक की नियुक्ति आदि करके परीक्षा सम्बन्धी सब सूचनायें उन्हें समय समय पर भेजी जाती रहें।

मंत्री—
भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद्

आर्य समाज की चिनगारियां

श्री लाला साईंदास जी

लाला जी आर्य समाज लाहौर के प्रथम प्रधान थे। जिस समय डाक्टर रहीम खाँ जी के गृह पर आर्य समाज की स्थापना हुई क्योंकि वहा महर्षि जी ठहरे हुये थे उसी समय लाला साईंदास जी प्रधान बनाए गए और अपने जीवन के अन्त समय तक आप प्रधान रहे। उस समय के वृद्धों तथा युवकों पर उनका प्रभाव था। पं० गुरुदत्त जी महात्मा हंसराज जी आदि को आर्यसमाज में लाने वाले आप ही थे। आपके सम्बन्ध की मैं एक बात लिखना चाहता हूं वह शतांश देने की है।

आर्य समाज के उपनियमानुसार प्रत्येक सदस्य को अपनी आय का शतांश प्रतिमास चन्दा देना होता है। वे न्यायालय में रीडर थे। एक बार आप जब अपना वेतन लेकर आर्य समाज में आए तो आपको वहाँ चपरासी न मिला और न ही कोई अन्य अधिकारी वहाँ था। आप ३ घण्टे तक मन्दिर में बैठ प्रतीक्षा करते रहे और तीन घण्टे के पीछे जब चपरासी आया तो आपने उसे अपना शतांश दे दिया और उसे आज्ञा दी कि प्रत्येक मास के आरम्भ की तिथियोंमें आप आर्य समाजमन्दिर में ही रहा करें बाहर न जाँय। उसने कहा 'प्रधान जी! आर्य समाज के काम पर ही जाना होता है।' उन्होंने कहा "आगे को इन दिनों में वह काम छोड़ दें क्योंकि मुझे आज तीन घण्टे आपकी प्रतीक्षा करनी पड़ी। मेरा नियम है जिस दिन मुझे वेतन मिलता है मैं वेतन लेकर सीधा आर्य समाज मे आता हूं और शतांश देकर अपने घर जाता हूं क्योंकि मेरा नियम है जिस समम तक मैं शतांश न दू अपने वेतन का धन घर नहीं ले जाता।"

आर्य समाज के सदस्यों को इससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

लाला लब्भूराम जी नय्यड़

लाला जी अभी जीवित हैं। आप न तो धनी हैं और न ही विद्वान हैं। परन्तु आर्य समाज की जितनी सेवा उन्होंने की है शायद ही कोई कर सके आप की प्रथम आयु में आपके पूज्य पिताजी काम करते थे आप आर्य समाज के लिये काम करते रहे। उनके स्वर्गारोहण पर आपके सुपुत्र घर के काम में लगे आप आर्य समाज का काम करते रहे। अब आपके पुत्र

भी रीटायर होने वाले हैं। आप आयु की दृष्टि से वृद्ध हैं तो भी आर्य समाज का काम करते हैं।

प्रश्न होगा आप क्या काम करते हैं। आपका मुख्य काम है, आर्य समाज लुध्याना आर्य समाज लुध्याना की सस्थायें और आर्य समाज की प्रांतीय सस्थाओं के लिये धन सग्रह करना। आर्यसमाज की कोई सस्था ऐसी नही जिसमे इनका भाग नहीं, आर्य समाज का कोई काम नहीं जिसके यह भागीदार नहीं। आर्यसमाज लुध्याना के मन्दिर, स्कूल, पाठशाला में इन द्वारा संग्रह किया हुआ धन लगा है। गुरुकुल कागडी में लगभग १ लाख रुपया इन्होंने जमा करके दिया है और कई कमरे बनवाए हैं। वह जो चीज़ बनवाते हैं उस पर प्राय लिखा रहता है। "लब्भूराम जी नय्यड़ मित्र मण्डली द्वारा निर्मित"।

आपकी मित्रमण्डली बहुत है। आप धन लुध्यानामें बैठकर पत्र व्यवहार द्वारा सग्रह करते हैं। यदि कोई धनी धन दे तो उत्तम है परन्तु स्वय धनी न होकर अपने पुरुषार्थ से अपने दानी मित्रोंसे थोड़ा २ धन सग्रह करके लाखो की राशि पुण्य कार्यों में लगाना उत्तमतम है। इतना करने पर भी उनको अपने कृत्य पर कोई अभिमान नही है। वह नम्र है। यदि कोई कहे आपने बडा काम किया तो आप नम्र भाव से उत्तर देंगे यह धन्यवाद वा प्रशसा दानी सज्जनों को दे मैं इसका पात्र नहीं हूं मैं तो आर्य समाज का सेवक हू।

—स्वतन्त्रानन्द

॥ ओ३म् ॥

जनगणना १९४१ विज्ञप्ति नं० ४

संशोधन

भारत सरकार की ओर से जनगणना के सम्बन्ध में जो प्रश्नावली प्रकाशित की गई है उस में पुरानी रीति को छोड़ते हुए इस वार सरकार ने फिरके का कोष्ठक उड़ा दिया है। इस लिए सार्वदेशिक सभा ने कोष्ठक पूर्ति के लिए जो निश्चय इस से पूर्व किया था उसमें संशोधन करना आवश्यक समझा है तथा वह संशोधन आर्य जगत् की सूचना के लिए प्रकाशित किया जाता है। आगामी जनगणना में कोष्ठक पूर्ति निम्न प्रकार से करें :—

धर्म	नसल, कबीला, जात	भाषा
वैदिक धर्म	आर्य	हिन्दी

(२) प्रत्येक समाज का कर्तव्य है कि वह ऊपर दिये गये कोष्ठक पूर्ति सम्बन्धी चित्र को छपवाकर अपने शहर, कस्बे तथा इर्द गिर्द के ग्रामों में बटवाने का प्रबन्ध करे।

(३) जिन समाजों ने अपने यहां जनगणना उपसमिति नहीं बनाई है उन्हें तत्काल उपसमिति निर्माण करके उसके द्वारा निम्न कार्य करवाने चाहिए —

(क) प्रत्येक आर्य (हिन्दू) के पास कोष्ठक पूर्ति सम्बन्धी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देश पहुँचाने के लिए प्रत्येक समाज को चाहिये कि वह अपने शहर अथवा ग्राम को आवश्यकतानुसार भागों में बाट कर प्रत्येक भाग के लिए आर्य सभासदों की टोलिया नियत करे जो इस निर्देश को घर २ तथा प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचा दें। जिस समाज के इर्द गिर्द के ग्रामों में आर्य समाज न हो उनमें भी इस निर्देश को पहुँचाने का भार आर्य सभासदों को लेना चाहिए। जो आर्य समासद् अपने ऊपर यह भार लें उनसे इस कार्य की रिपोर्ट भी लेनी चाहिए।

(ख) नीचे भारत सरकार के Census commissioner के एक पत्र का कुछ भाग दिया जाता है :—

No, D. 218/940 NEW DELHI

4th Oct. 1940

From

M. W. W M Yeatts Esq C. I. E. I. C. S

Census Commissioner for India,

To,

The Secretary,

International Aryan League, Delhi

Sir,

Your letter dated 23rd Sept. 1940

The instructions to the enumerators are to enter the religion and caste of person as he gives them It is for the individual to see that he makes the correct return of these इस पत्र से यह बात स्पष्ट है कि प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह धर्म तथा जाति के खाने की पूर्ति जिस प्रकार चाहे करा सकता है और सरकारी गणकों (शुमार कुनिन्दों) का यह कर्तव्य है कि वह कोष्ठक की पूर्ति प्रत्येक व्यक्ति के उत्तर के अनुसार करें।

इस लिए यह आवश्यक है कि यह देखने के लिए उचित प्रबन्ध किया जाय कि गणक लोग आर्यों की जनगणना मे कोष्ठक पूर्ति सार्वदेशिक सभा के उपर्युक्त चित्र में दिये गये उत्तरों के अनुसार ही करते हैं। इस सम्बन्ध में इस प्रकार प्रबन्ध करना चाहिए कि ग्राम अथवा शहर के सब गणकों को भारत सरकार के सैंसिस कमिश्नरके पत्र की लिपि दिखा कर समझा दिया जाय कि वे इस पत्र के अनुसार कोष्ठक पूर्ति की कार्यवाही करें। पुनः यह देखना चाहिए कि क्या वास्तव मे कोष्ठक पूर्ति ठीक तरह हो रही है। यदि ठीक न हो तो उसकी शिकायत स्थानिक सुपरवाइजर से करनी चाहिए और इसकी सूचना प्रान्त के जनगणना सुपरिंटेण्डेंट और प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को तार द्वारा देनी चाहिए।

(ग) इस बात की तरफ विशेष ध्यान होना चाहिए कि प्रत्येक आर्य समाज अपने नगर तथा आस पास रहने वाले कथित हरिजनों में कोष्ठक पूर्ति सम्बन्धी निर्देश अवश्य पहुँचा सकें। इस सम्बन्ध में हरिजनों की बिरादरी के चौधरियों को मिलकर समझाना चाहिए।

(४) जनगणना दो प्रकार की होगी ;—

(१) प्रारम्भिक Preliminary (२) अन्तिम (Final) प्रारम्भिक जनगणना लगभग सभी प्रान्तों में दिसम्बर मास में होगी। इसका प्रकार लगभग उसी प्रकार होता है जैसा कि म्यूनिसिपैलटी के वोटरों की सूची तैयार करने का होता है अर्थात् गणक लोग घर २ जाकर कोष्ठक पूर्ति करते हैं। जनगणना का वास्तविक आधार यही गणना होती है। इस लिए इसी समय कोष्ठक पूर्ति सम्बन्धी पूरे जोर से कार्य होना चाहिए और इसी गणना की तैयार की गई सूचियो मे देख लेना चाहिए कि कोष्ठक पूर्ति ठीक तरह हो गई है।

अन्तिम जनगणना २७—२८ फरवरी तथा १ मार्च १९४१ को होगी। उस दिन के सम्बन्ध मे भी यह प्रबन्ध करना चाहिए कि आर्यों की गणना ठीक तरह हो जाये।

प्रतिज्ञा

प्रत्येक आर्य को प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि वह जनगणना मे कोष्ठक पूर्ति सार्वदेशिक सभा के आदेशानुसार करायगा और छः अन्य व्यक्तियों से भी ऐसी प्रतिज्ञा लेगा कि वह भी इसी प्रकार कोष्ठक पूर्ति करावेंगे और उन मे से प्रत्येक अन्य छः से भी इसी प्रकार की प्रतिज्ञा करावेगा।

इस प्रकार जनगणना का प्रचार बहुत सुगमता तथा शीघ्रता से हो सकेगा।

— — — —

सिंध की वर्त्तमान अराजकता पर सार्वदेशिक सभा का निश्चय

The Secretary of the International Aryan League has released the text of the Resolution about Sindh's Hindus adopted by the Working Committee —

"The Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha (International Aryan League) Delhi, having reviewed the situation created in Sindh, by the frequent, shocking and inhuman attacks on Arya-Hindus resulting in loss of valuable lives and large property, during past two years, has come to the conclusion that there prevails a deplorable state of daily-increasing anarchy and lawlessness in the Province, so far as the Arya-Hindus are concerned

In the opinion of this Sabha, the Ministry and the Government officials have failed to provide adequate measures of security and protection for Arya Hindus and they are now in a state of terror and helplessness

This Sabha expresses deep concern and sorrow at this state of affairs and urges upon His Excellency the Governor of Sindh to take speedy and effective measures to control the situation and to provide adqeuate and immediate relief to the victims of oppression.

This Sabha assures the sufferers of its whole-hearted support and resolves to devise ways and means of rendering them effective help"

आर्यसमाज तथा जन गणना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली की अन्तरङ्ग सभा ता० १३-१०-४० के निश्चय सं० १८ की लिपि

नोटिस का विषय स० ७ जनगणना के कोष्ठकों की पूर्ति के सम्बन्ध में पुनर्विचार का विषय उपस्थित हुआ। सरकार ने कोष्ठकों मे जो परिवर्तन किया है बतलाया गया। निश्चय हुआ कि धर्म के कोष्टक मे वैदिक धर्म अङ्कित कराया जाय तथा नसल, कबीला तथा जाति के कोष्ठक मे 'आर्य' लिखाया जाय।

यह भी निश्चय हुआ कि आगामी जनगणना में आर्य अपनी भाषा हिन्दी लिखावें और इसके लिये पूरा-पूरा आन्दोलन किया जाय।

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

सिन्ध की वर्तमान अराजकता पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का निश्चय

सन् १६३६ व १६४० में सिंध प्रान्त में आर्यों हिन्दुओं की जान और माल पर लगातार जो आघात होते रहे हैं और हो रहे हैं उनसे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा इस परिणाम पर पहुची है कि उक्त प्रान्त में जहा तक आर्यों हिन्दुओं का सम्बन्ध है भारी अराजकता विद्यमान है और प्रान्त के हिन्दुओं में त्रास बढता जा रहा है। सरकारी अफसर आर्य हिन्दुओं की रक्षा के लिये उचित उपाय काम में लाने मे असमर्थ रहे हैं। यह सभा इस स्थिति पर दुख और रोष प्रकट करती है और प्रान्तिक गवर्नर महोदय से प्रार्थना करती है कि आर्य हिन्दुओं की जान और माल की रक्षा के लिये यथोचित उपाय शीघ्र ही काम में लायें और पीड़ितों की सहायता पहुँचाने का प्रबन्ध करें।

यह सभा सिन्ध के हिन्दुओं से उनके दुख में सहानुभूति प्रकट करती है और विश्वास दिलाती है कि उनकी इन मुसीबतों में यह सभा उनके साथ है और निश्चय करती है कि सिन्ध प्रान्त के आर्य हिन्दुओं की समुचित सहायतार्थ शीघ्र ही प्रभावोत्पादक कार्यवाही की जाये।

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

आदि वासी जातियाँ हिन्दू ही हैं—सरकार से अनुरोध।

रांची १६ अक्टूबर। श्रद्धानन्द हिन्दू मिशन रांची की ओर से बुलाई गई हिन्दुओं की एक विराट् सभा श्री श्यामकृष्ण सहाय बैरिस्टर की अध्यक्षता मे हुई जिसमें निम्नांकित प्रस्ताव श्री ओम्प्रकाशजी शास्त्री मन्त्री बिहार प्रान्तीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट द्वारा प्रस्तुत तथा श्री देवकीनन्दनप्रसादजी M L A द्वारा अनुमोदित होकर सर्वसम्मति से पास हुआ।

"रांची के हिन्दुओं की यह सार्वजनिक सभा सरकार द्वारा आगामी जनगणना Census के सबन्ध मे प्रसारित उन आदेशों का सख्त विरोध करती है जिनके द्वारा "सरहुल" व अन्य पुराने पर्व मनाने के कारण पिछड़ी कही जाने वाली उराँव मुन्डा आदि जातियों को हिन्दू धर्म से पृथक् किया गया तथा अपना धर्म लिखाने की उनकी स्वतन्त्रता को उनसे छीना गया है जैसा कि जि० रांची जसपुर व गाँगपुर राज्यों तथा पलामू पटना आदि के लिये निकले हिदायतनामो से पता चलता है जो कि जनगणना के कार्यकर्त्ताओं को दिये गये हैं। इस सभा की सम्मति में किसी धर्म का निश्चय करने के लिए किसी एक पर्व की विभिन्नता कोई कारण व महत्व नही रखती। साथ ही सरकार का ध्यान इस ओर भी आकर्षित करती है कि इस "सरहुल" पर्व को वे हिन्दू भी सम्मिलित रूप से मनाते हैं जिन्हें उसने हिन्दू धर्म मे गिना है। दूसरे इस प्रकार की गलत हिदायतों से सरकार के जनगणना सबन्धी उद्देश्य को भी हानि होती है। अत सरकार से अनुरोध है कि वह इन Instructions आज्ञाओं पर पुनः विचार करे और इस प्रकार की हिदायतों को रद्द कर उपर्युक्त जातियों को अपना धर्म लिखाने की स्वतन्त्रता दे।

इस प्रस्ताव की कापी वायसराय- गवर्नर बिहार तथा अन्य हिन्दू नेताओं के पास भेजी गई हैं।

श्रद्धानन्द हिन्दू मिशन रांची

६० ईसाई शुद्ध हुए

बिहार प्रान्तीय श्रद्धानन्द हिन्दू मिशन, रांची के श्रीयुत् पं० ओ३म्प्रकाश जी शास्त्री सूचित करते हैं कि सिमडेगा शाखा में पिछले मास ६० ईसाई व्यक्तियों को शुद्ध कर हिन्दू धर्म की दीक्षा दी गई। श्रद्धानन्द मिशन सिमडेगा (जिला रांची) के कार्यकर्ता बाबू गणेशीसिंह जी बड़े प्रयत्न से उस ओर शुद्धि कार्य में संलग्न हैं। जिसके फल स्वरूप इस वर्ष १२० शुद्धि हो चुकी है।

तथा गत वर्ष ३०० से ऊपर शुद्धियां हुई थी।

आर्य वीर दल भागलपुर

आर्य वीर दल भागलपुर के ४० स्वयंसेवकों ने बड़ी ही तत्परता से १५-६-४० के सायंकाल ७ बजे से १ बजे रात्रि तक तथा १६-९-४० पूर्णमासी को ५ बजे प्रातःकाल से ११ बजे तक भागलपुर बूढ़ानाथ घाट में होनेवाली भाद्र पूर्णमासी मेला के अवसर पर मेला का सुप्रबन्ध किया। स्वयंसेवकों ने अपने कर्त्तव्यों का पूरा पूरा पालन किया। इस सुप्रबन्ध का अधिक श्रेय वीर दल के दलपति श्रीयुत सच्चिदानन्द सिंह जी है। ३ बालकों तथा बालिकाओं को खोज कर उनके माता पिता के हवाले किया। एक विधर्मी गुण्डे की अच्छी तरह मरम्मत भी की।

ब्रजमोहनसहाय

मन्त्री

आर्यकुमार सभा, भागलपुर।

नांदेड (हैदराबाद दक्षिण)

आर्यसमाज नान्देड ता० ११-१०-४० की यह सभा हालिया मुस्लिम फिसाद नान्देड में मुसलमान गुण्डों के जालिमाना और वहिशियाना अत्याचारों पर इजहारे नफरत करता है और अपने मजलूम व मजरूह भाइयों से कामिल हमदर्दी प्रकट करते हुए शहीद किसनसिंह जी तथा शहीदा लक्ष्मीदेवी जी को श्रद्धांजलि अर्पण करती है। साथ ही हुकूमत को तवजह दिलाता है कि शहीद तथा शहीदा के हक़ीकी क़ातिल को इबरतनाक सजा दे ताकि नांदेड के मजलूम हिन्दुओं की आयन्दा जिन्दगी खतरे में न रहे।

का० ल० मोहरिर

मन्त्री, आर्यसमाज नांदेड

पं० रघुनाथप्रसाद पाठक—पब्लिशर के लिए लाला सेवाराम चावला द्वारा "चन्द्र प्रिंटिङ्ग प्रेस", श्रद्धानन्द बाजार, देहली में मुद्रित।

ऋग्वेद

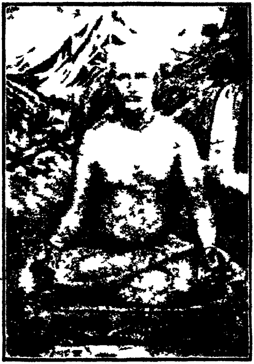
दिसम्बर १९४०

ओ३म्

Reg No L 2121

यजुर्वेद

सार्वदेशिक



सम्पादक—प्रा० सुधाकर, एम० ए०

स० सम्पादक— श्री रघुनाथप्रसाद पाठक

वार्षिक मू० स्वदेश २), एक प्रति का ≈) विदेश से ५ शि० वार्षिक

अथर्ववेद

सामवेद

लेख-सूची

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक

* सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा देहली का मासिक मुख-पत्र *

वर्ष १५ } मॅगसिर १९९७ दिसम्बर १९४० ई०] [दयानन्दाब्द ११६ { अङ्क १०

* वेद की शिक्षाएँ *

अप्रतीतो जयति सं धनानि । ऋग्वे० ५।५।९०

पीछे कदम न हटाने वाला ही ऐश्वर्यों को जीतता है।

Perseverance, and Steadfastness win Prosperity

* * *

मुमुग्धि अस्मान् निधयेव बद्धान् । साम० ४।१।३७

हमारे बन्धन काट दो।

Cut off our fetters and remove our bondages. O Lord

आर्य कौन हो सकता है ?

[ले०—श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज]

—*—

आर्य शब्द बड़ा ही पवित्र है, वेद इसका समर्थक है। वेद में अनेक स्थलों पर यह शब्द पाया जाता है। इसमें अर्थ गम्भीर सार्थक होकर जिस देश या जाति मे प्रकाश आता है, तत्काल मे ही ये उसको सुचारु रूप से उत्थान में लाता है, यह इसकी तासीर है। इसकी पवित्रता का यह वचन द्योतक —

कृण्वन्तोविश्वमार्य्यम्।

यह प्रसिद्ध वचन पाठकों ने अनेक बार सुना है। वेद का यह संकेत कि समस्त ससार को आर्य बनाओ, कितना मार्मिक आदेश और उत्तम उपदेश है, आर्य शब्द की सार्थकता के विकास में प्राणिमात्र का हित है। जब मनुष्य, मनुष्य बन जाता है तब अन्याय से कोई किसी को नही सताता है। मनुष्य पुरुष, आय ये शब्द पर्यायवाची, परस्पर समानार्थक ही प्रतीत होते हैं, मनुष्य देवता, या यम तो बन सकता है किन्तु मनुष्य, मनुष्य बन जाय यह बड़ा ही कठिन है। मनन-शील व्यक्ति का नाम मनुष्य है। मनन-शील व्यक्ति का यह स्वभाव होता है कि वह हिता-हित, सत्यासत्य और हानि-लाभ को विचार कर, एकाग का भगी और दूसरे का सगी बन जाता है अर्थ सहित और अनर्थ रहित व्यक्ति का नाम पुरुष है। जो व्यक्ति विनय, विवेक, विचार से युक्त और वैर-विरोध, विकार से मुक्त है वह [illegible] आर्यपद वाच्य है।

वेद के इस संदेश के प्रचार से जब कि सुमार्ग विकास में आचुका और कुमार्ग ह्रास में आ चुका होगा, उस साध्वी अवस्था का संप्रति ध्यान में आना भी कठिन है। यह सत्य ही है कि हीन दशा को प्राप्त हुई जाति, जब कि वह सर्वथा पराधीन हो चुकी हो, स्वाधीनता की उमगों को कैसे जान सकती है ? इससे सिद्ध होता है कि आर्य-पुरुष या मनुष्य उन अनेक दुर्व्यसनों, दुर्गुणों और दुःस्वभावों से, जो इनको पराधीनता के गहरे गर्त मे गिरा देने वाले हों, अपने आपको सर्व-देव बनाता और अन्य पुरुषों को इस साधु नियम का नियामक बनाता है।

ऐसे पुरुष किसी एक स्थान या किसी एक जाति में नहीं होते। प्रत्युत सर्वत्र पाये जाते हैं, किन्तु इनकी संख्या बिरली ही होती है, और इन्हीं के पुण्य-प्रताप से, सत्य भाषण और मधुर आलाप से मनुष्य-समाज का उत्थान, कल्याण और सम्मान हो जाता है। ऐसे जाहरदारी के बन्धन से दूर रहने में अपना हित जानते और प्रशंसा के सामने आते ही अपना मुख दूसरी ओर फेर लेते हैं। चुपचाप अपना कार्य करते हुये चुपचाप ही संसार से पृथक् हो जाते हैं। परन्तु संसार के लिये उन्नति और गौरव की सामग्री छोड़ जाते हैं। अतएव प्राणिमात्र ऐसे पुरुषों का स्वागत करता है। अन्यदपि—

विजानिह्यार्य्यान् ये च दस्यवः।

यह वेद का 'उपदेश', कि हे मनुष्यो! तुम आर्य्य और दस्यु की पहचान करो, कितना हितकर है। अर्थात् जो समाज उक्त परीक्षा में जितना सहयोगी सिद्ध होगा, 'उतना ही सुखी और जितना वियोगी उतना ही दुःखी होगा। वेद का यह सार्वभौम नियम सदैव सर्वत्र समान रूप से रहता है। इसी नियम का सहारा पाकर मनुष्य-समाज, जाति वा देश उन्नतशील हो जाते और इससे हटकर अवनति की ओर जातेहुये देखने में आते हैं। इस नियम का बीज प्रत्येक मनुष्य के अन्तःकरण में समान रूप से विद्यमान है, अनुकूल सामग्री की सहयोगिता से सुन्दर स्वभाव में प्रकट हो जाता है और प्रतिकूल सामग्री से क्रूरता में आता है।

अब पाठक इस उपदेश की पवित्रता पर ध्यान दें। उक्त वेद वचन में व्रत [illegible] का नाम आर्य और व्रत भंगी को दस्यु कहा है। सत्य भाषणादि-आत्मा के उच्च[illegible] गुण हैं जिनके पालन का नाम व्रत तथा जिनके भङ्ग करने का नाम अव्रत है। व्रत म[illegible]ष्य को (आत्मवत्सर्वभूतेषु) का पाठ पढाता है और अव्रत स्वार्थ में तत्पर होना सिखाता है। व्रत भंग से तंग होकर परस्पर में जंग लगाता है और व्रत संग से मनुष्य-समाज प्रेम-प्रसंग में आता है। संप्रति यह देखने में आता है कि प्रत्येक पुरुष स्वार्थ को बुरा बताता हुआ भी उसी के जाल में फसता जाता है यह व्रत पालने की न्यूनता का प्रत्यक्ष दृष्टान्त है। अतएवः—

व्रतेन दीक्षा माप्नोति।

यह वेद वचन इस बात की शिक्षा देरहा है कि व्रत के साथ ग्रहण की हुई

विद्या बलवती होकर मनुष्य की प्रकृति को शान्त बनाती है और उसकी हीनता से मनुष्य की मनोवृत्ति अशान्त हो जाती है। इदानीम्—

शिक्षा के साथ साथ पास हो जाना और यथाशक्ति वस्त्र स्वच्छ तथा अन्य रहन-सहन का ढग. यह बाह्याडम्बर तो देखने में आते हैं, परन्तु अन्तरवर्ती व्रतों जिनका सम्बन्ध आत्मा के साथ है पर ध्यान नहीं, अतएव सबकी पुकार है कि विद्या से जो लाभ होना चाहिये था वह नहीं हो रहा है। व्रत के बिना विद्या मनुष्य स्वभाव को क्रूर बनाती है और व्रत के साथ ग्रहण की हुई विद्या से पुरुष-प्रकृति सौम्य बन जाती है। इसलिये विद्या न्यून हो या अधिक व्रत के साथ ही होनी चाहिये यही वेद की घोषणा है। पाठक आगे फलश्रुति को देखें—

अहं भूमि मददामार्य्याय।

यह मन्त्र का पूर्व भाग है जिसमे परमात्मा का आदेश है कि मैं भूमि का राज्य आर्य के लिये देता हूँ। इसके भाष्य में ऋषि ने इसका अर्थ उदारता से बड़ा ही सुन्दर किया है—आर्या—श्रेष्ठ गुणकर्मस्वभावयुक्ता मनुष्या.। अर्थात् जो श्रेष्ठ गुण कर्म स्वभाव वाले मनुष्य है वे ही आर्य-सञ्ज्ञा के सञ्ज्ञी हैं। गुण, विद्या, विनय प्रेम व्यवहार-चातुर्य, योग-क्षेम, प्रवृत्ति का ज्ञान और उसके गुणों की पहचान, उन से लाभ उठाने का सदैव ध्यान समयानुकूल कार्य करना, जीवन और मृत्यु की व्यवस्था को जान कर अधिक शोक, हर्ष मे न पड़ना, ईश्वर आज्ञा भंग से डरना इत्यादि गुण—इनके प्रसार मे सदा उद्योग, इनकी वृद्धि के निमित्त, तन, मन, धन का उपयोग, इसके उपाय के लिये सज्जन गंभीर उदार पुरुषों का सहयोग इत्यादि कर्म, प्रकृति सौन्दर्य, ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी सहनशील, परहित विचार, [illegible]र्थ के वश होकर पर अपकार का कभी भी ध्यान न आना इत्यादि स्वभाव हैं।

शास्त्रों में गुण कर्म तथा स्वभाव का यत्र तत्र इस प्रकार निरूपण किया है। आर्य उक्त गुण स्वभाव से सम्बन्ध रखने वाले नियमों का सर्वाङ्ग में सन्निपात तो नहीं होता, तथापि इनका जितने अंश में जिस भी समाज में उदय हो जायेगा वही समाज खुशहाली की निराली आभा को दिखावेगा अतएव उक्त वेद वचन सार्वभौमता से तथ्य है।

अब पाठक आर्य शब्द के तात्पर्य पर विचार करें—ऋ, गतौ, इस धातु से आर्य शब्द सिद्ध होता है जिस का अर्थ ज्ञान, गमन प्राप्ति है। जिस मनुष्य का

ज्ञान निर्दोष, तदनुकूल आचरण पुन. फलावाप्ति की समाप्ति हो वह आर्यपद का बाधक है। इस नियम में भी इतना विचारना अच्छा होगा, कि अल्पन्यूनता का अधिक संख्या मे सम्मेलन होजाना यथा, ऊनत्रिंशत् ऊनविंशति, उत्तम अधम विचारो की भरमार न्यूनाधिक प्रकार मे होती है। अन्यथा न्यूनता रहित और पूर्णता सहित तो परमात्मा का ही स्वरूप है, इस नियम में कोई व्यक्ति या समाज यथार्थ कृतार्थ नहीं हो सकता।

द्वितीय शब्द समाज है इस शब्द की व्यापकता सर्वत्र है। कोई भी प्राकृतिक वस्तु जिसमे यह नियम काम करता हो सृष्टि मे दृष्टिगोचर नही आती। इससे पृथक् होकर प्रत्येक वस्तु अपनी सत्ता से मिट जाती है। प्रभु की सृष्टि मे सूक्ष्मदर्शी होकर यदि निहारा जावे तो पता चलता है कि छोटी वस्तुओ से मिलकर बड़े बड़े आकार वाली वस्तुओ को सम्भाला हुआ है और इस महान ससार के चित्र को निकाला हुआ है।

समाज सगठन या सहानुभूति ये तीनो शब्द परस्पर पर्य्यायवाची हैं, और वेदो में इस शब्द की महत्ता का निरूपण यत्र तत्र पाया जाता है।

पाठक वेद वचन पर ध्यान दे—

केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्य्यम पेशसे।

पाप पुण्य

(श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के एक प्रवचन का सार)

ससार में इस बात को प्रत्येक मनुष्य जानता है कि प्रत्येक मनुष्य को दुख और सुख होता है जिसको हम प्रत्यक्ष देखते हैं परन्तु उसके कारणों को जानने वाले बहुत ही थोड़े मनुष्य हैं।

[illegible] के कारण यथार्थ रूप से न जानने से वह सुख प्राप्त नहीं कर सकता और न दुख से पीछा छुड़ा सकता है। यही कारण है कि पूर्ण प्रयत्न करने पर भी समस्त ससार के मनुष्य दुख भोग रहे हैं।

जब हम शास्त्रकारों से दुख का कारण पूछते हैं। तो वे हमें दुख को पाप का फल बताते हैं। और जब हम सुख के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं तो वे उसे पुण्य का फल बताते हैं। मानो दुख और सुख के कारण पाप और पुण्य हैं। ऐसी दशा में हमारा कर्तव्य है कि पाप और पुण्य के स्वरूप को जानें।

गौतम सूत्र के भाष्य मे महात्मा वात्स्यायन ने पाप की यह व्याख्या की है:-

'दोषैः प्रयुक्तः शरीरेण प्रवर्त्तमानो हिंसास्तेय प्रतिषिद्धमैथु[illegible]ना-चरति वाचाऽनृतपरुष सूचना सम्बद्धानि मनसा परद्रोहं पर[illegible] मोगा नास्तिक्यश्चेति सेयं पापात्मिका प्रवृत्तिरधर्माय ॥

अर्थ—राग द्वेष आदिक दोषों में फँस कर देह [illegible]हसा, चोरी और व्यभिचारादि करता है। जिह्वा से मिथ्या भाषण तथा दूसरों की निन्दादि करता है और मन से पराई हानि करने का विचार पराये धन की इच्छा तथा नास्तिकता अर्थात् ईश्वरीय आज्ञा को भंग करना इत्यादि करता है। यह पाप से युक्त प्रवृत्ति अधर्म के लिये होती है।

और पुण्य का यह लक्षण कहा है:—

अथ शुभ शरीरेण दानं परित्राणं परि चरणञ्चवाचा सत्य हितं प्रियंस्वाध्यायञ्चेति ।

मनसा दया मत्सर श्रद्धाञ्चेति सेयं धर्माय ॥

अर्थ—शुभ प्रवृत्ति यह है कि शरीर से दान देना, दूसरे की रक्षा करना तथा दूसरो की सेवा करना। जीभ से सत्य बोलना, दूसरे के हित का उपदेश करना तथा वेद का पढ़ना मन से दया करना लोभ का त्याग तथा श्रद्धा धर्म के लिये होवे हैं।

यद्यपि महात्मा वात्स्यायन के इस लेख से पाप और पुण्य की व्याख्या हो गई परन्तु लक्षण यहाँ से भी नही मिला। अत स्मृतिकारो का यह वाक्य स्पष्ट शब्दो में पाप और पुण्य का लक्षण वर्णन करता है —

वेद प्रतिपादितो धर्मः अधर्मस्तद् विपर्य्यः ॥

अर्थ—जिस काम को वेद ने बताया हो अथवा (वेद शब्द से ज्ञान अर्थ लेकर) जो ज्ञान के अनुकूल हो वह धर्म और जो वेद के प्रतिकूल हो वह अधर्म है। महात्मा जैमिनी ने भी मीमामा दर्शन मे धर्म का ऐमा ही लक्षण किया है।

चोदना लक्षणोर्थो धर्मः ।

अर्थ—जिस कर्त्तव्य मे अर्थात् जिस कार्य के करने मे वेद की आज्ञा है, वही धर्म है और जो धर्म के प्रतिकूल होगा वह अधर्म होगा।

वेद ने मनुष्य को मोक्ष के निमित्त परमात्मा के जानने का उपदेश किया है और उसके लिये जिन साधनो की आवश्यकता है उसे बताया है। सुतराम जो 'म परमात्मा के जानने मे सहायक है वह धर्म अर्थात् पुण्य और जो मरमात्मा के जा.. में रुकावट डालने वाले हैं वे अधर्म अर्थात् पाप है।

 सोचना चाहिए कि हम परमात्मा को किस प्रकार जान सकते है।

परमा. म हमसे दूर नही जिसके लिये चलने की आवश्तकता हो वरन् वह हमारे अत्यन्त निकट अर्थात् हमारे बाहर और भीतर प्रत्येक स्थान पर विद्यमान है। यदि कहो कि हम 'पे जान क्यो नही सकते तो इसका यह उत्तर है कि जिस प्रकार अंजन नेत्रो के बहुत निकट होता है परन्तु नेत्र जो सब पदार्थों को देखते हैं उसे नही देख सकते। इसी प्रकार जीवात्मा सम्पूर्ण पदार्थों को जान सकता है परन्तु अपने अति समीप वर्ती परमात्मा को नही जान सकता और जिस प्रकार उस अंजन को देखने के लिये दर्पण की आवश्यकता है उसी प्रकार परमात्मा के

देखने के लिए भी एक दर्पण की आवश्यकता है और वह दर्पण मन है। परन्तु दर्पण के मलीन होने से स्वरूप का ज्ञान नहीं होता और शुद्ध होने से होता है। इसी प्रकार मन के मलीन होने से परमात्मा का ज्ञान नहीं होता वरन् उसके शुद्ध होने से होता है। सुतराम जो वस्तु मन मे मलीनता उत्पन्न करे उसका संग करना पाप है और जो उसे शुद्ध करे उसका संग करना पुण्य है। चमकीली वस्तुओ की इच्छा मन को मलीन करने वाली होती है जिसके कारण मन शुद्ध नहीं हो सकता।

महात्मा मनु ने मन की शुद्धि का कारण सत्य को माना है जैसा कि उन्होंने लिखा है:—

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।
विद्या तपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥

अर्थ—जल से शरीर पवित्र होता है, सत्य बोलने तथा सत्याचरण से मन शुद्ध होता है।

अब विचारना यह है कि जब सत्य से मन शुद्ध होता है तो हम सत्य से किस प्रकार पृथक् हो गये हैं? क्या हमें यह ज्ञान ही नहीं कि सत्य ही हमारे मन को शुद्ध करने वाला है अथवा और कोई रुकावट है जो हमें सत्य से पृथक रखती है।

चमकीली वस्तुओ की इच्छा जिसका नाम लोभ तथा काम है जिनसे मोह उत्पन्न होता है सत्य से पृथक् करने वाली है। जब तक अहंकार, लोभ तथा मोह रहेंगे तब तक मनुष्य सत्य को नही प्राप्त कर सकता।

इनमे लोभ सबसे प्रबल है। यद्यपि काम के समान मनुष्य का [illegible] कोई नही तथापि इन्द्रियों के शिथिल एव विशेष रोग ग्रस्त हो जाने [illegible] काम की इच्छा जाती रहती है परन्तु लोभ उस समय भी बढ़ता ही [illegible]ता है। अत मनुष्य का सबसे प्रबल शत्रु लोभ है। इसी कारण महात्मा [illegible]नु ने सब शुद्धियों में से अर्थ शुद्धि को ही विशेष उत्तम माना है।

उन्होंने कहा है कि सब प्रकार की शुद्धियों अर्थ शुद्धि अर्थात् लोभ रहित होना विशेष है और परमात्मा ने वेद में भी इस बात का उपदेश किया है। (देखें यजुर्वेद अध्याय ४० का प्रथम मन्त्र) जिसमें दूसरों का धन लेने को वर्जा है।

काम, लोभ और मोह ये तीनों प्राकृतिक पदार्थों के सम्बन्ध से उत्पन्न होते हैं और जिस समय जीव प्राकृतिक पदार्थों से पृथक् होते हैं उस समय इनमे से कोई नही रहता। इससे विदित हुआ कि पाप का मूल प्राकृतिक पदार्थो का संग है। जिस समय मनुष्य की इन्द्रिया जो प्रकृति का कार्य्य होने से प्रकृति के बने हुए पदार्थों को ही देख सकती है अर्थात् जागृत अवस्था मे कार्य करती हैं उसी समय काम, लोभ और मोह उत्पन्न होते हैं और जब सुषुप्ति अवस्था मे जीवात्मा का इनसे सम्बन्ध टूट जाता है अर्थात् वह इन्द्रियो से प्राकृतिक पदार्थो का देखना बन्द कर देता है, उस समय काम, लोभ और मोह लेश मात्र भी उत्पन्न नहीं हो सकते। इससे पता चला कि मन मे मैल प्राकृतिक पदार्थो के सग से आता है। जिस समय जीव प्राकृतिक पदार्थों की इच्छा को दूर करदे तब उस समय उसको किसी प्रकार का कष्ट हो ही नही सकता।

जीव चेतन अर्थात् ज्ञान वाला है वह कभी भी ज्ञान से शून्य नही रह सकता। ऐमी दशा मे यदि वह प्राकृतिक पदार्थो का सग न करे तो क्या करे?

इमका उत्तर यह है कि मन जो प्राकृतिक पदार्थों का सग न करे तो क्या करे? इसका उत्तर यह है कि मन जो प्राकृतिक पदार्थों के प्रतिकूल परमात्मा का सग करता है उसी का सग करे? प्रश्न उठता है कि मनुष्य की इन्द्रिया तो अपने स्वाभाविक काम को नही छोड सकती और इनका सम्बन्ध प्राकृतिक पदार्थों से ही होगा। इसका उत्तर यह है कि यदि आत्मा इन्द्रियोके विषयो को अपने मनमाने वरन् उसको इन्द्रियो का धर्म समझ कर इन्द्रियो की आवश्यकता से हटाकर परोपकार मे लगाये और प्रत्येक समय यही ध्यान रक्खे कि यह परमात्मा की आज्ञा है। अर्थात् संसार मे जो ब्रह्म की शक्ति से नाना प्रकार के देहधारी उत्पन्न होते हैं उनमे प्रेम करने के स्थान मे उनके बनाने वाले की कारीगरी का विचार करता रहे तो ऐसी दशा मे जीव की इन्द्रियो का प्रकृति से सम्बन्ध हानि कारक न होकर लाभकारी होगा क्योंकि चेतन जीवात्मा के संकल्पानुसार ही उस पर प्रभाव पड़ता है।

उदाहरणार्थ एक मनुष्य सिह को इस उद्देश्य से मारता है कि उसका माँस खाय तो ऐसा मनुष्य पाप करता है परन्तु दूसरा जो जीवो की रक्षा के निमित्त मारता है, पुण्य करता है। क्योंकि जो निर्बल पशुओ को बचाने के निमित्त प्रयत्न करता है वह परमात्मा की आज्ञा का पालन, परन्तु जो खाने के लिये मारता है वह प्रकृति की सेवा करता है।

परमात्मा ने जीवात्मा को बुद्धि और विद्या के द्वारा इस बात का उपदेश किया है कि वह दूसरों की रक्षा करे अथवा यों समझो कि बड़ों का सत्कार बराबर वालों से प्रेम तथा छोटों पर दया करना मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य है। जो इसके अनुसार काम करता है वह पुण्य करता है और जो इसके विरुद्ध करता है वह पाप करता है। सबसे बड़ा परमात्मा है। उसकी आज्ञा का पालन करना परम कर्त्तव्य है। तत्पश्चात् माता, पिता, गुरु, राजा इत्यादि तथा देवता अर्थात् विद्वान् लोग जो हम मे किसी न किसी प्रकार की महत्ता रखते हैं उनका आदर करना भी कर्त्तव्य है। जो मनुष्य इस कर्त्तव्य का यथोचित पालन करता है वह पुण्य करता है और जो इसके विरुद्ध करता है वह पाप करता है।

जितने जीव हमसे गुणों मे बराबर हैं उनके साथ प्रेम करना पुण्य है। परन्तु इस विचार से कि यह मेरे बराबर सम्मान प्राप्त कर चुका है कदाचित मुझसे बढ़ जाय उनसे द्वेष करना महान् पाप है। इसी प्रकार निर्बलो के स्वत्वों को भी लेना महा पाप है निर्बलों की सहायता करना पुण्य है। जिस प्रकार का निर्बल हो उसी प्रकार की सहायता से उसकी निर्बलता को दूर करना मनुष्यत्व है। दूसरों को किसी प्रकार की हानि पहुँचाना अथवा पहुँचाने का विचार करना पाप है। जो दूसरों को हानि पहुँचाने में लगा हुआ है वास्तव में वह अपने मन को बिगाड़ रहा है। इसी का नाम मल दोष है। जिसके कारण मनुष्य की विवेचन शक्ति नितान्त मारी जाती है और जो औरों को लाभ पहुँचाने की धुन में मग्न है। वह अपना लाभ कर रहा है अर्थात् उसका मन शुद्ध हो जाता है। प्रत्येक कार्य जो दूसरों के उद्देश्य से किया जाता है, हमारे उपकार का कारण होता है। क्य हमारा मन शुद्ध होकर परमात्मा की उपासना के योग्य हो जाता है। अतः प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है कि औरों को सुख पहुँचाने का ध्यान जिसका नाम पुण्य है और जिसका फल मन की शुद्धि है प्रत्येक समय रखे और दूसरों को हानि के विचार से जो पाप है और जिसका फल दुख है सर्वथा घृणा करे।

आहिंसा और बल-प्रयोग

(ले०—श्री रामानन्द चटर्जी)

—o—

हमारी धारणा है कि जिस प्रकार वन्य पशुओं के आक्रमणो से बचने अथवा उन्हे अपने वश मे लाने के लिये बल का प्रयोग करना होता है इसी प्रकार यदि मनुष्य पशुओ की नांई व्यवहार करे तो उनके अत्याचारो का सामना करने और उन्हे वश मे लाने के लिये बल का प्रयोग होना चाहिए। परन्तु ऐसा जहाँ तक सम्भव हो द्वेष भाव से नही होना चाहिये । आततायी के यत्नो मे विफल होने के पश्चात् उसके साथ न्याय और सहानुभूति का व्यवहार होना चाहिए । तभी 'अहिसा' के पूर्ण आचरण करने का समय आता है।

अहिसा उच्चतम आदर्श है परन्तु बल प्रयोग भो अपना उचित स्थान रखता है। मनुष्य को यह व्यर्थ ही नही दिया गया है। नि सन्देह इसका दुरुपयोग हेय है और निर्दयता पूर्वक इसका अन्त करना चाहिए।

हम पूर्ण अहिंसा वादियो का आदर करते हैं । हमारा भी यह विश्वास है कि क्रोध और घृणा प्रेम और न्याय से जीते जा सकते हैं परन्तु समस्त दशाओ और परिस्थितियो, मे नही । यदि किसी व्यक्ति पर जो पूर्ण अहिसा वादी हो घातक प्रहार हो जाय और वह सामना करन मे समर्थ होने पर भी आनतायी का सामना करने के स्थान मे साहस पूर्वक मरना पसन्द करे तो नि सन्देह उसका यह बहुत ऊँचा आदर्श आचरण है। यद्यपि कायरता अथवा असहायावस्था से प्रेरित होकर भाग जाने की हम किसी भी प्रकार प्रशसा नही कर सकते । अहिसा वादिनी नारी का कर्त्तव्य और आदर्श समस्त अवस्थाओ मे अहिसा-वादी पुरुष जैसा ही है परन्तु इसमे एक अपवाद है। वह अपवाद तब उपस्थित होता है जब उसकी बहुमूल्य सम्पदा को उससे छीनने का यत्न हो। इस अवस्था में आततायी का वध करके भी उस सम्पदा की रक्षा करना नारी का धर्म है । यह नारी का ईश्वर प्रदत्त अतिरिक्त अधिकार है जिसका बहुत सी नारियो ने अपने धर्म की रक्षा के लिए साहस पूर्वक प्रयोग किया है।

जब कोई शक्ति शाली देश सामना करने में समर्थ होने पर भी अहिंसा में पूर्ण विश्वास रखता हुआ सामना न करे तब ही इस सिद्धान्त का मूल्य परखा जा सकता है और तभी यह दावा किया जा सकता है कि अहिंसा के प्रेम के कारण सामना नहीं किया गया है।

महात्मा गाँधी ने ब्रिटिश जनता को हिटलर का मुक़ाबला न करने की जो अपील की थी उसके मूल में हमारा विचार है महात्मा जी की यह भावना कार्य्य कर रही थी कि ब्रिटेन में हिटलर का सामना करने का साहस और क्षमता थी और वह मुक़ाबला न करने की आदर्श स्थिति में था। इसीलिए गाधी जी ने अपनी अपील में ब्रिटेन की भूरि २ प्रशसा की थी।

हमारा विचार है कि महात्मा जी पूर्ण अहिंसा वादी होने के कारण वह अपील करने मे ठीक थे। नैतिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से उनका यह कृत्य उचित था। यदि वे ऐसा न करते तो वे अपने कर्त्तव्य से च्युत होकर अपने उच्च आदर्श से गिर जाते।

इसी प्रकार महात्मा जी तथा उन जैसे पूर्ण अहिंसावादी का यह नैतिक अधिकार है कि वे साधारणतया युद्धों और विशेषत वर्तमान युद्ध के विरुद्ध बोलें। भले ही उन्हे ऐसा करने का कानूनी अधिकार प्राप्त न हो।

यह निश्चित समझना चाहिए कि जो पूर्ण अहिंसा वादी युद्ध के विरुद्ध बोले अथवा लिखे उसे ऐसा करने के कानूनी परिणामों को सहन करने के लिए उद्यत रहना चाहिए। क्योंकि रक्षणात्मक युद्ध प्रयत्नों को करने वाले राज्य का यह नैतिक और कानूनी अधिकार है कि वह युद्ध विरोधी प्रचार का नियन्त्रण ‹ अथवा उसे रोके। वस्तुत ऐसा न करना वह नैतिक और आध्यात्मि‹ आत्म-हनन समझ सकता है।

परन्तु कायरों और ब्रिटेन से घृणा करने वालों को ‹युक्त प्रकार का नैतिक और आध्यात्मिक अधिकार प्राप्त नहीं है कि वे यु‹ ‹रोधी प्रचार कर सकें।

जिनका यह विश्वास है कि आततायियों के ‹द्रवों का सामना करना कर्त्तव्य है उन्हे प्रत्येक प्रकार के युद्ध के प्रयत्नों क‹ बढ़ाने का पूर्ण अधिकार है। परन्तु उनका यह अधिकार नहीं है कि वे अप‹से भिन्न मत वालों को अपनी प्रगतियों में भाग लेने के लिए बाध्य कर सकें।

सुमन संचय

(१)

मातृ-भक्ति

महात्मा लिंकन एक साधारण मजदूर से अमेरिका के राष्ट्रपति के ऊँचे पद पर पहुँचे थे। ऐश्वर्य, सम्मान और चरित्र बल होते हुए भी उनके मुख पर सदैव एक प्रकार की उदासी छाई रहती थी। वे प्राय हँसते थे, मनोविनोद करते थे परन्तु निकट से देखने वालों पर उनकी उदासी प्रगट हो जाया करती थी और उनके लिए वह उदासी एक गूढ़ पहेली बनी हुई थी।

एक दिन वे राजप्रासाद में अकेले बैठे कुछ चिन्तन कर रहे थे। अवसर पाकर बड़े घराने की एक महिला उनके निकट गई। रैत्यिक शिष्टाचार के उपरान्त उस ने कहा —

'राष्ट्रपति। मेरी एक जिज्ञासा है। क्या कृपा पूर्वक आप उसका समाधान करेंगे ?'

राष्ट्रपति ने उत्तर दिया "देवि। आप अपनी जिज्ञासा प्रगट करें।" देवि ने कहा- "महात्मन्। ससार की समस्त विभूतिया आपके चरणों में लोटती हैं। सम्मान और ऐश्वर्य्य से उपलब्ध होने वाला ससार का ऐसा कोई सुख नहीं जो आपको प्राप्त न हो। दास-प्रथा को मिटाकर आप जीवन के उद्देश्य तक भी पहुँच चुके हैं। फिर भी आपके मुख पर उदासी क्यों ? इसका कारण समझ में नहीं आता।"

यह सुनकर महात्मा लिंकन ने गहरा श्वास लिया। उनके नेत्रों में आंसू आ गए। रुँधे हुए कण्ठ से कहा "देवि। यदि आप यह प्रश्न न करतीं तो अच्छा होता। जब मैं छोटा था तब ही मातृ-स्नेह से वचित हो गया था। मेरी माता बड़ी साध्वी और धर्म्म परायणा महिला थी। उनके चरणों में बैठकर मैंने यह

सीखा था कि पहिले दूसरों का विचार करो और बाद में अपना ख्याल करो। मेरे जीवन में जो कुछ अच्छापन देख पड़ता है उसका एक मात्र श्रेय मेरी माता को है। ऐसी अच्छी माता के बचपन में ही वियोग हो जाने से मैं उसी समय से दुखी रहा हूँ और मेरा यह दुःख जीवन के साथ समाप्त होगा। देवि ! तुम नहीं जानती कि अमेरिका में मैं सब से अधिक सुखी व्यक्ति समझा जाता हूँ परन्तु अमेरिका में मुझ सा दुखी व्यक्ति कोई न होगा' " यह कहते कहते महात्मा लिंकन का गला भर आया और वे आगे कुछ न कह सके। यह उत्तर सुनकर वह महिला चुप हो गई और महात्मा लिंकन की मातृ-भक्ति की मन ही मन प्रशंसा करती हुई उन से विदा हुई।

(२)

कर्त्तव्य-पालन

एक बार जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे ने एक गँभीर मुकदमे का फैसला लिखकर एक लड़के को जो उनके यहा रहता था डाक में छोड़ने के लिये दिया। उस फैसले के साथ उनके साथी मि० जस्टिस पारसन्स का भी फैसला था। थोड़ी देर में उस लड़के ने आकर रानाडे से कहा कि डाकखाने पहुँचने से पहले ही वह पैकेट रास्ते में गिर गया। वे दोनों फैसले पूना के एक खून के मुकदमे के थे। कहीं खूनियों के किसी सहायक वा मित्र ने लड़के को लालच देकर अथवा बहकाकर उस से फैसला ले लिया क्योंकि उस के खो जाने की खबर आप से आप पूना में पहले ही पहुँच गई थी। इसकी चर्चा सर्वत्र फैल गई और मि० रानाडे तथा जस्टिस पारसन्स को दूसरा फैसला लिखना पड़ा। जब यह खबर रानाडे के वालों और मित्रों को मिली तो वे उस लड़के पर आग बबूला हो गए और उस लड़के को पुलिस के हवाले कर देने का रानाडे से आग्रह करने लगे। तीन चार दिन पर्य्यन्त रानाडे चुप रहे और सब के व्यङ्ग और क...द सुनते रहे। रानाडे ने उस लड़के को सिवाय झिड़कने के और कुछ नहीं किया। इस पर उन का आवेश और बढ़ गया। अन्त में उनके एक पर अन्तरङ्ग मित्र ने कहा 'रानाडे! इस बदमाश लड़के को आप क्यों मुँह लग . हैं? इस ने तो आप के घर में ही आग लगादी है फिर आप चुप क्यों बैठे हो?'

इस पर रानाडे ने एक गहरी श्वास ली। उनके नेत्रों में आसू आ गए और कहा "मित्र! इस लड़के के पिता ने इसे मेरे सुपुर्द उस समय किया था जब वह

मृत्यु-शय्या पर पड़ा था। मैंने उसके पिता को उस समय वचन दिया था कि मैं इस के संरक्षक का कार्य्य करूंगा। इसलिए इसे घर से निकालकर मैं अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं कर सकता।'

रानाडे की यह बातें वह लड़का छुपा हुआ सुन रहा था। उनकी इस सहृदयता को देखकर वह फूट २ कर रोने लगा। रानाडे ने उसे छाती से लगाकर सान्त्वना दी और अन्त समय तक अपने पास रखकर उसका पालन पोषण किया तथा उसे सुयोग्य बनाया।

(३)

मानवता का आदर

नैपोलियन बोना पार्ट विजित राजाओं से राज-भक्ति का आश्वासन लेकर उनका राज्य प्राय वापस कर दिया करता था। एक बार यूरोप का एक विजित राजा नैपोलियन के शत्रुओं से जा मिला और विद्रोह कर दिया। उस राजा के इस व्यवहार पर नैपोलियन को बड़ा क्रोध आया और विश्वासघात का दण्ड देने के निमित्त उसकी राजधानी पर आक्रमण कर दिया। उस राजधानी के नर-नारी नैपोलियन के बल-वीर्य्य और रोष से परिचित थे। उसकी विशाल सेना को देखकर वे भयभीत हो गए और इधर उधर छुपने लगे। राजा भी भयभीत होकर राज-परिवार के साथ किसी अज्ञात स्थान को भाग गया और अपने एक बीमार राज कुमार को राजमहल में छोड़ गया। राजा के भाग जाने का समाचार जब नैपोलियन को मिला तो उसने राजमहल को तोपों से उड़ा देने आज्ञा दे दी। धड़ाधड़ तोपों के गोले दगने लगे। अपने प्राणों की रक्षा के लिए [illegible]मार राजकुमार इधर उधर भागने लगा। राजमहल के सब द्वार बन्द पाकर उसे [illegible]वन की आशा जाती रही और वह चारपाई पर जा पड़ा। इसी बीच में नैपोलियन को [illegible]ता लगा कि राजकुमार असहावस्था में महल के भीतर बन्द पड़ा हुआ है। उसने तत्का[illegible] सेना को आक्रमण रोकने की आज्ञा दी। नैपोलियन की इस आज्ञा से सेनापति [illegible] [illegible]हुत आश्चर्य और रोष हुआ। वह दौड़ा हुआ नैपोलियन के शिविर में गया [illegible] अभिवादन करके कहा—"महावीर आपने यह ठीक नहीं किया। इससे सेना का उ[illegible]ाह भंग होता है। क्षमा करें। आपके इस कृत्य से सैनिक विधान का अपमान होता है।

नैपोलियन ने कहा 'सेनापति। मै सैनिक विधान का अपमान कर सकता

हूं परन्तु मानवता का अपमान नहीं सह सकता । असहायों पर वीरता दिखलाना वीरों का काम नहीं है ।"

(४)

संसार का प्रवाह

एकदीन मनुष्य किसी धनी के पास गया और कुछ मागा । धनी मनुष्य ने देने के नाम नौकर से धक्के दिलवा कर उसे बाहर निकलवा दिया । कुछ काल उपरान्त समय पलटा । धनी का धन नष्ट हो गया । सारा कारोबार बिगड गया । खाने तक का ठिकाना न रहा । नौकर चाकर छोड भागे । उसका नौकर एक ऐसे सज्जन के हाथ पडा जिसे किसी दीन को देखकर वही प्रसन्नता होती थी जो दरिद्र को धन से होती थी । एक दिन रात को इस धर्म्मात्मा के द्वार पर किसी फ़कीर ने आकर भोजन मागा । उसने नौकर को कहा उसे भोजन दे दो । नौकर जब भोजन देकर लौटा तो उसके नेत्रों में आसू बह रहे थे । स्वामी ने पूछा 'क्यों रोता है ?' बोला, 'इस साधु को देखकर मुझे बड़ा दुख हुआ । किसी समय मैं उसका सेवक था । उसके पास धन-धरती सब था । आज उसकी यह दशा है कि भीख मागता फिरता है ।' स्वामी सुनकर हँसा और बोला । ससार का यही प्रवाह है मैं भी वही दीन मनुष्य हूँ जिसे इसने तुमसे धक्के दिलवाकर बाहर निकलवा दिया था ।'

(५)

मार्मिक शिक्षा

महात्मा शेख सादी के जीवन में व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर लि॰ हुई कई शिक्षाप्रद घटनाएँ उपलब्ध होती हैं । एक घटना महात्मा के श॰ . में इस प्रकार है —

'एक बार हाजियों के काफले में फूट पड़ गई । मैं भी साथ॰ हो यात्रा कर रहा था । हमने खूब लड़ाई की । एक ऊँट वाले ने हमारी य॰ दशा देखकर अपने साथी से कहा ' खेद की बात है शतरज के प्यादे तो ज॰ मैदान पार कर लेते हैं वज़ीर बन जाते हैं मगर हाजी प्यादे ज्यों २ ब॰ . बढ़ते हैं पहले से भी खराब होते जाते हैं । इनसे कहो तुम क्या हज करो॰ । जो यों एक दूसरे को काटे खाते हो । हाजी तो तुम्हारे ऊँट हैं जो काटे खाते हैं और बोझ उठाते हैं ।"

—रघुनाथप्रसाद पाठक

समाज-प्रेम

श्री पं० पूर्णानन्द जी

पण्डित जी का जन्म स्थान हैदराबाद सिंध था। वहा की दीवान बिरादरी में आपने जन्म लिया और छोटी आयु में आप सन्यासी हो गये। संन्यासी होकर आप पढ़ने के लिये बनारस गये। उस समय आप आर्य्य समाज के विरोधी दल के नेता थे। वहा आपको एक बार विसूचिका (हैजा) ने आ पकडा। उस समय आपकी एक सन्यासीने बडी सेवा की। जब आप अच्छे हो गये तो उनके कहने से एक बार उनके साथ आर्य समाज में पहुँच गये। आपके जाने का जब और साधुओं को पता लगा तो यह चर्चा हो गई कि पूर्णानन्द जी आर्य समाजी हो गये हैं। पूछने पर आपने उत्तर दिया, मै आर्य समाज के सत्सङ्ग में तो गया था परन्तु मैं आर्य समाजी नही हुआ। भला वह यह कब मानते थे जब फिर आपसे पूछा गया तो आपने उत्तर दिया, हा हो गया हूँ यह है आर्य समाजी बनने की कथा।

बनारस में विद्या समाप्त करके आप पञ्जाब में स्वामी पूर्णानन्द जी के नाम से प्रचार करने आये और कई साल तक प्रचार करते रहे। पुराने आर्य समाजियों ने उनको इस स्वामी रूप में ही देखा था। काम करते समय आपको सिन्ध मे भी जाना पड़ा क्योंकि उस समय सिन्ध और बिलोचिस्तान का प्रचार भी आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब द्वारा ही होता था। वहा जाने पर पुराने सम्बन्धी भी मिल गये, उन्होंने अपना काम [illegible]ना था और किया। जिसका फल यह हुआ कि स्वामी पूर्णानन्द जो पण्डित पूर्णानन्द जी बन गये और सिन्ध में हो आपने विवाह कर लिया और पञ्जाब सभा में [illegible] अन्त समय तक उपदेशक रहे।

एक बार आप आर्य समाज के उत्सव पर गये हुए थे। तब आपको घर से तार मिला कि आपका पुत्र रोगी है आप शीघ्र आइये। उधर आर्य समाज में

शास्त्रार्थ की बातचीत हो रही थी आपने उत्तर दे दिया कि उत्सव के पश्चात् आ जाऊँगा। अब शास्त्रार्थ का समय आ गया, आप शास्त्रार्थ में लगे हुए थे, जब तार मिला कि आपके पुत्र का देहान्त हो गया है, आपको मन्त्री जी ने शास्त्रार्थ समाप्त होते ही वह तार सुनाया, तब आपने घर तार भेज दिया और पत्र लिख दिया, जो होना था हो गया अब मैं अगले प्रोग्राम पर जा रहा हूँ मेरे आने की अब आवश्यकता नहीं है और अगले प्रोग्राम पर चले गये।

अन्त समय में जब आप रोग शय्या पर पड़े थे तो लेखक, महाशय कृष्ण जी, प० ठाकुरदत्त जी आदि बटाला में उनसे मिलने गये। जिस समय हम वहा गये और बातचीत हुई तो उन्होंने कहा आप दैवयोग से आ गये हैं, मेरी वसीयत भी लिख लें।

आपने जो वसीयत लिखवाई उसका भाव यह था, मेरी धर्मपत्नी को व्ययार्थ प्रतिमास धन दिया जाय, मेरी कन्या को कन्या महाविद्यालय में जालधर पढ़ाया जाय और उचित समय पर विवाह किया जाय, यदि मेरा जामाता और मेरी लड़की वेद प्रचार का काम करें तो इनको मेरे धन से कुछ धन भी दिया जाय, यदि वह वेद प्रचार के अतिरिक्त जीविकार्थ और काम करें तो सभा उचित समझे तो कुछ देदे वा न दे। और जो धन यह व्यय करके शेष रहे वह सब आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब, वेद प्रचार में व्यय करे।

पाठक इन दोनों बातों पर ध्यान दें।

(१) पुत्र रोगी है, आप उत्सव नहीं छोड़ते। पुत्र की मृत्यु होती है, आप वेद प्रचार के प्रोग्राम पर चल देते हैं, अपनी धर्मपत्नी के पास आना भी (प्रचार की दृष्टि से हेय मानते हैं।

(२) गृहस्थी में जो धन व्यय हो गया उसके पीछे जो शेष रहा उसमे से कन्या की पढ़ाई और विवाह तथा धर्मपत्नी की जीविका पर कुछ व्यय करके शेष सब वेद प्रचार के लिये देते हैं।

यह दोनों बातें उनके वेद प्रचार के प्रेम की द्योतक है।

डा० चिरंजीव जी भरद्वाज

आपके पिता ग्राम चौरासी जिला जालन्धर के रहने वाले थे, और अध्यापक थे। उनको अध्यापक कार्य पर श्री गोविन्दपुर जिला गुरदासपुर में दीर्घकाल

तक काम करना पड़ा। इसलिये डाक्टर जी की आयु का प्रथम भाग गोबिन्दपुर में व्यतीत हुआ।

आप जब कालेज में पढ़नेके लिये लाहौर आये तो आर्यसमाज में व्याख्यान सुनने गए। महामहोपाध्याय पं० आर्य मुनि जी का व्याख्यान था। डाक्टर जी कहा करतेथे कि उस व्याख्यान में कुछ भी न समझा क्योंकि महामहोपाध्याय जी हिन्दी बोलते थे और डा० जी उस समय हिन्दी न जानते थे।

उसके पीछे डाक्टर जी ने अष्टाध्यायी पढ़नी आरम्भ की और उसके अच्छे ज्ञाता बनें।

लाहौर में डाक्टरी पढ़कर आप बड़ौदा में डाक्टरी कार्य पर नियुक्त हुए और आपको प्लेग ड्यूटीपर लगाया गया। उस समय वहा प्रथा थी ढेढ़ (अछूत)जब रेल से उतरते तो फाटक पर आकर खड़े रहते जब लोग टिकट देकर चले जाते तो यह बाबू को दिखाकर अपना टिकट भूमि पर रख देते और बाहर निकल जाते। डा० जी ने उनको छूकर जब देखना आरम्भ किया तो हल्ला मच गया कि डाक्टर जी ढेढ़ों को छूते हैं इस पर डाक्टर जी अड़ गये और कहा कि मैं ऐसा ही करूंगा और दलितोद्धार का काम आरम्भ किया गया। वहा भी जनगणना आई और वह लोग अपने आप को आर्य लिखवाते थे परन्तु जन गणना के लेखक देवता न लिखते थे और जब बल दिया गया तो उन्होंने आर्य (ढेड) लिखना आरम्भ किया तब न्यायालय में अभियोग चलाया गया वहां वह यही कहते थे कि यह ढेड है इसलिये हम लिखते हैं डाक्टर जी का पक्ष था यदि यह ईसाई हो जायँ वा मुहम्मदी हो जायँ तो आप ईसाई (ढेड) वा मुसलमान (ढेड) लिखेंगे वा नहीं कहते थे तब तो ईसाई मुसलमान ही लिखेंगे तब डाक्टर जी ने कहा अब भी आर्य लिखो साथ ढेड क्यों लिखते हो। अत में न्यायालय में फैसला हो गया कि इनको आर्य ही लिखा जाय। ढेड शब्द उड़ा दिया जाय। वहा से आप नौकरी छोड़ कर इंगलैंड गये। वहा डाक्टरी पढ़ते समय आपने सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजी में अनुवाद किया। इंगलैंड से लौटकर आप पंजाब में आकर लाहौर में काम करने लगे। उस समय आप आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री भी बनें। हिन्दी में पत्र व्यवहार और कार्यालय का काम तथा बोधोत्सव, निर्वाणोत्सवादि नाम, यह उनके समय के ही काम हैं।

लाहौर से आप रंगून चले गए। वहा पर श्री मणिलालजी कोठारी की प्रेरणा

से मौरिशस द्वीप में गये। जिस समय आप वहां गये और डाक्टरी का कार्यारम्भ किया तो आपकी आय१५००-३००० मासिक थी। आपने आर्यसमाज मन्दिरमें जाना आरम्भ किया। उस समय पोर्टलुईस में केवल नाममात्र का समाज था आप उसमें जाने लगे और उपदेश देने लगे। तब वहा के लोगोंने इनसे कहा आप ऐसा न करें। आपने उत्तर दिया कि सब लोग अपने मन्दिरों में जबजाते हैं तो आप मुझे क्यों रोकते हैं। उसके पीछे इनकी सेवामें उनकी पंचायत आई और कहा आप आर्यसमाज मन्दिर में न जायँ आपने ऊपर लिखित ही उत्तर दिया। तब उन्होंने कहा अच्छा आप जायँ परन्तु वहा जाकर उपदेश न दें आपने यह भी न माना तब वहा डाक्टर जी का बहिष्कार किया गया और पूर्ण रूप से बहिष्कार हुआ और इनकी दूकान पर पहरा भी लगाया गया। जिसका परिणाम यह हुआ कि आपका डाक्टरी काम चौपट हो गया। तब आपने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती सुमगली जी को साथ लेकर प्रचार कार्यारम्भ किया। आप द्वीप में आर्यसमाज का प्रचार करते थे और अपने मकान पर युवकों को पढ़ाते थे और सुमगली जी कन्याओं को पढ़ाती थीं। इस प्रकार आपने सारा समय प्रचार में लगाकर मौरिशस में ३० आर्य समाजें और परोपकारिणी सभा बनाई।

आप जब लाहौर में काम करते थे उस समय रविवार को प्रातःकाल दुकान पर नहीं जाते थे। आर्यसमाज के सत्संगों में आया करते थे।

ऊपर लिखित घटनाओं से आपका आर्यसमाज के साथ जो प्रेम था उसका पूरा २ पता मिल जाता है जिससे हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये।

—स्वतन्त्रानन्द

बिहार के आदि वासियों का धर्म और जन गणना

(ले०—श्री बा० कालिका प्रसाद जी)

—-o—-

आने वाली जनगणना के सम्बन्ध में छोटा नागपुर में एक बड़ा विवाद उठ खड़ा हुआ है जैसा कि विविध सार्वजनिक जल्सों की रिपोर्टों तथा संस्थाओं और व्यक्तियों के अखबारों में प्रकाशित लेखों से ज्ञात होता है। छोटा नागपुर की जगली कही जाने वाली जातिया अपने आपको 'धर्म्म विहीन' लिखा जाना सहन नहीं करतीं और वे अपना धर्म स्वय बतलाने और जो वे बतलाएँ वही शुमार कुनिन्दों द्वारा लिखे जाने का अधिकार चाहती हैं।

यह साधारण सी बात देख पड़ती है। परन्तु अधिकारियों ने इन जगली जातियों के धर्म्म के लिखे जाने के सम्बन्ध में ऐसी आज्ञाएँ प्रचारित करदी हैं जिनसे मामला पेचीदा हो गया है और विरोध उठ खड़ा हुआ है। उन आज्ञाओं के अनुसार आदि वासियों को छोड़कर अन्य सब आदमियों से यह प्रश्न किया जायगा कि 'तुम्हारा धर्म्म क्या है ?' और इस प्रश्न के उत्तर के अनुसार व्यक्तियों का धर्म्म नोट किया जायगा। आदि वासियों के सम्बन्ध में शुमार कुनिन्दों को एक भिन्न रीति का अवलम्बन करने की प्रेरणा की गई है। सबसे पहले शुमार कुनिन्दे पर यह निश्चय छोड़ दिया गया है कि कोई व्यक्ति आदि वासी, उराव, मुडा, खासिया इत्यादि इनमें से कोई है वा नहीं। यदि उसकी सम्मति में कोई व्यक्ति इनमें से कोई हो तो दूसरा प्रश्न वह यह करेगा कि 'क्या तुम सरहुल त्यौहार मनाते हो ?' मुडा, उराव वा खासिया से ही यह प्रश्न किया जायेगा। यदि उत्तर नकरात्मक मिले तो उसका धर्म्म निश्चित करने के लिये वह अन्य कई प्रश्न करेगा। यदि स्वोकारात्मक उत्तर मिलेगा तो उसकी जाति के अनुसार उसका 'धर्म' अंकित किया जायेगा। अर्थात् मुण्डा के लिए मुण्डा धर्म्म। उराव के लिए उराँव धर्म्म इत्यादि २। दूसरे शब्दोंमें वे 'धर्म-विहीन' अथवा कबीले वाली जातिया लिखी जायेंगी। उरोव मुण्डा और खासिया लोग बड़े सीधे सादे होते हैं और छोटा नागपुर की दूसरी जातियां न्यूनाधिक रूप में

अधिक उन्नत हैं । दूसरी जातियों से तो उनके धर्म्म के सम्बन्ध में सीधा सादा एक प्रश्न किया जायगा । परन्तु आदि वासियों से कई प्रश्न किए जायेंगे । यह बिलकुल अनुचित प्रतीत होता है । अधिक पिछड़ी हुई जाति का धर्म्म मालूम करने के लिए अधिक पेचीदा मार्ग का आश्रय लिया जाय यह समझ में नहीं आया । आदि वासियों से यह प्रश्न सीधे क्यों नहीं किया जाता 'तुम्हारा धर्म्म क्या है ? जैसा कि समस्त देश में सब मनुष्यों के धर्म्म के निरूपण के सम्बन्ध में किया जाता है ।

सरहुल त्यौहार

सरहुल त्यौहार के मनाने से आदि वासी अहिन्दू बन जाता है । यह निश्चय क्यों किया गया यह भी समझ मे नहीं आता । साधारणतया प्रत्येक व्यक्ति का कोई न कोई धर्म्म होता है । किसी व्यक्ति का कोई धर्म्म नहीं है, यह मान लेना अस्वाभाविक है । यह बात अपवाद हो सकती है परन्तु पहली बात तो नियम ही है । अत पूछने का स्वाभाविक ढग यह है 'तुम्हारा धर्म्म क्या है ?' और जैसा वह बताये वैसा ही लिखना चाहिए ।

हाईकोर्ट की सम्मति

यदि आदि वासियों के धर्म के विषय मे प्रसिद्ध प्रमाणों को देखें तो विदित होगा कि आदि वासी किसी धर्म के अनुगामी हैं जो संसार के तीन बड़े धर्मों अर्थात् हिन्दू, मुसलमानी और ईसाई धर्मों में से सुगमता से हिन्दू धर्म में रखे जा सकते हैं । रायबहादुर शरतचन्द्रराय अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में लिखते हैं कि मुण्डा लोगों का महाप्रभु परमात्मा मे विश्वास है और वे जीवात्मा के आवागमन मानते हैं । उनके बहुत से रीति-रिवाज और धार्मिक और सामाजिक [illegible]धान हिन्दुओं जैसे हैं । पाप भाग के जो नियम हिन्दुओं पर लगते हैं [illegible] उन पर लगते हैं । हाई कोर्ट ने कई मामलों में यह माना है कि मुण्डा [illegible]ग अथवा जो अपने को हिन्दू कहते या हिन्दुओं की प्रथाओं और रीति [illegible]वहार को मानते है वे हिन्दू हैं । यदि इन प्रामाणिक वक्तव्यों में कोई प्रभाव [illegible] तो आदि वासियों को कबीले अथवा 'धर्म्म-विहीन' वालों में रखने का [illegible]न होता । परन्तु प्रत्यक्षतः उनकी अवहेलना होती प्रतीत होती है और इसी [illegible]ये जन गणना की कठिनाइयां उपस्थित होती हैं और इसी कारण से आदि वा[illegible]सियों के धर्म को ठीक २ रीति से अंकित किये जाने का आयोजन होता है ।

गत जन गणनाओं के अकों को देखने से प्रगट होगा कि १६११ में ७३४३ तथा १६३१ में १६३७६४ उरांव लोग हिन्दू अकित किये गए थे। इसी प्रकार १६११ में ५६७२० तथा १६३१ में ११०५५६ मुण्डा लोग हिन्दू अकित किये गये थे। ये सब अब भी सरहुल पर्व्व मनाते हैं। जिस ढग से वर्तमान में सरहुल मनाया जाता है उसके अनुसार तो वे धर्म्म-विहीन ही लिखे जा सकते हैं। परन्तु यह सरासर अन्याय होगा। यदि इस पर्व्व के मनाने के ढग पर ही बल दिया गया तो मुण्डा, उराव तथा अन्य आदि वासियों में से एक भी व्यक्ति हिन्दू नहीं लिखा जा सकता।

जन गणना के उपर्युक्त आकड़ों को दृष्टि में रखते हुए, इसके बड़े विनाशक परिणाम होंगे और अवस्थाओं को ठीक ठीक रूप में अकित करने का जनगणना का जो मुख्य उद्देश्य है वह विफल हो जायगा।

गणना में निष्पक्षता स्थिर रखने तथा लोगों के धर्म को ठीक ठीक अकित किए जाने के लिए यह आवश्यक है कि गणकों के लिए जो निर्देश प्रकाशित हुए हैं उनमें सशोधन किया जाय जिससे प्रत्येक व्यक्ति को इच्छानुसार अपना धर्म लिखाने का उचित अवसर मिले।

यह इस प्रकार हो सकता है कि गणकों को सीधे यह पूछने की आज्ञा होनी चाहिए कि वह लोगों का धर्म मालूम करने के लिए सीधे यह प्रश्न करें "तुम्हारा धर्म क्या है ?" और जो वे बतायें वही उन्हें लिखना चाहिए। किसी आदि वासी का कोई विशेष धर्म है या नहीं यह निश्चय करने के लिए घुमा ..र कर प्रश्न करने की रीति का परित्याग करना चाहिए। वर्तमान निर्देशों को अक्षर.. पढ़ने से पहले से ही यह आभास हो जाता है कि आदि वासियों का कोई धर्म नहीं है इस आभास को दूर करना चाहिए। आदि वासियों का धर्म जानने के लिए प्रश्नु की झड़ी लगाकर भ्रम में नहीं डालना चाहिये। निर्देशों में इस सुधार के हो जा.. से न तो हिन्दुओं की हानि होगी न किसी अन्य जाति के हितों की हानि होगी अं.. र विरोध का बवंडर ही उठेगा जो इस समय उठा हुआ है।

संथालों को हिन्दुओं से अलग करने की चाल

(स्वामी शिवानन्द तीर्थ उपप्रधान आर्य उप प्रतिनिधि सभा भागलपुर कमिश्नरी)

देहाती सुपरवाइजरों के हिदायतनामा में मानभूम, सन्थाल परगना, बाका जमुई आदि स्थानों में रहने वाले सन्थालों के प्रति सुपरवाइजरों के लिये हिदायत है कि जो सन्थाल बाहापर्व मनाता हो उसकी जात और धर्म सन्थाल ही लिखा जाय, उससे दूसरे प्रश्न पूछने की जरूरत नहीं। बाहापर्व की अस्वीकारी की दशा में उससे पुन: पूछा जाय, यदि उत्तर में दिवाली बतावे तो हिन्दू, क्रिसमस के बताने पर ईसाई और बकरीद बताने पर मुसलमान, अन्यथा लामजहब के खाने में डाल दिया जाय। इस सेन्सस् में बाहापर्व का सहारा लेकर सन्थालों को हिन्दुओं से अलग करने की एक चाल चली गई है। ऐसा कोई भी हिन्दू सन्थाल नहीं है जो बाहापर्व नहीं मनाता हो, बाहापर्व आर्य (हिन्दू) पर्व होलिका (होली) का ही सन्थाली भाषा मे नाम है। यह पर्व वसन्त ऋतु में मनाया जाता है। वसन्त ऋतु का एक नाम सस्कृत साहित्य में कुसुमाकर भी है, जैसे गीता में लिखा है "ऋतूना कुसुमाकर"। इस कुसुमाकर (कुसुम के खानेवाली) ऋतु में मनाये जाने के कारण कुसुम (फूल) के नाम पर इस पर्व का सन्थाली भाषा में बाहापर्व नाम पड़ गया, क्योंकि सन्थाली भाषा में फूल (कुसुम) को बाहा कहते हैं। आर्य (हिन्दू) लोग इसी पर्व को होलिका कहते हैं क्योंकि वसन्त ऋ . खेतों में लगे हुए अन्न गोधूम, यव, चना आदि अन्न अधपके हो जाते . और अधपके अन्न को सस्कृत भाषा मे होलिका (होली) कहते हैं "अर्धपक्व न होलिका" इस अधपके अन्न वाली वसन्त ऋतु में मनाये जाने के कारण हो.लका के नाम से प्रसिद्ध हो गया, इसलिये होली और बाहापर्व भिन्न न हैं। एक ही पर्व का भाषा भेद और कारण भेद से दो नाम पड़ गये हैं दोनों में अग्निहोत्र का विकृत रूप सवत् स्वरूप काष्ठादि जलाया जाता है। .चना, गाना, बजाना दोनों जातियों में होता है। दोनों में परस्पर एक दूसरे र सादा या रङ्गीन जल गुलाल आदि छिड़कते हैं। इस पर्व को अपनी सुविधा के अनुसार वसन्त ऋतु में किसी दिन भी मना सकते हैं, ऐसा धार्मिक ग्रन्थों का आदेश है। सन्थाल लोग ऐसा

ही करते हैं। बाहापर्व के अलावा सन्थाल लोग दिवाली (सोहराम), बिजया-दशमी (दशाई), नेमान (जान्थाड़), मकर सक्रान्त (बधना) आदि पर्व को भी मनाते हैं। आर्य (हिन्दू) की पहचान पर्व के अतिरिक्त सिर पर चोटी रखना, मुर्दा जलाना, गोत्र (परिस्) अर्थात् भाई और बहिन में शादी न करना आदि की पहचान है जो सन्थाल लोगों में जैसे के तैसे बने हुए हैं। यहा तक कि ईसाई बनने पर भी परिस में शादी नहीं करते, वहा पर भी हिन्दू आर्य सस्कार बने ही रहते हैं। अत सेन्सस के उक्त अधिकारी से अनुरोध है कि उक्त हिदायत को रद्द कर दें और प्रत्येक शिखा सूत्र धारी का कर्तव्य है कि इसके लिये घोर आन्दोलन करें, जिससे ये सन्थाल आदि लोग इस सेन्सस् में आर्य (हिन्दुओं) से अलग न किये जायें।

कृतज्ञताप्रकाश

आर्य्य उप-प्रतिनिधि सभा भागलपुर कमिश्नरी के प्रयत्न से तीन सन्थाल बालकों को श्री स्वामी त्यागानन्द जी सरस्वती कुलपति गुरुकुल अयोध्या ने अपने आश्रम में लेकर इस दीन जाति पर अतीव उपकार किया है जिसके लिये यह सभा धन्यवाद देती है तथा कृतज्ञता प्रकाश करती है एव आशा करती है कि अन्य आर्य संस्थायें उक्त गुरुकुल के इस आदर्श को अपनाकर इस ग़रीब जाति पर उपकार करेंगी।

सन्थाल परगने के सन्थालों में तथा अन्यत्र प्रचार

मैं लगातार अगस्त, सेप्टेम्बर और अक्टूबर के १० तारीख तक लखपुरा ... गाल गुरु ट्रेनिङ्ग स्कूल, केरैयाहाट, रघुनाथपुर, पिठडरा, घाघरा बाध, बधमारा, गोबि... र, डले, देवदाड़, इसडीहा, मडरडीह, मधुबन, सरैया हाट, नोनी हाट, लकड़ा पह... री, मधुसूदन, दुमका, शिवपहाड़ी, कुरैया, काठीकुण्ड, दुधिया गाव, आसनबनी, आ...पहाड़ी, शिवतला, गन्धर्वनगर, बडतल्ला, कुसुम्भा, मोहनपुर, कन्हाई डीह, भलकी, ...फकटा, धनिया पहाडी, टेशपरता, सलदाहा, लीलाही, यमुनिया, आमटोला, गा... पानी, गोपी कन्दरा, रागा, छाता चुआ, कोस चीरा, आमरा पाड़ा, पाकर कोला, भट्टी पाड़ा, हिरण्यपुर, कोटाल पोखर, पाकुड़ बडहरवा केशरो, तालझारी हाट, इन स्थानों में जनगणना सम्बन्धी प्रचार किया। अनेक सभाओं में सन्थालों ने अपने को आर्य सन्थाल लिखाने का प्रस्ताव पास किया।

तथा इक हिदायत का विरोध किया जिस में बाह्यपर्व के द्वारा (हिन्दुओं) आर्यों से अलग करने की चाल चली गई है। इसके बाद सन्थाल बालकों को गुरुकुल अयोध्या पहुँचाने के लिये जाते हुए जाने आने के मार्ग, आरा, दिलदार नगर, बनारस, फैजाबाद, गया, आदि स्थानों में जनगणना सम्बन्धी तथा सन्थालों के परिचय के सम्बन्ध में भाषण दिया और उन स्थानों में सन्थाली साहित्य भी बांटा।

हिन्दू-मुस्लिम एकता की उत्तरदायिता सरकार पर

[लेखक—श्री प० रामगोपाल जी विद्यालंकार सम्पादक 'वीर अर्जुन']

लाहौर में पाकिस्तान विरोधी कान्फ्रेंस का सभापतित्व करते हुए श्री लोक नायक माधव श्री हरि अणे ने हिन्दू-मुस्लिम एकता के विषय में कुछेक ऐसे महत्व-पूर्ण विचार प्रकट किये हैं कि उनकी ओर सब पाठकों का ध्यान दिलाना हमें आवश्यक जान पड़ता है। श्री अणे ने यह मानते हुए भी कि हिन्दू मुस्लिम एकता की उत्तरदायिता हिन्दू और मुस्लिम जनता के प्रतिनिधियों पर ही है बतलाया कि देश के शासक भी उस जिम्मेवारी से बच नहीं सकते। जिस प्रकार देश में कानून और अमन-अमान का इन्तजाम करने की जिम्मेवारी सरकार पर है उसी प्रकार यहा की प्रमुख जातियों और सम्प्रदायों में एकता के अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने की भी जिम्मेवारी उस पर है।

श्री अणे ने सरकार पर आक्षेप किया है कि इस जिम्मेवारी को ब्रिटिश शासकों ने न केवल नहीं निवाहा, बल्कि "कभी कभी उन्होंने जान बूझ कर ऐसे बढ़ावे दिये, जिनसे पृथक रहने की मनोवृत्ति बढ़ती गई" और उसी का परिणाम भारत को दो टुकड़ों में काट डालने की वह माग है जो आज पेश की जा रही है।

हम यहा श्री अणे की दूसरी बात की विशेष चर्चा न करके, पहली बात के विषय में कुछ विस्तार से लिखेंगे और बतलायेंगे कि सरकार हिन्दू मुस्लिम एकता मामले में उदासीन अथवा तटस्थ रहने की नीति पर चलकर चुप रहने के बजाय कुछ विशेष अवसरों पर एकता की बाधक लहरों को रोकने मात्रका काम करती रहती तो वह इ. देशका कितना अधिक कल्याण कर सकती थी। सबसे पहले पाकिस्तान के आन्दोलन ने ही लीजिये यह निर्विवाद है कि जब तक इस देश पर ब्रिटिश शासन रहेगा तब त. ब्रिटिश शासक अपनी ही शासन सुविधाओं की दृष्टि से इस देश को दो टुक. ों बाट देना पसन्द नहीं करेंगे। यह भी प्रत्यक्ष है कि पाकिस्तान आन्दोलन। इने के पश्चात् इस देश में साम्प्रदायिक कटुता का प्रसार बहुत तीव्रतथा व्यापक ो गया है। इस आन्दोलन के विरोधियों ने कई बार शासकों से स्पष्टता पूर्वक पाकिस्तान के बारे में अपनी नीति प्रकट कर देने का अनुरोध किया परन्तु वे अब तक जान बूझ कर चुप्पी साधे हुए हैं। यदि ब्रिटिश

शासक पाकिस्तान की आवाज उठने पर ही यह प्रकट कर देते कि हम इसके विरोधी हैं तो देश का साम्प्रदायिक वातावरण इतना बिगड़ने नहीं पाता जितना कि अब बिगड़ चुका है।

पाकिस्तान आन्दोलन छिड़ने से पहले मुस्लिम लीगी नेताओं ने प्रान्तों में कांग्रेस शासन को बदनाम करने के लिये झूठी सची बातें प्रचारित करके इतनी तूफान बदतमीजी बरपा करदी थी कि किसी भी अच्छी सरकार को उसे बन्द करवा देना चाहिये था। परन्तु ब्रिटिश शासकों ने न केवल उसको रोका नहीं, बल्कि बार बार यह अनुरोध किये जाने पर भी कि वे कांग्रेसी मंत्रिमण्डलों के शासन की निष्पक्षता के विषय में अपनी सम्मति प्रकट कर दें, कुछ बोले नहीं। सयुक्त प्रान्त के भूतपूर्व गवर्नर सर हैरीहेग आदि दो एक ब्रिटिश सज्जनों ने इस विषय में जो कुछ विचार प्रकट किये भी वे सरकार के प्रतिनिधि की हैसियत में नहीं, बल्कि एक ब्रिटिश नागरिक की हैसियत में। तथापि उनसे इस देश के राजनीतिक नेताओं को मुस्लिम लीगियों के मिथ्या आन्दोलन का उत्तर देने में बहुत कुछ सहायता मिली। यदि कहीं यह विचार सरकारी रूप से प्रकट किये गये होते तो साम्प्रदायिक आग भड़काने वालों का मुख ही बन्द हो जाता।

इससे पहले प्रांतों में कांग्रेसी मन्त्रि मण्डल स्थापित होते ही, मि० जिन्ना ने और उनके अनुयायियों ने कांग्रेस की सफलता से खिज कर मुसलमानों में जिन विचारों का प्रचार किया और जिन साधनों से किया, उनको रोकने के लिये भी भारत सरकार ने कोई कदम नहीं उठाया। यदि सब प्रांतों में तभी कोई सम्मिलित कदम उठा लिया जाता, तो जो विष वृक्ष आज हमारे देश के सार्वजनिक जी[illegible] को छाये डाल रहा है, उसका बीज ही अंकुरित न होने पाता।

परन्तु जैसा कि लोकनायक अणे ने अपने भाषण में प्रकट किया है, ब्रिटिश शासक तो इस नीति पर चलना अपना कर्तव्य ही नहीं समझते तो इसकी पूरी जिम्मेवारी हिन्दू मुसलमानों के नेताओं पर डालकर स्[illegible] केवल दर्शक का पार्ट अदा करना चाहते हैं। वस्तुत: उनकी यह नीति ब्रिटि[illegible] शासन की भी कठिनाइयां बढ़ाने वाली है। आज चाहे उनका सारा ध्यान एक[illegible] मात्र युद्ध की तरफ लगा हुआ होने के कारण वे इस सत्य को अनुभव न करें, यु[illegible] के पश्चात् उनको इसे स्वीकार करना ही पड़ेगा। परन्तु तब तक उनकी कठिनाइयां भी अब तक की नीति के कारण बहुत अधिक बढ़ चुकेंगी।

प्रायश्चित

[ले०—राय बहादुर प० गंगाप्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ़ जज ज्वालापुर]

दण्ड का उद्देश्य

अपराधी को जो दण्ड दिया जाता है उसके दो अभिप्राय होते हैं— (१) उसकी आत्मिक शुद्धि, और (२) अन्य लोगों को शिक्षा वा चेतावनी। दोनों परम आवश्यक हैं, एक (१) व्यक्ति के लिए और दूसरा (२) समाज के लिए। पापसे मनुष्य का आत्मा कलुषित हो जाता है। यदि उसका परिशोधन न हो तो उसके संस्कार सूक्ष्म शरीर के साथ दूसरे जन्म में भी साथ जाते हैं और उसके परलोक को बिगाड़ते हैं। यदि पापी को उसके अपराध का दण्ड न दिया जाये तो समाज में अपराध अधिक होकर समाज की दुर्दशा हो जाय। इसी लिये शास्त्रों में दण्ड की बड़ी महिमा है और लोक मे भी उसकी परम आवश्यकता है। मनुस्मृति में कहा है:—

दण्ड की महिमा

स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः।
चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः॥

दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति।
दण्डः सुप्तेषु जागर्ति दण्डं धर्मं विदुर्बुधा॥

यत्र श्यामो लोहिताक्षो दण्डश्चरति पापहा।
प्रजास्तत्र न मुह्यन्ति नेता चेत्साधु पश्यति॥

मनु० ७। १७–१८, २५

अर्थ—दण्ड ही राजा है, वही नेता और शासन कर्ता है। चारों आश्रमों और धर्म का वही प्रा[illegible] (जामिन) है। १७। दण्ड ही सारी प्रजा को शासन करता है, दण्ड ही सब[illegible] रक्षा करता है। दण्ड सोते हुओं को जगाता है दण्ड ही को विद्वानों ने धर्म कहा[illegible]॥ १८॥ जहा श्याम वर्ण और लाल आखों वाला पाप के नाश करने वाला, दण्ड विचरता है वहा प्रजा प्रमाद नहीं करती यदि नेता (राजा) ठीक प्रकार देखते हो॥ २५॥ पाप से मुक्ति वा शुद्धि बिना फल वा दण्ड भोगने के नहीं होती।

दण्ड के ३ प्रकार

दण्ड भोगने के तीन प्रकार हैं—(१) अपने पाप को स्वीकार कर स्वयं ही अपने को दण्डित करना, (२) राज दण्ड और (३) ईश्वरीय दण्ड। पहले का ही नाम प्रायश्चित है और वह तीनों प्रकारों में सबसे अच्छा है क्योंकि जब मनुष्य अपने पाप को स्वीकार करके अपने को स्वय दण्ड देता है तो उसकी आत्मा की शुद्धि होना स्वय सिद्ध ही है प्रायश्चित का लक्षण यह कहा गया है—

प्रायश्चित्त का लक्षण

"प्रायः पापं विजानीयात् चित्त' तद् विशोधनम्"

अर्थ—प्राय' का अर्थ पाप है और चित्त उसके शोधन को कहते हैं। एक दूसरा लक्षण इस प्रकार है—

प्रायो नाम तपः प्रोक्त' चित्त' निश्चय उच्यते।
तपो निश्चयसंयुक्त' प्रायश्चित्तं तदुच्यते॥

अर्थ—प्राय' नाम तप का है और चित्त निश्चय को कहते हैं। तप और निश्चय वा श्रद्धा मिलकर प्रायश्चित कहा जाता है।

प्रायश्चित्त का महत्त्व

दूसरा दर्जा राज दण्ड का है जिसमें मनुष्य का इसी जन्म में छुटकारा हो जाता है। यदि मनुष्य अपने पाप का स्वय प्रायश्चित न करे और राजा से भी दण्ड न पावे तो उसको ईश्वर से दण्ड मिलता है क्योंकि ईश्वर का न्याय अटल है। यह पाप का फल भोगने का सबसे बुरा रूप है। पाप एक प्रकार का ऋण जिसको चुकाना ही होगा। यदि कोई मनुष्य उस ऋण को जो उसने किसी दूसरे मनुष्य से लिया हो स्वय उसको दे देवे तो यह सबसे अच्छा मार्ग ऋण होने का है। यदि स्वय न देवे तो उत्तमर्ण या साहूकार उस पर न्यायालय में दावा करेगा और डिगरी होकर उसको न्यायालय का खर्चा भी देना पड़ेगा। यदि कोई कर्जदार अपना कर्जा स्वय न दे और अदालत के द्वारा भी उसको न देना पड़े तो वह कर्जा मरने के पीछे उसके साथ जावेगा जो उसके लिये सबसे बुरी बात है। इसी प्रकार यदि कोई मनुष्य अपने पाप का प्रायश्चित न करे और राजदण्ड भी न पावे तो वह पाप उसके सिर पर रहता है जिसका फल वह ईश्वर से अवश्य पावेगा चाहे इसी जन्म में अथवा दूसरे जन्म में।

पाप के ३ प्रकार (१) मानस (२) वाचिक (३) कायिक

पाप तीन प्रकार के होते हैं—(१) एक मानस पाप अर्थात् मन में दुर्विचार या बुरी भावनाओं को स्थान देना। (२) दूसरे वाचिक जैसे किसी को कुवाच्य कहना वा झूठ बोलना। (३) तीसरे कायिक पाप जो अनेक प्रकार के हैं।

कुछ लोग मानस पापों को पाप नहीं समझते। कोई यहा तक कहते हैं कि कलियुग में मानस पाप पाप नहीं होता। यह भारी भूल है। मानस पाप सब पापों के मूल होते हैं क्योंकि "यन्मनसा मनुते तद् वाचा वदति यद् वाचा वदति तत् कर्मणा करोति, यत्कर्मणा करोति तदभिसपद्यते।' अर्थात् मनुष्य जो मन से विचारता है वही वाणी से कहता है, जैसा कहता है वैसा ही कर्म से करता है, जैसा करता है वैसा ही फल पाता है। गीता में भी कृष्ण महाराज ने कहा है—

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्।
इन्द्रियार्थानि विमूढात्मा मिथ्याचारी स उच्यते ॥

अर्थात् जो मनुष्य कर्मेन्द्रियों को रोक कर मन से इन्द्रियों के विषयों का ध्यान करता है वह मिथ्याचारी है।

पापों के और दो भेद हैं—

पापों के २ और भेद (१) वैयक्तिक (२) सामाजिक

(१) वैयक्तिक जिनसे केवल अपनी ही हानि या क्षति होती है। (२) दूसरे सामाजिक जिनसे अन्य मनुष्यों को या समाज को हानि पहुँचती है। वैयक्तिक प उन पांच धर्मों से किसी के भङ्ग का परिणाम होता है जिनको योग दर्शन में निय. कहा है और जो ये हैं—

"शौ. च संतोष तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधनानि नियमाः।"

अर्थात् स. ाई, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर को समर्पण नियम हैं। इस प्रकार गन्दा रहना असन्तोष आदि वैयक्तिक दोष हैं।

सामाजिक पाप उ पांच धर्मों में से किसी के भङ्ग का परिणाम होता है। जिनको योग में यम कहते हैं और जो ये हैं—

"अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्य्या परिग्रहा यमाः।"

अर्थात् हिंसा न करना, चोरी न करना, ब्रह्मचर्य का पालन और आवश्यकता

से अधिक लालसा न करना यम हैं। अहिंसा के भङ्ग करने से हिंसा अर्थात् दूसरों को दुख देना रूपी पाप होते हैं। जिसमें ब्रह्म हत्या वा मनुष्य हत्या सबसे बड़ा पाप है और महापातक कहलाता है। अस्तेय के भङ्ग से चोरी, लूट, डाका आदि पाप बनते हैं। ब्रह्मचर्य के भङ्ग से पर स्त्री गमन इत्यादि पाप होते हैं।

वैयक्तिक पाप लोक में राज व्यवस्था के अनुसार दण्डनीय नहीं। सामाजिक पापों में भी मानस पाप के लिये राजदण्ड नहीं क्योंकि ऐसे पापों का सिद्ध करना वा जानना भी असम्भव है। सामाजिक पापों में वाचिक और कायिक पाप बहुधा राज नियम के अनुसार दण्डनीय होते हैं।

पापों के अन्य २ भेद (१) इच्छा से (२) विना इच्छा

पापों के दो और भेद हैं अर्थात् (१) जो इच्छापूर्वक वा जान बूझ कर किए गए और (२) जो विना इच्छा के वा विना जाने किये जाय। विना इच्छा के किए हुए पाप ऐसे होते है जैसे किसी मनुष्य के हाथ कोई ऐसा काम करते हुए जो नियम विरुद्ध नहीं किसी दूसरे को चोट पहुच जाय अथवा किसी मनुष्य से हिंस्र जन्तु पर गोली चलाते हुए किसी मनुष्य को गोली लगकर उसकी मृत्यु हो जाय। इन दशाओं में यदि उक्त मनुष्य की असावधानी पाई जाय तो वह अपराध माना जायेगा। यद्यपि मनुष्य हत्या जैसा भारी अपराध नहीं होगा। यदि उसकी कोई असावधानी भी नहीं थी तो कोई अपराध नहीं समझा जायेगा किन्तु एक आकस्मिक घटना मानी जायगी जो दण्डनीय नहीं। तो भी उस मनुष्य से बेजाने एक पातक हुआ। पापों के इस भेद का वर्णन नीचे लिखे वेद मन्त्र में है

"यद् विद्वांसो यदविद्वांसो एनांसिचकृमा वयम्।
यूयं नस्तस्मान् मुंचत विश्वेदेवा स जोषसः॥"

अथर्व ६।११५।१

(अर्थ) जो जानते हुए और न जानते हुए हमने [illegible] किए सब विद्वान् लोग प्रीतिपूर्वक हमको उनसे मुक्त करें॥

विना इच्छा के पापों [illegible] शुद्धि

मनु महाराज ने विना इच्छा किए पापों की शुद्धि केवल वेद पाठ से बतलाई है—

"अकामतः कृतं पापं वेदाभ्यासेन शुद्ध्यति ।
कामतस्तु कृतं मोहात् प्रायश्चित्तैः पृथग् विधैः ॥"

मनु ११।४६

(अर्थ) बिना इच्छा किया पाप वेदाभ्यास से शुद्ध हो जाता है। इच्छा से और मोह से किए पाप भिन्न भिन्न प्रायश्चित्तों से शुद्ध होते हैं।

इच्छापूर्वक किये पापों की शुद्धि का प्रायश्चित्त

ऐसे पापों के लिए मनुस्मृति के ११ अध्याय में अनेक प्रकार के प्रायश्चित्तों का विधान है। उनमें से कुछ ये हैं —वेदपाठ, गायत्री वा किसी मन्त्र का जप, हवन का यज्ञ, दान, उपवास, अल्पाहार, दुग्धाहार आदि। कुछ अधिक कष्ट वाले प्रायश्चित्त मनुस्मृति में लिखे हैं जैसे कृच्छ्र, अर्धकृच्छ्र, शान्तपन चान्द्रायण आदि। तात्पर्य सब का तप और श्रद्धा ही है जो ऊपर लिखे श्लोक में प्रायश्चित के अंग वा लक्षण बतलाये गये हैं। यदि पातक से किसी मनुष्य को हानि वा क्षति पहुँची हो तो उसको कुछ हर्जा देना भी (जैसे कि फौजदारी अदालत में काबिल राजीनामा मुकदमों में आज्ञा है) एक प्रकार का प्रायश्चित ही है।

प्रायश्चित सब ही प्रकार के पापों का हो सकता है, और जान बूझकर किये गये पापों के लिए मनु जी ने आवश्यक बतलाया है। प्रायश्चित का मुख्य अंग पाप के लिए सच्चे हृदय से पश्चात्ताप करना है। जिससे पातकी की आत्मा की शुद्धि होती है। इसके अतिरिक्त वेद पाठ, जप, उपवास, यज्ञ आदि विचारशील मनुष्य पाप के रूप और देश काल विचार करके स्वयं भी कर सकते हैं।

UTOPIA OR HELL?

What, in future, is the world going to be like? Is humanity marching nearer to a blissful Utopia, or whirling head-long into the jaws of Hell?

With Europe in the throes of a terrible war, this question can no longer be brushed aside as idle speculation. Poland, Finland, Norway, Holland, Belgium and fair France lie in ruins. Gaunt hunger, starvation and death are staring millions and millions in the face Long-range guns and bombing planes are hammering away at Great Britain—the proud mistress of the seas whose shores for centuries had not known the insult of a foreign invasion The flames of war are leaping up here, there, and everywhere, threatening to engulf the whole world. Isolationists and Pacifists, and those who profess to believe in *Ahimsa*—all are gradually, but surely, being sucked into this aweful ring of flames The situation, indeed, has brought us face to face with an aweful truth. The writing is there on the wall, but what are we going to do about it?

Are we going to muddle through somehow, and then drug ourselves with a pleasant fiction, as we did last time, that peace had been attained upon earth and good-will among men? If we do we shall leave the fell disease , eat out the vitals of social organisms at leisure until men find themselves once more in the stage where they would snarl at each other like wild beasts fighting over a carcase

Violent disorders call for violent remedies, Patchwork or mere palliatives will not do Experience has shown they only lead to further complications and only increase our sufferings What we need most in the present crisis is courage—physical courage of course, but even more than that we need courage of the mind We need a bold vision. We need bold, courageous, incisive thinking.

If we are really prepared to pull out the thorn that festers in our side and poisons our blood. We must be prepared to probe far and deep, and all around. We must hold it firmly when we get our fingers to it, and pull out with courage.

It is a truism that wars are due to the political, economic and social conditions from which they spring Therefore it is idle to talk of abolishing war unless we can lay our finger on the danger spots in our midst and prevent storms ere they develop The best minds in Europe and America are engaged on this difficult task and we wish luck The stake involved is incalculable—the future of the human race—nothing less than the question whether man is to have some decent measure of happiness on this earth or nothing but suffering, tears and blood. And in view of the stupendous nature of the issue we should like to sound a note of warning

The task is not impossible, but success would come only if we let our eyes roam far and wide in search, and also look deep enough—deep into the conditions of life, and deep into our own minds For both act and re-act upon each other

Wars are the result of unrest They are only a symptom of the disease, they are not the disease itself Social unrest, economic unrest, political unrest, *and mental unrest*, all these states of the mind or the social organism act and react upon each other Mental unrest can easily upset the fine balance of social relations, social problems are interlocked with economic questions, which in turn are bound up with many Isms—Imperialism, Nationalism, Internationalism and the Universal Brotherhood of man Thus we get a conflict of Ideologies, and history has made plain by this time that nothing can be more absolute, or more deadly, than a conflict of this kind.

Coming to analyse Ideologies we find that the central and basic bone of contention, the only real cause of conflict in most of them, is self-interest—the self-interest of either this group or that The problem of world peace, therefore, primarily and essentially, is a question of harmonising the interests of one country with those of another—a question of harmonising your interests with mine

It is, therefore, the same old problem of civilisation that has been staring man in the face ever since he began to develop as a social and rational animal. One of the most patent and the most inexorable laws of life is the silent but ceaseless, grim and merciless struggle for existence Nature seems heartless in the way this law is enforced it is never softened, no exception made. But there can be no question whatever that this law is the most indispensable condition for all human progress It is an immutable Law of Life, and since it cannot be removed or replaced the problem of civilisation is to *humanise* it as far as possible.

The question of peace or war is first and foremost a question of the strength of the moral fibre in man , it is a political or an economic question only after that It is wrong to treat it, purely or primarily, as a political or economic problem.

But unfortunately this is exactly what is being done by most of the statesmen and philosophers engaged on the problem Since the present crisis in the affairs of Europe began to show itself there has come out a flood of literature on the causes which lead to war The general diagnose given by a large number of writers is economic rivalry, and the remedy suggested is Federation. Of course to some who rather resent the stabilization of international peace lest it should diminish the impulse to class war, Federation seems to be only an illusion ; but in regard to

the causes that lead to war there is practically no difference of opinion All thinkers seem to agree that economic rivalry leads ambitious states ultimately to war

As viewed in this light the problem of securing lasting peace resolves into the question of devising some international machinery that should minimise this rivalry This machinery in the vision conjured up by most people assumes some form of Federation into a super-state But the difficulty here, as indicated by the fate of the League of Nations, is that the creation of a body of this kind is no guarantee that it would function thenceforward as it should without a hitch. The League of Nations failed because it failed to win the confidence of member states, or because member states, where their own interests were at stake, were consciously so blind to the requirements of justice that they refused to submit themselves to the verdict of an impartial tribunal Moreover, in the prevailing circumstances, it is impossible to visualise an impartial international tribunal Our minds are too firmly held by national loyalties

The only way to make impartial international tribunals possible is to quicken the moral sense in man, to deepen it to such an extent that national points of view may have no chance of impairing our sense of justice. Thus we come to the strength of the moral hold on man

What is the origin of the moral sense in us ? This question is of paramount importance For, unless we know the spring where this sense takes its rise, we cannot hope to make it strong and deep enough to act as an infallible automatic break when we incline to run downhill to our doom by trampling down the rights of others

Philosophers will for ever continue to argue on the true basis of morality, but for the ordinary man the problem should be quite simple. Morality is a collective, scientific,

rather high brow name given to rules which ought to govern our conduct in life. These rules, on the face of it, should be such as would help us in our march towards the goal of Human Life. That is why we can never really decide whether a certain course of action is moral or immoral unless we know the goal we have to attain As long as we do not know where we want to go, it is evidently silly and meaningly to talk of a *right* or a *wrong* way. A man who does not want to go any where in particular is entirely free to march off in any direction, for no better reason, may be, than a mere whim of the moment Or he may very well stay where he was.

Man is not in a position by himself to decide what should be the goal of Human Life The designer alone can say what part a certain wheel is meant to play in a machine designed by him Man, in any case, is not his own creator. Of his origin there can be only two possible explanations, either he is no more than a chance and random product of blind, unrelated forces, or he is the creature of an Intelligent Mind working with a purpose In the former case Life can have no meaning for him beyond the pleasure or pain of the moment, for as soon as death comes there is an end after which nothing matters at all. Man's only rational aim in that case should be to enjoy life—yes, even at the cost of others In fact to make every body else as miserable as possible if thereby he can ensure his own happiness and comfort If he is hungry and his well-fed neighbour talks to him of morality instead of giving him bread, he would be a fool to desist on that account from tearing such a neighbour to pieces to ensure a meal for himself. That is why those who do not, really believe in God, or do so only as a matter of form, have a very elastic and changeful code of morals. If you depend on their sense of justice, you often do so to your cost.

If there is no God, then all talk of Morality, of Peace, of Justice, of Brotherhood, of the decencies of life, is no more than the villainous chant of canting hypocrites who scheme to keep the good things of life to themselves

Thus we perceive that the strength and depth of the moral sense in man is dependent on the depth of his conviction in regard to the existence of God It is, therefore, only by carrying this conviction home that he can be made into a perfectly moral being The grim struggle for existence can be humanised only in this way

A world dominated by a material outlook is a world run by atheists or half-atheists or by hypocrites who really do not trouble much about truth or justice As long as we fail to remedy this fundamental fact, so long shall we fail to secure happiness and peace on a durable basis We should let this truth sink deep into our being for without this sheet-anchor we shall ever remain at the mercy of recurring waves of ill-will, malice, hatred, wars and bloodshed

Secondly, permanent peace is not possible for the world unless Europe and America are prepared drastically to remodel most of their institutions——Europe and America, because the rest of the world at present only tends to follow on their wake The importance of domestic happiness and of a contented society cannot be overlooked in a discussion of the ways and means of securing peace and prosperity Domestic happiness depends upon the family purse and on the way we solve the problems which group round the sex question The respective spheres of man and woman in society, the regulation of sex-relationships, the duties of parenthood—all these questions must be solved before we can sit to dream of peace The family purse takes us into all the vexed questions of capital and labour.

The craze for dinner parties and dances, the craze for slim figure-lines, the importance of hats and growns and the millions spent on cosmetics, the wild longing for new and ever new thrills, these things lead to declining birth rates, certainly, but not to domestic happiness They also lead to the divorce courts. Besides, declining birth rates lead to depleted countries, they do not help but hinder the growth of national strength

The picture of a discontented society is even more distressing. There is more malice in such society, and bitter class, hatreds keep continually on the boil like a hidden bed of lava only waiting to boil out some day and burn every thing These dangerous fires cannot be cooled without a drastic remodelling of the rules which determine the distribution of wealth

These systems should suffice to make the West open its eyes If Europe and America try to preserve these rotton structures they would only seal their fate and go down to be buried in the debris of these institutions

If humanity wants peace it should believe in God, revise many fundamental concepts and remodel its institutions

—Review of Religions.

THE NEW SPIRIT

Last week a conference of women met at New Delhi and passed a few resolutions which women's conferences in this country usually pass Most of the speakers who addressed the conference looked upon the problem which faced them as one of women's rights, the assertion of equality with men and, possibly, one of conflict of sexes But one or two men who were asked to address the conference had the courage to point out that women's activities should be viewed as complementary to man's and not as in perpetual conflict with them Whether their courage was of any avail, we do not know, but we do know that the conference spoke with a note of quite confidence born of the consciousness of ultimate triumph, of which men will do well to take note, if men are to understand the new spirit animating the women of India and, understanding play their due part, in enabling it to fulfil itself Any other course is fraught with peril, to themselves more than to women, and the man is yet to be born who can defy a woman's determined attempt to assert her rights

The women in this country suffer from a large number of handicaps which prevent them from rising to the full height of their stature is a proposition with which few will care to quarrel Ignorance, superstition, the dead weight of custom, and, if they will have it so, the tyranny of man-made laws have combined to inflict on women in this country a position more that of a slave and a household drudge than a companion to face with man the common struggle for existence The inheritance laws deny her the heritage which is her own by right The marriage laws make her literally "hold the baby," while leaving man free to pursue his whimsical path. Purdah denies her the glory of God's light

and fresh air, and prejudice (man's not her own) keeps her away from the light of knowledge, enveloping her mind in the darkness in which she is made to live physically behind latticed windows Her present position places a heavy responsibility on the shoulders of the leaders of the women's movement in this country, and they are bearing it up bravely They may be assured of man's sympathy in the task which they have taken upon themselves, but the success or otherwise of their mission depends more on their own efforts than on the sympathy of others

While this much may be freely admitted, we know we shall be treading on delicate and dangerous ground when we come to discuss the aim which women should keep before their minds as the guiding star and inspiration for their efforts Should women aspire towards absolute equality with men or should they aim at another ideal more in consonance with their nature ? In this connection, it is well for them to keep the distinction which Balfour once drew, though in an altogether different context, between status and function That woman's role in life is as important as man's, few can deny As a matter of fact, it may be said to be even more important The search for a spurious equality may well have the degrading effect of dragging her from the temple to the market-place While there cannot and must not be a question of shutting her out from any sphere of life to which she may feel attracted by her innate genius, her primary function was, is and will continue to be, the role to which Nature had cast her, of preservation and continuation of the race It is she who confers on men the gift of immortality, and what can be nobler for her than to fulfil that role with all the grace and charm with which Nature had endowed her abundantly ?

साहित्य-समीक्षा

आर्य-जगत्—

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर के मासिक मुख पत्र 'आर्य-जगत्' (हिन्दी) का तृतीय अंक हमारे सामने है। इसके सम्पादक 'आर्य गजट' के यशस्वी सम्पादक श्री दीवानचन्द्र शर्मा एम० ए० मन्त्री सभा हैं। पत्र के लेख तथा अन्य सामग्री सुरुचिपूर्ण तथा पठनीय है। पत्रमें आध्यात्मिक, सैद्धान्तिक और साँस्कृतिक अच्छी सामग्री के अतिरिक्त बालकों तथा स्त्रियोपयोगी इत्यादि विविध विषयों की भी पर्य्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है। पजाब जैसे उर्दू प्रधान प्रान्त में इस प्रकार के जितने पत्र प्रकाशित हों उतने ही स्वागत योग्य हैं। परन्तु हम हिन्दी के उन्हीं पत्रों का समर्थन करते हैं जो सुरुचिपूर्ण हों और सात्विक साहित्य का प्रचार करते हों। अश्लील साहित्य के प्रचारक पत्रों के प्रकाशन की अपेक्षा उनका प्रकाशित न होना अच्छा है। हमें आशा है आर्य-जगत हिन्दी भाषा भाषी जनता मे जहा आर्य-समाज की शिक्षाओं को लोक प्रिय बनायगा वहाँ वह विविध विषयों के कुत्सित साहित्य को जो इन दिनों नवयुवकों और नवयुवतियों मे अत्यधिक विनाशक प्रभाव पैदा कर रहा है, निरुत्साहित करने में भी विशेष योग देगा। विज्ञापनों के प्रकाशन में आर्य-समाज के पत्रों को एक सीमित मार्ग में से होकर गुजरना पडता और विशेष सावधानी से काम लेना होता है। प्रस्तुत अङ्क में इस सावधानता का परिचय दिया गया है। आशा है भविष्य में भी इसका परिचय मिलता रहेगा। वार्षिक मूल्य २)।

आर्य-वर्त—

मासिक हिन्दी पत्र (लाहौर)

वार्षिक मूल्य—२)

सचालक—श्री हितैषी जी अलावल पुरी

सम्पादिका—श्रीमती शकुन्तला देवी हिन्दी भूषण।

इस पत्र का तृतीय अङ्क हमारे सामने है। इस में आर्य-समाज के उच्च कोटि के विद्वानों, लेखकों और कार्य-कर्ताओं के लेखों के अतिरिक्त महात्मा गाधी तथा प० जवाहरलाल नेहरू के भी लेख पढने को मिलते हैं। धार्मिक और सामाजिक साहित्य के अतिरिक्त स्त्रियो पयोगी साहित्य का भी अच्छा संकलन हुआ है। अन्य विषयों पर भी लेखादि दिए गए हैं।

कहानियां भी दी गई हैं। इस पत्र का उद्देश्य पंजाब में हिन्दी का प्रचार करना है। हम इस की सफलता की कामना करते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि हिन्दी प्रचार के साथ साथ सुरुचिपूर्ण साहित्य के प्रचार पर भी यह पत्र विशेष दृष्टि रक्खेगा।

प्राप्ति स्वीकार

संध्या विनय अथवा पूजा के पुष्प—

लेखक—पण्डित नित्यानन्द, वेदालंकार बी० ए० (आनर्स)

प्रकाशक—गोविन्दराम हासानन्द आर्य्य साहित्य भवन नई सड़क दिल्ली।

मूल्य—।≈)

सम्पादकीय

जन-गणना

सार्वदेशिक सभा के कार्यालय से इस समय तक जन गणना सम्बन्धी ५ विज्ञप्तिया आर्य समाजों तथा जनता में प्रचारित की गई हैं। उनमें जन गणना सम्बन्धी कोष्ठकों के भरने के सम्बन्ध में आर्यों को आवश्यक निर्देश दिये गये तथा मार्ग प्रदर्शन किया गया है। उनमें यह भी प्रेरणा की गई है कि आर्यों को अपनी गणना ठीक २ करानी चाहिए और इस जन गणना मे आर्यों की सख्या गत जन गणना के मुकाबले में कई गुना बढनी चाहिए। पिछली जन गणना में आर्यों की सख्या लगभग १० लाख अंकित की गई थी। यह सख्या गलत थी। इसके मुकाबले में आर्यों की वास्तविक सख्या ३०-४० लाख के लगभग थी। पिछली जनगणना के समय यदि हम पूरी २ सतर्कता से काम लेते तो यह सम्भव न था कि हमारी वास्तविक सख्या के विरुद्ध इतनी कम सख्या अकित होती। इस जन गणना के समय हम लोग पर्याप्त मात्रा मे सावधान हैं। इसके अतिरिक्त इन दश वर्षों में मुख्यतया हैदराबाद आदोलन के कारण जनता आर्य समाज के प्रति बहुत आकर्षित हुई है और वैसे भी संख्या में काफी वृद्धि हुई है। हमारा अनुमान है इस जन गणना में यदि आर्यों की सख्या ठीक ठीक अकित हो जिसके लिये प्रत्येक आर्य्य का प्रयत्नशील तथा सावधान रहना कर्त्तव्य है, तो यह संख्या अनुमानतः ५० लाख से कम न होगी।

प्रत्येक आर्य्य समाज और आर्य्य स्त्री पुरुष का कर्तव्य है कि वह कुछ समय के लिये अपनी प्रगतियों को इस महत्व पूर्ण कार्य्य पर केन्द्रित रक्खें। हमारा उद्देश्य गर्हित उपायों से अपनी संख्या वृद्धि करना नहीं है और न होना चाहिए, परन्तु हमें यह भी वाछनीय नहीं है कि हमारी ठीक २ सख्या अकित न हो। यह बात हमें स्पष्ट कर देनी चाहिये।

जन गणना के सम्बन्ध में अपनी संख्या के ठीक ठीक अंकित करा देने मात्र से ही आर्यों का कर्तव्य समाप्त नहीं हो जाता है। इस सम्बन्ध में उनके कई और कर्तव्य हैं। सबसे पहले उन्हें यह देखना है कि जन गणना में उनके हिन्दू भाई विधर्मियों के किसी भ्रम वा फुसलाहट के तो शिकार नहीं बन गए हैं और अपने धर्म तथा भाषा को ठीक २ रूप से न लिखाने की भूल कर रहे हैं। इसी प्रकार हरिजनों के सम्बन्ध में सावधानता रखे जाने की आवश्यकता है। इन दिनों राजनैतिक दृष्टि से जन गणना का महत्व बहुत बढ़ गया है। संख्या का क्या प्रभाव पड़ता है, यह वर्तमान शासन विधान से स्पष्ट ही है। आर्य्य समाज के लिये तो जन गणना का सांस्कृतिक महत्व ही मुख्य है और हिन्दुओं तथा हरिजनों की भ्रम तथा फुसलाहट से रक्षा करना तथा ठीक ठीक रूप से कोष्ठकों की पूर्ति करवाना आर्य्यसमाज के लिए इसी दृष्टि से आवश्यक है।

संथालों, उरांव इत्यादि आदिवासियों के धर्मके अंकित किए जानेके सम्बन्ध में सरकारी निर्देशों से जो गड़बड़ उत्पन्न हुई है उसका आभास पाठकों को अन्यत्र प्रकाशित सामग्री से भली भांति मिल जायगा। अन्यत्र भी शायद ऐसी ही कठिनाइयां प्रस्तुत हों। हमें हिन्दुओं की जनोपकारी संस्थाओं और व्यक्तियों के सहयोग से उन पर विजय प्राप्त करनी होगी। प्रसन्नता है प्रान्तिक सभायें तथा आर्य समाजें इस सम्बन्धमें सतर्क हैं और आवश्यक उचित कार्यवाही कर रही हैं। संथाल, उरांव, भील आदि जंगली जातियां हिन्दू ही हैं यह बात निर्विवाद है। इनको 'धर्म विहीन' अंकित किये जाने के प्रयत्नों का हमें पूरे बल से खंडन करना चाहिये। इसी प्रकार की कठिनाई गढ़वाल के पहाड़ी इलाकेकी शिल्पकार जातियों को आर्य लिखे जाने के सम्बन्ध में है। हमें पूर्ण रूप से सतर्क रहना चाहिए कि जो शिल्पकार अपने आपको आर्य लिखाये उसे आर्य ही लिखा जाये।

भाषा के कोष्ठकों में हिन्दी लिखवाने का सभा का निश्चय है। भाषा के सम्बन्ध में आर्यसमाज का निश्चय यही हो सकता था। भाषा के अंकित किए जाने के सम्बन्ध में कतिपय प्रांतों के अधिकारियों के निर्देशों से असन्तोष उत्पन्न हो गया है। उदाहरणार्थ संयुक्तप्रांत, बिहार, काश्मीर तथा टिहरी राज्य की सरकारों ने स्पष्ट रूप में 'हिन्दुस्तानी' अंकित करने की गणकों को हिदायतें दी हैं। इस स्थिति का हमें दृढ़ करना

होगा। प्रान्तिक सभाओं, आर्य समाजों तथा अन्य हिन्दी हितैषी संस्थाओं को आन्दोलन करके उक्त निर्देशों को रद्द कराने का बल पूर्वक यत्न करना चाहिये। हिन्दुस्तानी कोई भाषा नहीं है। महात्मा गांधी सरीखे महान् नेताओं का इसके लिये समर्थन प्राप्त है। इतना ही नहीं हिन्दू मुस्लिम एकता के लिये वे इसका प्रचार आवश्यक समझते हैं। हिन्दुस्तानी की उपज किसी भी नेता के मस्तिष्क की क्यों न हो, हमें सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह ग्राह्य नहीं है और न सरकार को अनिच्छित जनता पर यह लादनी चाहिये केवल इसलिये कि महात्मा गांधी तथा कांग्रेस इसका समर्थन करते हैं। यदि यह नाम लादा गया तो हिन्दी भाषा के प्रेमियों की ओर से असन्तोष का वह आन्दोलन उठेगा जिसका सामना करना सरकार के लिए कठिन हो जायगा। अतः धर्म की नाईं भाषा वही अंकित होनी चाहिये जो व्यक्ति बतलाए। आर्य मात्र को इस सम्बन्ध में पूर्ण सावधानता से काम लेना चाहिए।

जनगणना का उद्देश्य देश की संख्या परिगणन के अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक उन्नति वा अवनति की परिवेक्षण करना होता है और सरकार को पूर्ण निष्पक्षता और न्याय से काम लेकर इस परिवेक्षण को अधिक से अधिक वास्तविक बनाना होता है। १९३१ की जनगणना के सम्बन्ध में जनता की शिकायत थी और उसने अपनी शिकायतों को प्रमाणित भी किया था कि जनगणना ठीक ठीक रीति से नहीं हुई है। यदि इस बार भी उपर्युक्त प्रकार की गड़बड़ अथवा अन्य किसी कारण से जनगणना ठीक ठीक अंकित न हुई तो जनता का इस पर से विश्वास उठ जायगा।

कुछ भारतीय रियासतों से इस प्रकार की भी सूचनायें प्राप्त हुई हैं कि वहा गणकों को रियासती सरकारो की ओर से निर्देश प्राप्त हुये हैं कि वे जनता द्वारा बताये हुये धर्म और भाषा को न लिख कर अपने अनुभव और इच्छा से उनका धर्म और भाषा लिखें। इन समाचारों से रियासतों मे जनगणना के सम्बन्ध में जो गड़बड़ी मची हुई है, वह स्पष्ट है। जहा भारत सरकारकी ओरसे गणकों को यह स्पष्ट निर्देश मिले हुये है कि वे जनता द्वारा बताये हुये धर्म और भाषा को अंकित करें वहा रियासतों के तत्सम्बन्धी निर्देश अन्यायपूर्ण ही नहीं वरन् सरकारी नियमों के भी विरुद्ध है अतः केन्द्रीय सरकार को विशेष रूप से इस ओर ध्यान देकर समुचित कार्यवाही करनी चाहिए।

क्या हम आशा करें कि भारतीय सरकार पूर्ण न्याय और निष्पक्षता से

काम लेकर किसी प्रकार की शिकायत का अवसर उपस्थित न होने देगी और इस प्रकार जनगणना के वास्तविक उद्देश्य की रक्षा का पूरा २ ध्यान रखेगी।

स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी

आगामी ६ दिसम्बर १६४० को आर्य्य जगत् मे स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी की बरसी मनाई जायगी। आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब ने इसके लिये समाजों को आवश्यक आदेश निर्देश दिए हैं तथा कन्या गुरुकुल देहरादून और गुरुकुल कांगड़ी की सहायतार्थ २ लाख के कोष की अपील की है। हम इस अपील का हार्दिक समर्थन करते हैं।

आचार्य्य जी आर्य्य समाज की एक बहुमूल्य सम्पदा थे। वे आर्य्य समाज के लिए ही जिए और उसी के लिए मरे। आर्य्य समाज को उन पर अभिमान था। उन्होंने निष्काम सेवा तथा त्याग भाव का बहुत सुन्दर पाठ हमारे सामने रक्खा है। साथ ही विद्वानोचित नम्रता तथा सादगी भी उनमें कूट २ कर भरी थी। आज जब कि हम उनकी बरसी मनाने जा रहे हैं, हमारा कर्त्तव्य है कि हम उस दिव्य आत्मा के सद्गुणों को अपने जीवन में धारण करें और अपने को आर्य्यसमाज की सेवा के व्रत से दीक्षित करें।

श्री लाला रामप्रसाद जी

"वन्दे मातरम् लाहौर" के भूतपूर्व सम्पादक तथा पञ्जाब के प्रसिद्ध आर्य्य श्री लाला रामप्रसाद जी बी० ए० के निधन से आर्य्य समाज अपने एक वयोवृद्ध और अनुभवी कार्य्य-कर्त्ता से वञ्चित हो गया। श्री लाला रामप्रसाद जी बड़े कर्मशील, परिश्रमी और श्रद्धालु कार्य्य कर्त्ता थे। उनकी सेवाका अधिकाश क्षेत्र साहित्यिक ही रहा हैं, परन्तु अन्य क्षेत्रोंमें भी उन्होंने आर्यसमाज का अच्छा और ठोस काम किया है। इस प्रकार के वयोवृद्ध कार्य्य कर्त्ताओ के एक २ करके उठ जाने से आर्य नवयुवकों को एक बड़ी गम्भीर चेतावनी मिलती है और वह आर्य्यसमाज की सेवा के लिए वयोवृद्धों के रहते हुए उनके अनुभवों तथा कार्य्य शैली से लाभ उठाते हुए अपने को शीघ्र से शीघ्र तय्यार करने की चेतावनी है।

परमात्मा दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके शोक सतप्त परिवार को धैर्य्य प्रदान करें।

श्रद्धानन्द जयन्ती

इस वर्ष श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती पौष ६ तदनुसार २३ दिसम्बर १६४० को पड़ेगी। आर्य्य जगत् को यह दिवस समारोह पूर्वक मनाकर अपने दिवगत धर्म्मवीर नेता के प्रति पूरा पूरा सम्मान प्रदर्शित करना चाहिए।

बङ्गाल में हिन्दू-महिलाओं का अपहरण

बङ्गाल के पूर्वीय ज़िलों में हिन्दुओं की अवस्था बहुत वर्षों से शोचनीय हो रही है। वहाँ मुसलमानो की प्रबलता है और हिन्दू संख्या में बहुत कम तथा स्वभाव से निरीह हैं। इस कारण उन स्थानो के मुसलमान-गुण्डे समय-समय पर हिन्दुओं पर अत्याचार किया करते थे। पर जब से बङ्गाल म फ़ज़लुलहक़ का मन्त्रि मण्डल क़ायम हुआ है, तब से मुस्लिम-गुण्डो का साहस बहुत बढ गया है और उन्होंने हिन्दुओं को हर तरह से तङ्ग करना अपना लक्ष्य बना लिया है। हिन्दुओं की धन सम्पत्ति लूटने की घटनाएँ तो प्राय होती ही रहती हैं, पर सबसे बढ कर विचारणीय विषय है हिन्दू महिलाओ के अपहरण की घटनाएँ। इस सिलसिले म कई उदाहरण मिले हैं। हम नीचे दो घटनाएँ देते हैं, जो किसी सम्प्रदायवादी पत्र मे नहीं, वरन् प्रसिद्ध राष्ट्रीय पत्र 'प्रताप' म प्रकाशित हुई हैं—

ज़िला फरीदपुर (बङ्गाल) क गोपालगञ्ज हल्के के मैजिस्ट्रेट मिस्टर टी० अहमद के इजलास में श्री० नटवरदत्त की लड़की विजनबाला के भगाये जाने का मुक़दमा पेश हुआ। लड़की के पिता ने दरख्वास्त दी कि लड़की किसी हिन्दू की हिफ़ाज़त में रखी जाय। मैजिस्ट्रेट ने कहा कि वे उसे हिन्दू-महासभा की सुपुर्दगी मे नहीं रख सकते। नारी-रक्षा समिति के डाक्टर विभूति भूषण बसु अदालत में मौजूद थे। उन्होने लड़की को अपनी हिफ़ाज़त म रखना स्वीकार किया। मैजिस्ट्रेट ने ५००) की ज़मानत पर लड़की को उनके पास छोड़ना मञ्ज़ूर किया। परन्तु पुलिस के मुसलमान सर्किल इन्स्पेक्टर और अभियुक्त के पक्ष के मुसलमान वकील ने अदालत को यह सूचना दी कि अदालत के बाहर ५०० मुसलमान लड़की को ज़बर्दस्ती छीन लेने के लिए खड़े हैं। इस पर मैजिस्ट्रेट ने पुलिस के पहरे का इन्तज़ाम करने के लिए कहा। हिन्दू सब इन्स्पेक्टर अपने साथ लड़की को कलकत्ता ले जाने को भी तैयार था, परन्तु थानेदार ने, जो मुसलमान था, उसको डाँटा और अदालत से उसमें लड़की को कलकत्ता ले जाने के लिए पुलिस के सिपाही देने में असमर्थता ज़ाहिर की। फरीदपुर से हथियार बन्द पुलिस मँगाने का खर्च देने की बात कहने पर फरीदपुर खबर भेजी गई। अदालत बन्द होने के बाद कई मुसलमान वकील मजिस्ट्रेट के बगले पर जाकर उनसे मिले और उनसे परामर्श किया। खबर है कि रात ही को वे कलकत्ता पहुँचे और होम मेम्बर से मिलकर यह आदेश प्राप्त किया कि मजिस्ट्रेट लड़की को किसी मुसलमान वकील के सुपुर्द करे। इसके अनुसार गत १० नवम्बर को यह आदेश दिया गया कि लड़की को किसी मुसलमान के पास रक्खा जाय। नारी रक्षा समिति के मन्त्री ने इस मामले में होम मेम्बर से मिलने की कोशिश की, परन्तु वे असफल हुए।

दूसरी घटना चाँदपुर की है। यहाँ पर शहर से ५, ६ मील के फासले पर स्थित गुलिया ग्राम से स्वर्गीय सुरेशचन्द्र मजूमदार की विधवा पत्नी सुखदा सुन्दरी को उसी गाँव के तथा आसपास के गाँवो के ५० ६० हथियार बन्द मुसलमान गुण्डे दिनके दो बजे बलपूर्वक उड़ा ले गये। उसी दिन चाँदपुरके थानेमें घटना की इत्तला दी गई परन्तु आजतक उस स्त्री का उद्धार न हो सका। इस विधवा के पांच छोटे २ बच्चे हैं जो इस समय बिलकुल अनाथ हो रहे हैं। हिन्दुओं की ओर से जिन लोगों ने सुखदा को छुड़ाने की कोशिश की उन पर मुसलमान गुण्डो ने सशस्त्र रूप से हमले किये।

कौन स्वाभिमानी हिन्दू ऐसा होगा जिसकी आंखें इन घटनाओं को पढ़कर सुर्ख न हो जायेंगी? बङ्गाल म होने वाली मन्दिरो में गो मांस फेंके जाने, हिन्दू घरों को मस्जिद बनाने तथा देव मूर्तियो को नष्ट करने की घटनाओं को हम थोड़ी देर क लिए भूल सकते हैं, पर मातृ जाति का ऐसा भयङ्कर अपमान सहन शक्ति के बाहर है। हिन्दू ही क्या मनुष्यता का सम्मान करने वाला कोई व्यक्ति, चाहे वह किसी मजहब या सम्प्रदाय का हो, इस प्रकार के जुल्म को बर्दाश्त नहा कर सकता। वास्तव म जिन लोगों को इस प्रकार गुण्डो की दया पर निर्भर रह कर जीना पड़ रहा है और अपनी सम्पत्ति तथा इज्जत की रक्षा कर सकने म असमर्थ हैं, उनका इस पृथ्वी पर जीवित रहना ही बेकार है। हिन्दुओ को अवश्य ही इस कायरता के कलङ्क को अपने मस्तक पर से हटाने को प्रयत्नशील होना चाहिए। (चाँद)

जनगणना (मर्दुम शुमारी) १९४१

विज्ञप्ति न० ५

प्रारम्भिक जनगणना दिसम्बर १९४० म होगी और अन्तिम जनगणना २७ २८ और १ मार्च १९४१ को होगी। इन दोनों समयों को याद रखिये और देखिये कि दोनों बार अपने (१) धर्म (२) नसल क़बीला जाति और (३) भाषा सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर निम्न चित्र के अनुसार दर्ज करवाइए और अपना सन्तोष भी कर लीजिए कि ऐसा हो गया है।

	स० ४	म ३	स० १८
प्रश्न	धर्म	नसल, क़बीला, जाति	भाषा
उत्तर	वैदिक धर्म	आर्य	हिन्दी

निवेदक—

सुधाकर

मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली।

आवश्यक सूचना

सार्वदेशिक सभा हैदराबाद सत्याग्रह सम्बन्धी गीतों का संग्रह करना चाहती है। अतः जिन आर्य-समाजों, आर्य कवियों और आर्य भाइयों के पास ये गीत हों, वे कृपया उनकी एक एक कापी सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें। जिन सज्जनों को ऐसे साहित्य के प्राप्त होने का पता विदित हो, वे उस पते से भी सभा को सूचित करने की कृपा करें।

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, देहली।

[illegible]